कृष्णदास संस्कृत सीरीज २४४

मन्त्र महासागर

संग्रहकर्त्ता
ज्योतिर्विद् राधिकारमण

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

कृष्णदास संस्कृत सीरीज

२४४

***

मन्त्र महासागर

संग्रहकर्त्ता

ज्योतिर्विद् राधिकारमण

मन्त्रशास्त्री

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी

वाराणसी

निवेदन

मन्त्रों तथा विधिविधानपूर्ण यह संग्रह विभिन्न विद्वानों तथा तान्त्रिकों के उपदेशानुसार संग्रहीत किया गया है। इत:स्तत: बिखरी विद्या का यथार्थ रूप से तथा सम्पूर्ण रूप से संकलन कर सकना कदापि सम्भव नहीं है। यह सब विद्या कबीलों में, ग्रामों में तथा वनांचलों में परम्परागत रूप से कब से चलती आई है, इसका आकलन कर सकना दुष्कर है। साथ ही यह भी नहीं कहा जा सकता कि इसकी पृष्ठभूमि तथा प्रामाणिकता क्या है? क्योंकि उसे जांचने में तो आयु की ही इति:श्री हो जायेगी। इस कार्य हेतु मानव को कई पीढ़ी तक प्रयास करना पड़ेगा।

अत: इनकी प्रामाणिकता के लिये पाठकों को स्वयं प्रयास करना पड़ेगा। तथापि जनश्रुति यह है कि इसके अनेक लाभ होते हैं। लोगों का अभीष्ट सिद्ध होता है। तभी ये सब विधान सैकड़ों-हजारों वर्ष के अन्तराल में भी विलुप्त न होकर परम्पराक्रमेण आज भी जीवित हैं।

यहां यह भी लिखना है कि काल के प्रवाह के कारण अनेक जड़ी-बूटियां लुप्त हो गयी हैं। प्रयोग में आने वाली अनेक वस्तु कानून से प्रतिबन्धित है, जैसे पशुओं के अंग आदि। इसलिये पाठकगण उनका प्रयोग न करें। जो जड़ी-बूटियां लुप्त हैं, वैद्यों तथा वनस्पति विज्ञानीगण से उनके अनुकल्प को जानकर उससे काम चलायें। कानूनन नरकपाल आदि प्रतिबंधित हैं। जिन प्रयोगों में उसका उल्लेख है, वे प्रयोग न करें। साथ ही मन्त्रों तथा प्रयोगों को उचित गुरु के ही निर्देशन में करें। तभी कल्याण होगा तथा प्रयोगों की वास्तविकता तथा प्रामाणिकता का अनुसन्धान भी हो सकेगा।

चैत्र नवरात्र, २०१४ ई०

भवदीय

ज्योतिर्विद् राधिकारमण

मन्त्रशास्त्री

विषयानुक्रमणिका

***

मन्त्र महासागर

आयतुल कुर्सी

जो व्यक्ति नमाज के बाद इसका पाठ करता है, उसे जन्नत नसीब हो जाता है। अल्ला मेहरबान हो जाता है। उसे सुख-शान्ति प्रदान करता रहता है।

प्रातः उठकर एक बार आयतुल कुर्सी का पाठ कर लिया जाए तो शांति के साथ दिन बीत जाता है। रात में सोने से पहले इसका पाठ करें।

'अल्लालु ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्यूम ला ताखुजुहू सि ना तुंव व ला न व म लहु मा फिस्समावाति व मा फिल अर्जम नजल्लजी यश्फअु ।अन दहू इल्ला बिइज्निही यअ्लमु मा बैनाऐ दीहिम व मा खल् सित्आ कुर्सी युहुस्समावाति वल् अर ज वला यऊदुहू हिफ्दुहू हिफ्जु हुमा व हुवल अलीयुल अजीम'।

दुआए जमीला शरीफ

दुआए जमीला शरीफ का पाठ प्रातः की नमाज के बाद किया जाए।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या जमीलु या अल्लाहु या करीबु या अल्लाहु या अजीबु या अल्लाहु या मुजीबु या अल्लाहु या रऊफु या अल्लाहु या मऊरफु या अल्लाहु या मन्नानु या अल्लाहु या दय्यानु या अल्लाहु या बुराहानु या अल्लाहु या सुलतानु या अल्लाहु या मुस्ताआनु या अल्लाहु या मुहहिनु या अल्लाहु या मुतआलि या अल्लाहु या रहमानु या अल्लाहु या रहीमु या अल्लाहु या हलीमु या अल्लाहु या मजीदु या अल्लाहु या हकीमु या अल्लाहु या गफूर या अल्लाहु या गफ्फारु या अल्लाहु या मुबदियु या अल्लाहु या राफिऊ या अल्लाहु या शकूरु या अल्लाहु या खबीरु या अल्लाहु या बसीरु या अल्लाहु या समीऊ या अल्लाहु या अव्वलू या अल्लाहु या आखिर या अल्लाहु या जाहिरु या अल्लाहु या बातिनु या अल्लाहु या कुद्दसू या अल्लाहु या सलामु या अल्लाहु या मुहयमिनु या अल्लाहु या अजीजु या अल्लाहु या मुत-काब्बिरु या अल्लाहु या खालिकु या अल्लाहु या बरिअु या अल्लाहु या मुसव्विर या अल्लाहु या खालिकु या अल्लाहु या जब्बारु या अल्लाहु या हय्यू या अल्लाहु या कय्यूम या अल्लाहु या काबिजु या अल्लाहु या बासितु या अल्लाहु या मुज्जिलु या अल्लाहु या काविय्यु या अल्लाहु या शहीदु या अल्लाहु या मुस्तिफा या अल्लाहु या सानिऊ या अल्लाहु या शहीदु

या अल्लाहु या मुस्तिफा या अल्लाहु या सानिऊ या अल्लाहु या खाफिजु या अल्लाहु या राफिउ या अल्लाहु या वकीलु या अल्लाहु या जल जलालि इकरामी या अल्लाहु या रशीदु या अल्लाहु या सबूरु या अल्लाहु या फताहु या अल्लाहु या इलाहा इल्ला उन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तुमिन जिज्जालिमीना व सल्लल्लाहु तआला अला खयरि व खलकिहि मुहरिमदिन व आलि व असहा बिहि अजमअीना बिरहमति का या अरहमर्राहिमीन'।

सूरः नास

'कुल अजूजू बिरिबिब्बनासि० मलिकिन्ना सि० इलाहिन्नासि. मिन शर्रिल वस्वाखिल खन्नासि० ल्लजी युवस्विसु फी सुदूरननासि० मिनल जिन्नति वन्रास०'

सूरः फलक

'कुल अऊजु बिरिब्बिल फल कि० मिन शर्रि मा खलक० मिन शर्रि गासिकिनि इजा व क ब० वमिन शर्रिन्नफ्फासाति फिल अुकद० वमिन शर्रि हासिदिन इजा हसद०'

सूरः इख्लास

'कुल हुवल्लाहु अहद० अल्ला हुस्समद० लम यलिद व लम यूलद० लम युकूल्लहू कुफवन अहद०'

सूरः फातिहा

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अर्रहमानर्निहीम० मालिकि० यौमिद्धीन० इय्याका नअबुदु व इय्या का नस्तअीन० इहिदनस्सिरातल मुस्तकीम० सिरातलजी न अन अमता अलैहिम गैरिल मग्जूबि अलैहिम व लज्जाल्लीन'

अहदनामा शरीफ

अहदनामा शरीफ पढ़ने वाले व्यक्ति की सारी मुश्किलें खत्म हो जाती हैं तथा हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। अहदनामा शरीफ इस प्रकार है:—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा फातिरस्समावाति वल अर्जि आलिमुल गयबि वश्शहादाति अन्तरहमानुरहीमु अल्ला हुम्मा इन्नी आहदु इलयका फीजाजिही लहयातिद दुनिया व अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता वहदहु ला शरीका लका व अश्हदु अना मुहम्मदन अबुदका व रसूलु का फला ताकिलनी इला न फसि फइन्नका इन तकिलनी इला नफसि तुक रिबनी इलाश्शर्रि व तुबाअिदनी मिनत खयरि व इन्नी ला अन्तफिलु इल्ला बिरह मातिका फजअल लीअिन्दिका अहदन तुवफ्फीहि इला यवमल कियामति इन्नका ला तुखलिफुल मीआद० व सल्लल्लाहु तआला अला खयरि खल किहि मुहम्मदिव्य इलाहि व असहाविहि अजमअीन० बिरीह मतिका या अरहमर्राहिमीन०

अहदनामा शरीफ

'अहदनामा शरीफ' को नियमित रूप से पढ़ने वाले शख्स की हर मुश्किलें आसान होकर उसकी समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति अवश्य होती है। अहदनामा शरीफ निम्नांकित है—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा फातिरस्समावाति वल अर्जि आलिमुल गयबि वश्शहादाति अन्तरहमानुरहीमु अल्ला हुम्मा इन्नी आहदु इलयका फीजाजिही लहयातिद दुनिया व अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता वहदहु ला शरीका लका व अश्हदु अना मुहम्मदन अबुदका व रसूलु का फला ताकिलनी इला न फसि फइन्नका इन तकिलनी इला नफसि तुक रिबनी इलाश्शर्रि व तुबाअिदनी मिनत खयरि व इन्नी ला अन्तफिलु इल्ला बिरह मातिका फजअल ली अिन्दिका अहदन तुवफ्फीहि इला यवमल कियमति इन्नका ला तुखलिफुल मीआद० व सल्लल्लाहु तआला अला खयरि खल किहि मुहम्मदिव्य इलाहि व असहाबिहि अजमअीन० बिरीह मतिका या अरहमर्राहिमीन०

अजमत

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा इन्नी असअलोका बिहक्के इस्काइकल व सिफातिकल अलया या रज्जाको या समीओ अनतकदो हाजतो अकसमतो अलैकुम। या अईयो हलूम लायक तिल मवक्किलतो अल हाजिल हुरू फितामाति ताहिरात या दरदाईलो या किल काईलो बिहक्के सईयदि कुमूवा अमीनिकुल अल अजीयत नहायूसो इन्नाम अमरूहइजा आरादा शैयन अनयकूलो लहू कुन यफ कुनफ सुबहानल्लजी ये यद्दिन कुतोकुल्लश अहन अलै हेतुर्जऊन।'

दुआए जमीला शरीफ

दुआए जमीला शरीफ का इस्लाम धर्म में अत्याधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रात:काल की नमाज के पश्चात् इस दुआ को पढ़कर ही अपनी दिनचर्या का आरम्भ किया जाता है। कहते हैं कि पूर्ण श्रद्धा से इस दुआ को पढ़ने वाले की हर मनोकामना पूर्ण होती है।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या जमीलु या अल्लाहु या करीबु या अल्लाहु या अजीबु या अल्लाहु या मुजीबु या अल्लाहु या रऊफ या अल्लाहु या मऊरूफु या अल्लाहु या मन्नानु या अल्लाहु या दय्यानु या अल्लाहु या बुराहानु या अल्लाहु या सुलतानु या अल्लाहु या मुस्ताआनु या अल्लाहु या मुहसिनु या अल्लाहु या मुतआलि या अल्लाहु या रहमानु या अल्लाहु या रहीमु या अल्लाहु या हलीमु या अल्लाहु या अलीमु या अल्लाहु या हकीमु या

अल्लाहु या राफिऊ या अल्लाह शकूरु या अल्लाहु खबीरू या अल्लाहु या बसीरू या अल्लाहु या अन्वलू या अल्लाहु या आखिरू या अल्लाहु या जाहिरू जाहिरू या अल्लाहु या मुहयमिनु या अल्लाहु या अजीजु या अल्लाहु या मुत-काब्बिरू या अल्लाहु या जब्बारू या अल्लाहु या हय्यू या अल्लाहु या कय्यूमू या अल्लाहु या काबिजु या अल्लाहु या बासितु या अल्लाहु या मुजिल्लु या अल्लाहु या कविय्यु या अल्लाहु या शहीदु या अल्लाहु या मुस्तिफा या अल्लाहु सानिऊ या अल्लाहु या खाफिजु या अल्लाहु या राफिऊ या अल्लाहु या वकील या अल्लाहु या जल जलालि वल इकरामी या अल्लाहु या रशीद या अल्लाहु या सबूरू या अल्लाहु या फताहु या अल्लाहु ला इलाहा इल्ला उन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तुमिन ज्जालिमीना व सल्लल्लाहु तआला अला खयरि व खलकिहि मुहम्मदिन व आलि व असहा बिहि अजमईना बिरहमति का या अरहमर्राहिमीन०'

हजरत ईमाम मुहम्मद विन सिरीन० रह० के रिवायत के मुताबिक सपने में कुरआन की सूरतें पढ़ने का फल।

सूरः अंकबूत

जो कोई भी शख्स स्वप्न में सूरः अंकबूत की तिलावत करे तो समझ लें कि जल्द ही उसे कोई बड़ी खुशखबरी मिल जायेगी।

सूरः आले इमरान

जो कोई भी शख्स स्वप्न में सूरः आले इमरान को पूरी तरह अथवा उसका कोई अंश पढ़े तो उसका बुढ़ापा परेशानी में गुजरेगा और ताउम्र उसे सफर करना पड़ेगा। उसकी जिन्दगी दौड़-भाग में गुजरेगी।

सूरः जुमर

यदि कोई स्वप्न में सूरः जुमर की तिलावत करे तो उसकी उम्र में बढ़ोत्तरी हो और वह अपने नाती-पोतों को अपनी गोद में खिलाएगा। यह भी मुमकिन है कि वह अपने वतन से दूर कहीं गैर मुल्क में रहने लगे।

सूरः हकाफ

जो कोई भी शख्स स्वप्न में सूरः हकाफ को पढ़े तो वह अपने वाल्दैन (माता-पिता) का कहना नहीं मानने वाला होगा। लेकिन उम्र के आखिर में उसे अक्लमंदी आ जायेगी।

सूरः कमर

जो कोई भी शख्स स्वप्न में सूरः कमर की तिलावत करे तो उस पर किसी भी प्रकार के जादू-टोने, नजरदोष अथवा ऊपरी व्याधि का असर नहीं रहेगा।

सूरः मुमतहिना

इस सूरः को पढ़े तो समझें आने वाली परेशानियों का संकेत है।

सूरः सफ्फ

इस सूरः को पढ़े तो वह किसी कार्य में शहीद हो जायेगा।

सूरः जुमा

इस सूरः को पढ़े तो अल्लाहतआला उसकी नेकियों में वृद्धि करेगा।

सूरः मुनाफिकून

इस सूरः को पढ़े वह निफाक से बरी रहेगा।

सूरः तगाबुन

इस सूरः को पढ़े तो वह सदा ईमानदारी का जीवन बिताएगा।

सूरः तलाक

इस सूरः को पढ़े तो शीघ्र ही उसका अपने जीवनसाथी से झगड़ा होगा और तलाक की नौबत आ जायेगी।

सूरः तहरीम

इस सूरः को पढ़े तो अपने उसूल-कायदों का पक्का होगा।

सूरः मुल्क

इस सूरः को पढ़े तो अल्लाहतआला उसकी भलाईयों को बढ़ाएगा।

सूरः हिज

जो कोई स्वप्न में सूरः हिज को पढ़े तो वह परिवारजनों का प्रिय तथा सम्मानीय होगा।

सूरः नहल

जो कोई स्वप्न में सूरः नहल पढ़े तो उसका व्यापार अच्छा चलने लग जायेगा। अगर वह बेरोजगार है तो उसे अच्छी नौकरी मिल जायेगी।

सूरः इसरा

जिसने स्वप्न में सूरः इसरा को पढ़ा तो यह किसी सरकारी मामले में फंसने का संकेत है। हालांकि बाद में वह उसमें बरी हो जायेगा।

सूरः कहफ

जो शख्स स्वप्न में सूरः कहफ पढ़ता है तो वह लम्बी और स्वस्थ जिन्दगी का भरपूर आनन्द उठाएगा।

सूरः मरयम

जिसने स्वप्न में सूरः मरयम पढ़ा तो वह तंगहाली में रहेगा। मगर शीघ्र ही उसका समय अच्छा आ जायेगा।

सूरः नून

इस सूरः को पढ़े तो वह जीवन में सफलताएं प्राप्त करेगा।

सूरः हक्का

इस सूरः को पढ़े तो वह डरपोक होगा।

सूरः मुआरिज

इस सूरः को पढ़े तो वह इंसाफ और शांतिप्रिय होगा।

सूरः नूह

इस सूरः को पढ़े तो वह बुराईयों का विरोध करने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा।

सूरः जिन्न

इस सूरः को पढ़े तो वह जिन्नों से बचा रहेगा।

सूरः मुजाम्मिल

इस सूरः को पढ़े तो धैर्यवान् और सहनशील रहेगा।

सूरः मुहस्सिर

इस सूरः को पढ़े तो वह रिज्क की तंगी में रहेगा; परन्तु अल्लाहतआला उसकी तंगहाली दूर करेगा।

सूरः सज्दा

जो कोई इस सूरः को स्वप्न में पढ़े तो वह स्वस्थ और तन्दुरुस्त हो जायेगा।

सूरः अहजाब

स्वप्न में सूरः अहजाब पढ़े तो उसकी आयु में वृद्धि होगी; परन्तु वह मित्रों के साथ विश्वासघात करेगा।

सूरः सबा

जो काई इस सूरः को पढ़े तो वह बहुत बहादुर और निडर होगा तथा उसे हथियारों से प्रेम होगा।

सूरः फातिह

स्वप्न में इस सूरः को पढ़े तो उसे अल्लाहतआला के साक्षात् दर्शन हो जायेंगे।

सूरः यासीब

जो इस सूरः को स्वप्न में पढ़े तो वह पुण्य कर्म करने वाला होगा।

सूरः साफ्फात

स्वप्न में सूरः साफ्फात पढ़े तो उसको दो पुत्रों की प्राप्ति होगी और वह मेहनत की रोटी खाने वाला शख्स होगा।

सूरः रवाद

जो कोई स्वप्न में इस सूरः को पढ़े तो वह अत्याधिक स्वाभिमानी तथा स्त्रियों में रुचि रखने वाला होगा।

सूरः तौबा

जो शख्स स्वप्न में सूरः तौबा पढ़े तो उसकी मित्रता सभ्य और सज्जनों से होगी।

सूरः यूनुस

जिसने स्वप्न में सूरः यूनुस को पढ़ा तो उसे कुछ आने वाली मुसीबतों के संकेत मिलते हैं। हालांकि वह शख्स सदैव प्रत्येक की भलाई के लिए तैयार रहेगा।

सूरः हूद

जो कोई स्वप्न में सूरः हूद को पढ़ता है, वह अत्याधिक यात्रा करने वाला होगा और उसके शत्रु अधिक होंगे।

सूरः युसुफ

जो शख्स स्वप्न में सूरः युसुफ पढ़ें तो उसके परिवारजन ही उसके विरुद्ध हो जायेंगे। परन्तु वह यात्राओं से लाभ उठायेगा।

सूरः राद

जिसने स्वप्न में सूरः राद को पढ़ा तो यह तंगहाली, परेशानियाँ और जीवन के अंतिम समय के निकट आने का संकेत है।

सूरः इब्राहीम

जो कोई स्वप्न में सूरः इब्राहीम पढ़े तो वह शख्स तस्बीह करने वालों में से होगा।

सूरः मुकाबिर (तकासुर)

इस सूरः को पढ़े तो उसको सब्र की तौफीक होगी।

सूरः हुम्जा

इस सूरः को पढ़े तो वह पूंजी का संचय करेगा और उसे भले कार्यों में खर्च करेगा।

सूरः फील

इस सूरः को स्वप्न में पढ़े तो वह शत्रुओं पर विजय हासिल करेगा।

सूरः कुरैश

इस सूरः को पढ़े तो वह गरीबों का मददगार और मजहब व कौम का नाम रोशन करेगा।

सूरः माअन

इस सूरः को पढ़े तो वह अपने दुश्मनों पर फतह व कामयाबी हासिल करेगा।

सूरः कौसर

इस सूरः को पढ़े तो जीवन के अंतिम समय में उसकी प्रसिद्धि बढ़ेगी।

सूरः काफिरून

इस सूरः को पढ़े तो उसको काफिरों से जिहाद की तौफीक होगी।

सूरः ताहा

जो कोई स्वप्न में सूरः ताहा पढ़ता है तो वह धर्म पारायण व्यक्ति होगा।

सूरः अंबिया

जों शख्स स्वप्न में सूरः अंबिया पढ़े तो लोग उसकी तारीफ करेंगे।

सूरः हज

जिसने स्वप्न में सूरः हज पढ़ा नो उसे हज की तौफीक होगी। अगर वह रोगी है तो उसकी मृत्यु नजदीक आने का संकेत है।

सूरः :मुमिनून

जो कोई व्यक्ति स्वप्न में सूरः मुमिनून पढ़े तो उसे एक खतरनाक रोग होने का अंदेशा है।

सूरः नूर

जो स्वप्न में सूरः नूर पढ़े तो घह संदैव स्वस्थ रहेगा और भलाई के कार्य करेगा।

सूरः फुरकान

जिसने स्वप्न में सूरः फुरकान पढ़े तो बह सत्यवादी और नेक शख्स होगा।

सूरः निसा

जो कोई सूरः निसा को स्वप्न में पढ़ता है तो उसे जीवन के अंतिम पड़ाव में बुरे बर्ताव वाली एक अति सुन्दर स्त्री का साथ मिलेगा।

सूरः माइदा

जिसने स्वप्न में सूरः माइदा को पढ़ा वह शख्स बहुत मेहमान नवाज होगा।

सूरः अनआम

जो शख्स सूरः अनआम को स्वप्न में पढ़ता है, वह दीन-धर्म को मानने वाला व्यक्ति होगा।

सूरः आराफ

जिस किसी ने स्वप्न में सूरः आराफ को पढ़ा तो वह शख्स हर इल्म से लाभ उठायेगा।

सूरः अन्फाल

जो कोई स्वप्न में सूरः अन्फाल पढ़ता है, उसे सम्मान और लोकप्रियता हासिल होगी।

सूरः नस

जो कोई शख्स स्वप्न में सूरः नस को पढ़ेगा तो उसकी शीघ्र मृत्यु होने की संभावनाएं बनती हैं; क्योंकि यह सूरः रसूलुल्लाह सल्ल० के लिए हुई अर्थात् इसके उतरने के पश्चात् ही उनकी मृत्यु हुई थी। इब्ने सीरीन तुल्लाहु अलौहि ने फरमाया कि यह अंतिम सूरः है, जो रसूलुल्लाह अलौहिव सल्लम पर आसमान से उतरी हुई है।

सूरः मसद (लहब)

इस सूरः को पढ़ने वाला स्वप्न में लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य कर लेगा। इसके परिवार में सदस्यों की संख्या कम होगी और उसका जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

सूरः इखलास

जो कोई शख्स स्वप्न में इस सूरः को पढ़ेगा तो उसकी कोई भी संतान जीवित नहीं रहेगी।

सूरः फलक

इस सूरः को स्वप्न में पढ़ने वाला तमाम प्रकार की बुराइयों से जीवन भर बचा रहेगा।

सूरः नास

इस सूरः को स्वप्न मे पढ़े तो वह तमाम परेशानियों से बचा रहकर अल्लाहतआला की पनाह में महफूज रहेगा।

इस्लामी शाबर

किसी भी मन्त्र को काट करने का मन्त्र

'तेली की खोपड़ी चाट चाट के मैदान, ऊपर चढ़ा मुहम्मद सुल्तान, मुहम्मद सुल्तान किसका बेटा, फातिमा का बेटा, सूअर खाय हलाल करे पै दें पांव वज्र की कील काट तो माता के दूध हराम कह।'

किसी भी शुभ समय अथवा जुमेरात (गुरुवार) की रात्रि को पूरी रात भर इस मन्त्र का जप करते रहने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

हजरत पैगम्बर अली की चौकी

'याही सार सार सार, जिन्न देव पारी नवस्कंफार, एक खाए दूसरे फार, चहुं अमिया पसार, मलायक अस चार, दुहाई दस्तखे जिब्राइल, बाई ये खैभि काइल, दाईं दस्न दस्न, हुसैन पीठ खदे खेई, आमिल कलेजे राखे

इन्नाइल, दुहाई मुहम्मद अलोलाह इलाह की, कंगूर लिल्लाह की खाई, हजरत पैगम्बर अली की चौकी, नख्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।;

जब कभी भी कोई अमल करना हो तो इस मन्त्र को पढ़कर सात दफा ताली बजायें। किसी भी साधना से पूर्व इस मन्त्र को सात बार पढ़कर अपने चारों ओर सुरक्षा रेखा भी खींची जा सकती है। रोग झाड़ने हेतु इसका झाड़ा सात बार दें।

सुरक्षा मन्त्र

'छोटी-मोटी थमंत वार को वार बांधे, पार को पार बांधे, मरघट मसान बांधे, टोना और टंवर बांधे, जादू वीर बांधे, दीठ और मूठ बांधे, बिच्छू और सांप बांधे, भेड़िया-बाघ बांधे, लखूरी सियार बांधे, अस्सी अस्सी दोष बांधे, कालिका लिलार बांधे, योगिनी संहार बांधे, ताडिका कलेज बांधे, उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम बांधे, मरी मसानी बांधे, और बांधे डायन भूत के गुण, लाइल्लाह को कोट इल्लल्लाह की खाई, मुहम्मद रसूल्लिल्लाह की चौकी, हजरत अली की दुहाई।'

ग्रहण काल हो तो ग्रहण प्रारम्भ से ग्रहण के अन्त तक निरन्तर जप करने से भी मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यदि ग्रहण का समय १०-१५ मिनट हो तो भी मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

किसी भी प्रकार की साधना-सिद्धि अथवा तांत्रिक प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व इस मन्त्र को मात्र एक दफा पढ़ लेने से ही साधक पूर्णतः सुरक्षित रहता है।

गो जोगिन सिद्धि मंत्र

'अगारी जो गुरु यागे जोगिन गुरु डंड बतियां करियां बलईयां री जोगन मुख अनरिता गायति रही रतियां गो जोगिन इन अकेलियां गो मारो हैह तालियां गो जोगिन बांधऊं नजरियां गो जोगिन आ पहियां न आये तो दुहाई मईया बनिता की, दुहाई सलिमा पैगम्बर की, दुहाई सलाई छू।'

शुभ तिथि-नक्षत्र में या जुम्मे के पास में धूप-दीप आदि जला लेवें और चमेली के फूलों की माला समीप रखकर सावधानी पूर्वक रात्रिभर उक्त मन्त्र का जप करते रहें। गो जोगिन प्रकट होवे तो पुष्प माला तुरन्त ही उसे पहना दें, तो वह प्रसन्न होकर अलौकिक सिद्धि प्रदान कर देगी।

मुट्ठी पीर की सिद्धि मन्त्र

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्! साह चक्र की बावड़ी, गले मोतियन का हार, लंका सो को समुद्र सी खाई, जहाँ फिरे मुहम्मदा वीर की दुहाई, कौन वीर आगे चले, सुलेमान वीर चले, दर्शनी वीर चले, नादिरशाह वीर चले, मुट्ठी पीर चले, नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई, शब्दा सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

हमजाद सिद्ध मन्त्र

'आगम निगम की खबर लगावें, सोऽहं पारब्रह्म को नमस्कार।'

इस मन्त्र को चालीस दिनों तक प्रतिदिन २५० दफा जप करने से हमजाद सिद्ध हो जाता है। साधक एक स्थान पर बैठे-बैठे ही दूर देशों तक का हाल पता कर सकता है।

जिन उच्चाटन मन्त्र

'मां बादशाह सब बादशाहों के सफेद घोड़ा। सफेद पाखर, जिस पर चढ़े जिन्नों के बादशाह, बारह कोस अगाड़ी, बारह कोस पिछाड़ी, जो कुछ काम कहूं बजा लावे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

किसी भी शुभ समय पर इस मन्त्र को दस हजार दफा जप करके सिद्ध कर लेवें। फिर जिन्न बाधा के रोगी पर इस मन्त्र से अभिमंत्रित जल छिड़क देने से जिन्न भाग जाता है।

वीर मुहम्मद मन्त्र प्रयोग

'अन्तरकुशी सत्य खुदाय तिउंगा कटोरा लोहे के कोट वज्र का ताला, अल्लाह नबी बैठे रखवाला, हाथ की पांव की उरिया धुरिया, तैंतीस कोस की बलाय जात रहे, वीर मुहम्मदा तेरी आन है।'

इस मन्त्र का विधिवत् प्रयोग करने से मनुष्य के भूत-प्रेत-जिन्नादि समस्त दोषों का प्रभावी ढंग से निवारण किया जा सकता है।

व्यापार वृद्धिकारक मन्त्र

'ओम नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल पूर्व को धाया देव दानवों को बांधि लाया दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत को बांधि लाया तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अयुत पितृ को बांधि लाया चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें छलाद्रि कोऊ रहन न पावें रोग-दोष को दूर भगावें शब्द सांचा, पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

कपड़े के चार पुतले बनावें और इस मन्त्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूंककर उन्हें अभिमन्त्रित कर लेवें। तत्पश्चात् अपने व्यवसायिक स्थल के चारों कोनों में एक-एक पुतला उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए गाड़ दें। इसके बाद प्रतिदिन व्यापार स्थल पर जाने से पूर्व एक माला इस मन्त्र की अवश्य जपें।

सर्ववशीकरण मन्त्र

'दुहाई बाबा हनुमान की दुहाई, मरघट वाली की दुहाई, चौगान

वाली दुहाई, मुरदे खाने वाली की दुहाई, पाँचों पीरों की दुहाई, सैय्यद बादशाह की दुहाई, ला इलाही लिल्लाह मोहम्मद उर रसूल लिल्लहा, दुहाई पवन की, दुहाई बावरी की, मीरा साहिबा की दुहाई, कालका माई की दुहाई, नगरकोट वाली दुहाई, बाबा बालकनाथ की दुहाई, गुरु गोरखनाथ की दुहाई, अलखिया बाबा की दुहाई, मरघट वाली की दुहाई, भैरों काली की दुहाई, बंगाली बाबा की दुहाई, भैरों काली की दुहाई, बंगाली बाबा की दुहाई, पहलवान की दुहाई।

किसी भी सूर्यग्रहण के अवसर पर सम्पूर्ण ग्रहण काल में उक्त मन्त्र को निरन्तर जप करके मन्त्र को सिद्ध कर लें। खाने की वस्तु (यथा लौंग, सुपारी, इलायची, मिठाई, टॉफी, चॉकलेट, पान इत्यादि) पर उक्त मन्त्र को इक्कीस दफा पढ़कर अभिमन्त्रित कर लेवें और जिसे वश में करना हो, उसे वह वस्तु किसी भी तरह खिला दें।

धन लाभ मन्त्र

'या मुसब्बिब वल असबाल।'

इस मन्त्र को किसी सादे कागज पर ५०१ दफा लिखकर सिद्ध कर लें। तत्पश्चात् एक अन्य कागज पर इस मन्त्र को लिखकर घर में पूजा-स्थल पर रखने से घर में सुख-शान्ति में वृद्धि और धन लाभ होने लगता है।

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

'बैठे चबूतरे पढ़े कुरान, हजार काम दुनिया का करे, एक काम मेरा कर, न करे तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।'

किसी भी शुभमुहूर्त में इस मन्त्र को ५१००० दफा जप करके सिद्ध कर लें। इसके पश्चात् जरूरत के वक्त इसे पढ़ें।

वशीकरण मन्त्र

'अल्लाह बीच हथेली, मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार। मजे करे मार मार, उसे मेरे बाएं कदम तरे डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर पड़े बज्र का बान, बहक्के लाइल्लाह अल्लाह, है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।'

किसी भी रविवार से आरम्भ करके शनिवार तक प्रतिदिन ११०१ की संख्या में उपरोक्त मन्त्र का जप एक निश्चित समय पर करें। लोबान की धूनी देवें, अगरबत्ती जलाकर रखें तथा अपने पास मिठाई रखें। किसी भी खाने की वस्तु पर सात दफा उपरोक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें और वह वस्तु जिसे भी खिलायेंगे, वह वशीभूत होगा।

सर्वमनोकामना पूरक मन्त्र

'मखनी हाथी जर्द अम्बरी, उस पर बैठी कमाल खां की सवारी, कमालखां मुगल पठान, बैठे चबूतरे पढ़े कुरानें, हजार काम दुनिया का करे, एक काम मेरा कर, न करे तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई, तेरे पैगम्बरों की दुहाई।'

प्रतिदिन नियमपूर्वक अधिकाधिक संख्या में इसे जपने से अत्याधिक लाभ होता है।

वशीकरण हेतु

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आलमोसि हो वल्लाह।'

किसी भी जुमे (शुक्रवार) के दिन से आरम्भ करके चालीस दिनों तक प्रतिदिन एक माला इस मन्त्र की जपने से ४० दिन पश्चात् यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। वशीकरण हेतु किसी भी खाने-पीने की वस्तु को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फूँक मारकर साध्य स्त्री-पुरुष को खिला देने से वह वशीभूत हो जायेगा।

सकुशल यात्रा हेतु

'शेख फरीद की कामरी अंधियारी निशा तीन चीज बराय ओम नमो स्वाहा।'

सर्वप्रथम किसी शुभ समय में उक्त मन्त्र को ११००० दफा जप करके सिद्ध कर लें। तत्पश्चात् जब कभी यात्रा पर जावें तो जाने से पूर्व यह मन्त्र तीन दफा अवश्य पढ़कर ही यात्रा आरम्भ करें।

सुपारी वशीकरण मन्त्र

'अमुक गुरु गुफतार जाग-जाग अलाउद्दीन शैतान सात बार अमुक के जिपा आन जो न माने तो तेरी अम्मा की तलाक हमशीरा की तलाक।'

इस मन्त्र को किसी भी जुमेरात को ११४४ दफा पढ़कर सिद्ध कर लें। अब किसी साबुत सुपारी को ३१ दफा उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लें। इस सुपारी को जिसे भी खिला देंगे, वह वशीभूत होगा।

वशीकरण मन्त्र

'बड़ पीपल का था जहां बैठा अजामील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बन 'अमुक' को जा रान जो राने तो धोबी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े जो राजा चाहे राजा का मैं चाहूं अपने काज को मेरा काम न होगा तो आनसी में तेरा दामनगीर रहूंगा।'

किसी भी माह के कृष्णपक्ष के शनिवार से आरम्भ करके ३१ दिनों तक अर्द्धरात्रि के वक्त २१ राई के दांने हाथ में लेकर प्रत्येक दाने को उक्त मन्त्र से २१

दफा अभिमन्त्रित करके साध्य स्त्री का नाम लेते हुए अग्नि में डालते जायें। इस प्रबल प्रयोग के प्रभाव से साध्य स्त्री अवश्य ही साधक के वशीभूत हो जायेगी।

मुसीबत दूर करने हेतु संकट मोचक मन्त्र

इलाही बहुर्मत सईद मही अलदीन
इलाही बहुर्मत शेख मही अलदीन
इलाही बहुर्मत गौस मही अलदीन
इलाही बहुर्मत ख्वाजा मही अलदीन
इलाही बहुर्मत गरीब मही अलदीन
इलाही बहुर्मत मसकीन मही अलदीन
इलाही बहुर्मत लेख मही अलदीन
इलाही बहुर्मत कुतुब मही अलदीन
इलाही बहुर्मत मखदूम मही अलदीन
इलाही बहुर्मत दरवेश मही अलदीन
इलाही बहुर्मत वली मही अलदीन

इस मन्त्र के द्वारा समस्त परेशानियों से सरलता से छुटकारा पाया जा सकता है। किसी भी नौचन्दी जुमेरात से नियमित इस मन्त्र का जप आरम्भ कर दें और जब तक मुसीबतें/परेशानियाँ दूर न हो जायँ, तब तक प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक इस मन्त्र का जप करते रहें।

भूत-प्रेतादि दोष नाशक गंडा

'ओम नमो आदेश गुरु को, लड़गढ़ी सों मुहम्मद पढाण, चढ्या श्वेत घोड़ा, पलाण, भूत बांधि, प्रेत बांधि, चौंसठा जोगिनी बांधि, अड़सठ स्थान बांधि, बांधि, बांधि रे चोखी तुरकिनी का पूत, बेगि बांधि, जो तू न बांधे तो अपनी माता की शैय्या पर पांव धरे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस प्रयोग को करते समय आमिल (तांत्रिक) को अपने पास दीपक जलाकर रखना चाहिए, लोबान की धूनी देवें तथा समीप में थोड़ी मिठाई अवश्य रखें। अब रोगी के सिर से लेकर पाँव तक की लम्बाई का सात रंग वाला डोरा नाप कर लेवें और उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए उस सूत के डोरे में ३१ गांठें लगाकर गण्डा तैयार कर लें। इस प्रकार से तैयार गण्डे को उस रोगी के गले में पहना देवें। गण्डे के प्रभाव से रोगी की समस्त ऊपरी बाधायें दूर हो जाती हैं।

पहला कुफ्ल

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्स मीइल बसीरिल्लाजी लैसा

कमिस्लेही शयदूनहुवा बिकुल्ले शयइन हकीम बिरहमते काया अहमर्राहिमीन साल्लिल्लाहो अला-मुहम्मदिन व अला आलेही व असहाविहि अजमईन०

दूसरा कुफ्ल

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिहिल खालेकिल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन व हुवल फत्ताहुल अलीम बिरहमते का या अरहमर्राहिमीन०'

तीसरा कुफ्ल

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन हुवल गनी इलकदीरो बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन०'

चौथा कुफ्ल

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन व हुवल अजीजुल कीरीम बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन०'

पाँचवाँ कुफ्ल

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन व बहुवल अली मिलखबीर बिरहमतेब य या अरहमर्राहिमीन०'

छठा कुफ्ल

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिल अजीजिर्रहोमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन व हुवल अजीजुल गफूर बल्लाहो खैसन हाफिजा व हुवा अरहमर्राहिमीन०'

उपयोग

उपरोक्त छः कुफ्लों का निम्न रूप से उपयोग किया जाता है—

पहला कुफ्ल—भूत-प्रेतादि व विष प्रभाव नाशक।

दूसरा कुफ्ल—मासिक धर्म नियमित करने व शीघ्र प्रसव हेतु।

तीसरा कुफ्ल—घर छोड़कर भागे व्यक्ति को वापिस बुलाने हेतु।

चौथा कुफ्ल—गुमशुदा पालतू पशु को वापिस बुलाने हेतु।

पाँचवाँ कुफ्ल—स्मरण शक्ति में वृद्धि करने हेतु।

छठाँ कुफ्ल—मिर्गी, पागलपन व उन्माद रोग के उपचारार्थ।

१. पहली कुफ्ल को अथवा सभी छः कुफ्लों को एक कागज पर लिखकर ऊपरी बाधाग्रस्त रोगी के हाथ में बांध दें।

२. दूसरी कुफ्ल को मिठाई पर सात दफा पढ़कर जिस स्त्री का मासिक धर्म रुक गया हो अथवा कोई स्त्री प्रसव वेदना से पीड़ित हो तो उसे वह मिठाई खिला दें।

३. तीसरी कुफ्ल अथवा सभी कुफ्लों को सात कंकड़ों पर सात-सात दफा पढ़कर उन्हें अग्नि में स्वाहा कर दें। भागा व्यक्ति वापस आयेगा। यह तीसरी कुफ्ल है।

सूरः जिन्न (पारा-२९)

जिस आदमी को आसेब आने की शिकायत हो तो उस पर सूर: जिन्न को एक बार पढ़कर दम करें या फिर इस सूर: को लिखकर उसकी बाजू पर बांध देवें तो आसेव जाता रहेगा।

सूरः हूद (पारा-११-१२)

इस सूर: को हिरण की खाल पर लिखकर जो कोई भी शख्स अपने पास रखेगा तो वह सर्वत्र विजय प्राप्त करेगा। यदि इस सूर: को जाफरन से लिखकर तीन दिनों तक लगातार सुबहो-शाम कोई शख्स पी ले तो उसका सारा भय जाता रहेगा और दिल मजबूत हो जायेगा।

सूरः नाजिआत (पारा-३०)

यदि इस सूर: को किसी ढाल पर लिखकर दुश्मनों का मुकाबला करें तो सफलता मिलेगी।

सूरः फील (पारा-३०)

शत्रु से मुकाबले के वक्त यदि इसे पढ़कर उनकी ओर फूंक मार दें, तो शत्रु से बचाव हो और शत्रु पर हावी हो जायेंगे।

सूरः ताहा (पारा-१६)

जो कोई प्रतिदिन सुबह सवेर सूर: ताहा को पढ़े तो वह सबका प्रिय बन जायेगा और हर कोई उसे चाहने लगेगा।

कुरआनी इस्मे आजम (सूरतें)

कुरआन में लिखी गयी किसी भी सूरतों (सूर) का नेक नियत से पाठ किया जाये तो खुदा की रहमत हासिल हो जाती है। कुरआने पाक में सूरतें काफी संख्या में हैं। सभी सूरतों को यहाँ पर देना असंभव है। लेकिन कुछ सूरतें नीचे दी जा रही हैं। इसे प्रयोग में लाकर लाभ उठा सकते हैं।

सूरः अलबुरुज (पारा-३०)

कोई औरत अगर बच्चे का दूध छुड़वाना चाहे तो इस सूर: को लिखकर उसकी भुजा पर बांध दें, तो बच्चा आसानी से दूध छोड़ देगा।

सूरः अल कद्र (पारा-३०)

अगर किसी से मुहब्बत है तो उसके बाल पकड़कर इस सूर: को पढ़े तो उसके मुहब्बत में वृद्धि होगी और उसे आपकी कोई बात बुरी नहीं लगेगी।

सूरः हिज्र (पारा-१३)

इस सूर: को जाफरान से लिखकर शादी-शुदा औरत को पिलाया जाय, तो उसका दूध बढ़ जायेगा।

सूरः युसूफ (पारा-११-१२)

इस सूर: को लिखकर या ताबीज में बनाकर जो व्यक्ति अपनी दाहिनी बाजू पर धारण करता है, उसकी पत्नी उससे अत्याधिक प्रेम करने लगती है। कुंवारे लोग अपने प्रेम को बढ़ाने के लिए इस सूर: का प्रयोग कर सकते हैं।

सूरः जासियह (पारा-२५)

बच्चा पैदा होते समय इस सूर: को लिखकर बांधने से बच्चा समस्त आसेब तथा खतरनाक बाधाओं से बचा रहता है।

सूरः वाकिआ (पारा-२६०)

इस सूर: को जो आदमी रात में सोते समय एक बार पढ़ ले तो वह कभी भूखा नहीं रहेगा। इसे बार-बार पढ़ने से धन में वृद्धि होती है।

सूरः जिन्न

यदि कोई व्यक्ति भूत बाधा से पीड़ित हो तो इस सूर: को एक बाद पढ़कर फूँक मारे अथवा इस सूर: को लिखकर उसकी दाहिनी बाजू में बांध दे तो उसके असर से वह ऊपरी वलाओं से मुक्त हो जायेगा।

सूरः अल फज्र (पारा-३०)

इस सूर: को आधी रात में पढ़कर पत्नी के साथ सहवास किया जाये तो नेक औलाद पैदा होगी और वह औलाद लड़का ही होगा।

सूरः नबा (पारा-३०)

यह चमत्कारी सूर: पढ़कर या बाजू में बांधकर किसी उच्चाधिकारी या हकीम के पास जाय, तो वह आपके हक में काम करेगा।

सूरः तहरीम (पारा-२९)

इस सूर: को मिर्गी रोग से पीड़ित व्यक्ति के ऊपर पढ़कर दम किया जाय, तो उसे आराम मिलेगा व मिर्गी रोग ठीक हो जायेगा। अगर कोई नींद की बीमारी से पीड़ित है तो उसे चैन की नींद आयेगी। इसके अलावा किसी के ऊपर कर्जे का बोझ हो तो इस सूर: की तिलावत करने से कर्जे से मुक्ति पा जाएगा।

सूरः फतिहा (पारा-१)

इस सूर: को एक सौ ग्यारह बार पढ़कर हथकड़ी पर दम किया जाये तो कैदी को जल्द ही रिहाई मिलेगी। आख़िरी रात में इकतालीस दफा इसे पढ़ने से बिना मेहनत किये रोजी मिल जायेगी।

सूरः मरयम (पारा-१३)

इस सूर: को कांच के गिलास में लिखकर रखें तो घर में सुख-शान्ति व

सुख-समृद्धि बनी रहती है, अगर सूर: को लिखकर घर की दीवार पर टांग दिया जाय, तो घर तमाम आफतों से सुरक्षित रहता है।

सूरः मुल्क (पारा-२९)

यदि किसी की आँखें दुखती हैं तो इस सूर: को लगातार तीन दिन तक तीन बार पढ़कर दम करें तो जरूर आराम मिलेगा।

सूरः तकासुर (पारा-३०)

यदि किसी को आधा सीसी का दर्द हो तो असर की नमाज के बाद इस सूर: को पढ़कर दम करें तो दर्द से आराम मिल जायेगा।

सूरः बनी इसराईल (पारा-१५)

इस सूर: की मदद से अगर कोई बच्चा न बोलता हो तो बोलने लगता है। इसे जाफरान से लिखकर पानी से धोकर वच्चे को पिला दें। इस सूर: के प्रभाव से बच्चा अवश्य ही बोलने लगेगा।

वशीकरण टोटका

इंदोरनि, चिनावरी और मैनसिल को बराबर-बराबर लेकर जौकुट करके अपने अंग में धूल देने से देखने वाला व्यक्ति मोहित हो जाता है।

बिजोरे की जड़ और धतूरे के बीज को प्याज के साथ महीन पीसकर जिसे सुंघाया जाय, वह वश में हो जाता है।

मंगलवार के दिन जब अमावस्या हो तो उस दिन दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर पवित्रतापूर्वक वन में जाकर उत्तर की ओर मुंह करके खड़े होकर अपामार्ग के वृक्ष को देखे। फिर उसी स्थान पर ब्राह्मण को बुलाकर उस वृक्ष की विधिपूर्वक पूजा करें तथा ब्राह्मण को १६ माशा स्वर्ण का दान दें। उसके बाद उस ब्राह्मण के द्वारा अपामार्ग के बीजों को साफ करके घर चले आवें। मार्ग में किसी से कुछ न बोलें। उन बीजों को साफ करके अगर एक बीज राजा को खिला दिया जाय, तो राजा तक जीवन भर के लिए वश में रहता है।

चिता की भस्म, कूट, वच, तगर और कुमकुम, इन सबको एक साथ पीसकर स्त्री के मस्तक पर और पुरुष के पांव के नीचे डालने से वे वशीभूत हो जाते हैं।

बेलपत्र और मातुलंग को बकरी के दूध में पीसकर तिलक लगाने से श्रेष्ठ वशीकरण हो जाता है।

पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग के बीज लेकर उन्हें भोजन तथा पानी के साथ राजा को सेवन कराने से राजा भी वशीभूत हो जाता है।

उल्लू के मांस में बकरे की मांस मिलाकर एक रत्ती प्रमाण पानी के साथ जिसे दिया जाय, वह दास होकर चरणों में आ गिरता है।

रात्रि के समय स्वयं का वीर्य हाथ में लेकर बाँई उंगली से जिस स्त्री-पुरुष के पैर के अंगूठे में लगा दिया जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

घी, ग्वार के कंद में भांग के बीज पीसकर तिलक करने से वशीकरण होता है।

छछूंदर, काले सर्प का फन तथा बिच्छू के डंक को लाकर संध्या के समय अपने अंग में धूप देने वाला व्यक्ति जिसको देखे, वही मोहित हो जाता है।

नीलकमल, गुग्गुल और अगर इन सबको बराबर-बराबर मात्रा में लेकर अपने सभी अंगों में धूनी दें, तो देखते ही सभी मोहित हो जाते हैं।

पुष्य नक्षत्र में सिंघी की जड़ को उखाड़ लाए। उसे कमर में बांधकर राजसभा में जाए तो सभी वश में हो जायेंगे।

उदुम्बर के फूल की बत्ती बनाकर मक्खन भरे दीपक में जलाकर रात्रि में काजल पारने और उस काजल को आँखों में लगाने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

धतूरे के पंचांग को चूर्ण कर उसे भस्म तथा सर्प के रुधिर में मिलाकर संध्या के समय अपने शरीर पर धूप देने से जो देखता है, वही मोहित हो जाता है।

उल्लू के मांस को छाया में सुखाकर चूर्ण बना लें। उस चूर्ण को जिस स्त्री-पुरुष के मस्तक पर डाला जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

तगर, कूट, हरताल और केसर इन सबको बराबर मात्रा में लेकर अनामिका उंगली के रक्त में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

खंजन की बीट व मरे हुए जुगनू को पीसकर टिकिया-सी बना लें, फिर उसे पृथ्वी में गाड़कर फूँक दें। जब जल जायें तब उस भस्म को अपने शरीर पर लगायें तो देखने वाले सब मोहित हो जायेंगे।

पुष्य नक्षत्र की अंधेरी रात्रि में संध्या के समय दीपक जलाकर उसकी लौ से काजल बनायें। उस काजल में मोर की बीट, हरताल और सुहागा मिलाकर जिसके मस्तक पर डाल दिया जाये, वह वशीभूत हो जायेगा।

चैत्र मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन चीते के पेड़ को न्यौत आयें, फिर नवमी के दिन उसे लाकर धूप-दीप देकर अपने पास रखने से सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

चन्द्रग्रहण के समय सफेद सरफांको की जड़ को विधिपूर्वक उखाड़कर पानी के साथ सील पर पीसें तथा उसका आँख में अंजन करें तो देखने वाले सभी लोग वशीभूत हो जाते हैं।

पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को लाकर दाँयीं भुजा में बांधने पर सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

सुदर्शन की जड़ को भुजा में बांधकर राजा के पास जाने से राजा तक वश में हो जाता है।

चंदन, रोली, गोरोचन तथा कपूर इनको घोंटकर लगाने से राजागण वशीभूत हो जाते हैं।

मेढासिंगी, वच, राल, खस, चन्दन और छोटी इलायची इन सबको बराबर-बराबर मात्रा में कूट कर छान लें। फिर पहनने के वस्त्रों में इसे धूप की धूनी दें। इससे सब स्त्री-पुरुष वशीभूत हो जाते हैं।

श्रवण नक्षत्र के दिन लाया गया बेंत का टुकड़ा दाहिने हाथ में धारण करने से युद्ध में विजय प्राप्त होती है।

चंदन और बरगद की जड़ को पानी में पीसकर और बराबर मात्रा में भस्म मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले लोग वशीभूत हो जाते हैं।

रजस्वला स्त्री के रक्त में गोरोचन मिलाकर मस्तक पर तिलक करके जिसकी ओर देखा जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

रविवार के दिन दोपहर के पहले श्मशान में जायें। अपने दोनों हाथ पीछे की ओर करके एक लकड़ी को उठा लायें। उस लकड़ी को किसी एकांत स्थान में रखकर पूजन करें। इस तरह २१ दिन पूजन करते रहें। तत्पश्चात् बढ़ई के घर उस लकड़ी को ले जाकर सात टुकड़े करवायें। इसमें से एक टुकड़े को शत्रु के घर गाड़ दें तथा शेष टुकड़ों को नदी में बहा दें। इस तरह करने से शत्रु वश में हो जाता है।

काली जिह्वा वाली स्त्री के द्वारा प्रशंसित व्यक्ति या वस्तु के विकार उत्पन्न हो जाता है। यदि वही स्त्री उस व्यक्ति या वस्तु की निन्दा करेगी, तभी वह विकार मिटेगा।

उदंबर की जड़ को ललाट पर तिलक लगाने से उत्तम वशीकरण होता है।

पंचमी तिथि को हुर-हुर की जड़ खोद लायें। जड़ को सुखाकर व उसको पीसकर चूर्ण करके पान में रखकर जिसे खिला दिया जाय, वह आकर्षित होकर समीप चला आता है।

अपने दोनों हाथों व पैरों के नाखूनों को जलाकर किसी को भी उस भस्म को खिला दें, भस्म खाते ही वह आपके वश में हो जाएगा।

पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग के बीज लाकर खाने-पीने की किसी वस्तु के साथ किसी को भी खिला देने से वह वश में हो जाता है।

भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबो देने से शत्रु वशीभूत हो जाता है।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में किसी बगीचे में जाकर अनार तोड़ लायें। उस अनार को धूप देकर अपनी दाँई भुजा में बाँधकर राजसभा में जायें तो राजा वशीभूत हो जायेगा।

मुंस्ता की जड़ को मुँह में रखकर जिसके नाम पर उच्चारण किया जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में चम्पा की कली लाकर हाथ में बांधने से लोग वशीभूत हो जाते हैं।

शहद में खस एवं चन्दन मिला लें और इससे तिलक करें। इसके पश्चात् जिस स्त्री व पुरुष के गले में बाह डालेंगे, वह वश में हो जायेगा।

भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में यदि सुदर्शन की जड़ लाकर भुजा में बांधा जाय, तो सभी पर प्रभावशाली वशीकरण होता है।

पुष्य नक्षत्र में लाई गयी चमेली की जड़ को ताबीज में धारण करने से शत्रु भी वश में हो जाता है और उस पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

वशीकरण इत्र

मुहम्मत की इत्र हेतु चमेली, गुलाब, मोगरा इत्यादि किसी भी खुश्बूदार फूल का असली इत्र ही काम में लाया जाना चाहिए।

सूरः मुजिमल शरीफ का ग्यारह दफा सस्वर उच्चारण करें। तत्पश्चात् ग्यारह दफा ही दरूद शरीर का सस्वर जप करके इत्र पर दम करें। इस प्रकार मुहब्बत का इत्र बनकर तैयार हो जाता है।

इस इत्र को जो कोई भी सूंघ लेगा, वही आपके वश में होकर आपसे मुहब्बत करने लग जायेगा।

वशीकरण अंगूठी

अपने महबूब के हाथ की किसी भी (अथवा अनामिका) अंगुली की नाप का सामान्य-सा आइडिया लेकर चाँदी की एक शुद्ध अंगूठी तैयार कर लें। इस अंगूठी में नगीने वाली जगह मोम में सिंदूर मिलाकर उसकी गोली बनाकर फिट कर लें।

अब इस अंगूठी पर प्रतिदिन चालीस दफा 'कुलहुअल्लाह शरीफ' तथा चालीस दफा ही 'आयतुल कुर्सी' पढ़कर दम करें। इस प्रकार से यह प्रयोग बिना नागा लगातार इक्कीस दिनों तक करते रहें।

इक्कीस दिनों के पश्चात् इस अंगूठी को किसी भी प्रकार से प्रयत्न करके अपने महबूब के हाथ में पहना दें।

वशीकरण सुरमा

मुहब्बत का सुरमा बनाने की निम्नांकित विधि है—सर्वप्रथम किसी भी प्रकार से अपने महवूब द्वारा इस्तेमाल किया गया कोई भी कपड़े का एक टुकड़ा प्राप्त कर लें। अब खालिस काला सुरमा लेकर उसे उस कपड़े में लपेट लें। तत्पश्चात् कनीर के पुष्प लेकर उन्हें इमाम दस्ते में कूट लें और उसमें कपड़े में लिपटा हुआ सुरमा रखकर एक गोला-सा बना लें। इस गोले को छाया में सुखा लेवें। इसके बाद दस सेर गोबर के उपले (कन्डे) लेकर उन्हें जला लें और इस अग्नि में उस गोले को पका लें। ठण्डा होने पर गोले को निकाल लें और सप्ताह भर तक इस गोले को खरल में कूट-पीसकर एकदम वारीक सुरमा तैयार कर लें। इस प्रकार से 'मुहब्बत का सुरमा' बनकर तैयार हो जाता है।

प्रातःकाल स्नान के पश्चात् दोनों आँखों में सलाई से वह सुरमा लगाकर अपने महबूब के सामने जायें, तो वह आपसे सम्मोहित होकर आपके कदमों में गिर जायेगा और आपकी मुहब्बत में दीवाना हो जायेगा।

ध्यान रखें कि जिस वक्त सुरमा लगाकर महबूब के पास जा रहे हों तो रास्ते में न तो किसी से नजरें मिलायें और न ही किसी से बात करें। वरना जिससे भी आपकी नजरें मिल जायेंगी। वही आपका दीवाना होकर पीछे-पीछे चला आवेगा।

अनेक अमल

सफर में कामयाबी हेतु–सफर में जाने से पूर्व वुजू करके 'या हफीजु' को ९९८ दफा पढ़कर फिर इसके प्रारम्भ में तथा अन्त में दो-दो दफा 'दारूद' पढ़ें और तत्पश्चात् सफर के लिए निकलें तो जिस उद्देश्य के लिए सफर में जा रहे हैं, उसमें कामयाबी मिलेगी।

क्रोध समाप्ति हेतु–अगर किसी व्यक्ति को बेवजह और ज्यादा मात्रा में क्रोध आता हो तो उसे चाहिये कि क्रोधवश के वक्त निम्न मन्त्र को पढ़े—

'आऊद बिल्लाहि मिनश्शेयता निर्रजीम।'

इसे पढ़ने के बाद क्रोध अवश्य ही समाप्त हो जाता है। यह एक बेहतरीन अमल (टोटका) है।

गृह सुरक्षा हेतु–रात्रि में सोने से पूर्व तीन दफा 'आयतुल कुर्सी' को 'बिस्मिल्ला' के साथ पूरी पढ़कर तीन दफा इतनी जोर से ताली बजावें, कि उस ताली की आवाज से पूरा घर (मकान) में गूंज उठे।

इस साधारण मगर बेहद प्रभावशाली अमल (टोटके) का प्रयोग करते रहने से वह घर सदैव चोर-डाकुओं तथा अन्य प्रकार की बाधाओं से सुरक्षित बना रहेगा।

भयनाशक अमल

इसिबियल्लाहु व नेमल वकील।

यदि किसी जालिम से यातना पहुँचाने का डर हो तो प्राय: ये कलिमें पढ़ने चाहिए। किसी प्रकार की तकलीफ नहीं पहुँचेगी।

दुःख दर्द निवारक अमल

जो आदमी बहुत अधिक दु:ख-दर्द का शिकार हो या उसे कोई ऐसी मुहिम का सामना हो, जिसका सुधार उसकी ताक़त से बांहर तो उसे चाहिए कि सुबह की नमाज पढ़कर एक सौ बार यह पढ़े—

ला हवला वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहित अलिय्यिल अजीमव्या हरयु या कय्यूम या फरदु या वितरा या अ-ह-दु-या स-म-दु।

इंशाअल्लाह हर प्रकार के दु:खों से निजात पा जाएगा।

धनवान बनने का अमल

दौलतमंद बनने के लिए सुबह की फर्ज नमाज के बाद रोजाना २५ बार 'सूर: नसर:' दिल की गहराई के साथ कुछ दिन तक पढ़ें, इसके पढ़ने से गरीबी दूर हो जायेगी और वह मालामाल हो जायेगा।

गरीबी दूर करने हेतु

जो आदमी अपनी गरीबी से तंग आ गया हो। उसे चाहिये कि अधिकांश समय में यह दुआ पढ़ते रहे। खुदा के हुक्म से उसकी तंगी आसानी में और उसकी गरीबी मालदारी में बदल जायेगी।

व मा काइमिल इज्ज वलगुल्का वल बका या जुल जलाली वल जवदि वल फजली वल अताया व जुल अर्शुल हुदा या फजलुललिमा युरीद।

हर कार्य में सफलता हेतु अमल

यदि कोई आदमी यह चाहे कि उसकी सारी की सारी इच्छा एवं मनोकामनाएँ पूरी हो जायें तो उसको चाहिये कि वह पाँच साल तक बिना किसी नागा इस अमल को पढ़ा करे और जब तक अमल खत्म न हो जाय एक दिन का भी नागा न करे, वर्ना सारी मेहनत बेकार हो जायेगी।

अमल यह है—**'अल्लाहु हू हू हू'।**

इस इस्म मुबारक को एक हजार बार दरिया में अपने पांव लटकाये पढ़ता रहे। इस बीच में यदि कोई डरावनी शक्ल नजर आये तो किसी हाल में भी डरना नहीं चाहिये और किसी डर व आतंक को दिल में जगह न दे।

लाभ प्राप्त के लिए अमल

यदि यह देखा जाये कि किसी कारण अनाज का भाव कम हो गया है और

बराबर नुकसान होता जा रहा है तो परेशान होने की जरूरत नहीं और न अपने अनाज को सस्ते दामों में बेचने की जरूरत है बल्कि खुदा पर भरोसा करते हुए इस अमल को शुरू कर दे। यदि खुदा ने चाहा तो गैब से अनाज की बहुत अधिक मांग पैदा कर देगा, जिससे आपको लाभ ही लाभ होता चला जायेगा। इस अमल को पाँच दिन तक बराबर पढ़ना होगा।

अमल यह है जो आपको पढ़ना है—

'अन्जर फी या रहीम या करीम या गफूर·या सखी'।

रोजाना ग्यारह सौ बार पढ़ें। एक दिन का भी नागा नहीं होना चाहिए। अपना ध्यान एक ही ओर लगाये रखें और दिल से इस अमल को करते रहें, फिर देखिये अनाज की मांग किस प्रकार होती है। दाम दिन-ब-दिन बढ़ना शुरू हो जायेंगे।

माल-संतान की सुरक्षा हेतु

जो आदमी आयतुल कुर्सी को अपने माल या अपनी औलाद पर पढ़कर दम करे या लिखकर गले में लटका दे तो शैतानी हमलों से व बला से वे दोनों महफूज रहेंगे।

जिन्न-आसेब से बचाव

यदि आयतुल कुर्सी को लिखकर घर में दाखिल होने वाले दरवाजे पर लटका दी जाए या हर दिन तीन बार पढ़कर घर में फूंक दे तो जिन्न व भूत उस घर में कभी भी दाखिल न हो सकेंगे।

हर बीमारी का इलाज

सूरः फातिहा हर बीमारी की दवा है। फज्र की नमाज के फर्ज व सुन्नतों के बीच ४१ दफा पढ़कर रोगी के ऊपर दम कर दें। हर बीमारी दूर हो जाएगी।

मनोकामना पूर्ति का अमल

इशा की नमाज के बाद चार रकअत नमाज और पढ़ें जिसकी पहली रकअत में सूरः फातिहा के बाद आयतल कुर्सी तीन बार और बाकी रकअतों में सूरः फातिहा के बार सूरः इख्लास और सूरः फलक और सूरः नास एक बार पढ़ें और सलाम के बाद दुआ मांगें तो आपकी दिली मुराद अल्लाह पूरी कर देगा।

भूख व तंगहाली से बचाव

भूख व तंगी दूर करने के लिए **लाहवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अजीम** पढ़ना बड़ा जरूरी है। जो भी पढ़ेगा, थोड़े ही दिनों में मालामाल हो जाएगा।

दुःख, परेशानी व कैद से छुटकारा पाने हेतु

हर प्रकार की बीमारी, दुःख, परेशानी और कैद से निजात हासिल करने के

लिए नीचे लिखी आयतें करीमा को दिल की गहराई के साथ पढ़ें। यह आयत हर रोग के लिए बड़ी अकसीर है।

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तु मिनज्जालिमीन।

लाइलाज मामलों का हल

एक रिवायत में आया है कि यदि लाइलाज मामले पेश आयें तो ये कलिमें पढ़ना चाहिये—

हसबियल्लाहु नेमल मवला व नेमल वकील।

कर्ज की अदायगी

यदि कोई कर्ज से परेशान हो तो उसे चाहिये नीचे लिखी आयतें पढ़े, इन्शाअल्लाह कर्ज से निजात पा जाएगा।

अल्लाहुम्मा अकफिनी बिहलालिका अन हरामिका व अगनेनी बिफजलिका व अम्मन सवाका।

दुःखों से निजात पाना

जो आदमी हर सुबह-शाम ये कलिमे सात-सात बार पढ़ेगा, अल्लाह उसे दुनियाँ व आखिरत के दुःखों से निजात देगा।

हसवियल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अलयहि तवक कलतुव हुवा रब्बुल आर्शिल अजीम।

छोटे बच्चों की सुरक्षा हेतु

बच्चों को हर बला व मुसीबत से सुरक्षित रखने के लिए और बुरी नजर से बचाने के लिए नीचे लिखे कलिमे लिखकर बच्चे के गले में डाल दें।

आऊजु बिकलिमातिल्लाहि मिन शर्रि कुल्ली शयतानिन व हागविन व मिन शर्रि कल्लि अयनिन लाम्मतिन।

निन्यानवें मर्जों की दवा

नीचे का कलिमा ९९ बीमारियों की एक दवा है और इनमें से एक छोटी बीमारी दुख व गम है। वह कालिमा यह है—

ला हवला वलाकुव्वता इल्लाबिल्लाहि।

मिर्गी से बचाव हेतु

जिसे मिर्गी की बीमारी हो और दौरे पड़ते हों और वह बेहोश हो जाता हो तो उसे बेहोशी की हालत में उसके सीधे कान में अजान और उलटे कान में इकामत देनी चाहिये। इसी प्रकार सात व ग्यारह बार करने पर रोग खत्म हो जाता है, वर्ना मर्ज में कमी तो अवश्य हो जाती है।

मुकदमें में सफलता प्राप्ति हेतु

यदि कोई मुकदमे में फंस जाए तो जुहर की नमाज के बाद तीन या सात आदमी वुजू करके बैठ कर १२ हजार बार यह आयत पढ़ें।

व फवजा इशहदी इलल्लाहा इन्नल्लाहा बसीरून बिलाणिबाद।

शुरू व बाद में ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़ें। हर आदमी पढ़ते-पढ़ते अगरबत्ती व लोबान की खुशबू सुलगाता जाये। हर दिन पढ़ने के बाद कोई भी मीठी चीज पर सूर: फतिहा पढ़कर बांट दिया करे। इन्शाअल्लाह उसे मुकदमे से निजात हो जाएगी।

आँखों की रोशनी के लिए

इशा की नमाज के बाद 'या बसीरू' तीन बार पढ़कर और सीधे हाथ की शहादत की उंगली पर दम करके आँखों पर वह उंगली फेरे लिया करें तो इस अमल से आँखों की रोशनी तेज हो जाएगी तथा आँखों की बहुत सी बीमारियाँ भी अपने आप से दूर हो जायेंगी।

गैब से रोजी मिले

जो आदमी सूर: काफिरून (पारा-३०) और सूर: नसर (पारा-३०) मिलकर बीस दिन तक पढ़े और इसे लगातार पढ़ता रहे तो उसे गैब से रोजी मिलेगी। इसे सुबह की नमाज के बाद पढ़ा करे।

खेत की सुरक्षा हेतु

यदि किसी के खेत को जानवर खाते हों या खेत को खराब कर जाते हों तो दरिया की पाक रेत पर वुजू करके चार बार आयतल कुर्सी पढ़कर यह रेत थोड़ी-सी खेत के चारों कोनों में डाल दें। अल्लाह के हुक्म से खेती पूरी तरह महफूज रहेगी, लेकिन इसके लिए विश्वास और भरोसा होना शर्त है। इस अमल के बीच आपकी खेती को न तो जंगली जानवर और न दुश्मन ही किसी प्रकार का नुकसान पहुँचा सकेंगे।

भूली हुई वस्तु याद आ जाए

यदि कोई चीज किसी जगह पर रखकर भूल गये हैं और वह याद न आ रही हो तो इसके लिए आयत इन्ना लिल्लाहि राजिऊन पढ़ना शुरू कर दें। इसके पढ़ने की कोई संख्या नहीं है। जब तक भूली हुई चीज याद न आए बराबर पढ़ते रहें। इन्शाअल्लाह वह चीज याद आ जाएगी और आपको मिल जाएगी। इस अमल से चोरी हुई चीज भी कभी-कभी मिल गयी है।

अनाज में वृद्धि के लिए

किसान जब खेत से अनाज लाकर दूसरी जगह रखे तो पहले यह अमल करे

कि इस अनाज में से मुट्ठी भर अनाज लेकर उस पर सात बार आयतल कुर्सी पढ़कर दम करे और फिर उस अनाज को जिस पर मुट्ठी में लेकर अमल पढ़ा है पहली बार उस जगह डाल दे जहाँ अनाज जमा होता है और फिर अनाज लाकर वहाँ जमा करता जाए। अल्लाह के हुक्म से इस अनाज में बरक्कत होगी। यदि अनाज दस-बीस मन आता है तो वह २५ या ३० मन से भी अधिक हो जाएगा।

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाना

यदि किसी के घर कोई सदस्य अथवा कोई अजीज शख्स गुम हो गया हो अथवा घर छोड़कर चला गया हो तो उसे वापिस बुलाने हेतु सर्वप्रथम सात दफा सूर: यासीन को पढ़े। जब 'मुकर्रमीन' पर आयें तो भागे हुए शख्स का नाम लें और पुराने ताले पर दम करके, उसे बन्द करके हवा में उछाल दें। ताले को उस दिशा में उछालें जिधर की ओर हवा बह रही हो।

इस प्रयोग को करने से खोया हुआ अथवा भागा हुआ व्यक्ति कुछ ही दिनों में चमत्कारिक रूप से घर वापिस लौट आएगा।

प्रेम प्राप्ति हेतु

यदि किसी को अपने प्रति आकर्षित करना हो अथवा अपनी मुहब्बत में किसी को वेकरार करना हो तो किसी भी धातु के गिलास में पानी भरकर उस पर सात दफा या बुद्दूहु पढ़कर पानी को दम करें।

फिर उसमें से थोड़ा-सा पानी अपने मुँह में डालकर गरारा करें और उस पानी को वापिस गिलास में डाल दें। अब जो कोई स्त्री इस पानी को पीयेगी, वही आपकी मुहब्बत में बेकरार हो जायेगी।

मनोकामना पूर्ति हेतु

किसी. भी प्रकार की मनोकामना अथवा जरूरत की पूर्ति हेतु यह एक आजमाया हुआ प्रयोग है। इसे अवश्य करके देखें।

किसी भी जुमेरात के दिन मगरिब की नमाज के पश्चात् एकांत में बैठकर दोनों हाथ आसमान की ओर उठाकर सौ दफा या रब्बि या रब्बि या रब्बि पढ़ें। इसे पढ़ने के पश्चात् खुदा से जो भी माँगेंगे वही मुराद पूरी हो जायेगी।

यदि तंगहाली व परेशानियों में ज्यादती हो गयी हो तो शुरू के महीने में नौचंदी जुमेरात प्रारम्भ करके लगातार सात दिनों तक प्रतिदिन एक हजार दफा इस तहरीर को पढ़ें। इस अमल को करने वाले की तंगहाली दूर होकर उसे तमाम परेशानियों से निजात मिल जायेगी।

गर्म लोहा हाथ से उठाना

जल भंगर और मुलहठी के पत्तों का अर्क लिया जाये। इस अर्क को थोड़ा

गाढ़ा कर लें, फिर अपने हाथों पर अच्छी तरह मल लें और हाथों को छाया में सुखा लें। इसके बाद आप गर्म लोहा आसानी से उठा सकते हैं, आपका हाथ नहीं जलेगा। देखने वाले इसे जादू ही समझेंगे। यह शेबदा रात में दिखायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

आग से शरीर न जले

अण्डे के छिलके में भैन पारा बराबर वजन लेकर इसे सिरके में मिला लें। इसके बाद इस लेप को अपने शरीर पर मल लें। बस इस लेप के कारण शरीर पर आग का प्रभाव नहीं होगा। जलती हुई आग में आराम से कूद जाइये।

लगी हुई आग को बुझाना

यदि कहीं आग लग जाये तो एक लोटे में पानी भरकर आग की ओर रुख करके खड़े हो जाइये और आग को सम्बोधित करके कहें—ऐ आग देवता तुम ठण्डे हो जाओ। ये शब्द बार-बार कहते जायें और उल्टी सांस खींचें और लोटे का पानी पीते जायें बस आग बुझ जायेगी।

आग ही न जले

बेद के पेड़ की जड़ और घोड़े की खुर बराबर वजन लेकर उसे पीसकर चूल्हे या भट्टी में डाल दें। इसके डालते ही आग नहीं जलेगी, केवल धुआं ही उठता रहेगा।

चूल्हे को बांधना

शनिवार या रविवार की अमावस को वनबसी लायें और उसे जलाकर गधे के पेशाब में बुझा दें और कोयले बना लें। फिर इन कोयलों को जिस भट्टी या चूल्हे में डालेंगे, वह बंध जायेगा। अर्थात् इस पर कोई चीज नहीं पक सकेगी, बल्कि आग ही न जलेगी।

दूसरा तरीका यह है कि इंजीर की लकड़ी मेंढ़क की चर्बी में मिलाकर चूल्हे के अन्दर डाल दें, तो जब तक लकड़ी चूल्हे के अन्दर रहेगी, तब तक उसमें आग नहीं जलेगी।

पानी में मछली पैदा हों

मछली के अण्डे लेकर मिट्टी में मिलाकर ओलों में रख दें। जब ओले थम जाये तो मिट्टी को छांव में रख दें। जब किसी को शोबदा दिखाना हो तो एक थाली में पानी रखकर इस मिट्टी को ऊपर से डाल दें, तुरन्त मछलियाँ पैदा हो जायेंगी।

शीशा चिराग जैसा जले

तंग मुँह के शीशे में नमक व सिरका भरकर आग पर रखें, जब जोश आ जाये और धुआं उठने लगे तो दिया-सलाई का शोला उसे लगा दें। जब तक धुआं शीशे में रहेगा, चिराग की तरह रोशन रहेगा। किन्तु शर्त यह है कि धुआं बाहर न निकले।

बिना रोशनी रात में पढ़ें

जो कोई हुदहुद का खून सुखाकर सुरमे के बतौर आँखों में लगा ले तो रात को बिना रोशनी के आसानी से पढ़ा जा सकता है।

काँच को चबाना

पहले शीशे को इतना गर्म कर लें, कि वह स्वयं आग बन जाये, फिर अदरक के अर्क में डुबो दें और चबाना शुरू कर दें। मुँह में कोई घाव नहीं होगा।

ज्वर-नाशक टोटके

१. मकड़ी के जाले को रोगी के गले में लटकाने मात्र से ज्वर दूर हो जाता है।

२. रविवार के दिन ज्वर रोगी के हाथ से सूर्योदय होने से कुछ देर पहले हीं मूंज के पौधे में गिरह दिलवाने से ज्वर दूर हो जाता है।

३. मूसाकानी की जड़ को रोगी के हाथ में बांध देने से ज्वर दूर हो जाता है।

विषम ज्वर नाशक प्रयोग

१. सफेद कनेर की जड़ को रविवार के दिन उखाड़ कर रोगी के दाँयें कान अथवा भुजा में बांध देने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

२. रविवार के दिन अपामार्ग की जड़ को उखाड़ लायें। फिर उसे सूत के डोरे में लपेट कर पुरुष रोगी की दाँयीं तथा स्त्री रोगी को बाँयीं भुजा में बांध दें। इससे विषम ज्वर दूर हो जायेगा।

३. चौलाई की जड़ को रोगी के सर पर बांध देने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

मोटापा कम करने हेतु

किसी भी रविवार को अपनी दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में काला धागा बाँध लेवें और उसके ऊपर शुद्ध रांगे से बनी हुई अंगूठी या छल्ला इस प्रकार से पहन लें, कि वह काला धागा पूर्ण रूप से ढँक जावे। इस प्रयोग को करने से शनै:-शनै: मोटापा स्वत: ही कम होता चला जाएगा।

खाँसी के निवारण हेतु

किसी भी मंगलवार अथवा शुक्रवार के दिन लोबान पौधे की जड़ विधिपूर्वक ले आवें और उसे रोगी के गले में पहना दें, तो समस्त प्रकार की खांसी में राहत मिलेगी।

पागलपन दूर करने हेतु

यदि किसी मनुष्य का पागलपन अथवा उन्माद रोग सभी प्रकार की चिकित्सा कराने के बावजूद भी ठीक नहीं हो पा रहा हो तो वह पूर्ण श्रद्धापूर्वक निम्न प्रयोग करे

तो शीघ्र ही फायदा होगा। यह प्रयोग मुझे एक पहुँचे हुए फकीर ने बताया था, इस प्रयोग को मैं उनके बताये अनुसार ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर रहा हूँ।

किसी भी रंग के कुत्ते के अगले पैर का एक नाखून और कौवे के पैर का एक नाखून और बिच्छू का डंक अथवा एक पैर, इन तीनों चीजों को किसी भी नर ऊंट के चमड़े में मिलाकर एक ताबीजनुमा बना लें और इस ताबीज को रोगी मनुष्य के गले में धारण करवा दें।

इस प्रयोग के परिणाम स्वरूप रोगी का पागलपन कुछ समय अथवा कुछ माह के अन्दर ही ठीक हो जायेगा। उस फकीर बाबा के अनुसार यह एक अमल अनुभूत; परन्तु अत्यन्त प्रभावशाली अमल है।

भूत-बाधा व ग्रह शांति के टोटके

१. चन्दन, कूट, वच, सैंधानमक, घी, तेल और चर्बी को मिलाकर धूप देने से बालकों के राक्षस एवम् ग्रह-दोष शान्त हो जाते हैं।

२. काली सरसों तथा काली मिर्च को पीसकर आँखों में अंजन करने से भूत-बाधा दूर हो जाती है।

३. अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नाखून लेकर रख लें। आवश्यकता के समय उस नाखून को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेत की बाधा दूर हो जाती है।

४. सफेद अपराजिता के पत्तों के रस में पिसी हुई जावित्री डालकर नस्य लेने से डाकिनी, शाकिनी, दानव, भूत-प्रेतादि की बाधा दूर हो जाती है।

५. काशीफल के फूलों के रस में हल्दी को पीसकर पत्थर के खरल में खूब घोटें। फिर उसे अंजन की भाँति आँखों में आँजने से भूत-प्रेतादि की बाधा दूर होती है।

मिर्गी रोग नाशक प्रयोग

१. गाय के बाँयें सींग की अंगूठी बनवाकर दाँयें हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से मिर्गी रोगी का दौरा आना रुक जाता है।

२. जंगली सूअर के नाखून की अंगूठी की भाँति तैयार करवाकर मंगलवार के दिन दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से भी मिर्गी का दौरा शीघ्र रुक जाता है।

३. असली हींग एक तोला लेकर उसे ताबीज की तरह कपड़े में सीकर गले में पहने रहने से मिर्गी का दौरा आना रुक जाता है।

पथरी रोग नाशक टोटके

दाँयें हाथ की मध्यमा अंगुली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी की पीड़ा दूर हो जाती है।

बालों को लम्बा एवं घना करने के लिए

प्राय: प्रत्येक युवती-स्त्री की चाहत रहती है, कि उसके बाल इतने लम्बे और घने हों, कि दूसरी स्त्रियाँ उन्हें देखकर ईर्ष्या कर उठें। इस प्रकार से बालों को अत्याधिक लम्बा और घना करने हेतु काले घोड़े की लीद छाया में सुखाकर जला लेवें। अव इस लीद की राख बन जाने पर उसे तिल्ली के तेल में मिला लेवें और प्रतिदिन इस तेल से बालों की मालिश करें। इस तेल का नियमित रूप से लम्बे समय तक प्रयोग करते रहने से वाल घने और लम्बे हो जायेंगे।

बवासीर नाशक प्रयोग

धतूरे की जड़ को कमर में वांधने से बवासीर नष्ट हो जाता है।

बवासीर के मस्सों पर सांप की केंचुली वांधने से भी निश्चय ही लाभ होता है।

किसी भी बृहस्पतिवार के दिन भेड़ की खाल की अँगूठी बनाकर उसी दिन ही अपने दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में उस अंगूठी को पहन लें तो बवासीर रोग में शर्तिया फायदा होगा।

संग्रहणी नष्ट करने हेतु

अक्सर कई लोगों को संग्रहणी रोग हो जाता है और अनेकों प्रकार की दवाईयाँ लेने के पश्चात् भी कोई लाभ होता नजर नहीं आता है ऐसे में गेहुंअन साँप की पूरी की पूरी केंचुली को एक कपड़े में लपेट कर रोगी के पेट में वांध दें, तो संग्रहणी रोग नष्ट हो जाता है।

आधाशीशी नाशक सिद्ध टोटका

आधाशीशी रोग के निवारण हेतु यह सिद्ध टोटका मुझे अपने शहर के एक बुजुर्ग मौलवी ने बताया था। इस टोटके को विधिपूर्वक करने से निश्चित रूप से आधीशीशी का रोग सदैव के लिए दूर हो जाता है। प्रयोग इस प्रकार है—

किसी भी दिन प्रात: सूर्योदय के पूर्व मुँह अंधेरे उठकर चौराहे पर जायें और दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके एक गुड़ की डली अपने दाँतों से जिस हिस्से में आधाशीशी हो, उसी तरफ के दाँतों से काटकर चौराहे पर फेंक दें और बिना पीछे मुड़कर देखे अपने घर वापिस लौट आयें तो आधाशीशी रोग तत्काल दूर हो जाता है। यह प्रयोग गोपनीय रूप से करने पर ही लाभकारी है।

भूत ज्वर तथा सन्निपात ज्वर नाशक टोटके

हुलहुल की जड़ को रोगी के कान में डालने से भूत ज्वर शीघ्र उतर जाता है।

अपामार्ग की जड़ को रोगी की भुजा में बाँध देने से भूत ज्वर दूर हो जाता है।

लाल पलाश की जड़ को रोगी की भुजा में बाँध देने से भूत-प्रेतादि के ज्वर तथा अन्य प्रकार के ज्वर भी दूर हो जाते हैं।

तगर, बाकुची तथा नीम के अंजन को रोगी की आँखों में आंजने से भूत-ज्वर दूर हो जाता है।

अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा उसके फूलों की गोली बनाकर बकरे के रोम के साथ रोगी की भुजा में बांध देने से सन्निपात ज्वर दूर हो जाता है।

गुग्गुल, लहसुन, घी, सर्प की केंचुल, बन्दर के बाल, मुर्गे की बीट तथा कबूतर की बीट, इन सबको एकत्र करके, रोगी को इनकी धूप देने से भूत ज्वर तथा इकतारा आदि ज्वर दूर हो जाते हैं।

रात्रिज्वर तथा जीर्णज्वर नाशक टोटके

१. मकोय की जड़ को रोगी के कान में बाँधने से रात्रि में आने वाला ज्वर दूर हो जाता है।

२. भांगरे की जड़ में डोरा लपेटकर उसे रोगी के कान में बाँधने से रात्रि में आने वाला ज्वर दूर हो जाता है।

३. रोगी के शरीर में बकरी के रक्त का प्रवेश करा देन से जीर्ण ज्वर दूर हो जाता है।

दीवाना करने के लिए मन्त्र

'जल्द जल्द-जल्द कामसा बुवालीत स्वाहा।'

इस मन्त्र द्वारा किसी खुशबूदार चीज पर १००० बार पढ़कर फूँक मारें। अब जिस पर आशिक हो, उसे दें, वह आपके इश्क में दीवाना हो जायेगा।

माशूका के लिए मन्त्र

'आओ उज्जैन हल स्वाहा।'

इस मन्त्र को सात बार किसी फूल पर पढ़कर माशूका पर मारें और उसे सूंघने को दें, तो वह वशीभूत हो जायेगी।

मिट्टी द्वारा वशीकरण

'अल्लाहुम्मा या रब्बा जिबरील व इसराफील व मीकाईल व इजराईल व हमल कल अर्शि वल कुर्सिय्यि व मिन्नासि मिन तजहदू मिन इनि इन्नहु दलो यसरील्लजीना कलम् इज य खनाल अजाबा इन्नाल कुव्वता ल्लाहा जमीआ व इन्नल्लाहा शदीदुल अजाब फलां बिन फलां अला हुब्बा फलां बिन्त फलां।

यदि किसी को अपनी मुहब्बत में दीवाना करना चाहते हैं तो उसके दाँयें पाँव की मिट्टी लाकर उस पर सात बार मन्त्र द्वारा फूँक मारें और आग में डाल दें। यह प्रयोग रविवार के दिन करें। प्रेमिका दीवानी हो जायेगी।

पानी वशीकरण मन्त्र

'हल हल जल जल अमसकी बस कर को'

अगर किसी संगदिल ने रातों की नींद हराम कर दी हो तो इस मन्त्र से पानी पर सात बार फूँक मारें और प्रेमिका को पिला दें। यह प्रयोग सात दिन लगातार करें। प्रेमिका आपके प्यार में बेकरार हो जायेगी।

वशीकरण का लाजवाब मन्त्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहुम्मा या मुसख्खरनी मन फिस्सावाति वलअर्जा सख्खरनी फलाना अल्लाहुम्मा सबत लहु फजुल्लहुबी अल्लाहुम्मा इरहम वक बमहलती अला अमान फी कलबी व अ-लहु अला रिजकुजा मुहिब्बन अलल महबूब हबा काना हब्बतन बिहक्क या अल्लाहु या रहमान या रहीम बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन'

प्रयोग–यदि रात में २१ बार किसी मीठी चीज के ऊपर पढ़कर महबूब को खिला दिया जाये तो वह दिलजान से आशिक हो।

यदि शनिवार की रात को फूल के ऊपर ५० बार पढ़कर सुंघाया जाय, तो महबूबा बुलबुल की तरह दौड़ी चली आयेगी।

यदि रविवार की रात को पीपल के सात दानों पर सात बार पढ़कर आग में डाल दें, तो महबूबा परवाने की तरह चली आएगी।

यदि लौंग के ऊपर २५ बार पढ़कर लौंग महबूब को खिला दें, तो महबूब गुलाम बन जाये।

यदि पानी पर ४० बार पढ़कर फूंक मारे और उस पानी से अपना मुँह धोकर महबूब के पास जायें तो उसे अपना बना लें।

यदि सुरमें पर ६ बार पढ़कर आँखों में लगाकर महबूब के पास या प्रेमिका के पास जायें तो देखते ही वह दीवाना हो जाये।

यदि मोम के ऊपर १११ बार पढ़कर मोम को आग में डाल दिया जाये तो महबूबा मोम की तरह नरम दिल हो जाये।

यदि कंघी पर १००० बार पढ़कर फूँक मारें और वह कंघी महबूबा अपने सिर में फिराये तो आशिक हो जायें।

प्रेमिका के लिए मन्त्र

'युहिब्बू नहुम कहुबिल्लाहि वल्लजीनाआमनू अशददा हुब्बल ल्लिाहि।'

इस मन्त्र को १४ बार जुमे की रात में किसी मिठाई या मेवे या जो प्रमिका को पसन्द हो, पढ़कर खिलायें। दूसरी तरकीब यह हर दिन ४० बार पढ़कर फूँक मारकर खिला दें।

नमक वशीकरण मन्त्र

'अलम नशरह लका सदरका वाली सरः'

शाम के बाद प्रेमिका की दिल में कल्पना करते हुए इस मन्त्र को सात बार पढ़ें और नमक पर फूँक मारें। इस नमक को आग में डाल दें। ईश्वर की कृपा से कामयाबी मिलेगी।

(कुछ अन्य उपयोगी प्रयोग)

साधना-सिद्ध के समय सुरक्षा का मन्त्र

नीचे दिये जा रहे मन्त्र को कम से कम १००० बार जपकर सिद्ध कर लें। चाहे तो ग्रहण काल में शुरू से लेकर अन्त तक निरन्तर जप करके मन्त्र-सिद्ध कर लें। ग्रहण काल में मन्त्रों की कोई संख्या नहीं है। अगर ग्रहण १०-१५ मिनट का भी हो तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। एक बार मन्त्र सिद्ध कर लेने के बाद आजीवन काम आता है। साधना-सिद्धि अथवा तांत्रिक प्रयोग के समय मात्र एक बार मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर फूँक मार लें तो प्रत्येक अला-बला से महफूज रहेंगे।

१. छोटी मोटी थमंत वार को वार बांधें, पार को पार बांधें, मरघट मलान बांधें, टोना और टवर बांधें, जादू वीर बांधें, दीठ और मुठ बांधें, बिच्छू और सांप बांधें, भेड़िया-बाघ बांधें, लखूरी सियार बांधें, अस्सी-अस्सी दोष बांधें, कलिका लिलाट बांधें, योगिनी संहार बांधें, ताड़िका कलेज बांधें, उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम बांधें, मरी मसानी बांधें और बांधें डायन भूत के गुण लाइल्लाह को कोट इल्लल्लाह की खाई, मुहम्मद रसूल्लिल्लाह की चौकी, हजरत अली की दुहाई।

किसी भी मन्त्र के लिए काट का मन्त्र

किसी भी जुमेरात (गुरुवार) की रात को पूरी रात भर इस मन्त्र का जप करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध करने के बाद किसी भी मन्त्र का काट करने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग करने से पूर्व में किसी के द्वारा किये गये मांत्रिक प्रयोग से छुटकारा मिल जायेगा। मन्त्र इस प्रकार है—

२. तेली की खोपड़ी चाट-चाट के मैदान, ऊपर चढ़ा मुहम्मद सुल्तान, मुहम्मद सुल्तान किसका बेटा, फातिमा का बेटा, सूअर खाय हलाल करें पै दे पांव वज्र की कील तो माता के दूध को हराम कह।

रोजगार बाधा नाशक मन्त्र

३. ॐ नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल पूर्व को धाया, देव दानवों को बांधि लाया, दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत को बांधि लाया तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अपुत पितृ को बांधि लाया चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया। चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें

छलद्रि कोऊ रह न पावें रोग-दोष को दूर भगावें शब्द सांचा, पिण्ड कांचा,फुरो मन्त्र ईश्वरों वाचा।

यदि किसी का धन्धा ठप्प पड़ गया हो, दुकान चलती नहीं हो या व्यापार बाधाएं आने लगीं हों तो इस शाबर मन्त्र का विधिपूर्वक प्रयोग करें। प्रयोग इस प्रकार है कि कपड़े के चार पुतले बनावें और इस मन्त्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूँक मारकर उन्हें अभिमन्त्रित कर लें। फिर अपने व्यावसायिक स्थान पर चारों कोनों में एक-एक पुतला उक्त मंत्र को पढ़ते हुए गाड़ दें। इसे दिन प्रतिदिन व्यापार स्थल पर जाने से पहले एक माला का इस मन्त्र का जप कर लें। इस प्रकार करने से दुकान या व्यापार की समस्त बाधाएँ नष्ट हो जायेंगी।

आँख की फूली काटने के लिए मन्त्र

४. उत्तर कूल काछ सूत योगी का बाछ इसमाइल योगी की बेटी एक माशे चूल्हा एक काटे फूला काछ।'

यह एक स्वयं सिद्ध मन्त्र है। फिर भी किसी शुभ नक्षत्र में एक माला जप करने से सिद्ध हो जाता है। किसी की आँख में फूली हो गयी हो तो लोहे की कील से इक्कीस बार जमीन में ठोकें तो आँख की फूली स्वत: कट जायेगी।

५. अगर किसी को बुखार हो तो मकड़ी के जाले को रोगी के गले में लटका दे तो बुखार उतर जाता है। मूंज के पौधे में गाँठ देने से भी बुखार उतर जाता है। इसके अलावा रविवार के दिन अपामार्ग की जड़ उखाड़ लाएँ और उसे सूत में लपेटकर पुरुष की दाँयीं, स्त्री की बाँयीं भुजा पर बाँध दें। भयंकर बुखार भी उतर जाएगा।

६. बवासीर: धतूरे की जड़ को कमर में बाँध लें तो बवासीर नष्ट हो जाएगा।

७. वशीकरण: रात के समय स्वयं का वीर्य हाथ में लेकर बाईं अंगुली से जिस स्त्री-पुरुष के अंगूठे में लगा दिया जाए, वह वशीभूत हो जाता है। चंदन और बरगद की जड़ को पीस कर तिलक करें, देखने वाले वशीभूत हो जायेंगे।

८. मुहब्बत का इत्र: मुहब्बत का इत्र बनाने हेतु चमेली, गुलाब, मोगरा इत्यादि किसी भी खुशबूदार फूल का असली इत्र ही काम में लिया जाना चाहिए। सूर: मुज्मिल शरीफ का ग्यारह बार उच्चारण करें, फिर ग्यारह बाद दरुद शरीफ को पढ़कर इत्र पर दम करें। इस प्रकार मुहब्बत का इत्र तैयार है। इस इत्र को जो भी सूंघ लेगा वह आपसे मुहब्बत करने लग जाएगा।

९. प्रेम प्राप्ति हेतु: यदि किसी को अपने प्रति आकर्षित करना है या दीवाना करना है तो एक धातु के गिलास में पानी भरकर उस पर सात बार या बुद्दूहू पढ़कर पानी पर दम करें। फिर वह थोड़ा-सा पानी अपने मुँह में डालकर गरारा करें और उस

पानी को वापस गिलास में डाल दें। अब जो भी स्त्री पानी को पीएगी वह मुहब्बत में बेकरार हो जाएगी।

१०. गरीबी दूर करने हेतुः वम काइमिल अिज्जी वल मुल्का वल बका अी या जुल जलाली वल जूदि वल फजली वल आताया व जुल आर्शिल महीदु या फ आ लु लिमा युरीद० गरीबी दूर करने के लिए यह दुआ पढ़ते रहें।

११. आग बुझाने हेतुः कहीं पर आग लगी देखें तो अल्लाहु अकबर बार-बार उच्चारण करें तो आग बुझ जाएगी। यह आजमाया हुआ प्रयोग है।

१२. बिच्छू के जहर हेतुः यदि किसी को बिच्छू ने डंक मार दिया हो तो सात बार सूरः फातिहा पढ़कर फूँक मारें तो बिच्छू का जहर उतर जायेगा।

१३. बताशे को तेल में भिगोकर अगर पानी में डालें तो वह घुलेगा नहीं।

१४. औरत के दिल का भेद जानने के लिए उल्लू के दिल को कतान के कपड़े में लपेट कर सोती हुई औरत के सीने पर रख दें, सारा भेद बता देगी।

१५. बाकले व हरताल को पीस कर गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को कबूतर खाएगा तो बेहोश होकर गिर पड़ेगा। पकड़ने के बाद उसके मुँह पर जीत टपका दें, तो वह होश में आ जाएगी।

१६. फिटकरी के पानी से कागज पर लिखें। जब सूख जाए तो पढ़ा न जाए और यदि पानी में डालें तो आसानी से पढ़ लें।

१७. कबूतर के खून से अगर लिखा जाए तो दिन में पढ़ा जाए और रात में पढ़ लिया जाए।

१८. औरत की छातियाँ गायबः रविवार के दिन एक चमगादड़ लाएँ और सात रविवार गुग्गल की धूनी दें फिर दोपहर को नंगा होकर रूई और थोड़ी लाजवन्ती लपेटें। फिर तांबे के चिराग में मालकगनी का तेल डालकर पका लें फिर इसको हाथों पर मलकर जिस औरत को दिखायें और मुट्ठी बंद कर लें तो छातियाँ गायब हो जायें तथा खोलें तो वापस आ जायें।

१९. वशीकरणः एक अदद कपास का फूल लाओ और सुरमे के साथ उसे खरल कर लो और हैज के कपड़े में मिलाकर फलीता बना लें। चिराग जलाकर काजल पार लें। अब निगाह रखें और गले में डालें। जो देखेगा इश्क में गिरफ्तार हो जाएगा।

२०. इंजीर की लकड़ी लाकर कुतिया को मारें, इसके बाद उस लकड़ी को जला दें। गोलियाँ बनाएं, जिस किसी को मारें, वह मुहब्बत में उसके दर पर कुतिया की तरह फिरेगी।

परियों का खलल दूर करने का मन्त्र

'ओम् महकूब कूबमह विमलमह बड़ी मढ़ी में चार देव कौण-कौण अहंकार महंकार मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजाऊँ ख्वाजे मुअय्युद्दीन तुम्हारी शुखबोई में चढ़ी कमाण सुलैमान परी लंक परी को हुकम कीजै कौन कौन परी स्याह परी सबज परी हूर परी अर्श कुर्स की जाऊली बीबी फातमा कीली झीली आयना पाना फल आय लेना सवा सेर शर्बत का प्याला आप ले आप हाजिर होना मीर मुहीमुद्दीन मखदूम जहानी या शेख सरफ अहिया पठाण आप हाजिन न हो तो रोज कयामत के दानगीर हूँगा।'

विधि–प्रयोग की जगह को अच्छी तरह से झाड़कर वहाँ आटे का चौमुखा दीपक जलाए तथा आठ पान का बीड़ा लेकर तथा शर्बत का कच्चा प्याला भरकर जिस रोगी पर परियों का खलल हो, उसे चौराहे पर खड़ा करके मन्त्र से १५ बार झाड़ दे, फिर सब वस्तुओं को कुएँ की मेड़ पर रख आएँ तो परियों का खलल दूर हो जाता है। इस प्रयोग को करने के लिए आते-जाते समय बोलना नहीं चाहिए।

भूत वगैरह का गण्डा

'ओम् नमो आदेश गुरू को लड़गढ़ी सों मुहम्मद चढ्या श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण भूत बांधि प्रेत बांधि काचिया मसाण बाँधि चौंसठ जोगिनी बांधि अड़सठ स्याना बांधि, बांधि, बांधि रे चोखी तुरकिनी का पूत बेगि बांधि जोतू न बांधे तो अपनी माता की सैया पर पांव धरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–पाँच पैसे की (अब सवा रुपये की) मिठाई तथा दीपक को सामने रखकर लोबान की धूनी दें तथा रोगी की चोटी से लेकर एड़ी तक एक सतलड़ा डोरा को नापकर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए उसमें २१ गांठें लगायें। फिर उसे रोगी के गले में बांध दें। इस गण्डे को धारण करने से भूत-प्रेतादि का दोष दूर हो जाता है।

मुहम्मदापीर का मन्त्र

'ओम् नमो हाकन्त जुगराज फाटंत काया जिस कारण जुगराज मैं तोकों ध्याया, हंकारत जुगराज आया घारतं आया, सिर के फूल बखेरत आया, और की चौकी उठावन्त आया, आपकी चौकी बैठावंत आया, और का किवाड़ तोड़ता आया, आपका किवाड़ भेड़ता आया, बाँधि बाँधि किसको बाँधि, भूत को बाँधि प्रेत को बाँधि, देव-दानव को बांधि, उड़न्त गड़ंत योगिनी को बांधि, चौर-चिरणगार को बांधि, तिरसठ कलुवा को बांधि, चौंसठ जोगिनी को बांधि, बावन वीर को बांधि, आकाश को परियों को बांधि, डाकिनी-शाकिनी को बांधि, चेटक को बांधि, छल को बांधि, विद्र को बांधि,

द्वार को बांधि, हाट को बांधि, गली को बांधि, गिरारे को बांधि, किया को बांधि, कराये को बांधि, अपनी को बांधि, पराई को बांधि, लीली को बाँधि, पीली को बाँधि, स्याह को बाँधि, सफेद को बाँधि, लाली को बाँधि, बाँधि २ रे गढ़ गजनी के मुहम्मदापीर चलै तेरे संग सत्त सौ बीर, जो बिसरि जाय तौ सौ राजा हलाल जाय, उलटी मार, पछाड़ मार, धाड़ मार, कजा चढ़ाय, सुड़िया हलाय, शीश खिलाय, शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–किसी ग्रहण की रात में इस मन्त्र को १००८ की संख्या में जपे तथा मांस-मदिरा का भोग लगायें तो मुहम्मदापीर आकर उपस्थित होता है और प्रार्थना करने पर भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी आदि को भगा देता है।

आफत दूर करने का (दिग्बन्धन) मन्त्र

'याहि सार सार जिन्न देव परी जबर कुफार एक खाई दूसरी गिर्द पसार गिर्द बगिर्द मलायक असवार दायें दस्त रखे जिब्राईल, बाँये दस्त रखे मीकाईल, पीठ रखे इस्राफील, पेट रखे उज्राईल, दस्त चपटसन दस्त दस्त हुसैन पेशवा मुहम्मद गिर्द बगिर्द अली ला इलाह कोट इल्लिल्लाह की खाई हजरत अली की चौकी बैठी मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।'

विधि–इस मन्त्र को ७ बा पढ़कर चारों ओर हाथ फिराकर चुटकी बजाने से दिशा-वन्धन होता है। अर्थात् सब ओर आफतें दूर होती हैं। इस मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर लकीर खींचकर उसके घेरे में बैठने अथवा सोने से देह-रक्षा होती है। मसानादि का प्रकोप होने पर इस मन्त्र का उच्चारण करने से संकट दूर हो जाता है।

मुसीबत टालने का मन्त्र

शेख फरीद की कामरी और अँधियारी निसि।
तीनों चीज बराइये आग ओला-पानी बिस।।

विधि–यदि रास्ते में आग लग जाए या पानी बरसने लगे या ओले पड़े या किसी के द्वारा जहर देने का भय हो तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर ताली बजाने से मुसीबत टल जाती है।

कार्य साधना (१)

'ओम् नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा, सुलेमान पैगम्बर के चारों दिक चार मुवक्किल तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया, एक मुवक्किल पूरब को धाया, देव दानवों को बांधि लाया, दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत को बांधि लाया, तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अऊत पित को बांधि लाया, चौथा मुवक्किल

दक्खिन को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ लाया। चार चार मुवक्किल चहुँ दिशि धावें, छल छिद्र कोऊ रहन न पावे, रोग-दोष को दूर बहावे। शब्द साँचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

विधि–कपड़े के चार पुतले बनाकर आधी रात के समय चारों कोनो में गाढ़ दें, फिर धूप-दीप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र को जपें तो इच्छित-कार्य सिद्ध होता है। पहले इस मन्त्र को ग्रहण, दीवाली या होली की रात में एक लाख की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए।

कार्य साधना मन्त्र (२)

'ओम नमो बिस्मिल्लाहि रहिमान रहीम गजनी सों चला मुहम्मदा पीर, चला चला सवासेर का तोला खाय, अस्सी कोस का धावा जाय, सफेद घोड़ा सफेद पलान, जापै चढ़ा मुहम्मदा ज्वार, नौ सौ कुत्तक आगै चलें, कुत्तक पीछे चलें, काँधा पीछ भारत डाला ध्याया चलै चालि-चालि रे मुहम्मदा पीर, तेरे सम नहीं कोई बीर, हमारे चोर का ल्याव, सात समुद्र की खाई सों ल्याव, ब्रह्मा के वेद सों ल्याव, काजी की कुरान सों ल्याव, अट्ठारह पुराण सों ल्याव, जाव आव जहाँ होय तहाँ सों गढ़ा सों पर्वत सों कोट सों किला सों ल्याव, मुहल्ला गली सों ल्याव, कूँचा चौराहा सों ल्याव, श्वेत खाना सों ल्याव, बारह आभूषन सोलह सिंगार सों ल्याव, काजल कजरौटा सों ल्याव, मढ़ी की मौंठ सों, हाट-बाजार सों ल्याव खाट सों, पाया सों, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा की घूमती बलाय सों ल्याव, हाजिर करौ हाड़-हाड़ चाम-चाम निख-निख रोम-रोम सों ल्याव, रे ताहया सिलार जिन्द पीर मारतौ पीटतौ तोड़तौ पछाड़तौ हाथ हथकड़ी पाँव बेड़ी गला में तौक उल्टा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सीम खिलाय कैसे कैसे हूँ ल्याव, बिन लिये मत आव, ओम् नमो आदेस गुरु को।'

विधि–रात के समय गोबर का चौका लगाकर धूप, दीप, चन्दन, माला तथा नैवेद्य चढ़ाकर, सवा सेर मोहन भोग का भोग लगाकर इस मन्त्र को १०८ बार जपा जाय, तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब किसी काम को सिद्ध करना हो तो उस समय इस मन्त्र को पढ़कर उड़द को मस्तक पर रक्खें तो कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र से भूत-प्रेतादि को भी दूर किया जा सकता है।

पीर का कलमा

'या जरव्वाजखिज्र मैं तेरा इलियास लिल्लामकादिल चित्त मेरे पास।'

विधि–कुएँ के ठाणे पर रात्रि के समय एकान्त-स्थान में लोबान की धूप देते

हुए इस मन्त्र की उल्टी माला १०८ बार पढ़ने से २१ दिन के भीतर पीर प्रत्यक्ष होकर प्रश्न का उत्तर देता है।

बच्चों के लिए गंडा

'बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध, कीड़े और मकोड़े का बंध, ताप और तिजारी का बंध, जूड़ी और बुखार का बंध, नजर और गुजर का बंध, दीठ और मूठ का बंध, कीये और कराये का बंध, भेजे और भिजाये का बंध, नावत पर हाथन का बंधन बंध तो बांध मौला मुर्त्तजा अली का बंध, राह और बाट का बंध, जमीन और आसमान का बंध, घर और बाहर का बंध, पवन और पानी का बंध, कूवा और पनिहारी का बंध, लौह और कलम का बंध, बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध।'

विधि–रोगी को एड़ी से चोटी तक डोरे से नापकर इस मन्त्र द्वारा उसमें ७ गाँठ लगायें तथा सवा पाव मिठाई मँगाकर मुर्त्तजा अली के नाम से बालकों में बाँट दें। फिर गण्डे को लोबान की धूनी देकर रोगी के गले में बाँध दें। प्रत्येक गण्डे को इसी विधि से बाँधना चाहिए।

दिन के मन्त्र

एक हफ्ते (सप्ताह) में सात दिन हैं। सातों दिन के सात अलग-अलग मन्त्र हैं। इन मन्त्रों को अलग-अलग दिनों में पढ़ने से विभिन्न सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

शुक्रवार (जुमा) का मन्त्र—**'या अल्ला हो या वाहिदो।'**

शनिवार का मन्त्र—**'या रहमानों या रहीमो।'**

रविवार का मन्त्र—**'या वाहिदो या अहदो।'**

सोमवार का मन्त्र—**'या समदो या फरदो।'**

मंगलवार का मन्त्र—**'या हयियो या कयियूमो।'**

बुधवार का मन्त्र—**'या हन्नानो या सन्तानो।'**

बृहस्पति का मन्त्र—**या जुल जलाल बल इकराम।'**

साधनाविधि–उक्त मन्त्रों की साधना विधि इस प्रकार है—

किसी स्वच्छ स्थान में एक नया चिराग रखकर उसमें शुद्ध घी अथवा कोई सुगन्धित तेल भरकर जलायें। फिर इमाम हुसन तथा इमाम हुसैन का आह्वान करें और दीपक के आगे फूल, इत्र और मिठाई चढ़ाकर लोबान की धूनी दें। इसके बाद मन्त्र को १००० की संख्या में जपें।

मन्त्र-जप के आरम्भ में एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा तीन बार दरूद' अवश्य पढ़ें तथा मन्त्र के अन्त में भी ३ बार 'दरूद' पढ़नी चाहिए। उक्त प्रकार से ७ दिन तक

जप करने से प्रयोग पूरा होता है। मन्त्र-साधना काल में दिन में सिर्फ एक बार हल्का भोजन करना चाहिए, पृथ्वी पर सोना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का पूरी तरह पालन करना चाहिए। इस प्रकार जिस इच्छा को लेकर इन मन्त्रों की साधना की जाती है। वह पूरी होती है। अलग-अलग दिनों में उस दिन से सम्बन्धित मन्त्र का जप भी करना चाहिए।

हाजिरात के मन्त्र

'हाजिरात' उस क्रिया का नाम है, जिसमें एक छोटे बालक को किसी वस्तु पर दृष्टि जमाने के लिए कहा जाता है, तदुपरान्त अन्य प्रयोग करते हुए उसमें इच्छित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं।

यहाँ हाजिरात की दो प्रमुख विधियों तथा उनके मन्त्र का उल्लेख किया जा रहा है। हाजिरात की कुछ अन्य विधियों का वर्णन आगे किया जायेगा।

मोहताज न रखने वाला 'से' का मन्त्र

निम्नलिखित 'से' के मन्त्र का प्रतिदिन ९०३ की संख्या में जप करने वाला मनुष्य किसी का मोहताज नहीं रहता। मन्त्र इस प्रकार है—

'या किलकाईल बहक्क या जीम जा जव्वादी।'

इस मन्त्र का जप सूर्योदय से पूर्व ही आरम्भ कर दिया जाय, तो सर्वोत्तम रहता है। मन्त्र के आरम्भ में पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में ११ या २१ बार 'दरूद' पढ़नी चाहिए।

मनोभिलाषा-पूरक 'जीम' का मन्त्र

'या किलकाईल वहक्क या जीम जा जव्वादी।'

विधि—उक्त मन्त्र को ७ रात तक नित्य ३००० की संख्या में जपने से ख्वाब (स्वप्न) में पैगम्बर साहब के दर्शन होते हैं। यदि मन्त्र को १००० की संख्या में काँसे की थाली पर लिखकर उसे मीठे पानी से धोएं और वह पानी किसी नामर्द आदमी को पिला दिया जाय, तो उसे मर्दाना ताकत हासिल होती है। काँसे की थाली पर 'जीम' अक्षर फारसी लिपि में ही लिखना चाहिए।

इस मन्त्र के साथ भी 'बिस्मिल्लाह' और दरूद पढ़ने का नियम पूर्ववत् ही समझना चाहिए।

शत्रुभय-नाशक 'हे' का मन्त्र

'या तनकाफील बहक्क या है या हमीदो।'

विधि—इस मन्त्र को ४१ दिनों तक नित्य ६२ बार जप करने से शत्रु का भय दूर हो जाता है। इसके साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा दरूद पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

मनुष्य को लौटाने वाला 'खे' का मन्त्र

'या महकाईल बहक्क या खे या खलिको।'

विधि–१. इस मन्त्र को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान में आकाश के नीचे खड़े होकर १००० की संख्या में जपने तथा जो घर के चला गया हो, उसके उद्देश्य से आकाश की ओर फूँक मारने से, वह गया हुआ व्यक्ति शीघ्र घर लौट आता है।

२. 'खे' को फारसी अक्षरों में ६०० की संख्या में लिखकर तकिया के नीचे रखकर सोए तथा उक्त मन्त्र का १००० की संख्या में जप करने से ख्वाब (स्वप्न) में गये हुए मनुष्य के बारे में सारा हाल-चाल मालूम हो जाता है।

३. यदि 'खे' के अन्त में 'या खबीरो' शब्द और बढ़ा लिया जाय, तो अधिक हाल मालूम होता है। इसके साथ ही 'बिस्मिल्लाह' और 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें।

शत्रु नाशक तथा धनवृद्धि कारक 'दाल' का मन्त्र

'या दरदाईल बहक्क या दाल या दैयानो।'

विधि–सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पढ़ने से धन की वृद्धि होती है। धन वृद्धि के लिए इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करते रहना आवश्यक है।

सूर्योदय से पहले इस मन्त्र का ७० बार पढ़कर शत्रु के घर की ओर फूँक मारने से उसका नाश हो जाता है। यह क्रिया ३० दिनों तक नित्य नियमित रूप से करना चाहिए। इसके साथ ही 'बिस्मिल्लाह' और 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें।

'जाल' का मन्त्र

'या जुहराईल बहक्क या जाल या जुल जलाल बलइक्राम।'

विधि–हाकिम की मेहरबानी प्राप्त करने अथवा धन वृद्धि के लिए इस मन्त्र का एक मास (३०) तक नित्य प्रात:काल ११०० की संख्या में जप करना चाहिए। यदि किसी को वश में करना हो तो इस मन्त्र द्वारा मिठाई को ७०० बार अभिमन्त्रित करके साध्य-स्त्री-पुरुष को खिला देने में वह वशीभूत हो जाता है। इसके साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

गड़ा धन प्राप्त करने 'रे' का मन्त्र

'या असवा कील बहक्क या रे रहीम।'

विधि–१. इस मन्त्र को ३० दिनों तक नित्य प्रात:काल १००० की संख्या में जपें। अन्तिम दिन एक सफेद रंग के मुर्गे के कान में या 'रे' इस मन्त्र को ८०० बार पढ़कर उसे छोड़ दें, तदुपरान्त वह जिस स्थान पर जाकर रुके और जिस जगह अपनी चोंच मारे, वहीं पर धन गड़ा हुआ है, यह समझ लेना चाहिए।

२. फारसी लिपि में 'रे' को किसी मिट्टी की रकाबी पर ६०० की संख्या में लिखने के बाद उसके ऊपर इतना नमक बिछा दें कि अक्षर दिखाई न दें, तदुपरान्त रात के समय उस रकाबी (तश्तरी या प्लेट) को अपने सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में गड़े हुए धन वाला स्थान दिखाई देता है।

३. एक कागज के ऊपर फारसी लिपि में ८०० की संख्या में 'रे' अक्षर लिखकर उस कागज को मोड़कर अपने कान में रखें। एक घड़ी बाद उसे कान से निकालकर काँसे की थाली अथवा कलईदार रकाबी में रखकर ऊपर से इतना नमक बिछा दें कि सभी अक्षर ढँक जायँ, तदुपरान्त रात्रि के समय पुनः ८०० बार मन्त्र पढ़कर सो जायँ तो स्वप्न में गड़े हुए धन के स्थान के विषय में ज्ञात हो जाएगा। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

शत्रु-भय नाशक 'जे' का मन्त्र

'या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियो।'

विधि–इस मन्त्र को १ माह तक नित्य ५०० की संख्या में नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

इच्छित अनुभव प्रदायक 'सीन' का मन्त्र

'या हमवाकील बहक्क या सीन या सीमाओ।'

विधि–इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७ बार जपने से इच्छित अनुभव प्राप्त होता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

शत्रु-सुख स्तम्भक एवं गर्भ-ज्ञान प्रदायक

विधि–१. इस मन्त्र को ३०० बार पढ़ने के बाद कागज के ४० टुकड़ों पर फारसी लिपि में 'शीन' अक्षर को लिखकर उन टुकड़ों को ४० रोटी की तहों में रखकर पकावें, फिर उनमें से एक-एक रोटी एक-एक कुत्ते को अलग-अलग खिला दें, तो शत्रु का मुख बंद हो जाता है।

२. रात्रि के समय इस मन्त्र को ३०० बार पढ़कर सो जायँ तो गर्भवती के पेट का हाल अर्थात् उसके गर्भ में लड़का है या लड़की स्वप्न में मालूम हो जाता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

शत्रुता विनाशक एवं थकान-नाशक 'स्वाद' का मन्त्र

'या अजमाईल बहक्क या स्वाद या सभदो।'

विधि–१. पानी से भरा हुआ घड़ा अपने सामने रख लें, फिर उस पर निगाह

(दृष्टि) जमाकर ४० दिनों तक नित्य ८०० बार जप किया जाय, तो मार्ग में चलने से थकावट नहीं आती। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

हृदय दौर्बल्य नाशक तथा शत्रु जिह्वा स्तम्भक 'ज्वाद' का मन्त्र

'या इत़राईल बहक्क या ज्वाद या जारो।'

विधि–१. इस मन्त्र को नित्य १००० बार जपने से दिल की कमजोरी (हृदय दुर्बलता) दूर हो जाती है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

वशीकरण कारक एवं कार्यसाधक 'तोय' का मन्त्र

'या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो।'

विधि–१. किसी कार्य की सिद्धि के लिये कागज के टुकड़ों पर फारसी लिपि में अलग-अलग 'तोय' अक्षर लिखकर उन्हें आटे की गोलयों को दरिया (नदी) के पानी में बहा दें, तो ७ दिन के भीतर इच्छित-कार्य सिद्ध हो जाता है।

२. वशीकरण के लिए एक कागज के ऊपर ७०० की संख्या में फारसी लिपि में तोय लिखकर उनके नीचे—**या इस्माईल फलाने की फलाने के बस में करो बहक्क या तोय या ताहिरो।'**

उक्त वाक्य को लिखकर उस कागज का फलीता बनाकर सुगन्धित तेल में जलायें तथा इत्र, फूल, दीपक को उसके आगे रखकर लोबान की धूनी दें। इस तरह ७ दिनों तक नित्य यही प्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करने से इच्छित स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है। मन्त्र का जप करते समय जिसे वश में करना हो, दीपक का मुँह उसके घर की ओर रखना चाहिए।

कागज पर जो वाक्य लिखा जाएगा, उसमें फलाने को, फलाने के स्थान पर जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसका तथा जिसको वश में कराना हो उसका—दोनों का नाम लिखना चाहिए। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

शत्रुभय-नाशक 'जोय' का मन्त्र

'या लौजाईल बहक्क या जोय या जाहिरो।'

विधि–प्रतिदिन प्रातःकाल ४० की संख्या में ९ दिनों तक इस मन्त्र को जपते रहने से शत्रु का भर दूर हो जाता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

वशीकरण कारक 'एन' का मन्त्र

या लौमाईल बहक्क या एन या अजीमो।'

विधि–सफेद कागज के ऊपर कस्तूरी तथा केशर से फारसी लिपि में ७ बार एन लिखकर उसे उक्त मन्त्र द्वारा ७०० बार फूँक मारें, तत्पश्चात् उसे मिठाई में मिलाकर अथवा पानी में घोल कर जिसे खिला-पिला दिया जायेगा, वही वशीभूत हो जाएगा। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' एवं 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

शत्रु-नाशक 'रौन' का मन्त्र

'या लौरबाईल बहक्क या रौन या गुफूरो।'

विधि–महुए के पत्ते पर सफेद कागज पर फारसी लिपि में ७० बार 'रौन' अक्षर लिखकर उसके ऊपर उक्त मन्त्र को १२८६ बार पढ़-पढ़ कर फूंक मारे फिर उसे पत्ते या कागज को शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का घर गिर जाता है तथा उसका नाम भी मिट जाता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

आकर्षण, वशीकरण तथा शत्रु-पीड़ा कारक 'फे' का मन्त्र

'या सरहमा कील बहक्क या फे या फत्ता हो।'

विधि–१. किसी सफेद कागज के ऊपर फारसी लिपि में १००० की संख्या में 'फे' अक्षर लिखकर उसके नीचे जिस व्यक्ति को आकर्षित या वशीभूत करना हो, उसका तथा उसकी माँ का नाम एवं अपना तथा अपनी माँ का नाम नीचे लिखे अनुसार लिखना चाहिए।

'या सरहमाकील फलानी का बेटा फलाना मुझ फलानी के बेट फलाने के बस में हो बहक्क या फे या फत्ता हो।'

पिछले वाक्य में जहाँ फलानी का बेटा फलाना आया है, वहाँ जिसे वश में करना हो, उसकी माँ का तथा उसका नाम लिखना चाहिए और जहाँ मुझ फलानी के बेटे फलाने आया है, वहाँ अपनी माँ का तथा अपना नाम लिखना चाहिए।

उक्त प्रकार से वाक्य तथा नाम आदि लिखने के बाद उस कागज का फलीता बनाकर जलायें तथा उसे इत्र, फूल, मिठाई आदि चढ़ाकर पूर्वोक्त मन्त्र को ८०० बार पढ़ें। इस प्रकार साधना करने से इच्छित स्त्री-पुरुष हजार कोस की दूरी से भी चलकर साधक के सामने आ खड़ा होता है।

२. मंगलवार के दिन किसी मनुष्य की खोपड़ी पर एक सांस में ८० बार फारसी लिपि में 'फ' अक्षर लिखकर उसे शत्रु के घर की नींव में गाड़ देने से उस घर में नित्य नई आफतें आती रहती हैं। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'रूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

नींद हराम करने वाला 'काफ' का मन्त्र

'या इतराई बहक्क या काफ या काफियो।'

विधि–एक सफेद कागज के ऊपर फारसी लिपि में ४०० 'काफ' अक्षर लिखकर उसके नीचे—

'या इतराईल फलानी के बेट फलाने की नींद बन्द करा बहक्क या काफ या कुद्दू सो।'

उक्त वाक्य लिखे। इस वाक्य में जहाँ फलानी के बेटे फलाने आया है, वहाँ जिस व्यक्ति की नींद हराम करनी हो, उसकी माँ का तथा उसक नाम लिखना चाहिए। फिर उस कागज को पूर्वोक्त मन्त्र 'या इतराईल...' द्वारा ४०० बार अभिमन्त्रित करें अर्थात् मन्त्र पढ़-पढ़कर फूँक मारें, तत्पश्चात् उस कागज को किसी भारी पत्थर के नीचे दबा दें, तो साध्य व्यक्ति की नींद बंध जाती है अर्थात् उसे नींद नहीं आती।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

विद्यावर्द्धक 'ग्राफ' का मन्त्र

या हुतजाइल बहक्क या गाफ या गाफियो।

विधि–एक सफेद कागज पर फारसी लिपि में २०० की संख्या में 'ग्राफ' लिखकर उस कागज पर पूर्वोक्त मन्त्र 'या हुतजाइल....' को ४०० बार पढ़-पढ़ कर फूँक मारें, फिर उस कागज को लोबान की धूनी देकर जिस व्यक्ति की दाईं भुजा में बांध दिया जायेगा, उसे बहुत विद्या आयेगी। यह प्रयोग विद्या की वृद्धि करने वाला है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

सर्वप्रियता-दायक 'लाम' का मन्त्र

'या त़्वात्वाईल बहक्क या लाम या लतीफो।'

विधि–इस मन्त्र को प्रतिदिन १००० बार पढ़कर अपने ऊपर फूँक मारने वाला व्यक्ति अन्य सभी लोगों का प्रिय बन जाता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

लोकप्रियता-दायक 'मीम' का मन्त्र

'या रोमाईल बहक्क या मीम महमनो।'

विधि–सफेद कागज के ऊपर फारसी लिपि ९०० बार 'मीम' लिखकर उस पर उक्त मन्त्र को १००० बार पढ़कर फूँक मारें, तदुपरान्त उसे किसी भारी पत्थर के नीचे दबा दें। इस प्रयोग को करने वाला व्यक्ति लोकप्रिय हो जाता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

श्रेष्ठ विद्यादायक एवं स्वप्न में उत्तरदायक 'नून' मन्त्र

'या लोलाईल या नून या नूरो।'

विधि–१. शुक्रवार अथवा बृहस्पतिवार की रात्रि को यह मन्त्र २०० बार पढ़कर सो जाने से इच्छित प्रश्न का उत्तर स्वप्न में मिलता है।

२. यदि ४० दिनों तक नित्य १००० की संख्या में इस मन्त्र का जप किया जाय, तो श्रेष्ठ विद्या प्राप्त होती है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

मनोरथ-पूर्तिदायक 'वाव' मन्त्र

'या रफ्तामाईल बहक्क या वाव या बहावों।'

विधि–इस मन्त्र को पढ़ते हुए कहीं भी जाने से मनोरथ पूरा होता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि रास्ते में कोई रोक-टोक न हो। यदि कोई रोके-टोके तो उसके सामने ७० बार मन्त्र पढ़कर फूँक मार देनी चाहिये, तदुपरान्त आगे बढ़ना चाहिए। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

भवन सुरक्षा-कारक 'हे' मन्त्र

'या दौराईल बहक्क या हे या हादिया।'

विधि–ईंट के ऊपर फारसी लिपि में ७० बार 'हे' लिखकर तथा उसके ऊपर पूर्वोक्त मंत्र या दौराईल को ७० बार पढ़कर उस ईंट को नींव में गाड़ दें, तो वह मकान वर्षों तक सुरक्षित बना रहेगा। टूटेगा-फूटेगा नहीं।

ईंट के स्थान पर ४ ठीकरियों पर 'हे' अक्षर लिखकर उन्हें भी उक्त विधि से नींव में गाड़ा जा सकता है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

जिह्वा-स्तम्भन कारक 'ये' का मन्त्र

'या साराकीताईल बहक्क ये यहियो।'

विधि–इस मन्त्र को प्रतिदिन १६० बार जप करने वाले के समक्ष किसी अन्य व्यक्ति की जीभ नहीं चल पाती अर्थात् दूसरे व्यक्ति का जिह्वा स्तम्भन हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

हिन्दू-मुस्लिम मिश्रित नित्य पाठ करें। मनोकामना पूर्ण होगी।

हरि ॐ।। अस्मल्लाइल्ले मित्रावरुणादिव्या दिव्याणि धत्ते। इल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः हवामि मित्रे इल्लां इलल्ले इल्लां वरुणो मित्रो तेजकामाः हातारमिंद्रो महासुरेन्द्रः अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं पूर्णं ब्रह्माणं अल्लां अदल्लामुकमेकं अल्लां मुकानिषातकं अल्लो अज्ञेनहुत हुत्वः अल्लकूर्य चन्द्र सर्वनक्षत्राः अल्लो ऋषिणां सर्व दिव्या, इन्द्राय पूर्वमपा परम अन्तरिक्षं विश्वरूपं दिव्याणि धत्ते इल्ललेवरुणो राजा पुनर्ददुः इल्लां कबरइल्लां इल्लेति इल्लला। अल्ला इलल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वणीशाखां हूं ह्रीं जनान् पशुत् सिंहान् जलचरान् अदृष्टं कुरु-कुरु फट्, असुर संहारणीं ह्रीं अल्लो रसूल मोहम्मदकबरस्य अल्लो

अल्लां इल्लं लेति इल्लल्लाः। इति अल्लां सूक्त अथर्वणी समाप्तं। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

गृहरक्षा कवच मन्त्र

घर बान्धम दोर मान्धम उटन बन्धन आर। बन्धन करीनू आमी नामे ते अल्लार। जिब्राईल, मीकाईल, ईस्राईल, आर। इज्राईल अल्लार गोलाम हुकुम बर्दार।। बाड़िर चारि कोने ईहादेर राखिया मौजूद। अल्लाह वो नबीर नामे भेजिया दरूद। बन्धन करीनूं आमी (फलानार) बड़ी। मेर करिवे अल्ला आपे पाक बारी। एई बाड़ीर ऊपर ते भूत-प्रेत डाईने योगिनी, देव दैत्य यदि थाके केहो। मारिया गुर्जर बाढ़ी दूर करके देहो। या अलाहो, माबूद, करीम, रहीम, साबूद, बहक इल्लल्लाहा मोहम्मदुर रसूलल्लाह।

किसी भी शनिवार या मंगलवार को चार कीलें, मिट्टी के घड़े लाकर उनमें सात गांवों की मिट्टी लाकर रखें। शनिवार या मंगलवार को ही किसी लोहार के यहाँ से चार लोहे की कांटी बनवायें और सात घाट का पानी तथा बिना फूले सीमल गाछ की जड़ लाकर इन समस्त वस्तुओं के चार हिस्से करके चारों घड़ों में रखकर प्रत्येक घड़े में तीन-तीन बार उक्त मन्त्र पढ़कर उनका मुँह ढक्कन से अच्छी तरह बन्द करके थोड़ा-सा सरसों का तेल घड़ों के ऊपर लगा देवें। अब चारों घड़ों को घर के चारों कोनों में अजान देते हुए एक-एक घड़ा, एक-एक कोने में गाड़ देवें। इस प्रकार का प्रयोग पूर्णतः गोपनीयता के साथ करें। ऐसा करने से वह घर ताजिन्दगी सभी आफतों से महफूज बना रहेगा।

घर की रक्षा मन्त्र

या अल्लाह पाक, इस आंगन को मैं आज करता हूँ बन्द, हजरत सुलेमानी की बरकत से बन्द, हजरत मूसा की आज्ञा से बन्द, हजरत अली की शमेशर से बन्द, अजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम से बन्द, या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द, या अल्लाह पाक मालिक रब्बुल गफूर, हमारे इस दोआ को तू करले कबूल, बहक्के हक ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुरसूल्लाह।।

घर की अस्थायी रक्षा करने के लिए यह एक आसान किन्तु शीघ्र प्रभावशाली और विशेष चमत्कारी प्रयोग है। रात्रि में सोने से पूर्व वुजू (हाथ, पाँव, मुँह धोकर) ताली की आवाज घर के जितने हिस्से तक पहुंच जायेगी, घर का उतना ही भाग पूर्णतः रक्षित रहेगा। इस प्रयोग को प्रतिदिन रात्रि में नियमपूर्वक करते रहने से किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होगी।

आग कम करने का मन्त्र

रहमकुन अए इलाही पाक बारी, इस घर के ऊपर अपने फजल से कर तू रहमत-जारी। जैसी रहमत की थी तूने खलील पर, वैसी रहमत कर तू ए परवरदिगार। बहके इकला इलाहा इल्लल्लाहा मुहम्मदुर रसूलल्लाह।

यदि अचानक किसी घर में आग लग जाय, तो चाहिए कि तुरन्त वुजू (हाथ, पाँव, धोकर) तथा पाक-साफ होकर थोड़ी-सी-साफ-सुथरी मिट्टी अपने हाथों में लेवें और इक्कीस बार उक्त मन्त्र को पढ़कर मिट्टी पर फूँक मार दें, तो आश्चर्यजनक रूप से उस घर में लगी हुई आग में कमी हो जाएगी।

देह-रक्षक मुस्लिम मन्त्र

दोआ आयतल कुर्सी बन्दन कोरान, बाहिरे-भीतरे सुब्हान, लोहे की कोठरी, ताम्बे का किवाड़, सामने की छड़ी पैगम्बर बाड़ी, अमुकेर शरीर र दिनेर चारि पहर, रातिर चारि पहन किन्छू नाहिं देखी खाली, बहके हक लाएलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलल्लाह।

एक बुजुर्ग मौलवी ने इस मन्त्र के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक अत्यन्त ही सरल एवं हानिरहित होने के साथ-साथ शीघ्र प्रभावशाली रक्षक मन्त्र है। उस मौलवी के कथानानुसार प्रतिदिन नमाज के पूर्व इस मन्त्र को जप करके अपने दोनों हाथ पूरे शरीर पर फेर लेने से साधक का शरीर तमाम तरह की भौतिक तथा पारलौकिक बाधाओं से पूर्णतः महफूज हो जाता है। फिर उसे किसी भी प्रकार की मानसिक, शारीरिक और आत्मिक परेशानी उत्पन्न नहीं होती है।

पीर-पैगम्बर बुलाने का मन्त्र

ॐ बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम, या जिब्राईल, या तत काफलया, अज्राईल, या मेखाईल बहक, या बन्धु हयन-छूवयन, ईस्मन-ईस्मन, बहक लाइल्लाहो इल्ला हो, मोहम्मद रसूलल्लाहो खतुमां सलेमान बिंदाउद अले सलाम हजरकाब्द, हजरकाब्द, हजरकाब्द।

यह एक अत्यन्त चमत्कारी मन्त्र प्रयोग है। प्रतिदिन रात्रि में सोते समय धूप-लोबान करके चालीस दिनों तक नित्य प्रति रात्रि में १०८ दफा इस मन्त्र का पाठ करते रहें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् पीर-पैगम्बर अथवा कोई पवित्र रूह सफेद वस्त्र धारण किये हुए साधक के समक्ष प्रकट होकर उसे मुँह मांगा वरदान देने को कहेगी। साधक को ऐसे में चाहिए कि वह तुरन्त ही कोई अच्छी मुराद मांग ले' यदि उसने कोई वरदान नहीं मांगा तो वह रूह साधक पर नाराज होकर उसका अनिष्ट भी कर सकती है। इस प्रयोग का विशेष सावधानी के साथ किसी आमिल के निर्देशन में ही करना चाहिए।

पान वशीकरण मन्त्र

ॐ श्री रामनागरबेली अकनकबीरी, सुनिये नारी बात हमारी, एक पान रंग मंगाय, एक पान से जसो लावै, एक पान मुख बुलावै, हमको छोड़ि और को देखें, तो तेरा कलेजा मोहम्मदा पीर छक्खै।

इस मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित पान जिस किसी भी स्त्री को खिलाया जाएगा तो निश्चित ही वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

इस प्रयोग के तहत तीन नागरबेल के पान लेकर उक्त मन्त्र को इक्कीस दफा पढ़कर उन पानों को दम करके उनमें से एक पान अथवा तीनों ही पान जिस किसी स्त्री को खिलावें तो वह वशीभूत हो जायेगी। ध्यान रखें कि इस साधना का दुरुपयोग ना करें; अन्यथा हानि भी हो सकती है। इस यन्त्र को पानी में घोलकर रोगी-व्यक्ति को पिलाने से उसका रोग दूर हो जाता है।

टिप्पणी–किसी ग्रहण के समय इस यन्त्र को १०००० बार कागज पर लिखकर पूजन करने से यन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

मनोकामना पूरक प्रयोग

सर्वप्रथम उर्दू के सवा पाव आटे में खमीर उठाकर तथा उसकी रोटी बनाकर उसे दो तह वाले एक सफेद रूमाल में रक्खें। फिर उसमें से चौथाई रोटी की जंगली झरबेरी के बराबर की १०१ गोलियाँ बनाकर प्रत्येक गोली को निम्नांकित मन्त्र से ग्यारह-ग्यारह बार अभिमन्त्रित करें, तदुपरान्त शेष रोटी सहित सभी गोलियों को नदी में मछलियों को खाने के लिए डाल दें। इस प्रकार ४० दिन तक प्रयोग करने से साधक की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है तथा रोजी भी प्राप्त होती है।

'या इस्राफील बहक्क या अल्लाहो।'

उक्त मन्त्र के आरम्भ में एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा आदि और अन्त में ७-७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

दरिद्रता-नाशक प्रयोग

प्रातःकाल किसी से बातचीत करने से पूर्व हाथ, मुँह, धोकर एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बाद निम्नलिखित मन्त्र का १२०० बार जप करें—

'या ककीयो या गनीयो या मलीयो या बकीयो।'

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में २१-२१ बार 'दरूद' का पाठ भी अवश्य करना चाहिये। इस प्रयोग को निरन्तर ४० दिनों तक करते रहने से दरिद्रता दूर होती है। यदि इस प्रयोग को प्रतिदिन किया जाय, तो दरिद्रता से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

रोजी का प्रयोग (१)

रोजी मिलने के लिए सर्वप्रथम पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे लिखे मन्त्र को ७ दिनों तक, नित्य १००० की संख्या में जपना चाहिए। मन्त्र-जप के आरम्भ तथा अन्त में तीन-तीन बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

'या वुद्दूह या या हयियो या कयियूमो या अल्लाहो या फरदो या बितरो या समदो या रहीमो या वारिसो या अहदो या लमयलिदो बहम युलद बलमयकुन लुहू कुफवन अहद।'

उक्त मन्त्र के प्रयोग से रोजी प्राप्त होती है। जब रोजी मिलना आरम्भ हो जाय, तब नित्य १०८ बार इस मन्त्र का जप करते रहने आवश्यक है।

रोजी का प्रयोग (२)

रोजी तथा लाभ पाने के लिए आधी रात के समय सबसे पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे लिखे मन्त्र को १००० बार पढ़ें—**'गफूरो।'**

उक्त मन्त्र को पढ़ने के पहले तथा बाद में २१ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है। इक्कीस दिनों तक उक्त प्रयोग करने से लाभ तथा रोजी-प्राप्ति की सूरत दिखाई देने लगती है। जब रोटी मिलने लगे तब इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करते रहना चाहिये।

रोजी का प्रयोग (३)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इस्राफील बहक्क या अल्लाहो अल्ला हुस्नसल्ला मुहम्मद नव धारक नसल्लम।

विधि–शुक्रवार या बृहस्पतिवार से इस प्रयोग को आरम्भ करना चाहिये। सर्वप्रथम सवा पाव उर्द आटे की दो रोटियाँ हाथ से बनाकर उन्हें एक सफेद रूमाल में रक्खें फिर उन रोटियों से झरबेर के बराबर की १०१ गोलियाँ बनायें तथा उनमें से प्रत्येक गोली को उक्त मन्त्र को अभिमन्त्रित करें। तदुपरान्त उन गोलियों तथा शेष बची हुई रोटी को रूमाल में रखकर किसी नदी के किनारे पहुँचे और गोलियों को नदी की धारा में फेंककर शेष बची रोटी को टुकड़े-टुकड़े करके पक्षियों को खिला दें। उक्त प्रयोग को ४० दिनों तक नित्य नियमित रूप से करते रहने पर रोजी प्राप्त होती है। मन्त्र के आरम्भ में पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' शुरू में तथा आखिर में ७-७ बार 'दरूद' पढ़ना चाहिये।

(मनोकामना पूर्ति मन्त्र)

राजसभा-मोहन प्रयोग

पहले एक पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे लिखे मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ७ बार पढ़ने के बाद दोनों हथेलियों को अपने मुँह पर फेरकर

जिस राजसभा में पहुँचा जायेगा, वहीं सफलता प्राप्त होगी तथा सब लोग मोहित (प्रसन्न) हो जायेंगे। मन्त्र इस प्रकार है—

सलामुन कौलुनमिनरर्विहीम तनजीकुल अजीजुर्रहीम।

इस मन्त्र के आरम्भ में एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में ७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

सभा-मोहन प्रयोग

कालूँ मुँह घोई करूँ सलाम मेरी आँखों में सुरमा बसे जो देखे सो पाँथन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्तगीर की छूः छूः छूः।

विधि–शुक्रवार के दिन सवा लाख गेहूँ के दाने लेकर एक-एक दाने पर एक-एक मन्त्र पढ़ें। फिर उनमें से आधे दानों को पिसवाकर उस आटे में घी, शक्कर मिलाकर हलुवा तैयार करें और गौसुल आदम दस्तगीर को नियाज देकर उसे स्वयं खायें। फिर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर अपनी आँखों में सुरमा आँज कर जिस सभा में पहुँचेंगे, वहाँ के सब लोग मोहित हो जायेंगे।

राज्य-कर्मचारी वशीकरण प्रयोग

'बिस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलह सख्त तुम हो जाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना।'

उक्त मन्त्र से जहाँ 'फलाना' शब्द आया है, वहाँ जिस राज्य-कर्मचारी को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोगविधि–एकतालीस बिनौले लाकर आधी रात के समय उनमें से एक-एक बिनौले को एकतालीस-एकतालीस बार अभिमन्त्रित करके अग्नि में डालता जाय। इस क्रिया को निरन्तर तीन दिनों तक करते रहने से इच्छित राज्य-कर्मचारी वशीभूत हो जाता है।

साधनाविधि–कार्य साधन से पूर्व २१ दिनों तक उक्त मन्त्र को २१ बिनौलों पर २१-२१ बार पढ़कर अग्नि में आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

वशीकरण कारक काले कलवे का प्रयोग

काला कलवा चौसठ बीर मेरा कलवा गंगा तोर जहाँ को भेजूँ वहाँ को जाइ, माःस मच्छी को छुवन न जाय, अपना मारा आपहि खाय, चलत बाण मारूँ उलट मूठ मारूँ मार कलवा तेरी आस चार चौमुखा दीया न बाती जा मारूँ वाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो मुझे अपनी माँ का दूध पिया हराम है।

साधनाविधि–घी का दीपक जलाकर गूगल की धूनी दें तथा जोड़ा फूल और

मिठाई रखकर २१ दिनों तक नित्य १००८ की संख्या में जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (१)

सबसे पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर निम्नलिखित मन्त्र को १००० बार पढ़ें—**अल्लाहुस्समद।'**

उक्त मन्त्र के प्रारम्भ तथा अन्त में ग्यारह-ग्यारह बार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिये। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

'दरूद' का मन्त्र इस प्रकार है—

अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले ही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।

फिर आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़कर अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर फूँक मारे तथा फिर दोनों हथेलियों को बड़ी जोर से फर्श (पृथ्वी) पर मारते हुए इस प्रकार कहे—

या अल्लाह फलाने (या फलानी) की मेरे बस कर।

उक्त 'वाक्य' में जहाँ 'फलाने' या फलानी शब्द आया है, वहाँ साध्य-पुरुष अथवा स्त्री का नाम उच्चारण करना चाहिये।

उक्त प्रयोग को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहने से साध्य-व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (२)

लाइलाह इल्लिल्लाह धरती से आसमान तक लाइलाह इल्लल्लाह अर्श से कुर्सी तक लाइलाह इल्लिल्लाह लोह से कलम तक लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह फलानी बेटे के बेटे को फलाने को मेरे बस में कर।

वशीकरण के लिए सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र का २१ दिनों तक नित्य १४४ बार जप करें। मन्त्र जप से पूर्व एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में ७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है। उक्त मन्त्र में जहाँ 'फलानी' के बेटे 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसकी माँ के नाम के साथ नाम का उच्चारण करना चाहिए। उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब इसी मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित पानी या मिठाई को जिस अभिलाषित व्यक्ति को खिला-पिला दिया जायेगा, वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

स्त्री-मोहन प्रयोग

१. अल्लाह बीचहथेली के मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी

मोहे जग संसार। मुझे करे मार मार उसे बाँधे कदम तरे डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर पड़ ब्रज का बान, बहक्क लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद तेरा रसूलिल्लाह।

विधि–किसी भी शनिवार से आरम्भ करके दूसरे शनिवार तक प्रतिदिन १०१ बार इस मन्त्र का जप करें। जप करते समय घी का दीपक तथा मिठाई अपने सामने रक्खें तथा लोबान की धूनी दें। इस प्रकार आठ दिन तक साधना (जप) करने से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग के समय साध्य-स्त्री के बाँयें पांव के नीचे की मिट्टी लाकर उसे इस मन्त्र. द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करके मस्तक पर डाल देने से वह स्त्री मोहित होकर साधक के वशीभूत हो जाती है।

२. **इन्ना आत्वैना शैताना मेरी शिकल बन फलानी के पास जाना, उसे मेरे पास लाना, न लावे तो तेरी बहन भानजी पर तीन सौ तलक।**

विधि–एक चारपाई के पाँयते नंगे खड़े होकर, हाथों में गुड़ की डली लेकर, उस डली पर उक्त मन्त्र को १२१ बार पढ़कर फूँकें, तत्पश्चात् उस गुड़ की डली को खाट के नीचे रखकर सो जायें। प्रातःकाल वह गुड़ बालकों को बाँट दें। इस प्रकार ७ दिन तक यह अमल करें तो साध्य-स्त्री वशीभूत होकर पास आ जाती है। उक्त मन्त्र में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

३. **कामरूदेस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने दिया पान का बीड़ा, पहला बीड़ा आती जाती, दूजा बीड़ा दिखावें छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाई, फलानी खाय पास चली आई, दुहाई श्री गुरू गोरखनाथ की।**

विधि–दीपावली की रात में यह मन्त्र १४४ बार पढ़ने से सिद्ध हो जाता है। फिर आवश्यकता के समय बिना कट पान की बीड़े को इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके, जिस स्त्री को खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगी। इस मन्त्र में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ अभिलाषित स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

३. **कामरूप देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल तोड़े लोना चमारी, जो इस फूल की सूँघे बास, तिस का मन रहे हमारे पास, महल छोड़े, घर छोड़े, आँगन छोड़े, लोक-कुटुम्ब की लाज छोड़े, दुलाई लोना चमारी की, धनन्तरि की दुहाई फिरै।**

विधि–शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक नित्य १४४ बार इस मन्त्र का जप करें तथा धूप-दीप और मदिरा रखकर पूजन करें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने

पर किसी फूल को ७ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके साध्य-स्त्री को दे दें, तो, वह उस फूल को सूँघते ही वशीभूत हो जाएगी।

४. बड़ पीपल की थान, जहाँ बैठा अजाजील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बन फलानी को जा रान, जो राने तो धोबी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े तो राजा चाहे राजा का, मैं चाहूँ अपने काज को, मेरा काम को, मेरा काम न होगा तो आनसी मैं तेरा दामनगीर रहूँगा।

विधि–किसी भी शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक, आधी रात के समय नंगा होकर ११ राई के दानें हाथ में लेकर, प्रत्येक दाने के ऊपर उक्त मन्त्र को ग्यारह-ग्यारह बार पढ़कर, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। उक्त क्रिया को नित्य नियमित रूप से करते रहने पर साध्य-स्त्री वशीभूत होकर स्वयं सामने उपस्थित होती है।

५. अलफ गुरु गुफ्तार रहमान, जाग जाग रे अलहादीन शैतान सात बार फलानी को जा रान, न राने तो तेरी माँ की तलाक, बहिन की तीन तलाक।

६. अलफ अलोप एक रहमान, सुन शैतान मेरी शकल बन फलानी को जा रान, न राने तो तेरी माँ बहिन को तीन सौ तीन तलाक।

उक्त दोनों मन्त्रों की प्रयोगविधि नीचे लिखे अनुसार एक जैसी ही है। उक्त मन्त्रों में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

विधि–बेसन का चौमुखा दीपक बनाकर उसके चारों कोनों पर चींटे का रक्त (खून) तथा अपने दाँयें हाथ की अनामिका (चौथी) अँगुली का रक्त (खून) लगाकर उसमें तेल भरकर चार बत्तियाँ रक्खें। फिर नंगे (निर्वस्त्र) होकर, दक्षिण दिशा की ओर मुँहकर बैठ जायँ तथा दीपक की बत्तियाँ जलाकर लोबान की धूप दें। भोग के लिए भुने हुए जौ लें।

वेदना-निवारण मन्त्र

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी बड़ी अदरख पतली पतली रेश बड़े विष के जल फाँसी दे शेष गुरु का वचन जाय खाली पिया पञ्च मुण्ड के बाद पर ठेली विषहरी राई की दुहाई फिरै।

प्रयोगविधि–अदरक को तीन बार पढ़कर रोगिणी को खिलाने से ऋतुमती की वेदना शान्त होती है।

मनोविकार-नाशक मन्त्र

आदेश श्री रामचन्द सिंह गुरु की तोड़ूँ गाँठ औंगा ठाली तोड़ दूँ लाय

तोहि देऊँ सरित परित देकर पाय यह देख हनुमन्त दौड़कर आय अमुक देह शांति वी भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै।

प्रयोगविधि–एक पान का बीड़ा लें, तीन बार यह मन्त्र पढ़कर खिलाने से समस्त प्रकार के मासिक विकार दूर होते हैं।

प्रसव कष्ट-निवारण मन्त्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। ॐ मुक्ता पाशा विपाश्च मुक्ता सूर्य्येण रश्मयः।। मुक्ता सर्व्व फयादर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतन्मन्त्रेणाष्टवारं जयनभि मनय पितम तत्क्षणात् सुख प्रसव भवति।

प्रयोगविधि–केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुएँ का जल लाकर ८ बार मन्त्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है तथा बालक सुखपूर्वक होता है।

विशेष–एक हाथ से कुएँ का जल खींचने के बाद जमीन पर न रखना चाहिये, अन्यथा प्रभाव निष्फल होगा।

मृगी रोग-हरण मन्त्र

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्री राम जी फूँके, मृगी बाई सूखे, सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।

प्रयोगविधि–भोजपत्र पर अष्टगन्ध से इस मन्त्र को लिखकर गले में बाँधने मात्र से रोग चला जाता है।

रतौंधी-विनाशक मन्त्र

ॐ भाट भाटिनी निकली कहे चलि जाई उस पा जाइब हम जाऊँ समुद्र। भाटिनी बोली हम विआइब-उसकी छाली बिछाइब हम उपसमाशि पर मुण्डा मुण्डा मुण्डा।

स्त्री सौभाग्य-वर्द्धक मन्त्र

ॐ ह्रीं कपालिनी कुल कुण्डलिनि में सिद्धिं देहि भाग्यं देहि देहि स्वाहा।

प्रयोगविधि–यह मन्त्र कृष्णपक्ष की चौदस से प्रारम्भ करके अगले महीने की कृष्णपक्ष की तेरस तक यानी एक मास तक नित्य एक सहस्त्र बार जप करने से स्त्रियों की समस्त आधि-व्याधियाँ दूर हो जाती हैं और स्त्री अपने पति-पुत्र-परिवार आदि की प्रिय हो जाती है।

चोर भय-हरण मन्त्र

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा चोर बंधय ठः ठः ठः।

यह मन्त्र १०८ बार पढ़कर जप करने से सिद्ध होता है। प्रयोग के समय सात

बार मन्त्र पढ़कर थोड़ी-सी मिट्टी द्वार पर भूमि में गाड़ दें, तो भवन में चोर घुसने का भय नहीं रहता।

१. ॐ धूम्राजक हुंकार स्फटिका दह दह ॐ।

प्रयोगविधि–मंगलवार या रविवार के दिन कर्मटिका वृक्ष के नीचे मृगासन पर बैठकर गांधली की लकड़ी जलायें, सरसों तथा गुग्गुल से उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए हवन करने से चोरी किये माल सहित चोर वापिस आ जाता है।

ॐ इन्द्राग्नि बन्य बान्धाय स्वाहा।

प्रयोगविधि–इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर सफेद मुर्गे के गले में बाँधकर मुर्गा को किसी बड़े टोकरे के नीचे बन्द कर दें, फिर जिन आदमियों पर चोर होने का शक हो, उन लोगों का हाथ टोकरे पर धरावें तो जब चोर टोकरे पर हाथ धरेगा तब मुर्गा बोल पड़ेगा और चोर मिल जायेगा।

मुकदमा जीतने का मन्त्र

ॐ क्रां क्रां क्रां धूम्रसारी बदाक्षं विजयपति जयति ओं स्वाहा।

प्रयोगविधि–जिस त्रयोदशी को पुनर्वसु नक्षत्र पड़े तब सुरही के चर्मासन पर किसी सरिता के निकट मूँगे की माला पर जपें तो यह मन्त्र सिद्ध और जब प्रयोग करना हो तो सात बार मन्त्र पढ़कर हाकिम के सम्मुख जाने से मुकदमे में विजय अवश्य प्राप्त होती है।

द्यूत का मन्त्र

ॐ नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं बानरी विजयपति स्वाहा।

सिद्ध करने की विधि–दीपावली के दिन आधी रात में पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर कादम्बरी के फूल से हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और जब प्रयोग करना हो तो एक फूल लें सात बार मन्त्र पढ़कर दाहिने हाथ में बाँध जुआ खेलें तो निश्चय जीतेंगे।

ऋद्धि-करण मन्त्र

ॐ नमो पद्मावी पदमानने लक्ष्मी दायिनी वाञ्छां भूत-प्रेत विंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी सिद्धि-ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्रीं पदमावत्यै नमः।

विधि–छारछबीला, कपूर, गुग्गुल, कचरी, गोरोचन सम भाग ले मटर के समान गोलियाँ बनाकर रविवार या शनिवार की आधी रात से जप प्रारम्भ करे और २२ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार मन्त्र जप करे तथा १०५ बार मन्त्र जप कर हवन करे तथा पूजन में लाल वस्तु ही धरे तथा वस्त्र ही पहने तो २२ दिन के पश्चात् लक्ष्मीजी की अनुकम्पा से ऋद्धि प्राप्त होगी।

धन-प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः।

विधि–मृगशिरा नक्षत्र में वध किये श्याम मृगचर्म पर आसीन हो किसी सरिता के तट कनका गुदी वृक्ष के नीचे बैठ श्रद्धा-विश्वासपूर्वक २१ दिन में एक लाख मन्त्र जपने से अनायास ही धन प्राप्त होता है।

भूख-प्यास-निवारण मन्त्र

ॐ सा सं शरीर अमृत माषाय स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले दस सहस्र बार शुभ मुहूर्त में जप कर सिद्ध कर लें और जब प्रयोग करना हो तो लटजीरा और केकर के बीज बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर मिठाई में सानकर गोली बनायें और १०८ बार मन्त्र पढ़कर ताँबे के यन्त्र में भर मुख में रखने से भूख-प्यास दोनों नष्ट हो जाती है।

पीलिया झारने का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियांक मिटाती कारै झारै पुलिया रहै न नेक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरु की भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोगविधि–काँसे के कटोरे में तेल भरकर रोगी के शीश पर रखें और हाथ में कुश लेकर मन्त्र पढ़ते हुए तेल में घुमाएं और जब जब तेल पीला हो जाय तब नीचे उतार लें, इस प्रकार तीन दिन झारने से पीलिया दूर हो जाता है।

मारण प्रयोग

१. ॐ नमो अमुकस्य हन हन स्वाहा।

प्रयोगविधि–सरसों के तेल में कनेर का पुष्प मिलाकर दस हजार बार मन्त्र पढ़कर हवन करें तो शत्रु निश्चित मृत्यु को प्राप्त होता है।

२. ॐ नमः काल भैरो कालिका तीर मार तोड़ बैरी छाती घोट हाथ काल जो काढ़ बत्तीसी दांती यदि यह न चले तो नोखरी योगिनी का तीर छूटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोगविधि–इक्कीस टुकड़े गुग्गुल तथा २१ फूल कनेर के लेकर श्मशान में जायें, चिता की अग्नि में एक टुकड़ा गुग्गुल तथा एक कनेर का फूल मन्त्र पढ़ते हुए हवन करें, इस प्रकार इक्कीस दिन करने से शत्रु अवश्य मर जाता है।

शत्रु-सन्तान-विनाशक मन्त्र

ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा।

प्रयोगविधि–अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की चार अंगुल की हड्डी लेकर उपरोक्त

मन्त्र का एक लक्ष पज कर सिद्ध कर लें, फिर सत्रह बार पढ़कर वैरी के भवन में गाड़ देने से शत्रु का परिवार सहित विनाश हो जाता है।

वैरी-विनाशक मन्त्र

ॐ नमो हनुमन्त बलवन्त माता अंजनी पुत्र हल हलन्त आओ चढ़त आओ गढ़ किल्ला तोरन्त आओ लंका जाल बाल भस्म करि आआ ले लागूँ लंगूर ते लपटाय सुमिरते पटका आ चन्दी चन्द्रावली भवानी मिल गावे मंगल चार जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ जी तुम आओ सात पान का बीड़ा चाबत मस्तक सिन्दूर चढ़ाओ आओ मन्दोदरी के सिंहासन डुलन्ता आओ यहाँ आओ हनुमान माया जागते नृसिंह माया आगे मैरु किल्किलाय ऊपर हनुमन्त गाजे दुर्जन को डार दुष्ट को मार संहार राजा हमारे सत्तगुरु हम सत्तगुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सिद्ध करने की विधि–मंगलवार के दिन सात लड्डू और सात पान का बीड़ा ले हनुमान मन्दिर में जाकर दस हजार बार मन्त्र जप कर लड्डू तथा पान का बीड़ा अर्पित करे। इसी प्रकार निरन्तर इकतालिस दिन तक इस मन्त्र का जप करे और जप की समाप्ति पर धूप, दीप, नैवेद्यादि से हनुमान जी का पूजन करे, सिन्दूर लगायें तो यह मन्त्र सिद्ध होता है और जब प्रयोग करना हो तो जमीन पर शत्रु की शकल का पुतला बनाकर सीने पर शत्रु का नाम लिख अंग-प्रत्यंग में बीज प्रदर्शित करे और सात बार मन्त्र पढ़कर उसके कपाल पर जूता लगावे तो शत्रु के शीश में चोट आवे, बुद्धि भ्रष्ट हो जाय, पागल होकर छः दिन में मृत्य को प्राप्त हो।

विशेष–भूमि पर शत्रु की मूर्त्ति बनाकर मोम की चार कीलें मंत्र पढ़कर मूर्ति के चारों कोने में गाड़ दे तथा हनुमान जी की पूजा करके बीज मन्त्र पूर्व की ओर मुख करके लिखे और खीर का भोग लगावे। बीज मन्त्र ज्ञात करने के लिये प्रस्तुत चित्र का अनुसरण करें।

प्राण-हरण मन्त्र

ॐ ऐं ह्लीं महा महा विकराल भरवाय, ज्वाला वत्ताय मल शत्रु दह दह हन हन पच पच उन्मूलय ॐ ह्लीं ह्लीं हुँ फट्।

प्रयोगविधि–श्मशान में जाकर भैरो के चर्मासन पर बैठ काले ऊन से सात रात्रि १०८ बार प्रति रात्रि मन्त्र जप कर सवा सेर सरसों से हवन करे तो शत्रु का हरण होता है।

मारण मन्त्र

१. ॐ चण्डालिनि कामाख्या वासिनि वनदुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा।

प्रयोगविधि–प्रथम दस हजार बार मन्त्र जप कर यह मन्त्र सिद्ध कर लें फिर

शनिवार के दिन गोरोचन तथा कुमकुम से भोजपत्र के ऊपर 'स्वाहा मारय हुँ अमुक ह्रीं फट्' लिखे और अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लिख ऊपर लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गले में धारण करे तो शत्रु का नाश होता है।

२. ॐ शुखले स्वाहा।

सर्वप्रथम दस हजार बार जप कर मन्त्र सिद्धि कर लें और जब प्रयोग करना हो तो बिच्छू का डंक, तज, कौंच के बीज और छैबुदिया नामक कीड़ा ले उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस प्राणी के कपड़े पर डाल दिया जाय, वह प्राणी सात दिवस में गुल्म रोग से पीड़ित हो काल-कवलित हो जायेगा।

३. ॐ सुरेश्वराय स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, उसके बाद जब प्रयोग करना हो तो एक अँगुल लम्बी साँप की हड्डी लाय आश्लेषा नक्षत्र में जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दें और दस हजार बार मन्त्र जप करें तो शत्रु परिवार का कोई व्यक्ति जीवित न बचे।

शत्रु-मनमोहन मन्त्र

ॐ नणो महाबल महा पराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बन्धय बन्धय दृष्टिं स्तम्भय अङ्गानि धूनय थूनय पातय पातय महीतले हुँ।

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो लटजीरा वृक्ष की पत्तियों का रस निकाल कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अस्त्र-शस्त्र पर लेप करे तो युद्ध भूमि में शत्रु देखते ही मोहित हो जाता है।

विशेष—अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारण करें।

अश्व-मारण मन्त्र

ॐ नमो पच पच स्वाहा।

जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो, घोड़े की सात अँगुली लम्बी हड्डी ले घुड़शाल में गाड़ दें और एक हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जप करें तो घोड़ा मृत्यु को प्राप्त हो।

मारण मन्त्र

ॐ डं डां डिं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृहाण गृहाण हुं हुं ठः ठः।

यह मन्त्र दस हजार बार जप कर सिद्ध करने के बाद जब प्रयोग करना हो तो चार अंगुल लम्बी आदमी की हड्डी लाकर इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर श्मशान में गाड़ देने शत्रु की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

उच्चाटन महामन्त्र

ॐ तुंग स्फुलिंग बक्रिम चाचिंका विद्धद्वहन मांघ वने स्फर स्फर ॐ ठः ठः अमुकं।

रविवार या मंगलवार की अमावस्या की अर्द्धरात्रि में ऊँट के चर्मासन पर गुंजा की माला से एक हजार अस्सी बार इस मन्त्र का जप करे तो शत्रु उच्चाटन होता है।

उच्चाटन मन्त्र

श्रीं श्रीं श्री अमुकं शत्रु उच्चाटनं स्वाहा।

उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में सात अंगुल लम्बी कुंकुम की लकड़ी को एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के द्वार पर गाड़ दें, तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ लोहिता मुख स्वाहा।

इस मन्त्र को एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो तो चार अंगुल लम्बी उमरी वृक्ष की लकड़ी लाकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसके मकान में डालें उसका उच्चाटन अवश्य होता है।

उच्चाटन महामन्त्र

ॐ हं हं वां हृं हृं ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले केवल एक हजार बार जप करके सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो तो चार अंगुल लम्बी कौवे की हड्डी लाकर एक हजार बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर जिसका उच्चाटन करना होवे उसके घर में डाल दें, तो शीघ्र उच्चाटन होता है।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ घुं घूति ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र की प्रयोग विधि अत्यंत सरल है। इसको केवल एक हजार बार जप करने से ही सिद्ध हो जाता है और इसका प्रयोग करना हो तो अरुवा वृक्ष की एक टहनी लें, एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ जिस व्यक्ति का नाम लेकर हवन करे उसका उच्चाटन अवश्य होगा।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ ह्रीं दण्डहीनं हीन महा दण्डि नमस्ते ठः ठः।

इस मन्त्र को भी उपरोक्त मन्त्र की भाँति एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना होवे तो सात अँगुल लम्बी मनुष्य की हड्डी लें, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस व्यक्ति के निवास स्थान में गाड़ दें, तो उसका उच्चाटन अवश्य होता है।

जगत मोहन मन्त्र

ॐ उड्डा महेश्वराय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ई उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख बार जप करके सिद्ध कर, फिर जब प्रयोग करना हो तो—पान की जड़ में पीसकर सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सभी मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन सम्मोहन मन्त्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च मम सुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा।

इस मन्त्र को एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लेने के बाद जब प्रयोग करना हो तो निम्नांकित प्रयोग करें—

१. गोरोचन, असगन्ध तथा हरताल को समभाग लेकर केले के रस में पीस सात बार मन्त्र जप कर अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से समस्त प्राणी मात्र सम्मोहित हो जाते हैं।

२. सफेद मदार (आंक) की जड़ को सफेद चन्दन के साथ घिस कर सात बार मन्त्र जप कर मस्तक पर तिलक लगाने से अमोघ सम्मोहन होता है।

३. अनार के पाँचों अंग (फल, फूल, जड़, पत्ते, छाल) सफेद घुंघुची के साथ पीसकर इक्कीस बार मन्त्र जप कर तिलक लगाने से समस्त प्राणी मोहित होते हैं।

४. कपूर तथा मैनसिल केले के रस में पीसकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगावे तो सब लोग मोहित होते हैं।

५. गोरोचन, कुंकुम तथा सिन्दूर को धात्री के रस के सहयोग से पीस उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से जगत् के समस्त प्राणी मोहित हो जाते हैं।

६. शंखाहुली, सिरस तथा राई (आसुरी) को सफेद रंग वाली गाय के दूध के संयोग से अभिमन्त्रित कर शरीर में लेप करके गर्म जल से स्नान कर केशर का तिलक लगा जहाँ भी जाय, वहाँ के समस्त प्राणी मोहित होते हैं।

७. तुलसी बीजों को सहदेई के रस में पीस करके उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक लगाने से समस्त लोग सम्मोहित होते हैं।

मोहन-मन्त्र

१. ॐ भगवते रुद्राय सर्व-जगन्मोहनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें फिर निम्नांकित प्रकार से प्रयोग करें—

गोरोचन, सिन्दूर तथा केशर को आँवले के रस में पीस करके उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से सभी लोग मोहित होते हैं।

कड़ुई तुम्बी (तोरई) के बीजों का तेल निकला कर उसमें कपड़े की बत्ती

वनाकर काजल पार कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर आँखों में आँजने से प्राणी मात्र मोहित होते हैं।

२. ॐ नमो अनरुठनी अशव स्थनी महाराज क्षनी फट् स्वाहा।

उल्लू के पंख की लेखनी बनाकर बकरे के रक्त से कागज पर १०८ बार यह मन्त्र लिखे और कागज को पगड़ी या टोपी में रखकर जहाँ भी जाय, वहाँ के वासी अवश्य मोहित होते हैं।

३. ॐ श्रीं धूं धूं सर्व मोहयतु ठः ठः।

इस मन्त्र को प्रथम एक हज़ार बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो, तब चिचिक पक्षी के पंख को कस्तूरी में पीस १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले समस्त जन मोहित हो जाते हैं।

मोहन मोहिनी मन्त्र

ॐ नमः पद्मनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में जाय मोहूँ। सर्व ग्राम मोहूँ राजकरन्तारा मोहूँ। फर्श पे बैठाय मोहूँ। पनिघट परिहारिन मोहूँ। गर नगरी के छत्तीस पवनिया मोहूँ। जो कोई मार मार करन्त आवे उसे नरसिंह बीर बाम पद अंगूठा तर धरे और घेर लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को शनिवार या रविवार की रात्रि में नृसिंह देव की विधिवत् पूजा कर गुग्गुल जलावे तथा सुपारी, घी, शक्कर, पानादि अर्पित कर एक सौ आठ बार मन्त्र जप कर हवन करके सिद्ध कर लें तथा जब प्रयोग करना हो तो चन्दन बन रुई में लटजीरा के संयोग से बत्ती बनाकर काजल पार लें और उस काजल को सात बार मन्त्र पढ़कर आँख में लगाने से नगरवासी मोहित होते हैं।

ग्राम मोहन मन्त्र

ॐ यती हनुमन्त यह जाय मरे घट पिडकर कौन है और छत्ती मय बन पेड़ जेहि दश मोहूँ जेहि दश मोहूँ, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को रविवार से प्रारम्भ करके शनिवार के दिन तक निरन्तर १४४ बार हनुमान जी की प्रतिमा के सामने जप कर सिंद्ध करें, फिर जब प्रयोग करना हो तो चौराहे की सात कंकड़ी उठाकर १४४ बार मन्त्र पढ़कर कुएं में डालें उस कुएं का जल पीने वाले सभी लोग मोहित हों।

सभा मोहन मन्त्र

कालू मुँह धोई करूँ सलाम मेरे नैन सुरमा बसे जो निरखे सो पायन पड़े गोसुल आजम दस्तगीर की दुहाई।

यह इस्लामी मन्त्र है, जुमे (शुक्रवार) को सवा लाख गेहूँ के दाने लें, प्रत्येक दाने पर एक बार मन्त्र पढ़ इसको सिद्ध कर लें और आधा गेहूँ पिसवाय घी से हलुवा बना गोसुल आजम को अर्पित कर स्वयं भी खाय फिर सात बार मन्त्र जप कर आँखों में सुर्मा लगाकर जिस सभा में जाय, वहाँ के सभी लोग मोहित हों।

कामिनी मनमोहन मन्त्र

अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार। उसका नाक मोहिनी जगत् मोहे संसार। मोह करे जो मोर मार उसे मेरे बायें पोत बार डार। जो न माने मुहम्मद पैगम्बर की आन। उस पर मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।

यह मन्त्र भी इस्लामी है। इसको शनिवार से आरम्भ कर अगले शनिवार तक नित्य धूप, दीप, लोहबान सुलगाकर एक बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो, तब स्त्री के पैरों तले की मिट्टी उठाकर सात बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री के शीश पर डालें, वह मोहित हो जावे।

कामिनी मनमोहन मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को यह गुड़ राती यह माती यह गुड़ आवे पड़ती। जो माँगू वही पाऊँ सोवत तिरिया को जगाय लाऊँ। चल अगियाबैताल अमुक हृदय पैठ घलावै चाल निशि लो चैन न दिन को सूख, घूम फिर कर ताके मेरा सुख। जब मकड़ा मकड़ से टले तो माथ फार दो टूक हो पड़े। माला कलवा काली एक कलवा सोइ धाय चाटे मेरा तलवा आँख के पान कवारी इसे धन और यौवन सो खरी पियारी रेन अंग गुड़ में लसे शीघ्र 'अमुक' आवे फलाना पास हनुमन्तजी की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को शनिवार से प्रारम्भ करके दूसरे शनिवार तक नित्य इक्कीस बार मन्त्र जप विधिवत् हनुमान जी की पूजा करें तो यह सिद्ध हो जांवे और जब प्रयोग करना हो तो, थोड़े से गुड़ जिस स्त्री एवं पुरुष को खिला दें, वह तन-मन से मोहित हो जाय।

आकर्षण मन्त्र

१. ॐ नमः ह्रीं ठं ठः स्वाहा।

यह मन्त्र मंगलवार के दिन दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर जव प्रयोग करना हो तो चूहे के बिल की मिट्टी सरसों तथा बिनौला हाथ में ले तीन बार मन्त्र पढ़कर जिसके कपड़े पर डाल दें, वह अवश्य आकर्षित होगा।

२. ॐ हुँ ॐ हुं ह्रीं।

जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो उसका ध्यान कर पन्द्रह दिन तक नित्य इस मन्त्र का जप करें तो कैसा ही पत्थर दिल का प्राणी क्यों न हो वह अवश्य ही आकर्षित हो जायेगा।

३. ॐ हौं ह्रीं ह्रां नमः।

इस मन्त्र को भी पूर्व मन्त्र की भाँति नित्य दस हजार पर पन्द्रह दिन तक जप करें तो अवश्य ही आकर्षित होता है।

४. ॐ नमः भगवते रुद्राय सदृष्टिं लीपना हर स्वाहा कंसासुर की दुहाई।

इस मन्त्र का जप मंगलवार से प्रारम्भ कर दश मंगल तक निरन्तर नित्य १२ बार मन्त्र-जप कर दशांश-हवन कर ब्राह्मण भोजन करावें और जब प्रयोग करना हो तो सरसों, बिनौला और चूहे के बिल की मिट्टी ले तीन बार मन्त्र पढ़ जिसके वस्त्रों पर डालें वह अवश्य आकर्षित होता है।

स्त्री आकर्षण मन्त्र

ॐ नमो देव आदि रूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को विधिपूर्वक दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें फिर निम्न प्रकार से इसका प्रयोग करें—

१. मृत मनुष्य की खोपड़ी लाकर गोरोचन से उस पर यह मन्त्र लिखकर खैर वृक्ष की लकड़ी जलाकर मन्त्र पढ़कर तपावें। इस प्रकार तीन दिन तक नित्य करें तो कैसी पाषाण हृदया कामिनी क्यों न हो वह अवश्य ही आकर्षित होती है।

२. अपनी अनामिका नामक अंगुली चीर रक्त से भोजपत्र पर मन्त्र लिख जिसको आकर्षित करना हो उसका नाम लिखें और शहद में डुबो दें, तो वह कामिनी अवश्य आकर्षित होती है।

३. गोरोचन में काले धतूरे का रस मिलाकर कनेर की लकड़ी की लेखनी बना भोजपत्र पर उक्त मन्त्र लिख जिसे आकर्षित करना हो, उसका नाम लिख खैर नामक वृक्ष की लकड़ी जलाकर अग्नि में तपावें तो वह कामिनी चाहे चार सौ कोस (सौ योजन) दूर क्यों न हो अवश्य ही आकर्षित होती है।

कामिनी आकर्षण मन्त्र

ॐ चामुण्डे तरु वतु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा।

यह महामन्त्र इक्कीस दिन तक तीनों समय की संध्या अवधि में नित्य एक हजार बार जपने से सिद्ध हो जाता है। इसकी प्रयोग विधि इस प्रकार है—

१. काले साँप की केंचुल का चूर्ण अग्नि में डाल इस मन्त्र का जप कर उसका धुआँ अपने अंग-प्रत्यंग पर लेने से कैसी ही रूपवती गर्विता कामिनी हो अवश्य ही आकर्षित होती है।

२. उत्तर की ओर मुख कर लाल चन्दन से, लाल कपड़े पर यह मन्त्र लिख विधिपूर्वक पूजा करें और फिर उसे पृथिवी में गाड़ इक्कीस दिन तक नित्य चावल के

धोवन से सींचते हुए इक्कीस बार मन्त्र जप करें (अमुकाय के स्थान पर उस स्त्री का नाम उच्चारण करें) तो उर्वशी समान रूप गर्विता कामिनी भी खिंची चली जाती है।

आकर्षण मन्त्र

ॐ ह्रीं नमः।

यह मन्त्र एक सप्ताह तक नित्य लाल वस्त्र तथा कुंकुम की माला पहन कर एक हजार बार जप करने से साधारण स्त्री तो क्या स्वर्ग की देवगंना भी आकर्षित हो, साधक के समीप खिंची चली आती है।

आकर्षण मन्त्र

ॐ क्षौं ह्रीं ह्रीं आं हां स्वाहा।

यह मन्त्र भी उपरोक्त विधि से लाल कपड़ा पहन कुंकुम की माला गले में पहन कर एक सप्ताह तक नित्य दश हजार बार जप करने से मन वांछित स्त्री आकर्षित होकर खिंची चली आती है।

वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो चामुण्डे जय जय वश्य मालय जय जय सर्व सत्वा नमः स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लेने के बाद रविवार के दिन गुलाब का फूल सात बार मन्त्र पढ़कर जिसे दें, वह वश में हो जाता है।

त्रैलोक्य वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवती मातंगेश्वरी सर्व मन रंजनि सर्वेषां महा तगे कुवरी के नन्द नन्द जिवहे जिवहे सर्व जगत् वश्यमानय स्वाहा।

इस मन्त्र को दश हजार बार जप कर सिद्ध कर लेने के बाद वशीकरण के लिए निम्न प्रकार प्रयोग करें—

१. चन्द्रग्रहण के अवसर पर सफेद विष्णुकान्ता की जड़ लाकर तीन बार मन्त्र पढ़ आँख में अंजन की तरह आँजने से देखने वाले सभी लोग वश में होते हैं।

२. शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को सफेद घुंघची की जड़ लाकर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसको भी खिला दें, वह तन-मन से साधक के वश में हो जाता है।

वशीकरण मन्त्र

ॐ सर्व लोक वश कराय कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को प्रथम १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें और जब प्रयोग करना हो तो निम्न प्रकार प्रयोग करें—

१. लटजीरा के बीज काली गाय के दूध में पीसकर सात बार मन्त्र पढ़कर मस्तक पर तिलकर लगावें तो देखने वाले वश में हो जाते हैं।

२. नागरमोथा, हरताल, कुंकुम, कूट और मैनसिल को अनामिका अंगुली के रक्त से पीसकर सात बार मन्त्र पढ़कर मस्तक पर तिलक लगावें तो जो व्यक्ति उस तिलक को देखे वह वश में हो जाता है।

३. बरगद, की जड़ में घिस कर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से देखने वाला वश में हो जाता है।

४. सफेद मदार (लौंक) के फूल छाया में सुखाकर काली गाय के दूध में पीस २१ बार मन्त्र पढ़ मस्तक पर तिलक लगाने से उत्तम वशीकरण होता है।

५. काली गाय के दूध में सफेद दूब पीस करके २१ बार मन्त्र पढ़ तिलक लगावे तो स्त्री वशीकरण होवे।

६. छाया में सुखाई सहदेई को उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर चूर्ण बनाकर पान में जिस किसी व्यक्ति को खिला दें, वही वश में हो जाता है।

७. वच, कूट और ब्रह्मदण्डी का चूर्ण बराबर मात्रा में ले इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पान में जिसे खिला दें, वही वश में हो जावे।

भूतनाथ वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भूतनाथ समस्त भुवन भूतानि साधय हुँ।

इस मन्त्र को एक लाख बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है और जब प्रयोग करना हो तो जिस प्राणी को वश में करना हो उसका ध्यान करते हुए १०८ बार यह मन्त्र जप करने से वह वश में हो जाता है।

वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं कालि कालि स्वाहा।

इस मन्त्र को किसी तिराहे (जहाँ से तीन दिशाओं को मार्ग जाता हो) पर आसीन हो एक लाख बार जप करके सिद्ध कर लें। फिर जब प्रयोग करना हो तो इच्छित स्त्री-पुरुष पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर फूँक मार दें, तो कैसा ही हृदयहीन व्यक्ति क्यों न हो आपके वश में हो जाएगा।

मित्र वशीकरण मन्त्र

वीनोन तरयोध सरक्ता सतोत विष्टांग। रक्त-चन्दन-लिप्ताङ्गा भक्तानां व शुभप्रदम्।।

गाय के गोबर से त्रिकोणाकार चौका लगाकर उसके तीनों कोनों पर कुंकुम की रेखा खींचे और बीच में जिसको वश में करना हो, उसका नाम लिख सिन्दूर लगाकर एकाग्रतापूर्वक दस हजार बार मन्त्र का जप करे तो सौ मित्र वश में हो जाते हैं।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले १००८ बार जप करके सिद्ध कर लें फिर आवश्यकता के समय निम्न प्रकार का प्रयोग करें। मछली के पित्ते में गोरोचन मिलाकर सात बार मन्त्र पढ़कर मस्तक पर लगाने से पति वश में हो जाता है।

पुरुष वशीकरण मन्त्र

१. इस मन्त्र को पहले एक हजार बार जप करके सिद्ध कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो बृहस्पति के दिन कदली का रस, सिन्दूर और योनि का रक्त मिलाकर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर लगावें तो पति कैसा भी निष्ठुर क्यों न हो वशीभूत हो जाता है।

२. अनार के फल, फूल, पत्ता, छाल, और जड़ लेकर सरसों के साथ पीसकर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर योनि में लेप कर समागम करे तो मृत्यु तक वश में रहता है।

वशीकरण सिन्दूर मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को सिन्दूर कीमया सिन्दूर नाम तेरी पत्ती। कामाख्या सिर पर तेरी उत्पत्ती। सिन्दूर पढ़ि अमुकी लगावें विदी हो वश अमुक होके निर्बुद्धी। ॐ महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति कामाख्या माई की दुहाई आदेश हाड़ी दासी चण्डी की, अमुक मन लाव निकार न तो पिता महादेव वाम पाद जाय लगे।

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लें और आवश्यकता के समय सरसों के तेल में मालती के पुष्प डाल दें और जब कुछ दिन में वह फूल जाय, तब १०८ बार मन्त्र पढ़ योनि में लगा पति समागम करें तो पति वश में हो जाता है।

वशीकरण महामन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं थिरिं ठः ठः अमुक वशं करोति।

इस मन्त्र को दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर आवश्यकता के समय शुक्लपक्ष की परिवा को गौरेया चिड़िया का मांस ले इक्कीस बार मन्त्र पढ़ थोड़ा-सा मांस पान में पति को खिला दें, तो पति वश में हो जाता है।

वशीकरण मन्त्र

१. मासिक धर्म से शुद्ध हो चार लौंग युक्ति पूर्वक अपनी योनि में चार दिन तक रक्खें, चार दिन बाद निकाल कर पीस लें और पति के शीश पर डाल दें अथवा खिला दें, तो पति जीवन पर्यन्त वश में रहता है।

२. सफेद धतूरे के बीज, सफेद सरसों, तुलसी के बीज और लटजीरा के बीज तिल्ली के तेल में पीसकर योनि में लेप कर समागम करे तो पति सदैव के लिए वश में हो जाता है।

३. रविवार के दिन तुलसी के बीज लेकर सहदेई के रस में पीस लें और उसे योनि में लगा पति से समागम करें तो सदैव के लिए वश में हो जाता है।

४. कुंकुम और गोरोचन एक साथ पीसकर अनार की लकड़ी की लेखनी बना षट्कोण यन्त्र बनावें और यन्त्र के दक्षिण तथा उत्तर कोण पर क्रमश: 'श्रीं क्षां श्रीं' लिखें और पूर्व के कोण में 'क्षां' तथा पश्चिम के कोण में 'श्रीं' लिख श्रद्धापूर्वक पूजा करें और दूसरे दिन सरवा रख उत्तम मुहूर्त में चोटी में बाँध लें और दो दिन मौन रहकर केवल फल खाकर व्यतीत करें फिर चोटी से यन्त्र खोल अष्टधातु के ताबीज में भर गले में बाँध लें और प्रत्येक रविवार को धूप दें पति समागम करें तो रूठा हुआ पति भी आकर्षित हो वशीभूत हो जाता है।

कामिनी वशीकरण मन्त्र

ॐ कुम्भनी स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले एक हजार बार जप करके सिद्ध कर लें और फिर आवश्यकता के समय गुलाब का फूल १०८ बार मन्त्र पढ़ जिस स्त्री को सुंघाया जाय, वह वश में हो जाती है।

वशीकरण मन्त्र

ॐ चिमि चिमि स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें और आवश्यकता के समय प्रात:काल उठ मुख धोकर चुल्लू पानी सात बार मन्त्र पढ़ कर स्त्री का नाम लेकर पियें, वह वश में हो जाती है।

वशीकरण मन्त्र

१. पुण्य नक्षत्र में धोबी के पैर की धूल जिस सुन्दरी के शीश पर डाल दें, वह सदैव वश में रहती है।

२. उल्लू के पीठ की रीढ़ लेकर केसर, कस्तूरी और कुंसुम के साथ घिस कर मस्तक पर तिलक लगा जिस स्त्री के सम्मुख जाय, वह सुन्दरी तुरन्त वश में हो जाती है।

३. जिस स्त्री को वश में करना हो, उसके बाँयें पैर के नीचे की मिट्टी लाकर उसकी मूर्ति बनावें और वस्त्र पहना कर अभिलाषित स्त्री के (केश) सिर में लगाकर सिन्दूर लगावे और उसकी योनि में वीर्य डाल उस कामिनी के द्वार पर गाड़ दें, जब वह स्त्री पार करेगी तब वश में हो जाएगी।

४. जब रविवार पुष्य नक्षत्र को अमावस्या हो उस दिन अपना वीर्य मिठाई में मिला जिस स्त्री को खिला दें, वह सदा वश में रहे।

५. घी के साथ कनेर के फूलों से जिस स्त्री की इच्छा कर हवन करें, वह कामिनी सात दिवस के अन्दर साधक की इच्छा पूर्ण करती है।

६. कनेर के फूलों से छः मास तक हवन करने से देवांगनायें वश में होकर मनोकामना पूर्ण करती हैं।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को प्रथम दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, उसके पश्चात् निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग में लावें।

१. देशी घी के साथ चीनी का सेवन करके सोंठ को एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर चबाने के बाद अंगारे चबाने से भी मुख नहीं जलता है।

२. सोंठ, काली मिर्च तथा पीपल को एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर चबावें और उसके पश्चात् प्रज्वलित अग्नि के टुकड़े चबाने से मुख नहीं जलता।

३. कपूर के साथ मेढक की चर्बी को मिलाकर शरीर पर मलने के बाद अग्नि स्पर्श करने से शरीर नहीं जलता।

४. केला तथ ग्वारपाठे के रस को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर देह पर लगाने से शरीर अग्नि से नहीं जलता।

५. ग्वारपाठे के रस में मदार (आँक) का दूध मिश्रित कर मन्त्र पढ़ शरीर पर मलने से *अग्नि* स्पर्श से तन नहीं जलता।

अद्भुत अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ॐ अहो कुम्भकर्ण महा राक्षस कैकसी गर्भ सम्भूत पर सैन्य भंजन महा रुद्रो भगवान् रुद्र आज्ञा अग्नि स्तम्भय ठः ठः।

यह उपरोक्त मन्त्र प्रथम दो लाख बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये, फिर आवश्यकता होने पर केवल एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करने से शरीर को अग्नि ताप का भय नहीं रहता।

जल स्तम्भन मन्त्र

१. केकड़ा नामक जलजीव के पाँव, दाँत तथा रुधिर, कछुएं का हृदय, सूँस की चर्बी और भिलावे का तेल उपरोक्त समस्त वस्तुयें एकत्र कर अग्नि में पका १०८ बार मन्त्र पढ़ सर्वांग पर लेप करने से अद्भुत जल स्तम्भन होता है।

२. लिसोड़े तथा तुम्बी के बीज और फलों को जल के संयोग से पीस कर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रवाहित जल में रात्रि के समय डालने से

जल स्तम्भन हो जाता है और जब तक जल में नमक नहीं डाला जाय, जल प्रवाहित नहीं होता है।

३. पद्माक्ष का चूर्ण एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जल में डालने से स्तम्भन होता है।

४. नेवला, साँप तथा नाका (घड़ियाल) की चर्बी और डुण्डुम की खोपड़ी, इन चारों वस्तुओं को भिलावे के तेल में पकाकर तेल को लोहे के बर्तन में रखकर कृष्णपक्ष की अष्टमी को शिवजी की पूजा कर हवन करे और उसमें १००८ घी की आहुति देवे, तत्पश्चात् उक्त सिद्ध तेल को अंग में लेप करने से मनुष्य जल की सतह पर निर्विघ्न विचरण कर सकता है, जैसे पृथ्वी पर विचरण करता है।

मेघ स्तम्भन मन्त्र

ॐ मेघान् कुरु कुरु स्वाहा।

श्मशान की भस्म लाकर नई ईंट पर चार समय रेखायें खींच, उसके ऊपर एक ईंट रखें, तत्पश्चात् १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर निर्जन वन में गाड़ दें, तो जल वृष्टि रुक जाती है, यानी मेघ स्तम्भन होता है।

बुद्धि स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को उत्तम काल में एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लेवें और जव प्रयोग करना हो तो निम्न प्रकार से प्रयोग में लायें।

विशेष–मन्त्र में प्रयुक्त 'शत्रूणां' शब्द के स्थान पर अभिलाषित शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिये और आवश्यकता के समय निम्न प्रकार से प्रयोग में लायें।

१. उल्लू नामक पक्षी की विष्ठा को छाया में सुखाकर एक रत्ती १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पान में जिसे खिला दें, उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

२. जमीकन्द, सहदेई, ओंगा, सफेद सरसों, वच इन समस्त वस्तुओं को लोहे के पात्र में चूर्ण कर तिलक लगा कर शत्रु के सामने जाने से उसकी बुद्धि तत्काल नष्ट हो जाती है।

मुख स्तम्भन मन्त्र

ॐ ह्रीं रक्षके चामुण्डे कुरु कुरु अमुकमुखं स्तम्भय स्वाहा।

१. इस मन्त्र को किसी सरिता के निर्जन तट पर एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लें और जब प्रयोग करना हो तो पलाश की जड़ लाकर १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तालू में रख शत्रु के सामने जाने से उसकी बोलने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

२. अर्जुन की छाल तथा जड़ को २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मुख में रखकर जिसके सम्मुख जाय उसकी वाक्-शक्ति नष्ट हो जाती है।

सिंह स्तम्भन मन्त्र-१

क्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं।

उपरोक्त मन्त्र को किसी निर्जन स्थान में दस हजार बार जप करके सिद्ध करने के पश्चात् जब प्रयोग करना हो तो लोहे का एक टुकड़ा लेकर उसे १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सिंह के सामने फेंक देने से उसकी शक्ति स्तम्भित हो जाती है।

सिंह स्तम्भन मन्त्र-२

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं स्वाहा।

इस मन्त्र को किसी उत्तम एकान्त स्थान में पूर्ण मनोयोग पूर्वक दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात् जब कोई प्रयोग करना हो तो बाण या कोई अन्य शस्त्र अथवा लोहे का कोई टुकड़ा १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सिंह के सम्मुख फेंक देवें तो उसका स्वर एवं आक्रामक शक्ति स्तम्भित हो जाती है।

आसन स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो दिसम्बराय अमुकासन स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को प्रथम किसी सरिता या सरोवर के तट पर एकान्त में दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये और आवश्यकता पड़ने पर निम्न प्रकार से प्रयोग में लाना चाहिये—

१. मरघट की अग्नि लाकर नमक की आहुति देते हुए उपरोक्त मन्त्र से १०८ आहुति दें, हवन करें और अमुक के स्थान पर अभिलाषित व्यक्ति का नाम उच्चारण करें तो वह व्यक्ति स्तम्भित हो जाता है।

२. कोई सरिता जिस स्थान पर समुद्र में गिरती हो, उस संगम स्थल की मिट्टी लाकर उसमें कुत्ते की पूँछ के बाल मिला करके गोली बना लें और १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अकोल के तेल में डाल करके जिसका स्तम्भन करना हो, उसे दिखाने से वह व्यक्ति उस स्थान को त्याग अन्यत्र तक नहीं जा सकता, जब तक गोली अकोल के तेल से न निकाली जाय।

३. मरघट से किसी मृत व्यक्ति की खोपड़ी लाकर उसमें सफेद घुँघटी के बीज बो दे और नित्य प्रति उसको दूध से सींचता रहे और वृक्ष उत्पन्न होने पर उसकी डाली तथा लता को १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के सम्मुख डाल दिया जायेगा, वह अपने स्थान से त्याग कहीं नहीं जायेगा। यह अद्भुत स्तम्भन मन्त्र कभी निष्फल नहीं होता।

सर्प स्तम्भन मन्त्र

सर्पाय सर्प भद्रं ते दूरं महाविष।
जनमेयस्य यज्ञान्ते आस्तिक्य-वचनं स्मर।।
आस्तिक्य-वचनं स्मृत्वां यः सर्पो न निवर्तते।
सप्तधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा।।

उपरोक्त मन्त्र को प्रथम किसी एकान्त स्थान में दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो केवल २१ बार मन्त्र पढ़ कर फूँक मार देने से अद्भुत सर्प स्तम्भन होता है।

शस्त्र-स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भैरवाय नमः। मम शत्रुशस्त्र स्तम्भने कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को सवार्थ सिद्धियोग में रात्रि के समय श्मशान में जाकर निर्वस्त्र होकर २१ हजार बार जप करके अन्त में मांस-मदिरा से भैरव की पूजा करके बलि प्रदान करें, तत्पश्चात् जब प्रयोग की आवश्यकता हो तब खरमंजरी के बीज हाथ में लें, २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित शत्रु के सम्मुख फूँक देने से शत्रु का वार करने के लिये उठा हुआ हाथ भी तत्काल रुक जाता है।

क्षुधा स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो सिद्धि रूपं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा।

सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के अवसर पर किसी सरिता जल के मध्य में खड़े होकर दस हजार बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और जब प्रयोग करना हो तो, ओंगा के बीज लेकर २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खीर बनाकर खाने से क्षुधा स्तम्भन होता है।

क्षुधा स्तम्भन मन्त्र

ॐ गा जुहुदख्यां उन्मुख मुख माँसर थिल ताली अहुम।

इस मन्त्र को जिस रविवार को हस्त नक्षत्र होवे, किसी भी देव-मंदिर में एकाग्रता पूर्वक दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर आवश्यकता होने पर निम्न प्रकार का प्रयोग करें—

१. रविवार के दिन चर्चिका के बीज इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर खाने से भूख रुक जाती है।

२. तुलसी, क्षत्री, पद्म तथा अपामार्ग के बीज समभाग में लेकर जल के साथ पीस कर गोली बनावें और आवश्यकता के समय एक गोली २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खायें और ऊपर से दुग्ध पान कर लें, तो भूख नहीं लगती है।

३. रविवार के दिन गाय के दूध में लटजीरा के चावलों की खीर बनाकर

अपामार्ग की धूनी देकर गुड़ व चना मिलाकर मिट्टी की हँड़िया में रख उसका मुख मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर प्रवाहित जल के नीचे गड्ढा खोदकर गाड़ दें, तो जितने दिन का मन में निश्चय करें, उतने दिन भूख नहीं लगती।

वीर्य स्तम्भन मन्त्र

१. सोमवार को सायंकाल लाल अपामार्ग (लटजीरा) की जड़ को निमन्त्रण दे आवें और मंगल को प्रात: उखाड़ कर लावें और उसे कमर में बाँध मैथुन करें तो वीर्य स्तम्भन होता है।

२. घुग्घू नामक पक्षी की जीभ (जुबान) को एक रत्ती गोरोचन के साथ पीसकर ताँबें के ताबीज में भरकर मुख में रख स्त्री प्रसंग करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

३. इमली की चियाँ दो दिन जल में भिगोकर छिलका उतार दें और बराबर का पुराना गुड़ मिला गोली बना एक गोली खाने से वीर्य स्तम्भन होता है।

४. श्याम कौंच की जड़ मुख में रख स्त्री प्रसंग करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

अन्य जल स्तम्भन मन्त्र

ॐ थं थं थाहि थाहि।

विधि–पहले इस मन्त्र को बृहस्पतिवार को शिशिर ऋतु में दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर कुलीर पक्षी के पंख को इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके जल में डुबो दें, तो जल रुक जाय।

आग और पानी को सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसे जमीन में गाड़ दें, तो पानी न बरसे।

अन्य जल स्तम्भन

कुलीर (मेगटा) की टाँग, दाँत, रक्त, कछुवा का हृदय और शिशुमार (एक प्रकार का जल-जन्तु) की चर्बी और बहेड़े का तेल, इन सब चीजों को पकाकर शरीर पर लेप करें, तो जल के ऊपर आसानी पूर्वक ठहरा रहे, यानी डूबे नहीं।

खंजन स्वर ज्ञान मन्त्र

ओम् तिमिर विष्ठाय स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र अमावस्या की रात को निर्जन सरिता के तट पर निर्वस्त्र (नग्न) होकर दस हजार बार जप करने से साधक खंजन की बोली समझने में समर्थ हो जाता है।

शृगाल स्वर ज्ञान मन्त्र

ओम् क्रीं क्रीं क्लीं क्लीं स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र की सिद्धि के लिए साधक को चाहिये कि अमावस्या की रात्रि में वन में जाकर एक आघात से श्रृगाल का वध करके पृथ्वी पर चर्मासन बिछाकर उसे स्थापित कर मनोयोग से उसकी पूजा करे। पुष्प, गन्धादि अर्पित कर माँस, मदिरा का नैवेद्य समर्पित करे। आधी रात को निर्वस्त्र होकर उपरोक्त मन्त्र का एक लाख बार जप करे। जप सम्पूर्ण होते ही वह श्रृगाल पुन: जीवित हो उठता है और साधक को स-सम्मान सम्बोधन करके पूछता है कि 'ऐ पुत्र! तेरी अभिलाषा क्या है प्रकट करो? उस समय साधक को निर्भय होकर उससे कहना चाहिये, कि मरे-जीवन-पर्यन्त आप मेरे वश में रहकर सदैव मेरी रक्षा तथा कल्याण करें और उसे पुन: मांसयुक्त भोज्यपदार्थ अर्पित करें। इस भाँति साधन से श्रृगाल साधक को मनोवांछित वर प्रदान करता है और साधक को भविष्य में घटने वाली घटनाओं को छह माह पूर्व ही कान में बता देता है और साधक उसकी बोली सुगमता पूर्वक समझ लेता है।

नोट—साधक को जब भी कहीं श्रृगाल का स्वर सुनाई पड़े तो उसे विनम्रता पूर्वक प्रणाम कर सम्मान प्रदान करना चाहिये।

मूषक सिद्धि मन्त्र

ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ओं ओं मूषक विचीव स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को जिस गुरुवार को पुण्य नक्षत्र हो, अपनी पत्नी के साथ पूर्व मुख बैठ मनोयोग पूर्वक दस हजार बार जप करने से साधक मूषक-शब्द समझने योग्य हो जाता है और जिस कार्य को हाथ में लेगा उसको कभी असफलता नहीं मिलेगी।

हंस-सिद्धि मन्त्र

हं हं के के हसं हसं।

उपरोक्त मन्त्र किसी सरोवर के तट पर, पवित्र स्थान में गुह्य कालिका देवी की प्रतिष्ठा कर मनोयोग पूर्वक पूजा करें, तत्पश्चात् एक लाख बार मन्त्र जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और साधक हंस की बोली समझने योग्य हो जाता है तथा उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित हंस की विष्ठा का तिलक लगाने से साधक सर्वदर्शी शक्ति को प्राप्त कर लेता है, जिसके प्रभाव से उसे भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल का ज्ञान हो जाता है।

बिलारी-साधक मन्त्र

ॐ ह्रीं किङ्कटाय स्वाहा।

श्रावण मास में एक समय फलाहार करते हुए संकटा देवी का नित्य नियमपूर्वक पूजन करे तथा पूजन के पश्चात् नित्य उपरोक्त मन्त्र का तीस हजार बार जप करे, तो साधक बिल्ली का स्वर समझने योग्य हो जाता है और उसके द्वारा उसे भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों का ज्ञान स्वत: हो जाता है।

शूकर-स्वर-ज्ञान मन्त्र

ॐ घुरु घुरु घुत् स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को कीचड़ तथा दलदल के मध्य अर्धरात्रि के समय ७० हजार बार जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है, जिससे साधक शूकर स्वर का ज्ञाता बनकर सकल सुख सम्पन्न हो जाता है।

काक स्वर ज्ञान मन्त्र

ॐ क्रों का का।

श्मशान से चिता की भस्म लाकर अर्धरात्रि को उस पर आसन लगाकर एकाग्रचित्त से छः हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जप करने से साधक काक स्वर का ज्ञाता, भविष्यदर्शी हो जाता है।

मन्त्र एक कार्य तीन

ॐ कलमुल आमिया वादी हो अहबुल वीस्क्रें स्क्रें स्क्रें।

नरक चतुर्दशी को एक आघात से मुर्गा नामक पक्षी को मार उसके मुख में धान भर देवे और किसी सरिता के किनारे मिट्टी में गाड़ आवे और दूसरे दिन प्रातः उसको उखाड़ लावे (किन्तु ध्यान रहे, आते समय किसी की नजर न पड़ने पाये) और ऐसे स्थान पर बोए जहाँ स्त्री की छाया न पड़ती हो, कुछ दिन बाद उसमें से जो धान निकले, तब केवल हाथ द्वारा चावल निकाल निकाल कर अपने पास रख ले और निम्न प्रकार से प्रयोग में लावे—

१. यदि किसी बाजीगर का खेल बिगाड़ना हो तो चावल ले २१ बार मन्त्र पढ़कर बाजीगर पर छोड़ दे, तो उसका खेल बिगाड़ जायेगा।

२. यदि किसी नट का तमाशा खराब करना हो तो सात दाना चावल से २१ बार मन्त्र पढ़कर मारे तो नट कलाबाजी में अवश्य चूक जाता है।

३. यदि सात दाना चावल को २१ बार मन्त्र पढ़कर जल या जिस वस्तु पर डाल दें, तो उस पर जादू नहीं चल सकता।

इस मन्त्र को रविवार की रात्रि में श्मशान में जा भैरो की पूजा कर १००८ बार जप करके सिद्ध कर ले और प्रयोग के अवसर पर एक चुटकी भस्म ११ बार मन्त्र पढ़ फूँक मारे तो सबकी दृष्टि बँध जायेगी और साधक का कार्य किसी को दिखाई नहीं पड़ेगा।

मन्त्र एक कार्य दस

ॐ सार्पे सार्पे उनमूलितांगुलीय के आवेहि आवेहि कामिका दोहद वः वः।

दीपावली के दिन पहले श्मशान में जाकर आदमी की खोपड़ी को उल्टा कर, उस पर सात बार मन्त्र पढ़ कर सात रेखा खींच कर चला आए और दीपावली के दिन रात्रि में उसी स्थान पर जाकर नग्न होकर उसी खोपड़ी में जल भरे और चिता की लकड़ी जलाकर खोपड़ी में उड़द और चावल की खिचड़ी बनाये और जब तक खिचड़ी पकती रहे आप खड़े होकर मन्त्र पढ़ते रहें, पक जाने पर जल में हाथ धोकर हाथ में ले अपने घर को चल आयें और मार्ग में न किसी से बोलें और न पीछे मुड़कर देखें और आवश्यकतानुसार निम्न प्रकार से प्रयोग में लायें—

१. रविवार के दिन जिसका नाम १०८ बार मन्त्र पढ़ उड़द, चावल फेंके तो उस व्यक्ति को गोली जैसी चोट लगती है। यह मारण प्रयोग है।

२. जिस ओर से गोली, बाण या मूठ आती दृष्टि पड़े, चावल सात दाना लें १०८ बार मन्त्र पढ़ कर मारे तो वह वहीं रुक जाय। यह स्तम्भन प्रयोग है।

३. शत्रु के घर जाने पर सात दाना ले १०८ बार मन्त्र पढ़ कर मारने से शत्रु का वार निष्फल हो जाता है।

४. सात दाना २१ बार पढ़ सँपेरे की महुवर पर मारने से महुवर बन्द हो जाती है।

५. यदि कहीं बाजा बन्द करना हो तो सात दाना २१ बार मन्त्र पढ़ कर मारने से बजते हुए बाजे बन्द हो जाते हैं।

६. जिस घर में चूहा अधिक हो, सात दाना बार मन्त्र पढ़कर घर में फेंक दें, तो एक चूहा घर में न रहे।

७. जहाँ मच्छर अधिक हो, वहाँ सात दाना २१ बार मन्त्र पढ़कर मारने से मच्छर दूर हो जाते हैं।

८. यदि किसी से बदला चुकाना हो तो सात दाना २१ बार मन्त्र पढ़कर किसी प्रकार उसको खिला दें, तो शत्रु पागल हो जाता है।

९. यदि किसी फले-फूले वृक्ष पर सात दाना मन्त्र पढ़कर मार दें, तो वह अवश्य सूख जाता है।

१०. सात दाना मन्त्र खेत में मारने से खेत की फसल सूख जाती है।

महालक्ष्मी मन्त्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दस निवासे श्री महालक्ष्म्ये नमो नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई न करो सात समुद्र की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौनाथ चौरासी की दुहाई।

दीपावली की रात्रि को एकान्त में पवित्रता पूर्वक दस हजार बार मन्त्र का जप

कर लें और प्रतिदिन दुकान खोल गद्दी पर बैठ १०८ बार मन्त्र पढ़कर व्यापार करें तो लक्ष्मी वृद्धि होती है।

मारण मन्त्र

ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डं डः अमुक गृह्ण गृह्ण हुँ हुँ ठः ठः।

इस मन्त्र को श्मशान पर सात रात्रि नित्य दस हजार बार जप करें और जब किसी मनुष्य पर प्रयोग करना हो तो मनुष्य के हाड़ की कील बनाकर १००० मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रज्वलित चिता में गाड़ दे, तो शत्रु ज्वर पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त होता है।

पुनश्च–उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित मानव हाड़ की कील जिस शत्रु के घर में गाड़ दे वह सपरिवार मृत्यु को प्राप्त होता है।

शत्रुनाशक (मारण) महामन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं महाविकराल भैरव ज्वललताय मम बैरी दह दह हन हन पच पच उन्मूल्य उन्मूल्य ॐ ह्रीं ड्रुं फट्।

श्मशान में जाकर भैंस के चर्मासन पर बैठ ऊन की माला द्वारा २१०० बार जप कर सवा सेर सरसों से हवन करें। इस प्रकार सात रात्रि पर्यन्त कार्य करने से बैरी अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

मृतआत्मा-आकर्षण मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं अं श्रीं महासर्वस्व-प्रदायिन्यै नमः।

उपरोक्त मन्त्र श्मशान में जाकर किसी बरगद के नीचे खड़े होकर सवा लाख बार जप करने से मृतक आत्मा आकर्षित होती है और साधक की सभी कामनायें पूर्ण करती है।

प्रेत आकर्षण मन्त्र

ॐ श्रीं बं बं भुं भूतेश्वरी मम कुरु स्वाहा।

संकट-हरण मन्त्र

ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं।

विधि–कैसा ही संकट हो, अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप, नैवेद्य देकर गले में बाँध दें।

ज्वर नाशक तन्त्र 'धूप'

देवदारु, इन्द्रायणी, लोहबान, गोदन्ती, हींग, सुगन्धबाला, कुटकी, नीम्बू के पत्ते, वच, दोनों कराई, चव्य, सूखा बिनौला, जौ, सरसों, शुद्ध घी, काले बकरे का बाल, मोरशिखा इन सब चीजों को लेकर बैल के मूत्र में पीसकर मिट्टी के कोरे बर्तन

में रख छोड़ें। इसे माहेश्वर धूप कहते हैं। इसकी धूनी देने से सब प्रकार के ज्वर तथा उन्मत्त रोगी को यह धूप देने से ग्रह, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, नाग, पूतना, शाकिनी-डाकिनी आदि अन्य विघ्न भी क्षण भर में दूर होते हैं। यह मन्त्र परीक्षित है।

रोनी मन्त्र (बच्चों का रोना दूर होने का मन्त्र)

बावति-बावति-छोटी बावति, लम्बी केश बावति, चलली कामरू देश, कामरू देश से आइल भगाना, सिर लोट पर चढ़े मसाना, ठोकर मारी तीन, दीख लेब छीन सत्य नाम कामरू के, विद्या नोंना योगिनी के, सिद्ध गुरु के बन्दौं पाँव।

विधि—जो बालक अधिक रोता हो या दीठ लग गई हो तो उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मन्त्र पढ़ कर फूँक मारे।

जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो कीड़ा रेकुण्ड कुण्डालों लाल पूँछ, तेरा मुँह काला। मैं तोंहि पूँछा कंह से आका, तूने सब माँस खाया। अब तू जाय, भस्म हो जाय, गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

नीम की हरी डाल से ७ बार मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ें तो सभी कीट मृत होंगे।

ग्रह, भूत-प्रेतादि नाशक (टोटका)

१. सफेद अपराजिता वृक्ष के पत्ते के रस में जावित्री पीसकर नस लेने (नाक के अन्दर सूँघने) से भूत, प्रेतादि, चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी, दानव आदि की बाधा दूर होती है।

२. अश्विनी नक्षत्र जब रविवार या मंगलवार को पड़े तो उस दिन घोड़े के खुर का नाखून लेकर रख लें, आवश्यकता के समय उस नाखून को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेतादि बाधा दूर होती है। यह परीक्षित मन्त्र है।

३. चन्दन, वच, कूट, सेंधानमक, घी, तेल और चर्बी को मिलाकर धूप (धूनी) देने से बालकों के आधि-व्याधि, टोना-प्रेतादि बाधाएं दूर होती हैं।

४. काशीफल के फूलों के रस में हल्दी पीस कर पत्थर के खरल में खूब घोटें, अंजन की भाँति बना लें फिर उसे अंजन की भाँति आँखों में आँजने से प्रेतादि बाधाएं दूर होती हैं।

५. कालीमिर्च तथा काली सरसों को महीन पीसकर आँखों में अंजन की भाँति लगाने से भूत-प्रेतादि बाधाएं दूर होती हैं।

मृगी का टोटका

१. जायफल को रेशमी धागे में गूथकर दाहिने भुजा या गले में धारण करने से मृगी रोग दूर होता है।

२. एक तोला असली हींग कपड़े में सीकर यन्त्र (ताबीज) जैसा बना लें और उसे गले में पहनने से भी सभी रोग नष्ट हो जाता है।

३. जंगली सूअर के नाखून को अँगूठी की तरह बनवाकर मंगलवार के दिन दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से मिर्गी का दौरा पड़ना बन्द हो जाता है।

४. गाय के सींग की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से भी मिर्गी रोग का दौरा पड़ना बन्द हो जाता है।

५. भेड़ के जूँ (जुवें), चीलड़ों को कम्बल के रोवों में लपेट करके ताँबे के यन्त्र में भरकर जिन स्त्रियों या बच्चों को हिस्टीरिया रोग हो उसके गले में बाँध दें, तो हिस्टीरिया रोग नष्ट हो जाता है।

पथरी रोग नाश तन्त्र

दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में भैंसे के पैर की नाल अंगूठी (छल्ला) बनवाकर मंगल या रविवार को धारण करने से पथरी रोग दूर होता है।

वायु गोलानाशक तन्त्र

नदी आदि में चलने वाली नाव की कील (काँटा) ले आयें, फिर घोड़े के खूर की नाल का लोहा दोनों को मिलाकर एक कड़ा बनवा ले, उस कड़े का पूजन कर धूप-दीप देकर हाथ में पहनने से वायुगोला का दर्द नहीं रहता है। उस कड़े को पानी में डालकर उस पानी को पिलाने से भूत, प्रेत, चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी आदि की बाधा तथा हूक रोग भी दूर हो जाता है।

तिल्ली, जिगर, प्लीहा नाश तन्त्र

१. नागफनी के जड़ की माला बनाकर पहनने से तिल्ली-जिगर रोग दूर हो जाता है।

२. बाँझ ककोड़े के वृक्ष की जड़ को रविवार (इतवार) के दिन लाकर रोगी के समीप जलते हुए चूल्हे में बाँध दें, वह गाँठ जैसे-जैसे खुलती जायेगी वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जाएगी।

संग्रहणी व दस्तनाशक तन्त्र

१. सहदेई की जड़ को रविवार के दिन लाकर उस जड़ के सात टुकड़े बना लें और उन टुकड़ों को लाल रंग के डोरे में लपेटकर (बाँधकर) रोगी के कमर में बाँध देने से संग्रहणी-दस्त आना बन्द हो जाता है।

२. गेहुँअन साँप की केंचुल को कपड़े की थैली में सीकर रोगी के पेट पर बाँधने से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

आधाशीशी

रविवार या मंगलवार के दिन प्रातःकाल दक्षिण की ओर मुँह करके हाथ में एक गुड़ की ढेली लेकर उसे दाँत से काटकर चौराहे चौराहे पर फेंक दें, उससे आधाशीशी का दर्द दूर हो जाता है।

दमा-श्वास रोगनाशक

सोख्ता (ब्लाटिंग पेपर) को सोडे में भिंगोकर छाया में सुखा ले, फिर उस सोख्ता को जहाँ पर श्वास का रोगी सोता हो वहाँ जलावें, इससे श्वास रोग से आराम मिलता है।

बाल रोगनाशक टोटका

१. सीपियों की माला बनाकर रविवार-मंगलवार के दिन बालक के गले में बाँधने से उसके दाँत आसानी से निकल आते हैं।

२. सम्भालू वृक्ष की जड़ को मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बाँध देने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

३. बालक के हाथ व पैर में लोहे अथवा ताँबे का कड़ा बनवाकर पहनाने से उसे नजर-डीठ आदि का भय नहीं होता तथा दाँत आसानी से निकल आते हैं।

४. रविवार या मंगल के दिन कटनाश (नीलकण्ठ) पक्षी के पंख लाकर जिस चारपाई पर वालक सोता हो उसमें बाँध दें या घुसेड़ दें, उससे बालक डरेगा नहीं और रोना बन्द हो जाएगा।

५. रींठ के फल को छेद कर और धागे में पिरोकर गले में बाँधने से उसे नजर-डीठ, टोना आदि नहीं लगता है तथा हिचकियाँ आना भी बन्द हो जाता है।

६. काले रंग के कुत्ते का १ बाल (रोवाँ) तथा अकरकरा का एक दाना कपड़े आदि में सिलकर बाँध देने से उससे आमाशय सम्बन्धी रोग, ज्वर आदि दूर होता है तथा चैतन्यता आ जाती है।

७. अकरकरा की जड़ को सूत के डोरे से बाँधकर बालक के गले में बाँधने से बालक की मिर्गी दूर हो जाती है।

८. भेड़िया के दाँत को बालक के गले में बाँध देने से बाल अपस्मार रोग दूर हो जाता है।

९. बालक को यदि नजर-डीठ लग जाए तो विशेषकर रविवार-मंगलवार के दिन समूचे लाल मिर्चे को बच्चे के ऊपर से तीन बार उतार कर जलते हुए चूल्हे में छोंक दें, यदि किसी की नजर लगी होगी तो मिर्चों की धौंस नहीं उड़ेगी और मिर्चों के जल जाने के पश्चात् ही नजर-डीठ दूर हो जायेगी।

धरन रोगनाशक टोटका

शनिवार की साम को हल्दी व चावल लेकर जंगल आदि में जहाँ फूली हुई शंखाहुली (शंखपुष्पी, सकौली) को न्यौता दे आयें, फिर रविवार को प्रातःकाल उसी स्थान पर जाकर उस बूटी के पौधे की सात प्रदक्षिणा करें और हाथ जोड़कर प्रणाम करें, फिर सूर्यदेव की ओर मुख करके उसकी जड़ में दूध डालें, तत्पश्चात् उसे खोदकर घर ले आयें और जिस व्यक्ति की धरन हट गई हों (नाप) हट गई हों उसके कमर में बाँध दें, इस प्रयोग से तुरन्त ठिकाने आ जायेगी।

फील पाँव नाशक टोटका

जिसे पील पाँव हो उसके घर से उत्तर दिशा में उत्पन्न आक (अकोड़ा) वृक्ष की जड़ को रविवार के दिन लावें, फिर उस जड़ को लाल डोरे में लपेटकर फीलपाँव वाली जगह पर बाँध दें, इससे रोग धीरे-धीरे ठीक हो जाता है।

मोटापा नाशक तन्त्र

राँगा धातु की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली (बीच वाली अंगुली) में पहनने से मोटापा कम होता है।

पागलपन नाशक तन्त्र

बिच्छू का डंक व कुत्ते का नाखून तथा कछुवे का खून (रक्त) तीनों को ऊँट की खाल (चमड़े) में मढ़वाकर ताबीज बनवा लें और उस ताबीज को पागल मनुष्य के गले में बाँध देने से उसका पागलपन दूर हो जाता है।

मासिकधर्म विकार नाशक टोटका

मासिक धर्म की खराबी से जिस स्त्री के पेड़ू में दर्द रहता हो, तो रविवार या मंगलवार की रात्रि को मूँज की रस्सी अपनी कमर में बाँधकर सो जाना चाहिये और प्रातः खोलकर किसी चौराहे पर फेंक देना चाहिये, उससे मासिकधर्म की खराबी के कारण पेड़ू में दर्द ठीक हो जायेगा।

बाँझपन नाशक तन्त्र

१. जिस दिन श्रवण नक्षत्र हो, उस दिन काले एरण्ड वृक्ष (काले रंग) की जड़ लाकर धूप-दीप देकर वन्ध्या स्त्री के गले में बाँध देने से बाँझपन का दोष दूर हो जाता है।

२. श्रावण के महीने के कृष्णपक्ष (श्रावणवदी) में जब रोहिणी नक्षत्र हो, उस दिन एक मिट्टी के कोरे घड़े को लेकर नदी तट पर जाए और वहाँ कमर को थोड़ा-सा झुकाकर उस घड़े में नदी का जल भर ले, उस जल को बाँझ स्त्री को थोड़े दिन पिलावें तो उससे गर्भ ठहरेगा।

३. पलाश वृक्ष (छिपुला वृक्ष) के १ पत्ते को किसी गर्भवती स्त्री के दूध में भिंगोकर ऋतुस्नान के बाद सात दिन तक खाने से वन्ध्या रोग दूर हो जाता है।

४. कदम्ब वृक्ष का पत्ता, श्वेत बृहती (सफेद भटकटैया) की जड़ बराबर मात्रा में बकरी के दूध अथवा गोक्षर (गोखड़) के बीज, सम्भालु वृक्ष के पत्तों के रस में पीसकर ५ दिन तक खाने से पुत्र प्राप्त होता है।

गर्भ पीड़ानाशकर टोटका

१. क्वंारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत को लेकर, गर्भवती स्त्री के सिर से पैर तक नापकर उसके बराबर २१ बार टुकड़े कर (उतने बड़े २१ टुकड़े) धागे लेकर उनमें काले धतूरे वृक्ष की जड़ से प्रत्येक धागे में एक-एक टुकड़ा बाँधें, फिर उन सभी को इकट्ठा करके गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध दें, इससे गर्भस्राव या गर्भपातादि नहीं होता है।

२. खरेटी वृक्ष की जड़ को क्वंारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत में लपेट कर गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

३. कुम्हार के हाथ में लगी मिट्टी, जो कुम्हार के चाक के ऊपरी हिस्से की हो, उसे बकरी के दूध में मिलाकर गर्भवती स्त्री को पिला देने से उसका गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

४. गर्भवती स्त्री को शिवलिंग के बीज का एक दाना जिस दिन रजोधर्म प्रारम्भ हो, उसी दिन से एक दाना जल के साथ निगल जाना चाहिये, यह क्रिया सात दिन तक करनी चाहिये।

५. फिटकरी और बाँस की छाल को कूटकर जल में खूब औटा कर निरन्तर सात दिन एक छटाँक पीना चाहिये, ऐसा करने से गर्भ नष्ट नहीं होता।

सुख प्रसव कारक टोटका

१. सरफोंका की जड़ को गर्भवती स्त्री के कमर में मंगलवार को बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

२. अपामार्ग (लटजीरा) की जड़, गुरु पुष्य-नक्षत्र अथवा रवि पुष्य में लाया हुआ, उसकी जड़ आदि को गर्भवती के गले या बालों की लट में बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

३. भिण्डी के पेड़ के जड़ सहित उखाड़ लें और उस जड़ के छिलके को पीसकर मिश्री व काली मिर्च मिलाकर पिला देने से शीघ्र प्रसव होता है।

४. जिस इमली के पेड़ में फूल न लगे हों, ऐसे इमली के छोटे वृक्ष की जड़ गर्भवती स्त्री के सामने शिर के बालों में बाँध देने से शीघ्र सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नोट–प्रसव के पश्चात् जितने बालों में जड़ बाँधी गयी है, उतने बालों सहित काट कर फेंक देना चाहिये।

५. चक्रमक पत्थर को कपड़े मे लपेटकर गर्भवती स्त्री की जाँघ में बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

६. चक्रमक स्त्री के नितम्ब पर साँप की केंचुल बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

७. बारहसिंगे के सींग को गर्भवती स्त्री के स्तन के समीप बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

८. लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक बाँधकर गर्भवती स्त्री के बाँयें हाथ की ओर लटका देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गर्भ न ठहरने का टोटका

१. हाथी की लीद स्त्री की योनि में रख देने से गर्भ नहीं ठहरता।

२. जिस छोटे बालक का सर्वप्रथम जो दाँत गिरने वाला हो, उसे गिरते समय पृथ्वी पर न गिरने दें, हाथ में ले लें, फिर उसे चाँदी के ताबीज में मढ़वाकर जो स्त्री अपनी बाँयी भुजा में धारण करेंगी तो उसे गर्भ नहीं ठहरेगा।

बवासीर नाशक टोटका

१. कार्तिक के महीने में जंगल से सूरन (जमीकन्द) को खोद लेवें। फिर उसकी चकत्तियाँ बनाकर छाया में सुखा लें और आवश्यकता के समय उन चकत्तियों को काले रंग के डोरे में गूँथ कर कमर में धारण करने से बवासीर के मस्से धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

२. बवासीर के मस्सों के नीचे साँप की केंचुल रखने से बवासीर का कष्ट दूर होता है।

ज्वरादि नाशक टोटका

१. रविवार के दिन ज्वर के रोगी से पतवार (मूंज के पौधे में) सूर्योदय से पहले गाँठ (गिरह) लगवा दें। इससे ज्वर दूर होता है।

२. मकड़ी के जाले को रोगी के गले में बाँधकर लटकाने से ज्वर दूर हो जाता है।

३. मुसाकानी की जड़ को रोगी के हाथ में बाँध देने से ज्वर दूर हो जाता है।

महाज्वर नाशक तन्त्र

१. लोगलीमूल (नारियल वृक्ष की जड़) को रोगी के गले में बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता है।

२. बृहस्पति मूल (कटोरी की जड़) को रोगी के मस्तक पर बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता हैं।

शीत ज्वर (जुड़ी) नाशक तन्त्र

१. शनिवार के दिन बबूल वृक्ष की जड़ को सफेद डोरे में रोगी की भुजा में बाँध देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

२. सफेद कनेर की जड़ को रोगी की दाहिनी भुजा में बाँधने से शीत ज्वर शान्त हो जाता है।

३. एक मक्खी, थोड़ी-सी हींग तथा आधी काली मिर्च इन सबको पीसकर रोगी की आँख में अंजन की भाँति लगा देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

४. रविवार या मंगलवार के दिन लहसुन के सात नग (सतजवा) पीसकर काले कपड़े में रखकर रोगी के पाँव के अँगूठे में बाँध दें और तीन घण्टे के बाद उसे खोलकर किसी चौराहे पर फेंक दें, इससे शीत ज्वर की पारी रुक जाती है।

५. आठ पाँव वाले मकड़े के जाले को लाल रंग के कपड़े में लपेटकर बत्ती बना लें, फिर मिट्टी के दीपक में सरसों का तेल भरकर उसमें बत्ती को डालकर जलायें और काजल पारें उस काजल को रविवार या मंगलवार के दिन दोनों आँखों में सात-सात बार लगाने (आंजने से) पारी ज्वर तथा शीत ज्वर शान्त हो जाता है।

विषम ज्वर नाशक टोटका

१. चौराई की जड़ को रोगी के सिर में बाँध देने से विषम ज्वर दूर होता है।

२. रविवार के दिन अपामार्ग (चिरचिटा, लटजीरा) की जड़ को उखाड़ लायें और उस जड़ को सूत के डोरे में लपेट कर पुरुष रोगी की दाहिनी भुजा में और स्त्री रोगी की बाँयीं भुजा में बाँध दें, इससे विषम ज्वर-शान्त होता है।

३. सफेद फूल वाले कनेर वृक्ष की जड़ को रविवार के दिन उखाड़ कर रोगी के दाहिने कान अथवा भुजा में बाँध देने से विषम ज्वर दूर होता है।

पारी बुखार तथा मलेरिया नाशक तन्त्र

१. रविवार के दिन आक (मदार, अकौड़ा) की जड़ को उखाड़ लाये और रोगी के कान में बाँध देने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं।

२. रविवार के दिन प्रात: समय सहदेई तथा निर्गुण्डी की जड़ को लाकर और दोनों को रोगी के कमर में बाँध दें, इससे हर प्रकार के पारी ज्वर कम्प ज्वर भी शान्त हो जाते हैं।

३. रविवार के दिन संध्या समय कोरे मिट्टी के घड़े में पानी भरकर उसमें एक सोने की अँगूठी डाल दें, एक दो घण्टे बाद मलेरिया, पारी ज्वर के रोगी को किसी

चौराहे पर ले जाकर उस घड़े के जल से स्नान करा दें, स्नान के बाद घड़े से अँगूठी निकाल लें, इससे भी पारी का ज्वर शान्त हो जाता है।

४. रविवार के दिन सफेद फूल वाले धतूरे वृक्ष की जड़ को उखाड़ कर रोगी की दाहिनी भुजा में धारण करने से पारी ज्वर शान्त हो जाता है।

५. कुत्ते के मूत्र में मिट्टी सानकर गोली बना लें और धूप में सुखा लें और उस गोली को रोगी के गले में बाँध दें, इससे पारी ज्वर शान्त होकर दुबारा नहीं आता है।

६. शनिवार के दिन ताड़ के सूखे वृक्ष की जड़ की मिट्टी लाकर रविवार को प्रातःकाल उसे घिसकर चन्दन की तरह रोगी के मस्तक में अच्छी तरह से लगा देने से पारी ज्वर शान्त होता है।

७. शनिवार के दिन मोरपंखी वृक्ष को शाम को न्यौत आयें और रविवार को प्रातः उखाड़ कर ले आयें और लाल डोरे में लपेटकर रोगी के गले अथवा हाथ में बाँध देने से इकतरा ज्वर शान्त होता है।

८. काले सर्प की केंचुल को रोगी के कमर में बाँध देने से पारी-पारी से आने वाला ज्वर ठीक हो जाता है।

९. भृंगराज वृक्ष (भंगरे) की जड़ को सूत में लपेट कर रोगी के सिर में बाँधने से चौथिया ज्वर शान्त हो जाता है।

१०. उल्लू पक्षी के पंख तथा स्याह गूगंल इन दोनों को कपड़े में लपेटकर बत्ती बना लें, कज्जल (काजल) पार लें, इस काजल को आँखों में लगाने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं।

११. मंगलवार के दिन छिपकली (बिछतुइया) की पूँछ काटकर उसे काले रंग के कपड़े में सिलकर यन्त्र की भाँति रोगी की भुजा में धारण करने से मलेरिया व पारी का ज्वर दूर होता है।

१२. रविवार के दिन गिरगिट की पूँछ काटकर उसे रोगी की भुजा अथवा चोटी में बाँध देने से चौथिया ज्वर शीघ्र दूर होता है।

जीर्ण-ज्वर तथा रात्रि-ज्वर नाशक टोटके

१. मकोय की जड़ रविवार के दिन रोगी के कान में बाँधने से रात्रि ज्वर दूर होता है।

२. भृंगराज (भंगरे की जड़) को डोर में बाँधकर रोगी के कान में बाँध देने से रात्रि ज्वर दूर होता है।

३. जीर्ण ज्वर के रोगी के शरीर में बकरी का रक्त (खून) प्रवेश करा देने से रोगी स्वस्थ और ठीक हो जाता है।

भूत ज्वर तथा सन्निपात ज्वर नाशक टोटका

१. अपामार्ग (चिरचिटा-आँगा) की ज़ड़ रविवार या मंगलवार को दाहिनी भुजा में बाँधन से भूत ज्वर उतर जाता है।

२. लाल फूल वाले पलाश वृक्ष की जड़ मंगलवार को लाल डोरे में दाहिनी भुजा में बाँधने से भूत-ज्वर उतर जाता है।

३. नीम-बकुची तथा तगर के अंजन को रोगी की आँखों में काजल की भाँति लगाने से भूतादि ज्वर उतर जाता है।

४. हुलहुल वृक्ष की जड़ का अर्क रोगी के कान में डालने से भूत-ज्वर शीघ्र ही उतर जाता है।

५. मुर्गे की बीट (मुर्गे की टट्टी), काले सर्प की केंचुल, बन्दर के बाल, लहसुन, घी, गूगल तथा कबूतर की बीट इन सबको एकत्रित करके रोगी को इनकी धूप देने से भूत ज्वर तथा सभी प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

६. अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा उसके फूलों को पीसकर गोली बनाकर रोगी के भुजा में बाँधने से सन्निपात ज्वरादि ठीक होते हैं।

सर्प-बिच्छू विष नाशक टोटका

१. गुरु-पुष्य नक्षत्र में या रवि-पुष्य नक्षत्र में आँगा (अपामार्ग-लटजीरा-अजाझार) की जड़ लाकर रख लें, जिस व्यक्ति को बिच्छू ने डंक मारा हो उसकी नाभि में जड़ लगा दें या कान में बाँध दें या जहाँ डंक मारा हो लगा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। सैकड़ों रोगियों पर आजमाया हुआ परीक्षित है।

२. हुलहुल की जड़ को सात बार सुँघा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

३. सर्प जिस व्यक्ति को काटे उसी समय पीपल वृक्ष की कोमल दो टहनियाँ लेकर लगभग एक-एक बालिश्त की दो टहनियाँ सर्प काटे व्यक्ति के कान में (एक दाहिने कान में, दूसरे बाँये कान में) लगाये और मजबूती से दोनों टहनियाँ पकड़े रहे; अन्यथा वह कान के अन्दर घुस कर पर्दा फाड़ देगी, इस क्रिया से सर्प विष उतर जाता है।

४. मोर के पंखों को चिलम में रखकर तम्बाकू की भाँति चिलम पीने से सर्प का विष उतर जाता है।

५. आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष में रविवार के दिन ईश्वरमूल वृक्ष की जड़ को लाकर डोरे में बाँध कर हाथ में बाँधने से साँप के काटने का भय नहीं रहता।

रोगादि दोष-निवारण का टोटका

मिट्टी के सात करवे तथा उनके ढक्कन लाये और सात प्रकार के रेशम लाकर

उनके ऊपर सिन्दूर लगाये। फिर सातों करवाँ को क्रमश: लाल, पीला, हरा, काला, गुलाबी, भूरा तथा सफेद रंगों से एक-एक रंग का एक-एक करवा रंगे। फिर अगर, कपूर, छाड़छबीला, कपूर कचरी इन सबको मिलाकर सात पुड़िया बना लें। फिर उन रंगे हुए करवों में कड़ुवा तेल (सरसों का तेल) डालकर उनका मुँह ढक्कन से बन्द कर दें और उन सात पुड़ियाँ में से एक-एक पुड़िया सातों पर रख दें और सन्ध्या समय इन उतारों को रोगी के समक्ष रख दें और रोगी के ऊपर उतार कर सबको किसी नदी-तालाब-पोखरा आदि जलाशय में विसर्जित कर दें। इससे सभी प्रकार की आधि-व्याधि रोग दूर होते हैं।

वीर्य स्तम्भन टोटका

१. सूअर के दाहिने दाँत को कमर में बाँधकर मैथुन करने से काफी समय तक वीर्य स्तम्भन होता है।

२. कमलगट्टे को शहद में पीसकर नाभि के ऊपर लेप करके मैथुन करने से काफी स्तम्भन होता है।

३. काले साँप की हड्डी तथा दुमुँहे साँप की हड्डी को कमर में बाँधकर मैथुन करने से विलम्ब से वीर्य स्खलन होता है।

४. ऊँट की हड्डी में छेद करके पलंग के सिरहाने बाँध दें और उसी पलंग पर मैथुन करे, तो इससे स्तम्भन होता है।

स्त्री वशीकरण टोटका

१. खस, चन्दन, शहद इन तीनों चीजों को एक में मिलाकर तिलक लगाकर जिस स्त्री के गले में हाथ डाले, वह स्त्री वश में हो जायेगी यह साधन सब प्रकार की नारियों के लिए है।

२. चिता की भस्म, वच, कूट, केशर और गोरोचन इन सबको बराबर-बराबर मात्रा में लेकर एक में पीसकर चूर्ण बना करके जिस स्त्री के सिर पर वह चूर्ण छोड़े, वह वश में हो जायेगी।

३. चिता की भस्म, कूट, तगर, वच और कुंकुम यह सब एक में पीसकर स्त्री के शिर और मनुष्य के पाँव तले डाले तो, जब तक वह जीते रहेंगे, तब तक दोनों एक-दूसरे के दास बने रहेंगे।

४. मनुष्य की खोपड़ी लाकर उसमें धतूरे का बीज रक्खें, फिर उसमें शहद और क़पूर मिलाकर पीसें और अपने माथे पर तिलक करें तो देखने वाले चाहे स्त्री हों या पुरुष सभी उसके वशीभूत हो जाते हैं। यह वशिष्ठ जी का बताया हुआ उत्तम कापालिक योग हैं। अब मनुष्य की खोपड़ी गैरकानूनी है।

५. जब रवि पुष्य-नक्षत्र हो, तब नदी किनारे से झाऊ की जड़ मँगा लें और

उसमें कुड़े की छाल मिलाकर उसके बराबर चिता की भस्म मिला दें। जो बकुनी तैयार होगी, वह जिस स्त्री के सिर पर डाल दी जायेगी, वह वश में हो जायेगी।

६. काले कमल, भौंरा के दोनों पंख, तगरधूल, सफेद कौवा ठोठी, (कौवा ठोठी एक फल होता है।) इन सबका चूर्ण बनाकर जिस-किसी स्त्री के सिर के ऊपर डाल दिया जाये तो, वह स्त्री शीघ्र दासी हो जायेगी।

७. माघ महीने में, दिन बुधवार, तिथि अष्टमी और स्वाती नक्षत्र हो, उसी दिन आँक (मदार) के वृक्ष को एक पैसा और सुपारी (कसैली) से न्यौत आये और दूसरे दिन उसकी नवीन कोपल तोड़ लाये, फिर जिस स्त्री के हाथ पर डालें, वह वश में हो जायेगी।

८. रविवार या मंगलवार को जब पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन धोबी के पैर की धूलि लाकर रविवार के दिन जिस स्त्री के सिर पर डालें, वह वश में हो जाती है।

९. रात्रि के पश्चात् जो पुरुष अपने बाँयें हाथ में अपना वीर्य लेकर स्त्री के बाँयें चरण के तलुवे में मल दें, वह स्त्री सदा के लिये उसकी दासी हो जाती है।

१०. रविवार के दिन काले धतूरे का पंचांग (फल, फूल, पत्ता, जड़, शाखा) यानी पाँचों अंग लेकर केसर, गोरोचन, रोरी के साथ पीसकर तिलक करे और फिर जिस स्त्री को देखे, वह अवश्य ही वश में हो जाये, चाहे वह इन्द्रासन की परी क्यों न हो। यह परीक्षित है। इसे बनाने में पुष्य नक्षत्र, दिन रविवार या मंगल हो, उसी दिन सब सामान लाकर बनाना चाहिये, अन्यथा लाभ नहीं होगा।

पति वशीकरण टोटका

१. गोरोचन और योनि का रक्त केले के रस में मिलाकर इसका तिलक लगावे और अपने पति के सम्मुख जावे, तो उसका पति वशीभूत हो जाता है।

२. सफेद सरसों और अनार का पंचांग (फल, फूल, शाखा, पत्ती, जड़) को एक में पीसकर अपनी योनि पर लेप करने से यदि स्त्री दुर्भगा भी हो तो अपने पति को दास समान अपने वश में कर लेती है।

३. नीम की लकड़ी की धूप बनाकर उसी नीम की लकड़ी की धूप से योनि को धूपित करके जो स्त्री अपने पति से विषय करती है, वह उसे अपना दास बना लेती है।

विदावणी-सिद्धिः मन्त्र

हँ यँ रँ लँ वँ देवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साधय साधय कुलेश्वरि स्वाहा।

युद्ध में मरे हुए मनुष्य की अस्थि (हड्डी) गले में बाँध कर प्रान्त में, रात्रि समय

में बैठकर उक्त मन्त्र का जप करना चाहिये। जिस दिन बारह लक्ष का जप समाप्त होता है, उसी दिन सिद्धि होती है।

बैताल सिद्धि

मंगलवार के अर्द्धरात्रि के समय साधक नीम की लकड़ी को श्मशान में गाड़कर उस स्थान में बैठ दश हजार महिषमर्दिनी का मन्त्र जप करे। मन्त्र— 'महिषमर्दिन्यै स्वाहा' और श्मशान में रहकर एक सहस्र होम करे, तदनन्तर वह निम्बकाष्ठ निकाल उसमें दण्ड और पादुका अंकित करनी चाहिये, फिर दुर्गाष्टमी की रात्रि में यह निम्ब काष्ठ (नीम की लकड़ी) श्मशान में डालकर उसके ऊपर शव रख यथाविधि पूजा करनी चाहिये। फिर उस श्मशान पर बैठकर ऊपर लिखित अष्टाधिक सहस्र जप करके मातृगणों के उद्देश्य बलि दे, 'स्फें स्फें' इत्यादि मन्त्र से काष्ठ को आमन्त्रण करे, इसके उपरान्त जिस-जिस स्थान में बैताल को नियुक्त करे, यह दण्ड उसी-उसी वृत्ति को चूर्ण कर फिर साधक के निकट आता है। जिस-किसी कार्य में उस दण्ड को नियुक्त करे, वही बैताल सिद्ध होगा।

योगिनी साधना

प्रातःकाल समय से उठकर स्नानादि नित्य क्रिया करके 'हौं' इस मन्त्र से आचमन कर 'ओं ह्रौं फट्' इस मन्त्र से दिग्बन्धन करे, फिर मूलमन्त्र से प्राणायाम कर 'ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि क्रम से कराङ्ग-न्यास करे और पीठ देवता का आवाहन करके सुर-सुन्दरी का ध्यान करे। 'पूर्णचन्द्रनिभाम्' पूर्ण चन्द्र के समान कान्ति वाली गौरी, विचित्र वस्त्र धारण किये, पीन और ऊंचे कुचों से युक्त, सबको अभय प्रदान करने वाली इत्यादि ऊपर लिखित नियम से ध्यान करे। ध्यान के अन्त में मूल मन्त्र से देवी की पूजा करे, मूल मन्त्र उच्चारण पूर्वक पाद्यादि देकर धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, चन्दन, ताम्बूल निवेदन करे, 'ओं ह्रीं आगच्छ भुवनेशि सुरसुन्दरी स्वाहा' इस मन्त्र से पूजा करनी चाहिये। साधक प्रतिदिन (त्रिकालसंध्या), तीनों संध्याओं में ध्यान करके एक-एक हजार मन्त्र जप करे इस प्रकार एक-एक मास जप करके महीने के अन्तिम दिन में बलि इत्यादि विविध उपहार से देवी की पूजा करे, पूजा के अन्त में पूर्वोक्त मन्त्र जपता रहे। इस प्रकार करने से अर्द्धरात्रि के समय देवी साधक के निकट आती हैं, देवी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञा जानकर उसके गृह में आती हैं। साधक देवी को अपने सम्मुख प्रसन्न और हास्यमुखी देखकर फिर पाद्यादि द्वारा पूजा करे और उत्तम चन्दन तथा सुशोभन पुष्प प्रदान करके अभिलाषित वर की प्रार्थना करे, साधक देवी के निकट जो-जो प्रार्थना करेगा, देवी नित्य उपस्थित होकर वही प्रदान करेंगी।

डाकिनी-सिद्धिः मन्त्र

डँ डाँ डिं ढीं द्रीं धूँ धूँ चालिनि मालिनि डाकिनि सर्वसिद्धिं प्रयच्छ हुँ फट् स्वाहा।

लगातार छः वर्ष तक रात्रि के समय सेमल के वृक्ष पर चढ़कर ऊर्ध्याबाहु हो उक्त मन्त्र का जप करे, रात्रि में ही जप करना चाहिये। एकादिक्रम से छह वर्ष में डाकिनी सिद्धि होती हैं। डाकिनी सिद्धि होने पर अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न होता है।

भूत और प्रेत-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रौं क्रों क्रुं फट् फट् त्रुट त्रुट ह्रीं ह्रीं भूत प्रेत भूतिनि प्रतिनि आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ठः ठः।

इस मन्त्र से भूत-भूतिनी, प्रेत-प्रेतिनी सिद्ध होती है।

रात्रिकाल के समय निर्जन में, वट के वृक्ष (बरगद के पेड़) की जड़ में बैठकर उक्त मन्त्र आठ हजार जप करे, इसके दूसरे दिन धूप और गुग्गुल द्वारा पूजा करने फिर रात्रि में पूजा करे। अर्द्धरात्रि व्यतीत होने पर भूत-प्रेत, भूतिनी-प्रेतिनी साधक के सामने उपस्थित होंगी, तब उनकी गन्दादि और अर्घ्यादि द्वारा पूजा करने पर भूतादि प्रसन्न होकर साधक को वर प्रदान करते हैं और चिरकाल तक साधक वशीभूत रहते हैं।

पिशाच-पिशाची-सिद्धि मन्त्र

१. ॐ प्रथ प्रथ फट् फट् हुँ हुँ तर्ज तर्ज विजय विजय जय जय प्रतिहत कुट कुट विसुर विसुर स्फुर स्फुर पिशाच साधकस्य में वशं आनय आनय पच पच चेल चल स्वाहा।

२. ॐ फट् फट् हुँ हुँ अः भोः भोः पिशाचि भिन्द गिन्द छिन्द छिन्द लह दह दह पच पच मदर्दय पेषय पेषय धून धून महासुर पूजिते हुँ हुँ स्वाहा।

प्रथम मन्त्र से पिशाच और दूसरे मन्त्र से पिशाची का ध्यान करना चाहिये। रात्रिकाल के समय उच्छिष्ट मुख से श्मशान में बैठकर जप करे। दशलक्ष जपने से सिद्धि होती है। जपकाल के समय अन्य किसी के देखने पर अथवा साधक के अन्य किसी को देखने से जप निष्फल होता है। यानी कोई देखे नहीं।

गुटिका सिद्धि

जिस प्रकार गुटिका सिद्धि होती है, वह विधि निम्न प्रकार है—

साधक चील के वासस्थान में (जिस पेड़ पर चील का घोंसला हो) उसको देवता जान पूजा करके, उसे प्रतिदिन खाने को थोड़ा-थोड़ा कच्चा मांस प्रदान करे। प्रसवकाल तक इस प्रकार आहार देता रहे। प्रसव के उपरान्त दो नल प्रस्तुत कर उनके ऊपर और नीचे के दोनों छिद्र मोम से बन्ध कर दे। फिर उनमें साढ़े तीन तोला प्रमाण में पारा डालकर इन दोनों नलों को दोनों अण्डों के ऊपर स्थापन करे और लौहशलाका नल के ऊपर मुख से प्रवेशित कर अत्यन्त सावधानी से दोनों अण्डों को छेदकर शलाका निकाले, इस प्रकार सतर्कतापूर्वक और कोमल हस्त से अण्डे बेधने चाहिये, क्योंकि इन छिद्रों द्वारा अण्डों के छिद्र उसी चील की विष्ठा से बन्द कर वृक्ष के नीचे

अण्डे फूटने तक प्रतिदिन बलि और विविध उपहारों से पूजा करता रहे। जब तक यह अण्डे स्वयं न फूटें, तब तक नित्य इस वृक्ष के ऊपर चढ़कर देखें। इन अण्डों के फूटने पर दिखाई देगा कि उनमें दो गुटिका हुई हैं, तब इन दोनों गुटिकाओं को लाकर एक दूसरे को दें और अन्य को स्वयं मुख में धारण करे। इस प्रकार क्रिया करने से साधक शतयोजन जाकर, फिर उसी स्थान में तत्काल लौटकर आ सकता है। 'ॐ हूँ हूँ फट् चिल्लचक्रेश्वरि परात्पेरश्वरिं परात्पेरश्वरिं पादुकामासनं देहि में देहि स्वाहा' इस मन्त्र से पूजा और जप करे।

मोर, पारावत और खञ्जन पक्षी, इनकी विष्ठा लेकर गुटिका करें। इस गुटिका के स्पर्श करने से तत्काल सम्पूर्ण वाद्य यन्त्र (बाजे) टूट जाते हैं। गुटिका करने के पहले पूर्वोक्त मन्त्र से पूजा कर एक लक्ष जप करे।

सर्वदोष-निवारण मन्त्र

शनि दिन सन्ध्या के समय, घर कुम्हार के जाय।
चाक पे चौंसठ दीप को, उल्टी चाक फिराय।

प्रयोगविधि–समस्त दीपकों को, घी की बाती में जलाकर रोगी के मुख पर सन्ध्या समय उतारे तथा दूध, भात-शक्कर रोगी को स्पर्श करा चौराहे पर रखने से सर्वदोष नष्ट होते हैं।

भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अङ्ग से भू मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञात कामरू कामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूतभय दूर होते हैं।

धन वृद्धि करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवती पदम पदमावी ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आप पूरय सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

सिद्ध करने की विधि—विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्धि कर ले, तत्पश्चात् प्रातः शय्या त्यागने से पूर्व १०८ बार मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं के कोणों में दस-दस बार फूँके तो साधक को सभी दिशाओं से धन प्राप्त हो।

चुड़ैल भगान का मन्त्र

बैर बर चुड़ैल पिशाचिनी वैर निवासी।
कहुँ तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गाँसी।

भूतभय-नाशक मन्त्र

ॐ नमो श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रयोगविधि–दीपावली की रात्रि को १००८ बार मन्त्र जप कर सिद्ध कर ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता-बिल्ली और घुग्घु का मल (विष्ठा), ऊँट के बाल, सफेद घुँघुची, गन्धक, गोबर, कड़ुवा तेल, सिरस नामक वृक्ष के फूल तथा पत्ते लाकर हवन कर उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने से भूत, प्रेत, बेताल, राक्षस, डाकिनी-शाकिनी, प्रेतनी आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं।

वर बैल करे तू कितना गुमान काहे नहीं छोड़त यह जान स्थान यदि चाहै तूँ रखना आपन मान पल में भाग कैलाश लै अपनो प्रान आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

सिद्धि करने की विधि

इस मन्त्र को विजया दशमी की रात्रि को १०८ बार जप कर सिद्ध करें, फिर रोगिणी पर इक्कीस बार पढ़कर फूँक मारे तो डायन, चुड़ैल, पिशाचिनी आदि से छुटकारा मिल जाता है।

डायन की नजर झारने का मन्त्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करूँ स्थिर चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बालकगण पहिरे हाड़ गला हार राग लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ गई पराय सब डायनी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

विधि–उपरोक्त मन्त्र विधि के अनुसार सिद्ध कर झाड़ने से दृष्टि बाधा दूर होती है।

अकाल मृत्यु भय-निवारक मन्त्र

ॐ अघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः स्वाहा।

सिद्ध करने की विधि–इस मन्त्र को किसी भी शुभ-नक्षत्र और शुभ वार में दस सहस्त्र बार जप कर सिद्ध कर ले और जब प्रयोग करना हो तो जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन प्रातःकाल गुरमा नामक वृक्ष की जड़ लाकर गर्म जल में मसले और फिर १०८ बार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर आठ माशा नित्य पान करने से अकाल मृत्यु निवारण होता है।

अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।

विधि–सर्वप्रथम इस मन्त्र को दस सहस्त्र बार जप कर सिद्ध करे, फिर जब प्रयोग करना हो तो पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो बहेड़े नामक वृक्ष का बाँदा लेकर १०८ बार

मन्त्र से अभिमन्त्रित करे तथा जिस खेत की उपज बढ़ानी हो, उस खेत में गाड़ देने से अन्न की उपज अधिक होती है।

आत्मा-रक्षा मन्त्र

ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्।

उपरोक्त मन्त्र का नित्य ५०० बार जप करने से साधक को समस्त सुख प्राप्त हो जाते हैं और आत्मभय दूर होकर व्यक्ति निर्भय हो जाता है।

अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र

ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधि दर्शन कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–शुभ दिवस तथा शुभ नक्षत्र में दस सहस्र बार जप कर सिद्ध करें, सिद्ध हो जाने पर जब प्रयोग करना हो, तब जिस स्थान में धन गड़े होने की सम्भावना हो, उस स्थान पर धतूरे के बीज, हलाहल सफेद घुँघुँची, गन्धक, मैनसिल, उल्लू की विष्ठा तथा शिरीष वृक्ष का पंचांग बराबर-बराबर ले, सरसों के तेल में पकाये तथा इसी से धूप देकर दस सहस्र बार मन्त्र का जप करने से भूत-प्रेत तथा पितृ आदि का साया उस स्थान से हट जाता है और भूमि में गड़ी धनराशि साधक को दृष्टिगोचर होने लगती है।

विपत्ति-निवारण मन्त्र

शेष फरिद की कामरी निसि अँधियारी तानौ को टालिये अनिल ओला जल विष।

उक्त मन्त्र को सिद्ध कर लेने के बाद पढ़कर ताली बजावें तो आग, पानी, विष, ओला आदि का भय दूर होता है।

सर्वाङ्ग वेदना-हरण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर २१ बार झारने से समस्त शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

ॐ नमो कीतकी ज्वालामुखी काली दोवर रंग पीड़ा दूर सात समुद्र पार कर आदेश कामरू देश कामाक्षा माई हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

उदर वेदना-निवारक मन्त्र

ॐ नून तूं सिन्धु नून सिन्धु वाया। नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।। महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देऊँ पीर भगाया।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई आदेश हाड़ी रानी चण्डी की दुहाई।

प्रयोगविधि–दाहिने हाथ की केवल तीन उँगलियों से सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से तीन बार पढ़कर अभिमन्त्रित करे, बाद में टुकड़ा रोगी को खिलाने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

वन-दुर्गा मन्त्र

ॐ ह्रीं उत्तिष्ठ पुरिषि किं स्वपिषि भयं से समुपस्थितम्।
यदि शक्यं शक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ह्रीं ओम्।।

इस मन्त्र को नवरात्र के अवसर पर पवित्रतापूर्वक प्रतिदिन प्रातः देवी के मन्दिर में दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। इस मन्त्र को प्रतिदिन एक माला जप करने से मनुष्य अकाल मृत्यु, मार्ग दुर्घटना, भय आदि अनेक विपत्तियों से सुरक्षित रहता है।

तपेदिक (टीबी) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र

ओम् कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिन्ना नन्द भावह।
ज्वरं मृत्युं भयं घोरं विषं नाशय में ज्वरम्।।

आम के १०८ ताजे पत्ते तोड़कर शुद्ध गाय के घी में डुबा दें, यदि घी कुछ कम हो तो पत्तों पर चुपड़ दें और जिस स्थान पर रोगी की शय्या पड़ी हो आम, बेरी अथवा पलाश की लकड़ो की समिधा में अग्नि प्रज्वलित करके उपरोक्त मन्त्र से १०८ आहुति दें। यदि रोगी बैठने योग्य हो तो उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा दें। यदि रोगी बैठने योग्य न हो तो उसकी चारपाई हवन कुण्ड के समीप ही लगवा दें और हवन के समीप रोगी का मुँह खुला रक्खे। इस प्रकार की क्रिया से साधारण ज्वर तो केवल तीन या पाँच दिन में ही दूर हो जाते हैं और पन्द्रह या इक्कीस दिन में टीबी जैसे रोग भी सदैव के लिए दूर हो जाते हैं। हवन सामग्री में निम्न वस्तुएँ बराबर-बराबर लेकर मिला लेना चाहिये। मण्डूकपर्णी, गूगल, इंद्रायण की जड़, अश्वगंध, विधायरा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, बाँसा, गुलाब के फूल, शतावरी, जटामासी, जायफल, वंशलोचन, रास्ना, तगर, गोखरू, पाण्डरी, क्षीरकाकोली, पिस्ता, बादाम की गिरी, मुनक्का, हरड़ वड़ी, लौंग, आँवला, अभिप्रवाल, जीवन्ता, पुनर्नवा, नगेन्द्र बामड़ी, खूब कला, अपामार्ग, चीड़ का बुरादा, उपरोक्त सब चीजें बराबर भाग तथा गिलोय (गुर्च) चार भाग, कुष्ठ चौथाई भाग, केशर, शहद, देशी कपूर, चीनी दस भाग तथा गाय का घी सामर्थ्य के अनुसार जितना डाल सके। समिधा ढाक, शुष्क बाँस या आम की ही होनी चाहिये। हवन काल में अन्य कोई औषधि न देना चाहिये।

अनाज की राशि उड़ाने का मन्त्र

ओम् नमो हकाँलौ चौंसठि योगिन हकालौ बावन वीर कार्तिक अर्जुन बीर बुलाऊँ आगे आगे चौसठ बीर जल बींध बल बींध आकाश बींध तीन देश की दिशा बींध उत्तर जो अर्जुन राजा दक्षिण तो कैंर्तिक बिराजे आसमान लौ बीर गालैं नीचे चौंसठि योगिनी बिराजे बीर तो पास चलि आवै छप्पन बैरो राशि उड़ावै एक बंध आसमान में लगाया दूजै बाँधि घर में लाया शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

दीपावली की अर्द्धरात्रि को जंगल में जाकर नग्न होकर दस हजार बार उपरोक्त मन्त्र जप कर सिद्ध कर ले और जब प्रयोग करना हो तो रात्रि में मसा की मींगनी रखकर चला आये तो उसके पीछे ही समस्त अन्न राशि उड़कर चली आती है।

कार्य-साधन मन्त्र

बिस्मिल्ला रहमानिर्रहीम गजनी सो चला गुहम्मदा पीर चला चला सवा सेर का तोसा खाय अस्सी कोस का धावा जाय श्वेत घोड़ा श्वेत पालन जापै चढ़ा मुहम्मदा ज्वान नौ सौ कुत्तक आगे चलै नौ सौ कुत्तक पीछे चलै काँधा पीछे भात डाला ध्याया चलै चालि चालि रे मुहम्मदा पीर तेरे सम नहिं कोई वीर हमारे चोर को ल्याव काजी की कुरान सों ल्याव अठारह पुराण सों ल्याव जाव जाव जहाँ होय तहाँ सों ल्याव गढ़ा सों पर्वत सों कोट सों किला सों ल्याव मुहल्ला गली सों ल्याव कुचा सों चौंहटा सों ल्याव सेत खाना सों ल्याव बारह आभूषण सोलह सिंगार सों ल्याव काजल कजराटो सों ल्याव मढ़ की मौंठ सों रोली मीली सौं हाट बाजार सौ ल्याव खाट सों पाया सों नौ नाड़ी बहत्तर कोण की घूमती बलाय को ल्याव हाजिर करो हाड़ हाड़ चाम नख शिख रोम-रोम सों ल्याव रे ताड़या सिलार जिन्द पीर मारतौ पीटतौ तोड़तौ पछाड़तौ हाथ हथकड़ी पाँव बेड़ी गला में तौक उलटा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सेम खिलाय कैसे हूँ लाव बिन लिये मत आव ओम् नमो आदेश गुरु को।

इस मन्त्र को किसी भी दिन शुभ-मुहूर्त में गौ का गोबर का चौका लगा धूप, दीप, लोहबान की धूनी देकर १०८ बार मन्त्र जप कर सवा सेर लड्डू का भोग लगाये तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाय। प्रयोग के समय सात दाना उर्द को लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर मस्तक पर छोड़ दे, तो कार्य सफल होता है।

सर्प-विष मन्त्र

दुरहादह खुदादह दुरहादह रसूलदह दुरहादह खुदादह खुदाशेख मोहम्मद अर्बीदह।

मन्त्रसिद्धि करने की विधि—सवा लाख बार जप को चालीस दिन में करें। कम दिनों में जप पूरे हो जाय, तो ठीक हैं, परन्तु अधिक दिन भी नहीं लगने पाये। इसको सिद्ध करने की बहुत सरल विधि होती है, कोई भी आदमी आसानी से सिद्ध कर सकता है। इसके जप करने के दिनों में शरीर को शुद्ध रखकर स्त्री प्रसंग, मांस, मदिरा आदि चीजों का त्याग कर व्रत का पालन करना होता है। इसके द्वारा जो भी चिकित्सा करता हो, उसे सदा कर्त्तव्य पालन करना चाहिये। जैसे कि मन्त्र सिद्धि साधित करने वाले आदमी के पास जो भी रोगी या रोगी का सम्बन्धित आदमी खबर लाये कि

अमुक जगह, अमुक आदमी, को सांप ने काट लिया है तो आपको वहाँ चलना होगा और चिकित्सा करनी होगी तो उस आदमी को तुरन्त ही उसी समय स्वयं का कितना ही काम महत्त्व क्यों न हो, उसे छोड़कर जाना चाहिये और चिकित्सा करनी चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र में बल आता है और शीघ्र ही रोगी ठीक होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान करके और पवित्र वस्त्र पहनकर व मन को शुद्ध रखकर पहले कोई भी दरूद ११ दफे पढ़े, फिर बिस्मिल्ला ईरहमानई रहीम कहकर अन्दाजन तीन हजार दो सौ बार के करीब ऊपर के मन्त्र को पढ़कर पुनः ग्यारह बार दरूद पढ़कर अपने सीधे हाथ पर एक फूल मारकर उठ बैठे—रोगी दस-बीस दिन जप करने के उपरान्त ही साँप काटे का रोगी मिल जाये तो उस पर भी झाड़ दें, ईश्वर की कृपा से उसको आराम होगा।

झाड़ने की विधि

स्वयं रोगी को अथवा सूचना लाने वाले को उत्तर दिशा की तरफ पीठ करके बिठा लें, उसके सामने खुद बैठें और स्वयं अपना मुख उत्तर दिशा की तरफ रखें व सात बार ऊपर के मन्त्र को पढ़कर अपने हाथ पर फूँक मारकर जोर से तमाचा रोगी व रोगी की सूचना लाने वाले मनुष्य पर मारे; क्योंकि जितने जोर से तमाचा मारा जायेगा उतने ही मारने की शक्ति के बराबर रोगी के ऊपर शीघ्र ही असर होगा। इसलिये तमाचा कभी भी धीरे से नहीं मारना चाहिये। यदि कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति रोगी हो, तो थप्पड़ मारने की सूचना पहले दे देनी चाहिये कि रोग को थप्पड़ मारकर अच्छा किया जायेगा। यदि वह व्यक्ति थप्पड़ की मार खाने को तैयार हो तो चिकित्सा करनी चाहिये।

विशेष–मन्त्र को नौचन्दी जुमेरात के दिन जपना प्रारम्भ करना चाहिये। इस मन्त्र को प्रारम्भ करते समय चाहे कोई भी महीना हो जप कर सकते हैं, परन्तु शुक्लपक्ष में जो भी गुरुवार सबसे पहले आता है, उससे प्रारम्भ करना अच्छा रहता है। यदि जप के दिनों में किसी दिन ग्रहण पड़ता हो तो उससे जप करने में कोई फर्क नहीं पड़ता अर्थात् कोई बुरा फल नहीं होता है। रोगी को झाड़ने के बाद बतला देना चाहिये कि अब कोई पथ्य व दूसरा इलाज नहीं कराये। यदि पथ्य आदि कुछ ग्रहण करना हो तो झाड़ने के पूर्व ही कर लेना अच्छा होता है।

पागल कुत्ते का काटने का मन्त्र

काला एक समंदर पाला जिसमें निकला विष का पावा आलम चैत परखियाँ-मन भाये फुन्नाय बेटे मोहम्मद मुस्तफा, निर्विष करे खुदा मेरी भगत गुरु की शकत फलोमन्त्र ईश्वरी वाचा।

मन्त्रसिद्धि करने की विधि–इस मन्त्र को सिद्ध करने का बहुत आसान तरीका है। ग्रहण के दिन जितनी देर तक ग्रहण पड़ता हो, उतने समय में सौ-दो-सौ बार इस मन्त्र को मन में पढ़ो। सौ-दो-सौ बार मन में पढ़ने से अवश्य ही यह मन्त्र

सिद्ध हो जाता है। यदि किसी को सिखाना हो तो ग्रहण के समय ही सिखाना चाहिये, ग्रहण के अन्य समय में सिखाया गया मन्त्र का प्रभाव नहीं होता है।

विष उतारने की विधि–जिस मनुष्य को जिस स्थान पर कुत्ते ने काटा हो, उस स्थान के घाव पर जिस रंग के कुत्ते ने काटा है, उसी प्रकार के बाल निकलते हैं। मंत्रसाधित मनुष्य को उस रोगी के घर जाकर, रोगी के सम्बन्धित आदमी से बाँबी की मिट्टी मँगाये, मिट्टी को मँगाकर उसको बारीक कर, छानकर और एक लोटे में से दाहिने हाथ से चुल्लू जल लेकर उस बारीक छनी हुई मिट्टी पर सात बार उस मन्त्र को पढ़कर उस मिट्टी को (गूँथकर) सात छोटी-छोटी गोलियाँ बनाये और बाद में उन्हीं एक-एक गोली को कुत्ते के काटे घाव के ऊपर फेरते रहे और मन्त्र को सात बार पढ़ते रहे। ऐसा करने से घाव पर रखी उस गोली में से कुछ बाल उसी रंग के निकलते दिखाई देंगे जिस रंग के कुत्ते ने काटा था। इस प्रकार मन्त्र को सात बार पढ़ने से कुत्ते का विष दूर हो जाता है और रोगी अच्छा हो जाता है। इसे हमने कई रोगियों पर आजमाया है।

अंगुलबेल, अंगुलबाड़ा छिलोरी मन्त्र

तारमरे विष तनना मारूँ तारनहारा महाबली सवा मनको बजर मोंगरा ऐसी मारूगो मस्तक तेरे ते छै पड़ेगी। अचल चले चाँद चले सूरज चले रांडरी कौ रहटा चले। दाना खा, घास खा पानी पी घूरे लौट चलीचल गंगा की दहरैदह।

झाड़ने की विधि–रोगी को अपने सम्मुख बैठाकर उसके रोग वाले हाथ को पृथ्वी पर तलवा नीचे की ओर हो, ऐसा रखें। रोगी के सामने किंचित दूरी पर अपनी तरफ चार वस्तुएं पास-पास एक रेखा में रखें। वे चार वस्तुएं दाना (किसी भी अन्न का), घास, जल, राख। ये वस्तुएं बहुत थोड़ी नाम-मात्र के लिये लें। एक नीम की डाली बिना पत्ते की अपने दाहिने हाथ में लेकर उसकी अंगुली प्रथम दाने की ओर जायेगी। इसके बाद घास की एवं पुनः जल की पुनः राख के पास जायेगी, फिर उस रोगी से कह दो कि जा अच्छा हो गया। आप थोड़े दिन में देखेंगे कि क्रमशः उसकी सूजन और दर्द कम होता चला जायेगा और दिन बाद पूरा रोग समाप्त हो जायेगा। मन्त्र को पाँच से सात बार पढ़ा जा सकता है और इतने ही बार झाड़ना होता है। मन्त्र को सिद्ध करने की विधि सामान्य ही है।

ज्वर, मियादी, विषम ज्वर का मन्त्र

याह फीजन, याह फीजन, याह फीजन।

नीम के ढाई पत्ते लेकर उस पर ऊपर लिखा मन्त्र सात बार पढ़कर और फूंककर उन ढाई पत्तों को मसल व कुचकर खाने के बँगला या कपूरी पान में रखकर रोगी को ज्वर आने के रोज नियत समय के आधा या एक घण्टा पूर्व बताये गये पान

को खिला दे। यदि जीर्ण ज्वर का रोगी हो तो मन्त्र पढ़ने चाहिये। इस तरह इस मन्त्र का २४ घण्टे में ज्वर पर प्रभाव पड़ता है। इसके खिलाने से ज्वर क्रमश: घटता जाता है और अन्त में उतर जाता है एवं रोगी को आराम हो जाता है।

न्यूमोनिया का मन्त्र

नौ अंगुल का सरकंडा काटूँ दस अंगुल हो जाय। फलाने का डब्बा झाड़् पानीपत हो जाय। दुहाई हजरत नरकुतुब आलम की।

नोट–मन्त्र में फलाने के स्थान पर रोगी का नाम लेकर मन्त्र पढ़ा जाता है।

झाड़ने की विधि–हरा सरकंडा नौ अंगुल नाप का काट लें फिर चाकू की नोंक बराबर करके दोनों को मिलाकर उनसे झाड़े और मन्त्र पढ़कर फूँकता रहे तो सरकंडा एक अंगुल बढ़ जायेगा। उसको काट कर फिर नौ अंगुल का कर ले पुन: उसी तरह झाड़े। इस प्रकार तब तक करते रहे जब तक सरकण्डा बढ़ता रहे, पुन: जब घटने लगे तब उसको बीच से चीरकर ऐसे स्थान पर जहाँ किसी का पाँव उस पर न पड़े वहाँ फेंक दे। पुन: बच्चे की बढ़ी हुई पसली पर हींग अफीम का लेप दोनों लेप दोनों पसलियों पर लगाये और मकड़ी का सफेद वाला भाग मलाई में पिरोकर दीपक पर जला कर दूध में पिलाये। इस तरह इसको झाड़ने की विधि है।

स्तन-प्रदाह का मन्त्र

कामरू देश को उड़ा रहे उद्दा जद्दा को खाय।
फलानी का मैं थनैला झाड़ूँ छाती भस्म हो जाय।।

नोट–मन्त्र में फलानी के स्थान पर रोगिणी का नाम लेकर मन्त्र पढ़ना चाहिये।

फूँकने की विधि–स्त्री से उसका नाम पूछ कर उसके जिस तरफ की छाती में रोग हो, उसके विपरीत वाले भाग पर स्वयं मन्त्र पढ़ने वाला अपने उस विपरीत छाती पर मन्त्र पढ़कर हाथ फेरे। इस तरह मन्त्र को ३१ बार पढ़कर इतनी ही संख्या में छाती पर हाथ फेरे। २१ बार मन्त्र पढ़ने से रोग कट जाता है।

प्लीहा वृद्धि-मन्त्र

ओ तिल्ली ललि, और तिल्ली काटूँ। गौ गौ के पेट में बच्छा बच्छा के पेट में।

फूँकने की विधि–इस मन्त्र को बढ़े हुए तिल्ली के रोगी पर सात दिन तक फूँकना पड़ता है। शनिवार के दिन शुरू कर शुक्रवार के दिन मन्त्र को पढ़ना समाप्त किया जाता है। रोगी के पेट पर शुद्ध मिट्टी से रोटी के आकार की एक रोटी बनाकर रखे। उस रोटी पर पहले आड़ी-तिरछी सात लकीरें उस मिट्टी की रोटी पर काटें और पास से सात बार मन्त्र को पढ़े, इस तरह शनिवार से लेकर शुक्रवार के दिन तक प्रतिदिन आड़ी-तिरछी लकीरें सात-सात बार काटने और पाँच से सात बार तक मन्त्र पढ़ने से बढ़ी हुई तिल्ली दिन-प्रतिदिन घटती जाती है और रोगी को आराम हो जाता है।

भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र

ओकबनू सुन्दर कहाँ से आया गिर मेरू पर्वत से आया, अंजनी का सूत हनुमंत लाया, प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस कासा मांदाय, कल्ली कल्ली स्वाहा।

फूँकने की विधि–इस मन्त्र को सात बार पानी या कंकड़ पर पढ़कर रोगी को पानी पिलाया जाता है या कंकड़ मारे जाते हैं। जब भूत-प्रेत अक्रांत हुआ रोगी का कोई सम्बन्धी वैद्य को बुलाने आये तो वैद्य उसके साथ जाते समय रास्ते पर पड़े हुए सात छोटे-छोटे कंकड़ उठाकर पास में रख लेवें और रोगी के पास पहुँचकर एक-एक कंकड़ पर एक-एक बार मन्त्र पढ़कर एक-एक करके वे कंकड़ रोगी को मारता जाये। इसी प्रकार सात बार कंकड़ मारने से रोग सुधर जाता है या फिर कटोरी या गिलास में कुछ मात्र में जल लेकर पानी पर सात बार मन्त्र पढ़कर उस पानी को पिलाकर भी रोगी को आराम पहुँचाया जाता है।

चाँदनी बाँधने का मन्त्र

आसपास के सुदास, उठाने वाला कर पर दास बेगी दौडौ नौन्हा-चमार यह पिर कब्बर चाँद का बली बिसम्मल तेरी दुहाई से।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि–रक्त स्राव के मन्त्र के समान ही है।

चाँदनी बाँधने की विधि–चाँदनी को रात्रि में चाँदनियाँ निकलने पर बाँधा जाता है। चाँदनी बाँधने के लिए मोर का पंख, लाल रंग का मोटा धागा और ताँबे का एक नया पैसा या ताँबे की अँगूठी की आवश्यकता पड़ती है। उपरोक्त वस्तुओं को एकत्र करके मन्त्र पढ़ते जाइये। उस लाल रंग के धागे को गाँठ बाँधते जाइये, इस तरह एक बार मन्त्र पढ़कर पाँच गाठें बाँधिये और पाँचों गाँठों में पाँच मोर के पंखों के छोटे टुकड़े भी बाँधें एवं पाँचवीं गाँठ में उसमें ताँबे का पैसा या अँगूठी को बाँध दीजिये और उस धागे को तैल या गुड़ की धूप देवें और अपने इष्टदेवों का मन में स्मरण कर उस धागे को, यदि हाथ में घाव हो तो कलाई के ऊपर बाँध दें या पैर पर घाव हो तो पैर मे बाँधे। यदि शरीर के किसी अन्य भाग में घाव हो तो गले में बाँध कर लटका दीजिये। ऐसा करने से थोड़े दिनों में घाव सूखने लगता है और जब घाव अच्छी तरह ठीक हो जाता है तो उस बाँधे हुए धागे को निकालकर नदी में छोड़ दीजिये। ये मन्त्र देहातों में प्रचलित है। इस मन्त्र का प्रयोग धनुर्वात होने के पहले प्रयोग किया जाता है।

गर्भस्राव, गर्भपात, अकालस्राव का मन्त्र

श्याम सुभ राज करे, उठो हनुमान के चेले राज कड़ग का जगाई पर लंका बांधी, अरब गरब बांध चल बँधे तो नहीं बँधे तो हनुमान तेरी दुहाई से बँध जाय।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि–इस मन्त्र को सिद्ध करने की विधि सामान्य विधि के समान ही है।

गर्भपात को रोकने की विधि–इस मन्त्र का प्रयोग गर्भपात या गर्भस्राव में किया जाता है। एक मोया की रस्सी बनाकर, उस रस्सी पर मन्त्र को फूँकना होता है। जिस माह में गर्भ का पात या स्राव हो रहा हो उसके आगे के महीने को गिनकर अन्योत्र नौ माह नौ दिन तक गिनने से जितने माह प्रसव के शेष हैं, उतनी गाँठें उस रस्सी में बाँधें और उतने ही बार मन्त्र पढ़कर फूँक मारें और बाद में उस रस्सी को गर्भिणी के कमर में बाँध दें। ये रस्सी नौ माह नौ दिन तक जब गर्भ के होवे उस दिन तक बँधी रहने दें। इस मन्त्र को विशेष रूप से तीन माह के गर्भ को रोकने के लिए ही बाँधें। इसके अन्दर १-२ माह के गर्भ में नहीं बाँधते हैं। ये मन्त्र हमें पार्दुणा ग्राम के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से प्राप्त हुआ जिन्होंने आठ-दस गर्भिणी स्त्रियों पर आजमाया है, जिनमें से छह-सात स्त्रियों का गर्भपात बन्द हुआ। इसे आम के वृक्ष पर एक रस्सी से बाँधा जाता है, जिससे फूल गिरना बन्द होकर फल खूब लगने लगते हैं।

रक्तस्राव, शरीर के किसी भाग से खून बहना, हेमोरेज का मन्त्र

आसपास के सुदाम, उठाने वाला कर पर दास बैगी दौड़े, नौन्हा चमार, यह फिर कब्बर चाँद की बली बिसमल्ल, तेरी दुहाई से चाँदनी बँध जाय।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि–जब गंगा स्थान को जाये, होली-दीपावली को धूप दे अथवा ग्रहण पड़ने पर उस समय मन्त्र का जप कुछ बार कर लिया जाय, तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

रक्त बाँधने की विधि

१. चाँदनी बाँधने के समान ही रक्तस्राव को बन्द करने के लिए भी उसी मन्त्र का प्रयोग किया जाता है—ये मन्त्र दोनों कार्य एक साथ भी करते हैं। इसलिये इनका वर्णन अलग-अलग नहीं किया गया है।

२. दूध के मक्खन निकालने के लिये दूध मथने वाली स्त्री, **'मक्खन मक्खन जल्दी मैया माँगन आये कृष्ण कन्हैया'** इस मन्त्र को पढ़ती जाय, तो शीघ्र ही मक्खन निकलने लगता है।

३. शरीर में किसी भी स्थान में मस्सा हो तो उस मस्से को सेम की फली से खुजलाकर फली को फेंक दें, तो कुछ दिन में अर्थात् जब फली गल जायेगी तो मस्से को भी लाभ होगा अर्थात् मस्सा खत्म हो जायेगा।

४. प्रातः भोजन करने से पहले थोड़ी-सी राख चुटकी में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर दाद पर लगायें तो कुछ दिन में दाद अच्छा हो जायेगा।

दाद दाद तू बढियो मत दिन पर दिन घटियो अलबत्त।

५. जिस स्त्री ने बच्चे का दूध पीना छुड़ाया हो, वह थोड़ा-सा जलते हुए कोयले पर डाले तो उसके स्तनों का दूध सूख जायेगा।

तन्त्र विद्या के कुछ प्रयोग

१. किसी देवता की मूर्ति के सिर पर कोई घास जमी हो तो उसे सिर पर रखने से सिर का दर्द बन्द हो जाता है।

२. चूहे और बिच्छू में विरोध स्वरूप बिच्छू के काँटे पर चूहा फेर दो, दर्द जाता रहेगा।

३. पन्ना को चोट से अत्यन्त घृणा होती है। यदि कोई व्यक्ति गिर पड़ा हो तो उसकी चोट पर पन्ना को बार-बार फेरो। चोट को लाभ होगा। यदि लाभ न होगा तो पन्ना के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।

४. रिकेट मछली की त्वचा से ढोल बना हो तो उसका शब्द जहाँ तक जायेगा, इससे रेंगने वाली जीव-प्राणी के पास न आयेंगे।

५. मोर सर्प को निगल जाता है, जहाँ सर्प अधिक हो वहाँ मोर का पंख जला दें, साँप भाग जायेंगे।

६. जब अंगूर फले तो एक बोतल पेड़ पर लटका कर उसमें एक डाली भीतर को कर दें और तेल भर दें। जब उस डाली के अंगूर पक जाये तो उस तेल को लाकर रात को जलाओ, उसके प्रकाश से अंगूर दृष्टिगत होंगे।

७. मकनातीस का हटाने वाला भाग लगाने से दर्द-जलन आदि में आराम करता है, खींचने वाला भाग प्रसूता की जाँघ से पास लगाने से बच्चा को बाहर निकालता है और स्तन पर लगाने से गर्भपात रोकता है।

८. शेर को मुर्गे से घृणा होती है। शेर के घाव पर मुर्गे की चर्बी लगाओ, शेर उस वस्तु को कदापि न छुवेगा जिस पर मुर्गे की चर्बी लगी हो।

९. ऐसी तलवार जिससे कोई व्यक्ति मारा गया हो, उसके लोहे का दहाना बनाकर लगाओ तो कैसा भी बदमाश घोड़ा हो, काबू में आ जायेगा। उसी तलवार को मदिरा में डुबोकर चौथिया ज्वर वाले को पिलाओ तो वह अवश्य आरोग्य हो जायेगा। यह प्रयोग हमने प्रत्यक्ष देखा है, पूर्ण सत्य साबित होता है।

१०. जैतून को वेश्या से इतनी घृणा है कि यदि वेश्या अपने से पेड़ लगाये तो वह न तो बढ़ेगा न फूलेगा। जैतून का तेल उपस्थेन्द्रिय की दीर्घता व पुष्टता की प्रसिद्ध औषधि है।

११. मूली खाकर उसके पत्ते को टोपी में रख लो, दुर्गन्ध की डकार नहीं आयेगी।

मशक, मस्सा

१. शरीर के ऊपर जितने मस्से हों उतनी ही गाँठें एक पतली सूतली में लगाकर सरसों से छुवा कर उसको मरतूब स्थान में गाड़ दो, यह कहकर कि 'तू इ बला से छुड़ा दे, तो जब तक सूतली गलेगी मस्से अच्छे हो जायेंगे, परन्तु फिर मस्सों का विचार बिल्कुल न रक्खें, न उनकी तरफ बिल्कुल देखें।

२. शरीर में जितने मस्से हो उतनी ही काली मिर्च गिनकर उन्हें शनिवार की संध्या को कहीं रख आवें और निमन्त्रण दे आवें, फिर रविवार को प्रातःकाल ही उन्हें लाकर कपड़े की पोटली बाँधकर कुछ देर गले में पहने रहें। बाद में निकाल कर राह में छोड़ आयें, शनैः शनैः मस्से सूखते जायेंगे।

सूर्यवर्त, आधाशीशी, माईग्रेन

१. भेड़ की सींग का कंघा आधासीसी को आराम करता है, जिस तरफ दर्द हो उसी ओर के भेड़ की सींग का कंघा होना चाहिये।

२. प्रातःकाल दक्षिण दिशा की तरफ मुँह करके दाहिने हाथ में एक छोटी-सी गुड़ का ढेली लेकर दाँतों से काटकर चौराहे पर ऐसे समय फेंकना चाहिये, जब कोई भी देख नहीं रहा हो, ऐसा करने से आधासीसी (आधे सिर में दर्द होना) कुछ ही घण्टों में बन्द हो जाता है। यह लेखक का कई बार का अनुभव है।

३. रविवार या मंगल के दिन अधकपारी नाम की एक छोटी-सी लकड़ी को ताजी तोड़कर और सफेद या काले डोर से बाँध कर रोगी को बाँयें कान में पहनाने से आधासीसी कुछ ही समय में जादू-सा गायब हो जाता है। सिर का दर्द खत्म हो जाने पर डोरे को कान से निकाल कर किसी चौराहे या किसी सुनसान गली में फेंक देना चाहिये।

गठिया, वातरक्त, गाउट

जेब में कच्चा आलू रखने से प्रत्येक प्रकार की गठिया में आराम होता है।

सिरदर्द, शिरःशूल, हेडेक

१. गूमी की जड़ सिर में बाँधने से सिर का दर्द जाता है।

२. जो काकजंघा की जड़ को मस्तिष्क पर धारण कर सोता है, उसके सिर का दर्द बन्द होकर खूब नींद आती है।

साँप के विष सर्पविष

१. आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष में रविवार के दिन घौलबरुआ, जिसे ईश्वरमूल भी कहते हैं, की जड़ को डोर से बाँधने से साँप काटने का डर नहीं रहता है।

२. जिस आदमी के देह में बारहसींगा लटकता रहता है, उसे साँप काटने का भय नहीं रहता है।

३. जिस घर में निर्गुण्डी की जड़ रखी होगी उस घर में सर्प का भय नहीं रहेगा, ऐसा कुछ लोगों का मत है; परन्तु लेखक इस बात को अन्धविश्वास मानता है।

बिच्छू का विष, वृश्चिक विष

१. जिस स्थान पर बिच्छू डंक मारे वहाँ पर चिड़चिड़े की जड़ स्पर्श करा दें अथवा रोगी को दो-चार बार दिखायें जहर उतर जायेगा। जड़ दिखाकर फिर छिपा लेनी चाहिये।

२. बिच्छू के डंक मारने पर अष्टधातु की अँगूठी को जरा-सा गरम कर डंक मारे हुए स्थान पर सटा देने से बिच्छू का विष मिट जाता है।

३. हुलहुल की जड़ सात बार बिच्छू के काट हुए रोगी को सूँघा देने से बिच्छू का काटा दर्द कुछ मिनटों में गायब हो जाता है।

४. बिच्छू काटे हुए आदमी के निकट जिस बिच्छू ने रोगी को काटा हो, उसे पकड़ कर जलाने से रोगी का विष उतर जाता है। यदि बिच्छू नहीं मिले तो दूसरा भी पकड़ जलाया जा सकता है। ऐसा ही एक सिद्धान्त भी है कि जहर से जहर कटता है।

ज्वर, बुखार (फीवर)

१. सन्निपात ज्वर का नाश करने के लिए अश्विनी नक्षत्र में बकरे के बाल निकाल रखे हों, उन बालों के साथ निर्गुण्डी के साथ निर्गुण्डी की छाल व पुष्प की गोली-जैसा बनाकर उसे सन्निपात ज्वर के रोगी के हाथ की कलाई पर या फिर भुजा पर बाँधने से सन्निपात ज्वर दूर हो जाता है।

२. मलेरिया ज्वर शांत करने के लिए रविवार या सोमवार के दिन घर के नजदीक के ताड़वृक्ष से रोगी का वृक्ष (सीना) वृक्ष से सटाये लगान चाहिये और रोगी अपने मन में इस वाक्य को दुहराते जायें कि 'जब मेरा ज्वर उतर जायेगा तब मछली चड़ाऊँगा' इस तरह इस वाक्य को मन में तीन बार दोहराना चाहिये। जब ज्वर पूर्णतः शरीर से छूट जाता है तब एक चोटी लकड़ी में दो मछली बाँधकर उस ताड़ के वृक्ष की जड़ में रविवार या सोमवार के ही दिन रख आना चाहिये और वृक्ष के समीप खड़े होकर मन में कहना चाहिये कि 'मेरा ज्वर छूट गया है।'

३. रविवार के दिन मिट्टी के घड़े में जल भर कर रखें, उस घड़े में एक सोने की अँगूठी डाल दें और एक घण्टे बाद चौराहे पर या रोगी के घर के सामने मलेरिया ज्वर के रोगी को लाकर उसी जल से स्नान करा दें। स्नान कराने के बाद घड़े से अंगूठी निकाल लें। यह क्रिया रविवार की संध्या को की जाती है, इससे जल्दी बुखार छूट जाता है।

४. मंगल या रवि के दिन रात सात नग लहसुन पीस और काले कपड़े पर रख दाहिने पैर के अंगूठे में बाँध दें, जब तीन घण्टे व्यतीत हो जायँ, उसे अंगूठे से खोलकर चौराहे पर फेंक दें, तो शीतज्वर की पारी आना रुक जाती है।

५. सात लर लाल धागे में अपामार्ग की जड़ लाकर कमर में बाँधने से बारी-बारी से आने वाले ज्वर में आराम होता है। अपामार्ग की जड़ ठीक रविवार के दिन ही उखाड़नी चाहिये।

६. काकमाँची की जड़ लाल धागे में बाँधकर रोगी के दाहिने कान पर रखने से रात्रि में आने वाला ज्वर छूट जाता है।

७. बबूल की जड़ को श्वेत धागे में लपेट कर शनिवार के दिन हाथ में बाँध दें, तो शीतज्वर दूर हो जायेगा। ज्वर उतरने पर सुनसान देखकर जड़ी को रोगी के हाथ से निकाल कर किसी गली में फेंक दें। जड़ी को फेंकते समय किसी अन्य व्यक्ति ने देखा न हो।

८. श्वेत जयन्ती की जड़ रोगी के माथे में बाँधने से कैसा भी पुराना ज्वर हो छूट जाता है।

९. शनिवार की सन्ध्या को छोटी दुधी के पौधे की जड़ में पीले चावलों को रखकर निमन्त्रण दे आये और रविवार को सूर्योदय से पूर्व ही वहाँ जाकर निर्वस्त्र होकर गूगल की धूनी देकर उसकी जड़ उखाड़ लें, फिर उसे पुरुष रोगी के दाँयें और स्त्री रोगिणी के बाँयें हाथ में बाँधें, जिससे तृतीयक ज्वर निश्चित ही दूर होगा। यह रामबाण टोटका है।

१०. जिस रोज इकाई ज्वर की बारी हो उस दिन प्रातःकाल दिन निकलने के पहले केकड़ा के बिल की मिट्टी का टीका लगाने से इकाई ज्वर नहीं आता है।

११. रविवार के दिन प्रातःकाल निर्गुण्डी और सहदेई की जड़ को उखाड़ लाये और उन्हें कमर में बाँधें तो सभी तरह के ज्वर का नाश हो।

१२. उल्लू के दाहिने डैने का पखना सफेद धागे में लगाकर बाँयें कान में बाँधने से इकाई ज्वर में आराम होता है।

१३. शनिवार के दिन मयूरशिखा के पौधों को निमन्त्रण दे आवें और रविवार को उखाड़ लावें फिर उसे लाल डोरे में लपेट कर हाथ और कमर में बाँधने से एकलिक ज्वर नष्ट हो जाता है।

१४. भूत ज्वर को भगाने के लिए रोगी के हाथ में छिड़छिड़े की जड़ बाँधना चाहिये।

१५. लाल पलाश की जड़ हाथ में बाँधने से वे सभी ज्वर नष्ट हो जाते हैं जो कि भूत-प्रेतादि के कारण होते हैं।

अतिसार-डायरिया

सहदेई की जड़ लाकर उसके सात टुकड़े करे और लाल डोरे में लपेट कर रोगी के कमर में बाँध दें, बार-बार पतले दस्त होना रुक जायेगा।

संग्रहणी-स्प्रू

गेहुआ सर्प की केंचुली को कपड़े की थैली में सीकर रोगी के पेडू पर बाँध दे। यह टोटका संग्रहणी के लिए अच्छी-अच्छी दवाओं से बढ़-चढ़ चुका है।

यकृत् प्लीहा वृद्धि

१. बाँझ ककाड़े की गाँठ रविवार के दिन लाकर रोगी के पास जलते हुए चूल्हे पर बाँध दो। ज्यों-ज्यों बाँझ ककाड़े गाँठ सूखती जायेगी त्यों-त्यों ही तिल्ली घटती जायेगी। इस टोटके के साथ मन्त्र का भी प्रयोग करना चाहिये।

२. प्याज की माला गले में धारण करने से यकृत् और प्लीहा वृद्धि का रोग जाता रहता है।

३. नागफनी की जड़ की माला धारण करने से भी जिगर और तिल्ली के रोग मिट जाते हैं।

पथरी

लोहे की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली में पहनने से पथरी रोग की पीड़ा में अतिशीघ्र लाभ होता है।

शलीपद हाथीपाँव

१. उत्तर दिशा में उगने वाले आँक की जड़ रविवार के दिन उखाड़ लाये और लाल डोरे में लपेट कर फीलपाँव की सूजन की जगह बाँध दे, कुछ समय में फीलपाँव में अतिशीघ्र लाभ होता है।

२. सोलह दाँत वाली गाँठदार पीली कौड़ी में छेदकर और उसे काले डोरे में गुहकर शलीपद वाले स्थान पर धारण करने से शलीपद की बाढ़ रुकती है।

दन्तशूल दाँतों में दर्द

छोटे बालक के गिरे हुए दूध को जन्तर में मढ़वा कर पास में रखने से दाँतों का दर्द जाता रहता है।

घाव, क्षत, व्रण, जख्म

यदि किसी अंग में घाव हो जाय और वह जल्दी सूखता न हो तो समझना चाहिये कि इसमें दृष्टिदोष हो गया है। एक बर्तन में जल भरकर और उसमें सोने की अँगूठी डालें, उस अँगूठी को उसमें कुछ देर पड़ा रहने दें, फिर उसी जल से घाव को धोवें। घाव धोने के बाद उस जल को चौराहे पर डाल दें। यह क्रिया शनिवार के दिन करनी चाहिये।

बवासीर (अर्श)

१. अर्श रोगी के मस्से के नीचे साँप की केंचुली रखने से अर्श का कष्ट दूर होता है।

२. जंगली सूरण (जंगली जिमीकंद) को कार्तिक महीने में खोद लाये और उसकी चकतिया काटकर सुखा लें। फिर उसे काले डोरे में गूँथ कमर में धारण करने से धीरे-धीरे अर्श के मस्से सूखने लगते हैं। मस्से जब तक सूखे नहीं तब तक उन चकतियों को कमर में बाँधे रखना चाहिये।

पागलपन, उन्माद

१. प्रेम के दिवाने मनुष्य के लिए यह टोटका विचित्र प्रभावक है। लोहे के एक टुकड़े को आग में गर्म करो और उसे पानी में बुझाओ इसी प्रकार तीन बार गर्म करो और क्रमश: पानी में बुझाओ और प्रत्येक बार बुझाते समय यह कहते जाओ कि जिस प्रकार यह गर्म लोहा पानी में शीतल होता है, उसी प्रकार अमुक लड़के का प्रेम अमुक लड़की से शीतल हो जाय, फिर उसी पानी से प्रेम में पागल रोगी का मुँह धुलाओ और थोड़ा पानी उसके वक्षस्थल पर भी छिड़क दो। तीन दिन तक यह क्रिया करने से वह अपनी प्रेमिका को भूल जायेगा।

२. बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून और कछुवे के खून को ऊँट के चमड़े में मढ़कर ताबीज की तरह बना लें, फिर इस ताबीज को किसी के प्रेम में पागल मनुष्य के कण्ठ में बाँध दो। इससे रोग शीघ्र शांत होता है।

३. उन्माद रोगी की चोटी में घबलरूआ के जड़ बाँधने से उसका प्रलाप रुक जाता है और उसे नीद भी आने लगती है।

मिर्गी अपस्मार

१. जिस स्थान पर जंगली सूअर का मूत्र गिरे वहाँ की मिट्टी मिर्गी के निकट रख दे। मिर्गी का दौरा उसी क्षण शांत हो जायेगा।

२. नदी के किनारे पर बालू के अन्दर मृगचना नाम के कीड़े होते हैं, उन कीड़ों में से दो ले आवें और उन्हें मिर्गी वाले की बाँह और गले में बाँध दें, इस उपाय से भयंकर से भयंकर मिर्गी का रुक जाता है।

३. जंगली सूअर के नख को को अँगूठी की भाँति बनवाकर सोमवार के दिन दाहिने हाथ की छोटी अँगुली में पहन लें, इससे अपस्मार का दौरा रुक जाता है।

४. गाय के बाँयें सींग की अंगूठी बनवाकर बाँयें हाथ की कनिष्ठिका अँगुली में पहनने से मिर्गी का दौरा नहीं आता है।

५. भेड़िये की विष्ठा और उसकी हड्डी मिर्गी वाले के पास रखने से दौरा रुक जाता है।

वन्ध्यत्व, बाँझपन

बालके के नाभिनाल का टुकड़ा, चस्के की फल्ली का बीज, गाँव सूअर का

जाल (सूअर से जब बच्चा पैदा उस समय बच्चे के साथ जाल निकलता है, नारियल का फूल, उन सभी वस्तुओं को एकत्रित कर ३ साल पुराने गुड़ में इनको डालकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें और बाँझपन स्त्री को मासिक धर्म से निवृत्त होने के पश्चात् जिस दिन स्त्री नहाती है, उसी समय जिस जगह भी नहाने बैठे उसी जगह पर एक गोली खिलायें और एक गोली दोपहर को भोजन के पश्चात् तथा एक गोली शाम को सोते समय बिना पानी के निगलवायें। यदि गोली निगलवायी नहीं जा सकती है तो उस स्त्री का पति कुएँ से स्वयं ताजा पानी लाकर गोली निगलवायें। दूसरे दिन हाथ का पानी गोली के साथ देना निषेध है। इसको केवल एक दिन ही तीन बार गोली दें, इससे अधिक नहीं दें। इसे सेवन कराने से बाँझपन स्त्री को भी संतान उत्पन्न होने लग जाती है। यह टोटका अभी तक केवल दो स्त्रियों पर आजमाया है, जिनकी गोदें आज तक हरी-भरी हैं।

रक्त प्रदर

रक्त प्रदर से पीड़ित स्त्री को गुराड़ बेला के पत्तों का स्वरस कड़वी तुम्बी (लौकी) या टेभरून के पत्तों के दानों में से निकाल कर ५ से ७ मात्रा दिन में दो बार के हिसाब से पिलाने से रक्त प्रदर में फायदा होता है।

गर्भनिरोध टोटका

१. यह टोटका भी बड़ा अद्भुत है। हाथी की लीद को स्त्री के योनि पर रखे, गर्भ न रहेगा।

२. पुष्य नक्षत्र में जब सूर्य हो तब विधानपूर्वक धतूरे की जड़ उखाड़कर रख छोड़े, उसे स्त्री की कमर में बाँध दें, इससे गर्भ कदापि नहीं रहेगा।

३. जिस स्त्री को पहली बार बच्चा पैदा हो रहा हो, उसके बच्चा पैदा होने के समय खून लेकर यदि कोई स्त्री अपने समूचे शरीर में लगा ले तो उसे जिन्दगी-भर गर्भ न रहे।

४. बच्चे का गिरने वाला पहिला दाँत यदि भूमि पर न गिरने दिया जाय; वरन् पहिले ही हाथ में लेकर उसे चाँदी के जंतर में मढ़वाकर स्त्री की बाँह पर बाँध दें, तो उसे गर्भ हर्गिज न रहेगा।

५. यदि मैथुन के समय स्त्री मेढक की हड्डी अपने पास रक्खे तो कदापि गर्भ न रहे। यह टोटका कइयों का परीक्षित है, ऐसा कई पुस्तकों में लिखा मिलता है।

६. मर्द के कान की मैल और बाकला का एक दाना, इन्हें अपने पसीने से बाँध स्त्री अपने गले में धारण कर ले, जब तक यह ताबीज गले में रहेगा गर्भ न रहेगा।

मासिक विकार

यदि माहवारी की बिगाड़ की वजह से स्त्री के पेड़ू कमर में दर्द हो तो कमर में मूँज की रस्सी बाँधकर सोये रहे और सवेरे उसे खोलकर चौराहे पर फेंक दें, तो माहवारी की खराबी और पेड़ू कमर का दर्द आराम हो।

श्वेत प्रदर

उत्तर दिशा में किसी पवित्र स्थान में व्याघ्रनखी की जड़ उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र में उखाड़ लायें और उसी दिन स्त्री की कमर में बाँध दें। इस टोटके से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

हिस्टीरिया

भेड़ की जूँ कम्बल के रोएँ में लपेटकर ताँबे के जन्तर में धारण करने से स्त्रियों की हिस्टीरिया रोग दूर हो जाती है।

सुख-प्रसव कारक टोटके

१. स्त्री के शरीर के बराबर किसी कन्या के हाथ कता हुआ सूत लेकर उसमें चिड़चिड़े की जड़ लपेटें और प्रसव-पीड़ित स्त्री के कमर में बाँध दें, बिना कष्ट के शिशु का जन्म हो जायेगा; तदनन्तर जड़ी खोलकर फेंक दें।

२. यदि शिशु जन्म के समय प्रसव पीड़ा से छटपटाती हुई स्त्री के कमर में नीम की जड़ बाँधे तो उसे प्रसव में कोई कष्ट नहीं होता है।

३. जिस स्त्री को प्रसव-वेदना हो रही हो उसका नाम लेकर ताड़ वृक्ष के उत्तर की तरफ का सिरा उखाड़ लायें और उसे लाल धागे में लपेट कर स्त्री की कमर में बाँधो, तो तत्क्षण प्रसव हो जायेगा। प्रसवोपरान्त उसे खोलकर फेंक देना चाहिये।

४. चक्रमक पत्थर कपड़े में लपेटकर स्त्री की राँघ पर बाँधने से बच्चा जल्दी और सरलतापूर्वक हो जाता है।

५. स्त्री के बाँयें हाथ पर चुम्बक रख देने से भी शिशु-जन्म बिना कष्ट के हो जाता है।

६. स्त्री के बाँयें हाथ में कलिहारी की जड़ रेशमी डोरे से बाँध दें। प्रसव काल की वेदना दूर हो जाती है।

७. लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक बाँधकर प्रसविनी के बाँयें हाथ की ओर लटका दें, बिना किसी कष्ट के बच्चा सहज ही उत्पन्न हो जाता है।

८. सूर्यमुखी और पाटला की जड़ गले में बाँध देने से बच्चा सुख से जन्मता है।

९. यदि शिशु जन्म के समय अत्यधिक कष्ट हो, तो गर्भिणी की नितम्बों पर सर्प की केंचुली बाँध दो, बिना किसी कष्ट के प्रसव हो जाएगा।

१०. स्त्री की कमर में सरफोंका की जड़ बाँध दें, तो तत्काल प्रसव हो जायेगा।

११. यदि प्रसविनी के स्तनों पर बारहसिंगे का सींग बाँध दिया जाय, तो प्रसव सुख से होता है।

१२. जीपिव सर्प के दाँत प्रसविनी के गले में बाँध देने से प्रसव में बिल्कुल कष्ट नहीं होगा।

१३. गर्भिणी के नाप के बराबर सूत में उत्तर दिशा में उगी हुई ईख की जड़ लपेटकर उसकी कमर में बाँध दें, बच्चा सरलतापूर्वक उत्पन्न हो जायेगा।

१४. हुलहुल की जड़ प्रसविनी के हाथ अथवा सिर में बाँध दें, बच्चा तत्काल हो जाता है। मेरा स्वयं का परीक्षित टोटका है।

१५. धतूरे की जड़ जब सूर्य पुष्य नक्षत्र में हो तब उखाड़ कर रख ले, आवश्यकता के समय इस जड़ को प्रसव-वेदना में छटपटाती हुई गर्भिणी की कमर में बाँध दें, ईश्वर की कृपा से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

१६. साँप की केंचुली एक तोला, घोड़ा व गदहा का नाखून ४ तोला, दोनों कूट करके कपड़े की निर्धूम अग्नि पर डाल योनि में धुनि देने से तुरन्त बालक उत्पन्न होता है।

१७. प्रसव-वेदना उत्पन्न होने पर जिस घर में प्रसूता का निवास हो उसकी छत पर मृत गाय के सिर की सूखी हड्डी रख देने से बिना कष्ट के प्रसव होता है।

१८. मदार की जड़ को पाँच संख्या मदार ही के पत्तों से लपेटकर प्रसूता के सिर के बालों से बाँध दें, तो तत्क्षण बालक उत्पन्न होता है, किन्तु बालकोत्पत्ति के अनन्तर इसको खोलकर फेंक देना चाहिये।

१९. पंचांग सहित अपामार्ग उखाड़ लायें, प्रसूता के सामने दूसरी स्त्री हाथ में लेकर दिखाती रहे तो प्रसव शीघ्र होता है।

२०. अपामार्ग की जड़ पानी में महीन पीस नाभि के नीचे जंघाओं पर लेप कर देने से तथा योनि के आसपास से शीघ्र प्रसव होता है।

२१. कलिहारी को पानी में महीन पीस कर हाथ-पाँव के तलुओं पर लेप करने से तुरन्त बालक उत्पन्न होता है। इतने मूढ़गर्भ भी बाहर आ जाता है। प्रसव हो जाने के बाद ही लेप छुड़ा देना चाहिये। नहीं तो गर्भाशय बाहर निकल जाने की आशंका रहती है।

गर्भपात

१. काली मूसली जिसे लाल मूली भी कहते हैं, की जड़ हाथ या पैर में बाँधने से गर्भपात हो जाता है।

२. ब्राह्मी की जड़ शरीर में धारण करने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।

गर्भपात, गर्भस्राव

१. कुंवारी कन्या द्वारा काता हुआ सूत लेकर उसमें गर्भिणी के नाप के बराबर २१ धागा लेकर प्रत्येक में पृथक-पृथक काले धतूरे की जड़ बाँधकर सारे धागे गर्भिणी की कटि में बाँध दें, इससे कदापि गर्भपात न होगा।

२. कुसुम के रंग में रंगे हुए लाल डोरे में एक करजुआ बाँधकर गर्भिणी के कमर में बाँध देने से गर्भ नहीं गिरता। यदि गर्भ रहते ही कमर में बाँध दिया जाये और नौ महीने तक बँधा रहने दिया जाय, तो गर्भ गिरने का भय ही न रहे।

३. कुंवारी कन्या द्वारा काते हुए सूत में खिरेटी की जड़ लपेटकर गर्भिणी की कमर में बाँध दें, गिरता हुआ गर्भपात रुक जायेगा।

लड़का या लड़की होगी?

१. यदि चिड़चिड़े की जड़ उखाड़ते समय टूट जाय, तो लड़की और यदि ठीक रूप से पूरी उखड़ आये तो समझना चाहिये, कि लड़का उत्पन्न होगा।

२. प्रसव पीड़ा के समय किसी भी अन्न के सात दाने लेकर गर्भिणी के शरीर पर से एक वार उतार कर तालमखाना के झाड़ पर फेंक देना चाहिये। दाने फेंकते समय इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि उसके ऊपर अपनी छाया न पड़ने पावे। दानें फेंकने पर झाड़ को अपनी पूरी ताकत से उखाड़ना चाहिये। यदि झाड़ उखाड़ने पर दो जड़ निकलती है तो लड़की और एक ही जड़ पूरी निकलती है तो समझना चाहिये कि लड़का उत्पन्न होगा। इस टोटके को गर्भिणी के प्रसव-पीड़ा के समय ही तुरन्त उखाड़कर लाना चाहिये।

आँख आना

१. रास्ते का छोटा-सा कंकड़ उठाकर जिस तरफ की आँख आयी है, उसी तरफ के कान में उस कंकड़ को कान के ऊपरी भाग में बैठा देना चाहिये, इससे आँखें दुखना बन्द होकर आँख की लाली खत्म हो जाती है। कंकड़ को कान में एक या दो दिन तक रखना चाहिये, इसके बार निकाल कर चौराहे पर फेंक देना चाहिये। कान के कंकड़ से आँख में लाली आयी हुई उस कंकड़ के दबाव से खत्म होती है और कंकड़ का तनाव आँखों की बारीक-बारीक नसों पर पड़ता है।

२. मेंहदी के ताजे पत्तों को तोड़कर उसको पत्थर पर पीसकर उसको टट्टी के रास्ते पर बाँधने से आयी हुई आँखों की लाली खत्म होकर आँख ठीक हो जाती है।

मोटापा

राँगे की अँगूठी बनवाकर दाँयें हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहिनाने से रोगी का मोटापा कम होता है।

सेहुआ

धोबी के घर से आये हुए धुले कपड़े आते ही उन कपड़ों को पहनने से सेहुआ रोग दूर हो जाता है।

भूत-प्रेत निवारण

१. नीम के पत्र, वच, हींग, साँप की केंचुली और सरसों, इनको पीस कर धुनी दें, तो सभी प्रकार की भूतादि दूर हो जाते हैं।

२. काले धतूरे की जड़ रविवार को बाँह में बाँधें तो भूतबाधा जाय और फिर कभी न सताये।

३. मुण्डी, गोखरू और बिनौला समभाग लेकर गोमूत्र में पीसकर ब्रह्म-राक्षस से ग्रसित को सुँघायें तो निर्दोष हो।

४. रविवार को तुलसीपत्र, कालीमिर्च, प्रत्येक आठ-आठ तथा सहदेई की जड़ लाकर तीनों को ताँबे के यन्त्र में भर धारण करने से भूत-प्रेत दूर हो जाय।

बालापस्मार टोटका

१. भेड़ की जूँ, कम्बल के रोयें में लपेट कर ताँबे के जनतर में धारण करने से बालापस्मार रोग दूर हो जाता है। स्त्रियों के हिस्टीरिया रोग के लिए भी यही टोटका सर्वोत्तम माना जाता है।

२. बालापस्मार के लिये भेड़ियें का दाँत बच्चे के गले में बाँध देना चाहिये। बच्चा स्वस्थ हो जायेगा।

३. अकरकरे को सूत में बाँधकर गले में लटका देने से बच्चों की मिर्गी में आराम होता है।

४. चूहे का होंठ जन्तर में मढ़वाकर गले में धारण करने से बालापस्मार मिटता है।

दाँत निकलने का टोटका

१. एक ताँबे के ताबीज में पत्थरचूर की जड़ भर कर उसे लाल डोरे में बाँधकर बच्चे के गले में लटका दें। इससे बच्चे के दाँत निकलने में हरे पीले दस्तों आदि का कष्ट नहीं होगा।

२. सीपियों की माला बच्चे के गले में पहिनाने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

३. लोहे अथवा ताँबे का कड़ा बालक के हाथ या पैर में पहनाने से दाँत सरलता से निकल आते हैं और दृष्टिदोष-नजर नहीं लगने पाती है।

४. छछून्दर का होंठ बालक के गले में लटकाने से सुख से दाँत निकल आते हैं।

५. सम्भालू की जड़ गले में बाँध देने से भी दाँत निकलते समय कोई कष्ट नहीं होता।

६. सिरस के बीजों को धागे में पिरोकर माला बनायें और उसे शिशु के गले में पहना दें, माला बच्चे की छाती को छूती हुई रहनी चाहिये। इस उपाय से बड़ी सुगमता से दाँत निकल आते हैं।

७. पूरब दिशा में उपजी हुई सफेद सम्भालू की जड़ बालक के गले में बाँधने से बालकों के दाँत उगने के समय की पीड़ादि रोग नाश होते हैं।

८. कपूर की चकतियों की माला पहिनाने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

खाँसी

एक कपड़े की थैली में कौवे की बीट बाँधकर बालक के गले में लटका देने से बालक की खाँसी में आराम हो जाता है और रविवार के दिन बीट वाली थैली बालक के गले में लटकायी जाय, तो बालक का कौवा उठ जाता है।

हिचकियाँ

१. रीठे की फली धागे में पिरो कर गले में पहिनाने से बच्चे की हिचकियाँ व दृष्टि-दोष दूर हो जाता है।

२. दूध पिलाने वाली माँ या धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा कपड़े का फाड़ कर पानी से भिगों कर बालक के माथे पर रखने से बालक की हिचकियाँ तुरन्त बन्द हो जाती है।

बालक का रोना

रविवार या मंगलवार को नीलकण्ठ का पंख लाकर जिस चारपाई पर बालक सोता हो उसमें लगा दें, तो बालक का अधिक रोना, बार-बार रोना बन्द होता है।

जम्हुआ

सफेद कबूतर का जोड़ा घर में रखने से बच्चों के जम्हुआ (जपोगा) की बाधा नहीं होती है।

उदर व्याधि

एक रंग के काले कुत्ते का बाल और अकरकरा बच्चे के गले में बाँध देने से बालक के उदर रोग व ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

मसूड़े का दर्द व सूजन

दुखते हुए मसूड़े में काला धतूरे के पत्तों का रस निकालकर उस रस में नमक का थोड़ा-सा अंश डालकर जिस तरफ की दाड़ में दर्द हो उस तरफ के कान में उस

नमक के रस को थोड़ा गरम करके डालने से दाड़ का दर्द होना १ दिन में बिल्कुल ठीक होगा, सूजन कम होना शुरू हो जाती है।

कुकास, काली खाँसी

कुत्ते को फाँसी देकर जिस भी पेड़ की डाली में लटकाया हो, उसी पेड़ की छाल और कुतरकाटी के बीज, इन दोनों को छान कर इसकी शहद या पुराने गुड़ में १-१ रत्ती की गोली बनाकर रख लें। इसकी सात गोली पानी में देनी चाहिये। ७ गोली से अधिक गोली नहीं देते बनता। इसके सेवन कराने से काली खाँसी आना बन्द हो जाती है। यह टोटका अभी तक १० रोगियों पर आजमाया गया है। जिसमें से २ रोगी को हीं कोई फायदा नहीं हुआ, शेष सभी को आश्चर्यजनक फायदा हुआ है।

सूखा रोग

साड़े के तेल में बाजरा का आटा मिलाकर उसकी छोटी-छोटी गोली बना लें। इन गोलियों में से केवल एक दिन ही ३ बार सुबह-शाम-दोपहर ही १-१ गोली दूध के साथ बच्चे को दें। गोलियों को एक ही दिन सेवन कराना होता है। इसके साथ ही भूमिगोदा के (राजगोदा काटे वाला) पौधे की जड़ सहित उखाड़ कर नहाने के गरम पानी वाले बर्तन में उसे छोड़ दो, उस पानी से लगातार ५ दिन तक नहलाओ। उस बर्तन का पानी पूरा खत्म होने दो, थोड़ा शेष रहने पर और दूसरे दिन के लिए पानी डाले रहने दो। उस बर्तन में पानी और गोदा लगातार ५ दिन तक रहने देना चाहिये। इस तरह ५ दिन तक उस पानी से नहलाते रहें तो बच्चे का सूखा रोग जाता रहता है।

मृतवत्सा

बच्चा पैदा होने के ५ वें दिन (पाँचवीं के दिन) प्रसूति के नहाते समय उस नहाने के पानी में एक-दो बूँद शेर से निकाला हुआ तेल डाल दें और उस तेल मिले हुए पानी से प्रसूति को नहाने दो-तो जिसको बच्चे पैदा हो जाते हैं; परन्तु कुछ समय तक जीवित रहकर मर जाते हैं, ऐसे पानी से नहलाने से उसके बच्चे जीवित रहने लग जाते हैं।

इस मन्त्र को यन्त्र सहित भोजपत्र पर लिखकर ताँबे के ताबीज में भरकर पाँचवें माह में गर्भिणी की कमर में बाँधें। बालक के जन्म होने पर खोलकर बालक के गले में धारण करें।

दूसरे के चढ़ाये हुए विष की परीक्षा का मन्त्र

विष ऐलो उलटे पलटे नेड़ लेर चोटे मरे केड़टे गरूरं पाथ करीया प्रणाम, गेठेली विष करी खान आगे चले मनसा बूढ़ी विफू चले विष फुड फेर चोटे उड़िये दीनु गेठेलीर विष नाई विष अमुकेर अंगेर धिक धिक नाचिछे रंगेकार आज्ञा देव रे मन सार आज्ञा।

विधि–यह मन्त्र को दीपावली या होली में १००० बार पढ़कर धूप, दीप, नैवेद्य, मिठाई धरकर पूजा करें और तिल, चावल, शक्कर, जव, घी, इन्हें बराबर-बरावर लेकर हवन करे जो श्रद्धा लेवे तो ब्राह्मण भोजन कराये तो मन्त्र सिद्ध होता है और अमावस को अमावस धूप देकर मन्त्र पढ़ लो तो ज्यादा तेजी से मन्त्र चलेंगे। इस मन्त्र को चार आदमियों के साथ सीखना चाहिये। क्योंकि सहायता की जरूरत रहती है।

भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र

१. ॐ नमो ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ नमो भूतनायक समस्त भूवन भूतानि साधय हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा।

२. ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपु-वक्षस्थल-विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवसमस्तदोषान् हन हन सर सर कम्प कम्प मथ मथ हूँ फट् फट् फट् ढः ढः ढः महारुद्रो जाययानि स्वाहा।

विधि–इन दोनों मन्त्र में से किसी एक मन्त्र से मोरपंख लेकर १०८ बार झाड़ दें, इससे भूत अवश्य भाग जायेगा।

सर्प-विष मन्त्र

सात समुद्र तेरो नदी पार सोनार लंकाय जन्म तोर, रोले मरीचा भारत भुवने तोमार चिबाये खेलेम विष (अमुकेर) अंग करो निर्विष नाई विष (अमुकेर) जाय मेरे विष हरीर आज्ञाय।

विधि–सात काली मिर्च में सात बार मन्त्र पढ़कर काली मिरचों पर फूँक मार कर रोगी को चबाने को दें, यदि विष होगा तो मीठा लगेगा और विष नहीं होगा तो मिरच तीखी या चरपटी लगेगी। अगर मिरच मीठी लगे तो और पढ़कर चबवाये और खिलाये। इसी माफिक जब तक मीठी मालूम लगे तब तक मिर्चें मंत्रित करके चबाने को देता जाय, विष बिलकुल आराम हो जायेगा।

२. दसरथी राम, विष्णु अवतार, गरुड़ वाहने आकेशे संचार, नल दमयन्ती जाय पहाड़े पहाड़ मरे आगुन पूड़े, गंड़ी बेड़ी दण्डी बेनी नागिनी बेड़ी पालाय विष ताड़ा ताड़ी, नाई विष (आमुकेर) आगे काट आज्ञा गरुड़ेर आज्ञा दुहाई गरुड़ दुहाई गरुड़।

विधि–यह मन्त्र पढ़-पढ़कर रोगी के चारों तरफ घूमे पत्नी प्रदक्षिणा करे और मन्त्र समाप्त होने पर रोगी के मस्तक पर फूँक मारे। इसी प्रकार जब तक विष रहे बराबर झाड़ते रहे और जब तक विष झड़े नहीं तब तक झाड़ने वाला आदमी बैठे नहीं, बैठने से कोई फल नहीं होगा। अमुक स्थान पर रोगी का नाम ले।

३. पचां पुकुरे कांदे ने तो भलोरे सांपा पूता, आघाड़ खाय कापडेर

पाटे, विष लाय अपनी उठे भई विष (अमुकेर) अंगे नाई आर, ने तो बोले दुहाई कामाख्यार।

विधि–जो अंग पक्ष जिस स्थान में सर्प ने काटा हो उसके दूसरे अंग के वही स्थान में मन्त्र पढ़-पढ़ कर थप्पड़ मारना। जैसे किसी आदमी का बायाँ पैर के जंघा में सर्प ने काटा है तो दाहिने पैर के जंघा पर उसी स्थान में मन्त्र पढ़-पढ़ कर थप्पड़ मारे, जैसे-जैसे विष उतरता जाय, अमुक स्थान पर रोगी का नाम लेता जाय।

विधि–इस मन्त्र को रविवार या मंगलवार को लिखकर दाहिने हाथ या गले अथवा चोटी में कच्चे धागे से बाँध दें। हर किस्म का ज्वर नष्ट होता है।

नजर उतारने का मन्त्र

बालस्य सर्वे विघ्ना नश्यन्ति मंत्रे बसति जगत्पति।।

विधि–लाल मिर्च ८ नग, थोड़ा नमक और थोड़ा बालक के माता के सिर का बाल। माता न हो तो किसी भी स्त्री के सिर के बाल लेकर सब एकत्र करके दाहिने हाथ में लेकर मन्त्र पढ़कर हाथ बालक के ऊपर घुमाता रहे और मन्त्र समाप्त होने पर एक फूँक बालक के शरीर पर मारा करें। इस प्रकार आठ बार करें। तत्पश्चात् सामग्री को जलते हुए चूल्हे में डाल दें। बाधा होगी तो न मिर्च गंध आयेगी और न बालों की ही; किन्तु दो चार बार करने के पश्चात् गंध आगे लगे तो समझना चाहिये कि बालक बाधा से मुक्त हो गया है। मन्त्र जिस बालक पर कहे उसके यहाँ दूध, खाना या पीना मना है। यहाँ तक कि जल भी न पीये पैसा-कौड़ी ले।

आमरक्त-नाशक मन्त्र

इस रोग में रोगी को आँव निकलने के साथ-साथ रक्तस्राव भी होता है, जिसे आमरक्त कहा जाता है। इसके निवारण के उपाय नीचे के श्लोक में दिये गये हैं।

'सागरेर कूले उपजिल शूल आरे पीउ पीउ पानी अमुकेर घुचिलाम रक्तशूल छाडानि धर्मेर आज्ञा' इति पठित्वा जलं पेयम्।।

उक्त मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करने के पश्चात् रोगी को वह जल पी लेना चाहिये।

अतिसार-नाशक मन्त्र

किसी व्यक्ति को बार-बार पहले दस्त आने को ही अतिसार नाम दिया गया है। इसके उपचार के लिए नीचे लिखे मन्त्र को काम में लाना चाहिये।

श्री माहदेव उवाचः गङ्गा यमुना तीर्थेर पानि, ये कहिलो काहिनी, से खाइलो पानि-आइजो होइते दूर होइलो अमुकेर बन्ध्या तूलानि, सिद्धि गुरु श्री रामेर आज्ञा।।

उक्त मन्त्रपूत जल रोगी को पिलाने से उसका अतिसार रोग ठीक हो जाता है।

विविध भाँति के रोगों का उपाय

१. किसी कुंवारी कन्या के द्वारा ज्वराक्रान्त व्यक्ति के हाथ में चिड़चिड़े की जड़ को धागे में लपेटकर बँधवा देने से ज्वर उतर जाता है। इस प्रयोग का कथन शिवजी के द्वारा किया गया है। अत: इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं लाना चाहिये।

२. रविवार के दिन रक्तवाट्या की जड़ की कदली (केला) के रेशे में लपेट कर रोगी के बिस्तर के नीचे दबा देने से वह ज्वरमुक्त हो जाता है।

उदर-विकार निवारण

मधु के साथ नागेश्वर (नागकेशर) की जड़ का पान करा देने से पेट के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

नेत्ररंजनकरण

१. किसी ताँबे के बर्तन में दीप जलाकर काजल एकत्रित कर लें। अब इस काजल को घी में फेटकर आँखों में अंजन लगाने से नेत्रों की ज्योति पूर्ववत् लौट आती है।

२. पुनर्नवा (गदहपूरना) बूँटी को कुचलकर उसका रस निकाल लेवें। अब इस रस में घी मिलाकर भक्षण करने से आँखों की रोशनी तेज हो जाती है।

सम्पूर्ण रोगों का निवारण

१. इस लिखित मन्त्र—**'ॐ क्रीं क्षं सं सं सः'**–के द्वारा गोघृत को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके उस घी को पीना चाहिये। प्रतिदिन एक महीने तक लगातार एक नल की मात्रा में पान करने से समस्त रोगों का विनाश हो जाता है।

२. उपर्युक्त मन्त्रपूत घृत को पीने के बाद एक महीने तक दुग्धपान करने से नेत्र ज्योति वर्धन होता है। इसे नियमित रूप से उक्त परिणाम में सेवन करने से कास (खाँसी) रोग से छुटकारा मिल जाता है। चावल के धोवन के साथ इस घृतपान से शूलरोग नष्ट होता है। पुनर्नवामूल के स्वरस के साथ इसके सेवन से वृद्धत्व का निवारण होता है। अर्थात् असमय में वृद्धावस्था के लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होते। यदि इस घृत को गन्ने के रस के साथ पान किया जाता है, तो विविध व्याधियों से मुक्ति मिलती है।

कुत्ता-विष निर्विषीकरण

१. कुत्ते द्वारा काटे गये स्थान पर गुड़, तैल तथा मदार के दूध को एक साथ मिश्रित कर लेपन करने से विष का निवारण होता है।

२. किसी बावले कुत्ते के काट लेने पर वहाँ घृतकुमारी (घीकुआर का पौधा) का पत्ता और सेंधानमक पीसकर किंचित् आग पर गरम करके तीन दिनों तक दंशित स्थान पर बाँध देने से वहाँ का विष उतर जाता है।

विविध भाँति के जहरीले जन्तुओं का विषनाशक

१. सिंधी नमक मछली द्वारा डंक मारने पर वहाँ गरम करके थोड़ा घी लगाकर सेंक देना चाहिये।

२. मकड़ी-विष के निवारणार्थ हल्दी दारुहल्दी, मंजिष्ठा (मंजीठ) तथा नागकेशर को पीसकर लेप करने से विष का प्रभाव जाता रहता है।

३. सरसों तथा करंजबीज को तिल के साथ पोषण कर दंशित स्थान पर लेप करने से किसी भी प्रकार के कीड़े का विष दूर हो जाता है। इसके अतिरिक्त एरण्ड (रेड़ी का तेल) कीटदंशन के स्थान पर मालिश करने से भी विष का हरण हो जाता है।

सर्प विष नाशक औषधियों का वर्णन

१. श्वेत अपराजिता तथा देवदाली (तरोई) की जड़ को पानी के साथ पीसकर सर्पदंशित की नाक में नस्य देने से मरणासन्न रोगों में भी कभी-कभी प्राणों का संचार हो जाता है।

२. निम्नलिखित आठ वस्तुओं का योग तैयार कर रोगी को देने से क्रोधित हुए तक्षक और वासुकी नाग से दंशित व्यक्ति भी मरते-मरते बच जाता है। वे वस्तुएँ इस प्रकार हैं—दही, शहद, मक्खन, छोटी पीपर, अदरक, मरिच, कूठ और सेंधा नमक।

३. कटुकी और मूसली की जड़ का पानी में पीसकर पीने से सर्वविष का निवारण होता है। इसके अतिरिक्त वृश्चिक नामक पौधे और वीरणा की जड़ को पीसकर दंशित स्थान पर लगाने से भी विष उतर जाता है।

४. सोमराजी बीज के चूर्ण को गोमूत्र में भिंगोकर सेवन कराने से स्थावर तथा जंगम विषों का नाश हो जाता है। इसे मृतसंजीवनी औषधि कहा गया है।

५. साँप काटने पर यदि किसी व्यक्ति के पूरे शरीर में जहर फैल गया हो तो उसे गाय के दूध में हल्दी पका कर उसका काढ़ा पिलाने से वह पुनः स्वस्थ हो जाता है।

६. हल्दी और कुष्ठ (कूठ) का काढ़ा बनाकर सर्पदंशित व्यक्ति को पिलाने से वह विषमुक्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त हल्दी, कुष्ठ, शहद और घी को एक साथ मिलाकर सेवन करने के फलस्वरूप सभी प्रकार के विषों का नाश हो जाता है।

७. कुंकुम, अलक्तक (आलता), लोध, मनःशिला (मैनसिल) तथा गोरोचन को पीसकर वटी बना ले। शरीर के विष द्वारा प्रभावित होने पर इस गोली को पानी में घिसकर लेप करने से विष का प्रभाव जाता रहता है।

अपने स्वर को गानविद्या में सुरीला बनाना

जाती वृक्ष (जायफल) की पत्ती, जीरा, (लावा), मातुलंग की पत्ती और शहद को एक साथ पीसकर एक पल (लगभग २५ ग्राम) चाटने से गायक का स्वर किन्नरगणों के समान मधुर और मनमोहक हो जाता है।

सोंठ के चूर्ण में शहद और शर्करा मिलाकर गोली बना लेनी चाहिये। इस गोली के सेवन करने से सूर-साधक का स्वर कोकिल के समान मनोहारी हो जाता है।

यदि कोई गायक निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण तिलतैल के साथ भक्षण करता हैं तो वह किन्नरों के साथ भी राग अलापने में सक्षम हो जाता है।

विभीतक (बहेड़ा), जीरा, सोंठ, सेंधा नमक और दालचीनी। इन सभी वस्तुओं को बराबर की मात्रा में लेकर पीस डाले और इसे गोमूत्र के साथ मिलाकर दो तोले (लगभग २५ ग्राम) की मात्रा में पान करता रहे तो वह स्वरसाधक किन्नरों के साथ गायन करने की भी क्षमता पा लेता है।

नेत्ररोग निवारण तथा रक्षण

सफेद गदहपूरना की जड़ को घी में पीसकर नेत्रों में लगाने से आँखों में पानी आना रुक जाता हैं। इसके अतिरिक्त इसकी जड़ को दारुहरिद्रा (दारुहल्दी) के साथ पीसकर अंजन की तरह नेत्रों में लगाने पर नेत्रों में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता हैं।

२. घोंघे और कौड़ी को पहले पानी से धोकर उसे शुष्क बना लें। तत्पश्चात् उसका भस्म बना मक्खन में फेटकर नेत्रों में अंजन करने से आँखों की फूली कट जाती है।

३. काकमाची (मकोय) की जड़ को वर्षाकाल में उखाड़कर इसे तेल में पकाकर छान लें उस तेल को एक महीने पर्यन्त नेत्रों में लगाने से गिद्ध के समान आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण हो जाती है।

४. हरीतकी (हरड़), वच, कुष्ठ (कूठ), काली मरिच, बहेड़े का गूंदा, शंखनाभि तथा मन:शिला (मैनसिल) इन सब पदार्थो को बराबर मात्रा में लेकर बकरी के दूध में पीसकर उसकी वटी बना लें। इस वटी को पीसकर आँखों में लगाने से तिमिर, कुंडू, अर्बुद, रतौंधी (रात्रि में दिखलाई न पड़ना), मांसवृद्धि—जैसे घातक रोगों का का भी उपशम हो जाता है। यदि इसका अंजन एक महीने तक निरन्तर किया जाय, तो दो वर्षो की पुरानी फूली भी नष्ट हो जाती है। शास्त्रों में इसे चन्द्रोदय वटी के नाम से भी जाना जाता हैं।

५. जो मानव समुचित आहार-विहार का पालने करते हुए त्रिफला का चूर्ण घृत और मधु (घी तथा शहद का प्रयोग सम भाग में कदापि नहीं करें, नहीं तो वह विषतुल्य हो जाता है)। के साथ नित्य प्रति सेवन करता है। उसके समस्त नेत्ररोग उससे

उसी प्रकार दूर हो जाते हैं, जिस प्रकार दरिद्र व्यक्ति के साथ सभी ऐश्वर्य छोड़कर दूर हट जाते हैं।

६. दशमूल (बिल्व, गोखरू, दोनों बृहती, शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, बिदारीगंधा, पोटला, काश्मर्य एवं अग्निमंथ—इन दश औषध समूहों को दशमूल के नाम से जाना जाता है) को आग पर पकाकर काढ़ा बनावें। जब उस काढ़े का चौथाई भाग शेष रह जाय, तो उसे छानकर उसका चतुर्थांश उसमें तिलतैल मिलाकर दशमूल के साथ पुन: पका लेना चाहिये। इस तैल को कानों में डालने से बहरेपन का नाश हो जाता है।

७. मन:शिला (मैनसिल) तथा अपामार्ग (चिचिड़ा) की जड़ का चूर्ण बनाकर उसमें शहद मिला लें। अब इस अवलेह को लगभग २५ ग्राम की मात्रा में भक्षण करने से श्रवणशक्ति पुनरावर्तित हो जाती है।

८. लहसुन, आमला तथा हरताल को बराबर की मात्रा में लेकर उसे चौगुने तिलतैल में पीस डाले। अब उस तैल को चौगुनी मात्रा में दूध मिलाकर सबको एक साथ पका लें। जब दूध जलकर केवल तैल मात्र शेष रह जाय तब उसे छान कर रख लेना चाहिये। इस तैल को कानों में डालने से बहिरापन नहीं रह जाता है।

९. तगर और पलाश वृक्ष की जड़ को दाँतों से चबाकर उस चर्चित रस को कानों में डाल देने पर गोमक्षिका नामक कीट का नाश हो जाता है।

१०. नीली नामक पौधे के मल का स्वरस काँजी (मट्ठा) में मिलाकर एक साथ आग पर पका लें। इस तैल की कुछ बूँदें तैल के गरम रहते ही कानों में टपका दे तो उससे कृमि आदि नष्ट हो जाते हैं।

११. शूकर का तैल अथवा गौरैया पक्षी का रक्त कानों में डालने से सुनने की शक्ति बढ़ जाती है।

१२. अश्वगंधा (असगन्ध), वच, कुष्ठ (कूठ) तथा गजपिप्पली (गजपीपर) इन सबको बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण कर डालें और उसे भैंस के मक्खन में मिलाकर कानों में लेप करें तो श्रवणशक्ति का वर्धन होता है।

१३. सफेद सरसों, बृहती तथा अपामार्ग (चिचिड़ा) को बराबर भाग में ग्रहण कर बकरी के दूध में उसे पीस डालें। अब इस लेप को कानों में लेप करने से कर्णपाली (कान की लोर) बढ़ जाती है।

दाँतों को सुदृढ़ बनाना

१. किसी ताँबे के बर्तन में थोड़ी देर तक हरड़ के चूर्ण को मधु के साथ पका डालें। तदन्तर इसे पीसकर गोली के रूप में बना लें। इस गोली को मुख में रखने से दाँतों के समस्त कीड़े मर जाते हैं।

२. दाँतों के नीचे स्नुही वृक्ष (थूहर, सेहड़) की जड़ को दबा रखने से

दन्तकृमि नष्ट हो जाया करते हैं। घी में कसीस को पकाकर मुँह में धारण करने के दन्तपीड़ा का निवारण होता है।

३. प्रात:काल जातीवृक्ष की अथवा अखरोट वृक्ष की पत्ती मुख में रखकर चर्वण करने से हिलते हुए दाँत भी मजबूत हो जाते हैं। उपर्युक्त वृक्ष की लकड़ी का दातुन बनाकर सुबह दतुअन करने से भी हिलते हुए दाँत अपने स्थान पर स्थिर हो जाते हैं।

४. वकुल (मौलसिरी) के फल चबाने से चलायमान दाँत पुन: स्थिर हो जाते हैं। मौलसिरी बीज को जल में पकाकर उसके गरम जल से कुल्ला करने से भी हिलते हुए दाँतों के लिए हितकारी होता है।

५. मौलसिरी की छाल को पकाकर उसके गरम जल से निरन्तर सात दिनों तक कुल्ला करने से ढीले दाँत भी स्थिर और दृढ़ हो जाते हैं।

रक्षा के उपाय

१. उपर्युक्त श्लोक में मन्त्रोद्धार के अनन्तर मन्त्र का प्रारूप निम्न प्रकार से होता है। **'ॐ क्रां ह्रीं श्रीं'** इसके अतिरिक्त दूसरा रूप—**'ॐ क्रीं श्री क्षीं'** भी होता है। इसे संयमन मन्त्र कहा गया है। इस मन्त्र की विधि-विधानपूर्वक केवल पचास बार जप कर लेने से ही समस्त अनिष्टों का निवारण हो जाता है। भगवान शिव ने स्वत: इस प्रयोग का सराहा है।

२. जो मनुष्य संयतमना होकर श्रद्धा-भाव से सर्वदा इस महामन्त्र—**'ॐ ह्रीं ख्रीं छ्रीं ठ्रीं थ्रीं क्रीं ह्रीं'** का स्मरण करता रहता है, उसका सर्वविध मंगल होता है एवं उसके सभी अकल्याणकारी फल विनष्ट हो जाते हैं। जो मानव अपने हाथों से लाल फूलों की माला बनाकर उस निर्मित माल्य को इस मन्त्र से एक सौ बार अभिमन्त्रित कर देवी को समर्पण करता है, वह जीवनभर सुख का भागी बना रहता है और दिनोदिन उसे सफलता मिलती रहती है। इस महामन्त्र को लिखकर जिस घर में स्थापित किया जाता है। वहाँ कभी भी किसी प्रकार का अनिष्ट उपस्थित नहीं होता है।

३. भगवान् शिवशंकर ने देवी पार्वती से कहा—**'हे देवि! क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं फट्'**—यही हमारा प्रत्यक्ष स्वरूप है, यही हमारा ध्यान तथा जपमन्त्र भी है। जो प्राणी इस मन्त्र को पाँच-सौ बार जप करता है, उसका कभी अहित नहीं होता। त्रैलोक्य में उसकी समता किसी के साथ नहीं हो सकती और वह प्रत्यक्ष रूप से शत्रुहीन होकर फलोपभोग करता है। इस लोक में ऐसा व्यक्ति सदैव ही स्त्री-पुत्र, बन्धु तथा कुटुम्बियों से आवेष्टित रहकर अन्तकाल में परलोकगामी होता है।

४. सफेद मदार (श्वेतार्क) को रवि-पुष्य योग (रविवार के दिन पड़ने वाला पुष्य नक्षत्र) में खोदकर भुजा में धारण करने से समस्त अनिष्टकारी फलों का नाश हो

जाता है। उस जड़ को आग में धूनी देने से भूत-प्रेतादि का निवारण होता है। ऐसे प्राणी को केवल देखकर ही भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी तथा दानवादि दूर भाग जाते हैं।

५. यदि शिरीष वृक्ष का बाँदा (नीचे झुकी हुई शाखाएँ) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में किसी के सिर पर नि:क्षिप्त कर दिया जाय, तो वह व्यक्ति निर्भय बन जाता है।

भाग्यविहीनीकरण

नीमवृक्ष के बंदे (नीचे लटकने वाली शाखा) को ज्येष्ठा नक्षत्र में जिस किसी को वह दे दिया जाय, तो वह व्यक्ति भाग्यहीन बन जाता है।

विवादकारक प्रयोग

वस्त्रविहीन और विमुख होकर विशाखा नक्षत्र में नीम के पेड़ की उस जड़ को मुख से काटकर लाये और जिसकी शाखायें उत्तर दिशा की ओर फैली हुई हो। इस जड़ को जिसके घर में फेंक दिया जाय, तो उस परिवार में कलह उत्पन्न हो जाती है। यदि उस जड़ को वहाँ से पुन: अन्यत्र फेंक दिया जाय, तो उस घर का विवाद समाप्त हो जाता है।

ब्रह्मदण्डी तथा काकमाची (मकोय) के पौधे को अड़हुल के फूल के रस में क्रमश: सात दिनों तक पीस लें। तदनन्तर शत्रुओं के बीच उसकी धुनी देने से उसकी गन्ध सूँघने मात्र से ही पारस्परिक विवाद पैदा हो जायेगा। इसके प्रयोग से अपने सगोत्रियों या माता-पिता के बीच भी विवाद खड़ा हो जाना सम्भाव्य हो जाता है।

उत्पीड़क जीवों का विनाशन

१. हरताल को तग्र (मट्ठे) के साथ पीसकर उसे पुतली पर लेप कर दें। उक्त द्रव्य से लिपी हुई उस पुतली को देखकर ही घर की मक्खियाँ वहाँ से दूर चली जाती हैं।

२. काली उड़द और काला तिल के चूर्ण को सफेद मदार के दूध में मिला लें। अब उसका लेप मदार के पत्तों पर लगाकर घर में रख छोड़ने से घर के चूहे भाग जाते हैं।

३. हरिताल को प्याज के साथ पीस डालें। अब उसमें बकरे का मल-मूत्र मिलाकर किसी चूहे के शरीर पर उसे लेपित कर देने पर उसे देखते ही दूसरे चूहे भी घर छोड़कर भागने के लिए विवश हो जायेंगे।

४. गन्धक, हरिताल, ब्राह्मी बूँटी और त्रिकुट (काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ) को पहले की तरह बकरे के मूत्र में पीसकर किसी एक चूहे के शरीर पर लेपन कर उसे जीवित छोड़ देन से घर के अन्य सभी चूहे उसे देखकर ही घर में पलायन कर देंगे।

५. सफेद मदार की जड़ को मघा नक्षत्र में लाकर उसे मुलेठी के साथ पीस

डालें। उस चूर्ण को घर या खेतादि स्थानों में डाल देने से वहाँ रहने वाले चूहे, मक्खियों आदि का मुखबन्धन हो जाता है। जिससे वे कृषि को क्षति नहीं पहुँचा पाते।

६. बहेड़े की लकड़ी और फूल को पलीते में डालकर मशाल की तरह उसकी रोशनी करने से ही खटमलादि कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

७. सोमराजी वृक्ष के पल्लवों के अगले भाग से पलीता बनाकर उससे दीप जलाने पर खटमलादि जीव-जन्तु विनष्ट हो जाते हैं।

८. मदार की रूई लेकर उसकी बत्ती बना लें और मदार के कटुतैल में उसका दीया जलाया जाय, तो मच्छर, मक्खियों आदि का उपद्रव नहीं हो पाता।

९. अर्जुन वृक्ष के फल तथा फूल, लाक्षा (लौह, लाख), चन्दन, गुग्गुल, श्वेत अपराजिता की जड़, भल्लातक (भिलावाँ) की लकड़ी की जड़ एवं विडंग (भाभीरंग, वायविडंग) को एक साथ पीसकर चूर्ण बना लें और उस चूर्ण की घर में धूनी दें, तो उसकी गन्ध से ही घर में रहने वाले साँप, मच्छर-मक्खियाँ तथा चूहे आदि सभी जीव-जन्तु भाग खड़े होते हैं।

१०. गुड़, चन्दन, भल्लातक (भिलावाँ), विडंग (भाभीरंग), त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), लाक्षारस तथा मदार का पुष्प। इन सब वस्तुओं को एक साथ मिलाकर धूनी देने से साँप, बिच्छू आदि जहरीले जन्तुओं का विनाश हो जाता है।

११. नमक का घोल, वसा (चर्वी), अर्जुन वृक्ष की जड़, मरुवक (दौना नामक एक सुगन्धित पौधा), केतकी पुष्प की जड़ तथा नखी नामक द्रव्य। इन सबको एक साथ मिलाकर धूप देने से उस स्थान में कीड़े-मकोड़े, मक्खी, चूहे तथा सर्पादि जीवों का भय नहीं रह जाता है।

रोम-विनाशक योग

१. हरिताल का चूर्ण एक भाग, शंख भस्म पाँच भाग तथा पाकड़ वृक्ष की लकड़ी का भस्म पाँच भाग लेकर केले के पत्ते के रस में मिलाकर उसे सात दिनों तक रख छोड़ें। तदनन्तर इसे रोमपूर्ण स्थान में (योनि में) जो नारी लेपन करती है। उसके रोम नष्ट हो जाते हैं और फिर उस स्थान पर पुन: बाल नहीं उगते।

२. पलाश वृक्ष की लकड़ी का भस्म तथा हरिताल चूर्ण एक साथ मिलाकर केले के पत्ते के साथ पीस ले। तत्पश्चात् इस लेप को बालों के स्थान पर लगाये तो समस्त बाल जड़ से उखड़कर गिर पड़ेंगे।

३. पहले शंख भस्म को कदली स्वरस में एक सप्ताह तक भिंगो दें। तदनन्तर उसके साथ हरिताल को चूर्ण मिश्रित कर दें। अब इसको पीस कर उसका लेप तैयार कर लें और रोमयुक्त स्थान पर प्रयोग करें तो सभी बाल झड़ जाते हैं।

४. हरिताल चूर्ण, मंजिठ, जो एक प्रकार की महीन लाल रंग की लकड़ी होती है। इसे रंगने के काम में भी लाया जाता है। भस्म और किंशुक (पलाश) की लकड़ी की भस्म बराबर मात्रा में ग्रहण कर बालों के स्थान पर लेप करें तो वहाँ के बालों का उत्पाटन हो जाता है।

५. शंख, हरिताल, यव (जौ) तथा घुंघुची (गुंजाफल) को समान मात्रा में लेकर बालों के स्थान में लेपन करने से वहाँ के बाल गिरकर वैसे ही साफ हो जाते हैं। जैसे पेड़े की पकी पत्तियाँ अपने स्थान से अलग हो जाती हैं। इनके अतिरिक्त मन:शिला (मैनसिल नामक एक पीला पदार्थ) को सरसों के तैल में मिलाकर बालों के स्थान पर लगाने वह स्थान रोमरहित हो जाता है।

६. हरिताल तथा संखचूर्ण को खारे पानी (लवणयुक्त) में पीसकर किसी भी केश-समूह के स्थान पर धूप में बैठकर लगाने से वहाँ के बाल तत्काल गिरकर विनष्ट हो जाते हैं।

७. सुपारी के पत्ते के रस में गंधक को पीस डालें, फिर उसे रोमयुक्त स्थान पर लगावें तो वहाँ के बाल गिर जाते हैं। लेप लगाकर धूप में बैठना चाहिये।

नष्ट रजधर्म पुनः ठीक होना

१. ज्योतिष्पती (मालकांगनी) के मुलायम पत्तों को आग में भून लेवें। तत्पश्चात् उस दग्ध पत्तों को अड़हुल के फूल के साथ पीसकर बासी जल अथवा कांजी (दही के पानी) में मिलाकर पीने से रजोरोधी नारी का रजोधर्म पुन: चालू हो जाता है।

२. दूब के अंकुरों और चावल को समान मात्रा में लेकर पीस डालें और उसे पीठी के समान बना ले। तत्पश्चात् इस पीठी को आग पर भून कर जो स्त्री सेवन करती है, उसका रुका हुआ रज:स्वार पुन: खुल जाता है।

३. जो नारी कबूतर के बीट को शहद के साथ मिलाकर पान करती है तब नष्ट रज पुन: प्रवर्तित हो जाता है। इस योग का कथन मूलदेव ने किया है।

४. त्रिकुट (सोंठ, मरिच, पिप्पली) का काढ़ा बनाकर उसमें गुड़ तथा काला तिल का चूर्ण मिलाकर पीने से नष्टपुष्पा नारी पुन: रजोधर्मा हो जाती है और इस काढ़े को पीने से रक्तगुल्म नामक रोग में भी लाभ होता है।

मासिककाल में अत्यधिक रजःस्राव का सुदूरीकरण

१. आँवला (धात्री) हरड़ और रसांजन (रसौत) को पीसकर चूर्ण बना ले और उसे जल के साथ सेवन करे तो अन्यत वेग से प्रवाहित होने वाला रज:स्राव भी उसी प्रकार रुक जाता है, जिस प्रकार बाँध बना देने पर जल का प्रवाह रुक जाता है।

२. लिसोढ़े के पेड़ का छिलका और चावल को एकत्र पीसकर पीठी की भाँति

बना ले। तदनन्तर उस पीठी की पोटली बनाकर योनि के अन्दर स्थापित करने से बहता हुआ रज:स्राव स्थिर हो जाता है।

३. पुरानी सुपारी के साथ अपामार्ग (चिचिड़ा) की जड़ पीसकर जो नारी भक्षण करती है, उसके ऋतुकाल में होने वाला अत्यधिक रक्तस्राव भी बन्द हो जाता है और वह अपने को सुखी होने का अनुभव करने लगती है।

४. चन्दन, दुग्ध, घी, शर्करा एवं शहद को समान मात्रा में ग्रहण कर सेवन करने वाली नारी का अत्यधिक प्रवाहित होने वाला रज:स्राव अवश्य ही रुक जाता है।

जन्मजात बांझ की चिकित्सा

१. रविवार के दिन जड़ और पत्तों सहित उखाड़कर सर्पाक्षी का पौधा लावे और उसे एक रंगवाली गाय के दूध के साथ किसी अविवाहिता कन्या के द्वारा पिसवा डालें। तत्पश्चात् मासिकधर्म होने पर पहले दिन से ही इसे आधा पल की मात्रा में सात दिनों तक निरन्तर सेवन करें। औषध सेवन काल में दूध, शालि चावल तथा मूँगादि को हल्के पदार्थों का आहार ले। अपने मन में किसी प्रकार का शोक, भयादि को स्थान न दें। साथ ही सप्ताहान्त तक व्यायाम, पुरुष-संसर्ग, दिवाशयन, परिश्रमपूर्ण कार्य, अत्यधिक शीतलता तथा उष्णता से भी बचने का प्रयास करे। उपर्युक्त नियमों का जो स्त्री पालन करती है, वह ऋतुकाल की समाप्ति के अनन्तर पति-सहवास के फलस्वरूप निश्चित रूप से गर्भवती होती है। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिये।

२. एक रुद्राक्ष का दाना तथा लगभग ५० ग्राम परिमाण में सर्पाक्षी पौधा लेकर पूर्व योग की भाँति गो-दुग्ध के साथ ऋतुमती होने पर जो नारी सेवन करती है। उसका वन्ध्यत्व नष्ट हो जाता है अर्थात् वह गर्भधारण में समर्थ हो जाती है। औषधि सेवन काल में निम्नलिखित गणेश मन्त्र का भी जप करें।

३. यदि पलाशवृक्ष के एक पत्ते को दूध के साथ पीसकर पहले कहे गये विधि के अनुसार कोई नारी गर्भावस्था में पीती रहे तो वह निश्चित ही पुत्रवती बन जाती है। इस विधि को अपनाने के लिए पूर्वोक्त नियमों का पालन करना आवश्यक होता है।

४. रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र पड़ने पर देवदाली (तरोई) की जड़ उखाड़ लायें और उसे लगभग २५ ग्राम की मात्रा में दूध के साथ पीसकर पीने से जन्मवन्ध्या नारी भी पुत्र-लाभ को प्राप्त करती है। औषधि ग्रहणकाल में पथ्यापथ्य का ध्यान रखना अनिवार्य है।

५. यदि ऋतुस्नाता नारी घृत तथा जल के साथ अश्वगन्धा (असगन्ध) पकाकर घी और दूध के साथ पान कर उस दिन पति समागम करे तो उसे अवश्य ही पुत्र की

उपलब्धि होती है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिये। परन्तु सोते समय घृतपान कर लेना चाहिये।

६. ऋतुस्नान के बाद जो स्त्री बकरी के दूध के साथ कृष्णापराजिता (काली अपराजिता) की जड़ को पीसकर पान करती है, वह निश्चय ही पुत्रवती बनती है।

७. पिप्पली (छोटी पीपर), नागकेसर, अदरक, सोंठ और काली मिर्च को गाय के घृत में पीसकर पीने से जन्मवन्ध्या स्त्री अवश्य ही सन्तति प्राप्त करती है। यह अति-उत्तम योग मुनियों द्वारा बतलाया गया है।

काकवन्ध्या चिकित्सा

एक बार गर्भधारण के पश्चात् जो नारी पुनः गर्भधारण नहीं कर पाती उसे काकवन्ध्या की संज्ञा दी जाती है। यहाँ ऐसी ही स्त्रियों के हितार्थ उनकी चिकित्सा का कथन किया गया है।

विष्णुक्रान्ता की जड़ ऋतुकाल में भैंस के दूध के साथ पीसकर सेवन करना चाहिये और ऊपर से भैंस का माखन भी ग्रहण करना आवश्यक है। उपर्युक्त कथित नियमों का पालन करते हुए जो नारी एक सप्ताह तक औषधि सेवन करती है, वह दोबारा गर्भधारण करने में समर्थ हो जाती है।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र आने पर असगंध की जड़ लाकर उसे भैंस के दूध में पीस डाले। तदनन्तर एक सप्ताह तक लगभग २५ ग्राम की मात्रा में नियमित सेवन करने से काकवन्ध्या नारी को भी पुनः गर्भधारण होता है। इस बात में किसी प्रकार संशय नहीं करना चाहिये।

जिस नारी को संतान होकर भी बारी-बारी उसकी संतति नष्ट हो जाती हो, उसे ही मृतवत्सा के नाम से जाना जाता है। अब इस स्थान में उसी की चिकित्सा का वर्णन किया जा रहा है।

अनार वृक्ष के मूल को दूध में पकाकर छान लें और उसमें ऊपर से घी मिलाकर ऋतुकाल में पान करे। ऐसा करने से वह नारी निश्चय ही मृतवत्सा के दोषों से मुक्त हो जाती है। अर्थात् वह दीर्घजीवी संतान की माता बनती है।

सरलतापूर्वक प्रसवोत्पादन

१. सफेद गदहपूरना (श्वेत पुनर्नवा) की जड़ का चूर्ण योनि में स्थापित करने से प्रसव में कोई कठिनाई नहीं होती।

२. उत्तर दिशा में फैली हुई घुंघुची (श्वेत गुंजा) की जड़ को उत्तर की ओर मुँह करके उसे उखाड़ लें और उसे प्रसवकाल में गर्भिणी की कमर में बाँध देने से तुरन्त ही प्रसव हो जाता है।

३. वासक पौधे (अडूसा का पौधा) की उत्तरगामी जड़ को उखाड़कर सात

धागों से लपेट ले और उसको गर्भवती नारी की कमर में बाँध दें, तो सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

४. उत्तर दिशा में विस्तृत हुई सफेद घुंघची के फल को गर्भिणी के केशों में बाँधने से तत्काल ही प्रसवोत्पत्ति होती है अथवा उसी फल को पीसकर प्रसवद्वार में लेपन करने से भी प्रसव होने में देर नहीं लगती। सहदेई (भूमि पर फैलने वाली एक लता) की जड़ को भी यदि प्रसवासन्न नारी की कमर में बाँध दिया जाय, तो उसे प्रसव में कोई अवरोध नहीं होता है।

५. अपामार्ग (चिचिड़ा) की चार अंगुल लम्बी जड़ को प्रसवद्वार में प्रवेश करा देने से वच्चा तत्काल ही बाहर आ जाता है।

६. लाँगली (कलिहारी) की जड़ को पानी में पीसकर प्रसवासन्न नारी की योनि तथा उसके नाभिस्थल पर लेप कर देने से प्रसव में कोई रुकावट नहीं होती है।

७. रवि-पुष्य के योग में अर्थात् जिस दिन पुष्य नक्षत्र रविवार को पड़े, उस दिन घुंघची के पौधे की दो जड़ को लाकर नीले धागे में लपेट दें और उसी जड़ को एक गर्भिणी की कमर तथा दूसरी उसके शिर में बाँध दिया जाय, तो प्रसवकाल में उसे कोई असुविधा नहीं होती है।

८. मातुलुंग की जड़ तथा मुलेठी को एक साथ चूर्ण बनाकर यदि उसे घी और शहद के साथ गर्भवती सेवन करे तो उसे प्रसव में अत्यन्त सुविधा मिलती है। अथवा मातुलुंग की जड़ का काढ़ा वनाकर उसमें शहद तथा घी मिलाकर पीने से भी प्रसव में सहायता मिलती है। क्वाथ निर्माण के लिये मातुलुंग की केवल जड़ ही ग्रहण करे।

९. दशमूल को पकाकर उसमें यदि घी और सेंधानमक मिलाकर पान करे तो भी प्रसव में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती और सुगमतापूर्वक प्रसव-क्रिया सम्पन्न हो जाती है।

१०. **'ॐ मन्मथवाहिनी लम्बोदरं मुञ्च मुञ्च स्वाहा'**—मन्त्र बोलकर यदि गर्भवती गरम जल का पान करे तो भी उसे प्रसव में कठिनाई नहीं होती है।

११. **'अं ॐ हां नममिस्त्रमूर्तये'**—मन्त्र का जप यदि सूतिकागृह में बैठकर किया जाय, तो निश्चय ही गर्भिणी तत्काल प्रसव में सक्षम हो जाती है।

बलवर्धक योग

त्रैलोक्यविजयापत्र (भाँग की पत्ती) तथा सिद्ध बीज—इन दोनों को घी में पहले भून लें। तत्पश्चात् उसमें त्रिकुट (सोंठ, काली मिर्च एवं छोटी पीपर), त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), कुष्ठ (कूठ), भृंगराज (भँगरैया), सेंधा नमक, धनिया, शठी,

तालाशपत्र, कट्‌फल, नागकेसर, जीरा, अजमोदा, मेथी, यमानी, तेजपात तथ यष्टिमधु (मुलेठी) इन सभी चीजों को समान मात्रा में लेकर उसे पीस डालें तथा उसमें मिला दें। अब इस चूर्ण के समान भाग में बराबर शक्कर मिला दें।

अब इस एकत्रित चूर्ण में घी और शहद मिला दें। तदनन्तर इसमें से ९-८ माशे का लड्डू बना लें। तत्पश्चात् घी में भुना हुआ तिल (काली तिल) का चूर्ण उस मोदक में मिश्रित कर दें। इसके बाद उसमें दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात का चूर्ण कपूर के साथ समस्त लड्डुओं में मिलाकर उन्हें सुगन्धित कर लें। इन मोदकों को अब किसी घृतपात्र (जिस पात्र की पेंदी में घी लगा हो) में रख छोड़ें। इन्हीं लड्डुओं को मदनमोदक कहते हैं। इन मोदकों में से प्रतिदिन प्रातःकाल एक-एक लड्डू सेवन करना चाहिये। इस मोदक की गुणवत्ता अवर्णनीय है। इनके सेवन से वायु तथा कफ के रोगों का शमन होता है। इससे अग्निमांद्य (भूख की कमी) का निवारण होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है। क्षीणकाय मनुष्यों के शरीरांग हृष्ट-पुष्ट हो उठते हैं, रूखे चमड़ों पर चिकनाहट झलकने लगती है। इससे खाँसी, शूल, आमवात् तथा संग्रहणी रोग का नाश होता है। इस मोदक के नियमित सेवन करते रहने से वृद्ध व्यक्ति भी तरुणावस्था को प्राप्त कर लेता है। भगवान् वासुदेव और सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जैसे प्रमुख देवों ने भी इसका प्रयोग कर इसके गुणों के प्रचार हेतु इसे देवर्षि नारद को मानव कल्याण के निमित्त बतलाया था। इसे सुनकर नारद ने इसका विश्वव्यापी प्रचार किया।

नींद लाना

१. सुपारी के कुछ अंश को खाकर शेष बचे भाग को रास्ते में कहीं पर एक गड्ढा खोदकर उसमें डालकर ऊपर से जल का छिड़काव कर दें। उस जलसिंचित भू-भाग से किसी के गमर करने पर उस व्यक्ति को नींद आने लगती है।

२. नीलकमल, कालीमिर्च तथा नागकेसर की जड़ को एक साथ पीसकर नेत्ररों में अंजन लगाने से वह मनुष्य निद्रा के वशीभूत हो जाता है। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं करना चाहिये।

३. काकजंघा अथवा काकमाची (मकोय का पौधा) की जड़ को मस्तक पर धारण करने से उस व्यक्ति को शीघ्र ही नींद आने लगती है।

सौभाग्यशाली विधान

१. चन्द्रग्रहण के समय लाल मदार वृक्ष की जड़ को उखाड़कर पीस डालें और मधु के साथ मिश्रित कर उसकी वटी बना लें। उस वटी को पानी के साथ घिसकर मस्तक पर तिलक लाने से महिलाओं का सौभाग्य बढ़ता है।

२. गोरोचन तथा कुंकुम को एक में मिलाकर भोजपत्र पर जिस किसी के

मनुष्य का नाम लिखकर यदि उसे शहद में दबा दिया जाय, तो तुरन्त ही उस नामित व्यक्ति का सौभाग्यवर्धन होता है।

३. गोरोचन, कुंकुम तथा अलक्तक (आलता जो स्त्रियों के पैर रंगने के काम आता है, महावर) को एक साथ मिलाकर भोजपत्र पर जिस किसी नारी का नाम लिखकर उसे मधु में डुबो दिया जाय, तो वह नारी महान सौभाग्यवती बन जाती है।

४. कुंकुम और महावर मिलाकर जिस नारी का नाम लिखकर उसे मधु में रख छोड़ा जाय, तो वह नारी सात दिनों के अन्दर ही अपने सौभाग्य को प्राप्त कर लेता है।

शरीरांजन विधि

विलास-परायणजनों के लिए चाहे वह नर हो अथवा नारी, अपने शरीर में अंगराज लेपन करना परमावश्यक हो जाता है। चहाँ विलास-परांण लोगों के लिये कुछ गंधविधान के प्रयोग बतलाये जा रहे हैं—

१. कदम्ब मूल का पत्ता, लोध्र तथा अर्जुन वृक्ष का पुष्प। इन तीनों को एक साथ पीसकर उसका लेप शरीर पर करने से शारीरिक दुर्गन्धता दूर हो जाती है।

२. अनार के पेड़ की छाल, लोध्र, कमल-पुष्प तथा नीम की पत्ती को मधु के साथ मिलाकर शरीर पर उबटन की तरह लेप करने से शारीरंग की दुर्गन्ध का निवारण होता है।

३. चन्दन, तेजपत्र, बला (इसके दो भेद हैं—बला तथा अतिबला), खस की जड़, अगरु, वैर के बीज एवं नागकेसर को एक साथ पीसकर शरीर पर उबटन की भाँति मलने से अंग की दुर्गन्ध का नाश निश्चित रूप से हो जाता है।

४. सप्तवर्णी की छाल, लोध्र, नीम की पत्ती तथा हरड़ (हरीतकी) को एक में मिलाकर पीस डालें। इस पीसे हुए लेप का शरीर पर मर्दन करने से देह से निकलने वाली दुर्गन्ध तुरन्त ही दूर हो जाती है।

मुख का सुवासितीकरण

१. पिप्पली का चूर्ण, मधु और घृत—इन तीनों को एक में सम्मिलित कर प्रतिदिन प्रातःकाल भक्षण करने से मुख सुवासित हो जाता है।

२. मुरामांसी (जटामांसी), वच, कुष्ठ (कूठ) तथा नागकेसर का चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को नित्यप्रति प्रातः एवं सायं मुख में रखकर जो नारियाँ चूसती हैं, उनका मुख कर्पूर के समान सुगंधित हो जाता है।

३. आम की गुठली तथा कलम की जड़ को एक साथ पीसकर उसमें मधु मिला दें और उसकी गोली बना लें। इस गोली को मुख में रखकर चूसने से मुख सुगन्धित हो उठता है।

मुखव्रणनाशक विधि

तिल और सफेद सरसों का एक साथ दूध में पीकर मुख पर मर्दन करने से मुख पर निकलने वाले मुँहासे आदि सभी प्रकार के व्रण शीघ्र ही नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

केश को काला बनाने वाले योग

श्वेत बालों को काला बनाने के लिए उन्हें रंगने की क्रिया को केशकृष्णीकरण कहते हैं, क्योंकि श्वेत केशों वाला व्यक्ति समस्त भूषणों से भूषित होने पर भी सौन्दर्य को प्राप्त नहीं होता है।

१. त्रिफला (हरेड़, बहेड़ा तथा आँवला), लोहे का बुरादा (चूरा), गन्ने का रस तथा भंगरैया नामक पौधे का रस। इन चारों पदार्थों को बराबर की मात्रा में ग्रहण करें। तदनन्तर इस सब वस्तुओं को परिमाणा से आधी काली मिट्टी ले लेवें। अब इन सब चीजों को किसी पात्र में भरकर एक महीने तक रख छोड़ें। फिर उसे पात्र से निकाल कर केशों पर लेप लगायें। इस लेप को चार महीने तक लगाते रहने के अनन्तर केश काले हो जाते हैं तथा उनकी श्वेता रुक जाती है।

२. लोहे की मैल, अड़हुल का फूल एवं आँवला को समान भाग में लेकर तेल की सहायता से पीस लें। इस लेप को तीन दिनों तक लगातार बालों में लगाने से वे तीन मास में निश्चित रूप से कृष्णवर्ण के हो जाते हैं।

जूँ नाशक प्रयोग

विडंग (भाभीरंग, वायविडंग), गंधक तथा गोमूत्र को एक साथ मिलाकर सरसों के तेल में पकाये। इस तैल का लेप यदि केशों में किया जाय, तो बालों के जूँ, लिक्षा (लीख, केशों में रहने वाले अत्यन्त सूक्ष्म जीव) आदि का विनाश हो जाता है।

इन्द्रलुप्तनाशक योग

सिर के बालों का झड़ना या उन पर बालों का न उगना ही इन्द्रलुप्त कहा जाता है। आयुर्वेद में इसे एक प्रकार का रोग माना गया है। इसके लिए लिखित उपायों को काम में लाना चाहिये—

१. अड़हुल के फूल को काली गाय के मूत्र में पीसकर बालों पर लेप लगाने से केश की जड़ें मजबूत होती हैं तथा बालों को गिरने से बचाती हैं।

२. कुंकुम और काली मिर्च को समान मात्रा में लेकर सरसों के तेल में डालकर पका लें। तदनन्तर उसमें बिम्बपुष्प (कुंदरू का फूल) रस मिलाकर सिर में मालिश करे तो कुछ ही दिनों में सिर पर बाल उग आते हैं और सिर का गंजापन दूर हो जाता है।

३. जातीपुष्प (जायफल का फूल) तथा उसकी जड़ को लेकर उसके दुगुने परिमाण में पिप्पली (चोटी पीपर) मिला लें। फिर इन सब चीजों को काली गाय के मूत्र में पीसकर एक सप्ताह अथवा दो सप्ताह तक सिर पर लेप लगाये तो इन्द्रलुप्त रोग का अवश्य ही नाश हो जायेगा।

देहरंजन

१. हरड़, लौध, नीम की पत्ती, सप्तवर्णी (सनौता) और अनार का छिलका। इन सब वस्तुओं को पीसकर शरीर पर लेपन करने से शारीरिक दुर्गन्धता का दुर्गन्धता का निवारण होता है। इस प्रयोग को विद्वानों ने दुर्गन्धि दूर करने के लिए कहा हैं।

२. हरड़, नारियल की जड़, नागरमोथ, चिंचाफल, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), तथ पूतिकरंज के बीज। इनको जल में पीसकर लेप लगाने से ग्रीष्म ऋतु में होने वाली काँख की भीषण दुर्गन्ध का निवारण होता है।

३. हरीतकी (हरड़), रक्त चन्दन, नागरमोथा, नागकेशर, उशीर (खस), लोध, कूठ तथा हल्दी। इनको समान भाग में लेकर जल में पीस डालें। पुनः उसे शरीर पर उबटन की भाँति लगाने से पसीने की दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है।

४. कदम्ब के पत्ते, लोध तथा अर्जुन वृक्ष की पुष्प को पीसकर लेपन करने से शारीरिक दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

५. श्वेत चन्दन, खस, करंज वृक्ष के पत्ते, कोल, बहेड़े की भींगी, अगरु तथा नागकेशर। इन सब पदार्थों को पीसकर शरीर पर उबटन लगाने से दीर्घकाल की दुर्गन्धता भी नष्ट हो जाती है।

६. अनार की छाल, लोध, कमल और मधु। इन्हें समान परिमाण में ग्रहण कर लें। तदनन्तर इसमें नीम की पत्तियों को मिलाकर शरीर पर लगायें तो गरमी के दिनों में युवती, नारी को होने वाले पसीने की दुर्गन्ध नहीं रह जाती।

७. केशर, खस लोध, और शिरीष। इनका चूर्ण बनाकर शरीर पर मलने से गरमी के दिनों में होने वाले पसीने की मात्रा में कमी आती है। ऐसा कथन भोजराज ने किया है।

८. काला तिल, सरसों, दोनों हल्दी, (हल्दी एवं दारुहल्दी), दूब, गोरोचन, कुष्ठ (कूठ) इन सब वस्तुओं को बकरे के मूत्र में पीसकर शरीर पर लेपन करने के परिणाम स्वरूप शारीरिक सौन्दर्य का अभिवर्धन होता है।

९. हरड़ और नागरमोथा को समान परिमाण में लेकर उसमें चतुर्थांश भाग में वनरुह मिलायें। तदनन्तर इन सबके अर्धभाग में तालमखाना मिलाकर लेपन करें तो जननेन्द्रियों की दुर्गन्ध भी नष्ट हो जाती है।

१०. इलायची, कपूर, पत्रक, चन्दन, नागरमोथा, हरें, सैंजना, कपूर और कूठ। इन्हें शरीर पर लगाने से समस्त प्रकार की दुर्गन्ध चली जाती है।

११. धतूरा, केशर, नागरमोथा, नेत्रवाला (बालछड़), लोह, कपूर तथा खस। इन सब पदार्थों को समान भाग में पीसकर शरीर पर लेपित करने से प्रियकारिता उत्पन्न होती है। पूर्व विद्वानों का कथन है कि यह योग मनुष्यों के सहित देवताओं को भी प्रियकारक है।

१२. उशीर (खस), काला अगरु, चन्दन, तेजपात और नेत्रवाला। इन सब वस्तुओं को समान भाग में पीसकर लेपन करने पर विलासिनी रमणियों के शरीरांग से चन्दन जैसी सुगन्ध निकलने लगती है।

मुखरञ्जन

१. आम और जामुन की गुठली तथा काकड़सिंघी को मधु में मिलाकर रात्रि के समय मुख में धारण करने से दुर्गन्धि का नाश होकर मुख सुवासित हो उठता है।

२. गुड़, दालचीनी, इलायची, नख (गंधद्रव्य विशेष), जायफल तथा नागकेशर के साथ सोने का वर्क मिलाकर छोटी गोली बनाकर ताम्बूल के साथ रात्रि में खाने से मनुष्यों का मुख सुगन्धित हो जाता है।

३. जटामांसी, केशर और कूट। इन तीनों का चूर्ण बनाकर जो नारी प्रातः-सायं पन्द्रह दिनों तक चाट लेती है, उसका मुख कपूर— जैसा महकीला हो उठता है।

४. तालमखाने और कूठ के चूर्ण को घी तथा शहद में मिलाकर जो व्यक्ति क माह तक निरन्तर भक्षण कर लेता है तो उसका मुख केतकी पुष्प के समान सुगन्धित हो जाता है।

५. गाय के मूत्र में हरड़ को पकाकर उसमें सौंफ, कूठ और पीपल को मिला दें। तत्पश्चात् उसका सेवन करें तो मुखदुर्गन्ध का विनाश होता है।

६. तिल, जायफल और सुपारी को एक साथ मिलाकर भक्षण करने के पश्चात् आधा पल (एक प्राचीन माप) शीतल जलपान कर लेने से मुख की दुर्गन्ध का निवारण होता है।

७. घी के साथ कांजी मिलाकर कुल्ला करें। कुल्ला करने के प्रारम्भ और मध्य में कपूर का भक्षण करें तो मुख की दुर्गन्धता विनष्ट हो जाती है।

८. गोमूत्र में कूठ, सुगन्धवाला तथा हरड़ मिलाकर काढ़ा बना लें। पुनः सभी वस्तुओं को पीसकर वटी बनाकर मुख में धारण करने से मुख की दुर्गन्धि समाप्त हो जाती है।

९. कडुए, तिक्त या कसैले वस्तुओं के क्वाथ से कुल्ला करने, प्रतिदिन

दातौन करने अथवा कुष्ठ (कूठ) का चूर्ण बनाकर शहद के साथ चाटने से मुख की दुर्गन्धि का नाश होता है। इसमें आश्चर्य की कोई गुंजाइश नहीं है।

१०. स्त्री-पुरुषों की यौवनावस्था में उत्पन्न मुख की दुर्गन्ध के निमित्त सेंधा नमक, सरसों, सारिवन (शालपर्णी) और दालचीनी का चूर्ण लेपित करने से दुर्गन्धि का नाश होता है।

११. कपूर और सरिवन को मसूर के साथ पीसकर जो स्त्रियाँ बार-बार अपने मुख पर पन्द्रह दिनों तक लेप लगाती हैं, उनके कील, मुँहासे (तरुणावस्था में मुख पर निकलने वाली फुंसियाँ) आदि नष्ट हो जाते हैं।

१२. शाल्मलि (सेमल) वृक्ष के काँटों को दूध में पीसकर आठ दिनों तक मुख पर मलने से स्त्री-पुरुष के छाई, मुंहासे आदि रोग तीन दिनों में ही नष्ट हो जाते हैं।

१३. धनिया, वच (कुलंजन), सारिवन—इन्हें बराबर की मात्रा में पीसकर मुख पर लगाने से निःसंदेह ही मुख के कील, मुँहासे आदि दूर हो जाते हैं।

१४. सरसों और तिल को जवाखार के साथ पीसकर लेप लगाने से मुख पर निकले हुए फुँसी-फोड़े और मुँहासे आदि दूर भाग जाते हैं। ऐसा कथन रन्तिदेव ने किया है।

१५. दोनों प्रकार की हल्दी (हल्दी एवं दारुहल्दी) गेरू, सोनापाठा, केला, नेत्रवाला, एवं इन्द्रजौ। इन्हें मुख पर तीन बार लगाने से फुंसियाँ नष्ट होती हैं तथा मुखमण्डल चन्द्रवत् स्वच्छ हो जाता है।

१६. कालीमिर्च और गोरोचन को पीसकर मुख पर लेप लगाने से युवावस्था में मुँहासे विशेषया युवतियों के निर्मूल हो जाते हैं।

१७. अर्जुन वृक्ष की छाल तथा मंजीठ का महीन चूर्ण बनाकर शहद के साथ तीन दिनों तक मुख पर लेप लगाने से व्यंग्य रोग (एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें त्वचा के ऊपर नीले दाग पड़ जाते हैं) दूर होकर मुख की कान्ति चन्द्रमा के समान हो जाती है।

१८. बिजौर का मूल, घृत, मैनसिल तथा गाय के गोबर का रस। इन्हें एक साथ मिलाकर मुख पर लगाने से पिडिका तिल आदि नष्ट होंगे तथा मुख पर चमक आती है।

१९. लाल चन्दन, मंजीठ, कूठ, लोध्र, प्रियंगु, वटवृक्ष के अंकुर तथा मसूर। इनको पीसकर मुख पर लगाने से मुख की नीलिका, मसूरिकादि में लाभ होता है इससे मुख का क्रान्तिवर्धन भी होता है।

२०. मंजीठ, मुलेठी लाल (लाह), बिजौर की जड़। इन्हें एक वर्ष परिमाण

में लेकर एक कुडव (एक प्राचीन तैल) तैल में पाचित कर लें। पुनः उन सबसे दुगुना बकरी का दूध मिलाकर मंद आँच पर पका लें।

२१. उक्त लेप को मुख पर लगाने से मुख की नीलिका, पिडिकायें, मुँहासे, कील, चेहरे का रूखापन आदि समस्त प्रकार के विकार दूर हो जाया करते हैं। इसका प्रयोग निरन्तर सात दिनों तक करते रहने से मुखमण्डल स्वर्ण के समान चमकीला हो उठता है। इस प्रयोग के निमित्त शहद की मात्रा दो कर्ष की होनी चाहिये।

२२. मैनसिल, लोध, दोनों हल्दी (हरिद्रा एवं दारुहरिद्रा) तथा सरसों—इन सब चीजों को बराबर परिमाण में लेकर पीस डालें और मुख पर उबटन की भाँति लगायें तो मुख का साँवलापन दूर होता है।

२३. लाल चन्दन, तथा दोनों प्रकार की हल्दी को भैंस के दूध में पीसकर मुख पर मलने से मुख की छाई, श्यामलतादि का निवारण होता है।

२४. दोनों प्रकार की हल्दी, मंजीठ, गोघृत, पीली सरसों और गेरू। इनको पीसकर बकरी के दूध में पका डालें। इसे मुख पर लगाने से सूर्य के समान चमक आती है। वच, लोध, खस, घी, राल, दूध और बरगद के पीले पत्ते, इन्हें हल्दी के साथ पीसकर मुख पर लेपन करने से मुख कमलवत् दिखलाई पड़ने लगता है।

२५. मसूर के दानों को शहद के साथ पीसकर सात रात्रि तक प्रयोग करने पर मुख कमल के समान सुन्दर हो जाता है।

केशरंजन

१. श्वेत केश वाले व्यक्तियों को माला, गंध, धूप, वस्त्र तथा भूषणादि पदार्थ सुन्दर नहीं दिखते। अतः केशों की सुरक्षा के प्रयोग अवश्य ही अपनायें, जिससे वे अंजन और भौंरे के समान काले दिखलाई पड़े।

२. आम की गुठली से निकला हुआ तैल, कांतपाषाण का चूर्ण, काकादनी (कौआंडोंड़ी) का फल तथा लौहचूर्ण। इन सब वस्तुओं का चूर्ण बना लें।

तत्पश्चात् उक्त चूर्ण को धान्य की ढेरी या अंकोल के तैल में एक महीने तक रख छोड़ें। तदुपरान्त उस तैल को तीन दिनों तक बालों में लगाने से श्वेत केश काले हो जाते हैं। इन प्रयोग के द्वारा छह मास तक केश भौंरे के सदृश काले ही बने रहते हैं।

३. त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), लोहचूर्ण (लोहे का बुरादा) नील के पत्ते भंगरैया की जड़ उपर्युक्त वस्तुओं का चूर्ण एक दिन तक बकरी के मूत्र में भिंगोकर बालों में लगाने पर केश भ्रमर के समान काले बन जाते हैं।

४. घुँघुची के बीजों का चूर्ण, कूठ, एला एवं देवदारु। इन्हें समान भाग में लेकर चूर्णित कर लें तथा एक दिन तक भाँगरे के रस में भिंगो दें। अब इस चूर्ण को

चौगुना तैल डालकर उसे धीमी आग पर पका लें। पक जाने पर छानकर बालों में लगायें तो केश भ्रमरवत् काले बन जाते हैं। हाथीदाँत जलाकर उसके बराबर रस लेकर बकरी के दूध में पीसकर बालों में लगाने से बाल काले होते हैं।

५. त्रिफला, लोहे का बुरादा, गन्ने का रस और भंगरैया का रस। इन सबके परिमाण में आधी काली मिट्टी डालकर उसे किसी पात्र में महीने भर तक स्थापित कर दें। तदनन्तर उसे निकालकर बालों पर लेप लगाने से बाल चार महीने तक लगातार काले ही बने रहते हैं।

६. लोहकिट्ट (लोहे की मैल), जपापुष्प (गुड़हल का फूल) तथा आँवला। इनको समान मात्रा में ग्रहण कर पीस डालें। इस लेप को तीन दिनों तक लगा लेने पर एक महीने तक केश काले ही बने रह जाते हैं।

७. भाँगरे का रस एक सेर तथा इसके बराबर ही काला तिल ले लेवें। अब इसमें तैलयुक्त नीलों का रस डालकर एक प्रहर (३ घण्टा) तक लिप्त करें। इसे तीन दिनों तक लगाने से बाल काले हो जाते हैं।

८. सज्जीखार, जवाखार, सरसों, कांजी तथा नागकेशर। इन सबको पीसकर बालों में लेप करने से बाल कृष्णवर्णीय हो जाते हैं।

९. काकमाची (मकोय) के बीजं, इसी के बराबर काला तिल—इनको मशीन में डालकर तैल निकालें और बालों में लगायें तो वे काले बन जाते हैं।

१०. गाय का घी, भाँगरे का रस और मयूरशिखा। इन्हें मन्द आँच पर परिपक्व करके बालों में लगाने से बाल काले हो जाते हैं। बालों को काला बनाने की यह उत्तम विधि है।

११. काकमाची (मकोय नामक पौधा) के बीजों के बराबर काला तिल ले लें। अब उसमें एक सेर शहद एवं जपापुष्प (गुड़हल) का रस मिलाकर सात दिनों तक केशों में लगायें तो बाल काले बनते हैं।

१२. त्रिफला और लोहे का चूरा समान भाग में लेकर जल में पीस डालें। अब इन दोनों के बराबर भाँगरे का रस और तैल मिलाकर मन्द आग पर पाचित कर लें। जब रस जलकर केवल तैलमात्र शेष रह जाय, तो उसे किसी चिकने पात्र में भरकर भूमि के अन्दर एक माह तक स्थापित कर दें।

एक मास व्यतीत होने के पश्चात् उसे निकालकर केले के पत्ते पर चुपड़कर केशों में सात दिनों तक मालिश करें। इसके साथ ही वायु रहित स्थान में दुग्धाहार लें और त्रिफले के जल से केशों को धो डालें। इस प्रयोग से सात दिन करने से सदैव ही काले केश उत्पन्न होते रहते हैं और उसी अवस्था में निरन्तर बने रहते हैं।

१३. वायविडंग (भाभीरंग) को छह महीने तक कीचड़ के अन्दर रख छोड़ें। तत्पश्चात् उसे निकालकर कर एक कर्ष चूर्ण तैयार कर लें। इसे सफेद बालों में लगाने से वे भ्रमर के सदृश काले बनकर आजन्म उसी अवस्था में विद्यमान रहते हैं। यह कपालरंजन योग के नाम से जाना जाता है।

१४. नील की जड़, सेंधा नमक, पिप्पली (छोटी पीपर) तथा घृत। इनको एकत्रित पीसकर शिर पर लेप लगाने से श्वेत केश क्रमशः कृष्णवर्ण में परिणत हो जाते हैं।

१५. पुष्पसहित आम के फूल, पिण्डार, धाय के घृत तथा नील। इन सब वस्तुओं को एक सेर तिलतैल में पाचित कर लें।

इसे पकाते समय राजहंस पक्षी के बाल डालकर उसका पक्वता का परीक्षण कर लेवें। यदि बाल डालने पर वे काले रंग के हो जायँ तो उन्हें परिपक्व समझकर उपयोग करें। इसे भूतल पर नीलतेल के नाम से जाना जाता है। इसे केशों में तीन दिन लगाने पर बाल भौंरे के समान काले बन जाते हैं। यह प्रयोग भलीभाँति परीक्षित तथा अद्भुत है।

१६. शतावरी, काला तिल, गोरोचन और काकमुखा। इनको पीसकर सफेद बालों पर लेपित करने से वे काले रंग के हो जाते हैं।

१७. नवमल्लिका नामक पुष्प का रस तिल तैल में मिलाकर बालों में लगाने से केशों की असामायिक श्वेतता दूर हो जाती है। इसके अतिरिक्त केशों के अन्य रोगों में भी यह लाभप्रद है।

१८. मोथा, सरसों, खस, हरड़ और आँवला। इनका काढ़ा बनाकर केशों के मूल में लगाने से मेघ के सदृश बाल काले हो जाते हैं।

स्नान द्रव्य

१. छोटी इलायची, मोथा, उशीर (खस), नखी (सुगन्ध पदार्थ), आम, नागकेशर, शेफलिका (पुष्प विशेष), तेजपात और ढाक (पलाश) इनका चूर्ण केशों में लगाकर नहाने से सुगन्धि आती और कान्ति बढ़ती है।

२. हरड़ का छिलका, आँवला, मेढ़ासींघी, मोथे का रस, कूठ तथा जटामांसी को पीसकर लेप करने के पश्चात् स्नान करने से सुगन्धि मिलती है।

जूँ आदि नाशक योग

१. वायविडंग (भाभीरंग) गंधक तथा कमल को गोमूत्र के साथ मिलाकर सरसों के तैल में पका लें। यदि इस तैल का लेप केशों में किया जाय, तो बालों के जूँ, लिक्षा (केशों में रहने वाले एक प्रकार के अत्यन्त सूक्ष्म कीट जिसे लीख कहा जाता है) आदि का विनाश हो जाता है।

२. सरिवन (शालपर्णी) की जड़ को गोमूत्र में पीसकर बालों में लेप लगाने से लीखों का निवारण होता है। काले धतूरे के रस में एक निष्क (एक प्राचीन तौल जो १०८ रत्ती की मानी जाती थी) पारद को घोंट लें। तत्पश्चात् उसे पान के रस में मिश्रित कर किसी वस्त्र पर लगा दें। अब उस वस्त्र को तीन प्रहर (९ घण्टा) तक शिर पर लपेट रखें तो केशों में रहने वाली समस्त लीखें नष्ट हो जाती हैं। इसमें किसी प्रकार के सन्देह की आवश्यकता नहीं रह जाती।

३. दोनों प्रकार की हल्दी का चूर्ण मक्खन के साथ मिलाकर शिर पर लगाने से शिर की खुजली आदि का विनाश होता है।

४. नीलकमल, काला तिल, मुलेठी, सरसों और नागकेशर को आँवले के साथ पीसकर केशों में लेपन करने से लिक्षा का नाश होता है।

५. हल्दी, गंधक, वायविडंग, गोमूत्र, सरसों का तेल—इन्हें पारे के साथ लेप करने से बालों में से लीखों का अन्त हो जाता है।

६. लाख (लाक्षा द्रव्य), भिलावाँ, नागरमोथा, कूठ, गुग्गुलु, सरसों और वायविडंग। इनका एक साथ लेप लगाने से लीखों का निवारण होता है। गोमूत्र में बेल की जड़ को पीसकर लेपन करने से लीखों का विनाश हो जाता है।

इन्द्रलुप्त नाश

शिर के बालों का टूट-टूटकर गिरना या उन पर बालों का पुन: न उगना ही इन्द्रलुप्त कहा जाता है। आयुर्वेद में इसे एक प्रकार का रोग माना गया है, जिसके फलस्वरूप मानव गंजा शिर वाला हो जाता है। इसके लिए अग्रलिखित प्रयोगों को अपनाना चाहिये। इन प्रयोगों के द्वारा इन्द्रलुप्त का निवारण होकर नये बालों की उत्पत्ति होती है।

१. हाथी दाँत की राख के बराबर रसौंत लेकर बकरी के दूध में पीसकर लेपित करें तो इन्द्रलुप्त का नाश हो जाता है। इसके प्रयोग के परिणाम स्वरूप हाथों की हथेली में भी बाल उग सकते हैं तो अन्य स्थानों की बात ही क्या है?

२. कुंकुम और कालीमिर्च अथवा जम्बीरी के बीजों का रस। इन्हें तैल में मिलाकर लेपन करने से शीघ्र ही इन्द्रलुप्त नष्ट हो जाता है।

३. हाथी का जला हुआ दाँत, बकरी का दूध तथा रसौंत को पीसकर लगाना भी इन्द्रलुप्त का विनाशक होता है।

४. चमेली का फूल, दल तथा उसका मूल। इन्हें कृष्णवर्णा गाय के मूत्र में पीसकर लेप लगाने पर सात दिनों में केशों का दृढ़ीकरण हो जाता है।

५. सिंघाड़ा, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), भाँगरा, नीलकमल तथा लोहे

का चूरा। इन सबके परिमाण से चौगुना तिल तैल डालकर आग पर पका लें। इनके लेप से केशों में कुटिलता एवं सरलता आती है।

६. यदि बालों को कीट द्वारा खा लिया गया हो तो उस कीटभक्षित स्थान में स्वर्ण से घर्षण करें। जब तक वह पूर्ण रूप से तप्त न हो जाय, तब तक बरांवर उस पर लेप लगाते रहना चाहिये।

७. भिलावाँ, कटेरी (कंटकारी), चौंटली की जड़ और उसका फल। इन्हें मधु के साथ पीसकर लेपन करने से इन्द्रलुप्त का विनाश होता है।

८. भल्लातक (भिलावाँ), काला तिल तथा कटेरी का फल। इन्हें समान परिमाण में लेकर चावल के धोवन के साथ पीसकर लेप लगाने पर इन्द्रलुप्त रोग दूर होता है।

९. जपापुष्प (गुड़हल) को काली गाय के मूत्र में पोषण कर उसका लेप लगाने पर इन्द्रलुप्त नहीं रह जाता है।

१०. तिल, पुष्प, गोखरू और नमक। इन्हें गोघृत में मिलाकर लेपित करने से बाल लम्वे और सघन होते हैं।

११. शाल्मलि (सेमल वृक्ष), तालमूली तथा कमल की जड़। इन तीनों की जड़ को बकरी के दुग्ध में पीसकर लेपन करने से मुडाये हुए शिर में भी तेजी से बाल आने लग जाते हैं। इसका लेप तीन दिनों तक बराबर लगाना अनिवार्य होता है।

वाजीकरण

सशक्त पुराष के द्वारा ही नारी की संतुष्टि सम्भव होती है, अशक्त या निर्वीर्य व्यक्ति से नारी की तुष्टि कदापि सम्भव नहीं हो सकती। अत: विलासीजनों के निमित्त वाजीकरण के प्रयोग लिखे जा रहे हैं।

१. वटवृक्ष के बाँदा को अश्विनी नक्षत्र में दूध के साथ पान करने से बलोत्पत्ति होती है। सफेद मदार की जड़ को पुष्य नक्षत्र में उत्पाटित कर दूध के साथ सप्ताह भर पी लेने पर वृद्ध मनुष्य भी यौवनावस्था को प्राप्त कर लेता है।

२. बिदारीकन्द के चूर्ण को उसी के स्वरस में भिंगोकर धूप में सुखा लें। सूखने के पश्चात् उसमें घी और मधु मिलाकर रात्रि में सेवन करने वाला निर्भीकतापूर्वक दश स्त्रियों को तृप्ति प्रदान कर सकता है। (किसी भी औषधि के साथ घी और शहद की मात्रा बराबर नहीं होनी चाहिये। बराबर की मात्रा में ये दोनों विषतुल्य हो जाते हैं।)

३. आँवले के स्वरस में ही आँवले को भिंगो दें। पुन: उसमें घी, मिश्री तथा शहद मिलाकर रात्रि में सेवन करें तो बूढ़ा व्यक्ति भी युवा के सदृश हो जाता है।

४. एक कर्ष परिमाण में मुलेठी का चूर्ण लेकर उसमें घी और शहद मिलाकर

चाटें। तदनन्तर दुग्धपान कर लेने पर रति क्षमता में वृद्धि होती है। अर्थात् जब तक पूर्णरूप से इसका पालन न हो जाय तब तक वह निरन्तर रमण करने में समर्थ बना रहता है। क्रौंच के बीज, साँठी के चावल, मुलहठी। इनका चूर्ण बनाकर घृत और मधु के साथ सेवन करें तो इनके पाचन-काल तक संतशक्ति स्थायी रहती है।

५. वृद्ध सेमल की जड़ का रस शक्कर में मिलाकर सप्ताह-पर्यन्त सेवन करने वाला व्यक्ति वीर्य शाली बन जाता है। लघु सेमल की जड़ और तालमूली। इनका चूर्ण घृत के साथ चाटने से व्यक्ति रति-क्रीड़ा में गौरैया पक्षी के समान अर्थात् बारम्बार रति करने में सक्षम हो जाता है।

६. पुनः इसी को घृत में एक मास तक डुबोकर सुखा लें। इसके अनन्तर दूध में डालकर सेवन करे तो वह सैकड़ों रमणियों के साथ संभोग करने समर्थ हो जाता है।

७. जो मनुष्य बत्तख, लवा तथा जंगली कबूतर के पकाये हुए मांस में घी और सेंधा नमक डालकर भक्षण कर लेता है, वह महान शक्तिशाली बन जाता है।

८. बिदारीकन्द के कल्क में घी तथा दूध मिलाकर एक तोला (१२ माशे या ९६ रत्ती की प्राचीन तौल) में पान करने से वृद्ध मनुष्य भी युवाओं के समान जोशीला हो जाता है।

९. बकरे के दोनों अंडकोशों को जल में उबालकर घी में भून लें। अब इसमें सेंधानमक और पीपल का चूर्ण मिलाकर सेवन करने वाला सैंकड़ों स्त्रियों से रमण करने पर भी नहीं थकता।

१०. बकरे के अंडकोश को दूध में उबालकर उसी दूध में कई बार काले तिलों को भिंगोकर छाया में सुखा लें। सुख जाने पर उसका चूर्ण बनाकर सेवन करें तो रतिकाल में कभी शिथिलता नहीं आती और वह सैंकड़ों नारियों के साथ संभोग कर सकता है।

११. गोखरू, तालमखाना, शतावर, क्रौंच के बीज, नागबला तथा खिरैटी। इनको चूर्णित कर रात्रि में सेवन करने वाला व्यक्ति एक सौ स्त्रियों की कामपिपासा को शान्त कर सकता है।

१२. पीपल के फल, जड़, छाल और कलिका। इन्हें परिमाणनुसार दूध में उबाल लें। ठण्डा होने पर इसमें मिश्री और शहद मिलाकर पीने वाला मनुष्य संभोगकाल में कलिंग (गौरैया पक्षी) के समान सन्तुष्टता को प्राप्त होता है।

१३. घृत के साथ शतावरी का स्वरस मिलाकर दूध में परिपक्व कर लें। पुनः उसमें मिश्री, पीपल, शतावरी का कल्क डालकर भक्षण करें तो परिपुष्टता आती है।

नृसिंह चूर्ण

१. शतावर का चूर्ण, गोखरू का चूर्ण, वाराहीकन्द का चूर्ण १ किलो, सतगिलोय (गुरुच का सत्त्व) १ किलो ५२२ ग्राम शोधित भिलावाँ २ किलो, चित्रक वृक्ष छाल ५५८ ग्राम, धोया हुआ तिल १ किलो, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल का चूर्ण ५०० ग्राम, मिश्री साढ़े चार किलो, सभी वस्तुओं के आधे परिमाण में शहद तथा १ किलो ४६८ ग्राम घी में लें। सभी चीजों में महीन चूर्ण बनाकर किसी चिकने पात्र में रख लें। इसे प्रतिदिन २५ ग्राम की मात्रा में सेवन कर भरपूर भोजन करे तो महीने भर के अन्दर ही वृद्धता दूर होकर वीर्य की वृद्धि होती है। इसके सेवन करने से वलीपलित (असमय में ही बालों का सफेद होना तथा चमड़े पर सिकुड़न आना), प्रमेह (धातुविकार), शिर का गंजापन (शिर पर बालों का उगना), पाण्डु रोग (कामला), पीनस (नाकों से रक्तस्राव होना, नकसीर), अठारह प्रकार के कुष्ठ रोग, आठ प्रकार के अर्बुद।

भगन्दर (गुदा का एक दुर्दम्य रोग), मूत्रकृच्छ्र (रुक-रुककर थोड़ा-थोड़ा पेशाव होना), गृध्रसी (सायोटिका), हलीमक, क्षय, महाव्याधि, पाँच प्रकार की खाँसी, अस्सी प्रकार के वातज रोग, चालीस प्रकार के पित्तज रोग, बीस प्रकार के सूक्ष्म रोग, सन्निपात (त्रिदोष) तथा अर्श (बवासीर) रोग इस प्रकार निर्मूल हो जाते हैं, जिस प्रकार इन्द्र के व्रज प्रहार द्वारा वृक्ष नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। इस चूर्ण का सेवन करनेवाला व्यक्ति स्वर्ण के समान क्रान्तिमान, सिंह के समान पराक्रमवान तथा अश्व के समान वेगवान बन जाता है। ऐसा मनुष्य पक्ष के समान मोटा-ताजा बनकर सैंकड़ों स्त्रियों के साथ समागम करने में समर्थ हो जाता है। इस चूर्ण का भक्षण करने वाला दीप्तिमान पुत्र की उत्पत्ति होती है। यह नृसिंहचूर्ण मानव के सम्पूर्ण रोगों में परम लाभदायक है।

कामकलारस

मृतसूताभ्रकं स्वर्णवाजिगगन्धावचारंसैः।
मुशली कदलीकन्दद्रवैश्च मर्दयेद्दिनम्।।
लाक्षालघुपुटैः पच्यान्मर्दयेत्पूर्ववद्द्रवैः।
पुचं देयं पुनर्मर्द्यमेवमष्टपुटैः पचेत्।।

१. शुद्धः पारा, शुद्ध स्वर्ण और असगन्ध (को वच (कुलंजन) के रस में खरल कर इसके साथ मुसली और कदलीकन्द का चूर्ण डालकर एक दिन घोट लें। लाख (लाक्षा) का लघु पुट देकर इसे पुनः घोटें। तदनन्तर लाक्षा जल के आठ पुट देकर इसे आग पर पकावें।

शाल्मलीजातनिर्यामैश्चतुर्मासांस्तु भक्षयेत्।
गोदुग्धं मर्कटीबीजैः पलार्द्ध पाचयेदनु।।

रसः कामकलाख्योऽयं रमते स्त्रीसहस्त्रकैः।
सर्वाङ्गोद्वर्त्तनं कुर्यात्सवरसैः शाल्मलीरसैः।।

२. इसके पश्चात् चार महीने तक सेमल का गोंद भक्षण करें। गौ दुग्ध में आधा पल क्रौंच का बीज डालकर पका लेवें। यह औषधि 'कामकलारस' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सेवन से व्यक्ति हजारों स्त्रियों के साथ ही रति-सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। सेमल के स्वरस (पत्तियों) से निचोड़ा हुआ रस) को सम्पूर्ण शरीर में लगाने से मानव की कामशक्ति में वृद्धि होती है।

अनङ्गसुन्दरी वाटिका

शुद्धसूतसमं गन्ध त्र्यहं कह्लारजैर्द्रवैः।
मर्दितं वालुकाधन्त्रे यामं संपुटगं पचेत्।।
रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यं दिनमेकमिव द्रुतम्।
यथेष्टं भक्षयेच्चान्नं कामयेत्कामिनीशतम्।।

१. शोधित पारद और गंधक को बराबर की मात्रा में लेकर तीन दिनों तक सफेद कमल के साथ खरल में डालकर घोंट लें। पुनः वालुका-यन्त्र में एक प्रहर (तीन घण्टा) सम्फुटित कर अग्नि दें। इसके अनन्तर उसे निकालकर एक दिन तक लाल अगस्त्य के रस में भावित कर दें। औषधि सेवनोपरान्त भरपेट आहार ग्रहण करें तो सैकड़ों रमणियों से रमण करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

२. शुद्ध पारा दो पल, शुद्ध गंधक दो पल, शुद्ध स्वर्ण एक कर्ष, अभ्रक (अबरक) एक पल और फूँका हुआ ताँबा चार निष्क (६४ माशे इन सब वस्तुओं को पंचामृत में ख़रल करके ग्यारह दिनों में अनन्तर गजफुट (सवा हाथ के बराबर चतुष्कोण गड्ढे में पाँच सौ जंगली उपलों की अग्नि से पुट देना) में रखकर एक दिन आँच देकर पुनः इनको फूँक देना चाहिये। तत्पश्चात् इसे निकालकर पञ्चामृत से पीस डालें और बेर के आकार का वटी बना लें। इस अनंगसुन्दरी वटी के सेवन से मनुष्य में तीन सौ स्त्रियों के साथ सम्भोग की शक्ति आ जाती है।

३. सेमल की जड़ तथा भाँगरे की जड़ का चूर्ण बनाकर एक पल मिश्री मिलाकर खाने से मनुष्य रति-काल में एक सौ स्त्रियों की भी काम-पिपासा शान्त कर सकता है।

महाकामेश्वर रस

सूतपादं ताम्रचूर्ण खल्वे पिष्टं प्रकारयेत्।
निक्षिप्य कदलीकन्दे पुनर्लेप्यं च गोमयैः।।
शुष्कं गजपुटैः पच्यात्तथा कन्दे पुनः क्षिपेत्।
एवं सप्तपुटैः पच्चात्कन्दैः कन्दं पृथक्पृथक्।।

सर्वप्रथम चतुर्थांश भाग में पारा और ताँबा का चूर्ण बनाकर उसे केले की जड़ के साथ खरल कर लें। पुन: इनका गोला बनाकर उस पर गोबर लगाकर सुखा लें। सुख जाने के बाद गजपुट में भरकर आँच दें। पुन: उसे निकालकर केले के कन्द में भिंगोकर आग पर फूँक दें। इसी प्रकार सात बार अलग-अलग उसे भावित कर लें।

तदनन्तर इसमें घी का मिश्रण देकर कपड़े की कपरोटी लगाकर सुखा डालें। सूखने पर पुन: कपरोटी चढ़ाकर दोलायन्त्र में सिद्ध कर बकरी के दूध में पाचित कर लें। अव गुडूची (गुरुच), शतावरी, क्रौंच के बीज, गोखरू, गजपीपल, लाला (धान का लावा), केलाकन्द तथा तालमखाना।

उक्त वस्तुओं को समान भाग में लेकर महीन चूर्ण बना लें। तदनन्तर इनकी मात्रा से दुगुनी मिश्री की चाशनी बनाकर मन्द अग्नि पर पका लें। पहले से चूर्णित की हुई चीजों को तथा फूँके हुए रस को इसमें मिला दें। इसे चार गुंजा (घुँघुची) के बरावर सेवन करने वाला व्यक्ति पलभर में ही सहस्रों नारियों को क्षुब्ध कर सकता है। इसे महाकामेश्वर रस के नाम से जाना जाता है।

मदनोदय रस

गोक्षुरं वानरं बीजं गुडूची गजपिप्पली।
कोकिलाक्षस्य बीजानि फलं गुणशतावरी।।
कर्कशाबीजमज्जा च सर्व तुल्यं विचूर्णयेत्।
पलार्द्धमनुपानं स्यात्किंचित्पेयं गवां पय:।।

गोखरू, क्रौंचबीज, गुडूची, गजपीपल, तालमखाने का बीज तथा फल, शतावरी, कर्कशा के बीज और उसी मींगी। इन्हें बराबर भाग में लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के बराबर मिश्री डालकर शहद मिला कर गोली वना लें। गोली खाने के पश्चात् थोड़ा गो-दुग्ध पान करना चाहिये।

शोधित पारा और गंधक को लाल कमलदल के रस में एक प्रहर तक खरल में डालकर खूव घोंट लें रस के सूख जाने पर उसे बार-बार घोंटते रहें। जब सम्पूर्ण रस सूखकर एक में मिल जाय तब इसे किसी काँच की शीशी में भर लें।

तदनन्तर इसे बालुका-यन्त्र में रखकर एक दिन चढ़ा दें। पुन: इसे उतार कर काम में लायें। इस मदनोदय रस को पाँच घुँघुची के बराबर लेकर मिश्री के साथ सेवन करें। तालमखाने के बीज, मुसली और शर्करा। इनके चूर्ण को समान भाग में गाय के दूध के साथ खाने से पुष्टिवर्धन होता है।

कामाङ्ग नायकचूर्ण

वानरीकोकिलाक्षस्य बीजं श्यामतिलं समम्।
मूलं गोक्षुरमासाभ्यां शुष्कचूर्ण प्रकल्पयेत्।।

चूर्णतुल्यं मृतं चाभ्रं सर्वतुल्या सिता भवेत्।
कर्षमेकं गवां क्षीरैः पेयं कामाङ्गनायकम्।।

क्रौंच के बीज, तालमखाने के बीज तथा काला तिल। इन्हें समान परिमाण में ले लें। पुनः इसमें गोखरू और उड़द का चूर्ण बनाकर डाल दें। इसके अनन्तर आनुमानिक रूप से शोधित अभ्रक मिला दें। इनकी मात्रा के बराबर मिश्री मिलाकर एक कर्ष (१६ माशे) चूर्ण गो-दुग्ध के साथ पान करें। इसके साथ अनुपान के रूप में गौरैया पक्षी के मांस को तेल में पकाकर भोजन से पूर्व तथा अन्त में दूध डालकर पीने वाला सैकड़ों स्त्रियों से भी रमण करने में समर्थ हो सकता है।

कामामृतयोग

असगंध, चित्रक की जड़, सेमल, शतावरी, विदारीकंद, मुसलीकंद, तालमखाना और क्रौंच के बीज, इनका चूर्ण बनाकर उसी के अनुसार शोधित अभ्रक डालकर समान भाग में मिश्री मिला दें। इसे एक कर्ष (१६ माशा) की मात्रा में गोदुग्ध के साथ पान करने से सैकड़ों स्त्रियों के साथ सहवास करने की शक्ति उत्पन्न होती है।

अश्वकर्कटमांसं तु भक्षयेच्च पिबेत्पयः।
योगः कामामृतः ख्यातो बलायुर्वीर्यवर्द्धकः।।

घोड़ें तथा कर्कट (केकड़े) के मांस का भक्षण कर ऊपर से दुग्धपान कर लेने पर यह कामामृत योग बल-वीर्य की अत्यन्त वृद्धि करनेवाला है।

धात्रीलोह

१. आँवले का चूर्ण बनाकर आँवले के रस में ही भिंगो दें। इस क्रिया को लगातार इक्कीस बार करके उसे सुखाकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को चतुर्थांश परिणाम में लौहभस्म डाल दें। तत्पश्चात् मधु, घृत और मिश्री मिला दें।

पलैकं भक्षयेन्नित्यं सिताक्षीरं पिबेदनु।
कामयेत्स्त्रीशतं नित्यं धात्रीलोहप्रभावतः।।

इसे प्रतिदिन एक पल की मात्रा में खाकर मिश्री मिले हुए दूध को पी लें तो सैकड़ों नारियों से रमण करने पर भी कामेच्छा बनी रहती है।

२. क्रौंच के बीज और छिलकारहित उड़द को लेकर चूर्णित कर लें। इस चूर्ण को एक प्रहर तक नारियल के जल में भिंगो दें। सूख जाने पर शुद्ध अभ्रक मिलाकर अच्छी प्रकार से पीसकर वटी बना लें और शहद एवं घी मिलाकर खायें।

तत्पश्चात् मिश्री मिला हुआ दुग्धपान करने पर अनेक स्त्रियों से रमण करने में सक्षम हो जाता है। इसे खाने के पश्चात् शतामूलयुक्त पान खाना भी आवश्यक होता है।

३. भली प्रकार से शोधित अभ्रक, शोधित कट्फल, कूठ, अजमोदा, गिलोय, मेथी, मोचरस, बिदारीकन्द, मुसली, गोखरू, कोकिलाक्ष के बीज, कदलीकन्द, शतावरी, अतिबला, उड़द, काला तिल, धनिया, असगां, खिरैंटी, मुलेठी, नागबला, कपूर, मैनफल, जायफल और सेंधानमक, कस्तूरी, काकड़सिंघी, भाँगरा, त्रिकुट (सोंठ, कालीमिर्च, पीपल), दो प्रकार का जीरा (श्वेत एवं स्याह), तज, पत्रज, छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, पुनर्नवा (गदहपूरना), गजपीपल, ब्राह्मी, हल्दी, अडूसा, क्रौंचबीज, सेमल और त्रिफला (हरड़, बहेड़ा और आँवला)। इन्हें बराबर की मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें। वटी का परिमाण आठ माशे का होना चाहिये। इसे खाकर ऊपर से दूध पीने वाला व्यक्ति नारी को स्तम्भित कर देता है। यह वटी स्त्रियों के लिए वशकारक, सुख देने वाला, प्रौढ़ा नारियों के मन में काम जगाने वाला, धातुक्षीणता में पुष्टिकारक तथा सम्पूर्ण रोगों का विनाशक है। इस वटी के सेवन से खाँसी, साँस फूलना, अतिसार, मंदाग्नि, बवासीर, संग्रहणी, कफजनित तथा रक्तज रोगों का शमन होता है। यह आनन्ददायक, तृप्तिकारक और बुद्धिवर्द्धक है।

इसके निरन्तर सेवन से जरा-मृत्यु पर भी विजय मिलती है।, के द्वारा असमय में केशों की होने वाली श्वेतता भी दूर होती है। वृद्धों में काम जाग्रत होता है। यह सिद्ध प्रयोग नित्यनाथ कहा है।

स्त्रीसंगम काल

रत्या हृष्टः प्रहृष्टो व्यपगतसुरतः सन्धये नित्यनित्यं
कान्तासंगाद्दिवापि ह्यसकृतपि नरो धातु बैषम्यमेति।।

समस्त ऋतुओं में तीन-तीन दिन के अन्तर पर स्त्री-प्रसंग करना निहित होता है। यदि अधिक बल की आकांक्षा हो तो ग्रीष्मकाल में स्त्री संसर्ग कम करें। एक पक्ष से पूर्व सम्पर्क न करें।

ऐसा व्यक्ति जो बलवर्धक औषधियों का सेवन नहीं करता, उसे इस योग का सेवन करना आवश्यक है। स्त्री-सहवास से पूर्व विलासपरायण व्यक्ति को शीतल जल पीकर उसके बाद उबले हुए दूध को पी लेना चाहिये। ग्रीष्म ऋतु में अतिसंसर्ग का निषेध किया गया है। दिन में एक बार भी सहवास करने से धातुओं में विषमता उत्पन्न हो जाती है।

अन्यथा स्त्री सङ्गम दोष

ग्लानिः कम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षः।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयाः।।
अकालमरणं चैव भजतः स्त्रियमन्यथा।।

शोषकासज्वरार्शांसि श्वासकार्श्यातिपाण्डुता।
अतिव्यवायाज्जायन्ते रोगाश्च क्षयकादयः।।

इस नियम के विपरीत स्त्री प्रसंग करने वालों में मानसिक अवसाद, कम्पन, धातु-दुर्बलता, क्षय, अंडवृद्धि तथा उपदंश (सूजाक, फिरंग रोग) आदि दुःसाध्य रोगों की उत्पत्ति होती है तथा वे असमय में काल-कवलित हो जाते हैं। इसके द्वारा शोष, खाँसी, श्वास, ज्वर, बवासीर और पाण्डुरोग होने की भी सम्भावना बनी रहती है। अतिप्रसंग के फलस्वरूप यक्ष्मा रोग भी हो जाते हैं।

असेवनान्मोहदौ ग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम्।
त्यजेच्चिन्ताद्यशुचितां शोकाध्यक्षं च मैथुनम्।
जरायाशिंचतया शुक्र व्याधिभिः कर्मकर्षणात्।।
क्षयं गच्छत्यनशनात्स्त्रीणां चैवातिसेवनात्।
क्षयाद्भयादविश्वासाच्छोदकस्त्रीदोषदर्शनात् ।
नारीणामसन्नत्वादभिघातादसेवनात् ।।

स्त्री-प्रसंग से दूर रहने पर मोह, मद, ग्रन्थि तथा अग्निमांद्य रोग होता है। मनुष्य को चिन्तारहित होकर मैथुनेच्छा का परित्याग कर देना चाहिये। वृद्धावस्था की चिन्ता से वीर्यक्षय होता है। इसके अतिरिक्त रोगाक्रान्त होने, अतिकर्म करने, भोजन न करने तथा अत्यधिक स्त्री-प्रसंग के द्वारा क्षय, भय, शोक तथा अविश्वास उत्पन्न होता है। स्त्री दोषदर्शन, उनका असेवन, उन्हें निकट में रखने आदि से भी क्षयोत्पत्ति सम्भव होती है। अतः इन सब बातों को सावधानी प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक कही गयी है।

अथ वाजीकरणी या नारी

रूपयौवनसौन्दर्यलक्षणैर्या विभूषिता।
या वश्या शिक्षिता या च सा स्त्री बृष्यतमा मता।।

सौन्दर्य से परिपूरित वह युवती, नारी जो अपने वशवर्तिनी एवं शिक्षिता हो, वह वाजीकरण के योग्य मानी जाती है।

अथ वाजीकरणयोग्याः

स्त्रीषु क्षयं गतवतां वृद्धानां चरिताश्रिताम्।
क्षीणानामल्पशुक्राणां स्त्री क्षीणश्च ये नराः।।
विलासिनामर्थवतां यौवने बलशालिनाम्।
बहुपत्नीवतां नृणां योगा वाजिकरा हिताः।।

स्त्री समागम के परिणामस्वरूप जो विलासी मनुष्य अल्पवीर्य, क्षीण एवं वृद्ध हो चुके हैं, जो अनेक स्त्रियों के पति हैं, उनके लिए यह वाजीकरण योग लाभप्रद है।

अथ गाढ़ीकरणम्

(वीर्य के पुष्टिकरण हेतु अग्राह्य पदार्थों का निषेध)

अत्यन्तमूलकटुतिक्तकषायमम्लं
क्षारं च शाकखादिरं लवणाधिकं च।
कामी सदैव रतिनान्तवनिताभिलाषी
नो भक्षयेदिति समस्तजनप्रसिद्धः।।
प्रौढ़ाङ्गनाया नवसूतिकायाः श्लथं वराङ्गं न सुखाय यूनाम्।
तस्मान्नरैर्भेषजतो विधेया गाढी क्रिया मनमथमन्दिरस्य।।

अत्यन्त मूल, कसैला, खट्टा, खारा, खादिर (खैर) और नमकीन पदार्थ—इन वस्तुओं का सेवन रति के इच्छुक मनुष्यों को नहीं करना चाहिये।

प्रौढ़ा तथा सद्यःप्रसूता नारी का गुप्तांग ढीला और शिथिल होने के परिणाम स्वरूप युवकों को आनन्द नहीं दे पाता। अतः उनकी योनि का संकोचन करना आवश्यक होता है।

निशाद्वयं पङ्कजकेशरञ्च निष्पीड्य देवद्रुमतुल्यभागम्।
अनेन लिप्तं मदनातपत्रं प्रयाति संकोचमलं युवत्याः।।
सधातकीपुष्पफलत्रिकेण जम्बूत्वचा साररसं घृतेन।
लिप्त्वा वराङ्गः मधुकेन तुल्यं वृद्धापि कन्येव भवेत् पुरन्ध्री।।

दो प्रकार की हल्दी (हल्दी तथा दारुहल्दी), कमल, केशर देवतारु—इन्हें समान भाग में लेकर योनि में लेपन करने से योनि संकुचित होकर स्वच्छ हो जाती है।

धव के फूल, हरड़, बहेड़ा, आँवला, जामुन की छाल, लोहसार, घी और मुलेठी। इन्हें पीसकर लेप करने से वृद्धा नारी का भग भी कन्या के समान संकुचित हो जाता है।

पिकाक्षबीजेन मनोजगेहं विलिप्य योषा नियमं चरन्ती।
हठेन गाढं लभते तदङ्गं दृष्टं नरैरेष हठेन योगः।।
मृणालपद्मं पयसा सुपिष्य दृढा समाङ्गी गुटिका विधेया।
यस्या वराङ्गे निहिता क्षणेन कन्यात्वमेत्याह स मूलदेवः।।

शिलारस और रुद्राक्ष के बीजों को पीसकर लेपन करना मदनमंदिर को छोटा बनाता है। यह योग अत्यन्त श्रेष्ठ है।

कमल को जड़ सहित पीसकर उसकी गोली बनाकर क्षणभर योनि में स्थापित कर देने से वह नारी कन्या के सदृश भग वाली हो जाती है। ऐसा कथन मूलदेव ने किया है।

इक्ष्वाकुबीजं स्नुहिसारवेण पिष्ट्वा वराङ्गं परिलिप्यि तेन।
नवप्रसूतापि हठेन नारी कन्या भवेत् संयमतो न चित्रम्।।

इन्दीवरव्यसाघ्रिवचोषणानां तुरङ्गमारासनयामिनीनाम्।
लेपेन नार्याः स्मरसद्मरन्ध्रं संकोचयत्याशु हठेन योगः।।

कड़ुवी तुम्बी के बीज, सेंहुड़ (थूहर) को सारिवा के साथ पीसकर योनि पर लेप लगाने से प्रसूता का काममंदिर भी सिकुड़कर कन्या के तुल्य हो जाता है।

नीलकमल, कटेरी, वच (कुलंजन), कालीमिर्च, कनेर, असन और हल्दी। इन सभी वस्तुओं को पीसकर लेप लगाने से योनि का संकोचन होता है।

या शक्रगोपं स्वयमेव पिष्ट्वा विलिम्पति स्त्री च वराङ्गदेशम्।
आहत्य तस्याः कठिनं न गाढं भवेन्न चात्रास्ति विचारचर्या।।

मदनकथनसारः क्षौद्रतुल्यैर्वराङ्गं
भवित कठिनमुच्चैः कर्कशं कामिनीनामिति।
निगदति योगं रन्तिदेवो नरेन्द्रः।।

जो नारी अपने काममंदिर पर बीरबहूटी (बरसात के दिनों में उत्पन्न होने वाला एक लाल कीड़ा जिसे इन्द्रगोप भी कहते हैं) पीसकर लेपित कर लेती है, उसका भग निःसंदेह रूप से सिकुड़ जाता है।

मैनफल और कथनसार को समभाग में लेकर उसमें शहद मिला रति-मंदिर में लेप लगाने से वह अत्यन्त कड़ा और कठोर हो जाता है। इस योग को नरेन्द्र रंतिदेव ने कहा है।

अश्वगन्धैर्लिपैर्योर्नि गाढीकरणमुत्तमम्।

अथवा असगंध का लेपन करना भी योनि को पुष्ट बनाता है।

अथ स्त्रीद्रावणम्

यद्यप्यष्टगुणाधिको निगदितः कामोऽङ्गनानां सदा
नो याति द्रवतां तथापि झटितिस्त्री कामिनां संगमे।
तस्माद्भेषजसंप्रयोगविधिना संक्षेपतो द्रावणं
किञ्चित्पल्लवयामि नीरजदृशां प्रीत्या परं कामिनाम्।।
सिन्दूरचिञ्चाफलमाक्षिकाणि तुल्यानि यस्या मदनातपत्रे।
प्रलिप्य तासां पुरुषप्रसङ्गात्प्रागेव वीर्यच्युतिमातनोति।।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अठगुनी कामवासना होती है जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है—'ताम अष्टगुणः स्मृतः'। अतः वे समागम-काल में शीघ्र द्रवित नहीं होती हैं। यहाँ पर स्त्रियों को शीघ्र स्खलित करने के निमित्त संक्षेपतः कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं।

सिन्दूर और इमली का फल—इन्हें शहद के साथ जननेंद्रिय पर लेप लगाकर रमण करने से स्त्रियाँ शीघ्र स्खलित हो जाती हैं।

व्योषं रजः क्षीद्रसमन्वितं वा क्षिप्तं यदि स्यात्स्मरयंत्रगेहे।
द्रुता भवेत्सा सहसैव नारी दृष्टः सदायं किल योगराजः।।
सुपक्वचिञ्चाफलघोषमूली गुडं तथा माक्षिकतुल्यभागम्।
अमीभिरालिप्य पुनः सुनिङ्गं बीजं करोत्याशु नितम्बिनीनाम्।।

त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल) का चूर्ण शहद में मिलाकर स्त्री को योनि में लेपन करने से वह अल्पकाल मे ही द्रवीभूत हो उठती है। यह अनुभूत योग है।

पकी हुई इमली, मूली, गुड़ तथा मधु। इन्हें रतिकर्म से पूर्व लिंग पर लेपित कर लेने से स्त्रियाँ अविलम्ब क्षरित हो जाती हैं।

सटी कणा क्षौद्रमहेशबीजैः कर्पूरतुल्यैरुपलिप्य लिंगम्।
शतं नरो यः सविलासिनीनां रेतः प्रपातं कुरुते हठेन।।
पारावतपुरीषं च मधुना सैन्धवैर्यतुम्।
लिंगस्य लेपनात्तेन स्त्रीणां द्रवणमुक्तमम्।।

कचूर, पीपल, शहद, पारा और कपूर। इनको लिंग पर लगाकर समागम करने पर स्त्रियों का शीघ्र ही द्रावण होता है।

कबूतर की बीट (विष्ठा), सेंधा नमक और शहद। इनका लेपन जननेन्द्रिय पर करना स्त्रियों के स्खलन का कारण बनता है।

गोक्षवार्ताक्यपामार्गरसेन लिंगलेपनात्।
तत्क्षणाद्द्रवते नारी पद्मपत्रे यथा पयः।।
पिप्पली चन्दनं चैव बृहती पक्वतिन्तिडी।
एतैर्लिङ्गप्रलेपेन द्रवेन्नारी न संशयः।।

गोखरू, बैंगन और अपामार्ग (चिचिड़ा) का रस। इनका लेप लगाने से स्त्री उसी प्रकार द्रवित हो जाती है, जिस प्रकार कमल के पत्ते पर जल क्षणभर नहीं ठहरता।

पिप्पली (छोटी पीपर), लाल चन्दन, कटेरी तथा पकी हुई इमली। इसे इन्द्रिय पर लेप करने से स्त्री निःसंदेह रूप से द्रवित हो जाती है।

अगस्तिपत्रद्रवसंयुतेन मध्साज्यसंमिश्रितकंटकणेन।
लिप्त्वा ध्वजं यो रमतेऽङ्गनानां स शुक्रमाकर्षति शीघ्रमेव।।
सलोलध्रधत्तूरकपिप्पलीनां क्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम्।
लेपेन लिंगस्य करोति रेतश्च्युतिं विपक्षप्रमदाजनस्य।।

अगस्त्य के पत्तों के रस में मधु, घृत और सुहागा मिलाकर रमण करने पर स्त्री तुरन्त ही स्खलित हो जाती है।

लोध, धतूरा, पिप्पली, पिपरामूल और शहद। इनका लेपन कामध्वज पर करने से नारी समागम-काल में अतिशीघ्र द्रवीभूत हो उठती है।

तुरगसलिलमध्ये भावितं क्षेत्रमाषं
मरिचमधुकतुल्यां पिप्पलीं पेषयित्वा।
परिरमति विलिप्य स्वीयलिङ्गं नरो यः
प्रभवति वनितानां कामकल्लोल मानः।।
बिल्वपुष्पं सुकर्पूरं मुण्डीपुष्पं च पेषितम्।
लिंगलेपेन रामाणां द्रावो भवति संगमे।।

उड़द, कालीमिर्च, मुलेठी और पीपल को समान भाग में असगंध के जल के साथ पीसक जननेन्द्रिय पर लेपित करने से नारी का अविलम्ब स्खलन हो जाता है।

बैल का पुष्प, गोरखमुंडी का पुष्प और कपूर। इन्हें पीसकर मदनध्वज पर लेपन करना नारी का द्रवाण करता है।

बृहतीफलमूलानि पिप्पल्यो मरिचानि च।
मधु रोचनया सार्द्ध लिङ्गलेपे द्रवन्ति ताः।।
क्षौद्रगंधकलेपेन शिलायुक्तेन तत्फलम्।
उपहारपशो रक्तं गृहणीयादन्तरिक्षतः।।

कटेरी के फल और उसकी जड़, पीपल, कालीमिर्च, शहद तथा गोरोचन। इन्हें पीसकर कामध्वज पर लेप लगाने से स्त्री शीघ्र ही द्रवित हो जाती है।

शहद, गंधक और मैनसिल को मिलाकर लेपन करने से भी यही फल मिलता है। बलि के पशु का रक्त पर से ग्रहण कर लें।

तच्छुष्कं चूर्णितं स्थाप्यं पुष्पे रक्तश्वमारजे।
तत्पुष्पं धारयेद्वस्त्रे तर्जन्यङ्गुष्ठयोगतः।
आर्वर्त्य सम्मुखं स्त्रीणां दृष्टमात्रे द्रवन्ति ताः।।
जम्बीरफलमध्ये तु मूलं वृश्चिककण्टकम्।
क्षिप्त्वा बद्धवा स्त्रियै दद्याद्घ्राणमात्रे द्रवन्ति ताः।।

अब उसे सुखा लें और लाल कनेर में रखकर वस्त्र द्वारा वेष्टित कर तर्जनी और अंगूठे की सहायता से धारण कर लें तो नारी के निकट जाते ही वह द्रवीभूत हो उठती है।

जम्बीरी नींबू को काटकर उसके बीज में श्वेतपुनर्नवा (सफेद गदहपूरना) की जड़ रखकर उसे बाँध दें। इसे स्त्री को दे दें, तो वह उसे गंधमात्र से ही स्खलित हो जाती है।

आहरेद्वमजङ्घां तु टिट्टिभस्य तु दक्षिणः।।
तन्मध्ये प्रक्षिपेट्भूर्ज्जपत्रमोङ्कारलेपितम्।
रक्ताश्वमापुष्पेण मुखं तस्य निरोधयेत्।
कर्णोपरि स्थितं तेन दृष्ट्वा स्त्री द्रवति ध्रुवम्।।

टिट्टिभ (टिटिहरी) की बाँयीं जाँघ लेकर उसे शुद्ध कर लें। पुनः उसके बीज में 'ॐकार' लिखित भोजपत्र मिलाकर चारों ओर से लेपित करें। इसके बाद लाल कनेर पुष्प से इसका मुख अवरुद्ध कर अपने कान पर स्थापित कर लें तो दर्शनमात्र से ही स्त्री का द्रावण हो जाता है।

जलेन लाङ्गलीमूलं पिष्ट्वा हस्ते प्रलेपयेत्।
हस्तेन स्त्रीकरस्पर्शे द्रवत्यग्नौ घृतं यथा।।
मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रयुक्तै-
र्विमलमधुविमिश्रैर्मानवो लिप्तलिङ्गः।
स्मरति रतिविलासे कष्टसाध्यां च
नारी समुचितरतिरागां संविदध्यादवश्यम्।।

कलिहारी की जड़ को पीसकर हाथों में लेपन कर लें। उस लेपित हाथ द्वारा नारी का स्पर्श करते ही वह अग्नि में घी डालने के समान द्रवीभूत हो जाती है।

लिंग स्थूल करना

१. कूठ, पीपल, दोनों खिरेंटी, वच, असगंध, गजपीपल और कनेर। इनको पीसकर मक्खन के साथ लेप करने से कामेंद्रिय मूसल के समान स्थूल एवं कड़ा हो जाता है। जो भी चतुर व्यक्ति प्रयत्नपूर्वक इसका प्रयोग करता है, उसका लिंग दिनोंदिन स्थूलता को प्राप्त होता है।

२. लोध्र, केशर, असगंध, पीपल और सालपर्णी (सरिवन) इनका चूर्ण तैल में पकाकर मालिश करने से लिंगवृद्धि होती है, जो वेश्याओं के लिए सुखकारक होता है। भिलावे की भींगी, सेवार (जलीय घास विशेष) और कलमपत्र। इन तीनों को जलाकर सेंधानमक और बड़ी कटेरी के साथ जल में पीसकर लेपन करने से लिंग घोड़े के समान लम्बा तथा मोटा हो जाता है।

३. पारा, कालीमिर्च, कूठ, सोंठ, कटेरी, असगंध, काला तिल, शहद, सेंधा नमक, श्वेत सरसों, चिचिड़ा, यव, उड़द और पीपल। इन सब वस्तुओं को जल के साथ पीसकर इंद्रिय पर लेप लगाने से लिंग में वृद्धि होती तथा स्थूलता आती है।

४. सूअर की चरबी में शहद मिलाकर एक महीने तक लेप लगाने से लिंग में कठोरता एवं स्थूलता आती है।

५. असगंध, वच, कूठ, कटेरी और शतावरी। इनके चूर्ण को तिल तैल में पकाकर मालिश करने से लिंग में स्थूलता आती है।

६. असगंध, शतावरी, कूठ, जटामांसी (बालछड़) और कटेरी के फल— इन सब वस्तुओं को चौगुने दूध और तिलतैल में पक्व कर लें। इस तैल की मालिश करने से स्तन, लिंग, कान तथा हाथ की वृद्धि होती है।

७. सुहागा, जलपीपल, जामुन, शूकर का तैल। इनका लेप शहद के साथ लगाने से कामध्वज मूसल के समान लम्बा एवं कठोर हो जाता है।

८. मुसली का चूर्ण भैंस के मक्खन में मिलाकर बर्तन में भर लें और उसे धान्यराशि में एक सप्ताह तक स्थापित कर दें। सात दिनों के पश्चात् निकालकर उसे एक मास तक लेपित करें तो अवश्य ही लिंगवृद्धि होती है।

९. मुसली और आरामशीतला खाने से जननेंद्रिय की लम्बाई बढ़ती है। धतूरा, लाख (लाह), कृमि और कटेरी के फल। इन्हें जल में पीसकर लेपन करने से लिंग अवश्य ही मोटा हो जाता है। इसी प्रकार केवल मुसली घृत का लेप लगाना भी कामध्वज को दृढ़ बनाता है।

१०. पीपल, सेंधा नमक, दूध और मिश्री। इनका लेप लगाने से भी कामेंद्रिय में कठोरता आती है। अथवा जटामांसी, बहेड़ा, कूठ, असगंध और शतावरी। इन्हें तैल में पाचित कर मालिश करने से मदनध्वज स्थूलता को प्राप्त होता है। इसमें किसी प्रकार का संशय रखना अनावश्यक होता है।

११. रोहू मछली का पित्त, जलौका (जोंक) एवं कलिहारी को लिंगमूल में मलने से इन्द्रिय मूसल के समान लम्बी एवं स्थूल हो उठती है।

१२. पारद, असगंध, हल्दी, गजपीपल तथा मिश्री। इन सभी को जल में पीसकर लगाने से एक महीने में ही लिंग, योनि, कान तथा स्तन आदि की आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हो जाती है।

१३. क्रौंच की जड़ को मेढ़ासिंघी के साथ या बकरी के मूत्र के साथ रात्रि के समय जननेंद्रिय पर लगाने से इंद्रिय लौहदण्ड के समान कठोर हो जाती है।

१४. भैंस के मक्खन में वच, खिरेंटी और पारा मिश्रित कर लेपन करने से कामेंद्रिय लौहदण्ड के सदृश कड़ा हो जाता है। यह प्रयोग परीक्षित है।

१५. कृष्णापराजिता (काली विष्णुकान्ता) की जड़ खैरकाष्ठ के कीलक से ग्रहण कर काले धागे में लपेट कर कमर में बाँध लेने से मदनध्वज दृढ़ हो जाता है।

१६. देवदाली का रस तथा आँवला को दूध में मिलाकर पीने से भी लिंग में स्थिरता आती है। उक्त कथित समस्त योगों के निमित्त शिवजी द्वारा कहा गया मन्त्र भी सहायक होता है। सभी योगों को मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित कर एक मास तक लेपन करने से अवश्य ही सफलता मिलती है। मन्त्र इस प्रकार से कहे गये हैं—

'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय सव सव प्रसव कुरु कुरु स्वाहा ठः ठः'।

दृढ़ीकरण का कर्म मंत्रावलम्बन के बिना ही करना चाहिये।

रोमविनाशक योग

१. ढाक (पलाश) की भस्म तथा हरिताल की भस्म। इन दोनों को केले के जल में पीसकर योनि पर लेप लगाने से पुनः बालों का उगना बन्द हो जाता है।

२. एक भाग हरिताल भस्म, पाँच भाग शंखभस्म, पाँच भाग पिलखन की भस्म। इन सभी को केले के जल में मिला लें। अब इन्हें किसी स्वच्छ बर्तन में रखकर छान लें। इसे सात दिनों तक जो नारी अपने भगस्थान में लगा लेती है, उसे पुनः कभी रोम नहीं उगते हैं।

३. शंख की भस्म को केले के रस में सात दिनों तक भिंगोकर निकाल लें और खस मिलाकर योनि पर लेपन करें तो उस स्थान के बाल क्षणभर में ही निर्मूल हो जाते हैं।

४. हरिताल, शंखचूर्ण, मंजीठ और पलाश भस्म। इन्हें समान भाग में लेकर लेप लगाने पर मदनमन्दिर के बालों का विनष्टीकरण होता है।

५. शंख का चूर्ण और हरिताल। इन दोनों को खारे जल (लवणयुक्त) के साथ पीसकर लेप लगायें और धूप में बैठ जायँ तो सभी बाल झड़कर गिर जाते हैं।

६. सुपारी वृक्ष के पत्तों के रस में गंधक मिलाकर रोमयुक्त स्थान पर लेप लगाकर धूप में बैठने से योनि रोमरहित हो जाती है।

७. जिन लोगों में खण्डकोश हो गये हों उन्हें तीन सप्ताह तक छुछुन्दर के तेल लगाने चाहिये। ऐसा करने से बाल नहीं उगते हैं।

८. कुसुम्भ (बर्रै नामक पौधा) के तैल को सात बार लगाने पर बाल झड़ जाते हैं।

९. तुरन्त के पैदा हुए भैंस के बच्चे का गोबर लेकर रात्रि में बालों पर लगायें और ऊपर से एरण्ड (रेंड़) के पत्तों से ढँक लें। दूसरे दिन प्रातः उसे गरम जल से धो डालें तो बाल जड़ से उखड़ जाते हैं।

१०. बड़े आकार वाली काली चींटियों के आवास स्थल की मिट्टी लेकर छाया में सुखा लें। उस मिट्टी का चूर्ण बनाकर पाँच दिनों तक रोमस्थान में लेपन करें तो पहले खंडित हुए बाल दोबारा नहीं उगते।

११. शंखभस्म, हरिताल, यव (इन्द्रजौ), गुंजा (घुँघची)। इनको कांजी के साथ पीसकर बालों पर लेप करने से बाल उसी प्रकार गिर जाते हैं, जिस प्रकार वृक्ष के पके हुए पत्ते स्वतः पतित हो जाते हैं।

१२. मैनसिल को सरसों के तैल में मिलाकर लेप करने से बालों का उत्पाटन होता है।

स्तनदृढ़ीकरण

१. दश पल मुंडी (गोरखमुंडी) या इसी परिमाण में सोंठ का चूर्ण लेकर चौगुने जल में पकायें। जब जलकर आधा भाग रह जाय तब इसमें तिलतैल डालकर

पुन: पका लें। समूचा पानी जल जाने पर उसका नस्य लेने पर स्त्री के लटकते हुए स्तन पुन: उत्थित हो जाते हैं।

२. प्रियंगु, हल्दी, खिरैंटी, धान का खील (लावा) और सेंधा नमक। इन सब चीजों को एकत्रित करके चौगुने जल में पका लें। जब चौथाई भाग शेष रहें तब तिलतैल डालकर पकायें। तैल के आधे भाग में भैंस का घी भी मिला लें। तैलमात्र शेष रह जाने पर इस तैल का एक माशे (८ रत्ती) की मात्रा में नाकों से नस्य लेने पर बालों एवं वृद्धाओं के स्तनों में भी अद्भुत प्रकार का उभार आ जाता है।

३. एरण्ड (अण्डी) का तैल, सील नामक मछली का तैल तथा बैलपत्र का रस। इन्हें कुचों पर मालिश करने से ढीले और लटके हुए स्तन भी नवीनता को प्राप्त होते हैं।

४. श्रीपर्णी (खम्भारी या गम्भारी) का रस, कर्कट वृक्ष की जड़ और तिल का तैल एक साथ आग पर पका लें। इस तैल की मालिश करने से वृद्धा या कन्या के पतित स्तन भी उठ जाते हैं।

५. सफेद मोथे के फूल को काली गाय के दूध में पीसकर कुचों पर लेपन करने से स्तन स्थूल एवं पुष्ट हो जाते हैं।

६. वच, असगन्ध के पत्ते तथा गजपीपल। इन्हें जल में पीसकर स्तनों पर लेपित करने से वे तालफल के समान ऊपर की ओर उठे हुए रहते हैं।

७. गम्भारीपत्र का स्वरस और तिल का तैल लेकर इनके बराबर जल में पकायें। जब तैलमात्र शेष रहे तो उसे छानकर कुचों पर मर्दन करें तो ढीले स्तन भी लौह सदृश कठोर हो जाते हैं।

योनि शोधन

नीम के क्वाथ से योनि का प्रक्षालन करना चाहिये। अथवा नीम, हल्दी, घी, काला अगरु तथा गुग्गुल। इन्हें आग में धूपित कर योनि में इनका धूप देने से स्त्री अपने पति की प्रसन्नता प्राप्त करती है।

लिंग उत्थापन

भुईचम्पे की जड़ तथा सुपारी को समान भाग में ग्रहण कर खाने से अतिशीघ्र लिंगोत्थान होता है।

शिव, दुर्गा, तथा गणपतिदेव का विधिवत् पूजन कर रात्रि में लाल सेमल की जड़ को आमंत्रित कर दें। अगले दिन प्रात:काल लाल सेमल की छाल लाकर उसे सुखाने के पश्चात् चूर्ण बना लें। पुन: उसमें घी और सेंधा नमक डालकर थोड़ी मात्रा में प्रात: तथा कुछ को एक प्रहर बाद खाने से लिंग की शिथिलता दूर होकर उसमें लौह के समान कठोरता आ जाती है।

रुका रजोदर्शन पुनः होना

१. ज्योतिष्मती (मालकंगनी) की कोमल पत्तियों को आग में भूनकर जपाकुसुम (अड़हुल) में पीस डालें। उसे पान करने से स्त्री का रुका हुआ रजोधर्म पुनः प्रारम्भ हो जता है।

२. लांगली (कलिहारी) की जड़ का चूर्ण या चिचिड़े की जड़ का चूर्ण अथवा इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण बनाकर योनि के अन्दर रखने से रजःस्राव बन्द हो जाता है।

३. कबूतर की बीट को शहद के साथ पान करनेवाली नारी अवश्य ही ऋतुमती होती है। ऐसा मूलदेव का कथन है।

४. काले तिल के मूल का क्वाथ अथवा ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलेठी, और त्रिकुटा (सोंठ, कालीमिर्च, पीपर) का चूर्ण बनाकर काढ़ा के रूप में पीने से रजोरोध, रक्तगुल्म आदि दोष शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

५. काला तिल का काढ़ा बनाकर उसमें गुड़, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल डालकर पीने से स्त्रियों का रुका हुआ रज, रक्तगुल्म आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

६. दूर्वादल और चावल को पीसकर भून लें और उसे भक्षण करे तो स्त्री पुनः रजस्वला होने लग जाती है।

गर्भ निवारण

कृते जारे क्षिपेद्योनी तिलतैलाक्तसैन्धवम्।
द्रवते तत्क्षणादेव शुक्रपुष्पं स्रवत्यपि।।

किसी पर-पुरुष के द्वारा विधवा नारी को गर्भाधान हो जाने पर तिलतैल में सेंधानमक मिलाकर योनि-प्रदेश में रख देने से तत्काल ही रज और वीर्य का अलगाव हो जाता है।

गर्भपात कृत्य

१. एरण्ड (रेंड़) के पत्तों का मूठा योनि के अन्दर आठ अंगुल तक रख देने पर चार मास का गर्भ उसी क्षण गिर पड़ता है।

२. एक कर्ष (१६ माशे) परिमाण में देवदाली का चूर्ण पीसकर पीने से तत्क्षण ही गर्भपात हो जाता है।

३. पुष्य नक्षत्र में उत्पाटित धतूरे की जड़ कमर में बाँधने से वेश्याओं का गर्भ नष्ट हो जाता है।

४. जो नारी ऋतुकाल में राई और तिलतैल मिलाकर पी लेती है, उसे दोबारा गर्भाधान नहीं होता।

५. ऋतुमती नारी द्वारा बबूल के फूल को गाय के दूध में पीसकर पी लेने से गर्भ स्थापन नहीं होता है।

६. प्रसूतावस्था में नील दूर्वा को कांजी के साथ पीसकर पान करने से गर्भ नहीं ठहरता।

७. रेवती नक्षत्र में पीपल का बन्दा लेकर गोदुग्ध के साथ पान करने पर कठिन गर्भ भी च्युत हो जाता है।

८. निर्गुण्डी (सिन्धुवार) के रस में चित्रक की जड़ पीसकर उसमें शहद मिला लें और एक वर्ष (१६ माशे) की मात्रा में भक्षण करने से वेश्याओं का गर्भ उसी क्षण नष्ट हो जाता हैं।

रक्त रोकना

१. आँवला, हरड़ और रसौत। इनका चूर्ण बनाकर जल के साथ खाने से अधिक मात्रा में निकलने वाला रक्त बन्द हो जाता है।

२. शेलु (लिसोड़ा) वृक्ष की छाल सो साँठी के चावल के साथ पीसकर नारी की योनि में रख देने से रक्त प्रवाह कम हो जाती है।

३. सरफोंके की जड़ को चावल के धोवन के साथ एक कर्ष के परिमाण में पीने से अतिरजोस्राव की निवृत्ति होती है।

४. कुश की जड़, केले का पत्ता, खिरैंटी, जटामांसी (बालछड़), गुडूची तथा वदरीफल (बेर) इन्हें चावल के धोवन के संग पान करने पर अतिरजस्राव का वेग घट जाता है।

५. कुरंट (कुटज) का मूल, मुलेठी और श्वेत चन्दन। इनको महीन पीसकर चावल के जल के साथ अक्षमात्र (एक कर्ष) पीने से अतिरजोनिवृत्ति होती है।

६. एक बारगी उड़द का काढ़ा बनाकर उसका रस पीने से स्त्री के प्रदरादि रोग दूर होते हैं। घी में भूना हुआ उड़दों का यूष और श्वेतचन्दन का प्रयोग करना चाहिये।

७. दूध के साथ लालचन्दन और घी मिलाकर पीने अथवा शर्करा तथा शहद के पान करने से रक्तविकार एवं पित्तविकार का शमन होता है।

८. देवदारु, रसौंत, चिरायता, बेल, भिलावाँ, अडूसा और नागरमोथा। इनका काढ़ा घी और शहद डालकर पीने से कठिन शूल के साथ ही श्वेत, अरुण, लाल, नील, पीत आदि सभी प्रकार के प्रदर रोगों का विनाश होता है।

९. अशोक की छाल और वच (कुलंजन) को दूध में पकाकर पीने से अतिरिक्त का निवारण होता है।

१०. पेटारिका के पत्तों को उड़दों के चूर्ण के साथ कदलीदल से लपेटकर सावधानीपूर्वक जलायें। इसे भक्षण करने पर रजोकाल में अतिरक्त स्राव होना बन्द हो जाता है।

११. पेटारिका मूल का चावल के साथ पीसकर पीठी बना आग पर भून लें। इसे खाने से रक्तविकार दूर होते हैं।

१२. पेटारिका की छाल को चूर्णित कर भुने हुए चावलों के चूर्ण के साथ खाने से अधिक रक्त का आना (ऋतुकाल में) बन्द हो जाता है।

१३. शतावरी के मूल का स्वरस चालीस पल (४ कर्ष=१ पल) लेकर कपड़े में छान लें। अब इसके बराबर गोदुग्ध तथा दुग्ध से द्विगुणित मात्रा में घी ले लें। इसमें जावन्ती, कोलमन्दार, अतसी (तीसी), क्षीरकाकोली।

सुखपूर्वक प्रसव

१. श्वेत पुनर्नवा (सफेद गदहपूरना) की जड़ को चूर्णित कर स्त्री के प्रसवद्वार में डाल देने से तत्क्षण प्रसव हो जाता है तथा अतिवेदना की अनुभूति भी नहीं होती।

२. उत्तराभिमुख होकर श्वेत गुंजा (सफेद घुंघुची) की जड़ उखाड़कर प्रसूता की कमर में बाँध देने से सरलतापूव्रक प्रसव हो जाता है।

३. अडूसा नामक पौधे की जड़ को उत्तराभिमुख होकर उत्पाटित कर लें। उसे सात धागे में लपेटकर प्रसूता नारी की कमर में बाँध देने पर उसे सुखपूर्वक प्रसव होता है।

४. उत्तर दिशा में उत्थित सफेद घुँघुची के फल को केशों में बाँध देने पर सहज में ही प्रसूता को पुत्रोत्पत्ति हो जाती है। अथवा इसी फल का चूर्ण योनि में लेपित कर देने से भी संतान प्रजनन में विलम्ब नहीं होता।

५. सहदेई या खिरैटी की जड़ को गर्भिणी की कमर में बाँध देने पर उसे सहज ही सन्तानोत्पत्ति हो जाती है। अपामार्ग (चिचिड़ा) की चार अंगुल लम्वी जड़ स्त्री के भग में प्रविष्ट करा देने पर तत्काल ही प्रसव हो उठता है।

६. लांगली (कलिहारी) की जड़ को जल में घिसकर गर्भवती की योनि पर लेपन कर देने से वह शीघ्र ही संतान जनने में समर्थ हो जाती है। अथवा नारियल की जड़ को पीसकर लेपन करने से भी तत्काल प्रसव हो उठता है।

७. घुंघुची, खांड़ और सुपारी। इन्हें आधा पल (२ कर्ष) की मात्रा में लेकर पीने से प्रसव में कोई बाधा नहीं होती।

८. रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र पड़ने पर चौंटली (घुंघुची) की जड़ और उसके फल को विधिपूर्वक लाकर नीले धागे में पिरोकर गर्भिणी की कमर या उसके शिर में स्थापित करने से शीघ्र ही बच्चा गर्भाशय से बाहर आ जाता है।

९. गृहधूम (घर में लगी हुई कालिख) को जल मिलाकर पीने पर शीघ्र ही बालक की उत्पत्ति हो जती है। अथवा लज्जालु (छुई-मुई) की जड़ कटि-प्रदेश में बाँध लेने से भी तत्काल प्रसव-पीड़ा से छुटकारा मिल जाता है। ऐसा राजा ने कहा है।

१०. यदि गर्भवती नारी मातुलुंग (बिजौरा नींबू) और मुलहठी के चूर्ण को शहद तथा घी मिलाकर पान कर लें तो उसे प्रसव काल में अतिपीड़ा के बिना ही प्रसव हो जाता है। यहाँ मातुलुंग का फल नहीं, बल्कि उसकी जड़ ही लेकर काढ़ा बनाकर पान करें।

११. दशमूल का काढ़ा बनाकर उसमें सेंधानमक और घी मिलाकर पिलाने से भी गर्भवती को अविलम्ब प्रसव हो जाता है।

सुखप्रसव मन्त्र

'ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ मन्मथवाहिनि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा'।

इस मन्त्र से शुद्ध होकर जल को आग पर गरम करके उस जल को गर्भिणी को पिला देने पर वह सुख से प्रसव करती है।

(सूतिका-गृह में भूत-प्रेतादिकों से बालरक्षण)

बेल की जड़, देवदारु, बबूल, प्रियंगु का फूल, लाल चित्रक की जड़, बिलाव का विष्ठा, कूठ और बाँस की छाल। इन सब वस्तुओं को बकरे के मूत्र में पीसकर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा धूपन करने से अनिष्टकारी ग्रह, भूतज्वर, डाकिनी, राक्षस, प्रेत-पिशाच, ब्रह्मराक्षसादि का निवारण होता है। इसके साथ ही एक दिन या तीन दिन के अन्तर पर आने वाला ज्वर भी दूर हो जाता है। धूप देने का मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ द्रावितं तापे ठं ठः स्वाहा।'

इस मन्त्र को भोजपत्र पर कुंकुम और गोरोचन से लिखकर प्रसूता के कण्ठ या उसकी भुजा में बाँध देने पर प्रेतादिक उपद्रव अथवा ज्वरादि शान्त हो जाते हैं। इसे अमृतविजया विद्या के नाम से जाना जाता है।

दाड़िम (अनार) का बंदा ज्येष्ठा नक्षत्र में लेकर सूतिका-गृह के द्वार पर बाँध देने से सभी ग्रहों की शान्ति होती है।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र रहने पर श्वेत गुंजा (घुंघुची) की जड़ उत्पाटित कर शिशु के गले में बाँध देने से डाकिनी-शाकिनी का भय जाता रहता है।

श्वेतापराजित (सफेद विष्णुकान्ता) तथा गुड़हल (जयन्ती) के पत्ते का रस निचोड़कर नस्य देने से भूत-प्रेतादिक उस स्थान को छोड़कर दूर चले जाते हैं।

साँप की केंचुली, शीशम के पत्ते, हल्दी, वच, लहसुन, हींग, गाय के रोम, काकड़ासिंघी, कालीमिर्च और शहद। इनकी धूनी देने से शिशु के समग्र ज्वर दूर हो जाते हैं।

छुछुन्दर की विष्ठा, मांस, हल्दी, बेलपत्र, इन्द्रयव, सरसों और तेजपात।

इनको चूर्णित कर अग्नि में धूप देने से बालक का रात्रि-रोदन (रात में चौंककर एकाएक रो पड़ना) बन्द हो जाता है।

मत्स्यराज के पित्त में कालीमिर्च भिंगोकर सुखा लें। रविवार के दिन धूप देने या अंजन लगाने से सभी ग्रहों का विनाश हो जाता है।

यदि एक बार भी नृसिंह मन्त्रोच्चार कर लिया जाय, तो सभी भूत-प्रेत, ग्रहादि उसी प्रकार दूर हो जाते हैं, जिस प्रकार सूर्योदय होने पर अन्धकार मिट जाया करता है।

विवादकारक प्रयोग

१. बहेड़ा, शाखोट (सिंहोर) वृक्ष की जड़ को पत्तों के सहित जिस किसी के गृहद्वार पर रख दें, तो वहाँ सदैव ही कलह होता रहता है।

२. बिल्ली, चूहा, ब्राह्मण और दिगम्बर। इनके बालों को लेकर आर्द्रा नक्षत्र में जिसके आवास-स्थल में डाल दिया जाय, तो उस उस घर में नित्य ही लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं।

३. वस्त्रविहीन होकर विशाखा नक्षत्र में नीम के पेड़ की उस जड़ को मुख से काटकर लायें, जिसकी शाखायें उत्तर दिशा की ओर फैली हुई हों। उस जड़ को जिसके आवास में प्रक्षिप्त कर दिया जाय, तो वह परिवार में कलह उत्पन्न हो जाता है। यदि उस जड़ को वहाँ से हटाकर अन्यत्र फेंक दिया जाय, तो उस परिवार का विवाद समाप्त हो जाता है। उसी नक्षत्र में सिहोर तथा बेर वृक्ष की गुठली लेकर जिसके घर में डाल दिया जाय, तो वहाँ नित्य ही कलह हुआ करता है।

४. जड़सहित ब्रह्मदण्डी और काकमाची (मकोय) को लेकर जातीपुष्प के रस में सात रात्रि तक बार-बार पीस लें। अब यदि इसे शत्रु के वंश में किसी को धूप के रूप में सूँघने के लिए दे दिया जाय, तो पिता-पुत्र में भी पारस्परिक कलह उत्पन्न हो जाता है।

गृहक्लेश शान्ति

१. एक पुतली का निर्माण कर उसके शरीर पर हरिताल को तक्र (मट्ठा) के साथ पीसकर लेपित कर दें, तो उसकी गंध सूँघने से ही मक्खियाँ भाग जाती है।

२. श्वेत आक (सफेद मदार) का दूध, कुल्माष (कुलथी), उड़द या कांजी और तिल। इनका चूर्ण बनाकर मदार के पत्ते पर रख देने से चूहे नष्ट हो जाते हैं।

३. हरिताल, बकरे का विष्ठा और मूत्र। इन्हें प्याज के साथ पीस डालें। इसे चूहे के शरीर पर लेपित कर जीवित छोड़ दें, तो अन्य चूहे भी उसे देखकर घर से भाग जाते हैं।

४. बिल्ली का मल और हरिताल। इन दोनों को पीसकर चूहे पर लगाकर छोड़ दें, तो उसकी गंध-मात्र से ही चूहे भाग खड़े होते हैं।

५. गन्धक, हरिताल, ब्राह्मी त्रिकुट (सोंठ, कालीमिर्च, पीपर) इन्हें बकरी के मूत्र में पीसकर चूहे पर लगा दें, तो सभी चूहे पलायन कर जाते हैं।

६. मघा नक्षत्र में सफेद मदार की जड़ और मुलेठी को किसी शुभ स्थान में स्थापित कर दें, तो मूषक और मधुमक्षिका की तुडं बँध जाती है।

७. गुड़ और तेल का दीपक दिखाने से चूहों का निवारण होता है। निम्नलिखित मन्त्र द्वारा हाथ को मिलाकर तीन बार ताली बजाने से चूहों और मच्छरों का विनाश होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'पूर्व ब्रह्मा में बद्धः पश्चिमे विष्णुर्मे बद्धः उत्तर रुद्रो मे बद्धः दक्षिणे यमो मे बद्धः पाताले वासुकी में बद्धः फणिसहस्रे बद्धः हूं अङ्गुष्ठाय नमः।'

८. अर्जुन वृक्ष के पुष्प और फल, लाख (लाक्षा), श्वेतचन्दन, गूगुल, श्वेतापराजिता (सफेद विष्णुकान्ता), भिलावाँ, वायविडंग (भाभीरंग), सर्जरस (राल)। इनका महीन चूर्ण बनाकर आग में धूप देने से घर के साँप, खटमल तथा चूहे आदि सभी विनष्ट हो जाते हैं।

९. गुड़, सफेद चन्दन या चावल, भिलावाँ, वायविडंग, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला) लाह का रस और मदार का पुष्प। इनके चूर्ण का धूपन करने से बिच्छू, साँपादि जीवों का निवारण होता है।

१०. मोथा, सरसों, भिलावाँ, करंज, क्रौंच के फल और गुड़। इन सबको चूर्णित कर मदार के फल और राल की भस्म मिलाकर धूपित करने से घर में रहने वाले खटमल, मच्छर, साँप, चूहे तथा विषैले कीड़े उसी प्रकार भाग जाते हैं, जिस प्रकार रणभूमि में कायर मनुष्य पलायित हो जाते हैं।

११. राल, कुड़ा, मेदा, अर्जुन वृक्ष की जड़, मरुआ (दौना) केतकी की जड़ और नखी नामक द्रव्य। इनका चूर्ण बनाकर धूप दिखाने से कीड़े, साँप, तथा मधुमक्खियाँ भाग जाती हैं।

१२. चारपाई में खटमल हो जाने पर कर्णिकार या अमलतास का फल बाँध देने से सभी खटमल मर जाते हैं। लाह, राल, खस और सरसों—ये सभी दुःखों के अपहारक हैं।

१३. सोमराज वृक्ष के पत्ते के अगले भाग की बत्ती बनाकर दीपक जलाने से खटमलों का विनाश होता है।

१४. भिलावाँ, वायविडंग, सोंठ, पुष्करमूल और जम्बू। इनके चूर्ण का धूप देने से घर के मच्छर भाग जाते हैं।

बुद्धि, स्मृति-शक्ति आदि को बढ़ाना

हरड़, पाठा, सोंठ, कालीमिर्च, सेंधानमक, वच (कुलंजन) एवं सहिजन)। इन

सभी वस्तुओं को एक-एक पल (४ कर्ष), घी बत्तीस पल तथा घी से चौगुना दूध डालकर एक साथ अग्नि पर पका लें। घृतमात्र शेष रहने पर उतार कर छान लें। इसे नित्य सेवन करने से वाणी, बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति का वर्धन होता है।

ब्राह्मीघृत

१. वच, ब्राह्मी फल, कूठ, सेंधानमक, तिल्ली नामक पौधे का फूल अथवा लाल चन्दन। इनका बारीक चूर्ण बनाकर मंडूकषर्णी और ब्राह्मी के रस में भिंगों दें। इसे एक दिन पकाकर इसके कल्क से चौगुना घी मिला दें। घी की मात्रा से चौगुना गोदुग्ध और ब्राह्मीबूटी डाल दें। जब रस सूखकर केवल घी-मात्र शेष रह जाय, तो उतार कर सेवन करें। इस घृत को चाटने की मात्रा तीन माशे निर्धारित की गयी है।

२. दोनों हल्दी (हलदी एवं दारुहलदी), वच, कूठ, पीपल, सोंठ, जीरा, अजमोदा और मुलहठी। इन सबको कूटकर चूर्ण बना लें और घी के साथ एक कर्ष (१६ माशे) परिमाण में लेने से वाक् सिद्धि होती है। एक मास तक निरन्तर सेवन करने वाला देवगुरु बृहस्पति के समान प्रखर वक्ता बन जाता है।

३. ब्राह्मी, मुण्डी (गोरखमुंडी), वच, सोंठ और पीपल। इनका चूर्ण एक कर्ष शहद के साथ भक्षण करने वाला व्यक्ति निःसंदेह रूप से स्पष्ट वक्ता बन जाता है।

४. वच की मींगी (ऊपरी छिलका), हिंगुपत्री, भद्रमोथा, मुसली, मुलेठी, खिरेंटी और चिचिड़े का पंचांग (पत्र, पुष्प, फल, जड़ और छाल) इनका चूर्ण मधु के साथ एक कर्ष चाटने से पूर्ववत् फल मिलता है।

५. वच, सोंठ, वायविडंग (भाभीरंग), शंखपुष्पी, शतावरी, गुडूची (गुरुच) और हरड़। इन सब वस्तुओं को बराबर की मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन एक कर्ष चूर्ण घी के साथ सेवन करने वाला सहस्रों ग्रन्थ का धारक बन जाता है।

६. असगन्ध, अजमोदा, पाठा, कूठ, त्रिकुटा (सोंठ, कालीमिर्च, पीपल), सौंफ और सेंधानमक। इन सब वस्तुओं को समान भाग में ग्रहण कर लें। इनके चूर्ण के आधे भाग में वच (कुलंजन) ले लें। इस चूर्ण को मधु और घी में मिश्रित कर एक कर्ष भक्षण करें तथा ऊपर से दुग्धाहार लें तो ऐसा व्यक्ति वाक्पति बन जाता है।

७. ज्योतिष्मती (मालकंगनी) के तैल को खिरेंटी और वच के साथ चाटना चाहिये। थोड़ी-थोड़ी मात्रा प्रतिदिन बढ़ाते जायँ। इसकी मात्रा बढ़ाकर चार निष्क (प्राचीन तौल) तक कर दें। वातरहित स्थान में रहकर शहद का सेवन करते रहें तो कवित्व की शक्ति आ जाती है।

८. सूर्य या चन्द्रग्रहण में मंत्रोच्चारपूर्वक वच का बन्दा ग्रहण कर उसका सूक्ष्म चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को एक सप्ताह पर्यन्त घृत मिलाकर खाने से वाणी का अधीश्वर बन जाता है।

इत्येवमादि योगानां मन्त्रराजः शिवोदितः।
जप्त्वायुतं च सिद्धिः स्यात्पश्चात्तैरेव भक्षयेत्।।
'ॐ ह्रूं हयशीर्षवागीश्वराय नमः।'
धात्रीफलरसैर्भाव्यं वचाचूर्ण दिनावधि।
घृतेन लेहयेन्निष्कं वाक्शुद्धिस्मृतिबुद्धिकृत्।।

उक्त योगों की सिद्धि के निमित्त शिवजी द्वारा कथित मन्त्र इस प्रकार से हैं—

'ॐ ह्रूं हयशीर्षवागीश्वराय नमः।'

९. उक्त मन्त्र को दश सहस्र बार जप करने से मन्त्र की सिद्धि मिलती है। लिखित मन्त्र के द्वारा ही उक्त पदार्थों का भक्षण करें। वच का चूर्ण आँवले के रस में एक दिन तक भिंगों दें। पुनः उसे एक निष्क की मात्रा में घी के साथ चाटने से वाणी का शुद्धिकरण होता है। स्मृति-शक्ति बढ़ती है।

१०. पूर्वलिखित मन्त्र को पढ़कर वच का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से वाक्पति बनता है।

११. उक्त चूर्ण के एक सप्ताह तक सेवन करने वाला व्यक्ति वेदों को कंठस्थ करने में सक्षम हो जाता है। अथवा वच का चूर्ण घृत और शहद के साथ चाटने से भी बुद्धि प्रखर हो जाती है।

गले को सुरीला करना

१. बहेड़ा, पीपल, सोंठ, सेंधानमक और तज। इन्हें समान भाग में लेकर गोमूत्र के साथ एक कर्ष परिमाण में पान करने वाला किन्नरों के साथ सहगान में समर्थ हो जाता है।

२. जातीवृक्ष के पत्ते, जीरा, धान का लावा और बिजौरा नीबू के पत्ते। इन्हें मसलकर आठ तोले शहद के साथ चाटने पर कंठस्वर किन्नरों की अपेक्षा अधिक सुरीला हो उठता है।

३. देवदारु, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, जीरा, सौंफ पत्रज, हल्दी वच, सेंधानमक और सहिजन की जड़। इन सब वस्तुओं का सम भाग में चूर्ण बनाकर घृत के साथ एक कर्ष की मात्रा में महीने भर तक चाटने से कण्ठस्वर का शुद्धिकरण होता है। ऐसा व्यक्ति किन्नरों के साथ भी गायन में समर्थ हो जाता है।

४. सोंठ के चूर्ण में मिश्री और शहद डालकर वटी बना लें और उसका सेवन करें तो स्वर अत्यन्त सुरीला हो जाता है।

५. अदरक, भाँगरा, दालचीनी, अडूसा, ब्राह्मी और वच। इनको समान भाग में चूर्ण बनाकर जल के साथ पान करें। इसे प्रति मास कृष्णपक्षीय चतुर्दशी तिथि में चौदह दिनों तक लगातार पान करें तो स्वर गंधर्वों के समान मनमोहक हो जाता है।

६. निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण तिलतैल के साथ चाटने से गले में स्वच्छता आती है, जिसके परिणाम स्वरूप वह किन्नरों के साथ भी गान कर सकता है।

७. बिभीतक (बहेड़ा), जीरा, सोंठ, सेंधानमक और दालचीनी। इन सभी वस्तुओं को बराबर की मात्रा में लेकर पीस डालें और इसे गोमूत्र के साथ मिलाकर दो तोले (लगभग २५ ग्राम) की मात्रा में पान करता रहे तो वह स्वरसाधक किन्नरों के साथ गायन करने की भी क्षमता पा लेता है।

नेत्रशक्ति वर्द्धन

वर्षाकाले काकमाची समूला तैलपाचिता।
खादेत्समासतश्चक्षुर्गृध्रदृष्टिसमं भवेत्।।
श्वेतं पुनर्नवामूलं घृतघृष्टं सदाञ्जयेत्।
जलस्रावं निहत्याशु तन्मूलं तु निशायुतम्।।
अञ्जने चक्षुरोगाश्च न भवन्ति कदाचन।।

१.वर्षाऋतु में काममाची (मकोय) के समूचे पौधे को तैल में पाचित कर एक महीने तक सेवन करें तो दृष्टि पक्षी के समान हो जाती है। अर्थात् वह दूर की वस्तुएँ भी सहजता से देख सकता है।

२. श्वेत पुनर्नवा (सफेद गदहपूरना) की जड़ को घी में पीसकर लगाने से आँखों से पानी आना बन्द हो जाता है। यदि इसी की जड़ को दारुहलदी के साथ नेत्रों में लगाया जाय, तो किसी प्रकार के नेत्ररोग की सम्भावना नहीं रहती।

३. दोनों हलदी, सेंधानमक, त्रिकुटा (सोंठ, कालीमिर्च, पीपल) और करंज के बीज। इन्हें समान परिमाण में लेकर अतीस के रस में वत्ती बनाकर आँखों में लगाने से आँखों की पुरानी फूली भी कट जाती है।

४. भुइँ आमले की जड़ (भूमि पर फैलने वाली आँवले की तरह एक लता) को लेकर बकरे के मूत्र में पीसकर मक्खन के साथ बत्ती बनाकर नेत्रों में लगाने से फूली दूर होती है। अथवा सोनामक्खी में मधु मिलाकर आँजने से भी फूली का नाश हो जाता है।

५. कालीमिर्च को चूर्णित कर उसकी बत्ती का प्रयोग नेत्रों में करने से रतौंधी (रात्रि में दिखलाई न पड़ना) रोग का निवारण होता है। अथवा जयन्ती या हरड़ को पीसकर आँखों में लगाने से रतौंधी जाती रहती है। इस प्रयोग के द्वारा रक्तविकार, चर्मविकार और मांसवृद्धि जैसे रोगों से भी छुटकारा मिलता है। काले बकरे के मांस में पीपल और कालीमिर्च मिला लें, तत्पश्चात् उसे घी में एक घण्टे तक पकाकर उसकी गोली बना डालें। पुनः उस गोली को शहद, घी या स्त्री के स्तन-दुग्ध में घिसकर आँखों में लगायें तो रतौंधी नामक रोग दूर होता है।

६. बकरे के पित्त में स्थापित सोंठ, कालीमिर्च और पीपल। इन्हें धूप युक्त स्थान में रखकर सुखा लें। पुनः इसे करंज के रस में घिसकर नेत्रों में लगाने से रतौंधी दूर हो जाती है।

७. श्वेत पुनर्नवा को घृत के साथ प्रयोग करने से नेत्रों की फूली, शहद के साथ आँखों से पानी आना, तैल से खुजली (नेत्रों की), जल के द्वारा तिमिरान्ध और कांजी के साथ लगाने से रात्र्यन्ध दूर होता है।

८. हरड़, वच, कूठ, पीपल, कालीमिर्च, बहेड़ की मींगी, शंखनाभि तथा मैनसिल। उपर्युक्त वस्तुओं को समान परिमाण में लेकर गोदुग्ध में पीसकर नेत्रों में लगाने से तिमिरादिक रोग, नेत्रार्बुद, दो वर्षों की पुरानी फूली, मांसवृद्धि तथा रतौंधी। उक्त सभी प्रकार के रोग एक महीन में ही नष्ट हो जाते हैं। मानवदृष्टि का निर्मल करने वाली इस चन्द्रोदय नामक वटी को छाया में सुखाकर प्रयोग करना चाहिये।

९. जो मानव समुचित आहार-विहार का पालन करते हुए त्रिफला का चूर्ण, घृत और मधु के साथ (घी तथा मधु का प्रयोग समान भाग में कदापि नहीं करना चाहिये। अन्यथा वह विषतुल्य हो जाता है) प्रतिदिन सायंकाल सेवन करता है, उसके समस्त नेत्ररोग उसी प्रकार दूर हो जाते हैं, जिस प्रकार दरिद्री व्यक्ति के सेवकगण उससे दूर हट जाते हैं।

बहरापन दूर करना

१. चिरचिटे को खारे जल से अथवा इसी के साथ तिलतैल का कल्क बनाकर कानों में डालने से बहरापन का निवारण होता है।

२. दशमूल (बेल, सोनापाठा, खम्भारी, पाढल, अरणी, सारिवन, पिठवन, छोटी कटेरी ओर गोखरू—इन दशसमूहों को दशमूल कहा गया है) के क्वाथ को एक किलोग्राम तिलतैल में पाचित करें। जब तैलमात्र शेष रह जाय, तो उतार कर छान लें। इस तैल को कानों में टपकाने से बधिरता का नाश होता है।

३. नीली नामक पौधी की जड़ कांजी (मट्ठा) में मिलाकर तिलतैल में पक्व कर लें। किंञ्चित् गरम रहने पर ही उन्हें कानों में डालने से कर्णकृमि नष्ट हो जाते हैं।

४. धव, सोनामक्खी और पलाश की जड़ इन्हें दाँतों से चबाकर उनका रस कानों में डालने से गोमक्षिका नामक कीड़ा विनष्ट हो जाता है।

५. ताम्बूल खाकर सेवन करने से कानों के कीड़े अवश्य ही मर जाते हैं। मुसली और बाकुची का चूर्ण बनाकर खाने से भी बहरेपन का नाश होता है।

६. अपामार्ग (चिचिड़ा) का मूल और मैनसिल का चूर्ण शहद के साथ मिलाकर एक कर्ष की मात्रा में भक्षण करने से सुनाई पड़ने लगता है।

७. लहसुन, आमला और हरताल। इन्हें एक साथ पीसकर लुगदी बना लें। इसके परिमाण से चौगुना तिलतैल तथा तैल से चौगुना दूध डालकर आग पर पका लें। जब सभी रस सूखकर केवल तैलमात्र शेष रह जाय, तो उतारकर कपड़े में छान लें। इसे २-४ बूँद कानों में डालने से कानों का बहराषन ठीक हो जाता है।

दाँतों को सुदृढ़ बनाना

१. इमली, जयन्ती, सरफोंका और कनेर की जड़। इनका चूर्ण वनाकर मंजन करने से हिलते हुए दाँत मजबूत हो जाते हैं।

२. हरड़ का चूर्ण और शहद। इन्हें अल्प समय तक ताँबे के पात्र में पकाकर गोली बना लें। पुनः इस गोली को दाँतों के नीचे दबायें तो दन्तकृमि का नाश होता है।

३. सेंहुड़ (थूसर) की या कसीस की जड़ को दाँतों में दबाने से दाँतों के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। इन्द्रायण और महेन्द्रवारुणी का चूर्ण एक पल की मात्रा में लेकर गरम लोहे के बर्तन पर डाल दें और उसका धुआँ दाँतों में लें तो दाँतों के कृमि नष्ट होते हैं।

४. नित्यप्रति प्रातःकाल जातीफल और कंकोल मिर्च की पत्तियों को चवायें तो हिलते हुए दाँत पुनः दृढ़ हो जाते हैं। इन्हीं वृक्षों के काष्ठ का दतुअन भी बनाकर करना चाहिये।

५. घुँघुची की जड़ को कानों में बाँध लेने पर दाँतों के कीड़े मर जाते हैं। एक रुपये भर पारा, जम्बीरी के रस में मसल लें। पुनः उन्हें जम्बीर नीबू में रखकर ऊपर से कपड़ा लपेट दें। अब उसे तीन दिनों तक दूध डालकर पकायें और पकाने के बाद उसकर वटी बना लें। इसे कालीमिर्च, मदार के दूध और हरिताल के साथ महीन पीसकर पुनः गोली बनाकर तीन दिनों तक कपड़े में बाँध रखें। तदनन्तर मधुपूरित पात्र में उसे रख छोड़ें। इसे हिलते हुए दाँतों पर रगड़ने से वे स्थिर हो जाते हैं।

६. सर्वप्रथम मदार के दूध में एक दिन तक हरिताल को घोंटे, पुनः उसे पारे के साथ लुगदी करके एक स्थान में रख दें और जम्बीर नीबू में रखकर तीन दिनों तक दोलायन्त्र (विशेष प्रकार का चूल्हा) में पाचित करें। पुनः इसे शहद और तैल मिलाकर किसी बर्तन में भर दें। इसे दाँतों पर मलने से सभी दन्तरोगों का निवारण होता है।

७. मौलसिरी के बीज को गरम पानी में पीसकर मुख में धारण करने से चलायमान दाँत अपने स्थान पर पुनः स्थिर हो जाते हैं। यदि मौलसिरी वृक्ष की छाल का काढ़ा बनाकर किंचित् उष्ण रहने पर उसे मुख में भर लेने से एक सप्ताह के अन्दर ही दाँतों में दृढ़ता आ जाती है। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिये।

गण्डमाला रोकना

१. मेद (चरबी) और कफ प्रकोप के परिणामस्वरूप कुक्षि (कोख), स्कंध,

मन्या नाड़ी, नाड़ के पृष्टबाग, वंक्षण स्थान तथा गले में बेर फल के आकार वाली गाँठों का एक समूह उत्पन्न हो जाता है। ये गाँठें धीरे-धीरे पकती रहती है। इंन्हें ही गण्डमाला या स्क्रोफुला के नाम से जाना जाता है। इसके लिए कचनार वृक्ष की छाल का काढ़ा करके उसमें सोंठ का चूर्ण मिलाकर पान करें तो एकबारंगी ही कंठमाला का विनाश हो जाता है। अथवा वरुणा की जड़ का क्वाथ बनाकर मधु के साथ पीने से पुरानी गण्डमाला भी शीघ्र ही दूर हो जाती है।

२. मदार की लकड़ी का पीढ़ा बनाकर उस पर बैठें और घृत के साथ धीरे-धीरे भोजन करें तो वह भीमसेन के समान अधिक मात्रा में भोजन कर सकता है।

३. सायंकाल आम के वृक्ष को अभिमंत्रित कर प्रात:काल उसकी बौर की माला शिरपर धारण करने पर प्रचुर परिमाण में खाया जा सकता है भोजन-काल में कौपीन वस्त्र का परित्याग कर देना चाहिये। (कहीं-कहीं आम्रवृक्ष के बदले प्लक्ष वृक्ष को अभिमंत्रित करना कहा गया है, जिसका अर्थ पाकड़ या पाकड़ी का वृक्ष होता है।)

४. मूषाकर्णी पत्तों के साथ रेणुका श्वानदंत कटिप्रदेश में बाँधने वाला व्यक्ति भोजन में भीमसेन के समान बन जाता है।

५. मंत्रज्ञ व्यक्ति को मन्त्रोच्चार करते हुए बहेड़े के पत्तों को अपनी दाँयीं जाँघ के नीचे दबाकर भोजन करने से अत्यधिक भोजन होता है। उपर्युक्त योगों के प्रयोगकाल में नीचे लिखे मन्त्र का जप करे, जो इस प्रकार से है—

'ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषय शोषय भैरवी आज्ञापयमि स्वाहा।' उक्तयोगानामयं मन्त्रः।

भूख-प्यास रोकना

गिरगिट की आँत और करंज के बीजों की मींगी (गूदा) निकालकर पीस डालें। पीसने के पश्चात् उसकी गुटिका बनाकर सोने-चाँदी या ताँबे में मढवा कर मुख में मन्त्रोच्चारपूर्वक रखने से भूख-प्यास नहीं सताती। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ सां सां शरीरममृतमाकर्षय स्वाहा।' (इसमें कहीं-कहीं शां चां का पाठ भी मिलता है)।

कमलगट्टे की गिरी और महाशालि नामक धान्य को बकरी के दूध में खीर की तरह पका लें। इस खीर में घी मिलाकर खाने से बारह दिनों तक मानव को भूख-प्यास का अनुभव नहीं होता।

लकवा का टोटका

किसी भी रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के समय एकदम सम्पूर्ण काले घोड़े की नाल निकलवाकर उसकी अँगूठी या कड़ा बनवाकर रोगी को पहना देने से उसे जीवन में कभी भी लकवे (पक्षाघात) का प्रकोप पुनः न होगा। यदि लकवा होने के

आसार दिखलाई पड़ जाये तो पहले से ही कथित वस्तु पहना देने से लकवा से वचाव हो सकता है।

मस्सों पर टोटका

शरीर पर जितने तिल हों, उतने ही साबुत उड़द के दाने रविवार की रात्रि काले कपड़े बीच में गाँठ बाँधकर इधर-उधर दो खाली गाँठें और लगा दी जायें। अब इस कपड़े को सिरहाने रखकर व्यक्ति सो जाये। प्रात: तड़के बिना किसी से बोले, टोके, कपड़े को जमीन पर बिछा ले और तीन बार उस पर चले। फिर चुपचाप कपड़े को कुएँ में फेंक दें। उड़द के दाने सड़ते जायेंगे और मस्से सूखते जायेंगे।

ज्वर नाशक टोटका

रविवार को आक की जड़ उखाड़कर कान में बाँधने से अनेक प्रकार के ज्वरों में लाभ मिलता है। इसी दिन प्रात:काल बिना टोके निर्गुण्डी और सहदेई की जड़ को कमर में बाँधने से भी ज्वर शान्त होता है। चौलाई की जड़ शिर में बाँधने से प्रत्येक प्रकार के असाध्य ज्वर में आशातीत लाभ मिलता है।

कीटाणु से रक्षा के लिए टोटका

जन्म लेने के तुरन्त बाद शिशु के शरीर पर मेंहदी का लेप करके कुछ समय पश्चात् नहलाने से उसकी त्वचा कीटाणु रक्षक बन जाती है। उसकी त्वचा पर किसी भी संक्रामक रोग का प्रभाव नहीं हो पाता। इसी प्रकार चेचक के रोगी तलुओं में मेंहदी का लेप करते रहने से रोगी के नेत्र सुरक्षित रहते हैं।

आधा सिरदर्द पर टोटका

सूर्योदय के साथ ही आधे सिर में सिरदर्द कितना असहनीय होता है। इसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। प्रात:काल चौराहे पर बिना किसी के टोटके दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके गुड़ की डली दाँत से काटकर फेंकने से आधा सिर का दर्द चला जाता है।

प्रसव पीड़ा पर टोटका

प्रसव पीड़ा महिला की कमर में नीम की जड़ अथवा साँप की केंचुली बाँधने से तुरन्त पीड़ा में राहत मिलती है और सुगमता से प्रसव भी हो जाता है। लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक रखकर गर्भिणी के बाँयें हाथ में बाँधने से भी आराम मिलता है।

कनखजूरे के काटने पर टोटका

कनखजूरे के काटे हुए स्थान पर नीम की पत्तियाँ और सेंधा नमक एक पात्र में पीसकर लेप करना लाभप्रद है।

अग्नि देवता प्रकट करना

कई सयाने लोग हवन कुण्ड में आग प्रकट करके यज्ञ करके यज्ञ करते हैं

और कहते हैं कि यह मन्त्रों की क्रिया है, इसका रहस्य यह है—बूरा चीना+पोटेशियम क्लोरेट मिलाकर धरती पर आटे की भाँति फैला दें और इसके बाद इन पर सूखी लकड़ी रखें। एक कटोरी में लौंग व चावल गन्धक के तेजाब से भिंगोकर रखे। किसी चम्मच से यह लौंग और चावल वहाँ डाल दें, तुरन्त आग उत्पन्न होगी।

पुत्र से पुत्री होने का टोटका

नीम्बू वृक्ष की जड़, चावल के पानी से गर्भवती औरत को पिलाये तो जिसके पुत्र होता है, उसके पुत्री होगी।

पेट के कीड़ों पर टोटका

नीम के फल (निम्बोली) पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

दस्तों व उल्टी पर मन्त्र

बच्चों को उल्टी व दस्त बेहिसाब लगती हो तो रविवार को बच्चे के सिर पर से गेहूँ का आटा सात बार उतारे व एक पानी का लोटा भी सात बार उतारे। घर के बाहर कहीं भी कैसी भी हड्डी पड़ी हो, उसके ऊपर वह आटा डालकर लोटे के पानी से हड्डी के चारों ओर घेर दें। अगर इससे भी फर्क न पड़े तो दिन में तीन बार यह क्रिया करें, तुरन्त फायदा होगा।

कामण नष्ट करने का टोटका

यदि कोई राई अभिमन्त्रित कर चुपके से मकान-दुकान में फेंकता हो या कोई अन्य कामण-टुमण करता हो, ऐसी अवस्था में जिस व्यक्ति को आपने कामण-टुमण करते हुए देख लिया हो या जिस पर आपको शत-प्रतिशत शक हो, उससे अपने मकान के मुख्य द्वार की देहली सात बार चटवा लें तो उसके द्वारा किये गये कामण-टुमण स्वत: ही समूल नष्ट हो जाते हैं।

हाथ में सिक्का जलाना

मरकरी क्लोराइड या दाल चिकना (२ या ३ रत्ती) लेकर राख या मिट्टी में मिलाकर किसी से कहो कि दस पैसे का सिक्का उससे अच्छी तरह मांज़ ले, फिर स्वच्छ पानी से साफ कर ले। उसके बाद सिक्के उसके हाथ में दे दो। सिक्का धीरे-धीरे इतना गर्म होगा कि व्यक्ति हाथ से फेंक देगा। ध्यान रहे, यह प्रयोग केवल एल्युमिनीयम के सिक्के व कटोरी पर ही होता है।

गर्भ स्थापन-औषध स्नान

नीम, कुटकी, हरड़, बला गंगेरन, अमोधा, गेंदा, सफेद दूब, काली दूब, लक्ष्मणा, प्रियंगु, सतावार इनका रस दाहिने हाथ से दाहिनी नासिका में टपकाये और

दाहिने कान तथा दाहिने हाथ में धारण करे। इन्हीं औषधों द्वारा सिद्ध किये हुए दूध-घी का सेवन करे तथा इन्हीं से औटाये हुए जल में प्रत्येक पुष्य नक्षत्र में स्नान करे, तो अवश्य गर्भ स्थिर हो जाता है।

मासिक धर्म के लिए टोटका

नीम की छाल २ तोला, भंगरैया २ तोला, सोंठ ६ मासे, पुराना गुड़ २ तोला—चारों चीजें पाव भर में पकावे। आध पाव पानी शेष रहने पर उतारकर शीतल कर ले और छान ले। इसके नियमित सेवन से मासिक धर्म खुल जाता है।

नजर उतारने के टोटके

१. नमक, राई, बाल, लहसुन, प्याज के सूखे छिलके, सूखी हुई मिरची को अंगारों पर डालें और वह अंगारे नजर लगे व्यक्ति पर सात बार उतारकर फेंक दे। यदि जलने पर बदबू आवे तो ठीक, न आने पर नजर लगी है, ऐसा पक्का समझें।

२. हनुमान जी के मन्दिर में जाकर हनुमानजी के कंधों पर का सिन्दूर लाकर शनिवार को नजर लगे व्यक्ति के भाल प्रदेश पर लगावे।

३. गेहूँ के आटे से दिया बनावे। काले धागे की ज्योति जलावे। उस ज्योति में दो लाल मिरचें रखे और उस दिये को नजर लगे व्यक्ति पर से उतारे।

गृह कीलन मन्त्र

अगड़ बम बज्र का कड़ा लोहे का कील, ते में झूले हनुमन्त वीर, वीरै आवै वीरै जाये वीरै मित्र तुम मेरे भाई, अपने गुरु का वाचा छोड़ मेरे गुरु का वाचा राख, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती की दुहाई।।

विधि–चार लोहे की कीलों को दमकर या अभिमन्त्रित करें। फिर उपरोक्त मन्त्र से घर के चारों कोनों में गाड़ दें और अहाते के अन्दर तेली और धोबी को न घुसने दें।

भिलावा निरवा झाड़ने का मन्त्र

टीप टीप खाप खाप अर्रा मर्रा सूख साख मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी के ऊपर से राख उतार कर राख पर सात बार फूँक मारे, भिलावा से हुए फोड़े व निनवा रोग ठीक हो जाता है।

दूध उतारने का मन्त्र

पहाड़ पर्वत कोदो धान उतरे मोरे परेधान मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–एक हाथ में ककई और बाल तथा दूसरे में राखड़ लेकर मन्त्र को पढ़-पढ़कर सात वक्त स्तन को झाड़ा दे। ऐसा तीन समय करे तो दूध उतर जाता है।

कुसका झाड़ना मन्त्र

१. चोर चोर कहाँ आय हाथी के कान मारू बसेड़ा भाग रे चोर इसी दम भाग जा, मेरी आन मेरे गुरु की आम ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपले की राख से, उपरोक्त मन्त्र को पैंढ़-पढ़कर सात बार फूँक मारें, ऐसा तीन समय करें। जिसे कुसका हो गया हो, उसे एकदम झाड़ने के बाद जल्दी ही उठने को कहें तथा वह उसके पैर और हाथ तुरन्त ही झटके, आराम होगा।

२. कारी छेरी करगहीं करिया बैठो चोर, गौरा कहें महादेव से करिया को मार निकालो चोर, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपले (कण्डी) की राख से उपरोक्त मन्त्र द्वारा सात बार फूँक मारे। ऐसा तीन समय करे, आराम होगा।

३. कारी छेरी लम्बथनी बाग-बाग कर हैं या नन्द बाबा बिराजे मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपले की राख से उपरोक्त मन्त्र द्वारा सात बार मन्त्र से झाड़े। ऐसा तीन समय करे, आराम होगा।

४. बाँस के भैड़ों में बैठों चोर फटी फोर भगो चोर मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपले की राख से उपरोक्त मन्त्र द्वारा सात बार पढ़-पढ़कर फूँक मारे। ऐसा तीन समय करे, आराम होगा।

आँख झाड़ने का मन्त्र

काला बैल, काला बैल की चार आँखें, दो लाल, दो काली लाल जा काली आ मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–दो भिलावाँ के फर (फल) लेकर उपरोक्त मन्त्र को सात बार पढ़-पढ़कर सात वक्त आँख से छुवाये और छुवाकर उस रोगी के पीछे की तरफ फेंक दे। ऐसा तीन समय करे, रोगी की आँखों में आराम हो जायेगा।

आँचल झोड़नी मन्त्र

ऊँचो पीपर जरजरों गैया चरै नौ सौ साठ आँचल का फोड़ा सूख साख, इसी दम भस्म हो मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–जिस स्त्री के किसी स्तन में फोड़ा हो गया हो या दर्द रहता हो, तो यदि उसका दायाँ स्तन है तो उसके दाँयें स्तन के ऊपर से राख उतरवा कर अपने विपरीत स्तन यानी बायें स्तन से उतार कर उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए उस राख में सात वक्त फूँक मार दे। दर्द में तुरन्त आराम हो जायेगा, फोड़ा हो गया हो तो सूख जायेगा तथा आराम हो जायेगा, परन्तु तीन समय झाड़ना जरूरी है।

आँचल झाड़ना मन्त्र

ऊँची नीची टेकड़ी किसन चरावे गाय, आँचल झाड़े आपनो पीर पराई आये। इसी वक्त 'अमुक' बाई का स्तन का फोड़ा सूख साख भस्म हो मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–जिस स्त्री के आँचल में जिस आँचल में फोड़ा हो गया हो उसका नाम पूछ ले। फिर 'अमुक' की जगह उस बाई का नाम लेकर अपने विपरीत आँचल से कण्डी की राख उतार कर सात फूँक मार दें, तुरन्त आराम हो जायेगा।

आधाशीशी का मन्त्र

लोहे का धनुआ कुश का तीर उतर उतर अधोखा मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को सात बार पढ़ते हुए आधाशीशी वाले व्यक्ति के सिर को पकड़ कर (जिसका आधा सिरदर्द करता है) सात बार सिर पर फूँक मारे, तुरन्त सिर का दर्द दूर होगा।

आँख झाड़ने का मन्त्र

सोने की सिलौटी रूपे का जीरा सीता माता बाटै बैठी छर काटें छर बाँटे, फूली काटे, माड़ा काटें, लाली काटे, आँखी न काटे, डोरा काटें, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी की आँखों में सात बार फूँक मारे ऐसा तीन समय करे, आराम होगा।

चौकी देने का मन्त्र

आस राखों पास राखों दस राखो दरवाजे, हनुमान की चौकी राजा रामचन्द्र की रखवाली मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–जब कोई कार्य करने के लिये आप अपने घर से निकलें तब उपरोक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़कर घर से बाहर निकलें और कार्य करें। परन्तु यह ध्यान रखें कि दुबारा फिर उपरोक्त मन्त्र को न पढ़ें, क्योंकि घर से निकलने के वक्त पढ़ने से घर का बन्धन हो जाता है और स्वयं के शरीर का भी बन्धन हो जाता है। बाहर यदि आप

कहीं भी यह मन्त्र पढ़ेंगे तो घर से उनकी चौकी हट जायेगी। तब ऐसी हालत में यह भी हो सकता है कि कोई दुष्टात्मा प्रेत आपके घर पर वार कर दे।

आँख दर्द पर मन्त्र

श्री रामचन्द्र का धनुष लक्ष्मण का बाण, आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुँवर की आन, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए सात वक्त रोगी की आँखों पर फूँक मारे तो रोगी की आँखों का दर्द तुरन्त जाता रहेगा और रोगी को आराम हो जायेगा। उपरोक्त मन्त्र को होली, ग्रहण या दीपावली में जपकर सिद्ध कर ले।

बिना चाभी के ताला खुलने का मन्त्र

रविवार के दिन दोपहर के समय नंगा होकर चील और कौवा का घोंसला ले आये और उन्हें गुग्गुल की धूनी देकर उसकी भस्म बना लें। फिर उस भस्म को जिस किसी बन्द ताले पर आप डालेंगे, वह ताला बिना चाभी के ही खुल जायेगा।

वशीकरण मन्त्र

रविवार या बुधवार के दिन युक्तिपूर्वक यदि स्त्री अपने बाँयें अंग का मैल, मतलब यह कि पैर से लेकर सिर तक का मैल निकाल कर या पुरुष अपने बाँयें अंग का मैल सिर से पैर तक निकाल मकर, हाथ शरीर से उठने न पाये और मैल निकल जाये और कोई स्त्री-पुरुष को खिला दे तो वह खिलाने वाले के वशीभूत हो जाते हैं। अनुभूत एवं परीक्षित मन्त्र है।

मोहिनी मन्त्र-१

यदि कहीं पर मधुमक्खी लगी हुई दिखे तो उन मधुमक्खियों को इस तरह से पकड़ें कि उनमें एक भी मक्खी उड़ने न पाये और सबको जान से मारकर भस्म बना ले। बनाने के बाद जब प्रयोग करना हो, उस भस्म को जिसे वश में करना है, उसके कपड़ा वगैरह में लगा दो, वश में हो जायेगी, जैसा कहोगे वैसा करेगी। यह बहुत ही उत्तम एवं परीक्षित मन्त्र है। यह कार्य भी रविवार या बुधवार को ही करें।

मोहिनी मन्त्र-२

गौरैया चिड़िया जिसे घरेलू चिड़िया भी कहते हैं। प्राय: ये हर घरों में घोंसला वनाती है। घोंसलों में से एक-एक चिड़वा-चिड़वी या जो भी हाथ लगे दो अलग-अलग घोंसलों से पकड़ लें और उन्हें अलग-अलग रंगों से रंग दें। फिर उन दोनों चिड़ियों को अपने गाँव से सात-आठ मील की दूरी पर छोड़कर आ जायें और घर आकर उन्हें निहारते रहें कि पहली कौन-सी चिड़िया आई और बाद में कौन-सी आई। फिर सुबह

उन दोनों चिड़ियों को मारकर उनके ही घोंसले के नीचे घोंसले सहित अलग-अलग जला लें, फिर उस भस्म को उठाकर रख लें। फिर जब किसी को मोहित करना हो तो चिड़िया सबसे पहले आई थी उसका भस्म जिसे लगा देंगे, वह उस लगाने वाले के पास स्वयं अपने आप चली आयेगी और जब बाद में आने वाली की भस्म लगा दोगे तो वह किसी भी तरह से आपसे लड़-झगड़ कर अपने आप चली जायेगी। अनुभूत एवं परीक्षित मन्त्र है।

दुखती आँख ठीक होने का मन्त्र

समुद्र समुद्र में खाई इस मर्द की आँख आई, पाके न फूटे करे न पीड़ा, गुरु गोरखनाथ राखे पीड़ा मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्रों को पढ़ते हुए रोगी की आँखों में सात बार फूँक मारे तो आँख का दर्द बन्द हो जाये, तीन समय झाड़ा देवे, आँख में पूर्ण आराम हो जायेगा।

जुआ जीतने का मन्त्र-१

जिस दिन रविवार हो उस दिन हस्त नक्षत्र पड़ रहा हो तो पहले शनिवार की शाम को पवाँर वृक्ष (तीती, चकौड़ा या चिरौंटा) कहते हैं, को निमंत्रण देकर कहें कि सुवह मैं आपको ले चलूँगा तथा जुआ जीतने का यन्त्र बनाऊँगा कृपया मेरा न्यौता स्वीकार करो। ऐसा कह दो अगरबत्ती जलाकर चावल को हल्दी में मिलाकर उस वृक्ष पर छोड़ दें। फिर रविवार को सूर्योदय से पूर्व जाकर ले आये, आते-जाते पीछे मुड़ कर न देखें और न ही किसी से बात करें, लाकर घर के अन्दर सीधे घुस जायें और गूगुल को धूनी दें, फिर पीछे पलट कर देख सकत हैं। फिर वह वृक्ष यदि छोटा है तो तावीज में भरकर अपनी दाहिनी भुजा में बाँधकर जुआ खेलें तो अवश्य ही जुए में जीत होती है।

जुआ जीतने का मन्त्र-२

जिस दिन रविवार को हस्त नक्षत्र पड़े तब उसके पहले शनिवार की शाम को लाजवन्ती (लपचा, लजनी) के वृक्ष को निमंत्रण दे आयें और कहें कि मैं तुम्हें ले चलूँगा और जुआ जीतने का यन्त्र बनाऊँगा और जो कुछ जुआ में जीतूँगा वह दान कर दूँगा। ऐसा कह चावल के दाने हल्दी सहित उस वृक्ष पर छोड़ अगरबत्ती जला वापिस घर आ जायें। आते-जाते पीछे फिर न देखें और न ही किसी से बात करें। फिर रविवार सूर्योदय से पहले जाकर उसकी कुछ पत्ती तोड़ कर ले आयें और गूगुल की धूनी दें और तावीज में भरकर दाहिनी भुजा में बाँध कर जुआ खेलें तो जुए में अवश्य ही जीत होगी परीक्षित तन्त्र है। नीचे लिखे मन्त्र को दस हजार बार जपें।

ओऽम् नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं वानरी विजय पयति स्वाहा।।

लोना चमारिन की विद्या

१. सरस्वती माता त्रैलोक्य वरदायनी माता भवानी आकार होवो सहाय, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

२. सन सन वाली सना की बहनी घट मानू मंगलवार इसी वक्त सुजीव मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

३. धन बाई धन चले जामा और मन सक की हाडी आन देखरे मेरी चण्डी माँ के चौड़ा वीर दादू वीर चौधरी कावड़ देश के रहने वाले इसी वक्त सुजीव मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

४. भूरी भैंस को भैंसासुर आकुल वीर के वाकुल वीर वाकुल वीर भूत मसान आन देखरे मेरी भूरी के भैंसासुर इसी वक्त सुजीव मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

५. काली काली महाकाली इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली नगर कोट की रानी छिंदाम देश की रहने वाली जागती ज्योत खण्डक की धारी, पीर पैमान राजा इन्द्रासन इसी वक्त सुजीव मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

६. भैंसासुर २ घर बाँध डोर बाँध बाड़ी बाँध बेला नदी बाँध नाला बाँध अरघट बाँध मरघट बाँध भूत बाँध चुड़ैल बाँध मैली बाँध देशावरी बाँध बारह बरस तेरह युग बाँध 'लोना चमारिन' को मालुम चाहिये, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधियाँ

१. विधि–यदि किसी व्यक्ति के शरीर में चिलकनी चाबनी उठी हो। ऐसे व्यक्ति के ऊपर से तीन वक्त राख उतार कर लोना चमारिन को याद करे। फिर मैली माता को याद कर कहें कि रोगी को इसी वक्त आराम होना चाहिये। यदि तू सच्ची है तो इसी वक्त आराम बता। ऐसा कहकर उपरोक्त मन्त्र को एक ही साँस में बतलाते हुए तीन बार मन्त्र पढ़कर तीन फूँक मारे यानी किस एक वक्त पूरे मन्त्र पढ़कर एक फूँक मारे, ऐसे क्रमश: फूँक मारे फिर बाद में लोना चमारिन को याद कर कहे कि रोगी को इसी वक्त आराम होना चाहिये। बची हुई राख को मन्त्र से बाँधकर रोगी के शरीर में फेर दें तथा थोड़ी-सी राख खाने को दे दें।

२. विधि–यदि किसी को उल्टी-टट्टी लगी हो तो उपरोक्त विधि नं.१ के अनुसार रोगी के ऊपर से राख उतार कर लोना चमारिन को याद करे फिर मैली माता को याद कर कहे कि रोगी को इसी वक्त आराम होना चाहिये। ऐसा कहकर तीन बार मन्त्र पढ़ते हुए उस राख को रोगी की तरफ तीन वक्त फूँके, बाद में बची हुई राख को 'लोना चमारिन' को याद कर कहें कि इसी वक्त आराम हो जाना चाहिये। ऐसा

कहकर उस बची राख को उपरोक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर उस रोगी को थोड़ी-सी राख खिला दे, आराम हो जायेगा।

३. विधि–पहले बताई गयी खोर देखने की विधि द्वारा खोर का पता लगायें और फिर रोगी व्यक्ति का इलाज करें। यदि किसी व्यक्ति को भूत-प्रेत लगे हो तो तीन वक्त बाहरी सोलह अंगुल नापकर झाड़ने से रोगी को आराम हो जाता है। परन्तु झाड़ने के पहले बाहरी की सींक को रोगी के ऊपर से उतार कर सोलह अंगुल नाप कर काटें, फिर लोना चमारिन को याद करे। फिर मैली माता को याद कर कहें कि इसे इसी वक्त आराम होना चाहिये। ऐसा कह बाहरी से तीन बार झाड़ें। यदि बाहरी न बढ़े तो तुरन्त ही आराम हो जायेगा या पहले वक्त बाहरी बढ़े तो काटकर फेंक दे, फिर दुबारा झाड़ें। यदि दुबारा भी बाहरी बढ़े तो झाड़ करें। तीसरे वक्त न बढ़ने पाये। यदि तीसरे वक्त भी बाहरी बढ़ जाय तब जानें कि वह रोगी इस विधि से ठीक नहीं होगा। तब और अन्य विधि जो इसमें कही गयी है, उससे कार्य करें तुरन्त आराम होगा।

४. विधि–यदि राह चलते में आपका यदि किसी भूत-प्रेत से सामना हो जाये तब डरे नहीं और निडरता पूर्वक अपने बाँये पैर की मिट्टी उठाकर उपरोक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर उस प्रेत की तरफ फेंक दे, ऐसा करने से वह प्रेत भाग जायेगा। अन्यथा बाँयें पैर से पाँच कंकड़ी उठाकर उपरोक्त मन्त्रों से बाँधकर उस प्रेत की तरफ फेंक दें, तो वह कैद हो जाता है, यानी कि आपके वश में हो जाता है। वश में हो जाने के बाद आप उससे जो कहेंगे, वह करेगा; परन्तु यह सभी कार्य आप निडरतापूर्वक करें। सर्वप्रथम बात तो यह है भूत लोग मन्त्र जानने वालों के सामने ही नहीं आते हैं। क्योंकि प्रेत भी मनुष्य से डरता है। जिस तरह आदमी प्रेतों से डर जाता है, तो उसे प्रेत लग जाते हैं और हम लोग झाँड़-फूँक कर रोगी व्यक्ति को ठीक करते हैं। ठीक उसी तरह यदि प्रेत भी अचानक आदमी को देख लेता है तो वह प्रेत भी डर जाता है और उस प्रेत को भी आदमी की छाया लग जाती है। तब प्रेत लोग भी उस प्रेत की झाड़ फूँक करके उसे ठीक करते हैं।

५. विधि–यदि किसी दुश्मन ने आपके ऊपर जादू किया है या जादुई बाण (मूठ) भेजा है या चलाया है, तो आप उस मूठ की तरफ अपनें बाँयें पैर की मिट्टी उठाकर उपरोक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर उस आती हुई मूठ की तरफ फेंक दें, तो वह मूठ वहीं पर गिरकर नष्ट हो जायेगी या भेजने वाले के पास वापिस हो जायेगी।

६. विधि–यदि किसी ने किसी के ऊपर जादू-टोना किया है और वह रोगी किसी इलाज से ठीक नहीं हो रहा है। तब ऐसा करे, कि एक मुट्ठी गेहूँ उतार कर एक जगह रख दें। फिर दीपक जलायें तथ दीप जलाने के बाद लोना चमारिन के नाम से होम लगायें, फिर मैली माता के नाम से होम लगायें तथा मैली माता से सच्चे तीन

वचन लें, आराम होने वास्ते। जब सही तीन वचन मिल जाये तब प्रत्येक वचन में से दो-दो दाने निकालकर अगल-बगल रखें। फिर दुबारा मैली माता के नाम से होम रखें, रोगी को आराम होने वास्ते सच्चे तीन वचन लें। वचन सही मिलने पर प्रत्येक वचन से फिर दो-दो दाने निकालें। ऐसा तीन वक्त करें। फिर तीनों वक्त के निकाले हुए दानों (कुल अठारह दाने) को नीम्बू के अन्दर भरकर उपरोक्त मन्त्रों से तेल की धार से बाँधकर एक जगह रखें। फिर एक अण्डे के ऊपर काजल की स्याही बनाकर एक पुतला और उनके दोनों तरफ दो त्रिशूल बनाकर जयकाली लिखें 'यह सब कार्य उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए ही करें। फिर उस अण्डे के साथ वह नीम्बू जिसमें मैली माता के वचन भरकर रखें थे, को साथ रखकर उपरोक्त मन्त्रों से बाँध दें और फिर रोगी के ऊपर से तीन वक्त उतारते हुए यह कहते हुए कि भई जिसका जादू-टोना है, उसको जाकर खा, हमने तुझे गर्भ दिया। ऐसा कहकर रोगी के ऊपर से तीन वक्त उतारकर पूर्व दिशा में चालान कर दें, फेंक दें। फिर आकर 'लोना चमारिन' के नाम से होम रखें और कहें कि सच्चे तीन वचन दो, रोगी को इसी वक्त आराम होना चाहिये। ऐसा कह मन्त्र पढ़ते हुए दाने उठा-उठाकर दिये के ऊपर से घुमाकर अलग-अलग वक्त रखें, फिर मन्त्र पढ़ते हुए ही उन दानों को गिनें। जब वचन सही मिल जाये तो प्रत्येक वचन में से एक-एक दाने निकाल लें, ऐसा तीन वक्त करें। फिर तीनों वक्त के निकाले हुए वचनों के दाने को (यानी कुल नौ दानों को) जिन्हें निकाला था, को उपरोक्त मन्त्र से बाँधकर रोगी के सिर पर रख दें। ऐसा करने से रोगी को आराम हो जाता है और उसके ऊपर से जादू-टोना का असर खत्म हो जाता है। रील के धागे में मन्त्र पढ़-पढ़कर नौ गाँठें लगाकर गुगल का होम देकर रोगी के गले में बाँध देना चाहिये।

७. विधि–यदि किसी ने किसी के ऊपर या आपके ऊपर खप्पर भेजा हो तो कुछ उड़द के दानों को उपरोक्त मन्त्रों से अभिमंत्रित कर उस उड़ते हुए खप्पर की तरफ फेंककर रुकने का आदेश दें। फिर जब वह रुक जाये तब पुन: अभिमन्त्रित उड़द के दाने उसकी तरफ फेंककर उतरने के लिए आदेश दें और उसे किसी मैदान में उतार लें। उतारते ही तुरन्त उसे एक मुर्गा या मुर्गी का बच्चा भेंट दें, ऐसा करने से वह तुरन्त शान्त हो जाता है। यदि समय पर मुर्गा या मुर्गी न मिले ता बकरा या कोई भी जीव भेंट देना चाहिये, अन्यथा आपके प्राण भी जा सकते हैं। अत: सोच-समझकर कार्य करें। फिर उसे उपरोक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित उड़द के दानों को मारकर ऊपर उठने के लिए कहें और कहें कि भाई हमने तुझे जीव दिया, अब तू जा और भेजने वाले को खा। ऐसा कह उस खप्पर को काफी ऊँचाई पर उड़ा दें, काफी ऊँचाई पर जाने के बाद उसे भेजने वाले के पास जाने के लिए आदेश देवें तो वह खप्पर तुरन्त ही भेजने वाले के पास लौट जाता है और यदि भेजने वाला नहीं संभाल सका तो उसके ही प्राण-पखेरू चले जाते हैं।

८. विधि–यदि किसी स्त्री या पुरुष को कट्टर भूत-प्रेत लगे हों और वह किसी तरह से नहीं भाग रहे हों तो उस प्रेत ग्रसित व्यक्ति के ऊपर एक-एक मुट्ठी गेहूँ के दाने उतार कर एक जगह इकट्ठा रख दे। फिर दीपक जलाये, दीपक जलाने के बाद लोना चमारिन के नाम से होम लगायें और मैली माता के सच्चे तीन वचन उस प्रेत-ग्रसित व्यक्ति को ठीक होने वास्ते माँगे। जब वचन सही मिल जाये, तब प्रत्येक वचन में से दो-दो दाने निकाल लें, ऐसा तीन वक्त करें, फिर तीन वक्त के उन अठारह दानों को जिन्हें प्रत्येक वचनों में से दो-दो करके निकाले थे, एक नीम्बू के अन्दर भरकर उपरोक्त मन्त्रों से बाँध दें। फिर एक अण्डे के ऊपर एक पुतला और दो त्रिशूल बनायें और उस अण्डे पर जयकाली लिखें यह सब कार्य मन्त्र पढ़ते हुए ही करें, फिर अण्डा नीम्बू दोनों को एक साथ रखकर उपरोक्त मन्त्रों से बाँध दें। फिर उस प्रेत ग्रसित व्यक्ति के शरीर में यदि प्रेत उस वक्त सवार हो तो उसके बालों की लट में मन्त्र पढ़ते हुए एक गाँठ बाँधें और एक नीम्बू के अन्दर भरकर काट लें। यदि उस वक्त वह शरीर पर नहीं हो तो उसे शरीर पर बुलाकर उसके बालों की लट में गाँठ लगाकर नीम्बू के अन्दर भरकर काट लें। फिर उस नीम्बू को भी उस अण्डा के साथ रखकर उपरोक्त मन्त्रों से बाँध दें, फिर एक करुआ (मिट्टी के पात्र) के अन्दर भर दें। फिर उसमें एक काले कपड़े का पुतला बनाकर रखें। फिर उसे करुआ के अन्दर दो काली चूड़ी, १ काली चोटी, १ काली ककही, १ काली पोत, १ काली टिकी, १ काजल डिब्बी, कुंकुम व सिन्दूर रखें, और आटा के दो दिये बनायें। एक दिये में शराब भरकर उस करुआ के अन्दर रख दें और उस करुआ का ढक्कन ढाँक दें। ढक्कन ढाँकने के बाद दूसरे आटे के दिया में मीठा तेल डालकर चौमुखी बाती डालकर करुआ के ढक्कन के ऊपर जलायें, जलाने के पश्चात् उपरोक्त मन्त्रों से उस करुआ को बाँध दें। बाँधते वक्त ऐसी वैसी कोई गलती न करें। एक ही साँस में पूरे मन्त्रों को बोलते हुए, तेल की धार से यानी कि अपनी छोटी अँगुली को दिये के तेल में मिलाकर मन्त्र पढ़ते हुए करुआ के आस-पास गोल घेरा खींचे; परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखें कि इस बीच जब तक आपका मन्त्र पूर्ण न हो जाय, तब तक आपकी अँगुली उस करुआ के आस-पास घूमती रहे। जमीन से जरा-सी भी ऊपर न उठने पाये, यदि जरा-सी भी जमीन से ऊपर उठ गयी तो समझें आपका कार्य नहीं होगा। बाँधने के बाद किसी चौराहे में ले जाकर उस करुआ को गाड़ कर उपरोक्त मन्त्रों से बाँध दें या उस प्रेत को खापना हो तो उसकी लट न काटें। उसे लेकर अपने साथ किसी सुनसान वृक्ष के पास जायें और उस वृक्ष से सटाकर उस व्यक्ति को खड़ा कर दें। फिर हाथों से सटाकर पैरों के अगल-बगल कीलें ठोंके, फिर उसके बालों की लट की गाँठ को कीलों के अन्दर फाँसकर गाँठ अच्छी तरह लगाकर उसे झाड़ में ठोंक दें। फिर कच्चा सूत लेकर सात या नौ फेरा उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए उस

व्यक्ति सहित उस झाड़ के आस-पास लपेटें और आसानी से उस व्यक्ति को नीचे की तरफ बैठकर धागा को ऊपर कर निकाल लें; परन्तु यह ध्यान रखें कि धागा टूटने न पाये, फिर उस करुआ के अन्दर का सामान भी उसी झाड़ के नीचे गाड़ दें, तो आराम हो जायेगा। फिर आकर घर पर लोना चमारिन से सुखाकाली वास्ते सच्चे तीन वचन लें और वचन मिलने पर प्रत्येक वचनों के दानों में से एक-एक दान निकालकर अलग रखते जायें, ऐसा तीन वक्त करें। फिर तीनों वक्त के उन नौ दानों को इकट्ठा कर उपरोक्त मन्त्रों से बाँधकर रोगी के सिर पर रख दें और रील के धागा पर मन्त्र पढ़-पढ़कर नौ गाँठे देकर रोगी के गले में डाल देने से रोगी को पूर्ण आराम हो जाता है और रोगी को प्रेत बाधाओं से छुटकारा मिल जाता है। आराम होने पर लोना चमारिन को और मैली माता को जो चीज देने को मनाया हो, वह चीज उन्हें भेंट करें; अन्यथा आपको परेशानी होगी।

९. **विधि**–यदि किसी औरत को बच्चा न होता हो तो बच्चा होने वास्ते ऐसा करें कि उस स्त्री के ऊपर से एक मुट्ठी गेहूँ के दाने उतार कर एक जगह इकट्ठा रख दें। फिर दीपक जलायें, दीपक जलाने के बाद लोना चमारिन के नाम से होम लगाकर फिर कूकमैली माता के नाम से होम लगायें और कूकमैली माता से बच्चा होने वास्ते सच्चे तीन वचन माँगे। वचन मिलने पर प्रत्येक वचन में से दो-दो दाने लेकर अलग रखते जायें, ऐसा तीन वक्त करें। फिर तीनों वक्त के कूकमैली माता के वचनों के दानों को एक नीम्बू के अन्दर भर कर उपरोक्त मन्त्रों से बाँधें। फिर एक अण्डा के ऊपर काजल की स्याही बनाकर एक पुतला बनायें तथा दो त्रिशूल पुतले के दोनों तरफ बनाकर जयकाली लिखें। जयकाली लिखने के बाद उस नीम्बू को साथ रखकर जिसमें कूकमैली माता के वचनों के दानों को भर दें, को उपरोक्त मन्त्रों से बाँधे, अण्डे के ऊपर लिखते वक्त उपरोक्त मन्त्रों से पढ़ते हुए ही लिखना चाहिये। फिर किसी एक करुआ के अन्दर उठाकर एक अण्डा और एक नीम्बू को रख दें। फिर पच्चीस से.मी. काला कपड़ा लेकर एक पुतला बनायें और उस पुतले को भी करुआ के अन्दर रख दें। फिर दो काली चूड़ी, एक काली चौंटी, एक काली पोत, एक काली ककही, एक काली टिकी, एक काजल डिब्बी, सिन्दूर और कुंकुम उस करुआ के अन्दर रखें। फिर आटा के दो दिये बनाकर एक दिये में शराब भरकर उस करुआ के अन्दर रखें। फिर ऊपर ढक्कन से ढाँक दे। ढक्कन ढाँकने के बाद ढक्कन के ऊपर दूसरे आटा के दिया में चौमुखी बाती बनाकर जलायें तथा उपरोक्त मन्त्रों से तेल की धार से बाँध दें। बाँधने के बाद रोगी स्त्री के ऊपर से तीन वक्त उतार कर यह कहते हुए कि तेरी चीज हमने तुझे भेंट दी, हमसे जो बना सो दिया, अतः अब तुम स्त्री का पीछा छोड़ दो। ऐसा कह तीन वक्त उस स्त्री के ऊपर से उतार कर किसी चौराहे पर ले जाकर गाड़ आयें और

उपरोक्त मन्त्रों से बाँध देवें। फिर हाथ-मुँह धोकर लोना चमारिन के नाम से होम लगाकर कहें कि इस औरत को बच्चा होना चाहिये। सच्चे तीन वचन दो, तुम्हें अमुक चीजें भेंट चढ़ायी जायेगी (अमुक की जगह आपको जो भेंट देना हो कहें) वचन मिल जाने पर प्रत्येक वचन से एक-एक दाने लेकर अलग रखते जायें, ऐसा तीन वक्त करें। फिर तीनों वक्त के उन नौ दानों को उपरोक्त मन्त्रों से बाँधकर रोगिणी स्त्री से सिर रख दें। फिर इक्कीस हाथ या सत्ताइस हाथ लम्बा रील का धागा जो कि कुंवारी कन्या के द्वार काता गया हो, को लेकर नौ तार का बनाकर उस पर मन्त्र पढ़-पढ़कर नौ गाँठें दें। फिर गूगल, लोहबान की धूनी देकर उस स्त्री के कमर में बाँध दें, तो गर्भ स्तम्भन होगा। गर्भ स्तम्भन होने के नौ माह पूर्ण होने में कष्ट होगा और जब तक धागा बँधा रहेगा, बच्चा नहीं हो पायेगा। अत: यह सावधानी बरते कि नौ माह पूर्ण होने पर धागा कमर से खुलवा दें। फिर बच्चा होने पर जो चीजें आपने मनौती की हो, कूकमैली माता और लोना चमारिन को तो भेंट दें और झालर उतारें यानी कि मुण्डन करवायें, भेंट न देने पर आपको परेशानी उठानी होगी। यह अवश्य ध्यान रखें, कि जो वस्तु देने को कहें हो वह अवश्य दें; अन्यथा आप जानें।

१०. विधि–यदि किसी औरत को कुछ समय गर्भ रहने के पश्चात् गर्भपात हो जाता हो तो उपरोक्त विधि ९ के अनुसार पूर्ण कार्यवाही करें। सबसे पहले लोना चमारिन के नाम से होम दें, बाद में कूकमैली माता से गर्भ स्तम्भन वास्ते तीन वचन लें और पूर्ण कार्यवाही विधि ९ के अनुसार करें। गर्भ स्तम्भन वास्ते सत्ताइस या इक्कीस हाथ लम्बा रील का धागा लेकर ९ तार का बनाकर उपरोक्त मन्त्रों को पढ़-पढ़कर नौ गाँठ लगाकर गूगल, लोहबान की धूनी देकर कमर में बाँध दें। फिर गर्भ स्तम्भन के नौ माह पूर्ण होने पर उस धागा का खोल दें तथा बच्चा होने के बाद जो चीजें आपने कूकमैली माता और लोना चमारिन को मनाई हो (मनौती की) वें चीजें भेंट दें।

११. विधि–यदि किसी औरत को महीने में दो-दो बार माहवारी होती हो और छह-छह, सात-सात दिन तक रहती हो, तब सम्पूर्ण कार्यवाही विधि ९ के अनुसार करें। सबसे पहले दीपक जलाकर लोना चमारिन के नाम से होम दें, फिर कूकमैली माता के नाम से होम दें और कूकमैली माता से माहवारी ठीक समय पर होने वास्ते वचन लें, उसके बाद लोना चमारिन से। फिर धागा में मन्त्र पढ़ते हुए सात गाँठ लगाकर उस स्त्री के गले में बाँध देना चाहिये। ऐसा करने से उस स्त्री के मासिक की खराबी में सुधार हो जाता है।

१२. विधि–यदि किसी औरत को प्रदर रोग हो, रक्त प्रदर हो या श्वेत प्रदर हो तो उपरोक्त विधि ९ के अनुसार सम्पूर्ण कार्यवाही करें। पहले लोना चमारिन को होम लगाकर फिर कूकमैली माता के नाम से होम लगावें और कूकमैली माता से प्रदर रोग

ठीक होने वास्ते सच्चे तीन वचन लें। ऐसा तीन वक्त करें और फिर सम्पूर्ण कार्यवाही विधि नं. ९ के अनुसार करें। आराम होने पर जो चीज मनौती की हो, वह चीजें कूकमैली माता और लोना चमारिन को भेंट करें। प्रदर रोग नष्ट हो जायेगा।

१३. विधि–यदि कोई व्यक्ति प्रेतादिक बाधाओं द्वारा पागल हो गया हो तो सबसे पहले उस पागलपन वाले व्यक्ति के ऊपर से एक मुट्ठी गेहूँ के दाने उतार कर एक जगह रखें। फिर मिट्टी के दिये में मीठा तेल डालकर दिया जलायें। दिया जलाने के वाद लोना चमारिन के नाम से होम लगायें। फिर मैली माता के नाम से होम लगाकर मैली माता से सच्चे तीन वचन लें कि सच्चे तीन वचन दो। इस रोगी का पागलपन इसी समय जाना चाहिये। ऐसा कह मन्त्रों को पढ़ते हुए दाना उठाकर दिये के ऊपर से उतार-उतार कर एक जगह अलग-अलग रखते जायें, जब तीन वक्त उठा चुकें, तब फिर उन्हें मन्त्र पढ़ते हुए ही गिनें। यदि वचन तीनों में सही मिल जायें तो प्रत्येक वचनों में से दो-दो दाने निकालकर अलग रखते जायें। ऐसा तीन वक्त करें। फिर तीनों वक्त के निकाले हुए दानों को यानी कि उन कुल अठारह दानों को नीम्बू के अन्दर भरकर उपरोक्त मन्त्रों से बाँध दें और फिर हँसिया या चाकू पर दिये की लौ द्वारा काजल पारकर एक बारीक सींक (लकड़ी की) में थोड़ी-सी रुई लपेट कर तेल में भिंगोकर उस पारे हुए काजल में घिसें। फिर उसके द्वारा अण्डे के ऊपर एक पुतला और पुतले के दोनों तरफ दो त्रिशूल बनायें और जयकाली लिखें। यह सब कार्य मन्त्र पढ़ते हुए ही करें। फिर उस अण्डा और नीम्बू को रख दें। फिर पचीस से.मी. काले कपड़े का टुकड़ा लेकर उसका एक पुतला बनायें और पुतला बनाकर उसे भी उस करुआ के अन्दर रख दें। फिर उसमें दो काली चूड़ी, १ काली ककही, १ पोत, १ काली चोटी, १ काली टिकी, १ काजल डिब्बी, कुंकुम व सिन्दूर रखें। फिर आटा के दो दिये बनायें और एक दिये में शराब भरकर उस करुआ के अन्दर रखकर उसे ढक्कन से ढाँक दें और दूसरे दिया में मीठा तेल डालकर चौमुखी बाती जलायें। फिर उसे उपरोक्त मन्त्रों द्वारा तेल की धार से बाँध दें, और पुन: उपरोक्त मन्त्रों से उस जगह को बाँध दें। फिर आकर लोना चमारिन के नाम से होम देकर सुखाकाली वास्ते सच्चे तीन वचन लें। जब मिल जाये तब प्रत्येक वचन में से एक-एक दाने लेकर अलग रखते जायें, ऐसा तीन वक्त करें और तीनों वक्त के निकाले हुए उन कुल नौ दानों को उपरोक्त मन्त्रों से बाँधकर उस पागलपन के रोगी के सिर पर रख दें तथा एक रील के धागा पर उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए सात गाँठें लगाकर लोहबान या गूगल की धूप जलाकर उसके गले में डाल दें। ऐसा करने से रोगी को आराम हो जाता है और उसका पागलपन नष्ट हो जाता है।

१४. विधि–यदि आपको अपने किसी दुश्मन को परेशान करना हो, यदि वह आपको परेशान करता है तो आपको उसे परेशान करने में कोई हर्ज नहीं, परन्तु

बिना वजह किसी को परेशान न करें। परेशान उसे ही करें जिसने आपकी जमीन-जायदाद, स्त्री-पुत्र का हरण किया हो, अन्यथा ब्रह्महत्या का दोषी होना पड़ता है। यदि समय आने पर कार्य करना पड़े तो इस तरह से करें कि रविवार या बुधवार के दिन श्मशान के बाँस की लकड़ी जिसमें शव को रखकर ले जाते हैं, को कील बनाकर मैली माता के नाम से होम लेकर कहें कि हे माता! मैं तुझे अपने दुश्मन के यहाँ भेजता हूँ। मेरे दुश्मन के यहाँ जाकर तू उसे परेशान कर और इतने समय में (दिनों का करार कर दें) मेरे दुश्मन के प्राण लेकर आ जाना। आने पर तुझे मैं मुर्गा बाँग देता हुआ तथा शराब दूँगा या काली पील और शराब दूँगा, तू जाकर इसी वक्त काम बना, ऐसा कह उस कील को उपरोक्त मन्त्रों से बाँधकर दुश्मन के दरवाजे पर गाड़े आये। जितने समय का आपने करार किया होगा, उतने समय में आपके शत्रु का मारण हो जायेगा। अनुभूत एवं परीक्षित तन्त्र है। अत: सोच-विचार कर कार्य करें, बिना वजह किसी भी व्यक्ति पर थोड़ी-सी ही गलती पर मारण का प्रयोग कदापि न करें।

नोट—दाना देखने की विधि कि सही वचन मिले या नहीं सविस्तार 'प्रथम पटल' एवं 'द्वितीय पटल' में समझा दी गयी है। कृपया उसके अनुसार ही कार्य करें तथा जब तक आपका कार्य पूरा न जाये, तब तक दीपक को बुझने नहीं देना चाहिये। यदि कोई कार्य करते वक्त अचानक दीपक बुझ जाये तो फिर उस दिन कार्य नहीं करना चाहिये। यदि कार्य करना बहुत ही जरूरी हो तो पुन: दीपक जलाकर फिर से शुरू से कार्य करें, दीपक न बुझने दें।

इन्हीं मन्त्रों से कई किस्म के रोगों का भी निदान किया जाता है। पशुओं का भी इलाज इन्हीं मन्त्रों से किया जाता है। जैसे यदि भैंस दूध की जगह खून देने लगे तो उपरोक्त मन्त्रों से झाड़ कर ठीक करते हैं या दाना देखकर ठीक करते हैं। कई जानवर दूध दुहते वक्त पैर वगैरह मारते हैं तो दाना बनाकर मैली माता से वचन लेते हैं और कार्य करते हैं। इससे गाय वगैरह पैर नहीं फटकारते, लगने लगते हैं या कई पशुओं का कई तान्त्रिक दूध सुखा देते हैं तो इन्हीं उपरोक्त मन्त्रों के द्वारा मैली माता से सुखाकाली वास्ते वचन लेकर उपरोक्त बताई गयी विधियों द्वारा कार्य कर उन्हें ठीक करते हैं। कई पशुओं का दूध मठिया, दीवाल, पी जाते हैं, तो उस पशु के ऊपर से दाना देखकर पशुओं का कोठा (गोस्थान) और गाय (या पशु) के गले में धागा बाँध दिया जाता है। जिससे वे फिर दूध नहीं पी पाते हैं और पशु फिर पैर नहीं फटकारते। कई तान्त्रिक पशुओं के पीछे भी कूकमैली लगा देते हैं, जिससे उन्हें गर्भ स्तम्भन नहीं होता, तब इसमें बताई गयी गर्भ स्तम्भन विधियों द्वारा कार्य करने से उस जानवर का गर्भ स्तम्भन हो जाता है। इसके अतिरिक्त ये मन्त्र जो कि प्रथम पटल और द्वितीय पटल तथा इसमें बताये गये हैं, प्राय: हर समय हर मुसीबत में काम आते हैं। इन सभी से

स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, आकर्षण, जृम्भण, विद्वेषण, मारण, शान्तिक और पौष्टिक सभी कार्य किये जाते हैं। बहुत ही अद्वितीय चमत्कारिक शीघ्र प्रभाव बताने वाले ये साँवर मन्त्र अपना बहुत ही उच्च स्थान रखते हैं। इनको जानकर व्यक्ति कभी भी इस मन्त्रों को लोगों को नहीं बताते और अति गुप्त रखते हैं। इसी वजह से हमारे भारत देश में मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र का चमत्कार खत्म होता जा रहा है। एक समय वह था कि हमारे देश में इस विद्या ने काफी प्रगति की थी। आज भी इन मन्त्रों में उतनी शक्ति है कि जो काम असम्भव हो, वह बहुत ही आसानी से हो जाता है।

मुठी रखना

तान्त्रिकों के लिये यह मुठी रखना जरूरी होता है। जिस जिसकी विद्या तान्त्रिक लोग जानते हैं, वे उसके नामों से मुठी रखते हैं।

प्रथम पटल की दर्शायी हुई विद्या में माँगू वीर नट, मरही माता बंगाल की और कासिम का जिन्नात से मुठी रखी जाती है। द्वितीय पटल की दर्शायी हुई विद्या में 'माता कद्रू और वांसुगदेव' के नाम से मुठी रखी जाती है और इस पंचम पटल में लोना चमारिन के नाम से मुठी रखी जाती है। इन सांवर मन्त्रों के जानकारों को मूठी रखना निहायत जरूरी होता है। यदि इन लोगों के नाम से मुठी नहीं रखी जायेगी तो यह मन्त्र कभी कार्य नहीं करेंगे। अतः मुठी रखना अति आवश्यक है।

मुठी रखने की विधि और समय–दीपावली के दिन व्रत रखकर करीब आठ या नौ बजे रात्रि को सवा पाव दाल और चावल मिलाकर एक कोरे सूप में (सूपा में जिसमें दाना साफ करते हैं) में रखकर १ नारियल, १५ खारक, लोहबान, अगरबत्ती, गूगल, होम, पुड़ा, १ नीम्बू या जितने उपलब्ध हों, एक अण्डा रखें और एक दीपक जलायें, किसी ऐसे स्थान पर साफ लीपे-पोतें तथा पूरे आटा से चौक पूरने के बाद, नीम्बू को जितनी भी विद्या आप जानते हैं जैसे कि माँगू वीर नट मरही माता बंगाल की और कासिम का जिन्नात (गुरु गोरखनाथ बुगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी का विद्या) प्रथम पटल व द्वितीय पटल में सपावर के मन्त्र (माता कद्रू और और वासुंगदेव) तथा पंचम पटल में लोना चमारिन की विद्या, यदि इन सभी के मन्त्र आपने सिद्ध कर लिये हैं यानी कि बगैर रुके एक ही साँस में आप यदि ये मन्त्र बोल बोल लेते हैं, तो समझ तो समझ लें कि मन्त्र आपको सिद्ध हो गया है तो सभी के मन्त्रों से नीम्बू को बाँधे, जैसा कि बताया गया है। तेल की धार के बाँधें, बाँधने के पहले माँगू वीर नट, मरही माता, कासिम का जिन्नात, माता कद्रू, वांसुगदेव और लोना चमारिन के नाम से होम रखें, फिर मन्त्र से नीम्बू बाँधकर चौक के बीचोबीच रखें, चौक के पीछे दिया को रखें, फिर उस सूप पर रखे हुए चावल और दाल को मिलाकर एक-एक मुट्ठी भर कर मांगू वीर नट, मरही माता, कासिम का जिन्नात, माता कद्रू, वांसुगदेव और

लोना चमारिन के नाम से उस नीम्बू के ऊपर छोड़ें। ऐसा छोड़े कि पूरा चावल सभी के नाम से पूरा हो जाये। फिर अण्डा के ऊपर दो त्रिशूल और एक पुतला बनाकर जयकाली लिखें, उसे भी उस खिचड़ा के ऊपर रख दें तथा वह नीम्बू जिसे मन्त्रों से बाँधकर रखे थे, उसे भी ऊपर रख दें। फिर एक नारियल, पाँच खरक तथा यदि सिरनी उपलब्ध हो तो, उनके नामों से आपने मुट्ठी जमाये थे सबके नामों से रखें। फिर दो खारक महादेव खण्ड की मैली के नाम से तथा दो खारक काल्हा बाबा खण्ड की मैली के नाम से, दो खारक देसावरी माता के नाम से, दो खारक कावड़ खण्ड की मैली माता को और दो खारक मराही माता के नाम से रखें। झुमका या परिहार बाबा जिसे लेकर आपका गुरु चलता हो, उसके नाम से एक नारियल, ५ खारक भेंट रखें, कलकत्ते वाली काली और चण्डी माता के नाम से १-१ फल और खारक भेंट दें। फिर उस दीपक को उठाकर मूठी के ऊपर या सामने रख दें। उक्त सामानों को जिस तरह आपने रखा है, ठीक उसी तरह अमावस की रात्रि से ग्यारह शाम तक वैसे ही रखी रहनी दें। यदि चूहे लगते हों तो मुठी को काई टोकना या बर्तन को ढाँक दें; परन्तु वहाँ से कोई भी सामान न उठावें। फिर ग्यारह के दिन माल बाबा या झुमका बाबा या परिहार बाबा जिसको लेकर आप चलते हों या तो माँगू वीर नट के और कासिम के जिन्नात के नाम से एक बाँग देता हुआ मुर्गा और शराब भेंट दें। मुर्गा को पैर धुलाकर हल्दी, चावल का टीका लगाकर उसके ऊपर से पानी उतार कर कासिम का जिन्नात और माँगू वीर नट के नाम से होम लगाकर कहें कि मैं तुम्हारी भेंट दे रहा हूँ। कृपा कर स्वीकार करो। थोड़ी ही देर में वह मुर्गा पूरे शरीर से झाड़ा ले लेगा तब समझ लें कि पा चुके। फिर कावड़ खण्ड की मैली और देसावरी माता के नाम से काली पील भेंट दें। उसके भी पैर धुलाकर हल्दी चावल का टीका लगाकर मैली और देसावरी माता कावड़ खण्ड को कहें कि अपने भेंट लो तो वह काली पील भी पूरे शरीर से झाड़ा ले लेगी। फिर मुर्गा और उस पील को काट दें। इतना याद रखें कि उन्हें अपने पैर के नीचे न दबावें और वैसे ही काटें। काटने के बाद साफ करके माँस पका लें और वह खिचड़ा भी पकावें और वह खिचड़ा खुद ही खायें, किसी को न खाने दें। फिर माँस पकावें और उनके नाम से देकर आप खुद खायें। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तो किसी के द्वारा भेंट दिलवायें और उसे ही खाने को कह दें। परन्तु मेरा ख्याल जहाँ तक है कि स्वयं खाना उचित है। नारियल वगैरह का प्रसाद भी किसी को न दे बल्कि स्वयं खाये तथा होली, ग्रहण और दीपावली में उपरोक्त मन्त्रों का जप करें। मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र तथा देवी-देवताओं को जगाने वाले मन्त्र को भी जपें, जो कि सबसे पहले दिया गया है। ऐसा करने से मन्त्र आपकी हर समय रक्षा करते हैं और हर तरह की विघ्न बाधाओं से बचाये रखते हैं।

नोट–जब तक आपकी मुठी रखी रहे। तब तक आप कहीं भी झाड़ना-फूँकना न करें। पितृपक्ष में भी झाड़ना-फूँकना न करें तथा जो स्त्री माहवारी से हो (गन्दी हालत में हो) उसे भी इस मन्त्रों से झाड़े फूँकें नहीं।

मटिया दीवाल को सम्मुख बुलाना

यह कार्य करने के पहले आप अपने शरीर की रक्षा करें; अन्यथा मटिया दीवाल आपके ऊपर जरा-भी भूल हो जाने पर क्रोध कर देंगे, जिससे आपकी मौत तक हो सकती है। अत: सर्वप्रथम अपनी देह रक्षा का कार्य करें। ऐसा करें, कि किसी तरह से रेढ़ा नाम के जानवर का भेजा (मस्तिष्क) प्राप्त कर लें और सूखा कर रख लें। वक्त आने पर जिसके घर मटिया दीवाल हों, उसके यहाँ यदि आपको यह उजागर करना हो, कि फलाने आदमी के यहाँ मटिया दीवाल है, तो आप कुछ लोगों को एकत्रित कर उसे रेढ़ा जानवर के भेजा को आग पर रख कर कहें, भई जो भी हो चलो आ जाओ। इतना कहने की देर नहीं होगी, कि वे मटिया दीवाल या छप्पन और जो भी कमाऊ पूत उनके घर पर होंगे, वे सब सामने प्रत्यक्ष रूप में आ जायेंगे। तब उस घर वाले को कहकर कि भई तू इनकी निकासी कर और इसकी निकासी किसी अच्छे जानकार तान्त्रिक के द्वारा करवा दें, क्योंकि ये बड़े ही खतरनाक प्रवृत्ति के होते हैं। जरा-सा समय पा लेने पर वे लोगों की जान तक ले लेते हैं। कई मटिया दीवालों ने तो कई तांत्रिकों को मौत के घाट भी उतार दिया है। इन्हें निकालने के भी कई तरीके हैं, जो बाद में बताये जायेंगे। यहाँ सिर्फ इतना ही कहना पर्याप्त है कि जितना बने उतना ही कार्य करें तो अच्छा है। जब तक आप नौ-दस किस्म की विद्याओं का अर्जन नहीं करते हैं, तब तक आप सफल तांत्रिक नहीं बन सकते हैं और हर कार्य करना भी मुश्किल है। जितनी विद्या का ज्ञानार्जन होगा, उतना ही आप कार्य कर सकते हैं।

मटिया दीवाल वालों को परेशान करने का मन्त्र

रेढ़ा जानवर की विष्ठा रखें और यदि किसी के घर के मटिया दीवाल आपके घर में हमेशा उपद्रव करते हों या दाना-पानी आपके यहाँ का गायब करते हों, तो आप ऐसा करें, कि उसकी टट्टी को अपने ही घर के दरवाजे पर उसका होम लगा दें, तो जिसके घर के मटिया दीवाल आपके यहाँ आते थे, तो वह ही उसके यहाँ उधम मचायेंगे। वह व्यक्ति भी जिसके कमाऊ पूत लाया होगा, वह भी उनसे परेशान हो जायेगा, जिससे कि यह जाहिर हो जायेगा कि अमुक व्यक्ति के यहाँ पर मटिया दीवाल है।

भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र तथा तन्त्र

चण्डी वीर मसान भूत प्रेत के औसान भस्मीभूत कुरु कुरु स्वाहा।।

विधि–उड़द के आटे का एक पुतला बनाकर उस पुतले पर घी और सिन्दूर

लगाकर धूप और होम दें तथा उपरोक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़ें। फिर उस पुतले को काँसे की तस्तरी के ऊपर रखकर उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी के ऊपर उतार कर उस पुतले की गर्दन को चाकू से काट दें। जैसे ही चाकू से उस पुतले की गरदन काटी जायेगी, वैसे ही वह प्रेतग्रस्त व्यक्ति चीखकर बेहोश हो जायेगा। तब आप घबरायें नहीं और उस तस्तरी को ले जाकर किसी चौराहे पर रख आयें। धीरे-धीरे कुछ समय बाद रोगी ठीक हो जायेगा और उसके ऊपर से भूत-प्रेत का साया खत्म हो जायेगा। कार्यकर्त्ता को निडरता पूर्वक कार्य करना चाहिये तथा भूत-प्रेतों की चोट से पहले अपने शरीर की रक्षा करनी चाहिये, फिर बाद में निकालने का कार्य करें।

निम्नलिखित वस्तुओं की धूप देने से भूत-प्रेत बकरते हुए (चिल्लाते हुए) भाग जाते हैं।

१. पीपल वृक्ष की लाख को रविवार या बुधवार को लायें तथा इसकी धूप प्रेतग्रस्त रोगी को दें, तो भूत-प्रेत चिल्लाते हुए भाग जाते हैं।

२. चबरू नाम के पौधे के पत्ते को तुरन्त तोड़कर ले आये और जिसे भूत-प्रेत लगा हो उसके ऊपर से उतार कर अपने पैर के अँगूठे के नीचे दबा ले, तो भूत-प्रेत चिल्लाते हुए भाग जाते हैं।

३. गोरखमुण्डी गोखरू और बिनौला को गोमूत्र में बाँटकर, सुखाकर भूत-प्रेतग्रस्त रोगी को इसकी धूनी देने से भूत-प्रेत रोगी के भूत चिल्लाते हुए भाग जाते हैं।

४. सत्यानाशी वृक्ष की पत्ती जो मेंहदी के पत्ती के सदृश होती है, को लाकर सुखाकर रख लें। फिर जब यदि किसी को भूत-प्रेत लगे हों तो इसकी धूनी देवें, तो भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी के भूत-प्रेत चिल्लाते हुए भाग जाते हैं। इसमें संशय नहीं, अतः जिससे भूत भगाना हो भगायें।

गाय भैंस आदि पशु के दूध न देने का तन्त्र

१. रविवार या बुधवार को छिपकली को मारकर जहाँ गाय व भैंस बँधती हों, उसके खूँटे के किनारे गाड़ देने से दूध देने वाले जानवर दूध नहीं देते हैं तथा पैर मारते हैं और उखाड़ लेने पर पुनः दूध देने लगते हैं।

२. चक्की की मानी को गाय या भैंस के खूँटे के किनारे रविवार या बुधवार को गाड़ देने से गाय या भैंस दूध नहीं देती, उनके स्तन का दूध सूख जाता है तथा उखाड़ लेने पर पूर्ववत् दूध देने लगते हैं और दूध भी उनका वापिस आ जाता है; परन्तु ऐसा कार्य दुश्मन से बदले की भावना से जानवरों के साथ कदापि न करें। चूँकि जानवरों ने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा है। अतः जानवर के साथ कदापि ऐसा कार्य न करे, जिससे कि जानवरों को परेशानी हो। यदि बदला लेना ही है तो दुश्मन से लें, गौ से नहीं याद रखें; अन्यथा दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। इसका अन्दाजा बुरा होता है।

निम्नलिखित मन्त्र (पशुओं की बीमारी वाले मन्त्र) को सर्वप्रथम हनुमान जी को १ नारियल और सवा पाव सिरनी भेंट चढ़ाकर कंठस्थ कर लें और एक ही साँस में मन्त्र को बोलने की आदत डालें। एक मन्त्र को एक ही साँस में पढ़ें, अटके नहीं। जब बिना रुके एक ही साँस में आप मन्त्र बोलने लगेंगे, तो मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। मन्त्र सिद्ध होने पर कार्य करें और मन्त्र का चमत्कार देखें।

(पशुओं की बीमारी झाड़ने का मन्त्र)

(यदि जानवर पागुर न करे तो झाड़ने का मन्त्र)

१. ताल ताल बल खण्ड ताल, गोला फोडू पार मिलाऊ डेरे अंग पैर में झोडू पीर बाबा ग्वालियर देव, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

२. सूजन पत्थर के ऊपर घूमे पूजन, आतिशबाजी और निशान अमोनी समोनी कमलापति रानी सब ताल तलैया पीर बाबा ग्वालियर देव, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

३. जो आड़ी दीवाल खड़ो हो जाये तो इसी वक्त एक नारियल सवा पाव सिरनी भेंट चढ़ाऊ महावीर जी, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–एक बर्तन में अकोना का दूध लेकर तथा दूसरे बर्तन में मीठा तेल लेकर एक लकड़ी में रुई लपेट कर मीठा तेल और अकोना में उस रुई को भिंगोकर पशु के बाँयें जबड़े के ऊपर एक जगह आधी इंच की गोलाई में घेरा खींचे, गोल-गोल घुमाते जायें और मन्त्र पढ़ते जायें। ऐसा तीन समय झाड़ा देवें तो सारे रोग की सूजन जानवर के बाँयें जबड़े पर आ जाती है, जानवर पागुर करने लगता है तथा कुछ समय में ठीक हो जाता है।

आँचल झाड़ने का मन्त्र

राम मारे बाण सीता उतारे थान, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई। इसी वक्त 'फलानी' बाई के आँचल का फोड़ा सूख साख भस्म हो जाय।।

विधि–जिस स्त्री के आँचल में फोड़ा हो गया हो, तो यदि बाँयें में फोड़ा हो तो अपने दाहिने स्तन से राख उतार कर उस बाँयीं का नाम लेकर (फलानी की जगह पर उस स्त्री का नाम लेवे) अपना आँचल झाड़ें। यानी कि उस राख में सात बार मन्त्र पढ़ते हुए फूँक मारे। ऐसा तीन वक्त करें तो उस स्त्री के फोड़े में आराम हो जायेगा।

भूत-प्रेत को भगाना

ऊद जिसे कबर बिज्जू या मसानिया ऊद कहते हैं, जो मृतक (मुर्दे) को खोद देता है, की हड्डी और कलेजा लेकर रेढ़ा जानवर जो हूबहू शेर (पट्टा वाला शेर) की शक्ल से मिलता-जुलता है; परन्तु चलने पर उसकी कमर आवाज करती है। जो दिन में आदमियों को देखकर भाग जाता है; परन्तु रात में नहीं भागता। अक्सर यह गाँव के आस-पास मेरे जानवरों की हड्डियाँ चबाता फिरता है और कुत्तों को पकड़ कर खाता है, का कलेजा, पित्त और अण्डकोषों को तथा उल्लू जिसे घुग्घू कहते हैं की हड्डी और आदमी के हाथ की हड्डी को बारीक पीसकर जब किसी को भूत-प्रेतों का बाजार दिखाना हो, तब अपने साथ ले जायें; परन्तु आदमी सभी निडर होने चाहिये, डरने वाले न हों। फिर रात्रि ग्यारह बजे के बाद एकान्त सुनसान जगह पर जायें और सबके पहले उनके रक्षार्थ हेतु इस पुस्तक में लिखी हुई किसी भी विद्या से नीम्बू को मन्त्र से बाँधकर उन प्रत्येक आदमियों के पास दे दें और उसी विद्या से मन्त्र पढ़ते हुए एक गोल घेरा खींच दें। फिर कण्डे की आग जलाकर गोल घेरा खींच दें। फिर कण्डे की आग जलाकर गोल घेरे के बाहर जलाकर उपरोक्त वस्तुएँ यह कहकर कि भूत-प्रेत मटिया, छप्पन, दीवाल, दैत्य, दानव, जिन्द, मसान हाजिर हों, कहकर आग पर छोड़ दें। जैसे ही उपरोक्त वस्तुएँ आप आग पर छोड़ेंगे और मुट्ठी खुली रखेंगे, तभी वे लोगों की नजर में दीखने लगेगें और जैसे ही वह मुट्ठी जिससे उपरोक्त वस्तुओं को छोड़े थे, बन्द करेंगे तो वे नहीं दिखेंगे। फिर जब घर आना हो, तब मुट्ठी बँधे वाले हाथ की मूठी बँधी हुई ही रहने दें और किसी भी विद्या के मन्त्र पढ़ते हुए सात आड़ी रेखा खींचकर सात कदम में पार कर आगे बढ़ जायें और सब लोगों को अपने आगे करने के बाद अपनी मुट्ठी को खोल दें, तो वे भूत-प्रेत फिर नजर नहीं आयेंगे। यह हमेशा याद रखें कि अपने साथ निडर लोगों को ही ले जायें तो ठीक है; अन्यथा कमजोर दिल के आदमी के प्राण भी जा सकते हैं। हालांकि वे भूत-प्रेत आपका कुछ नहीं करते; परन्तु डर ही बहुत बड़ा भारी होता है। कहावत है जो डरा सो मेरा, अतः सोच-विचार कर कार्य करें।

अन्य मन्त्र

यदि किसी हाँड़ी में कोई काले रंग (एक रंग) के कुत्ते की गर्दन फँस जाये या किसी बर्तन में उसकी गर्दन फँस जाये, तो उसका मूँड़ (सिर) आसानी से निकाल दें, ताकि बर्तन फूटने न पाये। फिर उस बर्तन के मुँह पर चमार के यहाँ से चमड़ा लाकर मुँह पर मढ़ दे। मढ़ने के बाद जब आपका इरादा हो कि भूत-प्रेतों को देखा जाये तब आप अपने साथियों को जिन्हें देखना हो और जो निडर हों, को अपने साथ ले जायें। अपने साथ कुछ फूटे हुए चने (फुटानें) लेकर जायें। फिर एकान्त जगह पर रात्रि करीब ११ बजे के बाद सभी साथियों को एक जगह बैठाकर किसी भी विद्या को जिसे आप

जानते हों और जो आपने सिद्ध कर ली हो, से मन्त्र पढ़ते हुए लकड़ी से एक घेरा खींच दें तथा एक-एक नीम्बू व राई (सरसों) के दाने उक्त विद्या से अभिमन्त्रित कर बाँधकर जिससे आपने गोल घेरा खींचा था, उन साथियों को दे दें। फिर उस बनाये हुए वाजा को आप बजायें; परन्तु साथियों को ताकीद कर दें कि चाहे कुछ भी हो जाये, वे उस गोल घेरे के बाहर तब तक न जाये जब तक कि आप न कहेंगे। फिर उस बाजा के बजाते ही ढेर सारे भूत-प्रेत, चुड़ैल, छप्पन, दीवाल नाचते हुए वहाँ हाजिर हो जाते हैं। तब आप घेरे के अन्दर से फुटानों को फेंक दें वे लोग बीन-बीन कर खाने लगते हैं। जब वे खा चुके तब आप उन्हें जाने का निर्देश दे दें। आप उसी घेरे के अन्दर से अपने बाँयें पैर की मिट्टी को अभिमन्त्रित कर उनकी तरफ फेंक दें, जिस मन्त्र से आपने गोल रेखा खींची थी। उसी मन्त्र से बाँयें पैर की मिट्टी बाँधकर फेंकना चाहिये। ऐसा करने से वे समस्त भूत-प्रेत अपने-अपने स्थान को जाते हुए आपको दिखाई देंगे, फिर कुछ ही देर में सभी आपकी नजरों से ओझल हो जायेंगे। तब आप सभी उस गोल घेरे से वाहर निकल कर निडरता पूर्वक अपने घर आ जायें। परन्तु यह अवश्य ध्यान रखें कि डरपोक आदमी को अपने साथ न ले जायें; अन्यथा पछताना पड़ेगा। क्योंकि हो सकता है, वह भूत-प्रेतों को देखते ही मारे डर के उसके प्राण-पखेरू उड़ जाये। अत: बहुत सोच-विचार कर कार्य करें।

बुद्धि वृद्धि तथा विद्या प्राप्ति के लिये तन्त्र

माघशुक्ल त्रयोदशी की सन्ध्या को ब्राह्मी बूटी को निमन्त्रण दे आयें और चतुर्दशी को प्रात:काल चार बजे सुबह (ब्रह्म बेला) में उठकर बिना किसी से बोले ब्राह्मी के पौधे को उखाड़ लें, फिर उसे पीसकर पी जायें। पीते वक्त गले तक जल के अन्दर खड़े होकर पीना चाहिये।

निमन्त्रण देने का मन्त्र इस प्रकार है—**'ॐ कुमार रंजन्यै नमः'**

इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर निमन्त्रण देवे और चावल तथा हल्दी से ब्राह्मी के झाड़ को आसपास घेरा देकर न्यौता देवें।

ब्राह्मी बूटी उखाड़ने का मन्त्र इस प्रकार है—**'ॐ ऐं बुद्धिवर्धिन्यै नमः'**

इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर ब्राह्मी के पेड़ (पौधा) को जड़ सहित उखाड़ लें।

इस मन्त्र से ब्राह्मी को धोवें—**'ॐ ऐं ह्रीं ब्राह्मय नमः'**

इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर धोवें। फिर खरल में डालकर पीस लें। बाद में नीचे लिखे मन्त्र का एक सौ आठ बार जप कर गले भर पानी के अन्दर खड़े होकर पीसे हुए रस को छान कर पी जायें। ऐसा करने से विद्या की प्राप्ति तथा याददाश्त तीव्र होती है।

ब्राह्मी बूटी पीसकर पीने का मन्त्र

'ॐ श्री वाग्वादिनी सरस्वती मम् जिह्वाग्र वद वद मां सर्व विद्यां देहि देहि स्वाहा।।'

भैरव द्वारा मारण मन्त्र

ॐ नमो हाथ फावड़ी कांधे कामरी भैरू वीर मसाणी खड़ हल की धुनही बज्र की बाढ़ वेग न मारे तो मारा कालका की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–दीपावली की रात्रि को चौका लगायें व दीपक जलाकर भैरव के नाम से गूगल देवें। उड़द को एक सौ इक्कीस बार मन्त्र कर दिये पर मारें। फिर काले कुत्ते के खून में सानकर राख मिलाकर रखें। (चिता की भस्म मिलाकर),जरूरत पड़ने पर मन्त्र पढ़ के उड़द के दानों को सात बार बैरी को मारें तो बैरी का मारण होता है।

मोहिनी मन्त्र

रही ओल में बसी कुल में कुल का बास ला मेरे पास सात वरण का फूल ला मेरे पास सात सखी को मोह के ला और की मोहिनी छूट जाये मेरी मोहिनी न छूटे हो जा पत्थर की रेख मेरी आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र से उल्लू के कलेजा को इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर जिस किसी स्त्री-पुरुष को खिला दें, वह खाने वाला व्यक्ति खिलाने वाले को दिलोजान से चाहने लगेगा और खिलाने वाला उससे जैसा कहेगा करेगा। उपरोक्त मन्त्र भी शीघ्र ही असर बताता है। यह अनुभूत एवं परीक्षित है।

धूल वशीकरण मन्त्र

सोहनी मोहनी दोऊ बहनी अगली छोड़ पिछली को धावे ठग मोहे ठाकुर मोहे मोहे पूरे पनिहार राजा मोहे दरबार मोहे पाँय पड़ी जंजीर, यह त्रिया हमें मोहें दुहाई वीर मसान की आन कामरू कामाक्षा देवी की।।

विधि–स्त्री के बाँयें पैर की धूल (जिसे मोहित करना हो) तथा श्मशान की राख को उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उस स्त्री के सिर पर छोड़ दें, जिसके बाँयें पैर की धूल आपने उठाया था, तो वह स्त्री प्रयोगकर्त्ता के वशीभूत हो जाती है और प्रयोगकर्त्ता उससे जैसा कहता है, वैसा करती है। शत-प्रतिशत परीक्षित मन्त्र और तन्त्र हैं, सोच-विचार कर ही कार्य करें; अन्यथा पछताना पड़ेगा।

वशीकरण मन्त्र और तन्त्र

गोरोचन की स्याही बना अनार की कलम से नीचे लिखे मन्त्र को एक सौ इक्कीस बार भोजपत्र पर लिखें। मन्त्र इस प्रकार है—**'तुमन कयन यदे नजया'**

फिर जिस आदमी या औरत को आकर्षित करना हो या जिसे फँसाना हो, उस स्त्री का नाम या पुरुष का नाम एक लाल रंग के कागज पर काली स्याही से लिखकर गंधक की आग में डालकर जला दें। यह मेरा दावा है। कि वह अपने आप ही आदमी हो या औरत प्रयोगकर्त्ता के वश में हो प्रयोगकर्त्ता के पास आकर्षित होकर आ जायेगा। यह अनुभूत एवं परीक्षित है।

(लाई-भुंजे) का तन्त्र

थूहर के दूध में ज्वार को फुलाकर छाया में पहले अच्छी तरह से सुखा लें। जब आपको लोगों को तमाशा दिखाना हो तो थोड़ी-सी ज्वार जिसे आपने थूहर के दूध में फुलाकर सुखाया था, कपड़े के ऊपर डालकर उस कपड़े में हाथ से ज्वार को इधर-उधर करें। ऐसा करने से कपड़े और हाथ की रगड़ से ज्वार की लाई फूट जायेगी। अनुभूत एवं परीक्षित तन्त्र है। यह सभी को नहीं बताना चाहिये।

पानी से भरे गुण्ड फूटें

शनिवार की शाम को वट वृक्ष की जटा को चावल के दानों और हल्दी से निमन्त्रण देकर दो अगरबत्ती जला दें और कहें कि मैं कुल तुम्हें ले चलूँगा, चलकर मेरा कार्य कर दिया करना। इतना कह निमन्त्रण दे चले आयें और फिर सूर्योदय के पहले जाकर उस वृक्ष की जटा को लेकर आ जायें। जटा को लाकर धूनी देकर (गूगल की धूनी दें) उस जटा को पनिहारिनों के रास्ते पर डाल दें। फिर जो कोई भी पनिहारिनें उसे लाघेंगी, उसके सिर से गिरकर गुण्ड फूट जायेगी, परीक्षित तन्त्र है।

खेतों का उपद्रव दूर करने हेतु मन्त्र और तन्त्र

ॐ नमः सुरेभ्यः वलज उपरि परिमिली स्वाहा।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर रेत और सफेद सरसों को मिलाकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसे खेत में डाल देने से टीड़ी, साँप, कीड़ा, सूअर, हिरण, चूहे और मच्छर ये सब खेत के अन्दर नहीं रहते, भाग जाते हैं।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में बहेड़े का बाँदा लाकर बीच खेत में डाल देने से धन-धान्य की वृद्धि होती है, अनुभूत एवं परीक्षित तन्त्र है। अतः विधिपूर्वक कार्य करें, अवश्य ही सफलता मिलेगी। इसे निर्विघ्नता पूर्वक पहले दस हजार बार जपकर एक हजार आहुतियाँ देकर सिद्ध कर लें, फिर कार्य करें। अवश्य सफलता मिलेगी, धन-धान्य की वृद्धि होगी। शुभ-अशुभ बातें आपको आपके खेत के सम्बन्ध में देवता स्वप्न में सम्पूर्ण हाल बता देंगे।

आग पर चलने का तन्त्र

केले की जड़, भाँगरा और मेढक की चर्बी, यह सभी वस्तुएँ मिलाकर किसी

बर्तन में रखकर आग पर चढ़ा दें; किन्तु आग मन्द होनी चाहिये। फिर इस लेप को ठण्डा होने पर पाँव के तलुवों पर लेप कर लें। फिर अग्नि के ऊपर चलें तो आपके पाँव नहीं जलेंगे और देखने वाले आश्चर्य करेंगे।

फूल मुरझाये नहीं-तन्त्र

किसी एक बर्तन में नमक का पानी भर लें और फिर कोई भी ताजा फूल लाकर उसमें डाल दें। फूल को जब भी निकालेंगे ताजा ही निकलेगा, मुरझायेगा नहीं।

मुँह के अन्दर से आग निकलना तन्त्र

मुँह के अन्दर फास्फोरस का टुकड़ा रख लें और धीरे-धीरे मुँह से बाहर की तरफ हवा फेंको तो आग की लपट यानी गोला निकलेगा; परन्तु यह सावधानी रखें कि हाथ में गीला कपड़ा रहे, जिससे होंठो को तर करते रहें; अन्यथा होंठ को आग की लपट लगेगी।

दीमक भगाने का तन्त्र

जिस स्थान में दीमक लग गयी हो, वहाँ पर थोड़ी-सी हींग पानी में घोलकर छिड़क दें, तो फौरन ही दीमक उस स्थान से भाग जायेगी। अत: जिस स्थान पर अत्यधिक दीमक होने की सम्भावना हो, तो हींग का घोल बनाकर उस जगह पर छिड़क दिया करें तो दीमक उस स्थान पर दुबारा आयेगी ही नहीं।

फोड़ा-फुन्सी तथा कीड़ा पर मन्त्र

उसपुडी, बुसपुड़ी, छिंटक चाँदनी हे विष, महाविष, निर्विषी पानी मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई इसी वक्त ठीक हो जाय।।

१. विधि–आँख झाड़ना–उपरोक्त मन्त्र को एक बार पढ़कर आँख पर फूँक मारे फिर दुबारा पढ़े फूँक मारे फिर तीसरे वक्त पढ़े और फूँक मारे। ऐसा तीन वक्त करे, आँख को आराम हो जायेगा, परीक्षित मन्त्र है।

२. फोड़ा-फुन्सी, घाव, कीड़ा हो जाय तब–चौराहे से अपने बाँयें पैर से सात कंकरी उठाकर मन्त्र पढ़-पढ़कर जानवर के घाव पर या शरीर पर मारे। यदि कीड़े हो गये हों तो तीन वक्त ऐसा करें, कीड़े मर जायेंगे।

प्रेताकर्षण मन्त्र एवं तन्त्र

अपनी कार्य सिद्धियों के लिये यदि प्रेत को आकर्षित करके अपने वश में करना हो तो नीचे लिखे मन्त्र को एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर जब कार्य करना हो, तब १२७ बार जप कर सिद्ध कर लें। मन्त्र—**'अल्लम मुल्लम कुला मुल्लाह।'** अँधेरे कमरे में बैठकर बकरी के गोशत को आग में डालें, उससे जो धुआँ निकले उसे एक शीशी में भर लेना चाहिये। फिर उस शीशी को गंगाजल या किसी

दरिया का पानी से धोकर धूप-दीप दें तथा गन्धक की धूनी दें। इस तरह इतना करने के वाद जो भी धुआँ उस बोतल में रह जायेगा वही प्रेत है। जब किसी काम को उस प्रेत द्वारा आपको करवाना हो, उसी समय उस शीशी को आप धूप में रख दें और काम के बारे में हुक्म दें कि फला काम मेरा इसी वक्त करो। जब तक काम न हो जाये, तब तक धूप से आप शीशी को मत उठायें। उस प्रेत को आपने जो कार्य करने को कहा था, वह तुरन्त ही कर देगा। यह बहुत ही उत्तम तन्त्र प्रेत को वश में करने का है। अत: सोच-विचार का विधिपूर्वक कार्य करें, तो अवश्य ही सफलता मिलेगी। कमरे के अन्दर जरा-सा भी प्रकाश नहीं होना चाहिये, बिल्कुल जिस तरह कमरे के अन्दर कालापन होता है, उसी तरह कमरा होना चाहिये। यानी बिल्कुल अँधेरा रहना चाहिये।

पशुओं के फोड़े के कीड़े नष्ट करने के उपाय

अरहर जिसे लोग आम भाषा में तुँवल, राहर, तोर इत्यादि से जानते हैं की हरी या सूखी पत्तियाँ जो समय पर उपलब्ध हों, उसको अच्छी तरह बिल्कुल महीन पीस कर पशु के ऐसे घाव में भर दें, जो घाव भरता नहीं हो या जिस घाव में कीड़े पड़ गये हों, तो पशुओं के घाव के कीड़े भी तुरन्त दो या तीन घण्टे के भीतर मर जाते हैं और घाव भी कुछ दिनों में भर जाता है। घाव पूरने वास्ते यह अनुभूत प्रयोग है। यह पशु ही नहीं मनुष्य के हाथ पैरों में भी यदि धार वाले हथियार लग जाये तो तुरन्त भर देने से दर्द जाता रहता है और कुछ ही समय में आराम हो जाता है।

ऐसा बैल जो न चलता हो उसे चलाने का तन्त्र

ऐसा अलाल बैल जो बैलगाड़ी पर नहने में या बखरने बोने जोतने में बैठ जाता हो, न चलता हो तो ऐसा कार्य करें कि रविवार या बुधवार के दिन ऊँट की पूँछ के दो चार बाल बिना टोके निकाल कर ले आयें और रविवार या बुधवार के दिन ही वैल की नाथ की रस्सी में उन बालों को आँठ दें और बैल की नाक में उस रस्सी की नाथ को डाल दें, तो वह बैल फिर नहीं बैठता और काफी तेजी से चलता है। परीक्षित मन्त्र है, आजमाइस करके देखें।

पीलिया रोग नष्ट करने का मन्त्र

१. ऊँट की पेशाब १० मिली लीटर की मात्रा में ऐसे रोगी को जिसे पीलिया हो गया हो (बगैर बताये कि यह ऊँट का पेशाब है) दवा है कह करके पिला दें। सिर्फ तीन वक्त पिलाने से ही पीलिया का रोग ठीक हो जाता है।

२. कहीरा (कन्हेर) जो इन्द्रायण के फल सदृश लाल रंग का पकने पर होता है, उसके बीज को घी में तलकर सात दिन तक तीन या चार बीज खिलाने पर सप्ताह भर में आराम हो जाता है।

बहती माहवारी बन्द करने का तन्त्र

सूर्योदय से पूर्व सागान वृक्ष की छाल को निमन्त्रण देकर ले आयें। फिर उस छाल को पीसकर या जल में उबालकर पिला देने से बहती माहवारी तुरन्त रुक जाती है और आपको जो कार्य तुरन्त करना हो उस स्त्री को नहलाकर कर सकते हैं। परन्तु ऐसा करने के पूर्व यानी कि दवा को पीने को देने के पहले रक्त बन्धन मन्त्र से बाँधकर पीने को देना चाहिये। रक्त बन्धन मन्त्र निम्नलिखित है—

आर बान्ध धार बान्ध बान्ध रक्त की बूँद बाँध मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–किसी भी दवा को उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें या दम करें, फूँक मारें। सात वक्त मन्त्र पढ़कर यह कार्य करें। एक बार मन्त्र पढ़कर एक फूँक मारें या सात बार मन्त्र पढ़ते हुए बाँधते जायें। ऐसा करने से स्त्री की बहती हुई माहवारी तुरन्त बन्द हो जाती है। परीक्षित मन्त्र है।

बहती माहवारी तुरन्त बन्द करने का तन्त्र

सूर्योदय से पूर्व निमंत्रण देकर सेमर वृक्ष की छाल ले आयें तथा पानी में डालकर पानी को औटा लें। जब बहुत कम पानी बचे तो उसकी तीन खुराक सुबह, दोपहर और शाम को पिला दें, तो स्त्री की बहती हुई माहवारी उसी समय बन्द हो जाती है। यह कार्य तभी किया जाता है कि जब घर पर जरूरी कार्य करना हो और घर में अड़चन आ जाय तब ही ऐसा कार्य किया जाता है, अन्यथा नहीं।

मासिक धर्म का अधिक बहता रक्त बन्द करने का तन्त्र

मासिक धर्म में यदि किसी स्त्री को सात-आठ या इससे भी अधिक दिन रक्त जाता हो, तब अडूसा (बासा या रूसा) कुड़ों या कुड़रूक (इन्द्र जौ) की छाल का काढ़ा एक तोला की मात्रा में तीन समय सुबह, दोपहर और शाम को पिलाने से रक्त का अधिक गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित दवा है, अतः उचित बतायी गयी मात्रा से अधिक दवा न पिलाये।

भण्डार भरा रहे तन्त्र

जिस स्थान पर कई वर्षों से होली जलाई जाती हो, वहाँ पर जिस दिन होली जलने वाली हो, उस दिन गेहूँ, ज्वार, गौघृत, तिल का तेल और एक पैसा कोरी हाँड़ी में भर मुँह बाँध कर गाड़ दें। फिर प्रातःकाल उखाड़ लावें। फिर जिस किसी वस्तु के संग में उसे बाँध कर रखें तो उस धन में से चाहे कितना ही खर्च करें; परन्तु वह नहीं घटेगा। सावधानीपूर्वक यह कार्य करें, सफलता अवश्य मिलती है। यह कार्य करते वक्त कोई टोकने न पाये, इतना अवश्य ध्यान रखें; अन्यथा कार्य सिद्ध नहीं होगा।

खर्च किया हुआ धन फिर वापिस आने का तन्त्र

श्यामा चिड़िया का जहाँ घोसला हो उसके ठीक नीचे एक अठन्नी की पूजा कर धूप-दीप देकर गाड़ दें। फिर दूसरे दिन जब श्यामा चिड़िया उस अठन्नी को निकाल दे, तो धूनी देकर (धूप देकर) अपने पास रुपयों की थैली में रखें तो कितना भी खर्च करें फिर भी नहीं घटे, बहुत ही अद्भुत तन्त्र है। अत: सावधानीपूर्वक कार्य करें। कार्य करते वक्त कोई व्यक्ति आपको खुपटने न पाये, यानी कि यह न कहे कि तुम क्या कर रहे थे या क्या करने गये थे या कहाँ गये थे? यदि कोई कार्य करने जाते वक्त या आते वक्त ऐसा खुपट दे तो समझें कि कार्य नहीं होगा।

अन्न से भण्डार भरा रहे तन्त्र

पुष्य नक्षत्र में नीलकण्ठ पक्षी या ठाढ़ कौआ के घोंसला में जब अण्डा या बच्चा देखें तो धूप की धूनी देकर उस घोसले को निमन्त्रण दे आवे। फिर दूसरे दिन जाकर किसी स्वच्छ सफेद कपड़े से सावधानी पूर्वक उस घोसले की एक भी लकड़ी गिरने न पाये, फिर उस घोसले को लेकर आ जायें। घर न जाकर आप सीधे नदी पर जायें और एक-एक लकड़ी का टुकड़ा आप नदी में बहाते जायें। जल में वे लकड़ी के तिनके बहते जायेंगे; परन्तु उन्हीं लकड़ी के तिनके में से कोई लकड़ी का तिनका आपकी तरफ सर्प बनकर दौड़ेगा, तव आप उसे निडरतापूर्वक पकड़ लें। उसके पकड़ते ही वह लकड़ी का तिनका बन जायेगा। उस लकड़ी के टुकड़े को धूप देकर अन्न के स्थान पर रखें तो अन्न की कमी न होगी।

ऋद्धि-सिद्धि तन्त्र

भादो मासकृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र आये, तब चार कलशों में जल भरकर एकान्त स्वच्छ स्थान पर रखें। फिर दूसरे दिन प्रात:काल जो खाली हो जाये, उसे ले आयें, बाकी को वही रहने दें और पानी फेंक दें। खाली हुए उस कलशे को लाकर उसमें अन्न भरकर नित्य उसका पूजन करे, तो अन्न हर समय ही भरा रहे, चाहे जितना भी खर्च करें। यह अद्भुत तन्त्र है।

टिड्डी बाँधने का मन्त्र

अन्न बाँधू बज्र बाँधू दशो द्वार लोहे का कोड़ा ठीक हनुमान, गिरे धरती लागे घाव सब टिड्डी भस्म हो जाय, बाँधू टिड्डा बाँधू नाला ऊपर ठोकू बज्र का ताला नीचे भैरव किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजें जो हमारी सीऊँ में दाना पानी खावे तो दुहाई राजा अजय पाल की फिरे मारू हाँक गुरु की हाँक ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्रों से चावलों को अभिमन्त्रित कर खेत और खलिहान में छींटे मारें और चार लोहे की कीली को दम करें, चारों कोनों में गाड़ दें, तो टिड्डी भाग जाती है।

थप्पड़ मार विष हरण मन्त्र

घर पकड़ धसनि धसनि सार, ऊपर धसनि विष नीचे जाय, काहे विष तु इतना रिसाय, क्रोध तो तोर होय पानी हमोर थप्पर तोर नहीं ठिकाना आज्ञा मनसा माई की दुहाई, मारू हाँक गुरु की हाँक ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–जो कोई सर्प काटे की खबर लेकर आये तो उसे उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए एक थप्पर मारे तो सर्प काटे व्यक्ति के विष की शान्ति हो। फिर रोगी के पास जाकर उसका उपचार करे, रोगी ठीक हो जायेगा।

चोर भय निवारण मन्त्र

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा चोर बंध बंध ठः ठः ठः स्वाहा।।

विधि–सबसे पहले उपरोक्त मन्त्र को ग्रहण, दीपावली या अमावस्या को १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर थोड़ी-सी मिट्टी लेकर मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दरवाजे के सामने नीचे गाड़ दें, तो चोर का भय नहीं रहता है।

बर्रे ततैया के काटने का मन्त्र

आन ततैया मान ततैया कोदन की दुहाई उतर उतर री ततैया हनुमान ने कही मेरी आने मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–लोहे की कील से या कण्डी की राख से सात बार झाड़ा देवे तो नीक होय।

देह रक्षा मन्त्र

काली काली बोल मन काली माय, लेत नाम काली शत्रु मेरा काला होय, बाघ साँप भूत प्रेत दक्ष दानव वीर बैताल की बाधा न होय और न ही पथ में दिखलाय, मेरी आने मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर घर से बाहर गमन करने पर किसी भी चीज का भय नहीं रहता है। यह परीक्षित मन्त्र है।

कुसका झाड़ने का मन्त्र

कारी गाय करना कोंडा खाय झण्डा पासी उभी राह अमुक उसन उतरन जाय।।

विधि–कुसका वाले रोगी को चप्पल की कोण से या जूते से सात बार झाड़े। ऐसा तीन समय झाड़े, आराम हो जायेगा। यह परीक्षित मन्त्र है।

अदृशष्य करने का मन्त्र

१. काली बिल्ली को घी और मक्खन अत्यधिक मात्रा में खिलाये, इतना खिलायें कि वह उल्टी कर दे। उस उल्टी को उठाकर आग पर गर्म करे तो वह घी के समान हो जायेगा। तब दो मनुष्य की खोपड़ी लाकर एक में घी डालकर वत्ती जलाकर दूसरी खोपड़ी पर नग्नावस्था में काजल पारे। फिर उस काजल को जो कोई अपने नयनों में आँजेगा, वह अदृश्य हो जायेगा यानी कि दूसरे को नजर नहीं आयेगा।

२. बन्द और मयूर (मोर) की हड्डियाँ भैंस के घी में खूब पकाकर उन हड्डियों को बारीक पीसकर जो व्यक्ति अपने नेत्रों में लगायेगा, तो वह अदृश्य हो जायेगा।

३. करगिलास पक्षी की पूँछ रविवार के दिन लाकर धूप-दीप जलाकर १०८ वार गायत्री मन्त्र का जप कर पूजन करें, फिर अपने मुख के अन्दर रखें तो वह व्यक्ति अदृश्य हो जायेगा। करगिलास पक्षी लम्बी चोंच वाला सरोवरों के किनारे रहता है। यह चितकवरे रंग का होता है।

४. रविवार के दिन जब अमावस्या हो तब घुग्घू के पेट के विष (पित्) निकालकर श्मशान में जाकर मनुष्य की दो खोपड़ी लेकर एक में विष रखकर बत्ती जलावे और दूसरी खोपड़ी में काजल पाड़े; परन्तु यह कार्य नग्नावस्था में होकर करे और फिर अघोर रूप भगवान् शिव का विधिपूर्वक पूजन करे तथा अघोर मन्त्र को पहले (कार्य करने से पहले) दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर उस काजल को कार्य में लायें। यदि इस काजल को ताँबे के ताबीज में भरकर मुँह में रखे तो कोई न देखे और पाताल का धन दिखे। यदि इसी काजल को नयनों में अंजन दें, तो गन्धर्व, किन्नर, योगिनियों से मुलाकात हो। इस कार्य को श्मशान भूमि पर निडरतापूर्वक करे, तभी इस कार्य में सिद्धि मिल सकती है; अन्यथा नहीं। कार्य करते वक्त इतना ध्यान अवश्य रखें कि कोई आपको इस कार्य में टोकने न पाये; अन्यथा कार्य नहीं होगा।

आकर्षण तन्त्र

रविवार या बुधवार को बाँयें हाथ से एक ही चोट में छछून्दर को मारे फिर और ले जाकर चौराहे में गाड़ दें। फिर सातवें दिन उसे उखाड़े तो यदि उसकी एक हड्डी भागने लगे तो उसे पकड़ ले और जो न भागती हो रख ले। फिर उन दोनों को साफ कर धूप-दीप दिखावें; परन्तु यह पहिचान रखें कि कौन-सी हड्डी भागती थी या कौन-सी नहीं। फिर उस हड्डी को जो भागती थी, को किसी स्त्री को छुवायें तो वह वशीभूत हो प्रयोगकर्त्ता के पास आ जायेगी और यदि दूसरी वाली छुवा दें, तो वह विलग हो जायेगी, यानी कि वह अपने आप झगड़ कर चली जायेगी।

मसान जगाने का तन्त्र

जब कोई आदमी मर जाय या वह मन्त्रों द्वारा मारा गया हो, तो उसे जगाने वास्ते कुछ लोग ऐसा करते हैं कि जब उसके शव को श्मशान को ले जाते हैं तो श्मशान ले जाते वक्त शव के साथ कफन के कपड़े में खिचड़ा और पैसा रखते हैं, जिसे रास्ते पर गोबर दिखने पर छोड़ दिया जाता है। आप शव के पीछे-पीछे जायें और जहाँ पर वह खिचड़ा और पैसा छोड़े हों, वहाँ से खिचड़ा और पैसा उठाकर ले आयें। यह कार्य बहुत ही फुर्ती से होना चाहिये। फिर जाकर नग्न होकर स्वयं उसकी अँगूठी बना लें या किसी सुनार से बनवायें; परन्तु वह भी नग्न होकर बनाये और वह भी इतनी जल्द बनाये कि वे लोग श्मशान से शव को दफन करके लौटने न पायें। फिर तीसरे दिन जिस दिन उसका क्रिया-कर्म होता है, उस दिन शाम को जाकर खिचड़ी को श्मशान की मटकी में पकावे, पकाने के बाद उस व्यक्ति को मन्त्रों के द्वारा बुलायें, बुलाने के पहले अपने चारों ओर मन्त्र से अपनी रक्षा होने वास्ते गोल घेरा खींच लें। फिर धूप-दीप देकर उस मृत आत्मा को बुलायें, अँगूठी को सामने घेरा के अन्दर ही रखें। वह मृतक आत्मा आपके सामने आयेगी तो आप डरे नहीं। वह आपसे उस छल्ले को माँगेगा। आप उसे देवें नहीं और उससे तीन वचन ले लें कि आप जब भी उसे बुलाओगे। तो उसे आना पड़ेगा और जो करने को कहोगे करेगा। जंब वह तीन वचन दे दे तो उसे जाने का निर्देश दे दें, कि जाओ मैं जब बुलाऊँगा तब आना, तो वह प्रेत चला जायेगा। वह जब तक आपके पास अँगूठी रहेगी आपके वश में रहेगा और आप जो कहेंगे करेगा।

मोहन मन्त्र

जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो लोग उसे श्मशान को लेकर जाते हैं। तब कफन में खिचड़ा और पैसा बाँधकर शव के साथ ले जाते हैं और कुछ दूरी पर जहाँ गोबर वगैरह दिखता है, वहाँ पर वह खिचड़ा और पैसा छोड़ देते हैं। आप ऐसा कार्य करें कि वह पैसा जो खिचड़ा के साथ छोड़ते हैं, को लेकर सीधे सुनार के पास जायें और उससे कहकर ताबीज बनवायें। उसे नग्नावस्था में ही बनवायें या खुद बनायें। इस कार्य के लिए उसे पहले ही दो चार दिन पहले समझा देना चाहिये, ताकि उस समय कोई टोकने न पाये। बेहतर तो होगा कि आप स्वयं ही ताबीज बनायें। नग्न होकर वह कार्य इतनी जल्दी होना चाहिये कि वे लोग मरघट से लौटने न पायें और आपका यह कार्य हो जाये। फिर बनने के बाद आप श्मशान की धूल उस ताबीज में भरें और आप फिर उन व्यक्तियों के आने-जाने वाले रास्ते में खड़े हो जायें और देखते रहें कि कौन-सा व्यक्ति सबसे आगे है और उसके पैरों का निशान याद रखें। जैसे ही वे लोग आगे बढ़ जायें वैसे ही उस व्यक्ति के बाँयें पैर की धूल उठाकर (जो सबसे आगे चल रहा

था, की धूल उठायें)। ताबीज के अन्दर जो श्मशान की धूल भर कर लाये थे, वहाँ पर उस बाँये पैर के चिन्ह पर छोड़ दें और उस ठुकाई हुई धूल को ताबीज में भरें। जैसे ही आप यह कार्य करेंगे वैसे ही वह व्यक्ति पुनः आकर आपसे मिलेगा। तब आप समझ लें कि आपका कार्य सिद्ध हो गया। फिर उस ताबीज को बन्द कर अपने पास रख लें। फिर जब किसी को आकर्षित होकर आपको अपने पास बुलाना हो तो वह तावीज उसके शरीर से छुआ दें, तो वह आपके पास वशीभूत होकर आ जायेगा। इसमें किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं। अनुभूत एवं परीक्षित मन्त्र हैं।

कमर से कपड़ा गिरे का मन्त्र

रविवार या बुधवार को कुम्हार का बर्तन काटने वाला धागा चुरा कर ले आयें और फिर जब गौरैया चिड़िया को जितनी बार मैथुन करते देखें, गाँठें लगाते जायें। फिर उसे धूप-दीप दिखाकर पनघट के रास्ते पर गाड़ दें, तो जो भी स्त्री उस धागे को लाँघेगी उसकी कमर से कपड़ा छूट कर गिर पड़ेगा, अनुभूत एवं परीक्षित मन्त्र है।

कुश्ती जीतने वास्ते मन्त्र

शव का कफन लेकर यानी कि जब कोई व्यक्ति मर जाये तो लोग उसे कफन में रखकर श्मशान घाट ले जाते हैं। उस कफन में हल्दी वगैरह के दाग लगाये जाते हैं तथा गुलाल वगैरह लगायी जाती है। जब मुर्दा को लोग गाड़ते हैं और ऊपर के कफन के कपड़े को फेंक देते हैं। तब उस फेंके हुए कपड़े को इस तरह से उठाकर लायें कि आपको कोई देख न पाये और आप उसे लेकर घाट (नदी पर) जायें जहाँ पर वे लोग नहाते हों, उससे थोड़ी दूरी पर आप उस कपड़ा को साफ धोयें। उसके दाग नहीं छूटेंगे, तब आप तुरन्त ही एक अण्डा, नीम्बू, नारियल और ५ खारक उस कपड़े के ऊपर से उतारकर यह कहते हुए कि भई ये तेरी लाजमा ले भेंट दें जल में छोड़ दें। फिर उस कपड़े को धोयें, दाग साफ हो जायेंगे। इतना याद रखें कि कपड़े को साबुन से नहीं धोया जाता है। फिर कपड़ा धोकर पानी निचोड़ कर उन लोगों के आगे-आगे चलें; परन्तु वह कपड़ा उन लोगों को नजर न आना चाहिये। फिर थोड़ी दूर चलकर आप रास्ता छोड़कर चलने लगे। तब आप देखेंगे कि वे भी रास्ता छोड़कर आपके पीछे ही आ रहे हैं। तब फिर आप उसी रास्ते पर आ जाओ और खड़े हो जाओ। उन सबको निकल जाने दो। फिर उधर ही उस कपड़े को सुखाकर दर्जी के यहाँ जाकर कहो कि वह उसकी लंगोट सी दे। जब वह उस कपड़े की लँगोट सियेगा तो कपड़े में सिलाई नहीं होगी और सुई टूटती जायेगी। तब आप उसे फिर उपरोक्त चीजें भेंट चढ़ावें, तो उस कपड़े की लँगोट सिल जायेगी। जब लँगोट सिल जाये तो लँगोट को लेकर महावीरजी के मन्दिर जाकर महावीरजी का पूजन करें। सवा पाव का रोट और लँगोट लाल रंग का भेंट दें, सिन्दूर चढ़ावें, ५ पान का बीड़ा, नारियल, बतासा, जोड़ा लौंग,

इलायची भेंट चढ़ाकर प्रसाद लोगों को वितरण कर दें और उस लँगोट की भी पूजा करें, जो कि श्मशान के कफन से बनवाये थे। फिर जब कभी कहीं कुश्ती लड़ना हो तब महावीरजी को याद कर प्रणाम कर अगरबत्ती जलाकर एक फल फोड़ें। फिर लँगोटा को कसकर कुश्ती लड़ने मैदान में उतरें तो कुश्ती में अवश्य जीत हो और जहाँ पर भी कुश्ती लड़ें जीते, चाहे जिसके साथ लड़ें। बहुत ही उपयोगी मन्त्र हैं; परन्तु इतना ध्यान रखें कि इस कार्य के पूर्ण होने तक कोई आपको टोकने न पाये; अन्यथा सारा किया-कराया पर पानी फिर जायेगा।

जादू-टोना का मन्त्र

जय काली कलकत्ते वाली जय हनुमान जय चालीस तेरा वचन न जाये खाली जो करे सो पाये खाली, अपनी चीज अपना मिल जाय, धरती खोल सुर पाय नखमा खो अपना सो पाई तेरे गुरु का वचन न सुहाई, इसी वक्त जादू टोना यहाँ से भग जाई मारू हाँक गुरु की हाँक ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को होली, ग्रहण या दीपावली में १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें। मन्त्र कंठस्थ होना चाहिये। एक ही साँस में पूरा मन्त्र कहना चाहिये, फिर जब ऐसा हो जाये तब रोगी के ऊपर के राख (उपले की राख) तीन वक्त उतार कर उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए सात बार फूँक मारें, ऐसा तीन समय सुबह-दोपहर और शाम को करें। ऐसा करने से जादू-टोना का असर खत्म हो जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है। परीक्षित मन्त्र है।

भैरव द्वारा मारण मन्त्र

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरू हुक्म हाजिर है मेरा भेजा कर्म करें, मेरा भेजा हुआ रक्षा करें, आन बाँधू बान बाँधू, दशोधर बाँधू, माँ बाड़ी बहत्तर कोट बाँधू, फूल से भेजू फूल जाये कोठे जी पड़े थर थर काँपें हल हल हले मेरा भेजा सवा पहर सवा घड़ी को बावला न करें, तो माता काली की सेज पर पग धरे, बाबा चूके तो कुआ सूखे, बाचा छोड़ कुबाचा करे तो धोबी की नाँद चमार के कूड़े में पड़े, मेरा भेजा बावला न करें तो महादेव की लटा टूटे भूमि में गिरे माता पार्वती की चीर पर चोट करें, बिना हुक्म मारना हो, काली के पुत्र कंकाल भैरू मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–एक ठीकरा में यानी परई में जो मिट्टी की बनी होती है, जोड़ा लौंग, बतासा, पान, सुपारी, लोहबान, धूप, कपूर रखें। एक नीम्बू और अण्डे के ऊपर एक पुतला और दो त्रिशूल बनावें। सात रंग की मिठाई और सात रंग के दाने इस ठीकरा

पर रख उड़द के दाने इक्कीस वार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करें। होली, ग्रहण व दीपावली में जप करें। सिद्धि हो, फिर जिसके ऊपर मारण प्रयोग करना हो, उसका नाम लेकर होम लगायें, मन्त्र पढ़-पढ़ कर होम दे, तो वह मरेगा। यह परीक्षित मन्त्र है।

स्त्री की कमर से कपड़ा गिरे

जब मटिया आये जिसे चक्रवात कहते हैं, देहातों में लोग मटिया कहते हैं। तब नग्न होकर उस हवा के झोकों में उड़ते हुए घास के तिनके या पत्तियों को अपने मुँह से पकड़ कर हाथ न लगायें और न ही पत्तियों को जमीन पर गिरने दें, ले आयें। फिर उसे ले जाकर पनघट के जमीन के रास्ते पर होम देकर गाड़ आयें। जब कोई स्त्री उस पत्ते या घास के तिनके को लाँघेगी जिसे आपने गाड़ा था, तो उस औरत की कमर से कपड़ा छूटकर अपने आप नीचे गिर पड़ेगा। बहुत ही अनोखा एवं विचित्र मन्त्र है।

पुरुष वशीकरण मन्त्र

स्त्री अपने मासिक धर्म के कपड़े को जो रक्त से भरो हो उसको घी में डूबोकर आग लगाकर जलाकर राख बनाकर अपने पास में रख लें और जब किसी पुरुष को वश में करना चाहे तब रविवार या बुधवार के दिन उस राख को युक्तिपूर्वक बिना टोके उसे खिला दें, तो जन्म भर वह पुरुष स्त्री का दास बना रहेगा।

मरही माता द्वारा मारण मन्त्र

मरही मरही मैं पुकारूँ मरही खड़ी मरघटा तीर हाथ में छुरी बगल में रापी सात रोज का बासा मुर्दा ठाढ़े बैठें हाड़ चबाय जहाँ पठाऊँ तहाँ जाये, घर जले घूड जले सवा पहर पर्वत जलै जै लै वैद्य द्वारे आवे तैले मरघट पहुँचावे आपन हक खाय गुरु का हक न लाये तो माता मरही मरघट की न कहाये, दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

विधि–कुँवारी कन्या की कलेजी, कौआ की रीढ़ की हड्डी या मूँछ की बाल होम दें, मरही माता को और एक बोलता मुर्गा, १ नारियल, ५ खारक भेंट दें। फिर एक नीम्बू के अन्दर श्मशानी कोयला को पीसकर भरकर दुश्मन के नाम का निर्देश देकर शराब की धार दें, और उस नीम्बू को निचोड़ें। फिर एक नीम्बू के अन्दर सात उड़द के दाने भरकर काजल से सात खड़ी रेखा खींचकर दुश्मन के नाम का निर्देश देकर उस नीम्बू का चालान कर दें, तो दुश्मन का मारण होता है।

करुआ वीर द्वारा मारण मन्त्र

कारा करुआ कारी रात काला चले आधी रात टट्टा तोड़े बाँस फाड़ै फाड़ै बज्र किवाड़ काली बकरी मद की धार घेटला देऊ तोय किकयात् जाय जाय 'बैरी' की खाट जब लग वैद्य द्वारे आवै तै ले मरघट पहुँचावे आपन हक खाय गुरु का हक न लाये तो करुआ वीर न कहाये, दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

विधि–नीम्बू के अन्दर श्मशानी कोयला को पीसकर उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए बैरी की जगह पर उस व्यक्ति का नाम लेते हुए जिसका मारण करना हो निर्देश देकर नीम्बू को निचोड़ें; परन्तु इसके पहले काली बकरी और शराब करुआ वीर के नाम से भेंट दें। उपरोक्त मन्त्र और मरही माता द्वारा मारण मन्त्र में सबसे पहले माँगू वीर नट मरही माता बंगाल की ओर कासिम का जिन्नात को याद कर कार्य करे तो कार्य में सफलता मिलती है और शत्रु का नाश होता है।

घर में भूत-प्रेत दिखाई देने का तन्त्र

घोड़े की ताजी विष्ठा लाकर रुई के साथ लपेट कर बत्ती बना कर तिल्ली के तेल में डालकर मिट्टी के बने दीपक में जलाने से, जहाँ तक उस दिये का प्रकाश होता है। उतनी जगह पर भूत-प्रेत ही नजर आते हैं। दीपक बुझा देने पर नहीं दिखते हैं।

नीम की पत्तियाँ मीठी लगे तन्त्र

मुँह में खुरासानी अजवायन का लुआब फिराकर मुँह में लगाकर नीम की पत्ती चबाओ तो नीम की पत्तियाँ बिल्कुल कड़वी नहीं लगेगी।

भूत-प्रेत उतारने का तन्त्र

घुग्घू का चाम और माँस दोनों को अलग-अलग रखकर सुखाकर पीसकर शनिवार और रविवार को मिला लें और जिस स्थान पर प्रेत हो उस स्थान पर धूनी देवें तो अवश्य ही भूत-प्रेत निकल जाते हैं या जिस किसी मनुष्य को भूत-प्रेत लगे हों, उसे उपरोक्त चमड़े और माँस का धूप देने से उस मनुष्य के ऊपर से भूत-प्रेत भाग जाते हैं।

कुदरत में दखल देना तन्त्र

मुर्गी या कबूतर के अण्डों पर मुर्दा शंख से जो कुछ लिखें अथवा बेला-बूटा काढ़ें तो जब उस अण्डे में से बच्चा निकलेंगे तो वह सभी उसके जिस्म के पंखों पर लिखा होगा। लोग देखकर ताजुब करेंगे।

मोहिनी तन्त्र

रविवार या बुधवार के दिन काली पील (काली मुर्गी) जो पहले वक्त अण्डा दे, उसका पहला अण्डा लेकर उसमें चावल के दाने भर दें तथा योगिनी के नाम से १ अण्डा, ५ खारक और एक नारियल भेंट देकर उस अण्डे को लेकर पीपल वृक्ष के पास जायें और पीपल वृक्ष के नीचे जाकर ब्रह्मदेव के नाम से १ नारियल, ५ खारक तथा एक लंगोट भेंट दें। अगरबत्ती वगैरह जलाकर उस अण्डे को पीपल के वृक्ष के पीढ़ पर इतने जोर से मारें कि अण्डे के अन्दर के चावल उस पीढ़ पर चिपक जायें। जितने चावल चिपक जायें उनको निकाल कर अलग रखें और जो नीचे गिरे उन्हें अलग रखें। फिर उन चावलों को अलग-अलग पीसकर रख लें। चिपके हुए चावलों को जिसे

पीसकर रखे थे, थोड़ा-सा पानी में गीला कर जिसे आकर्षित करना हो उसके कपड़ों पर या शरीर पर छिड़क दें, ऐसा करने से वह स्त्री जिस पर प्रयोग किया गया है, वह प्रयोगकर्त्ता के पास अपने आप खिंचकर चली आयेगी और जब उसे भगाना हो तो नीचे गिरे हुए चावलों के चूर्ण को छिड़क देने से वह रुष्ट होकर चली जाती है। यह मन्त्र अनुभूत एवं परीक्षित है। अतः सोच-विचार कर कार्य करें। किसी की इज्जत के साथ खिलवाड़ न करे।

अण्डा उड़ाने का तन्त्र

एक मुर्गी का अण्डा लेकर उसके अन्दर का मलमा एक बिल्कुल बारीक छिद्र करके निकाल दें। .फेर उस अण्डे के खोल में पारा भर दें और फिर ऊपर से उस छिद्र को किसी झिल्लीदार कागज से ढँक दें (चिपका दें)। आप देखेंगे कि ज्यों-ज्यों तेज धूप उस अण्डे पर पड़ेगी, त्यों-त्यों वह अण्डा ऊपर उड़ेगा। देखने वाले ताज्जुब करेंगे।

चावल न गले का तन्त्र

थूहर अथवा मदार (अकौना) के दूध को भिगोकर छाया में सुखा लें। फिर अग्नि में उन चावलों को चढ़ायें तो कितनी ही आग जलायें, चावल नहीं गलेंगे।

एक मन्त्र से दस काम

ओऽम् सार्पे सार्पे उन मूलिता गुलीय के आवेहि काकिका दोहन बः बः।।

विधि—दीपावली से एक दिन पहले श्मशान में जाकर मनुष्य की खोपड़ी औंधी कर गेरू की सात रेखा खींचे, रेखा खींचते समय उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते रहना चाहिये। फिर उस खोपड़ी को जल में औंधा कर घर आयें। फिर दीपावली की रात को अर्धरात्रि में जायें जहाँ खोपड़ी को औंधाकर आये थे, जाकर नग्न होकर उस खोपड़ी में जल भर लायें। फिर श्मशान की लकड़ी तथा आम की लकड़ी जलाकर उस खोपड़ी में उड़द और चावल को पकायें, जब तक यह कार्य करें उपरोक्त मन्त्र का जप करते रहें। फिर उस चावल और उड़द को धोकर घर ले आयें। यह ध्यान रखें कि कार्य करते समय पीछे फिरकर न देखें और आते-जाते किसी से भी बात न करें।

१. रविवार या मंगलवार को जिसका नाम ले उड़द चावल फेंके जो उस पर भूत चलती है। मन्त्र पढ़ते हुए फेंकें।

२. जिस तरफ से मुट्ठी आती हो या गोली आती हो उस तरफ मन्त्र पढ़ते हुए उड़द फेंकें तो रुक जायेगी।

३. बाजीगर की तुम्बी पर मारे तो तुम्बी बजना बन्द हो जाय।

४. जहाँ बाजा बजते हों, वहाँ-वहाँ मन्त्र पढ़ते हुए मारे तो बाजा बन्द हो जाये।

५. मन्त्र पढ़ते हुए तलवार की धार पर मारे तो धार कुण्ठित हो जाय।

६. मन्त्र पढ़कर घर में फेंकें तो घर से चूहे भाग जायें।

७. जिसे मन्त्र पढ़कर खिला दें, तो खाने वाला गूँगा हो जायेगा।

८. यदि किसी खेत में मन्त्र पढ़कर फेंक दें, तो खेत सूख जायेगा।

९. मन्त्र पढ़ते हुए वृक्ष पर फेंक दें, तो वृक्ष सूख जाये।

१०. जिस स्थान में वहुत मच्छर हो, तो मन्त्र पढ़कर फेंक दें, तो मच्छर भाग जाते हैं।

बच्चों की डोकी बाँधने का मन्त्र

आड़ी बाँध बाड़ी बाँध और बाँध अमराई, इस बच्चे की डाकी बाँध वीर हनुमन्त तेरी दुहाई।।

विधि–बच्चे के ऊपर से कण्डी की राख उतार कर मन्त्र पढ़ते हुए सात बार उस राख को बच्चे की तरफ मन्त्र पढ़ते हुए फूँक मारे, तुरन्त ही डोकी बन्द हो जायेगी।

खून का दूध उतरने का मन्त्र

सींक फाड़ धनुआ करौं सींचों कारा नाग खून का दूध बुहारों सोये देव पटकाय अर्जुन जैसे बाणा मारी, झाड़ै झूरा बाण दुहाई अर्जुन पण्डा की गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।।

विधि–उपले की राख को रोगी के ऊपर से उतार कर (रोगी स्त्री हो या पशु हो जिसे दूध की जगह खून आता हो) उपरोक्त मन्त्र को पढ़कर सात बार फूँक मारे तो फिर से दूध आ जायेगा और खून का आना बन्द हो जायेगा। सुबह-दोपहर और शाम तीन वक्त झाड़ा दें।

दूध सूखने पर दूध उतारने का मन्त्र

अपटवीर झपटवीर हार-हार के मरघट के मसान के नटखट ईशान के हाड़ हाड़ कर, रोम रोम कर, नस नस कर, कोठा कोठा कर सात सौत का दूध छान छानकर चार सौत से न लायें तो माता काली का पूत काल भैरव न कहाये, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–जिस औरत का या पशु का दूध सूख गया हो, उसे ऊपर से कण्डी की राख को उतार कर सात बार मन्त्र पढ़ते हुए सात फूँक मारे तो पुन: दूध उतर आता है; परन्तु दूध सूखे हुए एक सप्ताह से अधिक नहीं होना चाहिये। दिन में तीन वक्त झाड़ा देने से (सुवह, दोपहर, शाम) दूध उतर आता है।

धूल वशीकरण मन्त्र

धूल धूल तू धूल की रानी जगमोहन सुन मोरी बानी जल से धुला आन पढूँ तब पार्वती के वरदान धूलि पढ़ दूँ 'अमुकी' अंग आकर रहें 'फलाने' संग मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–जिसे वश में करना हो उस स्त्री के बाँयें पैर की धूल श्मशान की राख उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर किसी स्त्री के शरीर पर डाल देने से वह स्त्री प्रयोगकर्त्ता के वशीभूत हो जाती है, प्रयोगकर्त्ता उसे जो कहता है, वह करती है। हर किसी पर बुरी नियत से यह प्रयोग नहीं करना चाहिये; अन्यथा हानि होती है।

सरसों वशीकरण मन्त्र

कामरू देश कामाक्षा देवी, जहाँ बसे इस्मायल योगी, चल रे सरसों कामरू जहाँ बैठी बुढ़िया छुतारी माई, भेजूँ, सरसों उसे खप्प कर दे सरसों 'अमुकी' को वशकर न करे तो गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी इस्मायल योगी लजाये।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र से इक्कीस बार सरसों से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को मारे तो वह वशीभूत होती है। अनुभूत मन्त्र है।

भूत-प्रेतों को खिलाने का मन्त्र

श्वेत घोड़ा, श्वेत पंलाग ते में बैठे बाबा रहमान बाबा रहमान तुर्किन के पूत बाँधे फिरें नौवासी भूत नौ को बाँध पाँच को वश कर तीन को पकड़ बुलाओ, भागो भूत जाये न पाये, हाथ हथकड़ी पाँय बेड़ी गले तौक डलाय के यदि इसी वक्त खेल न खिलाय तो माता तुर्किन का पूत न कहाये। माता तुर्किन का दूध पीना हराम।।

विधि–यदि किसी मनुष्य के अंग पर भूत-प्रेत का साया है और वह उसके शरीर पर पूर्णरूप से नहीं आ रहे हों, तो उपरोक्त मन्त्र से उड़द के दाने या राई के दाने या अपने बाँयें पैर की मिट्टी अभिमन्त्रित कर मारे तो उस व्यक्ति के अंग पर जो भी सह सवार होगी, वह पूर्ण रूप से उसके शरीर पर आ जायेगी। तब उससे पूरा वाकिया पूछ लें, कैसे आया, क्यों आया, कब से आया है, जाता है या नहीं। फिर अन्य विधि से जो कि इस पुस्तक में दर्शायी गयी है, वे उस प्रेतात्मा की निकासी कर दें।

भूत-प्रेत कीलन मन्त्र

हनुमान हठीले ठीक बज्र का कील, मेरा गुरु कछनी काटे, मैं भी कछनी काँटू, सात समुन्दर खाई। हनुमन्त रज्जप उठजा रे, मेरी अंजनी का पूत संकट में सहाय होय, मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र से दस कीलों को अभिमन्त्रित कर आसवे वाले व्यक्ति को किसी ऐसे एकान्त स्थान पर ले जाकर जहाँ लोगों का आना-जाना न होता हो, उस जगह पर किसी वृक्ष से टिका कर बालों की गाँठ बनाकर कसकर एक कील को मन्त्र पढ़ते हुए ठोंक दें, फिर दोनों हाथों को ऊपर करके हाथ के अँगूठों के पास एक-

एक कील तथा दो-दो कीले पंजे (हाथ के पंजे) के दोनों तरफ तथा नीचे पैरों के अँगूठों के किनारे और दोनों पैरों के बीच उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए ठोंक दें। फिर कच्चा सूत को सात फेरा उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए उस आसेव वाले को इस तरह से लपेटें कि तागा को ऊपर करके आसेव वाले को नीचे से निकाल लें और तागा न टूटने पाये। ऐसा करने से भूत-प्रेत उस वृक्ष पर कील जाते हैं और फिर वे किसी को परेशान नहीं करते हैं।

आँचल झाड़ना का मन्त्र

ऊँची नीची टेकड़ी किसन चरावे गाय, आँचल झाड़े आपनों पीर पराई जाय। दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।।

विधि—स्त्री का नाम लेकर जिसके स्तन में फोड़ा हो गया है, किस स्तन में हुआ है, पूछकर अपने विपरीत आँचल से राख उतार कर उस राख पर सात वक्त मन्त्र पढ़ते हुए फूँक मार दें, तो उस स्त्री को अपने आप आराम हो जायेगा।

भूत भगाने का मन्त्र

बाँधो भूत जहाँ तू उपजो छाड़ौं गिरे पर्वत चढ़ाई सर्ग दुहेलि तुजभि झिलमिलहि हंकोर हनुमन्त पचाराई भीमा जारि-जारि भस्म करे जो चापें सौंऊ मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि—उपले (कण्डी) की राख को रोगी के ऊपर से तीन वक्त उतार कर उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए सात वक्त फूँक मारे तो प्रेतग्रस्त रोगी का प्रेत भाग जाता है और रोगी तुरन्त चंगा हो जाता है।

खर्च किया हुआ धन फिर से आ जाय तन्त्र

श्यामा चिड़िया का घोंसला हो उसके ठीक नीचे एक अठन्नी या सिक्का की पूजा कर धूप-दीप देकर गाड़ दें, फिर जब दूसरे दिन वह चिड़िया उस सिक्के या अठन्नी को वहाँ से निकाल दे, तब उसे लेकर घर आ जायें और उसे रुपयों की थैली में रखें, तो फिर जितना भी खर्च करें घटेगा नहीं। अनुभूत तन्त्र है।

बच्चों की हर प्रकार की बला दूर करने के लिये झाड़ना एवं ताबीज

कुल हो वल्लाहो अहैद अल्ल हो समदलम् यलद् वलम् यूलद् बलम् या कुल्ला हो कुफोवन यहद्।।

विधि—उपरोक्त मन्त्र से सात बार रोगी को फूँक मारे व आग पर लोहबान रखे।

पानी दम करके पिलाना (बला होने पर)

कुल आओ जो बैर बिन्यासे मले किन्नासे इला हिन्नासे मिन सरिल बस बासिल खन्नाश अलरजी यो बसबिसोफी सुदु रिन्नासे मिनल जिन्नति बन्नास।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र से पानी दम करके जिस व्यक्ति पर किसी दुष्टात्मा की रूह सवार हो पिलायें तथा उपरोक्त बताये गये नक्शे को जाफरान की स्याही से अनार की कलम द्वारा लिखकर लोहबान की धूनी देकर हरे कपड़े में भरकर ताबीज उस व्यक्ति के गले में डाल दें, तो आसवे तुरन्त भाग जाता है और रोगी ठीक हो जाता है।

लाठी बाँधने का मन्त्र

जल बाँधु जलवायु बाँधु जल की बाँधु काई 'इस मर्द' की लाठी बाँधु कमला पंडित गुरु उस्ताद लोना चमारिन वीर हनुमन्त की दुहाई।।

विधि–इस मर्द की जगह सामने वाले का नाम लेकर या संकेत करके बाँयें पैर की धूल को अभिमन्त्रित कर सामने वाले की लाठी की तरफ फेंके तो सामने वाले की लाठी बंध जाती है।

रजोविकार दूर करने का मन्त्र

ओऽम् नमो आदेश श्रीरामचन्द्र सिद्ध गुरु को, तोड़ू गाँठ और गाँठनी तोड़ दू लाय, तोड़ दू सरित परित देकर पाँय, ये देख हनुमन्त दौड़कर आय 'अमुक' की देह-शांति हो पीर भगाय श्री गुरु नारसिंह की दुहाई फिरे।।

विधि–एक बीड़ा पान को उपरोक्त मन्त्र से सात वार अभिमन्त्रित कर रजोविकार वाली स्त्री को खिलायें तो रजोविकार की खराबी दूर हो जाती है।

जीरा प्रेत निवारण मन्त्र

जीरा जीरा महाजीरा जिरिया चलाय, जिरिया की शक्ति से [illegible] चली आय, जीये तो रमटले, मोहे तो मशान टले हमरे जीरा मन्त्र से 'अमुक' अंग भूत चल जाय, हुक्त पाँडुका पीर की दुहाई।।

विधि–थोड़ा-सा जीरा लेकर मन्त्र पढ़ते हुए रोगी के ऊपर से सात वार उतार कर 'अमुक' की जगह उस व्यक्ति का नाम लेवे, जिसे भूत-प्रेत लगे हों, आग पर डाल देवें। जैसे ही जीरा आग में जलेगा वैसे ही भूत-प्रेत भाग जायेगा।

सूअर और चूहा भगाने के लिये मन्त्र

हनुमन्त धावति उदरहि ल्यावे बाँधि, अब खेत खाय सुअर, और घर माँ मूस रहें, खेत घर छोड़ बाहर भूमि जाय, दुहाई वीर हनुमन्त की जो खेत में सुअर घर में मूस जाय।।

विधि–हल्दी की पाँच गाँठें और अक्षत (चावल) के दाने लेकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जहाँ चूहा आते हों या जिस जगह सूअर और चूहे हों, रविवार के दिन या बुधवार के दिन उपरोक्त मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर सूर्योदय से पूर्व डाल देना चाहिये; परन्तु इतना अवश्य ध्यान रखें कि ऐसा कार्य करते वक्त आपको कोई टोकने न पाये यानी कि आपको यह कार्य करते वक्त कोई यह न कहने पाये कि तुम क्या

कर रहे हो? इस बात का विशेष ध्यान रखें। यदि कोई व्यक्ति इसमें टोक देगा यानि दखल दे देगा तो कार्य नहीं होगा।

चूहा भगाने का मन्त्र

पीत पीताम्बर मूसा गाँधी ले जाइहु हनुमन्त तू बाँधी, ऐ हनुमन्त लंका के राऊ, एहि को ले पैसेहुँ ऐहि को ले जाऊ।।

विधि–हल्दी की पाँच गाँठें और अक्षत तथा १ या २ पैसों को उपरोक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर खेत में डाल देने से चूहा भाग जाते हैं।

स्त्री वन्ध्या हो

ऋतु के समय यदि कोई स्त्री कटाई (भटकटैंया की जड़) की जड़ १ ग्राम प्रतिदिन तीन दिन तक खाय तो वह स्त्री वन्ध्या हो जाय, उसे फिर दुबारा कभी सन्तान न होगी।

श्वेत प्रदर रोग

राल का चूर्ण एक माशा और शहद या चावल के धोवन का पानी ढाई तोला और शहद दें तो तीन दिन में ही श्वेत प्रदर वाली स्त्री को आराम हो जाता है, यानी कि पैर जाना बन्द हो जाता है। यह अनुभूत औषधि है।

अपामार्ग साधन (गुण और कार्य)

शनिवार को शाम के समय अपामार्ग और जौ के सात-सात दाने लेकर अपामार्ग (लवा, चिरचिटा, आधा झारा, उल्टा काटा) के पेड़ (पौधा) की पूजा करें। अगरबत्ती जलाकर जौ और अपामार्ग के दानों को उस पौधे के नीचे छोड़ दें और कहें कि हे देव मेरा आपको शुभ कर्मों के लिए न्यौता है, कृपया मेरा न्यौता स्वीकार कीजिये। ऐसा कह उन सात-सात दानों को जिन्हें आप लेकर गये थे, उस वृक्ष के नीचे छोड़ दें। कहें कि हे गणेश तुम्हारी महिमा कौन वर्णन कर सकता है।

ऐसा कह उस वृक्ष को प्रणाम कर अपने घर को चला आये, पीछे फिरकर न देखे। फिर दूसरे दिन अर्थात् रविवार को (यदि पुष्य नक्षत्र हो तो अत्यधिक शुभ है)। सूर्योदय से पूर्व संध्या (ब्रह्ममुहूर्त) के समय करीब चार बजे भोर में जाकर उस वृक्ष के नीचे पूजन कर अगरबत्ती जलाकर उसे जड़ सहित उखाड़ कर ले आये और बहुत जल्द सूर्य निकलने के पूर्व ही अपने घर आ जाये। आते-जाते वक्त किसी से बात न करे और न ही पीछे लौटकर देखे तथा उस वृक्ष पर अपनी या अन्य किसी की छाया न पड़ने दें, बड़ी ही सावधानी पूर्वक उसे सँभाल कर रखें। घर लाकर रखने से पहले उस वृक्ष को गूगन की धूनी दें; परन्तु अपनी छाया उस पर न पड़ने दें। ऐसा करने से जिस कार्य के लिये आप उस वृक्षराज को लाये होंगे, कुछ ही समय में आपका वह कार्य सिद्ध हो जायेगा।

हाजरात करना

अपामार्ग की टहनी में से एक इंच लम्बी टहनी तोड़कर रुई की बत्ती वनाकर एक सिरे को दीपक के ऊपर जलाने के लिए रखे और दूसरे सिरे में अपामार्ग की लकड़ी लपेटकर दीपक के अन्दर रखे। दीपक शुद्ध से जलाये। फिर किसी दस-बारह वर्ष के बालक को जो कि स्नान वगैरह किये हो, को दीपक के सामने बिठाकर कहे, कि इस ज्योति की ओर ज्योति के अन्दर देखे। उसमें एक सफेद रुई की नोक सदृश रेखा दिखेगी, उससे पूछो कि वैसा दिखला रहा है या नहीं? जब वह कहे कि सफेद सुई की नोंक जैसी रेखा दिख रही है तब आप कहें कि सही रूप में आइये। तब वह सही रूप में बूढ़े बावा के रूप में एक हाथ में लोटा लिये हुए आयेंगे। अब आप उनसे जो भी प्रश्न का उत्तर जानना चाहोगे, वह उस लड़के को बताते जायेंगे, लड़के को सुनाई देगा और वह लड़का आपके हर सवालों का जवाब सही सही देगा, उसमें कुछ भी असत्य नहीं है। अनुभूत एवं परीक्षित है। इसी के जरिये बड़े-बड़े असाध्य रोग, भूत-प्रेतादि अनेक कार्य सिद्ध हो जाते हैं और रोगी को आराम हो जाता है। यह तन्त्र विद्यायें हैं जो सरल भी कठिन भी हैं। इसमें आदमी को अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देना होता है तथा लग्नशील हो जाने पर हर किस्म की सिद्धियाँ अपने आप हासिल होने लगती हैं। अत: हमें उस योग्य बनना चाहिये, ताकि पीड़ित लोगों को लाभ हो, वे हमारे कार्य की प्रशंसा करे और हम उन सव में आदर के पात्र हों।

बिच्छू का विष दूर करने का मन्त्र

शनिवार की शाम को अपामार्ग (औंगा) के पास जाकर एक डोरा हल्दी में रंगकर अपने साथ ले जाये। पहले उस अपामार्ग के वृक्ष की पूजा कर, फिर उस डोरे को उस पेड़ पर लपेट दें और कहे कि हे वृक्षों के राजा आपको हम परोपकार के लिए कल जे जायेंगे। अत: जिसको बीछी काटे उसका विष उतार दिया करना। दूसरे दिन रविवार सूर्योदय के पूर्व उस वृक्ष की जड़ सहित उखाड़ कर अपने घर ले आये, आते-जाते पीछे पलट कर न देखें; अन्यथा कार्य में सिद्धि नहीं मिलेगी। जव किसी को कभी विच्छू डंक मार दें, तो उस डंक मारे हुए स्थान पर अपामार्ग की पत्ती या डंठल जिसे आप लेकर आये थे, पीसकर दंशित स्थान पर लगा दें। इसके लगाते ही बिच्छू का सारा जहर बाहर निकल आयेगा और रोगी को आराम हो जायेगा।

बिच्छू विष दूर करने का मन्त्र

जब कभी भी आप सबसे पहले आम के वृक्ष में बौर देखें तो किसी से बोले नहीं और देखते ही जाकर दोनों हाथों से उस बौर को छू लें और छूकर उस बौर को वैसे ही छोड़ दें, किसी को न बतायें। जब किसी को बिच्छू काटे तब आप उस बिच्छू

काटे स्थान पर अपना हाथ फेर दें, तो तुरन्त ही बिच्छू का जहर उतर जायेगा। अनुभूत एवं परीक्षित मन्त्र है।

बैल का कन्धा आने पर मन्त्र

महादेव जी के ऐला बैला बन्दर जोते आये कान्ध, सीता माता सौरिया रामचन्द्र हरवाय उतर उतर रे कान्ध कावँरया, काँवर से उतर भुइयाँ भस्म हो जाय, मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर महादेव गौर पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र से एक वक्त में सात बार मन्त्र पढ़-पढ़कर सात बार राख (उपले की) फूँके, फिर बची हुई राख को उपरोक्त मन्त्र से बाँधकर बैल के कान्धे पर लगा दें। ऐसा तीन वक्त सुबह-शाम और फिर दूसरे दिन सुबह करें, आराम हो जायेगा।

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र तथा मन्त्रों के देवी-देवताओं को जागृत करने का मन्त्र

बाबा आदम सिर जंत्र ले जाई नारिसिंग की करूँ बड़ाई, सिंग तड़ापो एकै डारि बड़ी दयाली भय उजियारि जागे होम जागे अग्यारी जागे खेड़ापति रखवाली, जाग कारूआ जाग बारूआ, जागे वीर मसान, जागे बाबा अघोरी जिन विद्या फटकारी जागे मन्त्र तन्त्र और यन्त्र अली २ मौला मुर्तजा अजी मुसकर खुशाली अनी अनींली आवे न पास आवे सो चली जाय मौजे मुज्जफर की गली या खुली अल्लाह फकीरों की गली।

विधि–दीपावली, होली या ग्रहण में उपरोक्त मन्त्र को इक्कीस बार जप करें। जप करने के पहले दीपक जलाये, होम करे, फिर मन्त्र का जप करे। ऐसा करने से सभी देवी-देवता तथा मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र उज्जीवित हो जाते हैं।

देह रक्षा मन्त्र

१. ॐ परमात्मने पारब्रह्म नमः मम शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–उपरोक्त मन्त्र का निर्विघ्नपूर्वक दस हजार बार जप करने पर सिद्ध हो जाता है और जब अपनी देह रक्षा करना हो तब उपरोक्त मन्त्र को तीर बार पढ़कर अपने शरीर में फूँक मारे, फिर कार्य करें। कार्य में अवश्य सफलता मिलेगी।

२. ॐ नमो बज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमारा बैठा। ईश्वर कुंजी वज्र का ताला आठों याम का हनुमन्त रखवाला।।

विधि–शनिवार के दिन महावीर (हनुमान) जी का व्रत रखकर उपरोक्त मन्त्र को एक हजार आठ बार जप कर सिद्ध कर ले। फिर जब कोई कार्य करना हो तब उपरोक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर अपने ऊपर फूँक मारे तो शरीर की रक्षा हो। साक्षात् हनुमान जी आकर आपकी रक्षा करते हैं।

चौकी देने का मन्त्र

अड़सठ कुर्सी तीस पुराण मारे बन्धे तू रहमान, डबल लोहे की बारी सरदो पड़ो शरीर आस पास गेर फिरे रखवाली जहाँ लग बजे मोरी ताली तहाँ लग बन्द हो बज्र किवाड़ी तरै लैहों मद की धार ऊपर ले दो मुर्गा ढार, अली अलामत की दुहाई।।

विधि–जब आप कहीं जा रहे हों और आप को थकान महसूस हो रही हो, तब यदि आपको कहीं आराम करना हो, चाहे दिन का समय हो या रात का, जंगल पहाड़ हो या नदी मैदान हो, अपने बिस्तर के आसपास उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए घेरा खींच दें और फिर पुनः मन्त्र पढ़कर ताली ठोंक दें। जितनी दूर तक आपके हाथों की ताली की आवाज जायेगी, वहाँ तक की जगह का बन्धन हो जायेगा। फिर आप इत्मीनान के साथ आराम कीजिये। किसी भी तरह का भय नहीं रह जायेगा; परन्तु पहले मन्त्र सिद्ध कर लें। जब आप बगैर अटके यानी रुके उपरोक्त मन्त्र को एक ही साँस में बोल जायँ तब समझ लें कि मन्त्र सिद्ध हो जाय; अन्यथा नहीं। मन्त्र सिद्ध होने पर ही कोई कार्य करना चाहिये, नहीं तो नहीं करना चाहिये।

आयी आँख झाड़ने का मन्त्र

जय काली कलकत्ते वाली जय हनुमान जय चालीस मेरे गुरु की दुहाई इसी वक्त आँख का रोग चला जाय मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर महादेव गौर पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को कण्ठस्थ कर सिद्ध कर ले। एक ही साँस में पूर्ण मन्त्र बोलना चाहिये। फिर जब किसी की आँख झाड़ना हो तो उपरोक्त मन्त्र पढ़-पढ़कर फूँक मारे, ऐसा तीन बार फूँक मारे और तीन समय करे, आँख ठीक हो जायेगी।

भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र

नयन नागरी पाय घाघरी नदी च काना पहुँच रे नागरे मसाना जात नहीं जतन नहीं दैत्य मसान इसी वक्त उतरून जाय ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–सर्वप्रथम उपरोक्त मन्त्र को कण्ठस्थ कर ले। एक ही साँस में जब उपरोक्त मन्त्र को बोल लें तो समझ लें कि मन्त्र सिद्ध हो जाय, फिर जब किसी को भूत-प्रेत लगे हों तो उपरोक्त मन्त्र को पढ़कर झाड़ा देने से आराम हो जाता है, यह अनुभूत मन्त्र है।

ओले हाँकने का मन्त्र

काली बिलइया जलबत पूँछ, उस पर बैठा हनुमन्त वीर इसी वक्त

पहाड़ ही पहाड़ नदी ही नदी चली जा मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर महादेव गौर पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–पहले उपरोक्त मन्त्र को कण्ठस्थ कर लें तथा होली-ग्रहण या दीपावली में मन्त्र को जपें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जब कभी आप रास्ते में हों और ओले गिरने लगे तो पाँच ओले उठाकर और अपनी अनामिका अँगुली का खून निकालकर या किसी भी अँगुली से खून निकालकर उपरोक्त मन्त्र से ओलों को बाँधकर नदी या पहाड़ की तरफ फेंक दें, तो फिर ओले नहीं गिरेंगे। वे सिर्फ पहाड़ या नदी में ही गिरेंगे।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

गौरा काते ब्रह्मा बुने ईश्वर गाँठी देय बिन पाके फूटे भुइयाँ गिरे तो राजा रामचन्द्र सम्हारे मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर महादेव गौर पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को पढ़-पढ़कर सात गाँठ लगायें और स्त्री के गले में बाँध दें, तो गर्भ स्तम्भन होगा।

सन्निपात रोग दूर करने का मन्त्र

१. सात समुद्र की सातों बेटी सातों करो समुद्र में खेती सन काटे सन बाटें सन का करें बयारी भाग भाग रे सन हनुमन्त वीर पहुँचे आये मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर महादेव गौर पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि–चाकू से झाड़े मन्त्र पढ़ते हुए सात आड़ी रेखा और सात खड़ी रेखा एक दूसरे को काटती हुई खीचे तुरन्त ही सन्निपात रोग में आराम होगा; परन्तु तीन समय झाड़ना जरूरी है। झाड़ने के पहले मन्त्र को कण्ठस्थ करके सिद्ध कर ले। जब तक उपरोक्त मन्त्र को बगैर रुके आप एक साँस में नहीं बोल पायेंगे तब तक मन्त्र सिद्ध नहीं होगा। अत: यह कार्य करने के पहले मन्त्र सिद्ध करना जरूरी है। होली-ग्रहण या दीपावली में इसका जप कर मन्त्र उज्जीवित कर लिया करें।

२. कंकाली कंकाली कहाँ चल कजरी वन, कजरी वन काहे का चन्दन वृक्षा काहे का, चन्दन वृक्षा काहे का काला कोयला करेगा, काला कोयला काहे का, छप्पन छुरी गढ़ेगा, छप्पन छुरी काहे का सन्निपात काटे का यदि सन्निपात काटे का यदि सन्निमात काट के इसी वक्त खारे समुद्र में न बहाये, तो माता काली कंकाली न कहाके दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।।

विधि–सर्वप्रथम मन्त्र का कण्ठस्थ कर सिद्ध कर लें। फिर उपरोक्त विधि में बताये अनुसार मन्त्र पढ़ते हुए सात खड़ी लाईन और सात आड़ी रेखा खींचे। यह रेखा

चाकू या लोहे की कील से जमीन पर खींचना चाहिये। रोगी को इसी तरह से तीन समय झाड़ना चाहिये। ऐसा करने से रोगी को तुरन्त आराम हो जायेगा।

जादू-टोना, भूत-प्रेत भगाने का मन्त्र

सरस्वती गाड़ी सुन्ने का दिया, रुपे की बाती गुण बाती-बाती अंकिनी डंकिनी शंखिनी जादू टोना तेरी भवानी इसी घड़ी यहाँ से निकल जाय, मेरी आन मेरे गुरु की आन, ईश्वर महादेव गौर पार्वती महादेव की दुहाई।।

विधि– उपरोक्त मन्त्र को याद कर सिद्ध कर लें। फिर जब किसी को झाड़ना हो, तो उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए झाड़े। झाड़ने के लिए मोरपंख से झाड़े, या झाड़ू (वुहारने वाली) की १६ अंगुल लम्बी सींक तोड़ कर झाड़े या रोगी के ऊपर कण्डी की राख उतार कर उस राख में मन्त्र पढ़ते हुए फूँक मारे। ऐसा करने से भूत-प्रेत, जादू-टोना रोगी के ऊपर से भाग जाते हैं।

शत्रु विक्षिप्त करण प्रयोग

रविवार के दिन श्मशान की भस्म मदार के दूध में मिलाकर कागज पर इस यन्त्र को लिखे और यन्त्र के नीचे का नाम लिखकर अग्नि में जला दे और 'ॐ हरिः श्रीं हरस्तया, मन्त्र को ,१०८ बार जपे तो शत्रु विक्षिप्त हो जाय।

भैरव स्तम्भन प्रयोग

शत्रु के पाँव के तले की मिट्टी को मंगलवार के दिन लाकर उसे गो-मूत्र से सींच करके शत्रु के नाम की एक बुतली बनाये, फिर जहाँ कोई मनुष्य न हो, ऐसे एकान्त में नदी के तट पर वेदी निर्माण करके उस पर मूर्ति को स्थापित करे, फिर उस मूर्ति की छाती पर अति पैनी धार वाला त्रिशूल गाड़ दें और उसकी बाईं ओर वेदी में कैवर भैरव की स्थापना करे नित्य प्रति यथोक्ति विधान से बलि प्रदान और पूजा करे। फिर वहाँ ग्यारह ब्रह्मचारियों अर्थात् ब्राह्मण बालकों को उत्तम अन्न अर्थात् खीर आदि मधुर स्वादिष्ट, भोजन करावे। उस समय में भैरव के सम्मुख कड़वे तेल का एक अखण्ड दीपक जलता रहे और शत्रु की प्रतिमा के दाहिने भाग में व्याघ्रचर्म का आसन विछा उस पर आप दक्षिण मुख करके बैठे। रात्रि समय यह प्रयोग करे और आलस्य छोड़कर सावधान होकर इस मन्त्र का जप करे।

ॐ नमों भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नि तेजसे अमुकं में शत्रु मारय मारय पोथय पोथय हुँ फट् स्वाहा।

यदि रास्ते के समय सावधान होकर जप करे तो उनतीस दिन में यह मारण प्रयोग सिद्ध होता है।

(मोहन प्रयोग)

मोहन कार्य को सिद्ध करने का मन्त्र

ॐ उड़ामारश्वराय सर्व जगमोहरकायर हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख जप कर सिद्ध कर लेवे फिर जब आवश्यकता हो तब गोबर के कण्डे की राख को ७ बार इसी मन्त्र से फूँककर तिलक धारण करे। उस तिलक के धारण करते ही सब मोहन कार्य सिद्ध होते हैं।

संसार मोहन प्रयोग

१. सिन्दूर, कुंकुम, गोरोचन तीनों को मिलाय आँवले के रस में पीस कर जो इस तिलक को लगाये तो उससे संसार मोहित हो जाता है।

२. सहदेई के रस में तुलसी के बीज का चूर्ण मिलाकर तिलक बनाये रविवार के दिन जो इस तिलक को लगाये तो संसार उसके वशीभूत हो।

३. मैनसिल और कपूर को कदली (केले) के रस में पीस कर तिलक बना लें, यह तिलक जो लगायेगा उससे संसार मोहित हो जायेगा। शिव जी कहते हैं कि यह हमारा कहा गया मिथ्या नहीं हो सकता।

४. हरताल और अष्टगंध को केले के रस में पीसकर गोरोचन मिलाकर लगाने से संसार मोहित हो जाता है।

५. काकड़ासिंगी, चन्दन, वच, कुट इन सबको मिलाकर पीस ले, फिर अपने शरीर, वस्त्र, मुख पर विशेष करके धूप लगावे तो उसके दर्शन से ही पशु, पक्षी, राजा, प्रजा सब मोहित हो जायें तथा पान की जड़ (मुलेठी) को लेकर उसी का तिलक बना मस्तक पर लगाने से संसार मोहित होजाता है।

६. सिन्दूर तथा सफेद वच को पान के रस में पीसकर तिलक बना मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाये तो संसार मोहित हो जाता है।

७. चिचिंरा, भंगरैया, लाजवन्ती तथा सहदेई पीसकर तिलक लगाने से संसार मोह जाता है।

८. सफेद दूध लेकर हरताल के संग पीसकर तिलक बनाये माथे पर लगाये तो देखने वाले मोहित हों।

९. बिल्वपत्र (बेल के पत्ते) को लाकर छाया में सुखा ले, फिर कपिला गाय के दूध में पीस कर उसकी गोलियाँ बना लें। इसमें से एक गोली पीस कर तिलक लगावे तो सर्वजग मोहित हो जाये।

मन्त्र–ॐ उड्डामरेश्वराय सर्व जगत मोहनाय अं आं ॠं हुँ फट् स्वाहा।

विधि–उपरोक्त मन्त्र को एक लाख जपकर सिद्ध कर लें। फिर जिस तन्त्र का

तिल लगाना चाहे, उसे सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिल लगाये तो कार्य सिद्ध हो।

राजकुल मोहन मन्त्र

गूगुल, अगर तथा उतना ही नीलकमल लेकर उसकी धूनी सारे शरीर में देकर जिस राज सभा में जाय, देखते ही सभी राजकुल मोहित हो जाये।

राज प्रजा मोहन मन्त्र

उलूकी के पंख को लाकर कलम बनाकर बकरे के खून से निम्नलिखित मन्त्र को लिखे तो सब मोहित हो।

ओऽम् नमो अरुंधती अस्वरथनी महाराज धवी फट् स्वाहा।

स्त्री मोहन तिलक

सफेद आक (मदार) की जड़, मोथा, कुटकी जीरा इन सब चीजों को खून में पीस कर रख लें, तिलक लगाते समय विधिवत् लगाया जाय, तो जो स्त्री उस तिलक को देखे वह मोहित हो जाय।

मोहन मन्त्र

तेल सरसों में तेल राजा परिजा पांव मेलि अछक। पानी मसक ल्याय छ पै योनि मेरे पाय नगाय हाथ खण्डा फूलों की माला जानि विज्ञान गोरख जानै मेरी गति को करै न कोय हाथ पछानौं सुख धोऊँ सुमिरो निरञ्जनदेव हनुमन्त यतीहनारो पति राखै मोहनी दोहनी दोनों बहिनी आब मोहन रखल चालै मुख बोले तो जिन्हा में हुं आस मोहूँ सब संसार में निसरूँ टीका देख लिलाट। शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच छ।

विधि–दीपावली की रात को तेल लेकर उलटी घानी से उसका तेल निकलवा कर उपरोक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर माथे पर बिन्दी लगाये तो सर्वजन वश्य हों।

सभा मोहन तिलक

गोरोचन, मैनसिल, केशर और पत्रज इन सबको पीसकर तिलक लगाये जो जिसके सामने मुख करे वह वश में हो और बड़े प्यार से बोले। यही तिलक लगाकर सभा में भी जाने से सब सभी मोहित कर देता है, इसमें सन्देह नहीं।

पुरुष मोहन मन्त्र

शुभ मुहूर्त में व्रत धारण कर कामवती स्त्री की छाह में बैठ एकाग्रचित्त से १०८ बार नित्य प्रति जप करने से स्त्री अपने पति को मोहित कर लेगी। मन्त्र समाप्त होने के अन्त में अग्रलिखित मन्त्र का ध्यान दो घण्टे तक करना चाहिये—

रक्तांवर परिछिन्न यक्तमणि विभूषिताम्।
गुंजा हार समायुक्ता क्रौड़शाब्देन युक्तता।।

राजा मोहन मन्त्र

ओं श्रीं ह्लीं नमो कुरूँ सुभगे यहमुकस्य भीतं दह, दह, हन, हन, पच, पच स्वाहा।।

'अमुकस्य' के स्थान पर जिसको मोहित करना हो उसका नाम लेता जाय, इस मन्त्र का जप वृक्ष के नीचे उत्तर ओर मुँह करके सवा लक्ष प्रतिदिन जपने से ६१ दिन में सिद्धि प्राप्त होगी।

भ्राता मोहन मन्त्र

वीनोन तपयोधसंरक्ता सतोप विष्टांग।
रक्तचंदन लिप्तांगा भक्तानां च शुभप्रदाम्।।

इस मन्त्र को गौ के गोबर का त्रिभुजाकार चौका लगाकर उसके ऊपर तीनों ओर कुंकुम रखायें खींचे। तदन्तर मध्य में उसका नाम लिखकर उसके ऊपर सिन्दूर लेप करे। फिर कम्बल का आसन बिछा एकाग्रचित्त से मन्त्र पढ़ कर हवन करता जाय।

पुष्प मोहन मन्त्र

केले के रसम में मैनसिल, कपूर दोनों को पीसकर मस्तक पर तिलक कर जिस ओर जायेगा, उसी ओर के पुष्प मोहित होंगे।

पुरुष मोहन मन्त्र

रविवार के दिन सहदेई के रस में तुलसी के बीज पीसकर भग पर लेप करने से पुरुष मोहित हो जाते हैं। अथवा तुलसी के पत्तों को छांह में सुखाकर असगंध और भांग के वीज मिलाकर कपिला गाय के दूध में पीसे चार माशे नित्य प्रति प्रातःकाल जो स्त्री सेवन करेगी तो उसका पुरुष उस पर मोहित हो जायेगा।

राजा मोहन मन्त्र

कपिला गाय के दूध में सूखे वेलपत्र, चन्दन की भाँति पीसकर गोली बनावे। राज-दरवार में जाते समय तिलक लगावे। दरवार में पहुँचकर बाँयीं ओर खड़ा हो तो राजा मोहिल हो।

भ्राता मोहन मन्त्र

कड़ुई तोरई के बीजों को सुखाकर कड़वे तेल में पीसे। जब यह पीसने से गाढ़ा हो जाय, तब उसमें रसौंस, फिटकरी मिलाकर नेत्रों में नित्य लगावे। जिस द्रोही भाई के सामने पड़कर परामर्श करेगा, वही मोहित होकर प्यार करने लगेगा।

अथवा

आँवले के रस में सिन्दूर, कुंकुम, केशर, गोरोचन पीसकर मस्तक पर तिलक करे। सुगन्ध जहाँ तक उड़कर पहुँचेगी, वहाँ तक स्त्री-पुरुष मोहित हो जायेंगे।

शत्रु मोहन मन्त्र

जिससे शत्रुता हो, उसके सम्मुख काकड़ासिंगी लाल चन्दन, वच, अगर इनको पीस शरीर में धूप दे अथवा वस्त्रों पर इन औंषधियों की सुगन्धि लगावे अथवा किसी एक वस्त्र को इन औंषधिया को सुगन्धि लगावे अथवा किसी एक वस्त्र को इन औंषधियों के पानी से रंगकर छाँह में सुखावे, उसको गर्दन में डाल शत्रु के सम्मुख जाय, तो शत्रु मोहित हो जायेगा। कोई-कोई ऐसा भी कहते हैं कि उपरोक्त औंषधियों की भस्म मुँह पर लगा शत्रु के सामने जाने से विजय प्राप्त होती है।

अज्ञात मोहन मन्त्र

पानी की जड़ का रस, सफेद वच, सिन्दूर इनको मिलाकर उसमें श्यामा गौ का घृत मिला निम्नलिखित मन्त्र को जपता हुआ खरल करें। **'अं, आं, इ ई उं ऊं फट् स्वाहा।'** सवा लाख जप करे और सवा लाख बार ही खरल करे। अपरिचित मनुष्य के सामने छूनी दे, अथवा अनार के वृक्ष का पञ्चांग पीसकर उसमें सफेद घुंघुची मिलाकर मस्तक पर तिलक करे तो अपरिचित मनुष्य मोहित हो जायेगा।

राजा मोहन यन्त्र

कांसे की थाली को गो-मूत्र से शुद्ध करके जूही की कलम से गोरोचन और चन्दन की स्याही वना भोजपत्र पर गोलाकार पिण्ड खींचे। मन्त्र में साध्य व्यक्ति का नाम लिखे। गोलाकर के ऊपर अष्टदल कमल का पुष्प बनाये। उसके भीतर सात स्वर बीज लिखे। प्रत्येक जल के ऊपर एक-एक वृत्त और बनाये। उसके भीतर एक-एक कमलदल बनाये। फिर प्रत्येक दल पर शंकरादि क्रम से अक्षर लिखे। मालती, चमेली, श्वेत, कलम इत्यादि सुगन्धित द्रव्यों से विधिपूर्वक ७ दिन पूजा करे। उसके पश्चात् त्रिलोह के ताबीज में बन्दकर लोहवान की धूप दे। इस यन्त्र को बाँह में बाँध राज-दरबार में जाये तो राजा मोहित हो जाय।

भ्राता मोहन यन्त्र

अप्रसन्न भाई को मोहित करना हो तो गोरोचन, केशर, रक्त, चन्दन और मध्यमा अंगुली के रुधिर की स्याही बना, भोजपत्र पर अनार की कलम से दो रेखा वाला चतुष्कोण बनाये। यन्त्र के मध्य तीन रेखा काढ़े प्रथम रेखा पर श्री लिखे। दूसरी में ह्रीं, लिखकर साध्य व्यक्ति का नाम तीसरे में चार ह्रीं, अर्थात् दसवीं के मध्य में उसका नाम ले आवे, जब यन्त्र लिख चुके, तब सुगन्धित नैवेद्य पुष्पों से पूजा करे। फिर ब्राह्मणादि को और कुवाँरी कन्याओं को भोजन कराये। यह कार्य वर्षा ऋतु में करने से शरद ऋतु में यन्त्र सिद्ध होगा। उसी समय भाई का क्रोध भी शांत होकर प्रेम करेगा।

अज्ञात मोहन यन्त्र

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में श्री शंकर महादेव को धूप-दीप, नैवेद्य से

विधिवत् पूजन कर '**ॐ शंकर कैलाश पतये तेरो नाम जगत विख्यात, मोहूँ सारे नर और नार, मोहूँ मन्त्री और नर पाल मोहूँ पवन, अग्नि, जल, पृथ्वी, नभचर, जलचर आदि जो आवे सम्मुख हटिके न जाय, मोरे तीर मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति शंकरो वाच**'। इस मन्त्र का जप १०८ बार करके भोजपत्र पर दो रेखाओं वाला यन्त्र चमेली की कलम से केशर, कस्तूरी, गोरोचन और लाल चन्दन की स्याही बना लिखे। यन्त्र के भीतर तीन तिरछी रेखायें खींचे। पहली रेखा में ॐ, षं क्रीं ह्रीं। दूसरी में वं इं ह्री, तीसरी में ॐ, डं, लिखकर चतुष्कोण के उत्तर-दक्षिण वं डं जगत् बं डं डीं अक्षर लिखे। एक दिन पश्चात् गंध पुष्प से पूजित कर सोने-चाँदी और लोहे की तावीज बना भुजाओं में बाँध ले। सूरत देखते ही अपरिचित मोहित हो जायेगा।

स्त्री-मोहन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व जगन्मोहन कुरु स्वाहा।।

श्मशान भूमि में रात्रि के दो बजे पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धासन पर बैठकर उक्त मन्त्र का सवा लक्ष जप करने से ४१ दिन में सिद्धि प्राप्त होती है।

शत्रु-मोहन मन्त्र

ॐ बानरुद्राभिमुखी श्वेत दाभी पट्टिका काँचनी कीलंबिनी द्रव ॐ वं वं वं ॐ टः ठः।

रविवार या मंगलवार के दिन शत्रु के बाँयें पैर की मिट्टी को लाकर उसका पुतला बनावे। फिर उसे पृथ्वी पर रखकर काले वस्त्र से वेष्टित कर उस पर शत्रु का नाम लेकर आवाहन करे। फिर व्याघ्र चर्म पर बैठकर स्फटिक की माला से इस मन्त्र का जप करे तो शत्रु मोहित हो जाय।

राजा सम्मान मन्त्र

ॐ हं हं हं, ॐ, लं लं, लं, क्रां क्रां क्रां, ॐ हूँ।

रात्रि समय नदी के प्रवाह में खड़ा हो एक स्फटिक की माला से इस मन्त्र को ११०० बार जपे। सोमवार के दिन प्रतिपदा से आरम्भ करे। पूर्णिमा को खीर का हवन करे। ग्यारह सौ आहुति दे तो राजा सम्मान करे।

महामोहन मन्त्र

'ॐ भ्रीं घुं घुं डः ठः'।

चिचिका पक्षी का पंख परीवा को लाकर कस्तूरी में पीस मन्त्र पढ़कर तिलक करें। जो देखेगा, वही मोहित हो जायेगा।

पशु-पक्षी मोहन तन्त्र

काकड़ा सिंगी चन्दन बच कूट इन्हें मिलाय बनावै धूप।
देह वस्त्र मुख बांहि लगावैं। पशु-पक्षी मोहित हो आवैं।।

आकर्षण तन्त्र प्रारम्भ

१. होली के दिन को न्यौता देकर लकड़ी लाय धूप-दीप रख पूजन करे, फिर धोबी की भट्टी में जलाकर कोयला बना चूर्णकर रखे जब हस्त नक्षत्र आवे तब किसी स्त्री के सिर पर छोड़े. तो बिना बुलाये चली आवे।

२. आश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष की मूल लाकर बकरे के मूत्र में पीस जिस किसी के सिर पर छोड़ा जाय, वह निश्चय ही आकृष्ट होता है।

३. दीपावली के दस दिन पहले एक नयी हंड़िया में एक रुपया रख पूजन कर फिर मूली न्यौत कर काट लाये और इन्द्रय तथा स्त्री रजस्व लालरक्त में मिलाकर दीपावली के दिन श्मशान में ले जाय चिता की भस्म मिलाकर जिस किसी स्त्री या पुरुष या पशु के मस्तक पर छोड़े, वह तुरन्त ही आकर्षित होता है यह अनोखा तान्त्रिक योग है।

४. मंगलवार को करिविलास पक्षी (लम्बी चोंच वाला और सफेद एवं तालाव के पास रहता है।) का वीट ले आये और जिस कामिनी को आकर्षित करना हो, उसे पलंग तले की धूली लाय वीट में मिलाकर पुतला बनाकर सम्मुख ध्यान कर बैठे तो दूर देश में हो तब भी सम्मुख आ जाय।

५. स्त्री के दाँयें पैर तले की धूल लाय गिरगिट रुधिर में सान पुतला बनाकर हृदय में उसका नाम लिख मूत्र स्थान में गाड़ नित्य उस पर मूत्र करे तो सैकड़ों योजन दूर स्त्री आकर्षित होती है।

स्तम्भन प्रयोग

ॐ वं वं वं हं हं हं घ्रां ठः ठः। प्रथम हजार बार जपे।

रविवार या मंगलवार को निगोही का बीज इक्कीस बार मन्त्र पढ़ जिंस पर फेंके वही स्तम्भित हो जाय।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ॐ ह्रीं महिष मर्दिनी लह लह लह लह कठ कठ स्तम्भनं कुरु अग्नि देवाय स्वाहा।

इस मन्त्र से १०८ बार खैर काष्ठ को अभिमन्त्रित कर अग्नि में डालकर अग्नि में प्रवेश करे तो शरीर जलने का भय नहीं रहता है।

अन्य—**ॐ नमः अग्नि रूपाय में देहि स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।**

मेढक की चर्बी और घी कुवाँर को १०८ बार उपरोक्त मन्त्र पढ़ लेप करे तो शरीर न जले।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो कोरा कारावायल सो भरिया, ले गौरी के शिर धरिया ईश्वर ढाले गौरा नहाय जलती अगिया शीत हो जाय।।

नये करवा में सात बार जल भर सात बार मन्त्र पढ़ जल का छींटा दें, तो जहाँ तक छींटा जाय आग न लगे।

अग्नि स्तम्भन तन्त्र

१. जब गाँव में आग लगे तो कुँयें से एक लोटा जल ला खड़े हो अग्नि की ओर विनीत कर सिर नवाये, जब साँस भीतर जाय, तो जल पीये तो अग्नि शीतल हो जाय।

२. अग्नि में घोड़ा का खुर और बेत की जड़ डाले तो अग्नि से कपड़ा न जले।

३. सूखहट्टी व भांगर का रस हाथ में लगा कर आग हाथ में उठा ले तो हाथ न जले।

४. नौशादर व कपूर हाथ में लगा के आग उठावे तो हाथ न जले।

५. पीपल लम्बा और गोल सम भाग ले मुख में भर आग मुँह में ले, तो मुख न जले।

जल स्तम्भन मन्त्र

१. ॐ नमः भगवते रुद्राय जलं स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः स्वाहा।

पद्म कमल को महीन चूर्ण कर सात बार मन्त्र जल में छोड़ने से जल स्तम्भित होता है।

२. ॐ अस्फोटयति धारा उन्मूलका क्रां क्रां क्रां।

रविवार या मंगल को खटकुली पक्षी का पंख लाय इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर बगल में दबाकर जल में खड़ा होय तो जल स्तम्भित होता है।

३. ॐ थं थं थं थं हि थाह।।

कुलीरा पखी का पंख उक्त मन्त्र पढ़ जल में डुबो दें, तो जल स्तम्भित होता है।

४. लिसोड़े फल का चूर्ण बना मन्त्र पढ़कर जल में छोड़े तो जल स्तम्भित हो और सेंधानमक डाले तो खुल जाता है।

मेघ स्तम्भन मन्त्र

ॐ मेघ स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

नई ईंट पर चिता भस्म से चौतरफा चार रेखा खींच एक ईंट उस राख पर रख के १०८ बार मन्त्र पढ़ बन में गाड़े तो मेघ बरसना बन्द होता है।

बुद्धि स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भगवते मम शत्रु बुद्धि स्तम्भय कुरु कुरु स्वाहा।

उल्लू की विष्ठा को छाया में सुखा कर रत्ती भर जिसे पान में १०८ बार उपरोक्त मन्त्र पढ़ कर खिलाये तो बुद्धि नष्ट हो, पागल हो जाय।

बुद्धि स्तम्भन तन्त्र

वच, सहदेई, जमीकन्द, आँगा, आँगरा, सफ़ेद सरसों और सफेद आक इन सभी को पीस कर लोहे के बर्तन में रखकर तिलक लगाकर जिस शत्रु के सम्मुख जाय उसकी बुद्धि तुरन्त नष्ट-भ्रष्ट होय।

आसन स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमः दिगम्बराय अमुकस्य आसन स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

श्मशान में जाकर एक हजार आठ बार मन्त्र पढ़े तो आसन बन्द हो अथवा श्वेत गुंजा का बीज मनुष्य की खोपड़ी में बोवे और मन्त्र पढ़ नित्य दुग्ध से सींचे फिर जब शाख लता हो तब तीन बार ऊपर का मन्त्र पढ़ जिसके पालन तले रखे स्तम्भित होय।

आसन स्तम्भन तन्त्र

जहाँ पर नदी और समुद्र संगम हुआ हो वहाँ जाकर अपने हाथों से किनारे की मिट्टी लाये और रति करते समय कुत्ते की दुम के बाल लाकर दोनों को मिलाकर गोली बना तत्काल तेल में डाल दे और जिसे दिखाये तो बैठा मनुष्य नहीं उठ सकता। चौकी में भी गोली चिपका सकते हैं।

मनुष्य स्तम्भन तन्त्र

१. रजस्वला स्त्री का रक्त वेष्टित वस्त्र लाय गोरोचन एवं मजीठ से जिस स्त्री या पुरुष का नाम लिख घर में डाल दे तो वह स्त्री या पुरुष तुरन्त रुक जाय।

२. शनिवार के दिन केशर, महावर और गोरोचन की स्याही बना भोज पत्र पर शत्रु का नाम लिखे तो स्तम्भन हो वश में रहे।

सभा-मुख स्तम्भन मन्त्र

१. ॐ ह्रीं रक्ष रक्ष चामुण्डे अमुकं मुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रथम एक लाल बार मन्त्र सिद्ध करे फिर पुष्य नक्षत्र रविवार में ज्येष्ठी मधु (मूलहटी) की जड़ लेकर तीन बार मन्त्र पढ़कर सभा में फेंके तो सब व्यक्तियों का मुख स्तम्भित हो जाय।

२. ॐ नमो ह्रीं बगला मुखी सर्वदुष्टानां मुखं स्तम्भय जिह्वा आलय बुद्धि विनाशने ॐ स्वाहा।।

प्रथम एकतालिस दिन सवा लाख मन्त्र विधिपूर्वक जपे फिर थाल में घृत भर हल्दी से षट्कोण यन्त्र बनाकर छहों कोण में ॐ लिख सामने धरे फिर दशांश होम कराय ब्राह्मण भोजन कराये तो सिद्ध होय। यह मन्त्र शत्रु की बोलती (जुबान) बन्द करने

का अद्वितीय मन्त्र है। हाकिम आदि कोई गाली दे तो सात बार मन्त्र पढ़कर फूँक दे तो मुख स्तम्भन हो जाय।

जिह्वा बन्धन मन्त्र

अफल शफल अफल दुश्मन के मुँह कुलफ मेरे हाथ कुंजी रुपया तोर दुश्मन को जर जर।

शनिवार से लगातार सात रात धूप-दीप जला फूल, बताशा इकट्ठा कर हजार बार होम करें, फिर १०८ बार मन्त्र पढ़कर हाकिम के सामने जाय शत्रु की ओर फूँके तो दीख न सके और यदि अरजी पर १०८ बार फूँके तो मनोरथ पूरा होय।

शत्रु मुख स्तम्भन मन्त्र

१. ॐ ह्रीं श्री लेखन बीर चौसठ योगिनी प्रति में शत्रु 'अमुक' मुख बन्धन कुरु कुरु स्वाहा।

'मदिरा' मधु घृत का एक हजार बार श्मशान में आहुति दे फिर चार अंगुल लोहे के काँटा को सौ बार मन्त्र पढ़कर श्मशान में गाड़े तो शत्रु मुख अवश्य स्तम्भन हो जाय।

२. ॐ डीं रक्षक चामुण्डे कुरु कुरु, अमुक मुख स्तम्भनं कुरु।

प्रथम एक लक्ष जपकर सिद्ध करे, फिर पलाश की जड़ ताड़ के पत्ते में लपेट तीन बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के सम्मुख जाय, तो अति शीघ्र शत्रु स्तम्भित हो जाय अथवा श्वेत गुंजा, कूंच, अंजुंनी वृक्ष की जड़ सात बार मन्त्र पढ़कर मुख में धर लेवे तो उसके दर्शन से दर्शकों के मुख बन्द हो जाये।

क्षुधा स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो सिद्धि रूप में देहि कुरु कुरु स्वाहा।

ग्रहण में चार बार जपे फिर अपामार्ग के बीज की खीर बना व खाकर और पढ़कर जाय, तो उसकी भूख रुक जाय।

क्षुधा स्तम्भन तन्त्र

१. हस्त नक्षत्र में रविवार को चिचिड़े का बीज इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर खाय तो क्षुधा स्तम्भित होय।

२. तुलसी, अशोक, पद्म और अपामार्ग के बीज को पीस गोली बनाकर खाय दुग्ध पीये तो फिर भूख-प्यास न लगे।

३. रविवार को गाय के दुग्ध में लटजीरा चावल का खीर बना उसमें अपामार्ग डाल के धूनी दिखाये, फिर चना व गुड़ मिला हाँड़ी का मुँह अच्छी तरह से बन्द कर संकल्प कर बहते पानी के नीचे गाड़ दें, तो भूख-प्यास न लगे फिर अवधि के बाद उखाड़ कर खीर खाय तो भूख लगेगी।

निद्रा स्तम्भन तन्त्र

१. हरियल पक्षी की बीट, घोड़े की लीद में पीसकर अंजन करे तो नींद न आये।

२. महुँआ और ककरी की जड़ पीस कर सूँघने से निन्द्रा नहीं आती।

३. नमक, मिर्च, सोंठ बारीक पीस सात दिन आँजने से नींद नहीं सताती।

वीर्य स्तम्भन तन्त्र

१. सोमवार को लाल अपामार्ग की जड़ को न्योत कर लाये और कमर बाँधे तो वीर्य स्तम्भित हो।

२. पुष्य नक्षत्र में बालम खीरा की जड़ नग्न हो ग्रहण करे और पीपल, सोंठ, काली मिर्च इनको गाय के दुग्ध में पीसकर गोली बनाकर छाया में सुखाये, फिर १ गोली मुख में रखे तो अवश्य वीर्य स्तम्भित हो।

३. घुग्घू की जीभ एक रत्ती गोरोचन के साथ पीस ताँबे के ताबीज में रखे फिर मुख में रख काम करे तो निश्चय वीर्य स्तम्भित हो।

४. शनिवार को आक वृक्ष को न्योत, रविवार को फल तोड़ लाये और रुई निकाल कर बत्ती बनाकर एरण्ड के तेल में दीप जलाये तो जब तक दीप जले स्तम्भन रहे।

धार स्तम्भन मन्त्र

'धार धार खण्ड धार बाँधू सात बार फिर बांध त्रिवार चलै धार न लागे घाव पीर राखै श्री हनुमान श्री गोरखनाथ लोहे का कड़ा मूँकाबाण लागे न पैनी धार कुंठित हो तलवार।

चौराहे की धूल सात बार मन्त्र पढ़कर धार पर मारे तो धार स्तम्भित होय।

अग्नेययास्त्र बन्धन मन्त्र

ॐ नमः आदेश श्री गुरु का जल बाँधू जल जलबाई बाँधू स्याती ताई सवा लाख अहेरी बाँधू मार भी चले तो हनुमान यती की दुहाई।।

तीन बार मन्त्र पढ़कर श्वेत गौ के दुग्ध में मारे तो गोली बन्द हो जाय।

शस्त्र स्तम्भन तन्त्र

१. कृत्तिका नक्षत्र में कदबेल (कैंथा) का काँटा लाकर मुख में रखे तो घाव न लगे।

२. चमेली की जड़ मुख में रखे तो घाव न लगे।

३. सुदर्शन की जड़ बाँह में बाँधने से अथवा आंगा की जड़ को पीसकर शरीर पर लेपन करे तो संग्राम में शस्त्र की चोट न लगे।

४. पुष्य नक्षत्र में श्वेत सरसों की जड़ उत्तर मुख ही ग्रहण करे और सिर पर धरकर युद्ध को जाय, तो जब तक मुख से न बोले तब तक चोट न लगे।

५. पुष्य नक्षत्र में विष्णुकांता की जड़ सिर में बाँधकर युद्ध में जाय, तो शत्रुओं का संहार होय तथा सिंहादिं, चोर, पशु आदि भय से सुरक्षित होय।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्र

ॐ अहो कुम्भकर्ण महा राक्षस निकशा गर्भ अज्ञापय स्वाहा।।

प्रथम दस हजार जप कर सिद्ध करे फिर श्वेत गुंजा की जड़ मन्त्र से न्योत कर दाहिनी भुजा में बाँध कर युद्ध में जाय, तो शस्त्र रुक जाय।

शस्त्र लेप मन्त्र

ॐ नमो भगवते कराल विकराल रूपाय महा बल पराक्रमाय मुस्काय भुजा बलं स्तम्भय स्तम्भय दृष्टि स्तम्भय मही तले हूँ फट् स्वाहा।

प्रथम हजार बाप जपकर सिद्ध करे फिर विष्णुकांता के वीज का तेल, भिलावे का तेल, अहिकेन, गदहे का मूत्र और धतूरे के वीज का चूर्ण तीन बार मन्त्र पढ़कर शस्त्र में लेपन कर युद्ध में जाये तो शत्रु को शस्त्राशस्त्र की वर्षा प्रतीत होय।

नौका स्तम्भन तन्त्र

दूध निकलने वाले वृक्ष की पाँच अँगुल प्रमाण की एक कील भरणी नक्षत्र में बनाय नौका के छेद में डाले तो नाव नहीं चले।

पशु स्तम्भन तन्त्र

१. ऊँट की हड्डी की चार कीलें बनाय पशुशाला के चारों कोण में गाड़े तो पशु न निकल सके।

२. ऊँट की रोम जिस पशु पर डाले वह वहीं खड़ा रहे।

३. घृत और तैल गदहे के चूतर में लगा दे तो वह चिल्ला न सके।

४. मुर्गा के गले में दो रिदग रांग बाँधे तो बाँग नहीं दे सके।

५. मुर्गा के सिर में तेल लगावे तो बाँग नहीं दे सके।

मूत्र स्तम्भन तन्त्र

शनि या मंगल को छछून्दर को मारकर मूत्र स्थान से मिट्टी लेके पेट चीरकर भरके सिलाई कर दे तो जिसका मूत्र रहे उसका मुख बन्द हो या फिर खोले तो सुखी होय।

ग्राहक स्तम्भन तन्त्र

चित्रा नक्षत्र में भिलावे की लकड़ी आठ अँगुल प्रमाण जिसके दुकान के सामने गाड़ दे तो उसकी दुकान में एक भी ग्राहक न जाय।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

१. ॐ ह्रीं गर्भ धारिणे स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रथम हजार बार जपे तो फिर कृष्ण चतुर्दशी को न्योत धतूरे की जड़ लाय रति समय कमर में बाँध दे तो गर्भ ठहरे।

२. ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमः आदेश अंग में बाँधि राख, नरसिंह यती मोसर्ते बाँधि राख श्री गोरखनाथ, काँखते बाँधि राख, हपूलिका राजा सुण्डी से बाँधि राख दृढ़ासन देवी यह मन पावन काया की राख थंभे गर्भ आ बांधे धाव माँ माता पार्वती वह गंडौ ईश्वर यती, जब लग डाँडों कर पट रहे तब लग गर्भ काया में रहे फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।

कुवाँरी कन्या से काता हुआ सूत गर्भवती स्त्री के एड़ी से चोटी तक नाप सात सूत का सात मन्त्र पढ़कर सात बालकों से गाँठ लगवा डोरा गंडा बनाय स्त्री की कमर में बाँधे तो गर्भ स्तम्भन होय जब खोले तो गर्भ से बालक निकले।

३. ॐ नमो आदेश गुरु को गम्भीर बीर आत्मा हो अठौत्तर है गर्भ की सीनों तने पाके व फूटे गिर न पिरा करे तो गंभीर बीर की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

रविवार को ९ कुवाँरी कन्या से सूत कताय ९ तार का ९ गाँठ लगाय गर्भवती के एड़ी से चोटी तक नाप से धूनी दिखाय १०८ बार ऊपर का मन्त्र जप कर कमर में बाँधे तो गिरते हुए गर्भ का स्तम्भन हो।

४. कुवाँरी कन्या के काते सूत को २१ मन्त्र पढ़ कर गण्डा बनाय देवे तो गिरता हुआ गर्भ बहता हुआ रुधिर बन्द हो जाय।

५. निम्नलिखित मन्त्र को सात बार पढ़कर गण्डा बाँधे तो गर्भ रक्षा हो।

हिवत्तरे कुल की दशी नाम राक्षसी एतेषां स्मरण मात्रेण गर्भो भवति अक्षयः।

पुष्टि कर्म प्रयोग

१. ॐ परब्रह्म परत्माने नमः। उत्पत्ति स्थित प्रलय कराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकं कुरु कुरु स्वाहा।

होली या दीपावली या किसी महापर्व में एक लाख मन्त्र विधिपूर्वक २१ दिन में जपे फिर किसी भी कार्य में १०८ बार मन्त्र जप करें तो तुरन्त सिद्ध होय।

२. ॐ नमः नारायण विश्वम्भराय कौतुकाय दर्शय दर्शय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

इसे ऊपर लिखे मन्त्र अनुसार सिद्ध कर इन्द्रजाल बिछा कर करे।

देह रक्षा मन्त्र

ॐ नमो परमात्मने परब्रह्म नाम शरीर एहि वाहि कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को हजार बार जप कर सिद्ध करे और सब कार्यों में अपने शरीर की रक्षा करे।

दिग्बन्धन मन्त्र

याही सार सार सार जिन्नदेवपरी नवस्कंफार फार एक खाये दूसरे को फार चहुँ ओर अमिया पसार मलायक अस चार दुहाई दस्तखे जिब्राइल बाइ वे खंभि काइल दांइ दस्न दस्न हुसेन पीठ खदे खेई आमिल कलेजे राखे इंज्राइल दुहाई मुहम्मद अलोलाह इलाह को कंगूर लिल्लाह की खाई हसरत पैगम्बर अली की चौकी नख्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

श्मशान में या कहीं पर मन्त्र जपने के समय अथवा कहीं आने-जाने में भय लगे तो सात बार मन्त्र पढ़कर चारों ओर ताली बजाय लकीर खींच दें, तो वहाँ भय न लगे।

यात्रा में देह रक्षा मन्त्र

१. ॐ नमो कामरूर कामाख्या देवी कहाँ जाने को हुआ मेरा मन आत्मरक्षा बंदि होऊँ सावधान सिर हाथ दंहत ओ बंधन गर्दन पेट पीठी बंधन और बंधन चरण अष्टांग बाँधू मनसा के वरदान करा सके उमा के वान। कामाख्या वह होऊ अमर। आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

यह मन्त्र पढ़कर तीन बार जहाँ कहीं गमन करे तो सर्प का या मृत्यु का भय नहीं रहता।

२. छाड़ोपंथ-जीव-जन्तु आदि के अंत बीछी साँप भालू बाघा सटे दंत आदेश पिता धर्म की दुहाई आज्ञा हारि मासि चण्डी की दोहाई।

तीन बार मन्त्र पढ़कर गमन करे तो किसी का भय न होय।

३. मुई खप्पर हिके असमान लटकाय बल से तीन लोक पृथ्वी जरि जाय। परम पिता पुरुषोत्तम मैं बोलूँ इस बार, तुम रक्षा करो रक्षा करो हमार। आदेश कामरू कामाख्या हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।।

तीन बार मन्त्र पढ़ने से भूतादि का भय नहीं रहता।

४. घर से निकल धरती पर राखूँ पाँव पत्थर भये देह नहीं दुश्मन गाँव। जय दुर्गा रक्षा अमुक अङ्ग मनसा माय दूत किये है संग। आदेश मनसा माई की दुहाई।

५. काली काली बोंलमन काली माय लेत नाम काली शत्रु मोर कालाहोत बाघ साँप भूत प्रेत अरु दक्ष दानव को बाघा न डर पंथ में नाहिं दिखाय आक्षा कामरू कामाख्या हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई।

इन दोनों मन्त्रों को (चौथे और पाँचवें को) तीन बार पढ़कर गमन करे तो भय न होगा।

६. ॐ नमो कामरू कामख्या देवी घर से निकल पंथि को राख

पाँव तुम हमरी बस मात तू हमारी माय को सड़हड़ाय कौन मड़हाय कौन। तोड़ खंग मोरे तो अस्त्र नहीं कुछ सङ्ग। कौन जान काट अमुक जाय बाट के डाइन योगिन कांटा घौचा बांध दक्षा दानव बयारि में यदि पड़े पाँय रक्षा करै दुर्गा रक्षा काय।

इस मन्त्र को सात बार जपकर गमन करे तो किसी भी प्रकार का भय नहीं होता है।

७. काली घाटी में काली बन्दूचित करि स्थिर फिर सिर पीड़ा बंद और सात समुद्र परीदस घरवा बंद और देव पञ्चान कामाख्या देवी बंदू कामरूपी पावन गंगा भागीरथी बन्दों और सबघाट रक्षा कौ मोहि पंथ सब घाट आठो याम बन्धन लगा मोरे गात आज दोपहर कल रात सात दिन सात रात।

घर में अढ़ाई डग निकल सात मन्त्र पढ़ गमन करे तो भय न हो।

आत्मरक्षा मन्त्र

ॐ नमः वज्र का कोठा जिसमें पिठ हमारा पठा ईश्वर की कुञ्जी ब्रह्मा का ताला मेरे आठोयाम का यती हनुमत रखवाला।

इसे तीन बार पढ़ने से हर समय शरीर की रक्षा हो सकती है।

व्याघ्र सर्पादिक भय निवारण मन्त्र

फकीर चले परदेश कुत्ते के मन में माने बाघ बाँधू बघाइन बाघ के सातो बच्चा बाँधू साँपा चोर बाँधू बघाऊँ बाट बाँधि देऊं दुहाई लोना चमारिन की।।

मंगल को १०८ बार जपकर सिद्ध करे फिर पथ में जो मिले सात बार मन्त्र पढ़ फूँके तो व्याघ्र सर्वादि भाग जाते हैं।

आपत्ति निवारण मन्त्र

हुक्मशेख फरीद कमरीया निशी अन्धियरिया आग पानी पथरिया तीनों से तोही बचइया।।

सुनसान मैदान में जब ओला गिरे आँधी-पानी बरसे तो यह मन्त्र तीन बार पढ़कर ताली बजायें।

गृह बन्धन मन्त्र

हाट चलते बाट बाँधू बाट चलते घाट बाँधू स्वर्ग में राजा इन्द्र बाँधू पाताल में वासुकी बाँधू शिकाली बाणन तोड़ के मछली मारू टेंगरामाछ मारी गाछ फुटे डाल कारू फूले उठे तार खाईबन किये उजार आये आगे बाँधू पाछू आये पाछू बाँधू बाँयें दाँयें बाँधू यह बन्धन को बँधत ईश्वर महादेव बाँधू देव

हिम घर में सहदेव हम सोय रहेऊँ अकेला लोहे के दो कला माँस कर पत्थर हावेवा काटे कूट बड़े पिता धर्म की दुहाई।

एक मुट्ठी धूल में सात बार मन्त्र पढ़कर घर के चारों ओर छींट देवें। घर वँध जायेगा, फिर मन्त्र, जादू, सर्पादि का भय नहीं रहेगा।

चोरभय निवारण मन्त्र

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा। चोर बंध ठं ठः ठः।

प्रथम १०८ बार मन्त्र जप ले फिर सात मन्त्र पढ़कर थोड़ी मिट्टी दरवाजे पर गाड़े तो चोर का भय नहीं होता।

चोरभय निवारण मन्त्र

शुक्लपक्ष के पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुंजा के जड़ अपने सिरहाने बाँधे तो चोरों का भय न होय।

चोर के धन सहित आने का मन्त्र

ॐ घ्रू भांजन हुंकार स्फटिका दह दह ॐ।

रविवार या मंगलवार को कर्पटिका वृक्ष के नीचे मृग चर्म पर बैठ गोधूली की लकड़ी जलाय सरसों और गूगुल को मन्त्र हवन करे तो चोर धन के लिए हुए आ जाय।

चोर पहचानने का मन्त्र

ॐ नमो इन्द्राग्नि बन्ध बान्धाय स्वाहा।

जिन आदमियों पर शक हो उन सभी का नाम रवि और शनि को भोजपत्र पर लिख १०८ बार मन्त्र पढ़कर अग्नि में एक-एक आहुति डाले चोर का नाम नहीं जलेगा। अथवा मन्त्र सहित नाम लिख सफेद मुर्गा के गले में बाँध एक टोकरा से ढांप देवे और सब लोगों को हाथ धरवाये जब चोर हाथ धरेगा तो मुर्गा बोल उठेगा।

चोर मुख रक्त निकलने का मन्त्र

ॐ नमो ह्यं चक्रेश्वरी चक्रधारिणि चक्रवेगि कोटि भ्रामाभ्रामा चोर ग्राहिणी स्वाहा।

यह मन्त्र २१ बार चावल पढ़कर जिन आदमियों पर शक हो सभी को थोड़ा खिलावे तो चोर के मुख से खून निकलने लगेगा।

चोर का नाम निकालने का मन्त्र

ॐ नमः किष्किन्धा गिरी पर कदली वन में फल फूल दण्ड तल कुंजदेवी नून प्रसाद देवी अनल पालकी पालक माघ बूटी चोर तेरे कुंज को देवी तेरी आज्ञा फुरौ मन्त्र ईश्वरो वाचा।

जिस पर सन्देह हो उन सबका नाम लिख आटे की गोली बन्द कर इक्कीस बार मन्त्र पढ़ के छोड़े। जिसकी गोली उतराय पड़े उसी को चोर समझे।

कटोरी चलावन मन्त्र

१. ॐ नमो विश्वनाथ बंदू हाथ लेई माटी तुलसी बदि पे साटो, यह मूस की भीटी निज बल जाय तिसके बलते कटोरी आप चलाय चल कटोरी जहाँ चोर के तम धम विश्वनाथ बंदी केकरे गमन आदेश बड़े ईश्वर पिता धर्म की दुहाई आदेश सीना श्रीरामचन्द्र सोई।।

संध्या समय एक कटोरी में मूस के बिल की मिट्टी भर तुलसी चौरा के पास घर १०८ बार मन्त्र पढ़कर रात भर वहीं रहे। फिर प्रात:काल १ बारह वर्ष के लड़के के दोनों हाथ कटोरी पर धरके ऊपर से चूहे के बिल की मिट्टी मन्त्र पढ़कर मारे तो चोर तथा धन के निकट कटोरी जाय।

२. ॐ नमो नरसिंह बीर ज्युं ज्युं तेरी चलै पवन चलै पानी चलै चार चित चलै थहराय चोर ही चखे कथ मायापरू करे वीर यानाथ की पूजा मन्त्र टले तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा वचन्न तो चौरासी सिद्ध की आदेश मिटे।

ऊपर लिखे विधिनुसार इस मन्त्र से चावल पढ़ कर १०८ बार मारे तो कटोरी चोर और धन के पास स्वत: चली जायेगी।

चोर के स्वप्न का मन्त्र

हुक्म मुद्द जल जलाल पकरी चोटो घर पन्नार के पकुद्दाक गुद्दा या हक यारो या हक यारो।

किसी कुआँ के किनारे रात में १२१ बार मन्त्र जप कर सो रहे, नित्य ऐसे सोलह दिन तक करें तो स्वप्न में चोरी का भेद व पता मालूम हो जाय।

चोर बन्धन मन्त्र

जो काज बिया बान लाजू हाजू हाले आसमान उसी का क्रां क्रूं आं।।

दीपावली को स्वाति नक्षत्र में शाम को चिचना वृक्ष के नीचे बैठ विधि सहित पूजन करे। फिर सवा हाथ की लकड़ी काट अपने पास में रखे। फिर जब कभी चोर पकड़ना हो तो सात बार मन्त्र पढ़कर लकड़ी को चलावे तो लकड़ी उड़कर चोर के पाँव में चिपक जायेगी।

युद्ध विजय करण मन्त्र

ॐ नम: विश्वम्भराय अमुकेन विजयं कुरु कुरु स्वाहा।।

प्रथम हजार बार जपकर सिद्ध करे फिर ओंगा, धतूरे की जड़ और कुंकुम हरिताल पीसकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर तिलक करे तो युद्ध में विजय हो।

कुश्ती जीतने का मन्त्र

१. ॐ मल्ला मल्ल बादर बसन्ता आहुम आहुम।।

रविवार या मंगलवार को कनिका की लकड़ी मन्त्र से न्योत कर लावे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर दाहिनी बाहु में बाँध कुश्ती लड़े तो अवश्य जीते।

२. ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी अंग पहुरू भुजंगा पहुरु लौहे शरीर आवत हाथ तोड़ूँ पाव तोड़ूँ सहाय हनुमन्त बीर उठ अब नरसिंह वीर तेरो सोलह सौ श्रृंगार मेरी पाठ लगे नाहीं तो वीर हनुमन्त लजाने तू लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिन्दूर आपनी दह--मोही पर देहु भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

मंगलवार से आरम्भ करके ४० दिन तक नित्य १०८ मन्त्र जपे। पहले गेरू का चौका लगाय, लाल लंगोटा पहन लड्डू भोग धरे, फिर हनुमानजी का स्मरण कर सात बार मन्त्र पढ़कर लड्डू खाय तो जरूर जीते।

मुकदमा जीतने का मन्त्र

ॐ क्रां क्रां धूम सरी बदाक्षं विजयति जयति ॐ स्वाहा।।

त्रयोदशी में जब पुनर्वसु नक्षत्र पड़े तब हाथी के चर्म पर नदी किनारे मूँगे के माला से हजार बार जपे फिर सात बार मन्त्र पढ़कर जाय, तो जीते।

जुआ जीतने का मन्त्र

ॐ नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं बानरी विजयपति स्वाहा।।

दीपमालिका को आधी रात को पीपल पेड़ के नीचे बैठकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर कदम्बरी पुष्प का हवन करे। फिर एक माला सात मन्त्र पढ़कर दाँयें हाथ में बाँधकर जुआ खेते तो निःसन्देह जीते।

जुआ जीतने का तन्त्र

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो एक दिन पहले ही पंवारा वृक्ष को न्योत कर रविवार को लाय दाहिने भुजा में बाँधकर जुआ खेले तो अवश्य जीते।

अत्याहार करण मन्त्र

ॐ नमः सर्व्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोष शोष भैरवी आज्ञायपति स्वाहा।

१. यह मन्त्र पढ़कर बरगद के पेड़ को न्योत कर दूसरे दिन फल लाय माला बनाकर भोजन करे तो भीम के सदृश भोजन करने में समर्थ हो।

२. शनिवार को बहेड़े वृक्ष को न्योत कर रविवार को प्रातःकाल मन्त्र पढ़कर पत्ता लाय दाहिनी भुजा या जाँघ में बाँधे तो बीस गुणा अधिक आहार करे।

निधि दर्शन मन्त्र

१. ॐ नमः श्रीं ह्रीं क्लीं सर्व्व निधि प्रखय नमो बिच्चे स्वाहा।।

काले कौवा की जीभ, काली गौ के दुग्ध में औंट कर दही बनाय, घृत निकाल १०८ बार मन्त्र पढ़कर करजल बनाय नयनों में अञ्जन करे तो गड़ा धन दिखाई देवे।

२. ॐ नमो चिड़ा चिड़ाला चक्रवतीन्मे सिद्धिं कुरु स्वाहा।

काले कौवा को तीन दिन तक घृत व मक्खन खिलावे फिर उसकी बीट रुई में लपेट जलाकर काजल बनाय अंजन करे तो गड़ा धन दिखाई पड़े।

अदृश्य धन जानने का मन्त्र

ॐ कनक स्फुटि विश्व के सेना चीङ्ग आंजनी परमां दृष्टि कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्णिमा अगहन मास के मारे हुए हिरण के चर्म अथवा कस्तूरी युक्त जो हिरण मारा गया हो उसके चर्म पर दो में से किसी एक पर आसन बनाकर बैठकर मूँगा की माला से १०८ बार मन्त्र जपे तथा आहुति करे और अष्टधातु की कटोरी पर मन्त्र लिखकर सम्मुख रखें तो जहाँ धन गड़ा हो कटोरी वहीं जाकर ठहर जाय।

स्थान खोदने का मन्त्र

ॐ नमः एवति सुमेरु रुपया सहाकालय कङ्काल रुपाय फट् स्वाहा।

गेहूँ व तिल का चूर्ण बनाकर के घृत में सानकर उस स्थान में हवन करे तो सर्पादिक का भय न रहे फिर अच्छा दिन देखकर खोदे।

गड़े धन की परीक्षा

१. काले कौए का कलेजा और जीभ पीसकर जो आदमी पैर (उलटा) पैदा हुआ हो उसको अंजन कर आँख में अरंड का पत्ता बाँध दे। फिर उसके साथ चार मनुष्य साथ जायँ तो वह जहाँ-जहाँ पर धन सम्पत्ति गड़ी तो बतलावेगा।

२. जहाँ गड़ा धन मालूम हो वहाँ पहले एक हाँड़ी में गेहूँ भरके गाड़े। सात दिन के बाद उखाड़े गेहूँ भरा देखे तो निश्चय धन जानिये और खोदने के समय जल कमल की बास आवे तो धन जानना चाहिये।

३. एक परीक्षा यह है कि जहाँ कौवा मैथुन करते या सिंह बैठते हुए दिखाई दें अथवा जेठ-आषाढ़ में जहाँ घास व वृक्ष ही दिखाई दे और दूसरे ऋतु में सूखा हो तो जरूर धन पृथ्वी में समझना चाहिये।

अन्नपूर्णा मन्त्र

ॐ नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे घृत पूरे गणेश जी पाती पूरे ब्रह्मा विष्णु

महेश तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की भक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रथम एक लाख जपकर अन्नपूर्णा माता को भोग लगाये। फिर एक भाग कूप में डाल कर एक हाथ में एक लोटा जल भर लाये। फिर दीप जलाये। भण्डार घर में अन्नपूर्णा और वरुण का पूजन करे, १०८ मन्त्र जप करे, ब्राह्मण को भोजन कराके और लोगों को खिलाये तो भण्डार भरा रहे, माल में कमी न हो।

ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को गजानन बीर बसे मसान अवदो ऋद्धि को वरदान जो जो माँगू सो सो आन पाँच लड्डू सिर सिन्दूर हाट बाटका मटी मसान को सब ऋद्धि-सिद्धि हमारे पास पठे व शब्द सांचो फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

भोज-भंडार से सबको खिलाने से पहले ही पाँच लड्डू निकाल सिन्दूर लगाय श्री गणपति जी का पूजन कर एवं कलश में एक लड्डू धर कुएँ पर आकर जल भरे और मन्त्र पढ़कर चारों लड्डू कूप में छोड़ दे। फिर भंडार घर में कलश स्थापना कर हजार मन्त्र जप कर ब्राह्मणों को खिलाये, फिर सबको खिलाये तो भंडार में माल न घटे।

अन्य मन्त्र

ॐ नमः कामरू देश कामाख्या देवी ॐ शङ्क सादनी में बराती धरणी ऊधर उन चण्डी सवा प्रहर होय प्रक्षालि मुख प्रक्षालि तुमरो जो ध्याने। सोई फल पाई पग भुज वन्ट वन्ट नोरे सम बाँधो चार लड्डू के सिर सोहै सिन्दूर ऋद्धि-सिद्ध दो पिया नन्द के पूत सोये को उठाऊँ बैठे को देहु पठाय उठा सोलै आवै यदि न जाय लावै तो लाजै गजानन गौरा माय, ईश्वर पार्वती सब जाने पर बैठी ऋद्धि-सिद्ध आने महेश्वरी मारी चटका धार ऋद्धि सिद्ध को गणनायक राऊ।

उपरोक्त विधि अनुसार करें; परन्तु इसमें दो लड्डू बाहर रखें। बाकी लड्डू कूप में डालें और एक मनुष्य के खाने योग्य निकाल अलग रख बराबर बैठकर मन्त्र जपता रहे तो कितना ही आदमियों को क्यों न खिलाये सामग्री न घटे।

ऋद्धि करण लक्ष्मी मन्त्र

ॐ नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत-प्रेत विंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी सिद्ध रिद्धि वृद्ध कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमः क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः।

गूग्गुल, गोराचन, छारछबीला, कपूर कचरी की मटर प्रमाण गोली बनाय शनि या रवि के दिन से आरम्भ कर नित्य १०८ बार मन्त्र आधी रात में जपे और १०५

मन्त्र पढ़कर हवन करे। हवन में सब वस्तु लाल रखना चाहिये। लक्ष्मीजी को लाल वस्तु प्रदान करना चाहिये और लाल वस्त्र पहन कर २२ दिन तक इसी प्रकार होम-पूजादि करे तो लक्ष्मी की कृपा से ऋद्धि मिले।

अनायास धन प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं घ्वः घ्वः।

मृगशिरा नक्षत्र में मारे हुए काले मृग के चर्म या कोई नदी-सरोवर के किनारे के कनकांगुदी पेड़ के नीचे बैठ विधिपूर्वक एक लक्ष प्रमाण २१ दिन में जपे तो अनायास धन मिले।

ऋद्धि करण तन्त्र

भादो मास कृष्णपक्ष में जब भरणी नक्षत्र आये तब चार कलशों में जल भरकर एकान्त में धरवाये। फिर दूसरे दिन प्रातः समय जो खाली हो उसे ले आये और तीनों का जल यहीं गिराकर कलशे को छोड़कर चला आये। फिर खाली हुए कलशे को अन्न से भर नित्य पूजन करे तो अन्न हर समय भरा ही रहे।

अन्न भण्डार तन्त्र

१. जिस स्थान में बहुत दिन से होलिका जलती हो, वहाँ जिस दिन होली जलाने को हो उस दिन गेहूँ, ज्वार, गौ घृत, तिल का तेल और पैसा कोरी हाँड़ी में भर मुँह बाँधकर गाड़े, फिर होली के प्रातःकाल उखाड़ लाये। जिस किसी वस्तु में बाँध रखें तो कितना ही खर्च करें पर वस्तु न घटे। यह गुप्त रीत से करे।

२. पुष्य नक्षत्र में कहीं नीलकण्ठ या टाढ़ कौआ के घोंसला में अण्डा या छोटा बच्चा देखे तो धूप-धूनी देकर न्योत देवे। फिर दूसरे दिन जाकर वह घोंसला लेकर नदी किनारे जाये और एक लकड़ी को जल में डाले, जल में लकड़ी छोड़ते समय जब लकड़ी सर्प रूप से बन जाय, तो निडर होकर पकड़ ले। फिर वह लकड़ी हो जायेगा। उस लकड़ी को धूनी देकर अन्न की कोठरी में धरे तो अन्न कभी नहीं घटे।

धन वापसी तन्त्र

१. मलमास के महीने में रविवार के दिन एकान्त स्थान में दो रुपया नग्न हो दो स्थानों में थोड़ा हटकर गाड़े। वहाँ किसी नर-नारी की छाया नहीं पड़ने पाये। फिर आठ दिन के बाद उसी स्थान का फिर देखे तो जो रुपया उड़ के दूसरे के पास गया हो उसे खर्च करे और दूसरे को थैला में रखें तो रुपया चला आवे।

२. श्याम चिड़िया का जहाँ घोंसला हो उसको ठीक नीचे में एक अठन्नी को पूजा कर गाड़े। फिर दूसरे दिन जब वह चिड़िया अठन्नी निकाल दे तो धूनी देकर रुपयों की थैली में धरे तो खर्च करे पर न घटे।

३. रविवार के दिन कहीं मेढक व मैढकी को मैथुन करता पाये तो मार के

नर के मुख में रुपया मादा के मुख में अठन्नी धर के दोनों को टीका लगाय किसी तालाब के पूरब किनारे नर को और पश्चिम किनारे मादी को गाड़े। फिर दूसरे रविवार को जाय, दोनों को खोदकर लावें और रुपया-अठन्नी का पूजन कर रुपये को खर्चे, अठन्नी को थैली में धरे तो खर्च किया हुआ धन फिर आ जाय। परीक्षा करके धन-लाभ करे।

स्त्री-पुरुष विद्वेषकरण मन्त्र

आक ढाक दोनों वगराई अमुका अमुकी ऐसी मरे जस कूकुर बिलाई आदेश गुरु सत्यनाम को।

शनिवार से आरम्भ कर सात दिन तक आक के पत्तों पर मन्त्र लिख आधी रात को नित्य सात बार मन्त्र पढ़कर ढाक लकड़ी की आग में जलाये तो आपस में बैर होय।

स्त्री-पुरुष विग्रहकरण दूसरा मन्त्र

ॐ नमो पंखेश अमुका-अमुकी मध्य विग्रह कुरु स्वाहा।

घुग्घू पक्षी का सिर और कौवा का पंख तीन बार पढ़कर जलाये तो निश्चय ही स्त्री-पुरुष से कलह होकर बैर हो जाता है।

विद्वेषण तन्त्र

१. साही का काँटा लाकर जिसके द्वार पर गाड़े तो उसके घर में नित्य कलह हो।

२. हाथी और सिंह का दाँत मक्खन में घिस तिलक करे तो द्वेष हो।

३. घुग्घू पक्षी का पंख और कौवे का पंख लाकर शनिवार के दिन रात्रि में जलाकर धूनी दिखाये, फिर जिन दोनों में बैर कराना हो उनके सिर पर डाले तो घनिष्ठ मित्रों में बैर हो जाये।

४. शनि या रविवार को गदहा का मूत्र जमीन पर न गिरने दे, ऊपर से लाये और तीन दिन तक राई भिगोकर सुखाये, धूनी दे रखे। फिर रविवार के दिन जहाँ दो मित्र बैठ पावें वही फेंक दे तो लड़ाई हो, बैर हो जाय।

५. रविवार को दोपहर समय कहीं गधा या भैंसा लोटता हुआ पावे तो वहाँ से धूल लाये। फिर धूनी देकर जिस शत्रु के सिर पर डाले उसे कलह से व्याकुल होना पड़े।

६. पुरुष का कपड़ा व नारी का केश मंगल के दिन जलाकर खिलावे तो जरूर बैर होय।

७. चूहा और बिड़ाल के शिर के केश और शनिवार के दिन नीम वृक्ष के घोंसले की लकड़ी लाकर रविवार के दिन जलाये और उसी दिन तीनों को भस्म बनाकर फेंके तो जरूर दोनों में बैर हो जाय।

८. काले नाग की केंचुल और नेवले का केश दो मित्रों के बीच जला दे या नमक का धुआँ दे तो दोनों के बीच में कलह हो जाय।

९. रविवार के दिन पंचमी को श्मशान की धूल धूनी दिखाये। फिर जिसके घर में फेंके उस घर में दिन-रात कलह होती रहे। घर में शान्ति न आये।

१०. सूअर, बन्दर और कुत्ता के दाँत मँगाकर चिता भस्म व चौराहे की धूल मिलाकर दुश्मन के घर में गाड़े तो शत्रु के यहाँ रात-दिन झगड़ा हो, शत्रु चैन की नींद न सोये और बहुत दुःख पावे।

११. घोड़े का रोंवा (बाल) और भैंस का रोंवा (बाल) लाकर बबूल की लकड़ी में जला दे। राख को रख ले। फिर जिस किसी सभा या पंचायत को बिगड़ना हो वहाँ जाकर थोड़ी-सी राख पूरे सभा पर फेंक देवे। बस तुरन्त सभा में झगड़ा होने लगेगा और सभा भंग हो जायेगी।

कान झारने का मन्त्र

और कनक प्रहार धन्थर छार प्रवेश कर डार-डार पात-पात झार-झार मार-मार हुँकार-हुँकार थब्द साँचा पिण्ड कांचा ॐ क्रीं क्रीं।

विधि—साँप की बाँबी की मिट्टी लाकर इक्कीस बा उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कान में लगाये तथा इसी मिट्टी से सात बार मन्त्र पढ़कर झारे तो हर प्रकार का कान दर्द व कष्ट शान्त हो जाता है।

कण्ठमाला झारने का मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो नारसिंह गुरु आदेश को थाई कराई काचक्र चलन्ता दहन करेता छन्दन भवन ॐ ठः ठः।

विधि—उत्तर दिशा की तरफ मुँह करके बैठकर एक पुरुष के एक ही हाथ के खोदे हुए कुशों से सोमवार के दिन पुष्य-नक्षत्र में उपरोक्त मन्त्र से झारे तो निश्चय ही कण्ठमाला का रोग शान्त हो जाता है।

सिर पीड़ा झारने का मन्त्र

सहस्त्र घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, मन्त्र कांचा ना फुरो वाचा।

विधि—२१०० बार जपकर दीपावली या होली पर सिद्ध कर लें। फिर जब सिर का कोई रोगी आये तो उपरोक्त मन्त्र पढ़कर उसके मस्तक को हाथ से पकड़कर फूँक मारे तो मस्तक की कैसी भी पीड़ा हो शान्त हो जाती है। सबलबाई भी इसी पन्त्र से झारा जाता है।

नकसीर दुःख निवारण मन्त्र

ॐ मारतो लारतो दशौ दिशा धावल पर्वत कूटे खंड खंड करता मन्त्र सांचा फुरो वाचा।

विधि–एक कोटेरे में पानी भरकर ऊपर के मन्त्र को फूँक मारकर अभिमन्त्रित करे। उस पानी को नकसीर के रोगी को देकर कहे कि नाक से पानी पीये अर्थात् अन्दर खींचे। इस कार्य को कई बार करे। इससे नकसीर का बहना बन्द हो जाता है।

नेत्र दुःख निवारण मन्त्र

ॐ नमो झलमल जहर भरो तलाई। अस्ताचल पर्वत ले आई। तहाँ बैठे हनुमन्त जाई। फूटे न पाके करे न पीड़ा यती हनुमन्त राखे पीड़ा दूर। शब्द साँचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–निम्बू के पेड़ की डाली से उपरोक्त मन्त्र पढ़कर नेत्रों को सात बार झारे। इस प्रकार तीन दिन में सात बार झारना चाहिये। छुआछूत के कारण आँख को कष्ट हो या अन्य प्रकार के आँख की तकलीफ में इस प्रकार झाड़ा लगाने से आँखों के सभी प्रकार के दर्द या कष्ट शान्त हो जाते हैं।

पीलिया (कमल) रोग झारने का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल विकराल नरसिंह देव खादौ पीलिया कूँ मिदातौ कारै मारै पीलिया रहे न नेक निशान। जो कहीं रह जाय तो जती हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–एक कटोरे में कडुआ तेल लेकर रोगी के मस्तक के ऊपर रखे और फिर इस उपरोक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ तेल को चलाता जाये। अब वह तेल फेन के साथ पीला हो जाये तब उसे उतार कर चौराहे पर फिकवा दे। इस प्रकार तीन दिन करे।

भूत झारने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का मन्त्र सांच कंठ कांच दुहाई हनुमान वीर की जो जावे लंका जारी व लंका मझारी, आन लक्ष्मण वीर की आन माने जाके तीर की दुहाई मेमना पीर की बादशाह ज्यादा काम में रहे आमदा दुहाई कालिका माई की घौलागिरि वारी चढ़ै सिंह की सवारी जाके लंगूर हैं अगारी, प्याला पिये रक्त की चंडिका भवानी, वेदवानी में बखानी, भूत नाचे बेताल नाचे, राखे अपने भक्त की लाली मैहर वाली काली कलकत्ते वाली हाथ कंचन की थाली लिए ठाड़ी भक्त बालिका दुष्टन प्रहारी सदा संतन हितकारी उतर भूतराज जल्दी कर नहीं तो खाय तोको कालका माई, उन्हीं की दुहाई भक्त की सहाई। सारे संसारन में माई तेरी ज्योति रही जाग के। पकड़ के पछड़ के मात कर मत अबार कर तेरे हाथ में कृपाण भक्षण करले जल्दी आई के जाय नाही भूत, पकड़ मार, जाय भूत उतर उतर उतर तो राम की दोहाई। गुरु गोरखनाथ का फंदा करेगा तोय अन्धा फुरो फुरो मन्त्र हुं फट् स्वाहा।

विधि–जब भूत मनुष्य के ऊपर जोर करे अथवा सिर आये तो उसे उपरोक्त मन्त्र से झारना बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। चाहे कितना भी प्रबल भूत क्यों न हो, वह तुरन्त भाग जायेगा, फिर कभी उस मनुष्य पर जोर न करेगा।

उपरोक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ रोगी को सिर से पाँव तक नीम की टहनी से सात वार झारे। ध्यान रहे कि झारने के समय कोई सामने न रहे। शुक्रवार या शनिवार को बड़ा अच्छा काम यह मन्त्र करता है। यदि समय न हो तो किसी भी दिन प्रातः या सायं भी झारा जा सकता है। इस मन्त्र को शुद्ध अच्छी तरह से याद कर लेना चाहिये तथा स्नान करके पवित्र रहकर झारना चाहिये।

ज्वर झारने का मन्त्र

ॐ नमो अजयपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर तथा धूप-दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर इस मन्त्र को सात बार पढ़कर रोगी को फूँक देना चाहिये। इससे ज्वर शान्त हो जाएगा। मंगलवार या रविवार या शुक्रवार से प्रारम्भ कर ३ दिन लगातार प्रातः फूँक देना चाहिये।

अतरा, तिजारी तथा चौथिया का मन्त्र

ॐ लङ्कायाम् दक्षिणे तीरे कुमुदो नाम वानरः तस्य स्मरणमाद्बेण ज्वरो याति दशो दिशाः।

विधि–पीपल के पत्ते पर लिखकर लाल डोरा या कलावा से पुरुष के दाँये और स्त्री के बाँये भुजा में बाँधें।

कठफोड़वा प्रयोग

१. यदि कठखोला की चोटी धूप देकर रविवार को मस्तक में लगाये तो स्त्री वशीभूत हो।

२. यदि कठखोला की चोटी कस्तूरी के साथ मिलाकर अपने पास रक्खे तो जहाँ आप जाय, वहाँ सिद्ध हो और अवगुण क्षमा हो।

३. यदि कठखोला का सर घोड़े की गर्दन में बाँधे तो घोड़ा (रेस) जीते।

४. यदि कठखोला का सर पीसकर शरीर में लेप करके जायँ तो उसे बाधा, भय कदापि न हो।

५. यदि कठखोला की चोंच के नीचे के भाग को पीसकर खाँड में खिलाये तो तत्काल विद्वेषण हो।

६. यदि चोंच को घिसकर आँख में आँजे तो जो देखे वशीभूत हो।

७. यदि कठखोला की गर्दन को घी में तलकर खाये तो बलवान हो।

८. यदि कठखोला जबान ताबीज में रखकर अपने पास रक्खे तो दुश्मन वशीभूत हो।

९. कठखोला की बाँयीं बाजू सुखाकर, जलाकर उसकी राख जिसके सिर पर डाले वह विशेष वशीभूत हो।

१०. यदि कठखोला का रक्त किसी को खिलाये तो वह अत्यन्त वशीभूत हो।

११. यदि कठखोला के रक्त को स्वयं खाये तो आँखों की ज्योति तीव्र हो।

१२. यदि कठखोला की पीठ (रीढ़) की हड्डी को अपने पास रक्खे तो शत्रु परास्त एवं भयभीत होकर वश में हो।

१३. यदि कठखोला के दाँये बाजू की हड्डी अपने पास रखे तो बड़े लोगों के यहाँ आदर हो।

(कौवा प्रयोग)

रक्त-अर्श चिकित्सा

लक्षण–लोग इसे खूनी बवासीर कहते हैं। इस रोग से गुदा के अन्दर व बाहर मस्से हो जाते हैं, जिनसे काफी खून गिरता है, रोगी दिन पर दिन निर्बल हो जाता है।

उपचार–जायफल, माजू और कौवा की बीट बरावर-बराबर लेकर उनकी मात्रा के अनुसार कद्दू का तेल लेकर सब खरल करके मल्हम बनाये और रात में सोने के समय उसे मस्सों पर लेप करे। रुई के फाये में मल्हम लगाकर गुदा के अन्दर रख दे और नीम के बिनौलों के बीज ६ माशा और उसका रस एक तोला व फिटकरी २ माशा लेकर मूली के पानी में घोंटें और मटर के बराबर गोलियाँ बनाकर सुबह-शाम एक-एक गोली दही की लस्सी के साथ लें। इससे बहुत ही शीघ्र लाभ होगा और यदि लगातार ४० दिन इस औषधि का सेवन किया जाये तो निश्चय ही रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

बिबाई चिकित्सा

लक्षण–जाड़े के दिनों में बहुधा लोगों के पैर फट जाते हैं, जिससे उनका चलना-फिरना वहुत कठिन हो जाता है और उन्हें बहुत ही कष्ट होता है।

उपचार–कौवे के बीट को शलजम के रस में तर करके मल्हम बना लें और पैरों को धोकर उन जख्मों में इस मल्हम को भर दें, परन्तु ध्यान रहे कि जहाँ तक हो सके जमीन पर पाँव न रखे और रोगी चारपाई पर ही पड़ा रहे तो निश्चय ही एक सप्ताह में यह रोग जड़ से मिट जायेगा। वैसे लाभ तो एक दो दिन में ही हो जायेगा, परन्तु यदि मल्हम नित्य बनाया जाये तो अधिक उपयोगी होगा।

हार्निया चिकित्सा

लक्षण–हार्निया रोग को देशी भाषा में आंत उतरना भी कहते हैं। यह कई

प्रकार का होता है और इसके उपचार भी कई प्रकार के हैं। इसमें रोगी की आँते छिद्र द्वारा अण्डकोष में उतरने लगती हैं, इससे रोगी को बड़ी पीड़ा होती है। इसके लिये आधुनिक युग में अनेक इंजेक्शन तथा ऑपरेशन का प्रयोग होता हैं; किन्तु स्थाई लाभ वहुत कम होता है फिर भी निम्न उपचारों में यह रोग सदैव के लिये ठीक हो जाता है।

उपचार–आप किसी कौवे को पकड़े और एक सप्ताह तक उसे रूमी मस्तगी का एक माशा चूर्ण बेसन के आँटे में मिलाकर किसी रूप में अवश्य खिलाते रहें, एक सप्ताह के बाद उसके पिंजड़े को साफ करके पुन: अगले दो सप्ताह तक उसी प्रकार से रूमी मस्तगी खिलाते रहें और उसकी बीट इकट्ठा करके सुखा करके रखते रहें। जब काफी मात्रा में आपके पास बीट इकट्ठी हो जाय, तो उसे पीस कर रख लें और ग्लीसरीन में सान कर नित्य रात में सोने के समय उसका लेप दोनों अण्डकोषों के सहित जननेन्द्रिय की जड़ के ऊपर तक भलीभांति करके सो जायें और सुबह साबुन से धो डालें। इसी प्रकार से यदि यह प्रयोग ४० दिन तक निरन्तर किया जाये तो रोग समूल नष्ट हो जायेगा, परन्तु ध्यान रहे कि इस चिकित्सा के करने के समय रोगी को अन्य रोग जैसे खाँसी, कब्ज या दस्त आदि नहीं होने चाहिये। इसलिए आहार व परहेज नियमित रूप से करना चाहिये और मल शुद्धि के लिये भी कोई साधारण दवा प्रयोगकाल में लेते रहना चाहिये।

चम्बल रोग चिकित्सा

लक्षण–यह एक प्रकार का चर्म रोग होता है। इसमें रोगी के वदन पर जख्म हो जाते हैं जो नाना प्रकार के उपचारों से दब जाता है, परन्तु बिल्कुल ठीक नहीं होता है। निम्नलिखित उपचारों द्वारा यह रोग विल्कुल ही ठीक हो जाता है।

उपचार–शुक्ल पक्ष के बृहस्पति के दिन किसी कौवे को पकड़कर एक सप्ताह तक साधारण दाना-पानी देता रहे। उसके बाद काले चने को नमक के पानी में भिंगोकर और उसे पानी में पीसकर गोलियाँ बनाकर कौवे को तीन चार दिन तक खिलाता रहे और उसकी बीट इकट्ठी करता रहें जब एक तोला के करीब बीट इकट्ठा हो जाये तो उन कौवे के काले पंख छ: माशा काट लें और चाँदनी रात में या चाँद के निकलने पर उसे उड़ा दें, फिर उसके बालों को और बीट को एक तोला पारे के साथ ६ घण्टे नित्य के हिसाब से आठ दिन तक घोंटे बाद में इसमें ३ माशा अजरोत और १ तोला जिस्ते का फुल्ला मिलाकर एक छटाँक मोम पिघलाकर उसमें मल्हम बना लें और नित्य उन घावों को नीम की उबाली हुई पत्तियों के पानी से धोवे और मल्हम लगायें बस इस उपचार से घाव बिलकुल ठीक हो जायेंगे, त्वचा भी साफ व कोमल हो जायेगी और रोग सदैव के लिये नष्ट हो जायेगा।

चेहरे के दाग धब्बे हटाना

लक्षण–बहुत से मनुष्यों के चेहरे पर लाल या काले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, जिससे उनका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। इसके लिये निम्न प्रयोग करें।

उपचार–यदि चेहरे के धब्बे काले हो तो कौवे के बीट को सिरके में घोलकर एक मास तक नित्य उबटन को लेप की भाँति लगाये और यदि धब्बो का रंग लाल हो तो शुद्ध अण्डों में कौवे की बीट घोलकर एक मास तक नियमित रूप से नित्य लगाये, इससे चेहरे में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जायेगा और जब तक चेहरा बिल्कुल साफ न हो जाये तब तक लगाते रहना चाहिये।

रसौलियों की चिकित्सा

लक्षण–इस रोग में रोगी के पेट में एक उभरा हुआ कड़ा-कड़ा गोला-सा हो जाता है, जिससे रोगी को बड़ा कष्ट होता है। इसे कई लोग वायु गोला भी कहते हैं। यह रोग ऑपरेशन के अतरिक्त असाध्या समझा जाता है। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि आपरेशन के बाद भी पुन: उभड़ने की सम्भावना बनी रहती है; परन्तु निम्न उपचार से निश्चय ही लाभ हो जाता है।

उपचार–किसी खजूर के जंगल में से किसी खजूर के पेड़ पर से ही कौवे को घोंसले से पकड़ लाये और उसे नित्य अन्य भोजन के साथ कम से कम एक तोला खजूर का गुद्दा अवश्य खिला दिया करे और उसकी बीट इकट्ठी करते रहें। जब लगभग तीन पाव के बीट इकट्ठी हो जाये तब उस कौवे के पंखों के जितने भी बाल मिल सके ले लें और इन बालों को किसी टिन के डिब्बे में बन्द करके आग पर रख दें और इतना गरम करें कि वह जलकर राख हो जाये फिर उस राख को सुरक्षित रख लें। नित्य प्रति रोगी को स्नानादि से निवृत्त कराकर एक तोला बीट में एक रत्ती राख मिलाकर शहद में सानकर मल्हम बनायें और उस मल्हम को गोले पर लगाकर पान का पत्ता रखकर व साफ रुई का फाया रखकर पट्टी बाँध दे। इससे वह रुई पसीजेगी और तर हो जायेगी। इस प्रकार से एक मास तक नित्य प्रयोग करें एक मास में यह गोला ठीक हो जायेगा; परन्तु एक बार की बँधी पट्टी दूसरे दिन ही खोली जाय, बीच में नहीं। मल्हम नित्य बनाना चाहिये और साथ ही रुई व पट्टी भी बिल्कुल बदलकर नई रुई लगाना चाहिये।

शतवर्षीय जीवन टोटका

एक जगह लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सौ वर्ष तक तीवित रहना चाहता हो तो निम्नलिखित औषधि को तैयार करें; परन्तु यह सदैव ध्यान रहे, कि इन सभी उपचारों के साथ-साथ उस व्यक्ति के लिए ब्रह्मचर्य पालन एवं मादक पदार्थों का त्याग परम आवश्यक है।

विधि–सबसे पहले वह पुरुष ऐसे कौवे का घोंसला ढूँढे जो गूलर के वृक्ष

पर हो। तदुपरान्त १३ माशा जायफल, जावित्री, कस्तूरी, केशर, अम्वर भी इतना-इतना ही लेकर अच्छे न घिसने वाले खरल में पीसकर पाँच-पाँच माशे की १३ पुड़िया बना ले और दूसरी ओर तीन माशा सोना और तीन माशा चाँदी के बुरादे को दस-दस पुड़िया बनाकर अलग-अलग सुरक्षित रख लें। जब उक्त सभी वस्तुएँ ठीक हो जाय, तो किसी निर्जला एकादशी को मन से उक्त औषधि के प्रति विश्वास की भावना व पवित्रता से उपवास रक्खे। घर में लाल चन्दन घिसकर रखकर आधीरात को बारह बजे जाकर उस पेड़ से कौवे को पकड़ लाये और उसके सिर पर थोड़ा जल छिड़क कर वहाँ लाल चन्दन ठीक से लेप करके पिंजड़े को बन्द करे और उस पिंजड़े को लाल कपड़ से ढक स्वयं सो जाये। प्रातःकाल उस कौवे को उन १३ पुड़ियों में से एक पुड़िया गेहूँ के आटे में मिलाकर घी व चीनी का हलुवा बनाकर कौवे को खिलाये। इस प्रकार से ३ दिन तक खिलाये। ३ पुड़िया खिलाने के बाद चौथे दिन से इस पुड़िया के साथ एक-एक पुड़िया बुरादे वाली भी देना शुरू करे और उनकी बीट सावधानी से सुरक्षित रखते जाये। इसी क्रम से १० दिनों से सारी पुड़िया खिला दे और बीट एकत्रित करके कौवे को पूर्व दिशा में उड़ा दे। फिर कौवे की बीट को पानी में घोल कर कई बार धीरे-धीरे निथारे जिससे वह सोने-चाँदी का बुरादा जो हजम न हुआ होगा वर्तन के पेंद में रह जाये फिर बुरादे को खरल में पीस बहुत बारीक हो जाने पर उसमें गुलाब की पत्तियों का एक पाव रस छोड़कर इतना खरल करे कि वह खुश्क हो जाय। खुश्क होने पर उवासा के फूलों का निचोड़ा हुआ रस एक पाव डाले और धीरे-धीरे खूब खरल करके उसे भी पहले की भाँति खुश्क कर ले और जब यह खुश्क होने लगे तो इसे खुरच कर इसका एक गोला-सा बना ले और उसे एक सप्ताह तक नित्य सुखाये। फिर इन गोले को किसी जामुन के वृक्ष के खोखले में छिपाकर उस पेड़ के छिद्र को मुलतानी मिट्टी से ढँक दे यदि छेद ठीक न हो तो वना ले और उसमें इस गोले को एक मास तक वहीं रक्खा रहने दे तथा देखभाल करते रहे। एक मास के बाद उसे निकाल कर दो मिट्टी के नये प्यालों के बीच में रखकर पुनः मुलतानी मिट्टी से भलीभाँति मोटी तह से लेप कर दे चाहे प्यालों को लेप के पूर्व तागे से बाँध दे और उसे छाया में सुखाकर जमीन में एक गड्ढा खोदकर उसमें जंगली बिनौले कण्डे में पाँच छः सेर लेकर भर दें और वीच से इन प्यालों को रख कर भली-भाँति ढंककर आग लगा दे। जहाँ तक सम्भव हो यह काम शाम को करे दूसरे दिन सुबह देखने पर आग बुझ चुकी होगी और वह प्याले ठण्डे हो चुके होंगे, तब उन्हें सावधानी से निकाल कर खोले। आपका वह गोला भस्म बन चुका होगा। अब उस भस्म को पुनः खरल में पीसकर किसी शीशी में सुरक्षित रख लें और इस भस्म को प्रत्येक वर्ष जाड़ों में एक तिनके से लेकर गाय के एक छटाँक मक्खन के साथ नित्य एक सप्ताह तक खा लिया करें। बस यह औषधि एक

वर्ष के लिए काफी होगी। इससे बलवीर्य की वृद्धि होगी। इस औषधि का सेवन कस्तूरी के साथ सन्निपात में भी नाड़ा क्षीण होने पर किया जा सकता है।

निमोनिया रोग चिकित्सा

लक्षण–निमोनिया रोग की भयानकता से प्राय: आज सभी परिचित है। यह रोग प्राय: सर्दी के दिनों में फेफड़े में अधिक सर्दी पहुँचने से होता है। इसमें रोगी की पसलियों में दर्द होता है और खाँसी भी बहुत आती है। बुखार १०२ डिग्री से ऊँचे ही रहता है। एक ओर की पसली में दर्द होने से डबल डबल निमोनिया कहते हैं। खाँसी देर तक आती है, कफ खुश्क रहता है। बहुत खाँसने पर दुर्गन्ध युक्त थोड़ा सा कफ निकलता है।

उपचार–१. ऐसे रोग में उचित है कि जहाँ तक सम्भव हो बृहस्पति के दिन दोपहर २ बजे के करीब किसी जंगल के बीच से एक कौवा पकड़ ले और उसका एक तोला पंख लायें फिर उसे मारकर पेट चीरकर उसकी पसलियाँ निकाल लें। दोनों की हड्डियाँ बाकी सब बाल पंखों और मास को पसली से साफ कर ले और यह कार्य शाम के पहले ही समाप्त करके घर वापस आयें। घर पर एक हाँड़ी के आधे हिस्से से गूलर की लकड़ी के कोयले सुलगाये। जब कोयले लाल हो जाय और धुवाँ निकलना बन्द हो जाय तब उस आग पर एक बारासिंघा के सींग का एक टुकड़ा और वह पसली व पंख की हड्डी रख दे जब तीनों चीज जल कर फूल जाये और आग बुझ जाये, तब उन जली हुई हड्डियों को व सींग के टुकड़े को सावधानी से उठा कर साफ न घिसने वाले खरल में डसकर बारीक कर ले और शीशी में रख ले। आवश्यकता पड़ने पर इस दवा एक रत्ती मात्रा में शहद में रोगी को सुबह-शाम दे। शहद न होने पर गरम पानी से दो और पसलियों पर निम्नलिखित औषधियों में कोई लगायें।

२. तीसी को गोमूत्र में बारीक पीसकर उसका गुनगुना हलुवा-सा बनाकर पसलियों पर बाँधे, पर यह तीन घण्टे पर बदले।

३. किसी बादामी कागज पर हींग घोलकर लेप करे, फिर उसे गुनगुना करके पसलियों पर चिपका दे। इसे एक घण्टे के बाद बदले।

नोट–एक पट्टी हटाने पर दूसरी पट्टी बाँधने के समय तक तब वह पसलियाँ खुली न रहे, जिससे कि ठण्डी हवा लगे और रोगी को उठने-बैठने ही दे। यह अनुभूत है।

लंगर शूल चिकित्सा

लक्षण–इस रोग में रोगी के पैरों में बहुधा बहुत दर्द होता है। जिससे वह बहुत ही रोता-चिल्लाता है, उसे चलना-उठना तक दूभर हो जाता है। इसके लिये निम्न उपचार का विधान है।

उपचार–किसी कौवे को पकड़ कर उसे मार और उसकी छाती के पिजड़े की सभी पसलियों को निकाल कर उसमें लगा हुआ मांस छुड़ाकर साफ कर ले और छाया में सुखा ले, फिर बबूल के कोयले के लाल अंगारों में रख दे जब वह जलकर सफेद राख-सा हो जाये तो उसे खरल करके अपने पास रख ले और आधी रत्ती की मात्रा में गाय के मक्खन के साथ खाने को दे और मालिश के लिये अस्थियों को तेल में पकोड़े की भाँति जलाकर पीस कर तेल में मिलाकर रगड़ कर शीशी में भरकर रख ले और उसी से मालिश कराये।

हिचकी रोग चिकित्सा

लक्षण–हिचकी आना भी एक बुरा रोग है। इसमें हिचकियों के आने के कारण रोगी बहुत परेशान हो जाता है।

उपचार–यूनानियों का मत है कि किसी कौवे को मार कर उसके अमाशय की झिल्ली निकाल ले और उसे बीच से फाड़कर उसकी सब मलामत साफ करके उसके अन्दर वाली सफेद झिल्ली निकाल कर गरम पानी में नमक डालकर उसे उबाल लें और मल कर साफ करके छाया में सुखा ले। सूखने पर पीस कर उसका चूर्ण अपने पास रख ले। आवश्यकता पड़ने पर एक तिनके भर चूर्ण उसमें से लेकर तबाशीर के चूर्ण दो रत्ती के साथ छोटी इलायची का चूर्ण २ रत्ती, खाने का सोडा ५ रत्ती मिलाकर शर्बतदीनार के साथ रोगी को चटाये या पानी साथ दें। यह दवा तीन दिन तक दें।

संग्रहणी रोग

लक्षण–यह रोग बदहजमी से होता है। इसमें दस्त आते हैं और जब यही रोग बहुत पुराना हो जाता है तो उसे संग्रहणी कहते हैं। इसमें ज्वर आना एवं दाँतों से मवाद भी आना सम्भव है।

उपचार–किसी अवसर पर शनिवार की रात में १२ बजे किसी फल, फूल वाले बाग से एक कौवा पकड़ लें और उसे किसी बाँस की तीलियों वाले पिंजड़े में रक्खें और सुबह से १४ दिन तक उसे केवल उबला चावल और दही ही खिलाये और उसकी बीट इकट्ठी करते रहें। १५ दिन के बाद उसे मार कर उसका आमाशय निकाल कर गरम पानी में मिला कर साफ कर लें और उसके अन्दर की सफेद झिल्ली निकाल लें और सुखाकर पीस कर उसमें ६ माशा बंशलोचन व ६ माशा छोटी इलायची, १ तोला असगंध, २ रत्ती अफीम, १ तोला कीकर के गोंद को मिलाकर अर्क वेदमुश्क में पीस कर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना ले और दिन में तीन बार सुबह-दोपहर-शाम एक-एक गोली १ तोला वेदमुश्क के अर्क और १ तोला सन्दल के शर्बत के साथ दें, पर ध्यान रहे कि गोली दाँतो से चबाई न जाये। इस प्रकार से १ मास तक निरन्तर सेवन करने से अवश्यमेव यह रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

उन्माद चिकित्सा

लक्षण–इस रोग से रोगी विक्षिप्त और पागल-सा हो जाता है और उसे नींद बिल्कुल ही नहीं आती है। यह रोग बहुत नशा, स्त्री-प्रसंग, सर की चोट व पुराने आतशक से भी हो जाता है।

उपचार–किसी पूर्णमासी की आधी रात को जाकर किसी फूल वाले बाग से एक कौवा पकड़ लाये और उसे चन्दन के बुरादे की धूनी देकर बाँस की तीलियों वाले पिंजड़े में बन्द कर दें और उस पिंजड़े में १-७ फूल गुलविर्द के भी डाल दें। सुबह उसके सिर और सीने पर गुलाब या केवड़ा जल छिड़के और पिंजड़े में हरे रंग का कपड़ा बिछा दे और एकान्त व बन्द कमरे में उस पिंजड़े को रखकर कपूर व चन्दन का बुरादा इतना सुलगा दें, जिससे कि कमरा धुएँ से भर जाये। फिर गेहूँ के आटे में थोड़ा नमक मिलाकर उसे गुलाबजल या केवड़ाजल मिश्रित जल से गूंध कर रोटी पकाये। फिर उस रोटी के मलीदे में गाय का दही, शुद्ध शहद व केवड़ा जल मिलाकर एक मिट्टी के बर्तन में रखकर उसे पिंजड़े में रखे और एक पात्र में जो नया और मिट्टी का हो उसमें वही गुलाबजल या केवड़ाजल पीने से पानी की जगह पर रखें और आप दूर हट जाये। इसी प्रकार से नित्य पाँच दिनों तक दिन में यही भोजन और रात में वही उपरोक्त धूनी दिया करें। छठवें दिन उसे किसी भाग में ले जाकर एकान्त में मार डाले और उसका कलेजा निकाल ले और शेष शरीर को कहीं जमीन में गाड़ दे। उस कलेजे को घर पर लाकर छाये में सुखा कर खरल में पीस लें। फिर उसमें एक तोला कपूर छः माशा चन्दन का चूरा, दो माशा कहवा, एक तोला बंध भस्म, तीन माशा कस्तूरी और एक पाव गुलाबजल मिलाकर एक साथ घोट ले। जब पिस कर खुश्क होने लगे तो खुरच कर एक टिकिया-सी बनाकर किसी लकड़ी या डिबिया में रखकर छाये में सुखा लें, जब सूख जाये तो इसे सोने या चाँदी के ताबीज में मढ़वा कर रेशमी धागे में लटका कर रोगी को पहना दे और रोगी को नित्य शरबत आवेशम एक तोला, शर्बत सन्दल एक तोला, अर्क गावजवाँ पाँच तोला, अर्क केवड़ा पाँच तोला, अर्क वेदमुश्क, पाँच तोला मिलाकर एक बार सुबह और एक बार शाम को दे और ठण्डी आबोहवा में टहलाये और रहने दे एवं गर्म पदार्थों के सेवन से बचाये। अवश्य लाभ होगा।

मधुमेह चिकित्सा

लक्षण–मधुमेह भी बहुत बुरा रोग है, इसमें रोगी की पेशाब से शक्कर गिरने लगता है और रोगी दिन पर दिन सुस्त व निर्बल होता जाता है।

उपचार–किसी मंगलवार के दिन कोई कौवा पकड़े और एक सप्ताह तक उसे अन्य आहार के साथ २ भेड़ के लबलबा के मांस की कीमा बनाकर कम से कम चने भर उसे नित्य खिलाया करे। एक सप्ताह के बाद उसे मार कर उसका भेजा ६

माशा और १ तोला यकृत और दो तोला लबलबा, तीनों वस्तुओं को लेकर तीन चार मास पहले निकाले हुए अंगूरों के रस में शीशे के बर्तन में पाँच दिन के लिये डाल दे। छठवें दिन इन तीनों वस्तुओं को निकाल कर फेंक दे और उस रस को छानकर शीशी में रख ले। बस सेवन के समय एक तोला जामुन के रस में या ३ माश जामुन के पत्तों के रस में ९ माशा पानी मिलाकर उसमें दस बूँद उसी सिरके को डाले और प्रातःकाल निराहार मुँह रोगी को खिलाये। एक मास के सेवन से निश्चय ही वह स्वस्थ हो जायेगा।

तोतला चिकित्सा

लक्षण–इसमें रोगी की जबान लगने लगती है, जिससे वह ठीक से बोल नहीं पाता। प्रायः यह शिकायत बचपन से ही होती है। ऐसे व्यक्ति की बात समझ में नहीं आती, जिससे उसे ग्लानि व लज्जा दोनों ही होती है।

उपचार–किसी शनिवार के दिन फूल वाले बाग से एक कौवा पकड़े और ९ दिन तक नित्य अन्य साधारण दाना-पानी के साथ बदाम की मींगी, सेव कश्मीरी, मगज फन्दक के साथ घोटे, फिर उसमें उड़द का आटा मिलाकर बेर के समान गोलियाँ बना ले और नित्य एक तोला के लगभग उसे खिलाया करे। दसवें दिन उस कौवे को एकान्त में मार कर उसका भेजा निकाल ले और जबान काट ले। शेष धड़ को उसी जमीन में गाड़ दे। घर पर आकर बालछड़, सूखा धनिया गुलबर्ग और ताजी मेंहदी की पत्ती सभी वस्तुयें एक-एक तोला लेकर एक सेर चमेली के तेल में खूब घोंटे। उसी में वह भेजा और जबान भी डाल दे। एक सप्ताह तक घोंटने के बाद उसे धीमी आँच पर पकाये। एक घण्टे के बाद देखेंगे कि वह लुगदी नीचे बैठती जायेगी। तब वह भुन कर लाल हो जाय; परन्तु जल कर काली न हो तब बर्तन को उतार कर ठण्डा करे और फिर कपड़े से छान कर बोतलों में भरकर रख लें और नित्य एक तोला रोगी के सिर पर मालिश करायें, पौष्टिक भोजन दे, खारी वस्तु दही व ठण्डी वस्तुओं के सेवन से परहेज करायें। आशा है कि एक मास के अन्दर ही चाहे जैसा तुतलाने वाला क्यों न हो अवश्यमेव ठीक हो जायेगा।

नोट–कौवे को खिलाने के लिये जो गोलियाँ बनाई जाये वह नित्य ताजी वनायी जायें या दूसरे तीसरे दिन तक ही खिलाई जाये, सूखने न पायें; अन्यथा कौवा नहीं खायेगा।

मिर्गी चिकित्सा

लक्षण–इसमें रोगी को अचानक घबराहट-सी महसूस होती है और वह वेकाबू होकर काँपता और गिर पड़ता है। उसके मुँह से फेन (आग) निकलने लगता

है। वह बहुत ही खतरनाक रोग होता है किसी भी भीड़ व मेले में भी रोगी को दौरा आ जाता है। कोई-कोई लोग ऐसे रोग के दौरे के समय रोगी को जूता भी सुँघाते हैं।

उपचार–किसी दिन रविवार को प्रात:काल एक नर कौवा पकड़े और उसको गर्दन से चारों ओर अपनी उँगलियाँ फँसाकर उसे घर ले आये; परन्तु घर आते समय रास्ते में पाँच बार बीच में थोड़ा-थोड़ा ठहर जाया करे। घर आकर उसे पिंजड़े में बंद करे और आधी रात के समय ३ माशा केशर मकोव के रस में घिस कर उसके सिर पर लेप दे जिससे कि उस लेप की नमी उसकी चमड़ी तक पहुँच जाये। दूसरे दिन सुवह पिंजड़े को बाहर धूप व रोशनी में रखकर दाना डाल दे, फिर एक माशा जायफल, एक माशा केशर को केवड़े के जल में घिसकर ९ माशा शहद मिला कर दो घण्टे तक ढँक कर रखने के बाद कौवे के पिंजड़े में रख दें और आप दूर किनारे छिपकर बैठ जाये। थोड़ी देर में अन्य कौवे आकर उस पिंजड़े के चारों ओर इकट्ठे हो जायेंगे और काँव-काँव करेंगे तब आप छांटे-छोटे कंकड़ों से उन बाहर के कौवों को उड़ा दें और देखते रहे कि वह कौवा आपकी रक्खी हुई चीज कब खा चुकता है। इस क्रम से पाँच दिन तक आप यही काम नित्य करते रहें; परन्तु तीन दिन के बाद से उसकी बीट भी इकट्ठी करते जाये और अगले रविवार को दोपहर में उसे मार डालें और उसके मस्तक की हड्डियों को नमक मिलाकर गरम पानी से साफ कर लें तथा छाये में सुखा लें। जव वह सूख जाये तो बैर की लकड़ी के कोयलों की आग पर उन हड्डियों को जलाकर राख बना लें और सावधानी से उठाकर खरल में पीस कर शीशी में सुरक्षित रख लें।

रोगी को नित्य एक निताक भस्म गाय के मक्खन के साथ खिलायें और उसकी बीट में केशर व केवड़ा जल मिलाकर लेप बनायें और रोगी के मस्तक पर लेप करें। इसी प्रकार से एक सप्ताह तक नियमित रूप से इस दवा का सेवन करायें। फिर एक सपताह तक कुछ न करें और बाद में फिर एक सप्ताह तक खिलायें। इस प्रकार से ४ बार करें और रोगी को खाने के लिये हल्का भोजन जैसे गेहूँ का दलिया, मूँग की दाल, कद्दू, पालकी, शलजम आदि खाने को दें। मैथुन, गर्म पदार्थ व तामसी या बासी भोजन कदापि न दें। एक बार का उबाला हुआ दूध, फल, सन्तरा रोगी को शर्तिया सदैव के लिये यह रोग न होगा।

अधिक मूत्र की चिकित्सा

लक्षण–यह रोग मधुमेह मूत्र कृच्छ से भिन्न है। इसमें रोगी को कई बार थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब होता है, जिससे रोगी परेशान रहता है।

उपचार–किसी कौवे को पकड़ कर मार डाले और उसके पैरों की सारी हड्डियाँ को निकाल कर साफ कर ले और उसका मस्तिष्क निकाल कर रेक्टीफाइड स्प्रिट में डाल कर एक सप्ताह तक निरन्तर घोंटे। फिर उसको उसमें से निकाल कर

फेंक दे और उसी स्प्रिट में वह हड्डियाँ डाल कर खूब घोंटे, जब वह बारीक हो जाये तो मिट्टी के दो नये प्यालों में रखकर उसके चारों ओर तागा बाँध कर मुलतानी मिट्टी से उसका मुँह भलीभाँति बन्द कर दें, फिर जमीन में एक गड्ढा खोदकर उसमें जंगली बिनुवे कण्डे उपले ५ सेर भरें। बीच में वह प्याले रखकर आग लगा दें। जब आग जलकर ठण्डी हो जाय, वह प्याले ठण्डे हो जायँ तो उन्हें निकाल कर सावधानी से खोलें और उसमें की रखी हुई भस्म को पुनः खरल में पीसकर उसमें मुर्गी के अण्डे का जर्दा समान भाग मिलाकर खूब घोंटे और एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लें। बस एक गोली नित्य ही गाय के मक्खन के साथ रोगी को खिलायें और रोगी को पौष्टिक आहार व सूखे फल खाने को दें पर उसे ठण्डी वस्तुएँ न सेवन करने दें। इस प्रकार से डेढ़ या दो सप्ताह के सेवन से ही रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा।

उपदंश की चिकित्सा

लक्षण–इसे लोग आतशक भी कहते हैं। इसमें रोगी के जननेन्द्रिय पर जख्म हो जाते हैं, जिससे रोगी बहुत ही व्यथित व पीड़ित हो जाता है।

उपचार–किसी भी हृष्ट-पुष्ट कौवे का एक तोला रक्त लेकर उसमें रोगी का ३ माशा रक्त मिलाकर छाये में सुखा कर खरल में सुरमें की भाँति बारीक पीस लें और शीशी में रख ले। बस एक तिनका बुकनी गाय के मक्खन के साथ रोगी को खिलायें और वही बुकनी जख्मों पर भी छिड़क दे। इस प्रकार से एक सप्ताह सेवन कराये। फिर एक सप्ताह तक सेवन कराने से यह रोग सदैव के लिये समूल नष्ट हो जायेगा, वैसे लाभ एक खुराक में ही दिखेगा और रोगी एक सप्ताह में ठीक हो जायेगा।

नकसीर चिकित्सा

लक्षण–इस रोग में रोगी की नाक से अचानक खून टपकने लगता है और कभी-कभी तो काफी मात्रा में गिरता है, जिससे रोगी बहुत ही तंग हो जाता है।

उपचार–इस रोग के उपचार के लिये किसी कौवे को पकड़ कर अपने यहाँ पिंजड़े में बन्द करें और १५ दिन तक साधारण दाना-पान दें; परन्तु पीने के लिये जो पानी दें, उसे देने के घण्टे भर पहले सुपारी को सफेद मींगी व मखाने के बीज कूटकर भिंगो दें, बाद में वही पानी ही पीने को दें। सोलहवें दिन उस कौवे को मारकर उसका सारा खून किसी शीशी या चीनी के बर्तन में रखकर सुला लें और खरल में डालकर पीस लें प्रयोग के समय इस बुकनी का सौगुना सुरमा मिलाकर रोगी को नाश दें और उसी चूर्ण को अर्क वेदमुश्क में घोलकर माथे पर लेप करें। इससे तुरन्त ही रोगी ठीक हो जायेगा। परन्तु इस रोग को समूल नष्ट करने के लिये १५ दिन तक लगातार इस्तेमाल करना चाहिये।

केशहारी टोटका

विधि–किसी कौवे को बस्ती से बहुत दूर के जंगल से पकड़े जिसके लिये

विश्वास हो कि उसने कभी कोई आग पर की पकाई हुई वस्तु न खाई होगी। उसे पकड़कर घर लायें और तीन दिन तक उसे खाने में कोई फल और पीने के लिये केवल संतरे का रस दें चौथे दिन उसे मारकर उसका सारा रक्त किसी चीनी के बर्तन में या शीश के बर्तन में रखें और उसकी दुम के नीचे के कुछ सफेद राएँ भी ६ माशा के करीब नोच ले और दोनों को खरल में डालकर खूब घोंटे। जब भली-भाँति घुट जाये तब उसमें ५ तोला चमेली का तेल मिलाकर पुन: घोंटे। बस जिस स्थान के बाल न उगने देना अभीष्ट हो वहाँ के बाल उस्तरे से साफ करके इस लेप को खूब रगड़ें। इसी क्रम से ८ दिन रगड़ने के बाद पुन: उस स्थान के बाल बनाकर लेप करना शुरू करे इसी क्रम से ६-७ बार करने पर ही उस स्थान पर बाल उगना हर बार कम होता जायेगा और अन्त में फिर उस स्थान पर कभी भी बाल न उगेंगे और वहाँ की जिल्द बड़ी ही चिकनी स्वच्छ एवं आकर्षक हो जायेगी; परन्तु पुरुष इसका प्रयोग दाढ़ी-मूछों पर न करें।

कण्ठमाला चिकित्सा

लक्षण–इसमें रोगी के गले में बतौड़ी-सी हो जाती है, जो दिन पर दिन बढ़ती जाती है, जिससे मनुष्य कुरूप और परेशान हो जाता है।

उपचार–किसी कौवे को मारकर उसका एक तोला रक्त निकाल लें और उसमें कौवे के हड्डियों की राख ३ माशा और कौवे के सफेद बालों की राख तीन माशा या जितनी मिल सके ले लें और तीनों वस्तुओं को लेकर पाव भर तने के कूटे हुए अर्क मे डाल कर खूब घोंटे और रोगी को एक रत्ती चूर्ण में आधी रत्ती अभ्रक भस्म मिलाकर नित्य गाय के मक्खन के साथ दें और उस स्थान पर लेप करने के लिये बिना पत्तियों की अंगूर की ९ तोला बेल की राख में कौवे का रक्त और सरसों का शुद्ध तेल मिला कर रख ले और उसे लेप करने को दें। ईश्वर चाहेगा तो रोगी को इस रोग से बहुत ही शीघ्र मुक्ति मिल जायेगी; परन्तु ध्यान रहे कि यह दवा एक वर्ष से अधिक नहीं रक्खी जा सकती।

फुलबहरी चिकित्सा

लक्षण–यह एक प्रकार का चर्म रोग है, इसमें रोगी के शरीर के किसी भाग में सफेद-सफेद चकत्ते पड़ जाते हैं, जिससे वह बड़ा ही कुरूप नजर आता है।

उपचार–किसी कौवे को मारकर उसका सारा रक्त निकाल कर किसी चीनी या शीशे के बर्तन में सुखाकर २१ दिन तक पीसें। तदुपरान्त उस चूर्ण को एक रत्ती बैंगन के रस के साथ रात में सोने के समय दे और उसी कौवे की निकाली हुई कलेजी को आधा सेर तेल में खूब घोट कर आग पर गरम कर जब वह कलेजी की लुगदी जलकर लाल हो जाय और बर्तन के पेंदे में बैठ जाय तब उस तेल को कपड़े से

छानकर उसमें २ तोला सूखे आँवले का चूर्ण और तीन तोले बावची का चूर्ण डालकर घोंटकर मल्हम-सा बना लें और इस तेल को नित्य उन सफेद धब्बों पर १५-२० मिनट तक मालिश करने को कहें। तीन मास के अन्दर निश्चय ही वह धब्बे ऐसे दूर हो जायेंगे जैसे गधे के सिर से सींग।

प्रसव का कष्ट दूर करने का उपाय

लक्षण–बहुत सी स्त्रियों के बच्चा पैदा होने के समय बड़ा कष्ट होता है और इस कठिनाई में बहुत-सी मूर्छित हो जाती हैं और बहुतों की जान तक चली जाती है। बच्चा किसी प्रकार से बाहर नहीं निकलता है।

उपचार–किसी कौवे का अण्डा व ताजा खून और उसकी बीट इकट्ठी कर ले। कौवे की बीट व खून को अण्डे की जर्दी में मिला कर प्रसूता स्त्री के तलवों पर लेप करें और कौवे के तीन बूँद खून में ६ माशा ताऊबेर, एक तोला गनरी बूटी और एक तोला सूखा जंगली पुदीना का क्वाथ (काढ़ा) बना कर रोगी को पिलायें। साथ ही कौवे की बीट को आग पर रखकर उसके धुयें को योनि में पहुँचावें बस कुछ ही क्षणों में बच्चा बाहर आ जायेगा; परन्तु यदि बच्चा मरा हुआ पैदा हो तो उसके विषैले प्रभाव को नष्ट करने के लिये उस काढ़े का एक सप्ताह तक नित्य पिलायें।

वस्त्रों के हर प्रकार के दाग धब्बे दूर करना

विधि–किसी कौवे के ५ बूँद रक्त में एक माशा नमक और २ तोला पानी मिलाकर घोल लें। रक्त ताजा ही होना चाहिये। फिर कौवे के पंखों का ही ब्रुश बनाकर सूती ऊनी या रेशमी कपड़े जिन पर धब्बे पड़े हों उन पर यह घोल हल्का-हल्का लगा दें और कपड़े को धूप में सूखने को रख दें। जब कपड़ा सूख जाय, तो धब्बे दिखे नहीं किसी प्रकार का कोई निशान या धब्बा बच गया हो तो पुनः उसी प्रकार ब्रुश से लगाकर सुखायें। इसी प्रकार से तीन चार बार करने पर हर बार में धब्बे को कम होता पायेंगे और तीसरी-चौथी बार के प्रयोग में धब्बा बिल्कुल साफ हो जायेगा।

अद्वितीय अंजन

निम्नलिखित अञ्जन आँखों की ज्योति बढ़ाने व रतौंधी व ऐनक के प्रयोग कम करने के लिये अद्भुत शक्ति रखता है।

विधि–कृष्णपक्ष के किसी गुरुवार की रात को एक कौवा पकड़े और घर लाकर किसी अंधेरे कमरे में बन्द कर दे। सुबह एक बार उबाल कर ठण्डा किया हुआ दूध अन्य दाना-पानी के साथ मिट्टी के बर्तन में नित्य तीन दिन तक पिलायें। चौथे दिन रविवार को आधी रात के समय उसके कुछ पंख नोचकर उसे छोड़ दे। दूसरे दिन इन पंखों को २४ घण्टे के लिये गुलाबजल में भिगोये रखे, दूसरे दिन उन्हें निकाल कर छाये में सुखाये तदुपरान्त प्रति दो पंखों पर एक माशा फिटकरी सफेद और ६ माशा

काला सुरमा मिलाकर एक पाव नीम के पानी के हिसाब से एक या डेढ़ सप्ताह तक खूब घोंटे, जब सब पिस कर एक समान हो जाये तो इसे किसी शीशी में भरकर रख लें और नित्य किसी जस्ते की सलाई या नीम के तिनके से आँखों में लगाया करें। कुछ दिनों के प्रयोग से आपको आश्चर्यजनक लाभ होगा।

चश्मा छुड़ाना

विधि–एक पाव शुद्ध एवं स्वच्छ जल लेकर उसमें चालीस बूँद गंधक का तेजाब और तीन माशा नौसादर डालकर भलीभाँति घोले फिर किसी लम्बी-चौड़ी मुँह वाली बड़ी शीशी में इसको भरकर उनमें कौवे के तीन काले पंख डालकर भलीभाँति ढँककर अलमारी में बन्द कर दे। एक मास के बाद इन पंखों को निकाल कर छाये में सुखा ले और रात में सोते समय इन पंखों को आँखों पर फेरकर सोया करे। बस दो-तीन मास के प्रयोग से ही निश्चित रूप से ऐनक लगाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

केश काला टोटका

विधि–चार तोला काला भाँगरा और इतना ही आँवले का चूर्ण, सरसों तथा काले कौवे के काले बड़े पंख भी लेकर एक साथ कूट-पीसकर बारीक कपड़े से छान लें, फिर एक सेर तिल के तेल में धीमी आँच पर पकायें जब सारी वस्तुयें जलकर राख होकर बर्तन में पेंदे में बैठ जाये तब उसे उतार कर एक स्थान ३-४ दिन तक रक्खा रहने दें। बाद में सावधानी से तेल को निथार कर उतार लें और शीशी में भरकर रख लें और इस तेल की मालिश नित्य पाँच मिनट तक सफेद बालों पर किया करें। बस पाँच-छह माह के सेवन से ही बालों का काला रंग हो जायेगा और फिर काले ही बाल उगने लगेंगे।

केश उगाना

विधि–यदि कौवे के पंखों को जलाकर उसकी राख का लेप जहाँ बाल न उगते हो वहाँ लगाये तो निश्चय ही एक मास के बाद बाल उगना प्रारम्भ हो जायेगा। उपरोक्त लेप को घनाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे के सभी प्रकार के दाग धब्बे दूर हो जाते हैं और चेहरा बड़ा ही सुन्दर व आकर्षक हो जाता है। एक बार परीक्षा करके अवश्य देखें।

आधाशीसी चिकित्सा

लक्षण–इस रोग में रोगी के आधे सिर में बड़ी विकट वेदना होती है, जो उसके लिये असहाय हो जाती है। इसका उपचार निम्न रीति से करें।

उपचार–किसी कौवे का ऐसा पंख लें जो बिल्कुल ही काला हो। फिर उस पंख के बाल ६ माशा पंख के डंठल में अलग काट लें और उनको नये मिट्टी के दो प्यालों के बीच में रखकर उनका मुँह मिट्टी के भलीभाँति बन्द करके कोयले की आग

पर रख दें। अन्दाज से जब वह बाल जलकर राख हो चुके हों तब उसे उठाकर ठण्डा करके खोले और उस राख हो चुके हों तब उसे उठाकर ठण्डा करके खोलें और उस राख को सुरक्षित रख लें। आवश्यकता पड़ने पर एक रत्ती राख को ५ रत्ती नौसादर के साथ मिलाकर उसकी तीन खुराकें बना लें और रोगी को एक खुराक गरम पानी के साथ दें। यदि लाभ में कमी हो तो एक घण्टे के बाद दूसरी और तीसरी खुराक दें। आपको इस प्रयोग से आश्चर्यजनक लाभ होगा और रोगी आराम पाकर शीघ्र ही गहरी नींद में सो जायेगा और आपको दुवाएँ देगा।

मलेरिया बुखार चिकित्सा

लक्षण–यह एक बहुत ही प्रचलित ज्वर है और कई प्रकार का होता है। इसमें रोगी के १०३-१०६ डिग्री तक बुखार रहता है। कब्जियत, सिर में दर्द, प्रलाप, हाथ-पैर ऐंठना, चेहरे का सुर्ख हो जाना तथा जाड़ा लगकर बुखार आना ही इस रोग के मुख्य लक्षण हैं। ताप चढ़ने पर बड़ी प्यास लगती है। डॉक्टर लोग प्राय: इस ज्वर में कुनैन का प्रयोग कराते हैं, जो ज्वर को तो ठीक कर देती है पर हृदय पर उसका कुप्रभाव पड़ सकता है। जबकि निम्न उपचार इस रोग के लिये रामबाण तथा हानि रहित है।

उपचार–किसी कौवे के पंख के बाल काट करके उसका डन्ठल १ तोला ले और उसके बारीक-बारीक टुकड़े करके उसी में अब्रक के टुकड़े भी मिला दे और तीनों चीजों को किसी दो नये मिट्टी के प्यालों में रखकर उनका मुँह मिट्टी से बन्द करके कोयले की तेज आँच पर रक्खे। जब वह जल जाये तो उनको उठाकर ठण्डा होने पर खोले। इस प्रकार से उस राख में एव पाव तुलसी की पत्ती का अर्क और एक तोला कालीमिर्च मिलाकर खूब घोटें। जब वह खुश्क होने लगे उसे खुरच कर मूँग के दाने के बराबर की गोलियाँ बनाकर छाये में सुखा कर सुरक्षित रख ले। बस आवश्यकता पड़ने पर इसमें की एक गोली आधा पाव मकोय के पत्तों के रस के साथ रोगी को दे। बस एक खुराक में रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा; परन्तु अच्छा होने के बाद भी उसे दो दिन तक दिन में नित्य एक बार सेवन करना चाहिये।

काली खाँसी चिकित्सा

लक्षण–यह भी एक बहुत भयानक रोग है, इसमें रोगी का कफ सूख जाता है और एक साथ बड़ी देर तक खाँसी आती रहती है, रोगी का दम घुटने लगता है। खाना तक पेट में नहीं रह सकता और वमन हो जाती है। इसे कुक्कुर खाँसी भी कहते हैं।

उपचार–किसी नदी से एक घड़ा पान्री लाकर घर में एक स्थान पर ढँककर रख दे। २४ घण्टे के बाद उसे दूसरे मिट्टी के बर्तन में सावधानी से उलट लें, जिससे

कि तह में बैठी हुई मिट्टी न आने पाये। इस प्रकार से इस नये घड़े को फिर ढँक कर पाँच दिन के लिये रख दे। छठवें दिन एक कौवा पकड़े और उसके दोनों पैरों के पंजों से उक्त पानी को करीब आधा घण्टे तक मथते रहें। बाद में उस कौवे को रोगी के सर पर उतार कर छोड़ दे और उस पानी को किसी बोतल में भरकर रख ले। बस रोगी को नित्य निहार मुँह एक चम्मच पानी पिलाकर रोग के दूर होने का आश्चर्यजनक तमाशा देखें।

गठियाबाई चिकित्सा

लक्षण–यह रोग भी एक बहुत प्रचलित रोग है, इसमें रोगी की गाँठें व जोड़ में बड़ी वेदना होती है और वह स्थान फूल जाता है, जिससे रोगी का उठना-चलना तो बहुत दूर हिलना-डुलना भी दूभर हो जाता है।

उपचार–किसी कौवे को मार कर उसके पंजे काट ले और बाजुओं की हड्डियों को भी निकाल ले उन हड्डियों की मांस छुड़ाकर गरम पानी में नमक मिलाकर खूब धोये और साफ करे और २४ घण्टे तक छाये में सूखने के बाद में बबूल के कोयलों की आग पर जिनमें धुआँ न हो उन हड्डियों को जला दें, फिर सावधानी से उनको उठाकर न घिसने वाले खरल में डालकर तीन दिन तक खूब घोटे फिर बुरादे को शीशी में भरकर रख ले और रोगी को एक रत्ती मात्रा में नित्य १ तोला मधु के साथ चटाये। ईश्वर की कृपा से एक ही खुराक से लाभ होने लगेगा और एक सप्ताह तक सेवन करने पर वह रोग मुक्त हो जायेगा; परन्तु समूल नष्ट करने के लिये बिलकुल ठीक हो जाने के बाद भी एक मास तक सेवन करना चाहिये।

लक्षण–बाजी-बाजी व्यक्तियों को आँख में सफेद काला निकल आता है, जिससे उनका चेहरा बड़ा ही कुरूप लगता है। अस्तु फोला काटने के लिये निम्न प्रयोग करें; किन्तु ध्यान रहे कि यह उपाय चेचक से निकले हुए फोले का नहीं है।

उपचार–कौवे के नाखून ७ माशा और नौशादर ६ माशा दोनों को अलग-अलग बहुत बारीक पीस कर एक नये मिट्टी के प्याले में रक्खे और ऊपर से दूसरा प्याला रखकर दोनों के मुँह मिट्टी के भली-भाँति सावधानी से बन्द कर दे और उस प्याले को तेज आँच पर रक्खे। जब ऊपर वाला प्याला भी जल कर लाल हो जाये तब उस पर मोटा कपड़ा ८-१० पर्त करके पानी में लथपथ कर ऊपर वाले प्याले पर रक्खे और फिर उसे पानी से तर ही रक्खे। आधा घण्टा बाद उतार ले और ठण्डा होने पर खोले इससे ऊपर वाले प्याले के पेंदे में सफेद-सफेद वस्तु चिपकी मिलेगी, उसे सावधानी से खुरच कर सुरमे की भाँति पीस कर नित्य फोले पर लगायें।

फोड़े की चिकित्सा

उपचार–जिस रोगी को हड्डी में कोई फोड़ा हो गया उसे उचित है कि वह

एक स्वस्थ कौवा पकड़ लाये और उसे मारकर पेट की ओर चीर कर उसकी सारी खाल सावधानी से बालों सहित निकलवा ले। फिर फोड़े के ऊपर वाले बालों का भाग तथा अन्दर का भाग ऊपर की ओर करके कपड़े की पट्टी बाँध दे इस प्रकार अधिक से अधिक तीन दिन में फोड़ा पक कर फूट जायेगा और मवाद निकलने लगेगा। जब मवाद आने लगे तब उस खाल को नित्य गरम पानी से धोकर बाँधा करे और खाने के लिये रोगी को कौवे की हड्डियों की भस्म एक रत्ती में इतनी ही अभ्रक भस्म मिला कर गाय के मक्खन के साथ दिन में एक बार नित्य खिलाया करे और भोजन में रोगी को मधुर सुपाच्य हल्का भोजन और ताजे फल तथा दूध और अण्डे खाने को दे। इस प्रकार निरन्तर एक मास सेवन करने से रोगी का फोड़ा बिल्कुल ठीक हो जायेगा तथापि खाने की दवा कम से कम तीन मास तक अवश्य पिलानी चाहिये।

भगन्दर रोग की चिकित्सा

लक्षण–यह एक अति दुखदाई गुदा रोग है। आपरेशन ही इसका मुख्य इलाज है; किन्तु निम्नलिखित उपाय से यह बहुत शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

उपचार–किसी काले कौवे की चोंच को लेकर साफ धोकर किसी न घिसने वाले पत्थर पर सारी की सारी चन्दन की भाँति घिस डाले और उस चूर्ण को किसी शीशी में भरकर रख लें और रोगी को एक रत्ती की मात्रा में दिन में दो बार सुबह-शाम शुद्ध शहद में चटायें और इसी चूर्ण में इससे ४० गुना मुर्गी के अण्डे की जर्दी मिलाकर रोगी को गुदा के अन्दर से लेकर बाहर चारों ओर भली-भाँति लगाने को कहें। चूतड़ों तक भी जहाँ दर्द हो लगाये। रोगी को बहुत शीघ्र लाभ होगा; परन्तु लाभ होने के बाद भी निरन्तर ३ मास तक इस औषधि का सेवन करना चाहिये।

कुष्ठ रोग की चिकित्सा

लक्षण–यह बहुत अभिशप्त और घृणित चर्म रोग है, इसमें शरीर में घाव हो जाते हैं। जिनसे हर समय रक्त व पीप निकला करता है। इसी को कोढ़ कहते हैं।

उपचार–किसी कौवे को पकड़ कर उसे मरी हुई छिपकली खिलाये। जब वह खा ले तो उसके ७२ घण्टे बाद उसे मार डाले और गर्दन के ऊँचे से सिर के सहित चोंच काट लें और धूप में भली-भाँति सुखाकर गूलर की लकड़ी के लाल कोयलों पर जिनमें धुवाँ न हो जलाकर उसकी राख सावधानी से उठाकर न घिसने वाले खरल में बारीक पीस लें और शीशी में रख लें। बस कुष्ठ के रोगी को उस भस्म में शहद मिलाकर मल्हम बनाकर दें और घावों पर लगाने को कहें, आप विश्वास करें कि इस मल्हम से उसे आश्चर्यजनक लाभ होगा।

साँप काटे की चिकित्सा

उपचार–किसी मरे हुये साँप के भेजे को कौवे को खिलाये और ३ दिन के

बाद उसे मार कर उसकी चोंच का ऊपरी भाग निकाल कर रख ले और शेष भाग फेंक दें। अब आप उस चोंच को भली-भाँति साफ करके अपने पास रख लें, ज्योंही किसी को साँप काटे उसी समय काटने के स्थान से कुछ ऊपर कोई तागा या रस्सी से कस कर बाँध दें और जिस स्थान पर साँप ने काटा हो उसे चोंच से चीरकर काफी खून निकाल दें। बस फिर साँप के विष का प्रभाव न होगा।

पुत्रोत्पत्ति टोटका

बहुत-सी स्त्रियों को कन्यायें ही होती हैं और पुत्र नही होता। उन्हें उचित है कि कौवे के अण्डे की जर्दी लेकर अपनी नाभि के अन्दर व वाहर चारों ओर लेप करने के तीन घण्टे बाद पति से समागम करें। ऐसी स्थिति में यदि गर्भ स्थापित हुआ तो अवश्य ही पुत्र होगा। इसमें सन्देह नहीं; परन्तु इस प्रकार से उत्पन्न हुये बालकों के जन्म के बाद से नित्य १६६ दिन तक प्रातःकाल कौवों को दही व चीनी अवश्य खिलाये, इससे वह सन्तान निःसंदेह निरोग, हृष्ट-पुष्ट और दीर्घायु होगी।

मूत्रकृच्छ चिकित्सा

लक्षण–यह भी एक प्रकार से प्रमेह का रूप है और सर्वविदित है।

उपचार–कौवे के कुछ अण्डों को लेकर तोड़ डाले और उसमें की जर्दी निकाल कर फेंक दें और उन अण्डों के छिलकों में लगी हुई सफेद झिल्ली भी निकाल कर गर्म पानी में नमक मिलाकर भली-भाँति साफ कर लें और ठण्डा होने पर खरल में बारीक-बारीक पीस लें और शीशी में सुरक्षित रख लें और मूत्र कृच्छ के रोगी को दो रत्ती क्वाथ १।। तोला मूली के जल के साथ सेवन करायें। केवल तीन दिन के सेवन करने से ही रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

फीलपाँव चिकित्सा

लक्षण–इसमें रोगी का एक या दोनों पैर बहुत मोटा और भारी हो जाता है और उसमें दर्द भी होता है, जिससे उनका चलना-फिरना तक मुश्किल हो जाता है। प्रायः यह रोग असाध्य समझा जाता है, किन्तु निम्नलिखित दोनों खाने व लगाने के प्रयोग से निश्चय ही लाभ होगा।

उपचार–कृष्णपक्ष के मंगल की रात को किसी कब्रिस्तान से किसी मुर्दे के पैर की उंगली की हड्डी ढूँढ़ लाये और कूट-पीस कर उसमें कौवे के चार अण्डे डालकर भली-भाँति खरल करे। जब वह शुष्क होने लगे तो इसमें चमेली के फूलों का रस एक सेर डालकर घोटे। फिर एक सेर काले भाँगरे का रस डाल कर घोटे। जब वह भी सूखने लगे तो इसमें बिहार का आधा सेर गुलवर्द मिला कर घोटें; परन्तु ध्यान रहे यह सब घुटाई कम से कम पाँच-छः घण्टे नित्य होना चाहिये। उपरोक्त दवा के भी खुश्क होने पर उसे खुरच कर एक गोला बना लें और छाया में सुखा ले। जब वह सूख जाये तो

उस पर कपड़ा लपेट कर चिकनी मिट्टी भली-भाँति लगाकर इस गोले को भी छाये में सुखाये, उसके वाद जमीन में एक गड्ढा खोद करके उसमें ३-४ सेर जंगली बिने उपले भरे और बीच में यही गोला रखकर आग लगा दे। जब सब उपले जल जायें और आग ठण्डी हो जाये तब उस गोले को निकाल लें जिसका रंग मटमैला होगा। उस गोले को खरल में डालकर भली-भाँति सुरमे के समान बारीक पीसकर शीशी में रख लें और नित्य ४ रत्ती दवा एक छटाँक अर्क सौंफ अर्क वेदियों के साथ सेवन करायें और निम्नलिखित तेल को बनाकर उसकी मालिश करने को कहें।

तेलयोग–आक (मदार) के फूल आधा पाव और पत्ते आधा सेर व बरगद के पत्ते आधा सेर, हरमला आधा पाव, सौरंजा कटुवी आधा पाव लेकर तीन दिन और तीन रात तक कम से कम २९ सेर पानी में भिगोये रक्खे; परन्तु वर्तन लोहे का ही हो। बाद में इसको पाँच घण्टे के लिये धीमी आँच पर पकायें जब पानी ढाई या तीन सेर रह जाये तो इसे उतार कर हाथों से खूब मलें और कुचल लें। बाद में इसको दो सेर तिल का तेल मिलाकर आग पर पकायें। जब तेल फेना देना बन्द कर दे और वोलना बन्द कर दे तब उतार ले और बोतलों में भरकर रख लें, फिर ४० दिन तक सूर्योदय के समय धूप में रख दे और शाम को उठा लें बस उसी तेल की मालिश करायें। यदि खाने की दवा किसी प्रकार न वन सके तो अकेले इस तेल की मालिश से भी लाभ होगा, परन्तु उतना नहीं जितना कि दोनों एक साथ होगा।

यौवना प्रयोग

विधि–किसी अमावस्या को आधी रात को १२ बजे के निकट जाकर कोई कौवा पकड़ लाये और उसे लोहे के तारों द्वारा बनाये गये पिंजड़े में रक्खे। दूसरे दिन सुवह से नित्य सात दिन अपने आप शौच, दातून व स्नान से निबट कर उस कौवे को भी खूब नहलाये और पिंजड़े को साफ करे। जब कौवा नहाने के बाद स्वस्थ व शांत होकर बैठ जाये तब आप उसे किसी नये मिट्टी के प्याले में अच्छा-सा दही व चीनी और उसी में भली प्रकार से गुलाबजल मिलाकर खिलायें। बस उसके बाद से उसे जो चाहे दाना-पानी दें। इसी भाँति सातवें दिन उपरोक्त रीति से लिखकर रात में किसी एकान्त स्वच्छ कमरे में धूप, अगरबत्ती, चन्दन का बुरादा एवं सुगन्धित वस्तुओं से सुगन्धित करके कमरे को चारों ओर से बंद करके उस कौवे को पिंजड़ से निकाल कर आजाद कर दें और चुपचाप एक किनारे बैठकर ईश्वर का स्मरण करें। आधा घण्टा के वाद पुनः पकड़ लें और बस्ती से दूर बाहर ले जाकर उमकी पीठ पर के मुलायम बाल नोंच कर उसे छोड़ दें और घर वापस आयें। घर पर उन बालों को सिन्दूर में लपेट कर किसी सोने-चाँदी के तावीज में मढ़वाकर अपने दाहिने हाथ में धारण करें। बस इस यन्त्र के प्रभाव से आप सदैव जवान, स्वस्थ तथ चुस्त रहेंगे।

पागलपन नाशक प्रयोग

विधि–यदि कौवे का या कुत्ते के या दोनों के नाखून और बीछू के डंक को रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में लेकर ऊँट के चमड़े में रखकर ताबीज बनवाकर पागल के गले में पहिनायें तो यह ठीक हो।

दृष्टिरक्षक प्रयोग

विधि–यदि किसी कौवे के घोंसले पर नित्य बिना उसे छेड़े दोपहर के समय कुछ सरसों का खालिस तेल टपका आये और तब तक यह काम जारी रक्खे जब तक कि वह घोंसला तेल से बिल्कुल चिकना न हो जाये। बस आप विश्वास करें कि उसकी आँखों में कभी कोई रोग न होगा और न उसकी निगाह ही उसके जीवन पर्यन्त कभी कमजोर होगी और न उसकी सन्तान की ही दृष्टि खराब होगी। यह उपाय पुश्तों तक के लिए काफी है।

चेचक से सुरक्षा

चेचक या शीतला या छोटी-बड़ी माता के निकाल के नाम से यह रोग बहुत ही परिचित है। यह रोग प्राय: बच्चों को ही होता है। इसमें पहले रोगी को बुखार आता है, चेहरा लाल हो जाता है और शरीर में दाने निकलने लगते हैं, जिससे बड़ी पीड़ा व वेदना होती है। छुआछूत से यह रोग बहुत फैलता है।

बचने का उपाय–जिस गाँव में यह बीमारी फैल रही हो तो वहाँ वालों को चाहिये कि किसी सोमवार को एक मादा कौवा पकड़ें और तीन दिन तक उसे रोटियों पर घी चुपड़ कर खाँड लगाकर नित्य खिलायें और उसके शरीर से १५ छोटे-बड़े पंख नोंच लें। तीसरे दिन उसे खूब खिला-पिला कर गाँव के तीन चक्कर लगाकर उसके माथे पर दही या मक्खन लगाकर उसका मुँह पूरब की ओर करके उड़ा दें और जो पंख निकाले थे, उसमें ये चार पंख लेकर गाँव के बाहर किसी सरल जमीन में एक फीट की गहराई में गाड़ दें। बस आप विश्वास करें कि उसी समय से फिर किसी दूसरे बच्चे को यह बीमारी न होगी और जो बीमार होंगे वह शीघ्र स्वस्थ हो जायेंगे। शेष बचे हुए पंखों को इस प्रकार से दूसरी बार इस्तेमाल करें।

खोये बालक की प्राप्ति

उपाय–किसी बच्चे के गुम हो जाने पर उचित है कि वह शाम को कौवों के घोंसलों की ओर जाये और जिस कौवे को भटका हुआ देखे अर्थात् जो अपना घोंसला भूल गया हो और मारा-मारा फिर रहा हो ऐसे कौवे को किसी यत्न से पकड़ ले और घर लाकर सफेद चन्दन और कपूर की धूनी दें तथा गाय के दूध में शहद मिलाकर उसे पीने के लिए रक्खे और सो जाये। यदि कौवे ने सुबह तक उसे पी लिया तो आप समझ लें कि आपका काम हो गया और यदि कौवे ने सुबह तक न पिया तो

उसे फिर रोक लें और साधारण दाना-पानी दें और रात में फिर उसी प्रकार से दूध में शहद मिलाकर पुन: रख दें और तब तक यही उपाय जारी रक्खें जब तक कि वह पी न ले। जिस रात में कौवा वह दूध पी जाये उसके सुबह उस कौवे को जहाँ से पकड़ा था वहीं छोड़ दें। ज्यों ही वह कौवा अपने सही घोंसले में पहुँचेगा निश्चय ही उस समय बच्चा मिल जायेगा या उसके निश्चय स्थान पर होने की सही सूचना आपको मिल जायेगी।

बच्चे की खाँसी

१. विधि–यदि कौवे के पिछले भाग को (जहाँ से बीट निकलता है) मंगल के दिन लेकर किसी लाल कपड़े में रखकर ताबीज बना कर बच्चे या बूढ़े को जिसे भी खाँसी आती हो उसकी कलाई पर बाँधे तो खाँसी दूर हो।

२. विधि–यदि कौवे की बीट को कपड़े में रखकर उसकी पोटली बनाकर बच्चे के गले में पहनायें तो बच्चे की खाँसी निश्चय ही दूर हो जायेगी।

पशु का दूध न सूखने का उपाय

लोगों का कहना है कि यदि कोई व्यक्ति खुला हुआ दूध सिर पर रखे लिये जा रहा हो और उसमें कौवा बीट कर दे तो निश्चय ही जिन पशुओं का दूध उस बर्तन में होगा उनका दूध सूख जायेगा, जिससे वह दूध देंगे ही नहीं और यदि देंगे तो बहुत ही कम, अस्तु ऐसे पशुओं का उपचार निम्न रीति से करें।

उपाय–एक मादा कौवे को पकड़ कर उस पशु के पेट के नीचे, जिसका दूध सूख गया हो मार डाले अर्थात् छुरी से गरदन काट दें; परन्तु इस प्रकार काटे कि उसके रक्त की छींटे पशु के पिछले पैरों पर अवश्य पड़े। इन छींटों को अपने आप ही मिटने दें और उस कौवों की लाश बाहर फेंक दें। आपको देखकर आश्चर्य होगा कि तीन दिन के अन्दर ही वह पशु पहले के जितना ही दूध देने लगेगा; परन्तु ध्यान रहे कि उस कौवों को मारने के पहले उसे हाथ में पकड़कर उस पशु के थनों के चारों ओर तीन वार अवश्य घुमा लें।

पशुओं की दुग्ध वृद्धि

विधि–सोमवार की चाँदनी रात में एक कौवा पकड़ लाये और उसे चौदह दिन तक अपने यहाँ दाना-पानी साधारण रीति से दे; परन्तु नित्य सुबह-शाम दही खाँड़ और २ तोला तिल का तेल मिलाकर अवश्य खिलाया करे। पन्द्रहवें दिन सुबह उसे खिला-पिलाकर थोड़ी देर के बाद मार डाले और उसका पेट चीर कर उसके आमाशय को निकाल ले और गरम पानी में नमक मिलाकर आधा घण्टा तक भिगोये रखने के बाद साफ कर ले और छाये में सुखाकर उसमें गाय का मक्खन लगाये और एक चाँदी का टुकड़ा जो आधा माशा हो, उसी आमाशय में रख दे, बाद में उस आमाशय के

चारों ओर भी मक्खन लगाकर काले तिल चिपका दे। जब आमाशय तिलों से भली-भाँति ढँक जाये तब उसके ऊपर गोला गेहूँ का आटा लपेट और छाये में सुखा ले। सूखने पर इसके चारों ओर लाल रंग का सूती कपड़ा लपेट कर लाल तागे से ही बाँध दे। बस इस गोले को पशु जिस नाद में चारा खाता हो उसके नीचे खोदकर गाड़ दे और यदि पशुओं की संख्या अधिक हो तो इस गोले को सारी नाँदो के बीच गाड़ दे और पशुओं को समुचित दाना खली भी दे। आप विश्वास रखें कि इस प्रयोग से निश्चय ही उन पशुओं का दूध बढ़ जायेगा।

घोड़े की चाल तेज करने का उपाय

विधि–शबेरात के दिन दोपहर को एक युवा कौवा जहाँ तक हो सके उसके घोंसले से पकड़ ले और घर पर पिंजड़े में रखकर उसे दाना-पानी दे; किन्तु रात को उसके पिंजड़े के भीतर एक लाल कपड़ा बिछा दिया करे और पीने के लिये एक प्याले में एक छटाँक गुलाबजल रख दे। दूसरे दिन सुबह किसी बन्द कमरे में गूलर की लकड़ी के कोयलों पर गूगुल, हरमल और लाल चन्दन उतना सुलगायें जिससे धुयें से कमरा भर जाये। फिर कौवे के पिंजड़े को उसी कमरे में रख दें और पिंजड़े में कौवे के खाने के लिए २ तोला शहद में एक छटाँक दही मिलाकर उसके पिंजड़े में रखकर पिंजड़े को घर के बाहर किसी आम के पेड़ की डाल में बाँध कर लटका दे या पेड़ के नीचे रख दे। इसके बाद उसी दिन रात में उस कौवे को मार डाले और जितना भी रक्त पा सके, निकालकर छाये में सुखाकर सुरमे की भाँति बारीक पीस ले, बाद में इसी सुरमे में ३ माशा कस्तूरी, तीन माशा केशर मिलाकर खूब घोटे और लाल शीशी में भरकर रख ले। बस इस सुरमे को घोड़े की आँख में ४० दिन लगाकर कौतुक देखें। विशेष दौड़ के अवसरों पर उसे दौड़ने के आधा घण्टा पूर्व आँखों में लगायें और १ रत्ती उसके पैरों के सुमों पर मल दें।

उजड़ा बाग हरा करना

विधि–जिस आम के वृक्ष पर कौवा घोंसला बना लेता है चाहे वह एक ही क्यों न हो, वह वृक्ष सूखने लगता है और फसल कम पड़ती जाती है। यदि कहीं ऐसा हो तो उस उचित है कि कौवे के कुछ बाल व पंख लेकर वृक्ष में बाँध दे और एक कौवी को पकड़ कर अपने यहाँ लकड़ी के पिंजड़े में तीन दिन तक बन्द करे और उसे नित्य साधारण दाना-पानी खिलाये और शाम को दूध में चीनी व तिल का तेल मिलाकर पिलाये। चौथे दिन रात में जब चाँद पूरे तौर से आकाश में निकला हो उस समय उसे उसी वृक्ष के नीचे ले जाकर उस प्रकार से मार डाले, जिससे कि उसके खून की कुछ बूँद वृक्ष के तने व जड़ों पर अवश्य गिरे और आप कुछ खून उस पेड़ की डालों व पत्तियों पर भी छिड़क दें और उसकी लाश को उसी पेड़ के नीचे जमीन में खोदकर

गाड़ दें और दूसरे दिन से नियमित रूप से उस वृक्ष को सींचना शुरू करें। बस आप देखेंगे, कि वह वृक्ष दिन पर दिन हरा होता जायेगा।

आमों को मीठा करने का उपाय

विधि–वैशाख की परीवा को दोपहर के समय किसी कौवे को पकड़कर मार डाले और उसके बाल व पंख नोंचकर उसके जिस्म की सब मलामत भी साफ कर डाले और उसे किसी मिट्टी के मटके में डालकर ऊपर से पानी भर दे और उसमें एक सेर अंगूर डाल दे यदि अंगूर न मिले तो आधा सेर किसमिस ही डाल दे और उसके मुँह को ढक्कन से ढँककर सफेद कपड़े से उसका मुँह लपेट कर मिट्टी से बन्द कर दें। बाद में उस मटके को कम से कम एक गज की गहराई में जमीन में गाड़ दे और फिर इस मटके को नौ मास के बाद खोले और फिर आम के वृक्ष में बौर आने के समय १५-२० दिन पहले से ही उस पेड़ की जड़ में कम से कम एक सेर उसी मटके का पानी अवश्य डाले। आपको देखकर आश्चर्य होगा कि इस बार उस वृक्ष में पहले की अपेक्षा फल अधिक और वह खट्टे के बजाय मीठे होंगे।

फसल की रक्षा का उपाय

विधि–यदि किसी खेत या बाग में पक्षियों द्वारा अधिक हानि होती है तो आप उस खेत या वाग के बीच में जहाँ पर सब पक्षियों की निगाह आसानी से पड़ सके, वहाँ एक कौवा मारकर बाँधकर लटका दें। बस दूसरे पक्षी भय से आना कम कर देंगे।

पारे की भस्म (कलई) बनना

विधि–जितने पारे की कलई बनाना हो उसे किसी आल्मोनियम के पात्र में डाल दें और फिर उसमें थोड़ा-सा पानी डालकर कौवे के पंखों का गोल गुच्छा-सा वनाकर उसी पात्र में डाल कर उस पारा पड़े हुए पात्र को १५-२० मिनट तक खूब हिलायें। जब पारे का रंग मटमैला हो जाय तब उसे रात भर के लिये बाँध कर टाँग दें। सुवह जब आप उसे खोलकर देखेंगे तो बस पारे के बारीक-बारीक जर्रे पायेंगे। उसे यदि आप किसी सुनार को दिखायें तो वह बहुत खुश होगा बाकी यह वह जाने कि कलई का कोई प्रयोग भी हो सकेगा या नहीं।

विधि–जब कभी अति दृष्टि से जन-धन की हानि होने लगे तो उसे बन्द करना आवश्यक होता है। अस्तु उसे रोकने का उपाय यह है कि किसी बृहस्पतिवार को आधी रात में जाकर किसी घोंसले से एक कौवा पकड़ लाये और दूसरे दिन से भुने हुए चने को भेड़ के रक्त में भिंगोकर छाये में सुखा कर पीस कर आटे को नित्य ३ दिन तक खिलाये और उसे पीने के लिए जो पानी दें, उसमें एक-दो बूँद भेड़ का रक्त अवश्य डाल दें। चौथे दिन उस कौवे के ४-६ पंख उखाड़ कर छोड़ दे। उसके बाद किसी अंधेरी रात में आधीरात के समय मिट्टी के कोरे लोटे में गूलर की लकड़ी के लाल-लाल

अंगारों को छोड़ दें और उस पर लोहबान, हरमल व गूगुल डाल दें साथ ही दूसरे लोटे में उन पंखों को रखकर उस लोटे को धुएँ वाले लोटे को उतार दें और पंखों को निकाल कर अपने पास रख छोड़े और आवश्यकता के समय उसमें से चार पंख लेकर लाल रंग के कपड़े में लपेट कर एक-दो पंख चारों दिशाओं पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में ढाई फुट की गहराई में जमीन में गाड़ दें। बस आपके पंख गाड़ने के आधे घण्टे के बाद ही वर्षा बन्द हो जायेगी।

लाट्री का तन्त्र

विधि–कौवे के अपने आप गिरे हुए काले पंख को आप मंगल के दिन ढूंढकर उठा लायें और उस पर केश छिड़क कर पूजन करके उसकी कलम बनाकर यदि आप पहेलियाँ भरें तो निश्चय ही आप को सफलता मिलेगी, चाहे पहला इनाम न मिले पर मिलेगा अवश्य।

भूमिगत धन दिखने का उपाय

विधि–यदि किसी को यह संदेह हो कि उसके घर में कहीं पर धन गड़ा है तो उसे चाहिये कि वह धन गाड़ने वाला आदमी हो तो नर कौवा और यदि स्त्री हो तो मादा कौवा को पकड़े और घर लाकर पिंजड़े में बन्द करे। तीन दिन तक नित्य उसे साधारण आहार के अतिरिक्त शुद्ध शहद में गेहूँ की रोटी डुबाकर दिन में एक बार अवश्य खिलाये। चौथे दिन उसे मारकर उसका सिर काट कर किसी लकड़ी की डिबिया में बन्द करके छाये में सूखने को रख दे। ४० दिन के बाद उसे खोलकर देखे; परन्तु उस दिन शुक्रवार ही होना चाहिये। अब आप चमचमाती हुई धूप में रख दें। बाद में उसमें १० बूँद गुलाबजल और एक माशा खालिश मधु डालकर उस डिबिया को वन्द करके पुनः रख दे। बस फिर सिरहाने की ओर एक फुट जमीन के नीचे खोद कर गाड़ दे और उस गड्ढे को मिट्टी से बन्द कर दे तथा आप नित्य ही उसी चारपाई पर सोयें। चालीस दिन के अन्दर निश्चय ही वह व्यक्ति आकर स्वप्न में आपको वह स्थान बता देगा या दिखा देगा।

भूगर्भ स्थित धन देखना

१. विधि–यदि कौवे की जबान और हुदहुद पक्षी का हृदय छाये में सुखा कर पीसकर शहद में सान कर अंजन बनाये और उस अंजन को आँखों में लगाये तो भूमि में गड़ा हुआ धन दिखे, ऐसा कहा जाता है।

२. विधि–काले कौवे की जबान को तेल में जलाकर उसका अंजन उस आदमी की आँखों में लगाये जो उल्टा पैदा हुआ हो उसे जमीन में गड़ा हुआ धन दिखाई पड़ेगा।

प्यास न लगने का उपाय

विधि–यदि कौवे के हृदय को रवि पुष्य में लेकर ताबीज में मढ़वा कर अपने

पास रक्खे तो प्यास न लगे। एक जगह लिखा है कि संक्रान्ति के दिन शाम को चार बजे के लगभग एक छटाँक सिंघाड़े के आटे को भून कर उसमें एक छटाँक खाँड़ मिलाये और स्वयं खाकर शाम को बाहर जंगल की ओर जाये और एक मादा कौवों को पकड़ लाये, यदि उस दिन दुर्भाग्य से न मिले तो दूसरी संक्रान्ति को इसी विधि से जाकर पकड़ लाये। घर लाकर उसे पिंजड़े में रक्खे। खाने में उसे चाहे जो कुछ दे पर पीने के लिये जो पानी दें, उसमें एक सेर शीशम की पत्तियों का अर्क जो आधा पाव होगा गुलाब जल और आधा पाव अर्क वेदमुश्क डालकर बोतल को खूब हिलाये और यही पानी उसे पीने को दे। इसी क्रम से उसे एक मास तक अपने यहाँ खिलाता-पिलाता रहे। दूसरी संक्रान्ति की रात को उस कौवी को लेकर किसी बड़े जलाशय, तालाब या नदी पर जाये और कौवी की गर्दन पकड़ कर उसे पानी में दो चार डुबकियाँ देकर मार डाले। बाद में उसकी चोंच का ऊपरी भाग एक रत्ती के करीब और उसकी चोटी के बाल भी एक रत्ती काट ले और उसके मुँह की सारी की सारी जबान निकाल ले और इन तीनों वस्तुओं को, किसी सफेद कागज को केशर के रंग में रंगकर उसी में रखकर पुड़िया बना ले और उस पुड़िया को किसी हरे रंग के नये रेशमी कपड़े में लपेट कर उसी के हरे तागे से ही बाँध दे और उसी रेशमी हरे तागे में उसे यन्त्र की भाँति गले में पहने; परन्तु यह यन्त्र पहिनने वाले के हृदय के बीच में लटकते रहना चाहिये। बस इस यन्त्र को धारण करके चाहे जिस रेगिस्तान की यात्रा करें और बेधड़क रहे, निश्चय ही आपको प्यास की अनुभूति ही न होगी।

वाक् सिद्धि

विधि–किसी पूर्णिमा की रात को १२ बजे किसी कौवे को चुपके से घोंसले से पकड़ लाये और पेड़ के नीचे उतरने पर उसे दाहिने हाथ से पकड़कर सीने से चिपका कर अपने घर ले आये और पिंजड़े में बन्द कर ले और सुबह चार बजे से जगकर उसके सामने वैठ जाये। ज्योंही सुबह होने लगे और पौ फटे और कौवा बोले अर्थात् उसके पहली बार ही काँव करने के बाद ही उसे तुरन्त मार डाले और बड़ी सतर्कता से उसके मुँह से उसकी पूरी जवान विना किसी प्रकार से छिदे या कटे या खरोंच लगे ही निकाल ले, फिर उस जबान को छाये में सुखाकर एक खरल में डालकर उसमें २ तोला केवड़ा जल, १ माशा अनविधे मोती, एक माशा गोरोचन और एक तोला मेंहदी डालकर खूब खरल करे। जब उसकी बहुत बारीक लुगदी तैयार हो जाय तब इसमें दो बूँद खालिश शहद डालकर १ गोली-सा बना लें और इसे हरे रंग के रेशमी तागे में पिरोकर पहने और गले में इस प्रकार से लटकाये कि वह नंगे वदन की छातियों के बीच छूता रहे और बाहर से न दिखे। बस उसको पहन कर ईश्वर का स्मरण करके आप जो कुछ कहेंगे वह बिल्कुल सत्य होगा, जिसको देखकर लोग आश्चर्य करेंगे और आपको सिद्ध महात्मा समझेंगे।

चोर चोरी न कर सके

विधि–एक स्थान पर लिखा है कि यदि पूर्णिमा की रात को घर से पूरब दिशा में जाकर किसी पेड़ के घोंसले से एक कौवा पकड़ लाये और उसे लेकर जव पेड़ से उतरे तो ३ चक्कर पेड़ के दाहिनी ओर से बाँयें ओर का लगायें। कौवे को घर लाकर किसी बाँस की तिलियों से बने हुए पिंजड़े में रख छोड़े और पिंजड़े को लाल कपड़े से ढँक दें। एक सप्ताह तक गेहूँ के आटे व घी, चीनी से बनाया हुआ हलुवा जिस पर लाल रंग बुरक दिया हो नित्य दिन में एक बार अवश्य खिलाये और साधारण दाना-पानी देता रहे। रात में उस पिंजड़े को उसी लाल कपड़े से अवश्य ढँक दिया करे। आठवें दिन रात के दस बजे उसे मार कर उसका रक्त व हृदय निकाल कर रख ले शेष भाग को बस्ती के बाहर गाड़ दे। अब आप इन दोनों वस्तुओं को छाये में सुखाकर भली-भाँति खरल में पीसें, फिर उसके रुह केवड़ा एक तोला डालकर घोंटे। अगले रविवार को किसी कुत्ते के मुँह से सामने के दाँत निकाल लें और उसे भी उन सबके साथ खरल कर लें; परन्तु इससे वह दाँत घिसेगा नहीं। अस्तु उस समूचे दाँत को या उसके जो टुकड़े हों लपेट कर गोली बना लें और इसके ऊपर लाल कपड़ा लपेट कर काले धागे से सीकर ठीक कर लें और किसी डिबिया में रख लें। बस इस डिबिया को घर में या चौखट के नीचे गाड़े या किसी बाग व खेत के बीच में गाड़ दें और विश्वास रक्खे कि जब तक यह डिबिया वहाँ गड़ी रहेगी तब तक उस स्थान में चोरी न हो सकेगी।

भूत-प्रेत दूर होने की विधि

विधि–एकादशी के दिन किसी श्मशान या कब्रिस्तान से किसी शव के सर, बाँह, टांग और छाती की हड्डियों के चार छोटे-छोटे टुकड़े ले आये। फिर शाम को या सुबह जिस समय सूर्य निकल रहा हो, उन हड्डियों को एक कुशासन पर रखकर किसी लाल कपड़े पर रक्खे और कपूर, अगर व धूप सुलगा कर कमरे को बन्द कर दें और एक घण्टे के बाद जाकर उस लाल कपड़े को गाँठ लगाकर बाँध दें और सुरक्षित रख लें। अव आप नवमी की रात में जगकर नंगे होकर किसी पड़ोस के वृक्ष पर एक कौवा पकड़ लायें और पेड़ के नीचे उतर कर आप उस कौवे को किसी लाल कपड़े के झोले को लटका कर घर आये यहाँ इस कौवे को ताँबे के तारों से बने हुए पिंजड़े में बन्द करें और उसके सामने वही लाल कपड़े में बंधी हड्डी की पोटली को डाल दे, और पिंजड़े को लाल कपड़े से ढँक दें। दूसरे दिन प्रात: उस पोटली को निकालकर किसी बक्से में रखकर अंधेरे में रख दें और पिंजड़े को रोशनी में रख दें व साधारण दाना-पानी दें। शाम को एक लोहे के बर्तन में दो तोला दही, एक तोला कच्चा दूध, एक माशा गुलाबजल, एक रत्ती केशर और एक माशा लोबान मिलाकर उस पोटली के

साथ-साथ पिंजड़े रख दें जिससे कि उसका धुवाँ पिंजड़े में भर जाय और दही में लग जाय। थोड़ी देर के बाद कौवा उस दही को बड़े चाव से खा लेगा। इसी क्रम से आप नित्य नौ दिन तक करें। रात में वही पोटली दही के साथ रक्खे सुवह प्रकाश फैलने से पहले ही निकाल कर अंधेरे कमरे में लोहे के बक्से में बन्द कर दें। दसवें दिन सुबह वह पोटली उसी प्रकार से बन्द करके उसी स्थान पर ले जाये, जहाँ इसे पकड़ा था। वहाँ उसको मारकर उसका हृदय निकाल लें और शेष भाग को जमीन में गाड़ कर उस हृदय को उसी झोले में डाल कर लाये और घर में उसी पोटली के साथ-साथ बक्स में बन्द कर दें।

अगली नौचन्दी जुमेरात को इन दोनों वस्तुओं को खरल में रखकर एक पाव केवड़ा जल डालकर भलीभाँति घोंटे। जब उसकी लुगदी बन जाये तो इसके तीन गोले बनायें और हर एक गोले में एक माशा कपूर, एक माशा केशर, एक माशा कस्तूरी और एक माशा लोबान मिलाकर लाल कपड़े से लपेटे कर लाल धागे से ही बाँध दें या सिल दें फिर इस गोले को ताँबे के ताबीजों में मढ़वा लें।

इस यन्त्र को गले में पहिनाने से हर प्रकार की बाधा दूर हो जायेगी घर में चौखट के नीचे गाड़ देने से उस घर में कोई हानि या बाधा तो क्या आग भी नहीं लग सकती, खेत या बाग में गाड़ देने से उसकी निश्चय ही पूर्ण रक्षा रहेगी।

भविष्यवाणी का कौशल

विधि–चाँद की पहली तारीख की आधीरात को किसी कब्रिस्तान से किसी शव के सर की हड्डी का टुकड़ा अपनी दाहिनी जेब में रखकर ले आये और घर में लाकर सिन्दूर लगाकर किसी लोहे या टीन के डिब्बे में रख दें और उसमें थोड़ा कपूर व केशर डाल दे और अंधेरे में रख दें। तीन दिन तक उसे उसी तरह रहने दें, पर आधी रात को नित्य उस डिब्बे को खोल कर धूप की धुनी देते रहें। तीन दिन के बाद यानी चाँद की चौथी रात की शाम को उस हड्डी के टुकड़े को दाहिनी जेब में डालकर आप वस्ती के बाहर से कोई कौवा पकड़ लायें और घर में किसी पिंजड़े में बन्द करके काले कपड़े से पिंजड़े को ढँक दें और हड्डी पुनः उसी डिब्बे में रखकर यथास्थान पर रख दें। सुबह काला कपड़ा पिंजड़े से हटाकर साधारण दाना-पानी दें। दोपहर को गाय का मक्खन खिलायें। इसी क्रम से ११ दिन पूरे करके बारहवें दिन रात के दस बजे के करीब उस डिबिया को या हड्डी को दाहिनी जेब में डालकर कौवे को लेकर उसी कब्रिस्तान में जायें जहाँ से वह हड्डी लाये थे और उसका पेट चीर कर दिल व जिगर निकाल कर बाकी चीजों को वहीं गाड़ दें और घर आयें। घर आकर उस दिल व जिगर को किसी दूसरी लोहे की डिबिया सहित उनको धूप में सुखा लें। जब यह सूख जाय, तो इन दोनों पर भी सिन्दूर लगाकर लाल कपड़े से लपेट कर उसी हड्डी वाली डिबिया

में ही रख दें और इस डिब्बी को अपने पास सुरक्षित रख लें। जब कभी आपको कोई चमत्कार दिखाना हो या भविष्यवाणी करना हो तो किसी अविवाहित लड़की या लड़के को चौकी पर कम्बल बिछाकर बैठा दें या लिटा दें और उसकी आँखों पर काले कपड़े की पट्टी बाँध दें। इस डिबिया को किसी झोले में रखकर उसके दाहिने हाथ के नीचे रख दें। बस १५ मिनट के बाद वह व्यक्ति आपके प्रश्नों का सही-सही उत्तर दे देगा।

(कौवे की आँखों का प्रयोग)

अदृश्य करने का कौशल

विधि–कृष्णपक्ष के बृहस्पति की आधी रात को एक कौवा पकड़े और पेड़ से नीचे उतर कर पहले सात कदम पीछे चल कर सीधे अपने घर आयें। घर के बाहर ही उस कौवे की आँखें लाल कपड़े से बाँधकर पिंजड़े में छोड़ दें; परन्तु वह पट्टी इतनी मजबूत बँधी होनी चाहिये, जिससे कौवा किसी प्रकार से खोल न सके क्योंकि यदि वह अपनी आँखें खोले ले गया तो आपको पुन: दूसरा कौवा पकड़ना पड़ेगा। दूसरे दिन सुबह आप उसके आँख की पट्टी खोल दें और आँखों में दो बूँद गुलाबजल टपका दें और उसे दिन में कुछ खाने-पीने को दें। सूर्यास्त के समय आधा तोला नारियल के तेल में इतनी ही गाय के दूध की मलाई मिलाकर खाने को दें और स्वयं व अन्य सभी लोग वहाँ से हट जायें, जब वह खा चुके तो कल की भाँति पुन: लाल कपड़े से उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दें। इसी क्रम में पाँच दिन तक नित्य यही करते रहें। उसके बाद से फिर अगले पाँच दिनों तक शाम को उसे दही व तेल के स्थान पर एक रत्ती तम्बाकू की पत्ती किसी न किसी प्रकार रोटी आदि में खिलाते रहें और रात में उसी प्रकार से पट्टी बाँधते रहें, जिसे वह खोल न सके और सुबह उसकी आँखों में गुलाबजल टपकाते रहें। ग्यारहवें दिन उस कौवे को मारकर उसकी पूरी आँखें बड़ी सावधानी से निकाल लें और किसी सीप में रख लें। फिर जिस्ते का फुल्ला आधा माशा, सुहागा आधा रत्ती, सुरमा सफेद एक तोला, भीमसेनी कपूर आधा माशा और नीम की पत्तियों का रस पाँच तोला, इन सब चीजों को खरल से डालकर बहुत बारीक-बारीक पीस लें और सुरक्षित शीशी में रख लें। फिर किसी सोमवार की रात को दो बजे श्मशान में जाकर जहाँ पर मुरदा जलाया जाने वाला हो वहाँ एक फीट जमीन के नीचे उस शीशी को दबा दें और उस स्थान पर गड़ा रहने दें। बाद में इस शीशी को निकाल कर इसका मुँह भलीभाँति बन्द करके किसी ऐसे कुएँ में काले तागे का एक छोर उसी में एक कील से बाँध दें और किसी को यह बात कदापि न बतायें। एक मास के बाद उसे कुएँ से निकाल लें बस आपका सुरमा तैयार है। यह सुरमा जो आँख में लगायेगा वह स्वयं न दिखेगा पर वह सबको देखेगा।

चोर का पता लगाना

विधि–किसी मादा कौवे की बीट लेकर छाये में सुखाये। सूख जाने पर एक तोला बीट, नीम की पत्तियों के एक छटाँक रस में भलीभाँति घोटें। जब तनिक ही गीला रह जाये तब सरकण्डा की सीकों पर इस लेप को चलाकर और सुखाकर ढ़ाई इंच के बराबर टुकड़ों को काट लें और सुरक्षित रख लें। जब कोई वस्तु चोरी जाये तो जिन-जिन व्यक्तियों पर संदेह हो, उनको एक पंक्ति में बिठाकर एक-दो तिनका सबको दे दें और एक तिनका लेकर सबको दाहिनी आँख में सलाई की भाँति फेर दें और उन लोगों से कह दें कि चोर का तिनका बढ़ जायेगा। बस थोड़ी देर में या तो चोर आपको अलग बुलाकर सब कुछ बता देगा या वह अपना तिनका अवश्य तोड़ डालेगा। आप थोड़ी देर बाद सबके तिनके अलग-अलग नाप कर देखें बस जिनका तिनका छोटा हो उसी को पकड़कर चोरी का भेद जान लें।

बुरी नजर उतारने का मन्त्र

ॐ नमो गुरु आदेश तुझ्या नावे भूत पले प्रेत पले खविस पले सब पले अरिष्ट पले मुरिष्ट पले न पले तर गुरु की गोरखनाथ की वीदमा ही चले गुरु की संगत मेरी भगत चलो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र को दशहरा या दीपावली अर्थात् किसी शुभ रात्रि में १००८ बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये, फिर जब प्रयोग करने की आवश्यकता पड़े तब इस मन्त्र को सात बार पढ़कर अभिमन्त्रित किये हुए भस्म को सर्वाङ्ग लगाने से कुदृष्टि नष्ट हो जाती है।

नजर उतारना

बुरी नजर से तो सभी परिचित है। इससे स्वस्थ बालक, व्यक्ति या पशु अस्वस्थ हो जाता है। बालक रोता रहता है। चिड़चिड़ा हो जाता है। बड़े व्यक्ति को पाचन विकार व अग्निमांड़ हो जाता है। गाय-भैंस दूध देना कम कर देती है या तो देती ही नहीं।

१. नमक, राई, राल, लहसुन, प्याज के सूखे छिलके व सूखी मिर्च अंगारे पर डालकर उस आग को रोगी के ऊपर सात बार घुमाने से नजर का दोष मिटता है।

२. छोटे बच्चें को आँखों में काजल लगाकर माथे पर भी काजल का ही टीका लगा देते हैं। इससे बालक पर बुरी नजर नहीं लगती। बड़े बच्चों को भी माँ, बहनें विशेष कर नवरात्र के दिनों में लगाती हैं।

३. भवन निर्माण के समय भवन के ऊपर तथा लौकी आदि साग-सब्जी की खेती में भी डण्डे के सहारे एक हांड़ी के बाहरी भाग को काजल से पोत कर उस पर चूना व सिन्दूर का टीका लगाकर अथवा राक्षस-सा मुँह बनाकर टांग देने से भवन निर्माण में अथवा सब्जी की खेती आदि में नजर नहीं लगती।

४. भूत-प्रेत व नजर से बचाने के लिए बच्चों के गले में काले रंग के धागे में रुद्राक्ष, घुंघुची, चाँदी का चन्द्रमा, ताम्बे का सूर्य, शेर का नाखून आदि की माला, गले में तथा हाथ की कलाई व कमर में काले ऊन का धागा पहनाते हैं।

५. शनिवार के दिन हनुमान मन्दिर में जाकर प्रेमपूर्वक हनुमान की आराधना कर उनके कन्धे पर से सिन्दूर लाकर नजर ले हुए व्यक्ति के माथे पर लगाने से बुरी नजर का प्रभाव दूर हो जाता है।

६. खाने के समय भी किसी व्यक्ति की बुरी नजर लग जाती है। तो इमली की तीन छोटी डालियों को लेकर आग में जलाकर नजर लगे व्यक्ति के माथे पर से सात बार घुमाकर पानी में बुझा देते हैं और उस पानी को रोगी को पिलाने से नजर दोष दूर होते देखा गया है।

७. रविवार या शनिवार के दिन नजर लगे व्यक्ति के ऊपर से तीन बार दूध उतार कर एक मिट्टी के ढक्कन में रखकर कुत्ते को दे देते हैं।

८. छोटे बच्चें को नजर न गे अत: हाथ में चुटकी भर राख लेकर बृहस्पतिवार के दिन **'ॐ चैतन्य गोरक्षनाथ नमः'** मन्त्र का १०८ बार जप करते हैं फिर छोटी-सी पुड़िया में डालकर काले रेशमी धागे से बच्चे के गले में बाँधने से बुरी नजर नहीं लगती।

९. यदि किसी बच्चे पर बुरी नजर लगी हो और यह निश्चित विश्वास हो कि अमुक स्त्री या पुरुष की नजर उस पर लगी है तो उस स्त्री या पुरुष की नजर उस पर लगी है तो उस स्त्री या पुरुष को घर पर प्रेम से ही बुलाकर सिर पर उसका हाथ फिरवाने से लाभ होता है।

१०. बच्चे पर नजर लगने से हाथ में रक्षा सूत्र लेकर इस मन्त्र को सात बार पढ़कर रक्षासूत्र पर फूँक मार **'ॐ नमः हनुमंता, ब्रिज का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुन्जी बह्मा वाला, इस घट पिण्ड का यति, हनुमन्त रखवाला।'** बच्चे को बाँध देना चाहिये या इसी मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर काले कपड़े में सिलकर उसे काले धागे में बाँधकर बच्चे के गले में बाँधने से लाभ होता है।

११. भोजन में नजर लगने पर उस पर लाल गुलाल छिड़क कर रास्ते में रख देते हैं। फिर बाद में सभी खाना खायें, नजर ठीक हो जाती है।

१२. अल्प आयु में जन्मे बालक को माँ को उसकी दीर्घायु होने की कामना से अपने बाँयें हाथ पर अश्वत्थामा, हनुमान आदि चिरंजीवी ऋषि महर्षियों, देवी-देवताओं के नाम अष्टमी तिथि में खुदवाना चाहिये।

१३. गोबर के बनाये गये छोटे दीये में गुड़ का टुकड़ा, तेल और रुई की वत्ती डालकर जलाकर दरवाजे के बीच में रखने से भी बुरी नजर का प्रभाव जाता रहता है।

१४. नजर लगे व्यक्ति को पान में गुलाव की सात पंखुड़ियाँ भी रखकर अपने इष्टदेव का नाम लेकर खिलाने से बुरी नजर का प्रभाव दूर हो जाता है।

१५. यदि नजर आदि की कोई बाहरी बाधा ग्रसित है तो घर के पास के वृक्ष के जड़ में शाम को थोड़ा दूध डालकर अगरबत्ती जलाकर रख दें, तो बाहरी बाधा नष्ट होती है।

१६. लाल मिर्च, अजवायन और पीली सरसों को एक मिट्टी के छोटे बर्तन में आग लेकर उसमें जलाते हैं। इसका धुवाँ नजर लगे बच्चों पर तपाते हैं तो बच्चों का रोना-छरियाना आदि सब बुरी नजर का प्रभाव ठीक हो जाता है।

विविध उपाय

१. रांगा की अंगूठी दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में पहनने से मोटापा कम होता है।

२. रजोधर्म के समय जिस स्त्री को उदर में दर्द हो जाया करता हो तो यदि वह स्त्री मंगलवार या रविवार के दिन रात्रि में कमर में मूंज की रस्सी बांधकर सोये और प्रात: होते ही उसे चौराहे पर फेंक दे तो रजोदोष के कारण दर्द व अन्य व्याधियाँ ठीक होती हैं।

३. पलास वृक्ष के एक पत्ते को पुत्रवती स्त्री के दूध में पीसकर ऋतु स्नान के वाद गर्भवती स्त्री को खिलाने से अथवा कदम्ब का एक कोमल पत्ता व श्वेत पुष्पी कंटगारी मूल का लेकर बकरी के दूध में पीसकर ऋतुस्नान के वाद सन्तानहीन स्त्री को सात दिन तक खिलाने से पुत्र प्राप्त होने की सम्भावना होती है।

४. कुमारी कन्या के द्वारा काते गये सूत से गर्भिणी स्त्री के सिर से पैर तक की लम्बाई का माप लेकर उसके बराबर २१ टुकड़े काटकर प्रत्येक टुकड़े को काले धतूरे के २१ टुकड़ों के साथ धागे में एक-एक बाँधकर गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से गर्भ स्राव या गर्भपात नहीं होता।

५. शरपुंखा मूल, (१) केले का मूल, (२) बिना फूल आये इमली के छोटे वृक्ष का मूल में से एक व दो को गर्भवती स्त्री की कमर में बाँधने से तथा तीन को सामने के वाल से बाँधने पर प्रसव सुखपूर्वक होता है। इमली की जड़ जिन-जिन बालों में बाँधी गयी हो उन जड़ों को बालों सहित काटना चाहिये।

६. नितम्ब में साँप की केंचुली, वाँयें स्तन के पास बारहसिंगे का सींग या लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक गर्भवती स्त्री के प्रसव के समय बाँधने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

७. काले साँप की केंचुली कमर में बाँधने से या भृंगराज मूल सिर में बाँधने

से मंगलवार के दिन छिपकली की पूंछ तथा रविवार के दिन गिरगिट की पूँछ बाँह अथवा सिर में बाँधने से पारी का ज्वर नष्ट होता है।

८. एक पका हुआ अंबरी सेव में जितने लौंग आव सकें चुभोकर किसी चीनी के बर्तन में आठ दिन पड़ा रहने दें। आठ दिन के बाद लौंग निकाल कर शीशे के ब्रर्तन में रख दें और रोजाना तीर बार बारीक करके सुबह दूध में खायें, मर्दानगी महसूस होने लगेगी। इसे २० दिन तक लगातार खायें एक तेल का नुस्खा हम नीचे लिख रहे हैं इस तेल का इस्तेमाल करते रहें। इससे शत्ति भी बढ़ेगी, सुस्ती भी नहीं आयेगी (कृपया धातु वाले मरीज इस लौंग का सेवन न करें।)

नुस्खा तेल–एक तोला लौंग, तीन माशा चमेली के तले को आग पर जलाकर कपड़े से छानकर शीशी में रख लें। रात को थोड़ा-सा तेल इन्द्री पर लगाकर तीन मिनट तक मालिश करके पान का पत्ता गर्म करके बाँध ले। २० मिनट तक मालिश करे, खराब नसें ठीक होकर सब सख्त हो जायेगी।

वीर्य पतन या धातु रोग

इमली के बीज, आधा पाव दूध में भिंगोकर रखें। तीसरे दिन छिलके उतार कर साफ कर लें। इसको पीसकर छः माशा शाम को दूध के साथ खाने से धातु रोगी को निश्चित आराम होता है।

रविवार या मंगलवार के अश्विनी नक्षत्र में ग्रहण किये घोड़े के नाखून को आग में डालकर उसका धुवाँ भूत-प्रेत से ग्रसित रोगी को देने से या कुम्हड़े के फूलों के स्वरस में पीसी हुई हल्दी को रोगी की आँखों में अञ्जन करने से भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति मिलती है।

गाय के बाँयें सींग की या जंगली सूअर के नाखून की अंगूठी बनवा कर कनिष्ठिका अंगुली (दाहिने हाथ की) में पहनने से मिर्गी रोग का दौरा पड़ना बन्द होता है।

सीपियों की माला रविवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बाँधने से या सिन्दुवार (निर्गुणी) की जड़ को मंगलवार के दिन गले में बाँधने से दाँत सरलता से निकलते हैं, कोई कष्ट नहीं होता।

हाथ-पैर में लोहे या तांबे का छल्ला पहनाने, गले में चन्द्रमा या सूरज बनाकर पहनाने से, रीठे के फल को छेदकर पहनाने से नजर, टोना, टोटका आदि अनेक व्याधियों का प्रभाव बच्चे पर नहीं पड़ता तथा दाँत भी निकलने में सरलता होती है।

अकरकरा की जड़ अथवा भेड़िये का दाँत गले में बाँधने से बच्चे को मिर्गी का या अन्य किसी प्रकार का दौरा नहीं पड़ता।

लाल मिर्च व अजवायन को आग में डालकर तपाने तथा बच्चे के माथे पर से सात बार घुमाकर आग में डाल देने से नजर गुजर का प्रभाव नष्ट होता है।

सोलह दाँत वाली पीली कौड़ी को छेद कर काले रंग के डोरें से फीलपाँव से ग्रसित भाग पर बाँधने से रोग धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग

रवि पुष्य नक्षत्र में श्वेत आक की जड़ विधि सहित प्राप्त करें, इस जड़ को गोरोचन तथा गाय के घी के साथ पीसकर लेप तैयार करें, इस लेप को गणपति के मूल मन्त्र के द्वारा १०१ बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से त्रिलोक वश में हो जाता है।

रक्षा के लिए प्रयोग

रवि पुष्य नक्षत्र में सफेद आक की जड़ गणपति के मूल मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके धारण करने से भूत, प्रेत-जिन्न आदि से रक्षा होती है। यह सिद्ध प्रयोग है।

श्वेत आक की कील का प्रयोग

१. श्वेत आक की तीन अंगुल की कील बनाकर कृतिका नक्षत्र में तालाब में गाड़ने से तालाब की समस्त मछलियाँ मर जाती हैं।

२. कृत्तिका नक्षत्र में सफेद आक की जड़, सोलह अंगुल की लेकर मदिरालय में गाड़ देने से मदिरा का पानी सफेद हो जाता है। भाव यह है कि मदिरा का मद खत्म हो जाता है।

टोने-टोटके से सुरक्षित रहेन का प्रयोग

श्वेत आक का पौधा विधिपूर्वक घर के द्वार पर लगाने से टोना-टोटका असर नहीं करता। इस तरह प्रयोग करने से घर सुरक्षित रहता है।

सफेद आक से वशीकरण प्रयोग

सफेद आक की जड़ को पीसकर उसमें अपना वीर्य मिलाकर माथे पर तिलक लगाने से प्रबल शत्रु भी मित्र हो जाता है।

बवासीर दूर करने के लिए

शनिवार पुष्य नक्षत्र को प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व, आक के सात पत्ते तोड़ लायें और शौचक्रिया से निवृत्त होकर गुदा को जल से धोकर एक-एक पत्ते से क्रमश: गुदा को रगड़ या पोंछकर अपने शरीर के दक्षिण दिशा की ओर इन पत्तों को फेंकता जाये।

इसी क्रिया को इक्कीस दिन तक करें तो बवासीर की जलन तथा सूजन आदि सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। मेरे द्वारा कही गयी विधि का प्रयोग करके लाभ प्राप्त करें।

फीलपाँव को नष्ट करने के लिए

फीलपाँव का रोग अण्डकोष से होकर पैरों को सुजाकर मोटा कर देता है। फीलपाँव को दूर करने के लिए यह प्रयोग करें।

रविवार पुष्य-नक्षत्र में उत्तर दिशा में पैदा हुए श्वेत आक के पौधे की जड़, तान्त्रिक विधि सहित उखाड़ कर सूती लाल रंग के धागे में लपेट कर फीलपाँव के रोग के स्थान पर धारण करने से फीलपाँव शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। यह सिद्ध योग है।

सन्तान प्राप्ति के लिए प्रयोग

श्वेत आक की जड़ रवि पुष्य-नक्षत्र में विधि सहित प्राप्त करें, फिर उसी समय इस जड़ को साफ करके धूप आदि देकर गणपति के मूल मन्त्र से २१००० बार जप करके अभिमन्त्रि कर हवन आदि करें, तो यह जड़ सिद्ध होती है। फिर इस जड़ को वन्ध्या स्त्री की कमर में बाँध देने से सन्तान की प्राप्ति होती है। यह मेरा सिद्ध प्रयोग है।

वशीकरण तिलक

श्वेत आक की जड़ को काली बकरी के मूल में घिसकर माथे पर तिलक करें तो देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं। यह तन्त्र रवि-पुष्य नक्षत्र में ही प्रयोग करें।

श्वेत आक की कलम से गणपतिजी के यन्त्र-मन्त्र लिखकर धारण करने से गणपतिजी साधक की मनोकामना की पूर्ति करते हैं।

नजर दूर करने के लिए

जब किसी बच्चे को नजर लगी हो तो उसे दूर करने के लिए उस बच्चे को श्वेत आक की माला बनाकर पहनाने पर नजर का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है।

मोहिनी काजल

रविवार को पुष्य नक्षत्र में प्रातः के समय श्वेत आक की जड़ विधि से ले आयें और जड़ को साफ करके भेड़ के ताजे खून में भली प्रकार से पीसकर इसको रुई के साथ बत्ती बनायें और इसको दीपक में डालकर काजल तैयार करें; इस अद्भुत मोहिनी काजल को गणपतिजी के मूल मन्त्र से २१००० बार अभिमन्त्रित करके अपनी आँखों में लगाकर जिस युवती की अभिलाषा करते हुए उसके पास जायें, वही मोहित होकर सेज पर हाजिर होगी।

अग्नि दुर्घटना दूर करने के लिए

श्वेत आक की जड़ गणपति के मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने पास रखने से अग्नि से दुर्घटना की आशंका नहीं रहती।

वीर्य स्तम्भन

श्वेत आक की जड़ रवि पुष्य योग में प्राप्त करके, गणपतिजी के मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कमर में बाँधकर संभोग करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

मक्खियों को दूर करने के लिए

मघा नक्षत्र में श्वेत आक की जड़ को लाकर यष्टि मधु के साथ मिलाकर घर

या खेत में रख देने से शष्य नाशक हर तरह की मक्खियों और चूहों आदि का मुख बन्धन हो जाता है। यह योग डामर तन्त्र का है।

ज्वर नाश के लिए

रवि पुष्य योग में आक की जड़ उखाड़ कर कान में बाँधने से अनेक प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। यह प्रयोग प्रात:काल के समय बिना किसी व्यक्ति के टोके करें। इस प्रयोग में जड़ को गणपति के मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रयोग करें।

नेत्र रोग दूर करने के लिए

जिस नेत्र में पीड़ा हो, उसके विपरीत पैर के अंगूठे पर श्वेत आक के दूध से तर किया रूई का फाहा रखने से पीड़ा दूर होती है।

कण्ठ माला के लिए

लाल अपामार्ग की तरो-ताजापत्तियों की माला प्रतिदिन पहनने से कण्ठ माला रोग समाप्त हो जाता है।

ज्वर नाश के लिए

चिरचिटा पौधे की जड़ को उखाड़ करके सूती धागे में ७ बार लपेट कर रविवार के दिन हाथ में बाँध देने से विषम ज्वर नाश होता है।

बिच्छू का विष नाश के लिए

चिरचिटा कीजड़ को बिच्छू द्वारा काटे गये व्यक्ति को ७ बार दिखा देने अथवा काटे गये स्थान पर छुआ देने मात्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

दमा दूर करने के लिए

कार्तिक पूर्णिमा के दिन अपामार्ग के बीज आना भर लेकर उन्हें भली प्रकार साफ कर लें तत्पश्चात् एक पाव गाय के दूध में औटा करके खीर तैयार करें। रात को खुले स्थान पर चन्द्रमा की चाँदनी में अर्थात् ओस में रख दें। तब दूसरे दिन प्रात: सूर्योदय से पूर्व इस खीर का सेवन करने से दमा रोग से छुटकारा मिल जाता है।

प्रसव के लिए

प्रसव के लिए अपामार्ग की चार अंगुल जड़ लाकर गर्भिणी नारी की योनि में प्रविष्ट कराने से तत्काल प्रसव हो जाता है। यह डामर तन्त्र का सिद्ध प्रयोग है।

वशीकरण के लिए

अपामार्ग की जड़ उखाड़ कर उसकी कील बनाकर उसे ७ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में फेंक दिया जाये वह व्यक्ति वश में हो जाता है।

ॐ मदन कामदेवाय फट् स्वाहा

१. इस प्रयोग को पहले ४१००० बार जप करके सिद्ध करने के बाद ही प्रयोग में लायें।

२. अपामार्ग की जड़ की कपाल में तिलक लगाने से वशीकरण होता है। यह भी डामर तन्त्र का सिद्ध प्रयोग है।

वशीकरण तिलक

अपामार्ग की जड़ और गोरोचन को इकट्ठा पीसकर कपाल पर तिलक लगाने से लोक वशीभूत होते हैं। यह भी प्रयोग ऊपर कहे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके प्रयोग करें।

वेश्या वशीकरण के लिए

अपामार्ग पौधे के मध्य भाग की चार अंगुल परिमाण की लकड़ी लेकर उसे निम्न मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके वेश्या के घर में फेंक देने से वेश्या वशीभूत हो ज़ाती है। यह डामर तन्त्र सिद्धि प्रयोग है।

मोहिनी काजल

ॐ नमः पदमनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में में बैठके मोहूं सगरा कामराज करन्ता राज मोहूँ फर्श पे बैठा बनिया मोहूँ मोहूँ पनघट की पनिहार इस नगर की छत्तीस मोहूँ पवन बयार जो कोई मार। मार करन्ता आवे ताही नरसिंह वीर बांया पग के अंगूठा तेल धर गेर लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–अपामार्ग की टहनी लेकर उस पर रूई लपेटे कर बत्ती बनाकर एक मिट्टी के दीपक में चमेली का तेल डालकर जलायें। इसका काजल एकत्र करें, जब तक यह काजल की प्रक्रिया चलती रहे तब तक इस मन्त्र का जप करें।

जप अपने काजल का प्रयोग करना हो, तब १०१ बार इस मन्त्र से काजल को अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के पास काजल लगाकर जाये तो वह स्त्री दासी की तरह साधक का कार्य करेगी। यह सिद्ध प्रयोग है।

सर्प दूर करने के लिए

बारहसींगा के सींग को रविवार पुष्य नक्षत्र में ताबीज बनाकर पहने तो सर्प के काटने का खतरा नहीं होता है।

मच्छर आदि को दूर करने के लिए

बारहसींगा घर में स्थापित करने से सर्प तथा कृमि-खटमल घर छोड़कर भाग जाते हैं। यह प्रयोग रवि पुष्य नक्षत्र में ही करें। यह हमारा सिद्ध प्रयोग है।

सर्प दूर करने के लिए

बारहसींगा का सींग धूप की तरह प्रयोग करने से सर्प दूर हो जाते हैं।

दर्द दूर करने के लिए

बारहसींगा का सींग लेकर उसकी भस्म बनाकर प्रयोग करने से (खाने से) कमर का दर्द दूर हो जाता है।

प्रसव के लिए

प्रसव काल के समय में महिला के स्तनों पर बारहसींगा का सींग बाँध देने से बिना कष्ट के शीघ्र ही प्रसव हो जाता है।

शत्रु मुख स्तम्भन के लिए

१. रवि पुष्य नक्षत्र में चमेली की जड़ लेकर कण्ठ में धारण करने से सुरक्षा होती है।

२. यदि इस जड़ को मुख में धारण किया जाये तो शत्रु का मुख स्तम्भन हो जाता हे।

शत्रु पराजित करने के लिए

पुष्य नक्षत्र में लायी गयी चमेली की जड़ को ताबीज में डालकर धारण क़रने से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

उल्लू की पूँछ के पंख से सफलता

१. उल्लू की पूँछ के पंखों (परों) को किसी भी हिन्दी महीने के कृष्णपक्ष की अष्टमी, दशमी तथा अमावस्या को विधि सहित लायें और उनको धूपादि दे करके ताबीज में बन्द करके अपने दाँयें हाथ पर बाँधें तो हर प्रकार के कारोबार में आशा से अधिक लाभ (सफलता) मिले। यह सिद्ध प्रयोग है।

२. यदि कोई व्यक्ति उल्लू की पूँछ के परों को धूप की लकड़ी की आग में जलाकर राख बना करके उस राख को अपने मस्तक पर लगाये तो कारोबार में मालामाल होये।

मोहन प्रयोग

किसी भी महीने की सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा की प्रातःकाल के समय उल्लू के सिर के पंखों को लेकर सोने के ताबीज में डालकर अपने दाहिने हाथ पर बाँध ले तो साधक जिस स्त्री को देखेगा, वह मोहित हो जायेगी।

ज्ञान की प्राप्ति

कार्तिक के पहले पक्ष की पूर्णवासी के दिन ब्रह्म मुहूर्त उल्लू के पेट के परों को लाकर सोने के ताबीज में डालकर आदमी अपने दाहिने हाथ पर बाँध ले, पर औरत अपने बाँयें हाथ पर बाँधे तो उत्तम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

तैरने के लिए उल्लू का पंख

उल्लू के पंख और खाल रवि पुष्य नक्षत्र में प्राप्त करके एक लाल रंग के

कपड़े में बाँधें और तैरने के पहले इस कपड़े को कमर में बाँध लें तो चाहे कितना ही बड़ा दरिया क्यों न हो बिना थकावट के पार हो जायेगा।

वशीकरण के लिए

उल्लू सिद्ध करके उल्लू के बाँयें पंख को तोड़कर इस पंख का जरा करके इस पंख को किसी भी व्यक्ति को खाने-पीने वाली वस्तु में मिलाकर खिला दें, तो वह व्यक्ति गुलाम हो जाता है, जिस पर यह प्रयोग किया गया है।

दुष्ट ग्रह नाशक मन्त्र

उल्लू के पंख तथा पूँछ को **'ओं नमोः कालरात्रि'** मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित करके अपनी दाँयीं भुजा में बाँधने से दुष्ट ग्रहों का प्रभाव शान्त हो जाता है।

मिर्गी दूर करने के लिए

उल्लू के ग्यारह पंखों को एक-एक करके जलायें और इन पंखों के धुएं को एक नये सफेद कपड़े के टुकड़े में एकत्रित कर लें, तत्पश्चात् उस कपड़े की बत्ती बनाकर शनिवार के दिन प्रातः दाहिने हाथ में और रोगी महिला हो तो बाँयें हाथ में पट्टी बाँध देने से मिर्गी दूर हो जाती है। यह सिद्ध प्रयोग है।

घर सूना करने के लिए

उल्लू के तीन पंखों को अपने बाँयें हाथ में पूर्वोक्त **'ओं नमो कालरात्रि'** मन्त्र से १००८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के घर में कालरात्रि को डाल दें, तो वह घर शीघ्र ही सूना हो जाता है।

अदृश्यांजन के लिए

मंगलवार के दिन उल्लू के पंख जलाकर उसमें बराबर भाग, कुंकुम और कस्तूरी मिलाकर पूर्वोक्त मन्त्र से १००८ बार अभिमन्त्रित करके एक गुटिका तैयार कर लें, फिर इस गुटिका को आँखों में आँजने से अदृश्यीकरण शक्ति प्राप्त होती है।

उल्लू के पंखों से मोहन प्रयोग

किसी भी महीने के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को आधी रात के समय उल्लू की गर्दन के निचले हिस्से से पाँच पंख नोंच लें, फिर उसी मास की पूर्णिमा को आधी रात के समय स्नान करके बहती हुई नदी के तट पर जाकर गीले वस्त्रों से ही नदी के तट पर बैठकर पंखों को इस मन्त्र से जल पढ़कर १००८ बार पंखों पर छींटे मारने से पंख अभिमन्त्रित हो जायेंगे। उक्त प्रयोग जब पूरा हो जाये तब इन पंखों को साफ कपड़े में लपेट कर घर चला आये, फिर अगले मंगलवार या शनिवार के दिन इन पंखों को सोने के ताबीज में डालकर पीले रंग का रेशमी डोरा ताबीज में डालकर दाँयीं भुजा में धारण करने से मोहिनी शक्ति की प्राप्ति होती है।

ओं नमः उलूकाय। नमः लक्ष्मी वाहनाय। नमः शिवाय। ओं जन मन। मोहिनी शक्ति। कामाक्षा देवी नमः श्री फट् स्वाहा।

रक्षा के लिए

मूँज घर में रखने से रक्षा होती है।

व्याधि नाश के लिए

मूँज को धारण करने से व्याधि का नाश होता है।

श्वेत कनेर के फूल

श्वेत कनेर के फूल गौरी को चढ़ाने से गौरी अत्यधिक प्रसन्न होती है। इसलिए श्वेत कनेर के फूल (पुष्प) को गौरी-पुष्प भी कहते हैं। इस पुष्प से गौरी माँ की पूजा करने से गौरी माँ शीघ्र प्रसन्न होकर मन चाहा वरदान देती है।

श्वेत कनेर की कील

हस्त नक्षत्र में कनेर की जड़ की तीन अंगुल की कील लेकर कुम्हार के घर में गाड़ देने से कुम्हार के द्वारा बनाये गये सभी बर्तन नष्ट हो जाते है।

आकर्षण मन्त्र

ओं नमः आदिरुपाय अमुकस्य आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–इस मन्त्र को काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर सफेद कनेर की कलम से लिखें, (पूरे नाम सहित लिखें) जिसका आकर्षण करना हो और ताबीज में डालकर खैर की लकड़ी की आग पर तपायें तो एक हजार किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति को भी फौरन घर की याद आयेगी, उसे तब तक चैन नहीं मिलेगा, जब तक वह घर नहीं आ जाता।

लाल कनेर की कील

मृगशिरा नक्षत्र में लाल कनेर की कील ७ अंगुल लम्बी लेकर, निम्नलिखित मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके, भूमि में दबा देने से वशीकरण होता है। अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जपें जिसे आकर्षित करना है।

ओं अमुक हूँ हूँ स्वाहा।

काली कनेर के फूल

भगवती काली को चढ़ाने से शनिग्रह की शान्ति होती है तथा भगवान् काली शीघ्र प्रसन्न होती हैं।

काले कनेर की जड़

काले कनेर की जड़ रवि पुष्य नक्षत्र में धारण करने से भूतादि दूर हो जाते हैं।

मारण के लिए

मारण के हवन के लिए काले कनेर के पुष्प भी बहुत प्रभावकारी है।

लकवा दूर करने के लिए

किसी भी रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के समय एकदम सम्पूर्ण काले घोड़े की नाल निकलवा कर उसकी अंगूठी या कड़ा बनवाकर रोगी को पहना देने से उसे जीवन भर लकवे (पक्षाघात) का प्रकोप पुनः न होगा।

बाधा दूर करने के लिए

काले घोड़े की नाल अंगूठी शनि पुष्य योग में विधि सहित बनाकर पहने तो इस तरह प्रयोग करने से भाग्य की बाधा स्वतः ही दूर हो जाती है तथा हर कार्य में पूरी सफलता मिलती है।

पथरी (अश्मरी) के लिए

पथरी के रोगी को काले घोड़े की नाल की अंगूठी पुष्य नक्षत्र में बनाकर दाहिने हाथ की बीच वाली अंगुली में धारण करने से पथरी का दर्द दूर हो जाता है।

ऊपरी शिकायत दूर करने के लिए

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल प्राप्त करके द्वार पर लटकाने से ऊपरी शिकायत दूर हो जाती है।

शनि दूर करने के लिए

काले घोड़े की नाल की अंगूठी शनि पुष्य नक्षत्र में बनाकर पहनने से शनिग्रह का दुष्ट प्रभाव दूर होता है।

भोजपत्र की रक्षा के लिए

भोजपत्र को ताबीज में इष्टदेव का मन्त्र लिखकर धारण करने से सभी बाधायें शान्त हो जाती है।

भोजपत्र की धूप

भूत-प्रेत आदि की पीड़ा दूर करने के लिए भी भोजपत्र की धूप लाभकारी है।

अनार का बांदा

अनार के बांदा को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में घर में स्थापित या धारण करें तो धन भरपूर रहता है।

अनार का बांदा

ज्येष्ठा नक्षत्र में अनार का बांदा प्राप्त करके घर के दरवाजे के ऊपर स्थापित कर देने पर भूत-प्रेतादि घर में प्रवेश नहीं करते।

पति वशीकरण के लिए

अनार के वृक्ष की जड़, छाल, पत्तों को लेकर श्वेत सर्षप सहित पीसकर निम्नलिखित मन्त्र से १०१ बार अभिमन्त्रित करके यदि नारी अपने अंगों में लेपन करके पति के पास जाये तो पति दास की तरह रहेगा। डामर तन्त्र से।

ओं मदन कामदेवाय फट् स्वाहा।

सन्तान के लिए

अनार के पेड़ को दूध के साथ सिद्ध करके उसमें घी मिलाकर तदनन्तर ऋतुकाल में इस औषधि का सेवन करने से तथा तदुपरान्त पति के साथ सहवास करने से मृतवत्सा नारी से सन्तान जन्म लेती है, जो दीर्घजीवी होती है (डामर)।

ग्रहदोष दूर करने के लिए

ज्येष्ठा नक्षत्र में अनार का बांदा लेकर बालक के ग्रह द्वार पर बाँध देने से उसके सब प्रकार के ग्रहदोष शान्त हो जाते हैं।

१. काले गुलाब का पौधा घर में लगाकर साफ पानी चढ़ाने से तथा इसकें दर्शन करने से शनि ग्रह शान्त होता है। यह उर्दू की काली किताब का प्रयोग है।

२. काले गुलाब की जड़ तथा पुष्प धारण करने से शनि ग्रह का प्रकोप दूर होता है। यह प्रयोग सिद्ध है।

रोग नाश के लिए

नागदौन की जड़ को गाय के दूध के साथ प्रयोग करने से सभी तरह के रोगों का नाश होता है।

दरिद्रता नाश के लिए

स्वर्ण के तावीज में नागदौन की जड़ डालकर घर में स्थापित करने से दरिद्रता का नाश होता है।

नागदौन की कलम

नागदौन की जड़ की कलम से हस्ताक्षर करने से भी दरिद्रता का नाश होता है।

अकाल मृत्यु के लिए

चन्द्रग्रहण के समय नागदौन की जड़ प्राप्त करें। इस जड़ को चाँदी के ताबीज में डालकर नीले धागे से बाँधकर कण्ठ पर धारण करने से अकाल मृत्यु दूर होती है।

वशीकरण के लिए

रवि पुष्य नक्षत्र में नागदौन की जड़ के १०८ मन बनाकर लाल धागे में डालकर धारण करने से प्रबल वशीकरण होता है तथा एक-एक दाना दोनों कानों तथा नागदौन की जड़ अंगूठी की तरह धारण करने से वशीकरण होता है।

नागदौन का पौधा

नागदौन का पौधा घर में लगाने से सर्प घर में प्रवेश नहीं करते तथा न ही सर्प का भय रहता है।

नागदौन की माला

नागदौन की जड़ की माला बनाकर इसमें नागदेवता का मन्त्र जपने से नागदेवता शीघ्र सिद्धि प्रदान करते हैं।

मेंहदी की छाल

मेंहदी की टहनी की छाल खाने से रक्त साफ हो जाता है तथा मेंहदी की छाल पथरी को भी दूर करती है।

क्रोध शान्ति के लिए

मेंहदी की जड़ तथा बीजों को ताबीज में भरकर कण्ठ में धारण करने से क्रोध शान्त होता है।

ग्रह दूर करने के लिए

ग्रह दूर करने के लिए मेंहदी की जड़ को धारण करें।

मासिक स्राव बन्द करने के लिए

पाषाणभेद की मेंहदी में मिलाकर हाथों पर लगाने से गर्भ नहीं ठहरता, साथ ही मासिकस्राव भी बन्द हो जाता है।

कीटाणु से रक्षा के लिए

जन्म लेने के तुरन्त पश्चात् शिशु के शरीर पर मेंहदी का लेप करके कुछ समय पश्चात् नहलाने से उसकी त्वचा कीटाणु रक्षक बन जाती है और उस पर रोग का प्रभाव नहीं होता।

ज्वर नाश के लिए

मेंहदी धारण करने से ज्वर का नाश होता है।

शोक नाश के लिए

अशोक को घर में लाने से शोक का नाश होता है।

सफलता के लिए

अशोक का पत्ता सिर पर धारण करने से कार्य में सफलता मिलती है।

देवी प्रसन्न करने के लिए

अशोक के वृक्ष पर जल चढ़ाने से देवी प्रसन्न होती है।

लाभ के लिए

अशोक वृक्ष के ११ बीज रवि-पुष्य नक्षत्र में चाँदी के ताबीज में डालकर धारण करने से हर कार्य में लाभ प्राप्त होता है।

रोग नाश के लिए

अशोक वृक्ष की छाल को २१ दिन उबाल करके पीने से स्त्री के सभी रोगों का नाश होता है।

चिन्ता के लिए

प्रात:काल के समय अशोक के ११ पत्तों को चबाने से कुछ दिनों में चिन्ता दूर होगी।

धन के लिए

अशोक की जड़ विधिवत् प्राप्त करके धारण करने से धन-लाभ होता है।

दारिद्रय नाश प्रयोग

अशोक वृक्ष के फूल को पीसकर उसमें शहद मिलाकर प्रयोग करने से दारिद्रय नाश होता है।

अशोक का बांदा

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में अशोक का बांदा प्राप्त करके पीसें और पी जायें तो व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

धन के लिए

अशोक वृक्ष की जड़ का एक छोटा-सा टुकड़ा लेकर किसी पवित्र स्थान पर घर में रखकर धूप-दीप देते रहने से घर में धन की प्रचुरता रहती है।

अशोक की कलम

अशोक की कलम से देवीमन्त्र लिखकर पास रखने से शीघ्र सिद्धि मिलती है।

भूख दूर करने के लिए

तुलसी की जड़, कमल के बीज, आँवला, अपामार्ग का दाना इन चारों वस्तुओं को बारीक करके मटर के दाने के बराबर की गोली तैयार करके रख लें, कुछ दिनों तक एक गोली गाय के दूध के साथ प्रतिदिन लेने से भूख और प्यास की इच्छा समाप्त हो जाती है।

विषम ज्वर दूर करने के लिए

एक सप्ताह तक काली तुलसी की पत्तियों की माला गले में धारण करने से कभी कम, कभी अधिक आने वाला विषम ज्वर शान्त हो जाता है।

वातज ज्वर के लिए

सोमवार के दिन तुलसी के पौधे को अभिमन्त्रित करके मंगलवार की प्रातः जड़ से उखाड़कर लाल सूत में बाँधकर शिखा में बंधवा देने से वायु के विकार के कारण पैदा हुआ बुखार नष्ट हो जाता है।

ओं कुरु बन्दे अमुकस्य (नाम) ज्वर नाशय ह्रीं स्वाहा।

उत्तम पति के लिए

प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर श्रद्धा-भाव से विवाह की इच्छुक कन्या

माँ पार्वती देवी के चित्र के समक्ष घी का दीपक प्रज्वलित करके तुलसी की माला के १०१ मनकों की २१ माला का जप नियमित रूप से करें तो उत्तम पति की प्राप्ति होती है।

हे गौरि शंकरर्द्धिगिनौ यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा माँ कुरु कल्याणि कान्त कान्ता सुदुर्लभाम्।।

पशु-पक्षी और शत्रु की गति अवरुद्ध करने के लिए

केसर की स्याही द्वारा अनार की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर शत्रु के नाम के साथ एक रास्ता बनाये और उस पर नीला धागा फैलाये, साथ ही नीचे लिखे मन्त्र को सिद्ध करके इस यन्त्र पर १०१ बार पढ़े तो पशु-पक्षी और शत्रु की गति अवरुद्ध होये।

ओं सह बलेशाय स्वाहा।

प्रसव पीड़ा दूर करने के लिए

प्रसव पीड़ा से पीड़ित महिला की केसर पर नीम की जड़ बाँधने से तुरन्त पीड़ा से राहत होती है और प्रसव सुगम हो जाता है।

सर्प विष दूर करने के लिए

चैत्र मास की मेष संक्रान्ति में मसूर की दाल के सथ नीम की पत्तियों को खाने से एक वर्ष तक विषैले सर्प का भी विष नहीं चढ़ता।

बिच्छू के विष को दूर करने के लिए

नीम के पत्ते और कड़वा तेल दोनों को मिलाकर खूब औटावें और उसी भाप से सेंकने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

पेट के कीड़ों को दूर करने के लिए

नीम के फल को पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

मासिक धर्म के लिए

नीम की सात पत्तियाँ लेकर अदरक के रस में पीसकर पिलाने से नीम की पत्तियों को थोड़े पानी में ही पकाकर ठोड़ी के नीचे गुनगुना ही बाँधने से मासिक धर्म खुल जाता है।

मारण के लिए

अमुक शब्द की जगह पर शत्रु का नाम लेकर चार अंगुल परिमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उस पर शत्रु के सिर का बाल लपेट कर उसी से शत्रु का नाम लिखें, तत्पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम को चिता के अंगार पर धूप देवें, इस प्रकार तीन

रात या सात रात तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्णपक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करें तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दें नीचे लिखित मन्त्र का प्रतिदिन १०००१ बार जप करें।

मारण मन्त्र–ओं नमः काल संहाराय अमुक हन-हन। क्री हुँ फट् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

कलह के लिए

विशाखा नक्षत्र में नग्न और विमुख होकर नीम के पेड़ की उत्तरगामी जड़ को मुख द्वारा काट लायें, इस जड़ को जिस घर में फेंक दिया जाये वहाँ सदैव विवाद और कलह होने लगती है। इस जड़ को दूर फेंक देने से कलह शान्त होती है।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु को। राजा प्रजा मोहू। ब्राह्मण बणिया मोहू। अकाश पताल मोहू। दस दिशाए मोहू। जो रामचन्द्र। परमणियां अमुक को। अमुक से मोहे। गुरु की शक्ति। मेरो भक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

विधि–रात्रि के समय लाल वस्त्र बिछाकर उस पर सियारसिंगी को रख दें और सामने दूध तथा मिठाई भोग के लिए रख दें। दीपक और अगरबत्ती जलाकर उपरोक्त मन्त्र का २१००० जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध होगा।

जब इस सिद्ध मन्त्र का प्रयोग करना हो, तो इस सिद्ध सियारसिंगी को कण्ठ में धारण करके श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करके चौराहे की धूल की चुटकी उठाकर इस मन्त्र से १००८ बार अभिमन्त्रित करें, अमुक के स्थान पर उन दोनों का नाम उच्चारण करें, जिन्हें मोहित करना हो। फिर वह चुटकी की धूल जिसके सिर पर डाल दी जायेगी वही मोहित होकर गुलाम की तरह कार्य करेगा।

पति वशीकरण मन्त्र

ओं ह्रीं भोगप्रदा भैरवी मातंगी अमुक।

विधि–किसी पात्र में सियारसिंगी रख के तेल का दीपक जलाकर तथा भोग के लिए फलादि रखकर इस मन्त्र का २१ दिन में ४१०००० जप करें, अमुक शब्द के स्थान पर पति का नाम उच्चारण करें, इस तरह यह प्रयोग सिद्ध होगा।

जब तक इस सियारसिंगी को स्त्री अपने पास रखेगी तब तक उसका पति उसका मुरीद (गुलाम) रहेगा।

विवाह के लिए

ओं क्ले मम (अमुक) कार्य सिद्धि। करि करि जनरंजिनि स्वाहा।

विधि–यह प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ करें, लाल आसन पर सियारसिंगी को

रखकर सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक जलाकर तथा अपने पास मिठाई और फल भोग के लिए रखकर इस मन्त्र का ५१००० जप करने पर कार्य सिद्ध होता। अमुक के स्थान पर अपना नाम उच्चारण करें, इस तरह ११ दिन प्रयोग से शीघ्र ही मनोवांछित स्थान पर विवाह हो जाता है।

मतभेद (गृहस्थ बाधा) दूर करने के लिए

ओं मदने मदने देवी मामलियम संगे देह देह श्री स्वाहा।

विधि–लाल वस्त्र पर सियारसिंगी को रखकर अगरबत्ती व घी का दीपक जलाकर भोग आदि रखकर इस मन्त्र का ११ दिन में २१००० जप करें तो, गृहस्थ बाधा दूर होगी।

ग्रह दोष दूर करने के लिए

गोरोचन को धारण करने से ग्रह दोष दूर होते हैं।

मिर्गी दूर करने के लिए

गोरोचन २ मासे गुलाबजल से दिन में ३ बार ७ दिन तक सेवन करें तो मिर्गी दूर होगी।

वशीकरण के लिए

गोरोचन का तिलक करने से वशीकरण होता है।

धन वृद्धि के लिए

गोरोचन को धन स्थान पर रखने से धन की वृद्धि होती है।

युद्ध में विजय के लिए

आर्द्रा नक्षत्र में वट का बांदा प्राप्त कर धारण करने से युद्ध में विजय की प्राप्ति होती है।

मैथुन के लिए

अश्विनी नक्षत्र में वट का बांदा ग्रहण कर कमर में धारण करने से मैथुन शक्ति घोड़े की भाँति तेज हो जाती है।

दुर्भाग्य के लिए

ज्येष्ठा नक्षत्र में नीम का बांदा प्राप्त कर जिसके घर में डाल देंगे, वहाँ दुर्भाग्य प्रारम्भ हो जायेगा।

पीपल का बांदा

१. अश्विनी नक्षत्र में पीपल का बांदा प्राप्त करके गाय के दूध के साथ सेवन करने से गर्भ की प्राप्ति होती है।

२. पीपल के बांदे को गृह में स्थापित करने से हानि नहीं होती।

पीपल की कील

अश्विनी नक्षत्र में पीपल की जड़ की दस अंगुल लम्बी कील लेकर किसी के द्वार पर गाड़ देने से वह लम्बी यात्रा पर चल देगा।

ज्वर दूर करने के लिए

पुष्य नक्षत्र में पीपल की जड़ का दातुन बनाकर करने से ज्वर दूर होता है।

कामना के लिए

पीपल के पत्ते पर पुत्रकामना के लिए यन्त्र लिखा जाता है।

प्रेत सिद्ध करने का मन्त्र

ओं एं ह्रीं नमः ऊँ हं धन धन कुरु कुरु स्वाहा।

शीघ्र कर्म के पश्चात् बचा हुआ जल उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पीपल के वृक्ष पर नित्य प्रति चढ़ाता रहे। इस तरह ६ माह तक प्रयोग करने से वहाँ प्रेत प्रकट होगा, तब उससे इच्छानुसार वर माँग लेवें तथा भले काम के लिए प्रयोग करे।

बिल्ली द्वारा काटने पर

बिल्ली द्वारा काटने पर काले तिलों को पानी के साथ पीसकर लेप कर दें, साथ ही पोदीना के कुछ पत्ते चबाने से बिल्ली का विष दूर होगा।

तिल का हवन

शान्ति कार्य के लिए तिल का हवन शुभ माना गया है।

भूत-प्रेत दूर करने के लिए

तगर को ताबीज में डालकर पहनने से भूत-प्रेत दूर होते हैं।

मक्खियाँ दूर करने के लिए

तगर को हरिताल के साथ पीसकर इसका एक मक्खी का रूप दें, इस बनी हुई मक्खी को घर के भीतर रख दें, इसकी गन्ध से सभी मक्खियाँ घर से निकल जायेगी।

पृथ्वी में छिपा धन देखने के लिए

काले धतूरे की जड़ व छितवन की जड़ प्राप्त करें, सिर के बाल बिखेर के घर में लाकर इनकी छाल लेकर ताबीज में डालकर मुख में रख लें। इस तरह प्रयोग करने से आपको पृथ्वी में छिपा धन दिखाई देगा। यह प्रयोग कालरात्रि को ही करें।

स्वप्नदोष दूर करने के लिए

रविपुष्य नक्षत्र में काले धतूरे की जड़ ११ तोले का टुकड़ा लेकर ताबीज में भरकर कमर पर बाँधने से असमय में स्वप्न दोष नहीं होता।

गर्भ टोटका

कुँआरी कन्या के हाथ से काते गये सूत से सिर से पैर तक नापकर बराबर के ४१ टुकड़े कर लें, उन्हें भली प्रकार बाँटकर मजबूत कर दें, उसी सूत में काले धतूरे की जड़ के ४१ टुकड़ों को बाँधकर महिला अपनी कमर में प्रसव होने तक धारण करें तो गर्भपात होने का भय नहीं रहेगा तथा समय पर ही शिशु का जन्म होगा।

सर्प दूर करने के लिए

जहाँ पर मोर के पंख होते हैं। वहाँ पर सर्प प्रवेश नहीं करता।

पुत्र प्राप्ति के लिए

मोर के पंख सितारे टिक्की को काटकर खरल में पीस कर दो मास तक प्रयोग करें तो पुत्र पैदा होता है।

ताबीज के लिए

मोर का पंख ताबीज लिखने के काम आता है।

विजय के लिए

१. सूअर का दाँत कण्ठ में धारण करने से विजय की प्राप्ति होती है।

२. तथा इसको धारण करने से भूत-प्रेतादि दूर हो जाते हैं।

स्वप्न दोष के लिए

सूअर का दाँत रविपुष्य योग में धारण करने से स्वप्न दोष नहीं होता।

वीर्य स्तम्भन के लिए

यदि सूअर का दाँत कमर पर बाँधकर सम्भोग किया जाये तो वीर्य स्तम्भन होता है।

उच्चाटन के लिए

लाल रत्ती की जड़ तथा इसका पौधा क्रूर दिवस शनिवार के दिन जिसके आँगन में लगा दिया जाये तो शीघ्र ही उस आँगन के निवासियों का उच्चाटन होगा।

प्रसव के लिए

१. रत्ती की उत्तरगामी जड़ को खोदकर लायें और गर्भिणी नारी के कमर में बाँध दें, तो तत्काल प्रसव होगा।

२. रत्ती की बेल के उत्तर दिशा में लगे फल लेकर गर्भिणी नारी के केशों में बाँधने से सुख से प्रसव होता है अथवा उसी फल को पीसकर योनि में लेप करने से भी सुख से प्रसव होता है।

३. पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार को गुंजा फल के पौधे की जड़ लाकर नीले सूत से एक को कमर में और दूसरी जड़ को सिर में बाँध देने से तत्काल प्रसव हो जाता है।

वशीकरण के लिए

गुंजा की जड़ और पंचमल को एकत्र करके मन्त्र पाठ करके जिस स्त्री को दिया जायेगा, वही वशीभूत होगी।

रक्त गुंजा कल्प

गुंजा की गति कहत हौं कौतुक चरित अपार।
गौरी ते शिव कहत है, सर्व कल्प को सार।।१।।
मारण तारण वशकरण राजा मोहन अंग।
उच्चाटन इस करत हैं वचन सिद्ध तलि भंग।।२।।
भूत प्रेत ग्रह डाकिनी यक्ष वीर वेताल।
गुंजा की जड़ के सुनौ कौतुक माया जाल।।३।।
बहुत चरित अगणित कहै सकल सिद्धि की खान।
जो चाहै सोई करै साधन के वरदान।।४।।
शिव आनन्द यह गुंज है जुगत गुप्त अरु ज्ञान।
या सत् गुरुसों भेद लखि साधो सन्त सुजान।।५।।
अव याको साधन कहौं यथा योग्य उपदेश।
जो साधै तो सिद्ध है कसर नहीं लवलश।।६।।
पुष्य होय आदित्य कूँ जब लीजै यह मूल।
शुक्रवारी रोहिणी ग्रहण होय अनुकूल।।७।।
कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जु होय।
चौदश स्वाती शतभिषा पुन्योकू ले सोय।।८।।
अर्द्धनिशा कारज करे मन की संज्ञा खोय।
धूप दीप कर लाइये धरै दूध सों धोय।।९।।
जो काहू नरनारिकू विष कोई को होय।
विष उतरे सब तुरन्त ही जड़ी पिलावे धोय।।१०।।
जो घिस लावै भाल में सभा मध्य नर जाय।
मान मिलै अस्तुति करें जो सब ही पूजे पाँय।।११।।
हाँजी हाँजी सब करें जो वह कहै सु सांच।
एक जड़ी की जुगुतिसूं, सबै नचावै नाच।।१२।।
ताँबे मूल मढ़ायकै, बाँधे कटिसू सोय।
नवे मास वा नारिके, निहचै बेटा होय।।१३।।
ऋतुवनती के रक्तसों, अंजन आँजै कोय।
देखत भाजै सैन सब, महा भयानक होय।।१४।।

काजर हू घिसि आँजिये, मोहे सब संसार।
गाली दे दे ताड़िये, तऊ लगा रहे लार॥१५॥
मधुसूं अंजन आंजिये, दिखे वीर बेताल।
जोइ मंगावे वस्तु कूं, लै आवे सो हाल॥१६॥
जो घिसकै लेपन करै, दूध संग सब अंग।
भूत प्रेत सब अक्षय गुण, लगे फिरैं, सब संग॥१७॥
घिसके रुई लगाइये, पाकि धरै बनाय।
फेर भिजावे तेल में, दीपक देय जलाय॥१८॥
करो अचम्भो सबन में, घर समान दरशाय।
सात महल के बीच सूं, लावे पलंग उठाय॥१९॥
जो घृत में घिसकै करै, लेप मूत्र नर ताय।
भोग शक्ति बाढ़ै अमित, मद बहु मोद बढ़ाय॥२०॥
अजा मूत्र में लगडिके (लेप) दे जो हाथ।
करे दूर की बात वो, रहे यक्षिणी साथ॥२१॥
गोरोचन के संग घिस, लिखिये जाको नाम।
मृत्यु होय बाकी तुरत, नहीं वैर की काम॥२२॥
लिंग पत्र के अर्क सूं, घिसिये केवल नाम।
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखत नसैं तमाम॥२३॥
स्याउ संग वा रगड़िकै, तलुआ तले लगाय।
आँख चीम के पलक में, सहस्र कोस उड़ जाय॥२४॥
जो घिस आँजै पीस के बन्दी छोड़ कहाय।
बंदि पड़े घूटे सभी, बिनही किसे उपाय॥२५॥
जो गुलाब संग याहि घिस, नाड़ी लेप कराय।
घड़ी चारकूं जी, परै, मुरदा सहज सुभाय॥२६॥
फिर अंकोल के तेल में, घिसि के आँजे कोय।
धन दीखै पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय॥२७॥
जो बाधिनी के दूध में, घिस चुपरै सब अंग।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, बढ़कर जीते जंग॥२८॥
घिसकै तिल के तल में, मर्दन करै शरीर।
दीखै सब संसार कूं, महावीर रणधीर॥२९॥
जो अलसी के तेल में, घिसिये सहत मिलाय।
कोढ़ी के लेपन करें, कंचन तन हो जाय॥३०॥

जो कोई संसार में, अन्धा आंजे कोय।
सात दिवस पर आंजिये, दृष्टि चौगुनी होय।।३१।।
श्याम नगद संक रगड़िकै, बीसों नख लिपटाय।
जो नर होय कुसारगी, देखत, वश हो जाय।।३२।।
कस्तूरी सूं, आंजिये, प्रातः समय लौलाय।
मौत जु लखिये सबन की, काल पुरुष दरसाय।।३३।।
गंगा जलसूं आँजिये, दोनों नेत्रन माहिं।
बरषा बरसै भूल की, यामे संशय नाहिं।।३४।।
जो आँजै निज रक्त सूं, भरके दोऊ कोय।
देखै तीनों लोक को अपनी आँसन सोय।।३५।।
जो आँजे निज मूत्र सूं, खुलै रागिनी राग।
जो घिस पीवै दूध सूं, हाये सिद्ध सो भाग।।३६।।
रक्त गुंज यह कल्प है, सूक्षम कह्यो बनाय।
जो साधै सो सिद्ध हो, जामें संशय नाय।।३७।।

श्वेत गुंजा

रत्ती लता जाति का पौधा है, जो प्रायः वृक्षों झाड़ियों और बाडों पर लिपटा होता है। वर्षा ऋतु में इसकी बेल उगती है, जिसके पत्ते इमली के पत्तों जैसे होते हैं और गुलाबी रंग के पुष्प होते हैं। चैत्र मास में इसके बीज पक जाते हैं और लता सूख जाती है। इसके बीज को रत्ती कहते हैं जो सोना आदि तोलने के काम में लायी जाती है। यह कम ही मिलती है। यह दो प्रकार की होती है।

१. लाल रत्ती, २. सफेद रत्ती।

यहाँ पर सफेद रत्ती के प्रयोग का ही वर्णन किया गया है।

विष दूर करने के लिए

रत्ती की जड़ को पानी में धोकर उस पानी को विष के रोगी को दें, तो विष दूर हो जाता है।

पुत्र प्राप्ति के लिए

रत्ती की जड़ को कमर में धारण करके भोग करने से पुत्र प्राप्त होता है।

गुप्त शक्तियों के दर्शन के लिए

रत्ती की जड़ को शहद के साथ पीसकर अंजन की भाँति प्रयोग करने से गुप्त शक्तियों का मर्दन होता है।

कोढ़ दूर करने के लिए

रत्ती की जड़ का चन्दन की भाँति तिलक करने से आकर्षण होता है।

रक्त चन्दन

हिन्दी लाल चन्दन, बंगाली रक्त चन्दन, गुजराती रताजल, अंग्रेजी रैड सैडल वुड, फारसी संदल सुर्ख, अरबी संदले अहमर, पंजाबी चनन।

चन्दन के वृक्ष होते हैं, जो प्राय: आसाम में पाये जाते हैं। इसकी लकड़ी भारी होती है, जो पानी में डूब जाती है। रक्त चन्दन की लकड़ी लाल रंग की सुगन्धित होती है। यह प्राय: सब पंसारियों से मिल जाता है।

चन्दन का गुण शीतल है, जो ठण्डा, हल्का दिल को प्रसन्न करने वाला सुगन्धित और सुन्दरता वर्धक है। चन्दन कई रोगों को शान्त करता है, जैसे—तृषा, थकान, रक्त-विकार, खफकान, सफरावी दस्त, सिरदर्द, वात, पित्त, कफ, कृमि और वमन आदि। इसका गुण शरद खुश्क है।

चन्दन दो प्रकार का होता है। १. श्वेत चन्दन, २. रक्त चन्दन। यहाँ रक्त चन्दन के ही प्रयोग दिये गये हैं।

गीदड़ सिंगी

सियारसिंगी (शृगाल शृंग) गीदड़ से प्राप्त होती है। जिस सियार की आयु बहुत अधिक होती है, उसके सिर पर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है, जिसे गीदड़सिंगी कहा जाता है। जब उस गीदड़ के सिर पर यह सींग पैदा होती है, तब वह अपना शिकार नहीं कर सकता। जब कभी इसका शिकार, इससे बचकर किसी वृक्षादि पर चढ़ जाता है, तब वह गीदड़ उस शिकार की तरफ देखता है और उसका शिकार स्वत: ही भूमि पर गिर पड़ता है, जिसे खाकर गीदड़ अपनी भूख मिटाता है। ऐसे गीदड़ की शिकारी लोग पहचान कर लेते हैं और अवसर पाकर उस गीदड़ को मार लेते हैं तथा उसकी सींग वाली गाँठ निकाल लेते हैं। जिस व्यक्ति के पास अथवा घर में यह सिंगी होती है, उसको विजय और सफलता प्राप्त होती है तथा संकट दूर हो जाते हैं।

सियारसिंगी को कण्ठ में धारण करने से साधना बिना बाधा के पूर्ण होती है। तान्त्रिक ग्रन्थों में कहा गया है, कि इसके बालों को काटना नहीं चाहिये, इस तरह करने से इसका प्रभाव नष्ट हो जाता है।

सियारसिंगी को चाँदी अथवा ताँबे की डिबिया में रखकर इसमें असली सिन्दूर, लौंग, कपूर, चावल, उड़द के कुछ दाने तथा इलायची आदि रख के इसका गणपति जी के मूत्र मन्त्र से अभिमन्त्रित करके इस तरह प्रयोग करें।

धन प्राप्ति के लिए

आप ऐसे बरगद का वृक्ष ढूंढ़े, जिसके नीचे एक छोटा-सा बरगद का पौधा उगा हो उसको सिद्ध योग में प्राप्त करके घर में लाकर धूप-दीप करें तो अन्न तथा धन की बहुत प्राप्ति होगी।

एरण्ड वशीकरण मन्त्र

ओ नमो काल भैरव काली रात। काला आया आयी रात। चलै कतार बाधूं। तूं बावन वीर। पर नारी सो राखै सीर। छाती धरिके बाको लाओ। सोती होय जगा के लाओ। बैठी होय उठा के लाओ। शब्द साचा पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु का।

जब रविवार को दीपावली पड़े तो बाँयें हाथ से मन्त्र जपते हुए एक झटके से लाल एरण्ड को उखाड़ लायें, फिर इसकी जड़ के २१ टुकड़े करके इस मन्त्र से २१०० बार अभिमन्त्रित करके इन टुकड़े की माला तैयार करें, इस सिद्ध माला का जिस स्त्री से स्पर्श करवा देंगे, वही मोहित होकर सेज पर हाजिर होगी।

दिन में तारे देखने के लिए

सफेद फूल वाले ढाक के वृक्ष पर चढ़ करके भरी दोपहर में भी आकाश को देखने से सितारे दिन में दिखाई पड़ेंगे।

झगड़े के लिए

ढाक की लकड़ी की जड़ सहित चूर्ण रवि पुष्य नक्षत्र में ला करके जिन दो व्यक्तियों के मध्य डाला जायेगा उनमें झगड़ा हो जायेगा।

रोग दूर करने के लिए

पलाश की लकड़ी की भस्म और हरिताल के चूर्ण को इकट्ठा मिलाकर केले के पेड़ के रस के साथ पीसकर रोगयुक्त स्थल पर लेपन करने से समस्त रोग साफ हो जाते हैं।

ज्वर दूर करने के लिए

लाल पलाश की जड़ को सूती धागे में भुजा पर बाँध देने से ज्वर दूर होता है।

वन्ध्या होने के लिए

ढाक के बीज शहद व घी में मिलाकर ऋतुकाल में योनि में रखने वाली युवती वन्ध्या हो जाती है।

पुत्र प्राप्ति के लिए

ढाक (पलाश) के नीचे कोमल पत्ते किसी महिला के दूध में पीस करके बाँझ महिला मासिक धर्म को ४ दिन स्नान करके खा लेवे तो पुत्र की प्राप्ति होती है।

चैतन्य के लिए

नदी, तालाब, पोखर आदि किसी में कोई व्यक्ति डूब जाये और निकलने के उपरान्त वह व्यक्ति मृत के समान दृष्टि गोचर हो, दर्शकगण उसे मरा समझकर निराश हो गये हों, तब डूबने वाले व्यक्ति को इमली की ताजा पत्तियों के रस से भली प्रकार तर करके तेज धूप में रोगी को लिटा दें, तो रोगी व्यक्ति चैतन्य हो जाता है।

बेरी का बांदा

१. स्वाती नक्षत्र में बेरी का बांदा ग्रहण करके देवता से निवेदन करने से देवता मनोकामना पूरी करते हैं।

२. स्वाती नक्षत्र में बेरी का बांदा धारण कर जिस किसी के पास जाकर भी निवेदन करे तो निवेदन पूरा होगा।

बेरी की कील

विशाखा नक्षत्र में बेरी की जड़ लेकर आठ अंगुल परिमाण की कील बनाकर केले के बाग में गाड़ने से केले का फल नष्ट हो जाता है।

सीरीष की कील

१. शिरीष की कील घर में गाड़ने से जादू-टोना दूर होता है। यह प्रयोग रवि-पुष्य नक्षत्र में ही करें।

२. रवि पुष्य नक्षत्र में सीरीष की बड़ी कील बना करके पशु के गले में डाले तो पशु प्रसन्न होता है।

गर्भ निरोध

ताजे पानी में रीठे के फल के थोड़े छिलके डालकर उबालें और जब पानी गर्म होने लगे तभी उसमें गर्भ धारण के बचाव की अभिलाषिणी कामिनी नारी का पेटीकोट डालकर थोड़ा-सा ही जल शेष रहने पर औटावें, तब पात्र को अग्नि से उतार कर पेटीकोट को विना निचोड़े छाया में सुखाकर समागम के समय नारी को पहना दें, तो गर्भ कदापि नहीं ठहर पायेगा, यह सारी क्रिया नित्य करें।

दृष्टि दोष दूर करने के लिए

रीठे में छिद्र करके रवि पुष्य नक्षत्र में बच्चे के गले में पहना देने से दृष्टि दोष दूर होता है।

हिगोट

यह बहुत बड़ा वृक्ष होता है। इसके फल को हिगोट कहते हैं। यह हिगोट उत्तर प्रदेश में बहुत होता है तथा बाजारों में बिकता है। इस हिगोट के फल को पशु के गले में पहनाते हैं। जब तक हिगोट पशु के गले में रहेगा। उसे किसी की नजर नहीं लगेगी। यह नजर लगाने वाला अधिक दूषित है तो उसकी दृष्टि पशु पर पड़ते ही वह हिगोट का फल फट जायेगा; परन्तु पशु बच जायेगा।

हिगोट के फल को आयुर्वेद में अनेकों नुस्खों में प्रयोग करते हैं। इसे अर्थात् हिंगोट के पके फल को लेकर साये (छाया) में सुखा लें और इसे इमाम दस्ते में कूटकर महीन चूर्ण करें। कूटते समय इसमें सोंठ, काली मिर्च और सेंधानमक भी मिलावें तथा

हींग भी मिलावें और कूट छानकर सुरक्षित रखें। मात्रा २ रत्ती से ४ रत्ती तक ताजा पानी से दें। प्रातः सायं प्रयोग करते रहने से मोटापा (स्थूलता) नष्ट होता है। पेटदर्द, अफारा कैसा भी सख्त हो तत्काल ठीक होगा। शरीर में कहीं भी दर्द हो तत्काल ठीक रहेगा।

बकुम्बर

यह पौधा भी भारत में सर्वत्र उत्पन्न होता है। विशेषकर बरसात की ऋतु में अधिक हो जाता है। वैसे वर्ष के समय अन्य समय में भी मिल जाता है। इसके पत्रों को लेकर पशु के गले में बँधा हुआ बकुम्बर ज्यों-ज्यों कीड़े सूखेगा त्यों-त्यों कीड़े भी मरते जायेंगे और बकुम्बर के पूर्ण सूखने पर समस्त कीड़े मर जाते हैं और जख्म भर जाते हैं।

दुधी लाल

यह क्षुद्र बूटी होती है। वैसे तो यह पूरे वर्ष मिलती रहती है; परन्तु वर्षा ऋतु में बहुत मात्रा में उग जाती है, यह जमीन के ऊपर ही फैलती है, खड़ी नहीं होती, इसके लाल पत्ते होते हैं। पत्तों की बनावट चने के पत्तों के आकार की होती है, उसे भी पशुओं के गले में कृमि रोग में बाँधते हैं। आयुर्वेदिक पद्धति में इसे पेट दर्द, मरोड़ दस्त उल्टी आदि पेट के रोगों में देते हैं। इसके अतिरिक्त यह वीर्यवर्द्धक है तथा प्रदरनाशक है।

दिव्य तन्त्र

आदमी की मुख से होने वाली उल्टी में निकलने वाला केंचुवा १ अदद, मक्खी के ५० सिर (तेल में मरी हुई के), गुंजा के बीज की गिरी ३ अदद ये मिलाकर खरल करें। खूब घुटाई करके इसका चावल प्रमाण खण्ड करके उनके ऊपर यह कल्क लगायें। सुखाकर सुरक्षित रखे। भोग (रति क्रीड़ा) करने से पहले लिंग के छिद्र में रखे। जब तक यह छिद्र में रहेगी वीर्यपात नहीं होता। यदि कामशक्ति से उन्मत हो जाय, तो स्नान करें। प्रातः खीरा तथा पिसा हुआ जीरा खायें।

नील के पत्ते, चमेली के पत्ते, फ्रांस के पत्ते, धतूरे के पत्ते, निर्गुण्डी के पत्ते १०-१० ग्राम लेकर तिल के तेल (१५०) ग्राम में जलायें। छानकर सुरक्षित रखें भोग करते समय लिंग पर लगायें इतना आनन्द आयेगा, जिसे न कह सकते तथा न लिख सकते।

करामाती अँगूठी तथा दर्पण

शीशे के पीछे श्मशानी कोयला, चमेली का तेल, मोरपंख का चन्दा जला हुआ, कान्त पाषाण, बिल्लोरी शीशा, गिलहरी के बाल तथा लाख पीसकर लगायें। इस दर्पण में १२ वर्ष से कम उम्र के बच्चे को दिखायें। उसे सभी सूक्ष्मताओं के दर्शन

हो सकते हैं; जिसे आप चाहे उसे बुला सकते हैं। गर्भवती स्त्री को दिखाई दे सकता है। जो आप पूछना चाहें, बुलाई हुई आत्मा से पूछ सकते हैं। आप भगवान् कृष्ण, राम, हनुमान, काली, भैरों आदि किसी भी देवता को बुला सकते हैं। बच्चे को दिखाने से पहले बालक के कान में इत्र हिना लगायें अथवा गायत्री मन्त्र का जप करके अभिमन्त्रित करें। गुह्य से भी गुह्यतम रहस्य इससे प्रत्यक्ष हो जाता है।

अद्भुत तन्त्र (स्तनहीनता)

जिस स्त्री के समय पर स्तन न उभरे हों। यदि उभरे भी हैं तो बहुत थोड़े और ढीलापन लिये हुये ऐसे स्तनों को दृढ़ गोलाकार शरावत उभरे हुए तथा सख्त करने के लिये यह तन्त्र प्रयोग करें। 'गिजाई' यह बरसाती जीव है, इन्हें इकट्ठे करें और चीनी मिट्टी के बर्तन में रखकर ऊपर थोड़ा नमक डाल दें, तो यह सब घुल जायेगी। एक जान होने पर इसमें चिकनी मिट्टी मिलाकर लेप बना लें। फिर स्तनों पर लगायें। ९० वर्ष की वृद्धा के स्तन भी नवगर्विता के समान कठोर और घट के समान हो जायेंगे। ऐसे स्तन रसिकजनों को प्रिय होते हैं।

बैंगन

यह सर्वत्र होने वाला पौधा है। इसे फल की सब्जी बनाकर खाते हैं। आयुर्वेद में सफेद बैंगन से ताँबे से श्वेत भस्म बनाते हैं जो देहवाद और धातुवाद दोनों में प्रयुक्त होती है। एक लम्बी बैंगन लेकर उसे पाँच मिनट नित्य योनि में रखें तो पाँच सात दिन में योनि सख्त और छोटी हो जाती है। बैंगन पाँच मिनट से अधिक न रखे तथा योनि में केवल आधा इंच रखे। यदि अधिक देर तक तथा योनि में दो तीन इंच गया हुआ बैंगन नहीं निकलेगा; क्योंकि यह योनि को इतनी ही देर में सुकड़ा देता है। फलस्वरूप बैंगन फंसकर टूट जाता है।

वीर वहूटी

यह एक जानवर है जो सावन (श्रावण) के मास में भूमि से बाहर आता है। इसका रंग नारंगी लाल होता है तथा सुन्दर चमकदार मखमल की भाँति मनमोहक होता है। आयुर्वेदिक पद्धति में इससे तिला बनाया जाता है। वीर वहूटी को पानी में पीसकर योनि के ओष्टों पर लेप करें तो योनि तंग हो जायेगी।

कौंच

प्राकृतिक सिद्धान्त से यह स्वत: ऐसे स्थान पर होती है। जहाँ से मानव का कोई सम्बन्ध नहीं होता। वैसे लगाने से तो यह कहीं भी उगाई जा सकती है। इसके ऊपर फली होती हैं जो १ बालिस्त से भी बड़ी हो जाती है। इसके बीज को वीर्यवर्द्धक तथा ध्वजभंग नाशक औषधियों में डालते हैं। इसका बीज बहुत ताकतवर होता है। बाँझपन की औषधियों में यह डाला जाता है। कौंच की जड़ आधा लम्बी लेकर रति

क्रीड़ा के समय मुख में रखे। जब तक यह मुख में रहेगी, वीर्यपात नहीं होगा। इसके रस को चूसता रहे।

कार्समर्द (कसौंदी)

यह पौधा भारत में बहुतायत होता है। बरसात में यह बहुत अधिक हो जाता है। आयुर्वेद में इसके बीज, पत्ते तथा मूल सब प्रयुक्त होती है। इसकी जड़ घिसकर दाद पर लगाने से दाद को नष्ट करता है। इसकी जड़ आधा इंच लम्बी काटकर भोग करते समय मुख में रखे। जब तक जड़ के ऊपर छाल रहेगी वीर्यपात नहीं होगा। दिनभर में इसकी आधा इंच की लम्बी मूल बार-बार चूसते रहने से नजला, जुकाम, खाँसी में लाभ करती है। दाँत तो इससे इतने सुदृढ़ हो जाते हैं कि कहा नहीं जाता। यदि जवान उम्र में इसे चूसा जाय अथवा इसकी धावन (दातौन) की जाय, तो दाँत उम्र भर न दर्द करेंगे, न ढीले होंगे तथा न ही ठण्डा-गरम पानी लगेगा और वीर्य इतना सख्त हो जायेगा कि निकालना कठिन हो जायेगा। रतिक्रीड़ा करते समय जब यह मूल चूसे तो इस रस को निगलते रहे। दातौन करते समय भी इसका रस चूसकर निगलते रहें अथवा इसकी जड़ की छाल उतार कर गोली बना ले। एक दो गोली प्रातः, एक दो गोली शाम को दूध से लें। नजला, जुकाम, खांसी में गर्म पानी से अथवा श्वेत जुफा के साथ या जुफा क्वाथ चाय की तरह दूध मीठा डालकर लें। रतिक्रीड़ा में गोली मुख में रखें।

स्तम्भन तन्त्र

'छछुन्दर' यह चूहे जैसा होता है। देहाती भाषा में इसे चकचुन्दर कहते हैं। यह प्रायः हर घर में होता है। यह नर और नारी दोनों प्रकार का होता है। नर छछुन्दर का अण्डकोष (खरिया) लेकर उसे चमड़े के यन्त्र में रखे और फिर कमर में बाँधे। जब तक कमर की तरफ रहेगा, अन्जाल (शुक्रक्षय) नहीं होगा। पेट की तरफ करने से वीर्यपात होगा।

ऊँट की हड्डी

ऊँट एक पशु है इसे सभी जानते हैं, इसकी सवारी करते हैं, इसके द्वारा माल ढोते हैं। ऊँट के टखने की हड्डी का खूँटा गाड़कर उसे खूँटे से दूध देने वाले पशु को बाँधने से नजर नहीं लगती। ऊँट की हड्डी में छेद करके सिरहाने रखकर भोग करने से वीर्यपात बहुत देर में होता है।

दुमुही सर्प

दुमुही सर्प की हड्डी कमर में बाँधकर सम्भोग करने से अन्जाल (वीर्यपात) नहीं होगा। गले में पहनने से कण्ठमाला नष्ट होती है।

मेंढ़क पारद की गोली

एक पानी में रहने वाला मेढ़क पकड़ कर उसे पेट में मुख के द्वारा ३ तोला

पारद या कुछ कम पहुँचा दे और मेढ़क की मकद (गुदा) सींम दे। मेंढ़क को सूखना रख दे। सूखने पर अन्दर से पारद की गोली निकाल लो। इसे मुख में रखकर सम्भोग करे तो वीर्यपात नहीं होगा। पैदल चलने से शरीर नहीं थकेगा। इस गोली को दूध में उबाल कर दूध मीठा करके पिये। गोली इसमें से निकाल लें। यह कुछ दिन पीने से स्वप्नदोष, प्रमेह, बाँझपन जैसे संक्रामक रोग नष्ट होते हैं।

निर्गुण्डी

यह पौधा भी भारत में बहुत होता है। यह दो प्रकार का होता है एक तो जल के किनारे होता है तथा दूसरा पानी रहित स्थान में। आयुर्वेदिक पद्धति में यह प्राय: सभी रोगों की दवा है। इसका तान्त्रिक प्रयोग यह है कि हस्ति नक्षत्र में जब सूर्य हो और दिन सोमवार का हो तो उस दिन निर्गुण्डी की उत्तर की ओर जाने वाली मूल निकाल लें। इसे शुद्ध स्थान में रखे। इस जड़ को बन्द ताले से, कैदी की हथकड़ी के ताले से छुवा देने से ताला तत्काल खुल जाता है।

सूअर की दाँत

बालकों को नजर न लगे इसलिए बालकों के गले में सूअर का दाँत बाँधते हैं। इससे बालक स्वस्थ रहता है।

व्याधिनाशक तन्त्र प्रयोग

रविवार के दिन पीपल वृक्ष के नीचे गायत्री का १०८ बार जप करें तथा गिलोय के टुकड़े दूध में भिगोकर हवन करें, आहुति डालें। समिधायें शमी वृक्ष की लें। इस प्रकार १६ रविवार तक करने से सम्पूर्ण व्याधियाँ तथा ग्रहों का प्रभाव समाप्त हो जायेगा।

ज्वरनाशार्थ

नदी के किनारे अथवा मरीज की चारपाई के पास जल पास में रखकर आग की समिधायें हवन में लगाकर अग्नि प्रज्वलित करें और गायत्री मन्त्र उच्चारण करें। हर मन्त्र के साथ आम के पत्ते दूध में भिगोकर आहुति दें। इस प्रकार १०८ आहुति डालें। ऐसा कई दिनों करें तो ज्वर शान्त हो जायेगा।

मृगी रोग के लिए

आम की तथा शमी वृक्ष की समिधायें लेकर हवन कुण्डी में स्थापित करें और अग्नि प्रज्वलित करें। सामग्री में अपामार्ग के बीज समान मिलाकर तथा घृत मिलाकर यज्ञ वेदी में आहुति डालें। रोगी को पास में बिठाये। इस प्रकार का जप करते रहें। जब तक रोग न जाय, यह हवन नित्य करें।

वरुण वृक्ष (बरना)

यह वृक्ष भारत में बहुत होता है। प्राय: सभी क्षेत्रों में इसके वृक्ष मिल जाते

हैं। आयुर्वेद में यह वृक्ष धातु पुष्ट करने वाला माना जाता है। इसकी छाल धातुवर्द्धक औषधियों में डालते हैं। इसकी छाल रक्त शुद्धि के लिए इसका क्वाथ बनाकर पिलाते हैं तो दाद, खाज, फुंसी, फोड़ा, सूखी खाज नष्ट होती है। तन्त्र विद्या में वरना की डाल को काटकर (एक-एक इंच लम्बी) तथा छेद करके और रस्सी पिरोकर पशुओं के गले में बाँधते हैं। इससे नजर नहीं लगती। यदि वह मनुष्य जिसकी नजर लगती है, वह देखे अथवा कुछ कहे तो वरने की माला के दाने फट जायेंगे; परन्तु पशु बच जायेगा।

बिलाव के नख, सिंह के नख

आयुर्वेदिक सिद्धान्तानुसार इन्हें शुद्ध करके नुस्खों में डालते हैं। यन्त्र विज्ञान में इन दोनों नखों को एकत्रित ताबीज में रखकर स्त्री गले में धारण करे, तो निश्चय गर्भ स्थापित हो और स्त्री का वन्ध्यत्व, काक बन्ध्यत्व, मृत्वत्सा दोष शमन हो। शाप से अथवा कर्मों के फल से उत्पन्न वन्ध्यत्व भी नष्ट हो जाता है। नखों को धारण करने से पहले गायत्री मन्त्र १०८ बार पढ़े और ताबीज को अभिमन्त्रित करें। प्रत्येक माह के चतुर्दशी को ताबीज को धूप देता रहे।

लाजवन्ती

यह एक बहुमूल्य वनस्पति है, जिसका प्रयोग आयुर्वेद में बहुत होता है। इसके बीज शुक्र सम्बन्धी दवाईयों में डाले जाते हैं। इसके प्रयोग से धातु, स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्रपतन रोग नष्ट होते हैं। इसके सेवन से स्त्रियों का प्रदर रोग नष्ट होता है और वन्ध्यत्व का विनाश होता है। तन्त्र विज्ञान में इसका विचित्र योग है। इसके हरे पत्तों को हाथों की हथेली पर मसलकर स्त्री को दिखाने से उसके नेत्र स्तम्भित होते हैं और उसे अपने स्तन गायब हुए आभासित होते हैं।

सहदेवी

यह बहुमूल्य औषधि है। आयुर्वेद में इसका प्रयोग बहुत होता है। यह बूटी जागृत है, सिद्ध है। यह बूटी बहुतायत होते हुए भी ना के बराबर है क्योंकि इसकी मूसली की मूल मिलना कठिन होती है। जिस पौधे को फोड़ों उसकी जड़ स्पंजाकार ही मिलेगी। इसकी मूसली की जड़ प्राप्त करने के लिए २४००० गायत्री का जप करना होता है। जप करने पर जिस पौधे को उखाड़ा ज़ायेगा तो जड़ मूसली की लम्बी ही मिलेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवद् भक्त को ही इसकी मूसली की जड़ मिलती है। आयुर्वेद में इसका बहुत प्रयोग होता है। मुख में छाले पड़ जाने पर इसके पत्ते चबाओ और रस निगलते रहो इससे मेदे की गरमी शान्त होकर छाले नष्ट हो जायेंगे। यह बूटी ठण्डी तासीर की होती है। गर्मी से होने वाले रोग इसके सेवन से तत्काल बन्द हो जाते हैं।

तन्त्र विद्या में इसकी जड़ को किसी भी ज्वर के रोगी की चोटी में अर्थात्

बालों में बाँध दें, तो ज्वर पाँच मिनट में उतर जायेगा। ज्वर उतरते ही अर्थात् घड़ी में देखकर पाँच मिनट होती जड़ बालों से जड़ जड़ अलग कर दें; अन्यथा तापक्रम कम होने लगेगा। भारी गर्मी में इस जड़ को टोपी में रखकर सिर पर ओढ़े तो गर्मी की सख्ती बहुत कम महसूस होगी। इसकी जड़ को कान में डोरे में बाँध कर लटकाये तो ककराली, कण्डमाला और नाक की निनाई नष्ट होती है। ज्वर तैया, चौथैया तथा शीत ज्वर नष्ट होता है।

झिझोरा

यह पौधा भी भारत में बहुत होता है। देहात में इसे पापड़ी और गूलरी भी कहते हैं। इसका फल गूलर के जैसा ही होता है। इसके दूध को दाद पर लगाने से दाद नष्ट होते हैं। बच्चा पैदा होते समय जब प्रसूता को अगलेटा लग जाता है तो झिझोरा के पत्ते लेकर पैर से चोटी तक फिराने से बच्चा तत्काल बाहर आ जायेगा।

उल्टा बालक या तान्त्रिक शिशु

ऐसा भी कहा जाता है कि जहाँ बालक सिर की ओर से उत्पन्न होता है, कभी कभी पैरों की ओर से पैदा हो जाता है। देखा यह गया है कि बालक का उल्टा जन्म लेना या तो बालक की मृत्यु होगी अन्यथा स्त्री की जान जायेगी। परन्तु यदि बालक उल्टा भी पैदा हो जाय और स्त्री भी जीवित रहे तो बालक को अवतार समझो और स्त्री को पूर्व शुद्ध और अच्छे कर्मो से पूर्ण समझो। यह उल्टा बालक उभरी हुई वध को यदि अपने हाथ स्पर्श भी कर देगा तो वध बैठ जायेगी यह गुण बालक में आजीवन विद्यमान रहेगी।

लावण

लावण, दामन (लहंगा-टुकड़ी) की गोंठ (फाल) को कहते हैं। अब चूँकि लहंगा तो नहीं रहा परन्तु उसके स्थान पर पैटिकोट है। इसकी लावण (गोठ-फाल) को यदि हापू से सात बार छुवाये (स्पर्श करें) ओर हर बार चार पृथ्वी पर रगड़के, ऊपर से हल्का-सा थूक दें, तो हापू, कनफेड़, एक दो बार झाड़ा देने से बैठ जायेगी। मैंने इसका बहुत चमत्कार देखा है और देख रहा हूँ। मैं इसकी दवाई देने के बजाय उपरोक्त विधि बता देता हूँ। इस वैज्ञानिक समय में इस विद्या को अन्धविश्वास कहते हैं। परन्तु मैं बहुत दिनों से करता आ रहा हूँ अत: लोग विश्वास से करते हैं।

धतूरा

धतूरे को अंग्रेजी में थोरन आपल कहते हैं, फारसी में अस्तूरलूनिया कहते हैं। अरबी में जीज माशील कहते हैं। यह क्षुप भारत में सर्वत्र उगने वाला पौधा है। इसके रस में नशा होता है, बीजों में खतरनाक नशा होता है। इसके बीजों को शुद्ध करके औषधियों में मिलाते हैं। धतूरा स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्रपतन, नजला, श्वास, हृदय

रोगनाशक है तथा रसायन औषधियों में प्रयुक्त होता है। तन्त्र विद्या में स्वेत धतूरे की जड़ को पहले दिन न्योत आये तथा दूसरे दिन उखाड़ लाये। इसे भुजा पर धारण करने से एक एकान्तरा ज्वर, वारी का ज्वर, शीत ज्वर नष्ट होता है।

जलकुम्भी

यह भी भारत की अमूल्य पैदावार है। पानी के किनारे यह फैलती है। समुद्र सोख को जाति का यह क्षुप है। इसकी आकृति समुद्र सोख से मिलती है। थोड़ा ही अन्तर है। इसका तान्त्रिक चमत्कार ये है कि जलकुम्भी को जिस स्थान पर रख दिया जाय, वहाँ खटमल नहीं रहेगा।

काक-लहरी

काकलहरी (कागलहरी, कागनहर) यह भारत में बहुत पैदा होती है। तान्त्रिक लोग इसे इकत्रित करते हैं। आयुर्वेदिक पद्धति में कागलहरी कामेच्छा को उत्पन्न करने के लिए प्रयुक्त की जाती है। एक किस्म से बांदा ही है; क्योंकि यह किसी भी पौधे पर बन सकता है। आरम्भ में यह झाग के रूप में किसी भी पौधे से निकल सकता है। जिस पौधे पर यह होता है, तान्त्रिक उस पौधे की जड़ ग्रहण करते हैं। झागरूप यह कागलहरी सूख जाता है तब इसे पौधे से अलग कर लिया जाता है। इस कागलहरी को स्त्री तथा गाय, भैंस को उठाने अर्थात् कामेच्छा को उत्तेजित करने के लिए नारी को २ रत्ती, पशु को पूरी कागलहरी देते हैं। इससे इतनी उत्तेजना बढ़ जाती है कि उसे गर्भधान की प्रवृत्ति जागृत हो जाती है और नर की तलाश में प्रयत्न करने लगती है। इसी प्रकार सहदेवी की जड़, चिरचिटा की मूल सिरहाने रखकर सोने से अच्छी नींद आती है।

अश्वभेदी

यह पौधा महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश में अधिक होता है। इसको आयुर्वेदिक पद्धति में तान्त्रिक बूटी कहते हैं। इसके सेवन से अन्तःविद्रधि, सख्त फोड़ा अर्बुद (केन्सर) केवल तीन मात्रा में खाने से नष्ट हो जाता है।

आक

आक (अर्क) भारत में सर्वत्र होता है, यह दो प्रकार का होता है। एक छोटा पौधा, दूसरा बहुत बड़ा पेड़। पहला रंगीन फूल होता है दूसरा श्वेत फूल वाला होता है। यह दोनों तन्त्र विद्या में तथा आयुर्वेदिक औषधियों में प्रयोग किये जाते हैं। आक के फूल के अन्दर जो लौंग होती है, वह खाने में मीठी लगती है। इसके खाने से पेट के समस्त रोग नष्ट होते हैं, पेट में वायु नहीं रुकने पाती। इसकी जड़ की छाल ज्वरनाशक है तथा नपुंसकताहारी है। स्वप्नदोष और सुस्ती को मिटाती है। इसे तन्त्र विद्या में प्रयोग करते हैं। नेत्रों में जब लाली इतनी हो जाये कि आँख भी न खुलने दे

या दर्द रहे तो उस समय कोई से आक का दूध पैर के अंगूठे के नाखून पर लगाये तो कुछ देर में आँख की लाली घटने लगेगी। सफेद आक की जड़ को कान में बाँधने से ज्वर उतर जाता है।

नजर लगने में

बालक के गले में सूअर का दाँत बाँधकर रखें। बालक को नजर, डरना, चौंकना, स्वप्न में चौंकना, नींद कम आदि रोग समाप्त होते हैं। सूअर का दाँत महीन पीस कर सुरमे के साथ आँख में डालने से आँख का दुखना तथा आँख की लाली समाप्त करता है।

मकोय

यह पौधा आम पैदा होता है। इसका नाम असगन्ध है। इसकी जड़ को अगन्ध कहते हैं। यह धातु, स्वप्न दोष, प्रमेह, शीघ्रपतन और प्रदरनाशक है। इसका तान्त्रिक योग है कि इसकी मूल को कान में बाँधने से समस्त ज्वर समाप्त हो जाते हैं। मूल सिर के बाँधने से शीत ज्वर शान्त होता है।

भगरा (घमरा)

भगरा समस्त भारत में उत्पन्न होता है। यह दो प्रकार का होता है—१. श्वेत पुष्प वाला २. लाल फूल वाला इसे काला भगरा भी कहते हैं। आयुर्वेद में यह भगरा नजले में खाने को देते हैं। इससे सिद्ध तेल बालों को सुदृढ़, घने और लम्बे बनाता है। तन्त्र विज्ञान में इसकी मूल को डोरा से बाँधकर हाथ में धारण करने से ज्वर नष्ट होता है।

गुँजा

यह लता होती है। झाड़ों के ऊपर या वृक्षों के ऊपरयह चढ़ जाती है। गुंजा तीन प्रकार की होती है—१. रक्त गुंजा, २. श्वेत गुंजा ३. श्याम गुंजा। आयुर्वेद में इसके फल को शुद्ध करके दवाईयों में प्रयुक्त करते हैं। क्योंकि यदि इसे बिना शुद्ध किये दवाई में डाला गया तो यह पेट में नहीं ठहरेगी। उल्टी-दस्त लग जायेंगे। कईयों को मैंने देखा है है कि बच्चे बन्द करने के लिए (बर्थ कंट्रोल) वैद्य लोग इस रक्त गुंजा को बिना तोड़े निगलवा देते हैं। मगर यह उल्टी नहीं करती और न ही गर्भ ठहरने देती है। इसकी मूल को ताबीज में रखकर स्त्री के हाथ में बाँधे तो अवश्य चिरंजीवी सन्तान होगी।

हुलहुल

हुलहुल के पत्ते मसलकर दाँयें हाथ में बाँधने से शीत ज्वर नष्ट होता है।

इन्द्रायण

यह भी लतारूप होती है। पंजाब तथा हरियाणा में बहुत अधिक होती है,

इसका फल कड़ुवा होता है। इसकी जड़ को कूटकर स्त्री को खिलाने से मासिक को प्रवृत्त कर देती है। मासिक रुक-रुक आता हो, दर्द के साथ आता हो, पेड़ु में दर्द रहता हो तो इसकी जड़ का चूर्ण गर्म पानी से दें, दर्द तत्काल बन्द होगा। मूल को गर्भाशय के मुख में रखने से रुका मासिक खुल जाता है। इसका तान्त्रिक योग यह है कि इन्द्रायण की सूखी जड़ पानी में अथवा गाय के घी में घिसकर नस्य (सूंघनी, नश्वार) लें तो मिर्गी रोग शान्त हो, इसे कांस के बर्तन में घिसें।

कटहली

कटहली (अपराजिता, गिरीकर्णी) यह बूंटी सर्वत्र उत्पन्न होती है, यह दो प्रकार की होती है। १. पृथ्वी पर फैलने वाली २. खड़ी होने वाली। यह खड़ी होने वाली भी श्वेत फूल वाली तथा नीले फूल वाली होती है। कटहरी उदा रोग, खांसी तथा प्रदर नाशक है। अपराजिता (श्वेत कटहली) मूल तान्त्रिक चमत्कार ये हैं, इसके बीज जल के साथ महीन पीसकर नस्य लेने से कुष्ठ, ज्वर, कामना, कण्ठ, अजीर्ण रोग नष्ट होते हैं। आधाशीशी नष्ट होती है। कान में मूल लटकाने से भी आधाशीशी जाती है।

सिरदर्द

अपामार्ग के बीज तथा चीनी समभाग लेकर महीन पीसे तथा नस्य ले, तो सिरदर्द, आधाशीशी समाप्त हो जाती है।

साँप का भगाना

बारहसिंगा का सींग, मछली दोनों मिलाकर धूनी देते रहें तथा गन्धक और नौंशादर दोनों को समान घोलकर मोजू स्थान पर छिड़कते रहें, तो साँप नहीं आयेगा।

श्वेत खरैंटी

पुष्य नक्षत्र में उखाड़ी हुई श्वेत बाला की जड़ कन्या से पिसवाकर भोजन में मिलाकर खिलाने से स्त्री की खोई हुई मैथुनी प्रवृत्ति जागृत हो जाती है। बूटी उखाड़ने से पहले ब्राह्मण को, कन्या या गाय को भोजन करावे। भोजन दूध-भात का होना चाहिये।

स्तन कठोर, स्थिर करे, स्तनहीनता

काला निशोथ, लाजवन्ती, वच, सौंठ, मिर्च, पीपल, हल्दी १०-१० ग्राम तेल १५० ग्राम लेकर तेल सिद्ध करें। इसको नस्य लेने से स्तन अगर नहीं भी है तो भी निकल आयेंगे। इस तेल को स्तनों पर मालिश करते रहने से मरने के बाद भी ढीले नहीं होंगे।

मौरैठी (मधुक, गुल-दुपहरी)

मौरैंठी और आँवला ५०-५० ग्राम, दूध ५०० ग्राम, ५०० ग्राम सरसों तेल

मिलाकर तेल सिद्ध करें। इस तेल को नस्य लेने से सिर के बाल और मूँछ के बाल उगते हैं। आयुर्वेद पद्धति में इसका प्रयोग चक्रदत्त ने अधिक किया। उनकी लिखी पुस्तक में प्राय: ८० प्रतिशत नुस्खों में यह सौरैठी लिखी हैं। चेहरे पर इसके पत्तों का रगड़ना कील, मुंहासे, झाई तथा बदनुमा दाग नष्ट करता है। यह प्रयोग मैं करता हूँ। क्रीम में इसे मिलाता हूँ। बहुत अच्छा काम करती है। दस्त बन्द करने में यह सबसे आगे है। इसे हरी ही चबा लो या सुखाकर कूट पीसकर ताजा पानी से २-२ माशे खायें। धातु पुष्ट करने के नुस्खों में मैं डालता हूँ। स्वप्नदोष, ध्वजभंग (नामर्दी), के नुस्खों में डालता हूँ। नज़ला जुकाम की दवाईयों में डालता हूँ, बड़ा अच्छा कार्य करती है।

षडबिन्दु तेल (चक्रदत्त) नस्य

अरंडमूल, तगर, सौंफ, जीवन्ती, रास्ना, सैन्धा नमक, भंगरा, विडंग, मौरैठी सौंठ ६-६ माशे तिल का तेल २५० ग्राम लेकर तेल सिद्ध करें। इसकी नाक के नथुनों में दो बूँद डालकर नस्य लेने से हिलते दाँत, सिर-दर्द, आँख-दर्द , दर्द कनपटी, माथे का दर्द, नष्ट होता है। यह योग वास्तव में उत्तम सिद्ध हुआ है।

चमत्कारी नस्य

जीवक (जियापोता), ऋषयक (हिमावती, हारसिंगार), मुनक्का, मौरैठी, महुवा, खरैटी, कुमुदनी, चन्दन, विदारीकन्द, शक्कर, १०-१० ग्राम, दूध ६०० ग्राम, तेल ५०० ग्राम लेकर सिद्ध करें। इसकी नस्य (नसवार) लेने से सिर-दर्द, बहरापन, कान-दर्द, गलशंडी, तिमिर, वात, पित्त के सिर रोग, दाँतों का हिलना आदि नष्ट होते हैं।

अंगद तन्त्र

पिन्डी शाक, केवटीमोथा, गठिवन, फिटकरी, छैल-छबीला, गोरोचन, तगर, ध्यामक केसर, बालछड़ तुलसा, छोटी इलायची। हरताल, खदिर, बड़ी कटेरी, सिरस फूल, गन्दा विरोजा, पद्मचारी कुम्भ अडूसा, इन्द्रायणा, देवदारु, कमल केसर, लोध, मेनसिल, रेणुका, फूल चमेली, मदार पुष्प, सफेद सरसों, हल्दी, दारू हल्दी, हींग पीपल, लाख, मुरदपर्णी, प्रियंगु, रास्ना, विडंग ये सब समान लेकर चूर्ण करें और गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को चूसने, लेप करने, देह पर धारण करने, धूम्रपान करने पर घर में रखने से विषम ज्वर नष्ट हो। विजय प्राप्त हो, विष कैंसर भी हो इनके सेवन से निष्फल हो जाता है। भूत-प्रेत, विषैले जन्तुओं से रक्षा करें, घायल (कृत्या) से रक्षा करें जिस घर में यह अगद होगा। वहाँ घायल उतर ही नहीं सकती। अभिचारक मन्त्र, शत्रु, अग्नि-भय, बुरे स्वप्न, स्त्रीदोष (पति को दिया गया विष) अकाल मृत्यु, जल-भय, चोर-भय नहीं रहता ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है।

अंगद पताका तन्त्र

बालछड़, हरेणु, त्रिफला, शोभांजन, मजीठ, प्रियंगु, मधुयष्ठी, पद्माख,

विडंग, तालीस पत्र, सर्पगन्धा, इलायची, दालचीनी, कूठ, तेजवल, चन्दन, भारंगी, परवल, चिरचिटा, पाठा, इन्द्रायण, काकड़ासिंगी, गुगल, निशोथ, अशोक सुपारी, तुलसा पुष्प ये सब लेकर चूर्ण करें तथा फिर गीध, मोर, शेर, बिल्ली चित्तल हिरन, नेवला के पित्त में और मधु मिलाकर पात्र में रखें। यह अगद जिस घर में होगा वहाँ सर्प व कीटभय न रहेगा। इसको नगाड़े (ढोल) पर लगाकर बजाने से जहाँ तक ध्वनि जायेगी विष नहीं चढ़ेगा, होगा तो उतर जायेगा। पताका पर लगाकर फहराने से जो देखेगा उसको दंशित विष या दिया गया विष दोनों पताका के देखते ही नष्ट हो जायेंगे।

मेंहदी

पाषाणभेद मेंहदी के स्थान पर हाथ की हथेलियों पर लगाने से प्रदर रोग नष्ट होता है। मेंहदी में समान भाग पाषाणभेद मिलाकर हाथ की हथेली तथा पैरों के तलुओं पर लगाने से मासिक धर्म बन्द हो जाता है, जिससे बच्चा पैदा नहीं हो सकता। गर्भनिवृत्ति (बन्ध) तथा मासिक निवृत्ति के लिए चित्रावली नामक मेंहदी प्रयुक्त होती है। चित्रावली मेंहदी होती तो है साधारण मेंहदी की भाँति ही; परन्तु अन्तर केवल यह होता है कि चित्रावली के पत्तों में हरियाई के साथ श्यामलता होती है और सूखने पर पत्ते काले रंग के हो जाते हैं; परन्तु साधारण मेंहदी के पत्ते हरे रहते हैं। चित्रावली के पत्ते सूखने पर काले रंग के तो हो जाते हैं; परन्तु रंग भी गहरा श्यामलता लिए हाथ की हथेली पर छोड़ती है। मेहदी के पत्तों का चूर्ण करके प्रातः सायं दूध से खायें। १ मासा यह चूर्ण तथा १ माशा खांड मिलाकर लें। १ माह में काले अथवा नीले पड़े हुए नख वास्तविक रूप में आ जाते हैं। इसी प्रकार किसी भी कुष्ठरोग में परीक्षित योग है।

काले घोड़े की पैरों की पगतली (नाल)

काले घोड़े की पगतली अर्थात् लोहे की जूतियाँ (घोड़े की नाल) की अंगूठी अथवा कड़ा पहनने से लकवा समूल नष्ट होता है। आमवात, अर्द्धांगवात तथा वायुविकार होने से शरीर में होने वाले दर्द समाप्त होते हैं। इसकी भस्म प्रयोग करने वाला पुष्प अश्ववेगी हो जाता है।

स्तम्भन (गाय की सींग)

गाय का सींग जो बड़ा हो (लम्बाई में) उसका पापड़ लेकर उसे आग के ऊपर डालकर जलावे तथा टोपी को या चादर को इसको धूप दें। फिर इस टोपी को अथवा चादर को ओढ़कर रति करने से भारी स्तम्भन होगा।

बैल के सींग का अंकुर (बवासीर, आतशक)

बैल का सींग मरने के बाद जंगल में पड़ा रहता है। कई वर्ष पड़ा रहने से यह सींग पौधे की तरह उगने लगता है, उसमें जगह-जगह पर अंकुर निकल आते हैं। इन अंकुरों को एकत्रित करके रख लें। कुछ की अन्तर्धूम भस्म तैयार कर लें। भस्म

को रात्रि के समय चावल दूध के साथ खायें, तो प्रात: आतशक के जख्म का निशान भी नहीं मिलेगा। अंकुर को आग के ऊपर डालकर बवासीर के मस्सों को धूनी दें, तो मस्से तत्काल गिर जायेंगे और फिर नहीं होंगे।

बैल के पेशाब का तान्त्रिक प्रयोग

यदि कोई स्त्री वाकरा हो, जिसकी कामवासनी इतनी तीव्र हो कि उसे हर समय वासना तृप्ति के सिवाय कोई कार्य नहीं होता। ऐसी स्त्री को बैल का पेशाब एक-दो बोतल प्रतिदिन ढ़ाई-ढ़ाई तोला प्रात:-सायं पिला दो। कामवासना कम हो जायेगी।

चेचक का फूला

चेचल रोग में जहाँ सारा शरीर खराब होता है, वहाँ आँख में भी छाया पड़ने से फूला पड़ जाता है। जिसकी कोई दवाई न सुनी, न पाई। चिंच्चड़ यह कुत्तों के ऊपर होता है, जीव होता है, इसको एक आँख में डालने से फूला नष्ट हो जाता है। खटमल के खून डालने से भी चेचक का फूला कट जाता है।

आँख के पानी का तान्त्रिक योग

आँख से गिरने वाले आँसू यदि कान में डाले जायें तो कानों की भी बीमारी नष्ट होती है।

कान के मैल का तान्त्रिक प्रयोग

कान का मैल यदि आँख में डाला जाय, तो आँख के रोग नष्ट होते हैं। बाँयें कान अंगुली घुमाकर दाँयीं आँख में फिराये तथा दाँयें कान में अंगुली घुमा कर बाईं आँख में डाले तो तत्काल परिणाम देता है। आँख की खाज, दुखना, लाली, रगड़ के साथ समाप्त हो जाती है। परीक्षित है।

मृगचिड़ा का तान्त्रिक प्रयोग

मृगचिड़ा यह भी जीव होता है। प्राय: नदी के किनारे या रेतीले जंगल में होता है। इसे भुजा पर धारण करने से दौरा किसी भी प्रकार का हो दूर हो जाता है।

कौवे की बीट

कौवे की बीट कपड़े में सीकर बच्चे के गले में बाँधे तो खांसी जाय।

विजोरा नीम्बू

विजोरा नीम्बू सिरहाने रखकर सोने से नींद खूब आती है।

शुक्र स्तम्भन योग

घड़ियाल, चूहा, मेढ़क, चटक के अण्डे, तेल में पकाकर सिद्ध कर लें। इस तेल को तलवों पर लेप करके सूखने पर रति करें। जब तक पैर चारपाई से नीचे जमीन पर नहीं रखेंगे, वीर्यपात नहीं होगा।

बालक का दाँत (तान्त्रिक प्रयोग)

बालक का सर्वप्रथम टूटा हुआ दूध का दाँत जमीन पर गिरने से पहले ग्रहण करें तथा चाँदी के ताबीज में मढ़वा लें। गले में या हाथ में बाँधने से गर्भ धारण नहीं होगा। विपक्षी के सामने विजय होगी (कुश्ती में, मुकदमें, शास्त्रार्थ में) समाज में सम्मान और कीर्ति फैलेगी।

कुत्ते की हड्डी (मृगी रोग)

पागल कुत्ते की हड्डी को नरमूत्र में घिसकर नस्य देने से मृगी रोग नष्ट होता है।

हाथी दाँत (तान्त्रिक प्रयोग)

हाथी दाँत वैसे तो आयुर्वेदिक औषधियों में बहुत प्रयुक्त होता है। अनेक रोगों की यह दवाई है। जहाँ खाने से इसमें अपार गुण है, वहीं इसमें तान्त्रिक बल भी बहुत है। इसे गले में बाँधकर रखने से संक्रामक महामारी का भय नहीं रहता।

करेले की जड़ और और केले की जड़

करेले की जड़ को योनि के ऊपर लेप करने से बाहर निकली हुई योनि अन्दर चली जाती है। इसी प्रकार केले की जड़ का लेप करने से लाभ होता है तथा विवृत्त योनि १६ वर्ष की उम्र वाली की भाँति संकुचित हो जाती है जो रसिकजनों को अति प्रिय होती है।

गंवारा (गँवार)

यह भारत में किसान लोग लगभग सभी उगाते हैं। मवेशियों को चारे में खिलाते हैं। मानव इसकी फलियों की सब्जी बनाकर खाते हैं। गवारे के पत्ते पाँच, काली मिर्च पाँच, लेकर ताजा पानी से घोटकर पिलायें, तो बवासीर नष्ट होगी। १५ दिन में समूल नष्ट हो जायेगी।

गम्भारी (तान्त्रिक प्रयोग)

गम्भारी (अस्थिसहार, हिमावती, श्रीपर्णी, कुवेर, हारसिंगार) की छाल को तिल के तेल में जला लें। १०० ग्राम छाल तथा २०० ग्राम तेल में खूब पकायें। जब छाल जलकर कोयला हो जाये तो तेल को छानकर सुरक्षित रखे। इसे स्तनों पर लगाने से वृद्धा स्त्री के स्तन भी युवा कन्या के समान दृढ़ हो जाते हैं।

ततैये का विष

खाने का चूना मिले, या नौशादर लेय। कछु ना मिले तो, कागज भीजा रख देय।

पलाश का बांदा

पलाश का बांदा रोहिणी नक्षत्र में लाकर योनि में रखने से स्त्री को गर्भ स्थापित हो जाता है।

बैर, अनार कीकर का बांदा

इनके बांदे को लेकर गाय के दूध में पीसकर मासिक धर्म के बाद १३ दिन तक पिलाने से विष्णु भगवान के प्रताप से गर्भाशय शुद्ध होकर गर्भ स्थापना हो जाती है।

ल्हिसोड़ा

ल्हिसोड़े वृक्ष का बांदा धनिष्ठा नक्षत्र में लाकर सोने-चाँदी के जेवरों में रखने से सदैव स्थित रहते हैं। दूध या जल में घोंटकर पानी से वात-गोला शान्त होता है। इसके खाने तथा लगाने से कुष्ठरोग का नाश होता है।

लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए आम का बांदा

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को आम के बांदे को धान और रोली से निमन्त्रण दें। अमावस्या (दीपावली) को दूध-पताशे की बली दें। देवदारु की धूप देकर पूजन करें फिर वृक्ष को नमस्कार करके तथा नंगा होकर सूर्योदय से पहले तोड़ लें। रात्रि को दीपावली का पूजन करके एकान्त में पाँचों प्रकार बान्दे का पूजन करें शेष रात्रि में—

ओं वृक्षराज महाश्रीमन् विष्णु सुख सनातनः।
धान्य समृद्धिं श्रीं देहि में अचल प्रभो।।

इस मन्त्र का जप करें। प्रातःकाल बान्दे का धूप देकर पात्र में रखकर अपने पास रख लें। धीरे-धीरे लक्ष्मी का आना प्रारम्भ होगा। कुछ दिनों में अक्षय धन जुट जायेगा। लक्ष्मी मन्त्र का सम्पुट देकर विष्णु सहस्रनाम का १०८ बार पाठ करने तथा दस दिन बाद हवन करने से मन्त्र पूर्ण वर्ष जागृत रहता है।

पीपल का बांदा

जब अपना चन्द्रमा बली हो, तब रिक्ता तिथि (शनिवार को ४, ९, १४ तिथि पड़े तो वह रिक्ता तिथि होती है) के एक दिन पहले सन्ध्या काल को वृक्षराज को निमन्त्रण दें तथा शनिवार को सूर्योदय से पहले बांदे को तोड़ लाये और दूसरी रिक्ता तिथि तक बांदे को नित्य पाँचों प्रकार से पूजा करते रहे। फिर तिथि के रोज निम्न मन्त्र पढ़कर यन्त्र भर के धूप देकर पास में रखे। अवश्य जीविका (गुजर-बसर का साधन) मिल जायेगी।

मूले ब्रह्मा त्वचित विष्णुः शाखाशु च महेश्वरः।
पत्रे पत्रे देवनाथो वृक्षराज नमोस्तुते।।
वृक्षराज नमस्तुभ्यं, महाकायं शिखा प्रिय।
सर्वरोग विनाशाय, देहि वादं मनोमयम्।।

पलाश का बांदा

होली से एक दिन पहले निमन्त्रण दे। होली के दिन प्रातःकाल सूर्योदय से

पहले फूल अक्षत चढ़ाकर देवदारु का धूप देकर मोदक की बलि दें। निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर अन्न स्थान में स्थापित करें तो धान्य परिपूर्ण रहता है।

ओं वृक्षराज समुद्धस्त्वं त्रिषु वर्तसे।
कुरुस्व धान्य वृद्धिं त्वं क्षेत्रे काटौध वर्गिते।।

रंग परिवर्तन

नारंगी के रस से कागज पर लिखकर सुखाओ और सुरक्षित रख लो। जब चमत्कार देखना या दिखाना हो तो एक पत्र लो और उसे अग्नि पर सेको तो नारंगी का लिखा हुआ लाल रंग में चमकने लगेगा। दूध में नौशादर को घोलकर कागज पर लिखे और सुखा ले जब चमत्कार देखना हो तो अग्नि पर सेको अक्षर पीले रंग के दिखाई देंगे।

लाल कनियर के फूलों को गन्धक की धूनी देने से वह श्वेत रंग में परिवर्तित हो जाते हैं।

अग्नि स्तम्भन

मासिक रक्त (माहवारी स्त्री का रक्त), गधे का मूत्र, बगुले की चर्बी मिलाकर खूब पकायें। फिर कभी भी जब चमत्कार देखना चाहें तो हाथ या पाँव पर लेप करके अग्नि में रख दे, शरीर को आँच भी नहीं लगेगी।

दिन में तारे

धतूरा तथा सांवक का भुस दोनों को जलाये तथा बत्ती में लपेट कर काजल पारे। दीये में तेल तथा तेल में बत्ती लगाकर जलाये, फिर काजल बनाये। इस काजल को नेत्रों में आँजने से दिन में तारे दिखाई देंगे।

तिलस्मात

उल्लू का पर और गुगल दोनों को नीले सूती वस्त्र में लपेट कर बत्ती बनाये तथा घृत के पूर्ण दीये में रखकर जलाये और काजल पारे। इस काजल को दौरे के रोगी की आँख में डाले तो दौरा नहीं पड़ेगा। काजल दौरा पड़ने से पहले डालना चाहिये।

तिलस्म (शुक्र स्तम्भन)

वीरबहूटी को गुलाब जल में पीसकर सुखावें, फिर बत्ती में लपेट कर तिल के तेल में रखकर (चिराग में) जलाये। इसकी रोशनी में तमाम कमरा रक्तवर्ण दिखाई देगा प्रसवकाल की लालिमा में बालतरुण की भाँति रक्त चाँदनी में रति क्रीड़ा करें। जब तक यह चाँदनी रहेगी शुक्र क्षय नहीं होगा।

शुक्र स्तम्भन

लाल कनियर की पत्ती, फूल डाल लेकर महीन पीस ले तथा पानी में

मिलाकर मोटी सूती वस्त्र तर करके सुखाये। इस प्रकार तीन बार तर करके सुखाये। फिर बत्ती बनाकर चिराग में तिल का तेल भरकर रखें और बत्ती जलायें। इस रोशनी में रति क्रीड़ा करें तो शुक्र क्षय नहीं होगा।

हाजरात

एक उल्लू पकड़ कर सुरक्षित रखें। किसी दिन उसकी दोनों आँखें निकाल कर उन आँखों को तरल पदार्थ में रुई तर करें और सुखाकर इसकी बत्ती बनायें। एक चिराग में तिल का तेल भरकर यह बत्ती रखे और जलाये तथ काजल पारे। इस काजल को ऐसे पुरुष, स्त्री, युवा, युवती की आँख में डालें, जो पैरों की तरफ से उत्पन्न हुआ हो, उसकी हथेली में चमेली का तेल लगाये तथा निगाह हथेली पर जमवायें। ऊपर उस पुरुष या स्त्री के कम्बल (वस्त्र) ओढ़ा दें। हथेली में से ऐसी विचित्र रोशनी निकलती दिखाई देगी जो बड़ी अजनबी लगेगी। उस रोशनी में उसे अलहम्द (परोक्ष विभूतियों) के दर्शन होंगे उनसे जो पूछोगे नहीं बतायेंगे। वैसे भी कम्बल में बैठे पुरुष को पृथ्वी के तीन गज गहरे का, आकाश का, गुमशुदा वस्तु, पदार्थ, आदमी सब नजर आते हैं। कम्बल में बन्द होते हुए भी वो पुरुष आते-जाते पुरुष-स्त्री, बच्चे, गाड़ी सभी को देख लेता है तथा बता देता है कि यह गाड़ी है या पुरुष है या स्त्री है इसका नाम क्या है गाँव क्या है? तथा यह किस काम से और कहाँ जा रहा है।

उदय भास्कर तन्त्र योग

सोंठ, काली मिर्च, पीपल छोटी, पाँचो नमक, सुहागा, सज्जी १०-१० ग्राम ले। जैपाल (जमाल घोटा) ५०-५० ग्राम लें। सबको महीन कपड़े में छान करके खरल में डाले और दात्यपूर्ण (गदहपूर्ण, विषखपरा, सांठ) के रस की भावना दें। फिर नीम्बू के रस की भावना दें। फिर खूब महीन पीसकर सुरमा बना दें। सर्प के काटने पर इसे नेत्रों में डालने से सर्प विष उतर जाता है। खाने से ग्रन्थी रोग तथा उदर रोग नष्ट करता है।

नीम्बू

नीम्बू भारत में प्रचुर मात्रा में पैदा होता है। यह औषधि के रूप में बहुत प्रयुक्त होता है। गर्मी के मौसम में मनुष्य इसका रस निकाल कर शर्बत में डालकर पीते हैं। नीम्बू का सत्व बनाया जाता है जो औषधियों में प्रयुक्त होता है। तन्त्र विद्या में भी नीम्बू का भारी महत्त्व है।

दुधारु पशु गाय, भैंस, बकरी की नजर

ओं नमो सत्यनाम आदेश गुरु को, नजर जहाँ पर पीर न जानी, बोले छल सो अमृतवानी, कही नजर कहाँ से आई, यदि की ठौर तोहि कोन बाती, कोन जात तेरी का डाम, किसकी बेटी कहो तेरो नाम, कहाँ से उड़ी कहाँ को

जाना, अब ही बस करले तेरी माया, मेरी बात सुनो चित्त लगाय, जैसी हो सुनाऊँ आप वेलन तमोलन चुहड़ी चमारी कायथनी खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राग की रानी, जाको दोष ताहि के सिर पर पड़े हनुमन्त वीर नजर से रक्षा करें मेरी भक्ति, गुरु कर शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचाः।

विधि–पीली कौड़ी, लोहे का छल्ला, लाल रंग के रेशम के डोरे में बाँधकर तथा १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पशु के गले में बाँधे। फिर नजर नहीं लगेगी।

विद्वेषण मन्त्र

ॐ नमो कामाक्षाय, ॐ नमो महा-भैरवाय, श्मसान वासिन्यै, 'अमुकामुक'योर्विद्वेषं कुरु कुरु क्रूं फट्।।

विधि–शनिवार के दिन बिल्ली और चूहे की विष्ठा एकत्रित करे। रात में पीपल के पेड़ के नीचे, निर्जन में, दक्षिण दिशा की ओर मुख कर आसन पर बैठे। बिल्ली और चूहे की विष्ठा को एक साथ मिलाकर एक छोटी पुतली बनाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार उसे अभिमन्त्रित करे। फिर किसी नीले कपड़े से उस पुतली को ढंक दे और चुपचाप घर चला आये। जिन-जिन व्यक्तियों के नाम मन्त्र के 'अमुकामुक' के स्थान पर उच्चारण करते हुए जप किया जायेगा, उन लोगों में चाहे वे पिता-पुत्र हों, पति-पत्नी हों, मित्र-मित्र हों अथवा भाई-भाई हों, आपस में महा विद्वेष फैल जायेगा और जब तक शान्ति मन्त्र द्वारा शान्त न किया जायेगा, तब तक विद्वेष की आग भड़कती रहेगी।

गृहीत्वा सिंह-अस्थि च, निखनेद द्वारतो भुवि।
कलहो जायते नित्यं, विद्वेषं जायते सदा।।

अर्थात् सिंह की हड्डी जिस शत्रु के घर-आँगन कहीं भी उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर फेंकी जायेगी, उस घर में कलह की आग फैल जायेगी और नित्य वाद-विवाद होने लगेगा।

गृहीत्वा मयूर-विष्ठां च, सर्प दन्तं च पेषयेत्।
ललाटे तिलकं कृत्वा, विद्वेषो जायते क्षणात्।।

अर्थात् १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित मयूर (मोर) की विष्ठा का चन्दन यदि साँप के दाँत से, किसी भी युक्ति से शत्रुओं के ललाट में लगा दें, तो उनमें महाविद्वेष फैल जायेगा।

गृहीत्वा गज-दन्तं च, गृहीत्वा सिंह-दन्तकम्।
पेषयेन्नवनीतेन, तिलकं द्वेष-कारकम्।।

अर्थात् हाथी और सिंह के दाँत के चूर्ण को घी अथवा मक्खन के साथ पीस ले। फिर उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रुओं के ललाट में लगाये। इससे उन लोगों में महाविद्वेष भड़क उठेगा।

ॐ नमो कामाक्षाय, नमो कपालिनि वृश्चिकोदराय अमुकस्य अमुकेन सह विरोध कुरु कुरु फट् स्वाहा।

विधि–१. पलाशस्य शुष्क-काष्ठं, गृहीत्वा प्रयत:सुधी:। क्रूकचेन चूर्ण कृत्वा, ततो शत्रु-गात्रे निक्षिपेत्।। अर्थात् पलाश की सूखी लकड़ी का चूर्ण बनाकर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर ले। जिन स्त्री-पुरुष के बीच विद्वेष करना हो, उनके शरीर पर उक्त चूर्ण को छींट दे। तत्क्षण ही दोनों में झगड़ा हो जायेगा।

२. मंगलवार के दिन कुम्हार के घर से एक हँड़िया ले आये। फिर १ खीरा लाकर रात्रि के समय किसी निर्जन स्थान में जाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर आसन पर बैठे। उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़कर छुरी से खीरे के दो खण्ड कर दे। तब उन दोनों खण्डों की तीनों फाँकों को छुरी से चीर कर अलग-अलग तीन जगह कर दे। इस प्रकार कुछ छ: फाँकें बन जायेंगी। उन फाँकों में से एक-एक फाँक को सात-सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर क्रमश: हँड़िया में रखता जाये। फिर तीन बार उक्त मन्त्र पढ़कर काले कपड़े से उसे ढंक दे और हँड़िया के चारों ओर चूना, काजल तथा सिन्दूर की लकीरें खींच कर किसी चौबटिया पर डाल दे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। अब इसके द्वारा पूर्वोक्त विधि से शत्रुओं में विद्वेष उत्पन्न करे।

भूतादि भगाने का अनुभूत मन्त्र

ॐ गुरु जी! काल भैरू क्या करे? मरा मसान सेवे। मरा मसान से के क्या करे? लाग को-लपट को, काचे को-कलवे को। झाँप को-झपट को, भूत को-प्रेत को! जिन्द को-डाकन को, ताल को-बेताल को। श्रीनाथ जी चकरु घेर घाले। हनूमान का पर्चा। छोड़ डङ्कनी पूत पराया। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, चलो मन्त्र, ईश्वर वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र महात्मा लक्ष्मण गिरि का बताया हुआ है और मेरे द्वारा अनुभूत है। शनिवार की रात्रि को १२ बजे श्मशान में दीपक जलाकर उस पर फूल-बताशे-धूप इत्यादि के द्वारा भगवान् भैरवनाथ की पूजा करे। फिर उक्त मन्त्र का २१ बार जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। मन्त्र से वर्णित कार्यों के लिये प्रयोग करे।

सर्प-विषहरण मन्त्र

गौरा खेती, शिव की बारी। महादेव तेरो रखवारी। दाव चलावे, दाव बाँधे। पाव चलावे, पाव बाँधे। तलवार चलावे, धार बाँधे। अखाड़ चलावे, जवान बाँधे।

मेरी भक्ति गुरु की भक्ति। दोहाई नरसिंह, दोहाई गौरा पार्वती की, लाख दोहाई, हो गुरु बङ्गाली!

विधि–सिद्धयोग में १०८ बार उक्त मन्त्र का जप कर धूप से हवन कर सिद्ध कर ले। आवश्यकता होने पर मन्त्र पढ़ते हुए नीम की टहनी या हाथ से ही झारे।

रक्षा मन्त्र

ऐठक बाँधो, बैठक बाँधो, बाँधो भौंर लिलारी। चार वाफ़न पृथ्वी बाँधो, दुखिया के दुख बाँधो, दसो दुआरी। काली कमल मेघाली, रात सरफा टोना, चोरीं बधा बराई चार, जल बराई, थल बराई, बराई आपन काया। निमुठ हाथ र्थती बाँधो, जो आदित्य की दाया। लोहा की कोठरी, बज्जर दुआर। ओह में राखी, कारणी के पिण्ड प्राण। ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती की दुहाई। सत्-गुरु के बन्द पाँव, हे गुरु प्रताप तुम्हार।

विधि–पूर्वयोग में उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर हवन कर दें। सिद्ध हो जायेगा। तब रोगी (दैहिक, दैविक, भौतिक) को झारे, शीघ्र लाभ होगा।

नजर-भूत एवं रोग निवारण मन्त्र

गुरु सार, गुरु सार। गुरु तन्त्र-मन्त्र, गुरु अलख निरञ्जन। गुरु बिना होम-जाप ना कीजै, श्याम दिया ना दीजै। गुरु बनाए बड़ा भगत के, गुरु-सेवा ना चूको। गुरु के होखे पाँव-पनहिया, पाँवे लागल जाऊँ। जहाँ गुरु मोरे, वहाँ करो तरुवर छाँव। गुरु के होखे फूल पहाड़, गुरु मोर देले विद्या-भण्डार। असी कोस, चौरासी डाइन। मारो डाइन, फारो पेट। मोरा गुन सेनाहीं भेंट। तोर गुन राई-छाई, मोर गुरु एह बेरा से फेल खाई। यहाँ के विद्या ना, कामरू-कामाच्छा के विद्या, नेना जोगिनी के सीख। सत्-गुरु के बन्द पाँव, हे गुरु! सीख तोहार।

विधि–उक्त मन्त्र को पहले कण्ठस्थ कर सिद्ध पर्व में हवन करे। मन्त्र सिद्ध होगा। तब मन्त्र से अभिमन्त्रित विभूति लगा दे।

झाड़-फूँक मन्त्र

१. जै जगत्-जननी माता झाल देवी! वीर बजरङ्ग बली की दुहाई। दुई पद और आधा, सब काम किताब से ज्यादा। पार्वती माता के अढ़ी पद-विद्या। आज मेरा फूके, मेरे गुरुजी का फूको। जब फूकू। तब जागे।

२. हंस गुरु बाना, जे बानो लहकुटी बानो। तोर कोइली, डेढ़ बिहाती। धन-धन तुम्हारे गुरु जी की छाती। तुम्हारे झारे से घूमे हाथी। हाँक परो बोनो गुरु जी के इस पार पारवती केनाम कुटी। कुटी अइज्ञा।

सर्प-विष झाड़ने का मन्त्र

ऊच गिरी पर्वत, धवल गिरी सार। ऐन सरपा, करेन विचार। मारेव थापड़, उतारो विष। उतर विष माटी मिस, आगिन के तिरन। गुरू जी का मन्तर। जब फूको, तब जाय।

विधि–उक्त सभी मन्त्र सम्भलपुर (उड़ीसा) के क्षेत्र में सँपेरों के हैं। 'नागपञ्चमी'

के दिन २१ दीपक जलाकर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर जागृत करना चाहिये एवं ७ नारियल माँ दुर्गा माता पार्वती को चढ़ाकर प्रसाद बाँटना चाहिये। फिर झाड़ना फूँकना चाहिये।

गुरु स्थापना मन्त्र

साधना प्रारम्भ के पहले एक पाँच पत्ती वाली दीपक जलाकर निम्न मन्त्र को सात बार पढ़ें—

गुरू दिन गुरू बाती, गुरू सहे सारी राती।
वासतीक दीवना बार के, गुरू के उतारौं आरती।।

शरीर रक्षा मन्त्र

१. **ॐ नमो आदेश गुरू का। जय हनुमान, वीर महान। मैं करथर हौं तोला प्रनाम, भूत-प्रेत-मरी मसान। भाग जाय, तोर सुन के नाम। मोर शरीर के रक्ष्या करिबे, नहीं तो सीता मैया के सय्या पर पग ला धरबे। मोर फूकें। मोरे गुरू के फूकें, गुरू कौन? गौरा-महादेव के फूकें। जा रे शरीर बँधा जा।**

विधि—उक्त मन्त्र को ग्यारह बार पढ़कर, अपने चारों ओर एक गोल घेरा बना लें। इससे साधना में सभी विघ्नों से साधक की रक्षा होती है।

२. **कट-कट-कट काली करे। काट करेजा भीतर खाय, जिहाँ मैं भेजों, तिहौं तैं जाय। काली दुर्गा का नाम है, पार्वती का काम हैं। टोनहीं के टोना-विद्या पाँगन होब, तो माढ़ जाबे। मोर फूँकें। मोर गुरू के फूँकें। गौरा महादेव के फूँकें। जा, फिर जा।**

विधि—उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित सरसों को पीड़ित व्यक्ति के ऊपर फेंकने से नजर-टोना आदि से मुक्ति मिल जाती है।

टोना लगने का मन्त्र

अगर किसी शत्रु के ऊपर टोना लगाना हो, तो निम्नलिखित मन्त्र को २१ बार नीम्बू के ऊपर पढ़कर चाकू से नीम्बू काटकर शत्रु के घर में फेंक दे। इससे शत्रु प्रताड़ित होगा। अमुक की जगह शत्रु का नाम लेना चाहिये।

तन्त्र-मन्त्र की ऐसी-तैसी, पार्वती की मन्त्र वैसी। जिहाँ पठाऊँ, तिहाँ जाए। 'अमुक' का करेजा, फोर के खाय। काली दुर्गा का नाम है। सर्व-मङ्गला का काम है। मोर फूँकें, मोर गुरू के फूँकें। महादेव पार्वती के फूँकें। जा, चघ जा।

भूत-प्रेत बाँधने का मन्त्र

१. **बडका ताल के पेड़ माँ बँधाय जञ्जीरा। खाले माँ बाजे झाँझ-**

मँजीरा और बाजे तबला निशान। भाग-भाग रे भूत-मसान, पहुँचत है पञ्च-मुखा हनुमान। मोर फूँकें, मोर गुरू के फूँकें। गौरा महादेव के फूँकें। जा रे, भूत बँधा जा।

२. **ऐठक बाँधो। बैठक बाँधो। आठ हाथ की भइया बाँधो। बाँधो सकल शरीर। भूत आवे, भूत बाँधो। प्रेत आवे, प्रेत बाँधो। मरी मसान, चटिया बाँधो। मटिया आवे, मटिया बाँधो। बाँध देहे, फाँद देहे। लोहे की डोरी, शब्द का बन्धन। काकर बाँधे, गुरू के बाँधे। गुरू कौन'' महादेव-पार्वती की बाँधे। जा रे, भूत बँधा जा।**

३. **जल बाँथो, जलाजल बाँधो। जल के बाँधो पीरा। नौ नागर के राजा बाँधो, सोने के बाँधो जजीरा। भूत-प्रेत मसान बाँधो, बाँधो अपन शरीरा। काकर बाँधे, मोर गुरू के बाँधे। गुरू कौन? गौरा-पार्वती के बाँधे। जा रे, भूतबँधा जा। दुहाई सतनाम कबीरदास जी की।**

विधि–उक्त मन्त्रों को पहले १०८ बार जप कर सिद्ध कर ले। 'प्रयोग' के समय सात बार भभूत पढ़कर फूँक मारे। इससे भूत-प्रेत आदि बँध जाते हैं।

बैरी नाशन मन्त्र

पारबती-पारबती! कथौं पारबती कहाँ से आए? ऐसे मन्त्रा छोड़त हो पारबती दाई तोर, तो होय विहँचे....अमुक...बैरी को खाय। खत्म करके मोर घर में आय, काली होके तै पूजा खाय। खत्म करके मोर घर में आय, काली होके तै पूजा खाय। वाचा ला चुकबे, तो महादेव के त्रीशूल ला खाबे। दुहाई गुरू गोरखनाथ की। (जहाँ अमुक है, वहाँ शत्रु का नाम लिखें)

विधि–(१) एक निम्बू (२) एक नारियल (३) चुटकी भर सिन्दूर (४) काले कपड़े का टुकड़ा (५) बबूल के सात काँटे। अमावस्या के दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर ११ बार गूगुल की धूप दे। फिर निम्बू पर शत्रु का नाम लिखकर सात धूप दें। फिर निम्बू पर शत्रु का नाम सिन्दूर से लिखकर सात बार मन्त्र पढ़ते हुए बबूल का एक-एक काँटा निम्बू में चुभोते जायें। काँटों से युक्त इस निम्बू को काले कपड़े में बाँध कर श्मशान में गाड़ दे। नारियल और सिन्दूर को काली-मन्दिर में अर्पित कर दे। शत्रु का नाश होगा।

शत्रु स्तम्भन मन्त्र

जल बाँधु जल-वायु बाँधु। बाँधु जल के तीर। पाँचो काला कलवा बाँधों। बाँधु हनुमन्त वीर! सहदेव तेरो लाकड़ी, अर्जुन तेरी बाण। 'अमुक' की गति थाम दे, यति हनुमत की आन। शब्द साँचा-पिण्ड काँचा, मेरे गुरू का इल्म साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वर वाचा। दुहाई गोरखनाथ की।

विधि–एक मुट्ठी समूचे काले उड़दों पर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर फूँक मारे। फिर उन्हें शत्रु के घर में या घर की दिशा में फेंक दें। शत्रु की गति-मति का स्तम्भन होगा। यदि इसे खोलना हो तो प्रत्येक 'बाँधु' और 'थाम दे' के स्थान पर 'खोल दे' पढ़े। इसी मन्त्र से गिरते गर्भ को भी रोका जाता है, केवल 'अमुक की गति थाम दे' की जगह 'रावन रक्त तर थाम दे' पढ़ना चाहिये और काले डोरे पर सात बार यही मन्त्र पढ़कर गाँठ लगाकर स्त्री की कमर में बाँध देना चाहिये।

शत्रु पीड़ा कारक मन्त्र

वीर, वीर महावीर! सात समुद्र का सोखा नीर, 'अमुका' के ऊपर चौकी चढ़े, हियो फोड़ा चोटी चढ़े। साँस न आवे पड़्यो रहे, कायामाहि जीव रहें लाल लँगोट तेल-सिन्दूर-पूजा माँगे महावीर। अन्तर कपड़ा पर तेल-सिन्दूर, हजरत वीर की चौकी रहे। शब्द साँचा-पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई रामचन्द्र की।

विधि–पहले किसी मङ्गलवार को अनुमान मन्दिर में जाकर तेल-सिन्दूर, लाल फूल चढ़ाये। गुड़ का भोग लगाकर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। प्रयोग के समय मंगलवार की आधी रात को उक्त मन्त्र द्वारा हनुमान जी को लाल वस्त्र, चने की दाल, गुड़ का भोग लगाये। फिर दूसरे लाल कपड़े में तिल, सिन्दूर से शत्रु का नाम लिखकर 'अमुक' की जगह शत्रु का नाम बोलकर सात सुइयाँ कपड़े में चुभो दे। उस कपड़े को मिट्टी की छोटी-सी हाँड़ी में रखकर जमीन में गाड़ दे, तो शत्रु भारी कष्ट में रहेगा। जब अच्छा करना हो, तो जमीन से कपड़ा निकाले, सूई निकाल कर उसे धो डाले।

विशेष–उक्त मन्त्र की साधना करते समय स्त्री सम्पर्क से दूर रहे, सत्य बोले, भूमि पर शयन करे, मांस-मदिरा का सेवन न करे। अन्यथा परिणाम उल्टा हो जायेगा।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

गौरी गण्डा दे गई, ईश्वर दे गया वाचा। महादेव थापा घर गया, शब्द भया सोचा। तथा त्रिया की चिन्ता, मेरी दश मांस। बाँधु बीस पाख, बाँधु उसका पैर। गर्भ खिसके, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, सत्-नाम आदेश गुरू की।

विधि–सात बार जप कर कच्चे सूत का गण्डा बनाकर स्त्री की कमर में बाँध दे। गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है। परीक्षित है।

टोना झारने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का। काया कलप कपाट, बज्र लङ्का उलट पलङ्का। पलट, दूर-दूर हट, टोना नजर। शब्द सांचा, फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा। दुहाई गुरू गोरखनाथ की ॐ।

विधि–एक कपड़े का पलीता बनाकर अलसी के तेल में भिगोकर काँसे की थाली में पानी भरकर उसके ऊपर पलीते को जलाये। तेल ताली में टपकेगा। १२ बार मन्त्र पढ़कर फूँक मारे और थाली की थोड़ी-सी राख माथे पर लगा दे। टोने का प्रभाव दूर होगा।

निरोग, दीर्घायु मन्त्र

कात पूनम काल का, बारह बरस क्वाँर।
एको देवी जानिए, चौदह भुवन-द्वार।।
द्वि-पक्षे निर्मलिए, तेरह देवन देव।
अष्ट-भुजी परमेश्वरी, ग्यारह रुद्र देव।।
सोलह कला सम्पूर्णी, तीन नयन भरपूर।
दसों द्वारी तू ही माँ, पाँचों बाजे नूर।।
नव-निधी षड-दर्शनी, पन्द्रह तिथी जान।
चारों युग में काल का, कर काली! कल्याण।।

चमत्कारी महा-काली सिद्ध अनुभूत मन्त्र

ॐ सत् नाम गुरु का आदेश। काली-काली महा-काली, युग आद्य काली, छाया काली, छूं मांस काली। चलाए चले, बुलाई आए, इति विनिआस। गुरु गोरखनाथ के मन भावे। काली सुमरूँ, काली जपूँ, काली डिगराऊ को मैं खाऊँ। जो माता काली कृपा करे, मेरे सब कष्टों का भञ्जन करे।

विधि–उक्त मन्त्र का सवा लाख जप ४० या ४१ दिनों में करे।

सामग्री–लाल वस्त्र व आसन, घी, पीतल का दिया, जौ, काले तिल, शक्कर, चावल, सात छोटी हाँड़ी-चूड़ी, सिन्दूर, मेंहदी, पान, लौंग का जोड़ा, सात मिठाइयाँ, बिन्दी, चार मुँह का दिया।

पहले उक्त मन्त्र को कण्ठस्थ कर ले। शुभ समय पर जप शुरू करे। गुरु-शुक्र अस्त न हों। दैनिक 'सन्ध्या-वन्दन' के अतिरिक्त अन्य किसी मन्त्र का जप ४० दिनों तक न करे। भोजन में दो रोटियाँ १० या ११ बजे दिन के समय ले। ३ बजे के पश्चात् खाना-पीना बन्द कर दे। रात्रि ९ बजे पूजा आरम्भ करे। पूजा का कमरा अलग हो और पूजा के सामान के अतिरिक्त कोई सामान वहाँ न हो। प्रथम दिन कमरा कच्चा है तो गोबर का लेपन करे। पक्का है तो पानी से धो ले। आसन पर बैठने से पूर्व स्नान नित्य करे। स्त्री हो या पुरुष—शिर में कङ्घी न करे। माँ की सुन्दर मूर्ति रक्खे और धूप-दीप जलायें। जहाँ पर बैठे, चाकू या जल से सुरक्षा-मन्त्र पढ़कर रेखा बनाये। पूजा का सब समान 'सुरक्षा-रेखा' के अन्दर होना चाहिये।

सर्वप्रथम गुरु-गणेश वन्दना कर १ माला अर्थात् १०८ मन्त्रों से हवन करे।

हवन के पश्चात् जप शुरू करे। जप समाप्ति पर जप से जो रेखा-बन्धन किया था, उसे खोल दे। रात्रि में थोड़ी मात्रा में दूध-चाय ले सकते हैं। जप के सात दिन बाद एक हाँड़ी लेकर पूर्वलिखित सामान (सात मिठाई, चूड़ी इत्यादि) उसमें डाले। ऊपर ढक्कन रख कर उसके ऊपर चार मुख का दिया जला कर सायं समय जो आपके निकट हो, ऐसी रजबाहा या नदी या नहर या चलता पानी हो, उस जल में हँड़िया को नमस्कार कर बहा दे। लौटते समय पीछे मुड़कर न देखे। ३१ दिनों तक धूप-दीप जप करने के पश्चात् ७ दिनों तक एक बूँद रक्त जप के अन्त में पृथ्वी पर टपका दें और ३९ वें दिन जिह्वा का रक्त दें। मन्त्र सिद्ध होने पर इच्छित वरदान प्राप्त करे।

सावधानियाँ–प्रथम दिन जब से पूर्व हण्डी को जल में सायं समय छोड़े और एक-एक सप्ताह बाद उसी प्रकार समय सायं उसी स्थान पर, यह हाँड़ी छोड़ी जायेगी। जप के एक दिन बाद दूसरी हाँड़ी छोड़ने के पश्चात् भूत-प्रेत साधक को हर समय घेरे रहेंगे। जप में लगा रहे, घबराये नहीं। वे सब कार के अन्दर प्रविष्ट नहीं होंगे। मकान में आग लगती भी दिखाई देगी; परन्तु आसन से न उठे। ४० या ४२ वें दिन माँ वर देगी। जो इच्छा हो, माँग ले। भविष्य-दर्शन व होनहार घटनायें तो सात दिन जप के बाद ही ज्ञात होने लगेंगी। एक साथी या गुरु कमरे के बाहर नित्य रहना चाहिये।

साधक को निर्भीक व आत्म-बलवाला होना चाहिये। जो भविष्य ज्ञान एवं होनहार घटना ४० दिन के भीतर हो, उसे किसी को न बताये। वरदान प्राप्ति के बाद ही सारे कार्य करे।

सङ्कट-निवारक काली मन्त्र

काली काली, महा-काली। इन्द्र की पुत्री ब्रह्मा की साली। चाबे पान, बजावे थाली। जो बैठो, पीपल की डाली। भूत-प्रेत, मढ़ी मसान। जिन्न को जन्नाद बाँध ले जानी। तेरा बार न जाय खाली। चले मन्त्र, फुरो वाचा। मेरे गुरु का शब्द साचा। देख रे महा-बली, तेरे मन्त्र का तमाशा। दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

सामग्री–माँ काली की फोटो, एक लोटा जल एक चाकू, नीम्बू, सिन्दूर, बकरे की कलेजी, कपूर की ६ टिकियाँ, लगा हुआ पान, लाल चन्दन की माला, लाल रंग के फूल, ६ मिट्टी की सराई, मद्य।

विधि–पहले स्थान शुद्धि, भूत-शुद्धि कर गुरु-स्मरण करे। एक चौकी पर देवी की फोटो रखकर धूप-दीप कर पञ्चोपचार पूजा करे। एक लोटा जल अपने पास रक्खे। लोटे पर चाकू रक्खे। देवी को पान अर्पण कर प्रार्थना करे—हे माँ! मैं अबोध बालक तेरी पूजा कर रहा हूँ। पूजा में जो त्रुटि हों उन्हें क्षमा करें। यह प्रार्थना अन्त में और प्रयोग के समय भी करे।

अब छः अङ्गारी रक्खे। एक देवी के सामने व पाँच उसके आगे। ११ माला प्रातः, ११ माला रात्रि ९ बजे के पश्चात् जप करे। जप के बाद सराही में अङ्गारी करे व अङ्गारी करे अङ्गारी पर कलेजी रखकर कपूर की टिक्की रक्खे। पहले माँ काली को 'बलि' दे। फिर पाँच बलियाँ गणों को दे। माँ के लिए जो घी का दीपक जलाये, उससे ही कपूर को जलाये और 'मद्य' की धार निर्भय होकर दे। बलि केवल मङ्गलवार को करे। दूसरे दिनों में केवल 'जप' करे। होली-दीपावली ग्रहण में या अमावस्या को मन्त्र जागृत करता रहे। कुल ४० दिन का प्रयोग है।

यात्रा की सफलता के लिए

राम लखन कौशिक सहि, सुमिरहु करहु पयान।
लच्छि लाभ लै जगत यश, मङ्गल सगुन प्रमान।।

विधि—यात्रा में प्रस्थान करते समय उक्त मन्त्र एक बार स्मरण कर लें और इसका प्रभाव देखें। यात्रा में सहायक-ही-सहायक मिलेंगे और मार्ग सुखदायी बन जायेगा।

यात्रा के गन्तव्य स्थान में सुविधा के लिए

गच्छ गौतम! शीघ्र त्वं, ग्रामेषु नगरेषु च।
असनं वसनं चैव, ताम्बूलं तत्र कल्पय।।

विधि—यदि गन्तव्य स्थान अपरिचित हो और वहाँ रहने एवं भोजन की सुविधा का ठिकाना न हो तो यात्रा में उस स्थान की सीमा पर ही रास्ते से धूल या ७ कङ्कड़ उठाकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर आगे की ओर फेंक दें। सारी सुविधा सहज ही प्राप्त हो जायेगी। अनुभूत है।

कार्य की सफलता के लिए

शूर शिरोमनि साहसी, सुमति समीर-कुमार! अगम सुगम सब काम करु, कर-तल सिद्धि विचार।।

विधि—कार्यारम्भ में उक्त मन्त्र पढ़ ले, अवश्य ही सफलता मिलेगी।

भण्डार अक्षय करने के लिए

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ईश्वर-ध्यानम्। अन्नपूर्णायै नमः। ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं ह्रीं हुङ्क्ली कुरु स्वामिनी जय विजय अप्रतिम-चक्रे मम कर्षय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—गाय का गोबर या मन-पसन्द रंग का घोल लेकर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर अभिमन्त्रित कर उससे घर के चारों ओर रेखा खींच दे। ऐसा कर देने पर घर में चोर-डाकुओं के घुसने का भय, वज्र-भय और दुष्ट मनुष्यों के प्रवेश का भय नहीं रहता।

भूत-प्रेत से रक्षा के लिए

जय हनुमान ज्ञान-गुन-सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।।

विधि–जहाँ भी भूत-प्रेत का भय हो, वहाँ उक्त चौपाई पढ़ दे। इसे सुनते ही वे भाग जायेंगे और आप सुरक्षित हो जायेंगे। किसी को भूत पकड़ ले तो उसे भी १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित पवित्र भस्म लगा दे, भूत उसे छोड़कर भाग जायेगा।

कारागसा मुक्ति के लिए

विधि–यदि किसी स्वजन को मुकदमें में कारागार की सजा होने वाली हो या हो गयी हो, तो अनुष्ठानपूर्वक 'श्री हनुमान-चालीसा' का १०८ बार पाठ कर ले या किसी ब्राह्मण से करा दे। कारागार से अवश्य मुक्ति मिल जायेगी। अनेक बार का मेरा अनुभूत है।

१. हनुमान के अखाड़े का वीर मन्त्र–करो का वन चले। नटक व चटक से चले। बारह सौ वीर, चौदह सौ सान चले। न चले, तो हनुमन्त की दुहाई।

२. विद्या-प्राप्ति मन्त्र–ॐ वागा-बागा वाग-वादनी स्वाहा।

३. कर्णेश्वरी मन्त्र–ॐ करन-करन करनेश्वरी।

४. सर्व-कार्य साधक काली मन्त्र–काली काली कलकत्ते वाली। हरिद्वार में आकर डंका बजाओ। अमुक का काम करो, न करो तो दुहाई। दुहाई राजा रामचन्द्र, हनुमान वीर की।

५. डमरु वादन मन्त्र–ॐ सकल-घर वाष्टक सिद्धि-वृद्धि नीच कमलाङ्ग। जर सती सुमरौ नाथ, भूत लिट कर, कपाट ठोगरी-रोगरी। धात फेबी राज सर सण्ठी ज़ाल, कण्ठी माल भुजे भुजङ्ग प्रताप। सुख भव्य भैरव भौ सुरुक ॐ ॐ क्रें क्रें ह्रीं ह्रीं फुः फुः हुं हुं हुं ठे ठे ठे ॐ।

६. कारण अघोर-मन्त्र–हं कपाल का पात्र, मध भगा। अघोरी पीने खड़ा। जो पीवै कोई ई अघोरी पात्र, घूमै जा वही, आवै न उसे साँस। ये शब्द साँचा, घोर (अघोर) का वचन साँचा, पिण्ड काचा। दिखा रे अघोरी। अपने मन्तर का तमाशा। हूं फट्, अघोर शिव-शङ्कर की दुहाई।

७. भूत-प्रेत झाड़ा मन्त्र–ॐ उजियारे देव बल-ख़ण्डि भरत जाए, पुत्र वीर नाम धरो। हनुमन्त ताप-तिजारी, तारा बल्लियाँ डङ्कनी-सङ्कनी, भूत-प्रेत, जिन्द, मसान, छत्तीस हू दास, छत्तीस हू दास बलाय जाय। चौवटी मूठ उल्टी मारौ, सीधी गिरै जर वरे। कर, भस्म बन निवरो, तौ तीन तारौ बेल। फुरै जा जरा, ईश्वरा वाचा। मेरे गुरु का मन्त्र साँचा।

८. ज्वरनाशक मन्त्र–ॐ नमो अजैपाल की दुहाई, जो ज्वर रहे, तो महादेव की दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

९. अग्निशमन मन्त्र–ॐ नमो कोरा करावा, जल का भरिया। ले गौरा के शिर पर धरिया। ईश्वर ले गौरा नहाई, जलती अग्नि शीतल हो जाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरौ वाचा।

१०. दूध वृद्धि मन्त्र–थन बव्हारौ। थन बार बव्हारौ। बव्हारौ अहीर की नोई, गाय-भैंस का दूध बव्हारौ। पाचौ पाण्डवो की दुहाई।

११. भूतादि को मारने का मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरु जी को। वीर बली हनुमन्त जी, मुद्गर दाहिने हाथ। मार-मार पछाड़िए पर्वत बाँए हाथ। भूत-प्रेत अख, डाकिनी, जिन्द खईस, मसाण। इनमें वचे न एकहूँ, निरञ्जन निराकार की आन।

१२. गुप्त बात जानने का मन्त्र–गायत्री का पीर! अगम की बात बताओ। न बताओ, तो माँ का दूध हराम, बहन के साथ करे हराम।

१३. मन्त्र–श्री विम्ह जी महाराज लिखते हैं कि आपको श्री रामचन्द्र जी की दुहाई है। श्री हनुमान जी की दुहाई है। श्री नृसिंह भगवान् की दुहाई है। श्री भैरो जी की दुहाई है। श्री आदि-शक्ति माता जी की दुहाई है।

१४. मन्त्र–हरि ॐ नमो शिवाय शिव गुरु रामाय।

उक्त चौदहों मन्त्रों की साधना-विधि पाण्डुलिपियों में वर्णित नहीं है। पहला मन्त्र हनुमान के अखाड़े के वीर का, दूसरा मन्त्र विद्या-प्राप्ति का, तीसरा मन्त्र एक हस्तलिखित उर्दू भाषा के ग्रन्थ में है।

बुखार नाशक प्रयोग

लोहार, लोहरवा की बेटी! तोर बाप का करत हय? 'कोइला काटत हय।' 'ओ छुरा का करी?' 'डीठ काटी, टोना काटी और काटी टापर।' दोहाई गुरु धनन्तर की। लोना चमारिन की दोहाई। महादेव पार्वती की दोहाई। दोहाई महावी हनुमान की। तैंतीस कोटि देवतन की दोहाई। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वर वाचा।

विधि–किसी भी 'एकादशी' को गुड़-घी का होम कर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़ने से वह सिद्ध हो जाता है। नजर, बुखार आदि को उतारने की विधि यह है कि 'राई' या 'सरसों' लेकर रोगी के सिर से पैर तक झारे और 'राई' को अग्नि में डाले। एक बार पढ़े और अग्नि में डाले। इस प्रकार सात बार मन्त्र पढ़े और अग्नि में 'राई' छोड़ता जाय। तुरन्त ही नजर, ज्वर आदि का दोष उतर जाता है। बिल्कुल 'रामबाण' जैसा फलदायक यह 'शाबर मन्त्र' है।

सिर पीड़ा दूर करने के लिए

लङ्का में बैठ के, माथ हिलावे हनुमन्त। सो देखि के, राक्षण-गण पराय दूरन्त। बैठी सीता देवी, अशोक-वन में। देखि हनुमान को, आनन्द भई

मन में गई उद विषाद, देवी स्थिर दरशाय। 'अमुक' के सिर, व्यथा पराय। 'अमुक' के नहीं, कछू पीर, नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरि दासी चण्डी की दुहाई।।

विधि–सिर की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दे। सिर को अपने हाथ से पकड़ कर मन्त्रोच्चारण करते हुए झाड़े। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले।

आधा सीसी दूर करने के लिए

१. बन में व्यायी अञ्जनी, कच्चे वन फल खाय। हाँक मारी हनुवन्त ने, इस पिण्ड से आधा सीसी उतर जाय।

२. ॐ नमो। वन में ब्यायी वानरी, उछल वृक्ष पर जाय। कूद-कूद कर शाखा-नरी, कच्चे वन-फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हङ्कारत हनुमन्त जी आधा-सीसी जाय।।

विधि–किसी एक मन्त्र से भस्म से झाड़े।

नेत्र रोग शमन के लिए

ॐ नमो। बने बिआई बनारी, जहाँ-जहाँ हनुवन्त। आँख पीड़ा कषावरि गिहिया थनै लाइ चरिउ आई भस्मन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि–आँख पर हाथ फेरते हुए सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूँकने से व्यथा मिट जायेगी।

कर्ण-मूल की पीड़ा दूर करने के लिए

वनरा गाँठि वानरी, तो डांटे हनुमन्त कण्ठ। बिलारी बाघी थनैली कर्ण-मूल सम जाइ। श्रीरामचन्द्र की बानी, पानी पथ होइ जाय।।

बिच्छू का विष उतारने के लिए

१. पर्वत ऊपर सुरही गाइ, कारी गई की चमरी पूछी। तेकरे गोबरे बिछी बिआई। बिछि तोरे कर अठारह जाति। छ कारी, छ पियरी, छ भूमाधारी, छ रत्न-पवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरु बिछी हाट-हाट पोर-पोर ते। कस मारे लीलकण्ठ, गर-मोह महादेव की दुहाई। गौरा पार्वती दुहाई। अनीत टेहरी बन छाई। उतरहि बीछी, हनुमन्त की आज्ञा। दुहाई हनुमन्त की।

२. ॐ हरि-मर्कट! मर्कटाय स्वाहा।

विधि–कोई एक मन्त्र सिद्ध कर झाड़ से जहर उतर जाता है।

अण्ड वृद्धि दूर करने के लिए

ॐ नमो आदेश गुरू को। जैसे के लेहु रामचन्द्र कवूत, ओसई करहु राघ बिनि कबूत। पवन-पूत हनुमन्त! धाऊ हर-हर रावन कूट। मिरावन श्रवइ अण्ड, खेतहि श्रवइ अण्ड-विहण्ड खेतहि श्रवइ। वाजं गर्भ हि श्रवइ। स्त्री पीलहि श्रवइ। शाप हर-हर जम्बीर हर जम्बीर, हर-हर हर।

विधि–मन्त्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोश को हल्के हाथ में गले तथा अभिमन्त्रित जल को पिलावे, तो अण्ड-वृद्धि शान्त होती है।

भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए

बाँधी भूत। जहाँ तु उपजी छाड़ी, गिरे पर्वत चढ़ाई। सर्ग दुहेली, सुजभि झिल-मिलाहि। हुङ्कारे हनुवन्त, पचारह भीमा। जारि-जारि-जारि, भस्म करै जौ चापें सींउ।

विधि–मन्त्र सिद्ध कर प्रयोग करे। इस मन्त्र से भूत-प्रेत भाग जाते हैं। अथवा भस्म हो जाते हैं।

चूहे दूर करने के लिए

पीत-पीताम्बर, मूसा गाँधी। ले जाइहु हनुवन्त! तु बाँधी। एक हनुवन्त! लङ्का के राउ, एहि कोणे पैसेहु, एहि कोणे जाऊ।।

विधि–स्नान कर हल्दी की पाँच गाँठें और अक्षत लेकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर घर अथवा खेत में डाल देने से चूहे भाग जाते हैं।

सुअर और चूहा दूर करने के लिए

हनुवन्त धावति, उदरहि ल्यावइ बाँधि। अब खेत खाय सुअर और घर में रह मूस। खेत-घर छाँड़ि, बाहर भूमि जाइ। दोहाई हनुमान की, जो अब खेत मा सुअर, घर मह मूस जाइ।

विधि–मन्त्र ८ के अनुसार।

शरीर रक्षा के लिए

ॐ नमः वज्र का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा का ताला। मेरे आठों याम का, यती हनुमन्त रखवाला।

विधि–उक्त मन्त्र को एक हजार जप कर सिद्ध कर ले। फिर तीन बार पढ़कर शरीर पर फूके तो कार्य सिद्ध होगा।

अर्श रोग निवारण के लिए

ॐ काकाकता कोरी कर्त्ता, ॐ करता से होय। परसना दश हंस प्रकटे, खूनी बादी बवासीर न होय। मन्त्र जान के न बतावे, द्वादश ब्रह्म-हत्या

का पाप होय। लाख जप करे, तो उसके वश में न होय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, तो हनुमान का मन्त्र साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–रात्रि के रखे जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शौच समय प्रक्षालन करे तो 'बवासीर' रोग नष्ट हो जाता है।

पीलिया रोग निवारण के लिए

ॐ नमो वीर वैताल, असराल नारसिंह देव। खादी तुषादी पीलिया कूं, भिदाती करै-झारै। पीलिया रहै न नेक। निशान जो कही रह जाय, तो हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–मन्त्र से जल अभिमन्त्रित करके पिलाये।

दाँत का कीड़ा झाड़ने के लिए

ॐ नमो आदेश गुरू का। वन में व्यायी अञ्जनी, जिन जाया हनुवन्त। कीड़ा मकड़ा-माकड़ा, ए तीनों भस्मन्त। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र को एक लाख जपने से सिद्ध होता है। नीम की टहनी से झाड़ने से कीड़ा निकल जाता है।

नेत्ररोग शमन

ॐ झलमल जहर में भरी सलाई, अस्ताचल पर्वत से आई। जहाँ बैठा हनुमन्ता जाई। फूटै न पाकै, करै न पीड़ा। जती हनुमन्त हरे पीड़ा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्यनाम, आदेश गुरू का।

विधि–मन्त्र को सिद्ध कर ११ बार उच्चारण करते हुए नीम की टहनी से झाड़ने से नेत्ररोग शान्त होता है।

अग्नि बन्धन करने का मन्त्र

अज्ञान बाँधो, विज्ञान बाँधो। घोरा घाट, आठ कोटि वैसन्दर बाँधी। अस्त हमारा भाई, आन हि देखे। झझके मोहे देखे, बुझाई हनुवन्त। बाँधों पानी होइ जाय अग्नि-भवेत के जसमत्ती हाथी होई। वैसन्दर बाँधो, नारायण साखि मोरि। गुरू की भक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–सिद्ध मन्त्र से सात कङ्कड़ी पढ़कर फेंकने से अग्नि शान्त होती है।

प्रेत बाधा-निवारण के लिए

ॐ दक्षिण-मुखाय पञ्च-मुख-हनुमते कराल-वदनाय नारसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः सकल भूत-प्रेत दमनाय स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र को कम-से कम दस हजार जप कर सिद्ध कर ले, मन्त्र जप के बाद अष्टगन्ध से हवन करना चाहिये। तब प्रयोग करें।

विष उतारने के लिए

ॐ पश्चिम-मुखाय गरुड़ाननाय पञ्च-मुख-हनुमते मं मं मं मं मं सकल-विष-हराय स्वाहा।

विधि—दीपावली के दिन अर्धरात्रि को घी का दीपक जला कर हनुमानजी को साक्षी मानकर दस हजार जप लेने से सिद्ध हो जाता है। किसी विषधारी के विष को शान्त करने के लिए ऊँचे स्वर में उच्चारित करते हुए रोगी को सुनाने से विष उतर जाता है।

शत्रु संकट निवारण

ॐ पूर्व-कपि-मुखाय पञ्च-मुख-हनुमते टं टं टं टं टं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा।

विधि—उक्त मन्त्र के नियमित जप से शत्रुभय दूर होता है।

महामारी, अमङ्गल ग्रहदोष एवं भूत-प्रेतादि नाश के लिए

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय! भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्म-राक्षस-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना मारी-महामारी-राक्षस-भैरव-वेताल-ग्रह-राक्षसादिकान् श्रणेन हन-हन, भञ्जय-भञ्जय, मारय-मारय, शिक्षय-शिक्षय। महा-माहेश्वर-रुद्राव-तार! ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्व-दुष्ट-जन-मुख-स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

विधि—मङ्गलवार को दिन भर व्रत रखने के बाद अर्धरात्रि में हनुमानजी के मन्दिर में सात हजार जप करने से सिद्ध होता है। सिद्धि के बाद हनुमानजी के सामने दशांश हवन करना चाहिये।

हनुमानजी की वीर साधना

कुरु कामन चलै। नाटक व चैण्टक से चले। हनुमान के अखाड़े से चले। बावन सौ वीर, चौदह मसान चलें। ना चलें, तो बीबी फात्मा खातून पास दामन की दुहाई।

विधि—उक्त मन्त्र की साधना-विधि मुझे अय्यूब नामक एक हाफिजजी से प्राप्त हुई है। आप ६०-६५ वर्ष के वृद्ध हैं। इस मन्त्र की साधना उनके एक परिचित व्यक्ति ने की थी। पूर्ण विधि इस प्रकार है—

शनिवार के दिन बिना किसी के टोका-टाकी किये किसी भी समय कुम्हार के यहाँ जाये। वहाँ से उसके बर्तन बनाने का डोरा तथा थोड़ी-सी गीली मिट्टी चुरा लाये। कुम्हार जहाँ बर्तन बनाते हैं, वहीं उसके चाक के पास गुंथी हुई गीली मिट्टी रहती है। गीली मिट्टी के पास ही एक मिट्टी का बर्तन भी रहता है। जिसमें पानी भरा रहता है

और कुम्हार उसमें अपना हाथ धोता है। उस बर्तन से थोड़ा-सा पानी भी किसी बर्तन में ले आये, जिससे उस पानी से कुम्हार के यहाँ से लाई हुई गीली मिट्टी को आवश्यकतानुसार सानकर मिट्टी की लुगदी बना ले। मिट्टी तथा डोरे को घर लाकर चुपचाप कहीं एकान्त स्थान में रख दें।

अब उसी शनिवार को या अगले शनिवार को उस गीली मिट्टी में से छोटी-छोटी १२० या १०० गोलियाँ बनाये। १० या २० गोलियाँ अधिक बनानी चाहिये, जिससे यदि कुछ गोलियाँ टूट जाये या उनमें दरार पड़ जाये, तो भी १०० से कम न हों। गोलियाँ 'तुलसी' या 'लाल चन्दन' की माला के दानों के बराबर या उससे कुछ बड़ी बनाये। गोलियों को बीच में से दबाकर चौड़ी कर दे। गोलियों में कौए के पंख से छेद कर उन्हें सुखा ले। गोलियाँ बनाते समय गोलियों को किसी बर्तन या कागज से ढँककर रखे। खुली हवा में गोलियाँ बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि गोलियों पर अपनी छाया न पड़े।

कुम्हार के यहाँ लाये, उसी से गोल्यियों को पिरोकर माला बनाये। यदि डोरा छोटा और दोहरा हो, तो उसके एक कोने पर गाँठ लगाकर उसे एकहरा कर दे। इससे डोरा लम्बा हो जायेगा। डोरा छोटा न पड़े, इसलिए गोलियों को दबाकर चौड़ा किया जाता है। अब इस माला को मिठाई के किसी खाली स्वच्छ डिब्बे में या किसी अन्य स्वच्छ डिब्बे में, स्वच्छ रुई या स्वच्छ कपड़े के ऊपर रखे, जिससे वह टूटने न पाये।

किसी 'शनिवार' से ही साधना प्रारम्भ करे। यदि शुक्लपक्ष हो, तो अति-उत्तम। साधना हेतु एकान्त स्थान को खोजे। साधना का स्थान ऐसा होना चाहिये, जहाँ प्रातःकाल सूर्य भगवान् निकलते हुए स्पष्ट दिखाई देते हों। साधना के लिए एक जोड़ा नया कपड़ा या पुराना धोकर स्वच्छता से रखे। इन्हें पहन कर साधना करे। 'आसन' के लिए आसन के बराबर कपड़ा और पूजा-सामग्री रखने के लिए दूसरा कपड़ा रखे। 'नैवेद्य' के लिए सवा पाव सूखी मिठाई पाँच प्रकार की, नारियल का एक सूखा गोला होना चाहिये। नित्य स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर सूर्योदय से पूर्व उस स्थान पर जाये, जहाँ साधना करनी है।

सूर्योदय से कुछ पूर्व वस्त्र उतार कर पूर्णतया नग्न होकर स्वच्छ कपड़े पर बैठे। पूजा-सामग्री अपने सम्मुख स्वच्छ वस्त्र पर रख ले। जैसे ही सूर्य भगवान् निकलते हुए दिखाई पड़े, वैसे ही पूर्वनिर्मित 'मिट्टी की माला' से जप प्रारम्भ कर दे। 'माला' को हाथ में लटका कर जप न करे; अन्यथा 'माला' टूट सकती है। साधना के बाद 'माला' को सावधानी से डिब्बे में तथा पूजा-सामग्री को एक थैले में रख लेना चाहिये। इस प्रकार सात दिन जप करना चाहिये।

सातवें दिन 'जप' पूरा होने के पूर्व हनुमानजी के 'वीर' का दर्शन होगा। उनसे

डरे नहीं। जप को पूरा कर, 'माला' को छोड़कर बाँयें हाथ में सूखे नारियल के गोले को पकड़े और दाँयें हाथ की मुट्ठी से उसके दो टुकड़े करे। एक टुकड़ा 'वीर' को दे और दूसरा टुकड़ा तथा शेष पूजा-सामग्री एक डिब्बे में अच्छी तरह से बन्द करके रखे। डिब्बे को बाहर से अच्छी तरह से सील कर उसे ऐसे स्थान पर गाड़ें, जहाँ धूप या पानी न जाये। जब तक यह सामग्री गड़ी रहेगी, तब तक 'वीर' प्रयोगकर्त्ता के साथ रहेंगे और उसके द्वारा स्मरण करने पर अभीष्ट कार्यों को पूरा करेंगे।

वशीकरण प्रयोग

आगिशनी माल खानदानी। इन्नी अम्मा, हव्वा यूसुफ जुलैखानी। 'फलानी' मुझ पै हो दीवानी। बरहक अब्दुल कादर जीलानी।

विधि–यह प्रयोग भी मुझे हाफिजजी की कृपा से प्राप्त हुआ है। पूरा प्रयोग २१ दिन का है, किन्तु ११ दिन में ही इसका प्रभाव दिखाई देने लगता है। इस प्रयोग का दुरुपयोग कदापि नहीं करना चाहिये; अन्यथा स्वयं को हानि भी हो सकती है। साधनाकाल में मांस, मछली, लहसुन, प्याज आदि वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिये। दूध, दही, घी आदि का भी प्रयोग नहीं करना चाहिये। स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहन कर साधना करनी चाहिये। पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिये। लम्बी धोती या स्वच्छ वस्त्र को तहमद की तरह बाँध कर साधना करनी चाहिये। शेष बची हुई धोती या कपड़े को शरीर पर लपेटते हुए सिर को ढंक लेना चाहिये। एक ही कपड़े से पूरा शरीर ढंकना चाहिये, जैसा हिन्दू स्त्रियाँ पहनती हैं।

उक्त मन्त्र की साधना रात्रि में, जब 'नमाज' आदि का समय सामप्त हो जाता है, तब करनी चाहिये। साधना करने से पहले मुसलमानी विधि से वज़ू करे। हो सके, तो नहा ले। जप या तो हिन्दू-विधि से करे या मुसलमानी विधि से। हिन्दू-विधि में माला के दाने अपनी तरफ घुमाये जाते हैं। मुसलमानी विधि में माला के दाने अपनी तरफ से आगे की ओर खिसकाये जाते हैं। प्रतिदिन ११०० बार जप करे। यदि ११ दिन से पहले 'साध्य' आ जाये, तो न तो अधिक घुल-मिलकर बात करे, न ही किसी प्रकार का क्रोध करे। कोई बहाना बनाकर उसके पास से हट जाये। यदि ११ दिन में कार्य न हो, तो २१ दिन तक जप करे। मन्त्र में 'फलानी' की जगह 'साध्या' का नाम लेना चाहिये।

काला मयींयो इल इजामा वहैया रमीम।

साधना में एक मिट्टी का चौड़ा वर्तन रखे। बर्तन में हवा जाने के लिए नीचे की ओर दो-चार छोटे-छोटे छेद करे। बर्तन में आग की लकड़ी के कोयले भर दे। कुछ कोयले अलग रख ले। बर्तन के कोयले जलाकर एक बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़े और ग्यारह बार 'दरूद शरीफ' पढ़े तथा खुदा से 'प्रयोग' की सफलता हेतु दुआ करे। फिर

बाँयें हाथ में एक काली मिर्च तथा दाहिने हाथ में आम की लकड़ी का एक कोयला लेकर उक्त मन्त्र ४० बार पढ़े। काली मिर्च और कोयले को फूँक मारते हुए मिट्टी के बर्तन में जलते हुए कोयले पर डाले। यदि 'साध्य' का नाम ज्ञात हो तो उसका नाम कभी-कभी ले ले। अन्यथा उसका स्मरण करे। इस प्रकार ११ दिनों तक करे। यदि बीच में 'साध्य' आ जाये तो भी ११ दिन तक 'प्रयोग' करे। अधूरा न छोड़े।

रक्षा प्रयोग

मोहम्मद चले दिसावरा, चारों रस्ते चाक चौबन्द। बिच्छू-ततैया, साँप-कुत्ते, चोर-चोर, ठग-लुटेरे, दुर्गटना वगैरा सबका रास्ता और मुँह बन्द- 'अमुक' दिन के लिए। कहै 'कबीर' धर्म पास से संग जिनके सत्यं पुरुष हों। दुहाई साँचे नाम की है।

विधि–उक्त मन्त्र मुझे एक हिन्दू भगतजी ने बताया था। प्रयोग ४० दिन का है। पहले 'चन्द्रगहण' या 'सूर्यग्रहण' में उक्त मन्त्र को जपकर सिद्ध करे। फिर ४० दिनों का 'अनुष्ठान' करे। पहले दस दिन उक्त मन्त्र का ११०० बार जप करे। फिर शेष तीस दिन ५, ७, ११ या २१ बार जप करे। जप पश्चिमाभिमुख होकर जपे। अनुष्ठान काल में मांस-मछली का प्रयोग न करे। बाद में आवश्यकता होगी। घर से बाहर यात्रा पर जाये, तो उक्त मन्त्र ३ या ५ बार पढ़कर फूँक मारे। 'अमुक' की जगह जितने दिन के लिये घर से बाहर जा रहे हों, उससे एक या दो दिन अधिक है। इस प्रकार यात्रा करने से सभी प्रकार की बाधायें नष्ट होंगी। यात्रा सुरक्षित होगी।

मोहिनी-प्रयोग

गुरसत गुरसत गुरु मनाऊँ। गुरु चरमन में शीश नवाऊँ। ऐड़ी छोड़ तलवा तक मोहूँ। नौ नारी अदक सुलैना। जो कोई तेरा मोहन जोड़ै, सदन कातती का तकला तोड़ै। पीसती का चकला फटै। जंगल फिरती गिर मोह, महलों कीरानी मोह। वट की पात, दही का दौना। इतना करतब न करे, तो माता अञ्जनी तेरी दुहाई है।

विधि–उक्त मन्त्र को किसी मास के शुक्लपक्ष में सोमवार-मंगलवार दो दिन में १२ हजार बार जपे। फिर ४० दिन नित्य ५, ७, ११, ४१ या १०१ 'साध्य' मोहित होगा। 'ग्रहण' आदि पर्व पर 'मन्त्र' का जप करता रहे।

सर्वकार्य सिद्धि जञ्जीरा मन्त्र

या उस्ताद बैठो पास, काम आवै रास। ला इलाही लिल्ला हजरत वीर कौशल्या वीर, आज मजरे जालिम शुभ करम दिन करै जञ्जीर। जञ्जीर से कौन-कौन चले? बावन भैरों चलें, छप्पन कलवा चलें। चौंसठ योगिनी चलें, नब्बे नारसिंह चलें। दिव चलें, दानव चलें। पाँचों त्रिरोम चलें, लांगुरिया

सलार चलें। भीम की गदा चले, हनुमान की हाँक चले। नाहर की चाक चलै, नहीं चलै, तो हजरत सुलेमान के, तखत की दुहाई है। एक लाख अस्सी हजार पीर व पैगम्बरों की दुहाई है। चलो मन्त्र, ईश्वर वाचा। गुरु का शब्द साँचा।

विधि–उक्त मन्त्र का जप शुक्लपक्ष के सोमवार या मङ्गलवार से प्रारम्भ करे। कम-से-कम ५ बार नित्य करे। अथवा २१, ४१ या १०८ बार नित्य जप करे। ऐसा ४० दिन तक करे। ४० दिन के 'अनुष्ठान' में मांस-मछली का प्रयोग न करे। बाद में रात को सोते समय मन्त्र का स्मरण कर सोये। जब 'ग्रहण' आये। तब मन्त्र का जप करे। यह मन्त्र सभी कार्यों में काम आता हैं। भूत-प्रेत बाधा हो अथवा कोई शारीरिक-मानसिक कष्ट हो तो उक्त मन्त्र ३ वार पढ़कर रोगी को पिलाये। मुकदमें में यात्रा में सभी कार्यों में इसके द्वारा सफलता मिलती हैं।

आसन-बन्धन

जोगी बाँधो आसन बाँधो, मुख से बाँधो आग।
पवन पवन से डाइन बाँधो, बन से बाँधो बाग।।
हमहईं हनुमान के सेवक, हनुमान जी के चौकी लागल बार।
सत्-गुरु के वन्दे पाँव, जय गुरु प्रताप तोहार।।

लाठी या शस्त्र बन्धन

आग बाँधो लाठी बाँधो और समुद्र-टापू।
डाइनी के टोना बाँधो और बाँधो मकू।।
हुरङ्ग-डुरङ्ग मन्त्र फेरो, मोर विद्या ना।
कामरू-कामाख्या के विद्या, सत-गुरु के बन्दे पाँव।
हे गुरु! प्रताप तुम्हार।।

टोना निवारण

इतिर बाँधो, तीतिर बाँधो। डाइनी के टोना बाँधो और बाँधो सियार। जय देवी गौरा-पार्वती की दुहाई, कामरू-कामाक्षा की विद्या पाई। सत-गुरु के वन्दे पाँव। हे गुरु! प्रताप तोहार।

चार खूँट, चौबन्दी बाँध। आकाश बाँध, पाताल बाँध। देखते की नजर बाँध। मारते की जबान बाँध। चलते का पैर बाँध। शैतान बाँध, टोना बाँध, खप्पर बाँध। मूठ बाँध, भूत बाँध, प्रेत बाँध। सोदिन बाँध, डाइन बाँध। बुध अपनी मूठी कर लाव। नहीं वीर हनुमान कहाव। मेरी भगत, वीर हनुमान की शकत। महावीर हनुमान की दोहाई।

विधि–१००८ बार जप कर ग्रहणकाल, एकादशी, होली, दीपावली आदि में सिद्ध करे। प्रयोग के समय मन्त्र पढ़कर नीम्बू को बाँधे।

शत्रु नाशक मन्त्र

ॐ हनुमान वीर नमः। ॐ नमो वीर, हनुमत वीर, शूर वीर, धाय-धाय चलै वीर। मूठी भर चलावै तीर। मूठी मार, कलेजा काढ़ै। मेरी वैरी, तेरे वश होवै। धर्म की दुहाई। राजा रामचन्द्र की दुहाई। मेरी वैरी न पछाड़मारै, तौ माता अञ्जनी की दोहाई।

विधि–काले उड़द को अभिमन्त्रित करके शत्रु की ओर फेंके। इससे शत्रु का नाश होगा। प्रयोग करते समय मन्त्र का जप २१ से लेकर १०८ बार करे। पहले होली, ग्रहणकाल, दीपावली, एकादशी में सिद्ध कर ले। जप संख्या १००८।

रोगनाश मन्त्र

ॐ नृसिंह। नृसिंह की महतारी, कातय सूत, नहि सूत के पागा। बिना इसे बाँधै को? नृसिंह को कहती है महतारी-दादू करत मोबादी मारो। करूँ बदिनियाँ राड़। औघट केर खिलाड़ी मारे, चिटका केर समान। भूत-प्रेत संहारि के मारै। करुवा देव उड़ाव। हाकपड़ी नृसिंह की-जाग-जाग वीर वहा हनुमान।

विधि–नीम्बू में मन्त्र पढ़कर झारे तो सभी प्रकार की व्याधि दूर होती है।

महाकाली बाँध मन्त्र

ॐ क्लीं क्लीं क्लीं। काली, महा-काली, ब्रह्मा की बेटी-खाय कलेजा, ठोके थाली। आताल बाँध, पाताल बाँध, गुनियाँ का गुन बाँध, चलता का पैर बाँध, दानव बाँध, प्रेत बाँध, भूत बाँध, सात सौ चुरयल बाँध, हाथ पर का खप्पर बाँध, हाथ जरै न काड़ा और नव मन का गोला बाँध। कै मने का गोला, कै मने का जञ्जीर? हाथे पड़ी हथकड़ी, पाए पड़ी जञ्जीर। सबका इनका बाँध कै, अपनी मूठी में लाई। तब सच्ची काली कहाई। हे सत्य काली की दोहाई। फुरौ मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र को ग्रहणकाल, दीपावली, होली में सिद्ध करें। ध्यान रहे कि सिद्ध करते समय त्रुटि न हो। नहीं तो सङ्कट हो सकता है। प्रयोग के समय नीम्बू को अभिमन्त्रित कर बाँधे या अभीष्ट स्थान में फेंके।

हनुमान बाँध मन्त्र

ॐ वीर हनुमते नमः। ॐ हनुमर वीर, धरै ना धीर। बाँधे नदी-नार का नीर। बारा कोस अगाड़ी बाँध, बारा कोस पछाड़ी बाँध।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ नमः सामाक्षाय, ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय 'अमुकं' दह-दह, पच-पच, उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठं ठः।

विधि–१. रविवार के दिन लता से भतुआ का फल तोड़े। अमावस्या की आधी रात को किसी चौबटिया पर उस फल में चना, काजल और सिन्दूर लगाकर उपर्युक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर रख दे। एक आकार की चार कौड़ियाँ चित्त करके फल के चारों ओर रख दे और उसी आकार की एक कौड़ी चित्त करके फल के ऊपर रख दे और चुपचाप घर चला आये। मन्त्र में 'अमुक' की जगह जिसका नाम तिल जायेगा, उसका उच्चाटन होगा।

२. डुम्बर की लकड़ी का एक चार अंगुल का कील ले। कील के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर 'अमुक' के गृह में डाले। 'अमुक' का उच्चाटन होगा।

३. काग और उल्लू के पर से १०८ बार उक्त मन्त्र द्वारा होम करे। मन्त्र में जिसका नाम लिया जायेगा, उसका उच्चाटन होगा।

४. मनुष्य की ठठरी की हड्डी चार अंगुल के बराबर ले। हड्डी के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़े। हड्डी को 'अमुक' के गृह के द्वार के सामने फेंके। 'अमुक' का उच्चाटन हो जायेगा।

५. मिट्टी का एक 'शिव-लिङ्ग बनाये। 'शिव-लिङ्ग' पर 'चिता-भस्म' और 'ब्रह्म-दण्डी' एक साथ पीस कर लेपन करे। फिर शनिवार की रात्रि में उक्त मन्त्र१०८ बार पढ़कर 'शिव-लिङ्ग' को अभिमन्त्रित करे और जिसका उच्चाटन करना हो, उसके घर में रखे।

६. चार अँगुल की गुलर की लकड़ी ले। उस लकड़ी पर १०,००० बार उक्त मन्त्र पढ़े। लकड़ी को जिसका उच्चाटन करना हो, उसके घर में डाले। मन्त्रका १०,००० जप 'शनिवार' से प्रारम्भ करे और दूसरे 'शनिवार' तक पूरा करे।

ॐ तुङ्ग स्फुलिङ्ग बकिङ्ग बक्रिम चाञ्चिका विद्वद्घ्न मोध वन-बने स्फरै स्फरै ॐ ठं ठः अमुकं।

विधि–चिताभस्म के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़े। फिर भस्म को जिसका उच्चाटन करना हो, उसके घर में डाले।

आकर्षण मन्त्र

१. ॐ नमः कामाक्षाय महा-शक्ति-रूपाय 'अमुकस्य' आकर्षण कुरु कुरु, ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

विधि–पहले उक्त महामन्त्र को सिद्ध करे। सिद्ध करने के लिए पाँचमुखी और सातमुखी बिल्वपत्र एकत्रित करे। पाँचमुखी बिल्वपत्र कम-से-कम ५ एकत्रित करे, अधिक हों तो अति-उत्तम। इनके अतिरिक्त ११०८ तीन पत्ती वाले बिल्वपत्र सबको गङ्गाजल से धोकर पवित्र करे। इसके बाद मिट्टी के १००० शिवलिङ्ग तैयार कर एक

बार उक्त मन्त्र पढ़कर एक बिल्वपत्र शिवलिंग पर चढ़ाये। पाँचमुखी बिल्वपत्र जितने हों, उन्हें उक्त मन्त्र पाँच-पाँच बार पढ़कर चढ़ाये। सातमुखी बिल्व पत्रों को सात-सात बार मन्त्र पढ़कर चढ़ाये। इसके बाद सभी का 'विसर्जन' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

मन्त्र सिद्ध कर लेने के बाद किसी भी चतुर्दशी के दिन काले धतूरे के रस में गोरोचन मिलाकर श्वेत कनेर की टहनी की लेखनी से भोजपत्र पर 'साध्य' के नाम के साथ उपर्युक्त मन्त्र को लिखे। 'साध्य' आकर्षित होगा।

२. ॐ नमः भगवते रुद्राय ॐ नमः जगदम्बिके आकर्षण-कारिणी कामाक्षाय अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं क्रीं श्रीं आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए 'एक चतुर्दशी' से दूसरी 'चतुर्दशी' तक नित्य १०८ बार जपे। इसके बाद अपनी कनिष्ठका अँगुली के रक्त से गिद्ध के पङ्ख को लेखनी द्वारा भोजपत्र पर 'साध्य' के नाम के साथ उक्त मन्त्र को लिखे और तकिये के नीचे उसे रखकर सो जाये। 'साध्य' आकर्षित होकर रात्रि में स्वप्न में मिलेगा और कुद ही दिनों के अन्दर यदि वह सात समुद्र पार भी होगा तो आकर्षित होकर उसके पास चला आयेगा।

३. ॐ नमः कामाक्षाय ह्रीं ठं ठः स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र का जप मङ्गलवार से प्रारम्भ करे। जब दस हजार जप पूरा हो जाये, तब होम करे। फिर चूहे के बिल की मिट्टी में उल्टा सरसों और बिनौले मिलाकर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर जिसके बदन पर छोड़ा जायेगा। वह आकर्षित होगा।

पुष्पमाला पर आकर्षण मन्त्र

फूलो के हार, मोहे संसार, कर मोह-वर्षण। सुन-सुन सत्-गुरु की पुकार, हो जा तैयार, भर ले रूप में निखार, सुगन्ध में प्यार, 'अमुक' पर कर आकर्षण। दोहाई कामाक्षा देवी की, सत्-गुरु का कहना मान, चला आकर्षण-बान। मोह ले, मोह ले मन-प्राणः, तुझे शङ्कर की आन।। ॐ नमः शम्भु-शक्ति-स्वरूपिणी माँ कामाक्षाय आकर्षण कुरु कुरु फट् स्वाहा।।

विधि–माघशुक्ल पञ्चमी की रात्रि में गाँव के वाहर पीपल वृक्ष के नीचे कुशासन पर पूर्व की ओर मुँह करके सिद्धासन लगाकर बैठे। श्री श्री कामाक्षा देवी का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र १०८ बार जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। अनन्तर जब कभी किसी को आकर्षित करना हो तो स्नानादि कर किसी पुष्प-वाटिका में बासी मुख जाये और मन्त्र पढ़ते हुए फूलों का सञ्चय करे। फिर जिसे आकर्षित करना हो, उसका नाम लेते हुए फूलों की सुन्दर माला तैयार करे। माला जिसे आकर्षित करना हो, उसे पहनाये। वह आकर्षित होगा। यदि माला पहनाना सम्भव न हो तो स्वयं वह

माला पहन कर उसके पास जाये और ऐसा प्रयत्न करे, जिससे साध्य की दृष्टि माला पर पड़े।

शत्रुहन्ता प्रयोग

विशेष: साधारण विषयों को लेकर यह प्रयोग कदापि न करे। देश, समाज, धर्म-शत्रुओं एवं महापापियों पर ही यह प्रयोग करना न्याय सङ्गत है। अन्यथा प्रयोगकर्त्ता को भी हानि हो सकती है।

ॐ नमः कामाक्षाय, ॐ नमः रुद्राय कालाय भीमाय रिपु-हन्ताय क्रीं क्रुं फट् स्वाहा।

विधि–१. आश्विन मास की 'नवरात्रि' में उक्त मन्त्र को सिद्ध किया जाता है। आश्विन मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से जप प्रारम्भ करे और 'नवरात्रि' तक दस हजार जप करे। 'विजयदशमी' के दिन 'हवन' आदि करे। जप के लिए आधी रात के समय गाँव के बाहर किसी पीपल के पेड़ के नीचे, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके आसन लगाये। नर-खोपड़े की हड्डी पहले से खोज कर रखे। खोपड़ी भी दक्षिण दिशा की ओर मुख करके रखे, जिससे उसका पिछला भाग अपनी ओर पड़े। उस खोपड़े के ललाट वाले भाग में सींक से सिन्दूर की सात लकीरें, काजल की सात लकीरें और लकीरें चूने की खींचे। इसके बाद अड़हुल के फूल पर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर खोपड़े पर चढ़ाये। इस प्रकार १० फूल पर १०८ बार जप करके चढ़ाने से १०८० जप प्रतिदिन पूरा होगा। नौ दिन में ९७२० जप पूरा हो जायेगा। शेष २८३ जप दशमी के दिन पूरा करके 'विसर्जन' करे। यदि नौ दिन क अन्दर ही 'दशमी' समाप्त होने वाली हो तो जप उसी हिसाब से प्रतिदिन करे, जिससे दशमी तक १०.००० जप पूरा हो जाये। जप करने का स्थान एकान्त में होना चाहिये। कारण यह नर-खोपड़ा वहाँ दस दिनों तक रहेगा। कोई भूला-भटका यदि वहाँ पहुँच भी जायेगा, तो भय से स्वत: भाग जायेगा। प्रयोगकर्त्ता को चाहिये कि जहाँ तक सम्भव हो, दिन के समय गुप्त रूप से खोपड़े की रखवाली करे। यदि कुतूहल वश वहाँ लोगों का जमावड़ा हो जाये तो उन्हें बुद्धिमानी से भगा दे। 'विसर्जन' के बाद खोपड़े को श्मशान में ले जाये तो और जहाँ तक हो सके, गहरा गड्ढा खोद कर उस खोपड़े को उसमें गाड़ दे। जब तक वह खोपड़ा धरती के अन्दर गड़ा रहेगा, तब तक उक्त मन्त्र का प्रभाव रहेगा। खोपड़ा उखड़ जाने के बाद मन्त्र का प्रभाव घट जायेगा। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

विधि–२. अमावस्या की रात में श्मशान में शत्रु का नाम लेकर मिट्टी की एक छोटी मूर्ति तैयार करे। इसके बाद मूर्ति को दक्षिणमुख स्थापित करे। पतले बेत की छोटी धनुही पर 'शाही' (के प्रकार का काँटेदार जङ्गली जानवर, जिसके शरीर पर रोएं के बदले तीखे काँटे होते हैं) का एक काँटा बाण की तरह चढ़ाये इसके लिए

मृगचर्म की पतली ताँत की धनुही की डोर बनाये। १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। इसके बाद श्री श्री कामाख्या देवी का ध्यान करते हुए शत्रु का नाम लेकर उस मिट्टी की मूर्ति पर बाण चलाये, जिससे उस मूर्ति की छाती विंध जाये। इससे शत्रु का नाश होगा।

विधि–३. एक घोड़े की हड्डी ४ अंगुल की लाये। उस पर उपर्युक्त मन्त्र १०८ बार पढ़े। शत्रु का नाम के साथ मन्त्र पढ़े। हड्डी को शत्रु के घर में फेंक दे। इससे शत्रु नष्ट होगा।

शान्ति मन्त्र

ॐ शं शां शीं शुं शूं शृः शें शैं शों शौं शं शः स्वं स्वः स्वाहा। ॐ नमः कामाक्षाय ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

विधि–पूर्णिमा की रात में किसी नदी या तालाब के किनारे पूर्व मुख आसन में श्री श्री कामाख्या देवी का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का १००० बार जप करे। इसके बाद स्नान कर ताम्बे के पात्र में जल भर कर पीपल या तुलसी की जड़ डाले, तो उक्त मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। फिर बाहर अँगुल पलाश की लकड़ी की 'कील' तैयार करे। 'कील' को १००० बार उक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करे। 'कील' को जिसके घर में रखा जायेगा, वहाँ सर्व-शान्ति होगी।

चोट, मोच, दर्द दूर करने का मन्त्र

कारी गाय के दूध के मोल, बांस के पोंगरा ले निकलिस चोर। चिल्लके, चालके, ललके, लालके, लचक के हाड़ जामें। सत् के होवे महादेव, तो रचक के माढ़ जाबे।

विधि–एक कटोरी में थोड़ा-सा सरसों का तेल लेकर पहले सात बार मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करे। फिर चोट या मोच लगे स्थान पर तेल लगाकर मालिश करते हुए मन्त्र पढ़े। पाँच-सात बार ऐसा करने से चोट, मोच, दर्द में आराम हो जायेगा।

दाँत-दर्द दूर करने का मन्त्र

आग बांधो, पाग बांधो। ऊपर-नीचे दाढ़ बांधो। अगिया-बेताल बांधो, सौ खाल विकराल बांधो। सौ लोहा-लोहार बांधों। बज्र अस होबै, बज्र दांत पिराय, तो महादेव पार्वती की आन।

विधि–थोड़े से नमक में सरसों का तेल मिलाकर उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़े, फिर उक्त रोगी को दाँत में लगाने को दे। ऐसा ३ दिन तक करे। दाँत के दर्द से सदा के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

बजरङ्ग वशीकरण मन्त्र

ॐ पीर बजरङ्गी राम-लक्ष्मण के सङ्गी। जहाँ-जहाँ जाय, फतल के

डङ्के बजाय। 'अमुक' को मोह के मेरे पास न लाए, तो अञ्जनी का पूत न कहाय। दुहाई राम-जानकी की।

विधि—ग्यारह दिनों तक ११ माला उक्त मन्त्र का जप कर इसे सिद्ध कर ले। 'रामनवमी' या हनुमान-जयन्ती' शुभ दिन है। प्रयोग के समय दूध या दूध से वने पदार्थ पर ११ बार मन्त्र पढ़कर जिसे खिला या पिला देंगे, वह वशीभूत होगा।

फूली रोगनाशक मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी को। सात समुन्दर पार लो इटा-माटी, ता उपजी पिपल की डाली। पिपल डाली वरसरो पाणी। प्रसर पाणी नाउ फुलै, गाउ फुलै, फुल नास्ती हो जाए। मेरी भगती, गुरु की सगति। फुर मन्त्र, ईश्वरो वाच। आषु फकण भलोहा तारा औणी बखत फुलो कटः।

बुध भैरो मन्त्र

ॐ नमो गुरु जी को आदेश। रे, रे मेरा नाद। बुध भैरो, माता कालीका पुत्र। मेरे गुरु नाद। वुद भैरों रे लायो, थाम लगायो। थाम हङ्कार र्थाम फुङ्कार थाम। मेरा गुरु नाद। बुर भैरो रे मेरौ र्वपाणी सी पतलो। धुवा सौ उगलो। पाणी सौ पतलो, नि करे तो माता कालीका का पाप डाई। धरती माता की दुवाई, हरिघार बद्री तलका देवतो की दुहाई। मेरी भक्ति।

उमसण मन्त्र, राई मतिर्ण सुगावर्णा अ बोल है वेर। ॐ नमो आदेश। राम बोले, लक्षिम्ण बोलै, सिता चलहूक दक्षीण दिशा। मेरी भगती, गुरु की सगती।

मोहनी सिन्दूर मन्त्र

ॐ नमो आदेश, गुरु जी को नमस्कार। सिन्दूर-सिन्दूर, महा-सिन्दूर न कहाँ से आयै? कौन ल्यावो? गरुड़ पर्वत सै आयो। गौरी का पुत गनेस ल्यावा। पैली सिन्दुर माता अञ्जनी की चडायों। आनि कार्स कर ल्यायो, रिद-सिद रीली भर ल्यायो। दूसरी सिन्दू किसको चढ़ाऊँ? अञ्जनी कौ पूत हनुमान्कौ चडायों। हो-हङ्कार हनुमन्कौ। तेसरी सिन्दुर किसकौ चडाया? बिल जति गोरषनाथ को चडायो। मन रिक्षा पुन बडो-सिधि वर पायो। चौथी सिन्दुर किसको चडायो? चतुर्भुज गनेश को चडायो। पाँचो सिन्दुर किसको चडायों? तारा-त्रिपुरा-तोतला को चडायो। जो करै सिन्दुर की निन्दर, उसको घाशै माया रजीदास दा रजड़ावै। श्रीगास्णा पावै, त्रिपुरा-सुन्दरी सङ्ग पावै। षड...काली मनाऊँ, काली वाशै सन्तूरौ को विजड़ा पै। कालिका माता! मन इच्छा पूरन का, सिद्धि-करका। ॐ अपीलीयि, अली आगां काली आप्रगां कुरु-कुरु कालीकायो फट् स्वाहा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

ऐं मन्त्र ले सिन्दुर मन्तणौ। सिर लगाणौ विन्दी। स्त्री वश हो।

आकर्षण मन्त्र

ॐ श्री सीर सिन्दू कन्या कुँवारी मनपियारी, चोस्ट जोगीणी मोडे अगास अस्त्री वाट चली आ गोरी। हमारीवाट तोहिजन लागो। दीसरी जगा की माया और चाट-चलाई अमुक बोलाई आकुँड़ी। जैसी रीडतिआकूल जैसी धलकन्तिः स्वाय। जैसी बलकन्ति आ, पौन जैसी सरकन्ति आ। जोहि-जोहि मेरा पिण्ड पैतला भया सरा। नङ्करि न आवे, तो हणुमन्ता वीर तेरी आण पड़े। जैसे काम त्वीले रामचन्द्र को सुदारो, तैशो काम मेरा नि सुदार, तो माता अञ्जनीऽ चली हात लावै। सवा सेर का रोटा न पावै। राजा रामचन्द्र का आरुणन नि पावै। चलो मन्त्र ईश्वरो वाचः।

रोगनाशक मन्त्र

ॐ नमो गुरु को आदेश। समुन्दर में टापू, टापू में लूणा चमारी। लूणा चमारी का फल। वसु रुद्रकार कुण्डता कि छी चौ लौक वसी। मेरे पास अमृत-कुण्डी बसे, तै अमृत-कुण्डी चौ लोक गङ्गाजल सिचौ। इस रोगिया का पिण्ड कि छौत झाड़ू। गङ्गा झाड़ू इसरोगिया का पिण्ड कि छीत नी झड़े, तो ईश्वरके पत्थर पड़े।

मेरी भक्ति, ए गुरु की शक्ति। फुर मन्त्र, ईश्वरो वाच। ऋणा क्षेत्रपाल, गोबार मा हो जा।

दुर्जन मनुष्य को वश में करना

१. भोजपत्र पर लाल-चन्दन से 'साध्य' का नाम लिख कर शहद में डाले।

२. गोरोचन, केसर, महावर से भोजपत्र पर नाम लिख कर रखे।

३. तगर, कूट, हरताल, केसर और अनामिका अंगुली का रक्त मिला कर तिलक करे।

कार्य में सफलता हेतु

सफेद चिरपटी (गुञ्जा) की जड़ पुष्य नक्षत्र में बाँयें हाथ में बाँधें।

धन प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिभुवन-स्वामिनि, महादेवी, महा-लक्ष्मी! लल लल हं हः महा-प्रभुत्वर्थ कुरु कुरु ह्रीं नमः।

विधि–चन्द्रबल, शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ कर प्रतिदिन अर्द्धरात्रि में १०८ बार जप करने से तीन मास में प्रत्यक्ष फल मिलेगा।

ऋण मुक्ति हेतु मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चिट चिट, गणपति। वर! वर देयं, मम वाञ्छितार्थ कुरु कुरु स्वाहाः।

विधि–मङ्गलवार चतुर्थी के दिन गणपति का पूजन कर १०.००० जप करे और १०१ रक्त करवीर पुष्प, १०१ लड्डु (चुरमा) एकत्र कर १०८ आहुतियाँ दे। सुपारी से पूर्णाहुति करे। गन्ध-पुष्प आदि से पूजन कर २१ लड्डुओं का नैवेद्य लगाये। बाद में दक्षिणा, आरती, पुष्पादि द्वारा पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करे। लड्डुओं का भोजन कर शुद्ध जल से आचमन कर पुन: १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। प्रारम्भ से अन्त तक एक ही आसन पर बैठे। हवन में 'पलाश' की समिधा का प्रयोग करे। इस प्रकार तीन पुरश्चरण करने से लक्ष्मी प्राप्ति होगी।

वशीकरण हेतु प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में धोबी के पैर के नींचे की मिट्टी लाकर रख ले। उसे जिसके सिर पर डालेंगे और पुरुष के पैरों के नीचे डालेंगे, तो वह वश में होगा।

शत्रु भगाने हेतु प्रयोग

हस्त नक्षत्र में गणेशजी की सेंधानमक से मूर्ति बनाकर उसके नीचे भोजपत्र पर शत्रु का नाश लिख कर रख दे। स्नानादि के बाद धूप-दीपादि से उक्त मूर्ति का पूजन कर उस मूर्ति पर जल के छींटे मारे। ज्यों-ज्यों मूर्ति गलेगी, त्यों-त्यों शत्रु भागेगा।

शत्रु को भ्रम में कराने का प्रयोग

पीपल की लकड़ी की १० अंगुल की कील शत्रु के घर में डाले। इससे वह शत्रु भ्रम में पड़कर भ्रमण करेगा और दु:खी होगा।

कवित्त्व-शक्ति प्राप्त करने का मन्त्र

'वच' का चूर्ण दूध के साथ पिये और निम्न मन्त्र का जप करे—

ॐ महेश्वराय नमः।

रक्षा-मन्त्र

ॐ क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं फट्।

विधि–नित्य उक्त मन्त्र का ५०० जप करे, तो रक्षा होती है।

मोहन-मन्त्र

ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट्।

विधि–उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित पान खिलाने से मोहन होता है।

वशीकरण मन्त्र

ॐ नम: कपाल-रुद्राय, सर्व-लोक-वशङ्कराय, अनाथा-याप्रतिहत बल-बीर्य-पराक्रम-प्रभवाय हा हा, हे हे पच पच, मारय मारय, कपट कपट, काट सर्व-कर्म कोर, अमुकं में वशमानय स्वाहा।

विधि–एक लाख जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है।

बवासीर मन्त्र

उमती उमती, चल चल, स्वाहा।

विधि–लाल सूत की तीन गाँठें देकर २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पाँव के अँगूठे से बाँधें, तो बवासीर अच्छा होता है।

आकर्षण मन्त्र

ॐ ह्रीं चामुण्डे! ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र का एक लाख जप कर सिद्ध करे। प्रयोग से पूर्व एक माला जप करे, तो 'साध्य' का आकर्षण होगा।

नेत्ररोग दूर करने का मन्त्र

नमो राम जी धनी, लछमन के बाण। आँख दरद करै, तो लछमन कँवर जी की आन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि–२१ दिनों तक नित्य उक्त मन्त्र का १०८ बार जप, धूप-दीप-नैवेद्य से लक्ष्मण जी का पूजन करने से मन्त्र सिद्ध होगा। फिर पीड़ित व्यक्ति को उक्त मन्त्र से झाड़े, तो नेत्र की पीड़ा शान्त होगी।

वशीकरण मन्त्र

१. हरे पान, हरयाले पान। चिकनी सुपारी, स्वेत खरे। दाहिने कर चूना, मोहि लेह पान। हाथ दे हाथ, रस लेय। पेट दे पेट, रस लेह। श्री नारसिंह वीर! थारी शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वर महा-देवी की वाचा।

विधि–२१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित पान 'साध्य' को खिलाने से वह वश में होगा।

२. ओं वश्यं मुखि, राज-मुखि! स्वाहा।

विधि–सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर मुँह धोकर जिसे देखेगा, वह वश में होगा।

३. ओं राज-मुखि, वश्य मुखि। स्वाहा।

विधि–बाँयें हाथ में तेल लेकर उक्त मन्त्र से तीन बार फूँकें दे और प्रात:काल शय्या पर बैठकर तीन बार मूल-मन्त्र का पाठ कर फिर मुख केश पर लगाकर जिसे देखेगा, वह आकर्षित होगा।

४. ॐ चामुण्डे! जय जय, स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, सर्वस्त्वायै स्वाहा।

विधि–२१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित पुष्प देने पर 'साध्य' वश में होगा।

सफलता, लाभ, धन, पुत्र, अन्न-प्राप्ति

१. ॐ जय कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–आक की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से सभी कार्यों में सफलता मिलती है।

२. ओं क्लीं क्लीं नमः।

विधि–तुलसी की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से अचानक राज्य या उच्च राजपद का लाभ होगा।

३. ओं ह्रौं नमः।

विधि–अंकोल की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से राज्य या उच्च राजपद का लाभ होगा।

४. वाङ्ग-मायायै नमः।

विधि–कुशा की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

५. ॐ ह्रीं क्लीं महा-लक्ष्मयै नमः।

विधि–वटवृक्ष पर चढ़कर उक्त मन्त्र का एक करोड़ जप करने से अचल लक्ष्मी प्राप्त होती है।

६. ओं ऐं क्लीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–पीपल वृक्ष पर बैठकर उक्त मन्त्र का दस हजार जप करने से धन प्राप्त होता है।

७. ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–आम के वृक्ष पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक करोड़ जप करने से पुत्र पैदा होता है।

८. ॐ महा-यक्ष-सेनाधिपतये मानि-भद्राय (मणि-भद्राय) अप्रार्थितमन्नं देहि में देहि स्वाहा।

विधि–बड़ के पेड़ पर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर इसकी लकड़ी ले आए। उस पर इक्कीस बार उक्त मन्त्र पढ़कर दाहिने कान पर लगा लें, तो बिना मांगे अन्न मिलता है।

सुख-सुविधा प्राप्ति मन्त्र

ॐ घण्ट-कर्णाय नमः।

विधि–एक लाख जप कर उक्त मन्त्र को पहले सिद्ध कर लें। फिर किसी ग्राम या नगर में प्रवेश करने से पूर्व इस मन्त्र को सात बार किसी पत्थर पर पढ़कर उस ग्राम या नगर में फेंक दे अथवा वहाँ प्रवेश करते समय किसी वृक्ष पर मारे, तो वहाँ अनेक प्रकार के सुख मिलेंगे।

२. लाल चन्दन, दूध, घृत, मिश्री और शहद मिलाकर पीने से अधिक रजो-धर्म का रुधिर रुक जाता है।

हिचकी बन्द करना

चार छटाँक पानी में चार माशे राई डालकर गर्म करके, छान कर गुनगुना पीने से हिचकी बन्द हो जाती है।

स्वप्न में उत्तर पाने हेतु

वन में जिस 'काही' वृक्ष पर 'रूपारेल' हो, उसकी लकड़ी सात परिक्रमा लगा कर लाये। उस लकड़ी को जला कर कोयला बना ले। उस कोयले को सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में अपने प्रश्न का उत्तर मिलता है।

श्वास-रोग निवारण

स्याही-सोख कागज (सोख्ता) को शोरे के पानी में मिलाकर सुखा ले। रात को रोगी के कमर में जलाये, तो श्वास-रोग दूर होता है।

देह रक्षा मन्त्र

ॐ नमो लोह का लोढा, जहां डाकी कूँडी। हमारा पिण्ड पैठा। ईश्वर कुञ्जो, ब्रह्म ताला। हमारा पिण्ड काचा, श्री हनुमन्त वीर रखवाला।

उक्त मन्त्र का पाठ कर कहीं भी रहे या जाए-शरीर की रक्षा होती है।

शत्रु स्तम्भन हेतु

मरघट की मिट्टी लाकर मिट्टी के पात्र में रखे और शत्रु का नाम उस पर लिखकर नीले कपड़े से बाँध कर गड्ढा खोद कर उसे गाड़ दे। ऊपर से पत्थर रख दे। ऐसा करने से शत्रु का स्तम्भन होगा।

भोजन मँगवाने का मन्त्र

ॐ उच्छिष्टा चाण्डालिनि वाग्वादिनि राज-मोहनि प्रजा-मोहन स्त्री-मोहन! आन आन, वे वे, वायु उच्छिष्ट चाण्डालि, सत्य-वादिनी की शक्ति! फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचः।

विधि–भोजन के बाद जुठे मुख से उक्त मन्त्र का एक लाख जप करे। फिर जहाँ कहीं एकान्त स्थान में बैठकर मन्त्र का स्मरण करे, तो अनेक प्रकार के भोजन प्राप्त हो।

मृतवत्सा के पुत्र जीवित रहने का मन्त्र

ॐ परम ब्रह्म-परमात्मने अमुको गर्भ दीर्घ-जीवी सुतं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–माघ अथवा ज्येष्ठ की पूर्णिमा को घर लिपवा कर तोरण, वन्दन-वार

आदि मङ्गल कार्यों को करे। देवी का पूजन करे और उक्त मन्त्र का १००८ जप कर ब्राह्मण को भोजन, दक्षिणा आदि दे। पुत्र जीवित रहेगा।

सर्व ऐश्वर्य हेतु

ओं ह्रीं क्लीं काल-कर्णिके ठः ठः स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र का एक लाख जप कर ढाक की लकड़ी, घी और शहद से हवन करे, तो सब प्रकार का ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

सुख प्रसव हेतु

ऐं ह्रीं भगवती भग-मालिनि चल चल, भ्रामय, पुष्पं विकाशय विकाशय स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित दूध प्रसूता को पिलाये, तो सुखपूर्वक प्रसव होता है।

अधिक रज-स्राव को रोकना

सरपङ्खा जड़ पीसियै, तन्दुल वारि (चावल का माड़) मिलाय। कर्ष मात्र के पीवत ही, बहत रुधिर शमनाय (बन्द हो जाय)।

रक्षा मन्त्र

ओ अजरसन बज्र द्वार। द्वारा दीया वज्र कावाट। वज्र को घाव चलावै, उलट वीर वाही को खावे। मेरे हिदय हरव से जारै देह अनन्त। श्रीराम जी रक्षा करे। चौकी फिर हनूफान्त। वीर छोटा रण में जावै। भूत-प्रेत पास नहीं आवै। पिण्ड काँचा, शब्द साँचा। फुरै मन्त्र, हनुमन्त वाचा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरै मन्त्र, ईश्वर वाच।

विधि–उक्त मन्त्र के जप से यश, कीर्ति, आरोग्य प्राप्ति एवं भूत-प्रेत-पिशाच आदि से रक्षा होती है।

मन्त्र जँजीरा

ॐ नमो बिस्मिल्लिाहि, रहिमान रहीम। गजनी सो चलो, मुहम्मदा पीर चला। सवा सेर का तोसा खाय। असी कोस का धावा जाय। श्वेत घोड़ा, श्वेत पलान जायै। चढ़ै मुहम्मदा ज्वान। नौ सं कुत्तक आगे चलै, नौ सौ कुत्तक पाछे चलें। काँधा पाचे भात डाला। ध्याया चलैं चाल। चालि रे मुहमदा पीर! तेरे समय नहीं कोई वीर। हमारे चोर को ल्याव। सात समुन्दर की खाई सो ल्याव। ब्रह्मा के वेद सौं ल्याव। काजी की कुरान सौं ल्याव। अठारह पुरान सौं ल्याव। जाव-जाव, जहाँ होय, तहाँ से ल्याव। गढ़ सों, ल्याव। सेत खाना सों ल्याव। मोरी-पाताल सों ल्याव। बाग-बगीचा सों ल्याव। कुआ बावड़ी सों ल्याव। बाहर आभूषण, सोलह सिङ्गार सों ल्याव। काजल-कजरैटी सों

ल्याव। खाट सों, पाया सों। नौ नाडी, बहत्तर कोठा का घूमती बलाय कों ल्याव। हाजिर का। हाड-हाड, चाम-जाम, नख-सिख, रोम-रोम सों ल्याव रे! ताइया सिलार जिन्द पीर! मारतौं-पीटतौं पछाड़तौं। हाथ में हथकड़ी, पाँव में बेड़ी। गला में तौक, उलटा कबजा चढाय। सुख बुलाय, सोस विलाय। कैसे हूँ लाव। लिए बिना मत आव। ओं नमो आदेश गुरू को।

विधि—गोबर का चौका लगाकर रात्रि के समय धूप-दीप-चन्दन-माला-मिठाई का नैवेद्य चढ़ायें। सवा सेर मोहनभोग का भोग लगाये। उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे, तो सिद्ध होगा। जब किसी काम को करना हो, तब मन्त्र पढ़कर माथे पर उड़द रखिये। कार्य सिद्ध होगा।

वशीकरण पुत्तलिका मन्त्र

ओं नमो भगवति! सूचि चाण्डालिनी नमः स्वाहा।

विधि—उक्त मन्त्र को जपते हुए मोम की एक पुतली बनाये, जिसकी अञ्जलि बँध रही हो। दोनों हाथ हों। अङ्ग-प्रत्यङ्ग अलग-अलग चमकते हों। जिसे वश में करना हो, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा इस पुतली में करके उक्त मन्त्र को जपता हुआ अङ्गारों पर पुतली को तपाये। ऐसा करने से वह वश में हो जायेगा। निम्न मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा करे—

ॐ ह्रीं क्रीं कालग्नि-रुद्रस्य प्राणा इह प्राणा।

मोहनी मन्त्र

तेल सों में तेल, राजा-परजा पावें मेल। अछक पानी, मसक ल्याव। छः सै वीर, मेरे मास लगाय। हाथ खड्ग, फूलों की माला। जान-विजानै, गोरख जानै। मेरी गति को कहै न कोय। हाथ पछानो, मुख धोऊँ। मुमिरों निरञ्जन देव, हनुमन्त यती। हमारी पति राखौ। महनी-दोहनी दोनों बहन आव। आम मोहूँ, पास मोहूँ। सब संसार में निकलूँ, टीका देय ललाट। आवै तो आवै, नाहिं पकड़ बांध ले आवे। दुहाई अञ्जनी के पूत की। दुहाई लक्ष्मण जती। दुहाई गुरू गोरखनाथ की। दुहाई निरञ्जन भगवान की। मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि—दीपावली की रात में एक थाली में ११ दीपक जलाये। भोजपत्र पर सिन्दूर से उक्त मन्त्र को लिखकर पूजन करे। १०८ मन्त्र का जप करे। जिसको मोहना हो, उसकी ओर तीन बार मन्त्र पढ़कर जाये।

शाबर शक्ति मन्त्र

भुः स्वः ने कृत्वास्त्रै मिग्रस्ते मिरं मिरं ताम्ब्रात्वः स्त्रे भुवः भुवः टिवनमस्तुः।

शाबर मेरु मन्त्र

गुरु शठ, गुरु शठ, गुरु है वीर। गुरु साहब! सुमरों बड़ी भाँत। सिङ्गी टोरों बन कहौं, मन नाऊँ करतार। सकल गुरु की हर भजे, घट्टा पकर उठ जाग। चेत सम्भार श्री परम-हंस मेरे गुरु की कृपा अपार।

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र जागृत करने का मन्त्र

बाबा आदम सिर जन्त्र ले माई, नारसिंग की करूँ बड़ाई। सिङ्ग तड़ापो एकै डारि, दयाली भय उजियारी ज़ागे। होम जागे अग्यारी जागे, खेड़ा-पति रखवाली। जाग कारुआ, जाग वारुआ। जागे वीर, मशान, जागे बाबा अघोरी, जिन विद्या फटकारी। जागे मन्त्र-तन्त्र और सब यन्त्र, अली-अली मौला-मुर्तजा अली-मुसफुर खुशाली। अनी अन-भली आवे पन पास, आवे सो चली जाय मौजे। मुज्जफर की गली या खुली अल्लाह-फकीरों की गली।।

विधि–उक्त दोनों मन्त्रों की विधि एक है। गुरुपुष्य, रविपुष्य, होली, दीपावली, ग्रहण, अक्षय-तृतीया, महाशिवरात्रि, मकर-संक्रानित (खिचड़ी) इनमें से किसी एक दिन स्नान कर सफेद वस्त्र पहन कर पूर्व की ओर मुख कर ऊनी आसन पर बैठे। दो 'वेदी' बनाये। 'वेदी' पर आम की लकड़ी रखे। घी का दीपक, अगरबत्ती जलाकर क्रमाङ्क एक का मन्त्र रुद्राक्ष की माला से १०८ बार जपे। फिर पूरा मन्त्र पढ़कर 'स्वाह' बोलकर घी-गुगल से २१ बार 'हवन' कर नैवेद्य चढ़ाये। नैवेद्य में लड्डू, बताशे, इत्र दे। इस प्रकार दोनों मन्त्र सिद्ध हो जायेंगे।

विशेष–ग्रहणकाल में नैवेद्य न चढ़ाये। 'ग्रहण' बीतने के एक घण्टे बाद नैवेद्य देना चाहिये।

अकवन बीरा, चकवन पात। गात बाँधो, छ दिन नौ रात। लोहे कोठरी बजर केवाड़, उसमें रांखो आपन पाँचो पिण्ड और प्रान। कोई खोले ना खुलै। कोई खोले, छाती फाट मरे। जान जी से जाय। ततवा खार नहाय, आ गए परदेश जीया जान से। दुहाई बजरङ्ग बली की।

विधि–स्नान कर लाल वस्त्र पहन कर ऊनी आसन पर पूर्व मुख होकर बैठे। आम की लकड़ी की दो 'वेदियाँ' बनाये। घी का दीपक, अगरबत्ती जलाये। 'लड्डू' या जल-भरा 'नारियल' का नैवेद्य चढ़ाये। क्रमांक (१) का मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर २१ बार गुगल-घी से 'हवन' करे। इसके बाद 'शरीर-बन्धन-मन्त्र' का रुद्राक्ष की माला से १०८ जप करे। फिर २१ बार पूरा मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर दूसरी 'वेदी' पर 'हवन' करे। 'हवन' के बाद नैवेद्य चढ़ाये। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बाद में प्रयोग करें प्रयोग हेतु ७ बार मन्त्र पढ़कर बदन पर फूँके या ७ बार मन्त्र पढ़कर 'शिखा' में गाँठ लगाये।

प्रेत भगाने का मन्त्र

लाल सरसों, हरियर तेल। उदत्त काली, दुई दत्त केश। तातल खप्पड़ हाथ में ले। दाहिने चलाउ डाकिनी, बाँए चलाउ मशान। दुहाई दक्षिण-देव की।

विधि–पहले क्रमाङ्क (३) की भाँति ११०० बार जप का १९८ बार 'हवन' करे। 'नैवेद्य' में 'नीम्बू', 'मद्य' और 'लड्डु' चढ़ायें। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग हेतु सरसों के तेल में ७ बार मन्त्र पढ़कर फूँके। मरीज के एक कान में तेल डालकर कान बन्द करे। फिर दूसरे कान में तेल डालकर, उसे भी बन्द करे। एक मिनट में बोलना होगा, तो बोलेगा, नहीं तो छोड़कर भाग जोयगा।

प्रेत उतारने का मन्त्र

नयन नागरी पाय घाघरी, नदी च काना पहुँच रे, नागरे मशाना जात नहीं, जतन नहीं। दैत्य मशान, इसी वक्त उतरुन जाय। ईश्वर-मदादेव, गौरा-पार्वती की दुहाई।

विधि–पहले काला वस्त्र पहन कर क्रमाङ्क ३ की तरह सिद्ध करे। नैवेद्य में 'नीम्बू' और 'मद्य' चढ़ायें। एक चुटकी उपले की राख पर ७ बार मन्त्र पढ़कर फूँके। फूँकने से प्रेतबाधा शान्त होगी और लाभ होगा।

गृह बन्धन मन्त्र

या हिसार या हिसार या हिसार। परी जवर कुफ्फार एक खाई, दूसरी अग्नि पसार गिर्द व गिर्द मलायक असवार। दायाँ दस्त रखे जिब्राइल। दस्त चय हसन दस् रास्त हुसेन पेशवा मुहम्मद गिर्द व गिर्द अली लाय-लाह का कोट। इल्लिल्लाह की खाई, हजरत अली की चौकी बैठी। मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

विधि–सर्वप्रथम शुक्लपक्ष में शुक्रवार को स्नान कर सफेद वस्त्र पहन कर पश्चिम-मुख होकर ऊनी आसन पर बैठे। क्रमाङ्क एक के मेरु-मन्त्र तथा क्रमाङ्क २ के मन्त्र से २१-२१ बार 'हवन' करे। इसके बाद बताशा, इत्र का नैवेद्य रखकर घी का दीपक, अगरबत्ती जलाये और उक्त मन्त्र का ४० बार जप करे। लोहबान से ११ बार 'हवन' करे। इस तरह चालीस दिन करने से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग के समय सात बार मन्त्र पढ़कर रेखा खींचकर बैठे। रेखा के अन्दर कोई बाधा नहीं आयेगी। यदि 'गृह-बन्धन' करना हो, तो लोहे की ६ कील लेकर चालीस बार उक्त मन्त्र पढ़े। जल पर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे और घर के अन्दर सब कमरों में जल छिड़के। इसके बाद ४ कील चारों कोनों में बाहरी तरफ गाड़े। २ कील सदर दरवाजे के दोनों तरफ गाड़े। बताशा, इत्र, जल भरे नारियल का नैवेद्य चढ़ाये।

बान वापस करने का मन्त्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। बजरी बजरी किवाड़, बजरी बजरी बाँधूँ दशो द्वार। बजरी आए, बजरी जाए। बजरी सब जग समाय। टोना-जादू सब रद्द हो जाय। जो टोना-जादू लौट के आए, उलट-पलट वहाँ का वहाँ पर जाए। जो-जो करे, सो-सो मरे। वहक्क लायलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह।

विधि–क्रमाङ्क छः की विधि की भाँति नित्य १८ जप ४० दिनों तक करे। किसी को बान लगे, तो अपना शरीर बाँधकर पीली सरसों पर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर फूँके। मुहम्मद रसूलिल्लाह को जल भरा नारियल, इत्र चढ़ाये। सरसों चारों दिशाओं में ऊपर-नीचे फेंके। मरीज को भी खिलाये। मरीज के सिर पर घुमाकर फेंके, तो बान वापस चला जायेगा। उक्त दोनों मन्त्रों को ग्रहण, दीपावली को जगाता रहे। ये दोनों मन्त्र परीक्षित हैं। जप के लिये 'हकीक' की या तस्मई माला का प्रयोग करे।

प्रेत पलटने का काली कामाक्षा मन्त्र

काली काली महा-काली! मीन-मांस करे अहारे। इन्द्रासन मोरन् कामाख्याते छाड़िबो काली (अमुक) के पास अइबो काली लागल लगावल काली। पेशल-पेशावल काली। भेजल-भेजावल काली। नैहर सासुर काली। ओझा-गुनी काली। गुन-गुन्तर काली। भूत-प्रेत काली। चाहे जो हो, काली सबको दूर भगाव काली। नहीं तो धोबी के कुण्ड में पड़, गधी का दूध पी कामरू की विद्या है, नयना योगिनि की सिद्धि है। दुहाई श्मशान-वामती की। दुहाई महा-काल भैरव की। दुहाई गुरुदेव! खबरदार, सर्व-रक्षा करो तुम।।

विधि–किसी शुक्लपक्ष मङ्गलवार को स्नान कर घी का दीपक, अगरबत्ती जलाकर, रुद्राक्ष की माला से १०८ बार जप करे। पूरा मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर २१ बार गूगल-घी का हवन करे। बताशा, नीम्बू, नारियल, लड्डू का भोग दे। इस प्रकार केवल सात मङ्गलवारों को करे। मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। क्रमाङ्क १ और २ के मन्त्रों से पहले बताये अनुसार हवन कर ले। तब इसका जप और हवन करे।

प्रयोग–'अमुक' के स्थान में रोगी का नाम पढ़े। एक नीम्बू पर सा बार मन्त्र पढ़कर फूंके। नीम्बू रोगी के सिर पर सा बार घुमाये और काट कर निचोड़े। लड्डू, बताशा, मद्य भोग दे। प्रेत वापस चला जायेगा, चाहे कहीं से भी आया हो। मन्त्र भी लगा होगा, तो वापस जायेगा और रोगी ठीक हो जायेगा।

रक्षा-रेखा मन्त्र

मामभिरक्षय रघु-कुल-नायक! धृत-वर-चाप रुचिर कर-सायक।।

विधि–'रवि-पुष्य' या 'गुरु-पुष्य' को स्नान कर श्वेत या पीला वस्त्र पहन कर

पहले क्रमाङ्क १ और २ के मन्त्रों से हवन २१-२१ बार करे। इसके बाद तुलसी या स्फटिक की माला से ११ सौ जप करे, १०८ हवन करे, तो मन्त्र-सिद्ध हो जायेगा। जल भरा नारियल भोग में दे।

प्रयोग–सात बार मन्त्र पढ़कर अपने चारों ओर रेखा खींचे, तो हर आफत-बला से सुरक्षित रहेंगे। चाहे जप करके समय खींचे या कहीं बाहर रहना हो, उस समय खींचे।

हवन सामग्री–सफेद चन्दन का बुरादा, तिल काला, देशी घी, शक्कर, अगर, तगर, नागरमोथा, केशर, पञ्चमेवा, जौ, चावल, कपूर।

वशीकरण मन्त्र

एक निमक रमता माता, दूसर निमक विरह से माता, तीसर निमक, औरी बौरी, चौथा निमक करजोरी। यह निमक (अमुक) खाय, हमको छोड़ दूसर नहिं जाय। दुहाई पीर औलिया की। जो कहे सो सुने, जो माँगे सो दे। दुहाई कामरू कामाच्छा नैना योगिनि की। दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

विधि–स्नान कर लाल वस्त्र पहने उत्तर की ओर मुँह कर घी का दीपक, अगरबत्ती जलाये। बताशा, नीम्बू, इत्र का नैवेद्य रखे। उक्त मन्त्र का १०८ बार 'गुग्गुल से 'हवन' करे। इस तरह ४० दिन करे, इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बाद में प्रयोग हेतु नमक का चार ढोंका राई बराबर लेकर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़े। इस अभिमन्त्रित नमक को सब्जी या दाल में डालकर साध्य को खिलायें।

विशेष–ऊक्त वशीकरण मन्त्र पति-पत्नी के बीच काम करता है। गलत कार्यो में प्रयोग न करे। अन्यथा मन्त्र की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

विद्वेषण मन्त्र

ॐ भैरवाय श्मशान 'अमुको' अरुक 'फलाँ' में विद्वेष कुरु फट्।

विधि–उक्त मन्त्र को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। घी का दीपक और अगरबत्ती जलाकर उनही आसन पर नैऋत्यकोण की ओर मुँह करके बैठे। रक्त वस्त्र पहने। हाथी-दाँत या रुद्राक्ष की माला से जप करे। ताँबे का कलश रखे। दोपहर में ५०० बार जप करे। लड्डू, मद्य का भोग दे। सरसों और सरसों के तेल से २१ बार 'हवन' करे। 'अमुक' की जगह औरत का नाम, 'फलां' की जगह उसके पति का नाम ले, जिससे लड़ाई कराना हो। इस तरह २१ दिनों तक करे।

रक्त बन्धन मन्त्र

आर बान्ध, धार बान्ध, रक्त की बूँद बान्ध। मेरी आन, मेरे गुरु की आन, ईश्वर-महादेव गौरा-पार्वती की दुहाई।

विधि–'ग्रहण या 'दीपावली' को घी का दीपक, अगरबत्ती जलाकर उक्त मन्त्र

का ११०० बार जप करे। १०८ बार गुग्गुल से 'हवन' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। 'ग्रहण' में भोग बाद में दे दीपावली को भोग उसी समय दे। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग हेतु किसी भी दवा को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पिलाये या जल को अभिमन्त्रित कर दवा के साथ जल को पिलाये। दिन में तीन बार पिलाने से स्त्रियों का बहता खून ३ दिन में बन्द हो जाता है। यदि धारदार हथियार या चाकू से कटने पर अँगुली घुमाकर मन्त्र पढ़कर फूँके, तो खून बहना बन्द हो जाता है।

स्वामी मन्त्र प्रयोग

ओम नमो भगवते। नरक पलानु नरक डारि भक्षणिस्दे पारुणि। सोल्लापुरद महा-लक्ष्मि कञ्चि कामाक्षि विष्णु-रूपिणी। महेश्वरी तान्त्रि, खड्गकोकि कोपादेवि कालुर्गन कट्टुवे जट्टिगन कट्टुवे। डाकिनियरं कट्टुवे। शाकिनियं कट्टुवे। मोहिनि कट्टुवे। अहः सरं कट्टुवे अखत्तार। कोटि। ब्रह्म-राक्षसं कट्टुवे। हविनन्तु कोटि नव-नाथ सिद्धरं कट्टुवे। इप्तेलु कोटि मरूल तण्डनं कट्टुवे। इप्तेटु कोटि। बल्सिमहा-कालियरनं कट्टुवे परमेश्वरनु त्रिपुरान्तक के होगुवा कामं सुटटु भस्ममं माडिदल्लि। ई मन्त्रभं ग्रह राक्षस स्वामि गलु। एनगे कोट्हरू। ई मन्त्रमं करुणिसि। करूणिसि। ग्रह-वश। अनन्त कोटि भूत-प्रेत-पिशाची, ग्रह-राक्षस स्वामि गलु। एनमें कोट्टरे ई मन्त्र एलु एलु। बैरे मन्त्रि-सिद्धरे। जन-वश राज-वश, सर्व-वश। ब्रह्म-राक्षसस बिंहु। अडिदरे श्री नस्म रेवण सिद्धेश्वरन श्रीपाद-दाणि ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

विधि—दक्षिण भारत में भूत-चिकित्सक 'रेवण सिद्धेश्वर प्रयोग' के नाम से उक्त मन्त्र की साधना करते हैं। साधकों की जानकारी के लिये यहाँ उस रहस्यमय मन्त्र को दिया है। इस मन्त्र को सूर्य, चन्द्रग्रहण काल में स्नानादि से शुद्ध होकर नदी में नाभि पर्यन्त जल में स्थिर रहकर जाती-पुष्प से १०८ बार जप करना चाहिये। इससे मन्त्र-सिद्ध हो जायेगा। तब प्रयोग करे।

इच्छित कार्य में सफलता दायक शाबर मन्त्र

ॐ कामरू देश, कामाक्षा देवी, जहाँ बसे लक्ष्मी महारानी। आवे, घर में जाकर बैठे। सिद्ध होय, मेरा काज सुधारे। जो चाहूँ, सो होय। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्।

विधि—उक्त मन्त्र का जप रात्रिकाल में करे। ग्यारह दिनों के जप के पश्चात् ११ नारियलों का हवन करे। इच्छित कार्य में सफलता निश्चित मिलती है।

अर्थ-लाभादि हेतु शाबर मन्त्र

ॐ ह्रीं ख्रीं छ्रीं ठ्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं।

विधि—शुक्लाष्टमी के दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार कनेर पुष्प-माला पर जप

करे। फिर उस माला को श्रीजगदम्बा को अर्पित करे। इससे आजन्म शुभता, प्रतिदिन अर्थलाभ एवं सर्व-अरिष्टों का नाश होता है।

कड़ा भूत-प्रेत का दोष मिटाने हेतु

थोड़ा सुमका नाक मिलाक, ताका कड़ा बनाय।
धूप-दीप दे पहर करके, रोग-दोष मिट जाय।।

मूठ-निवारण मन्त्र

ॐ ही आई को, लँगाई को, जट-जट, खट-खट उलट। लूका को, मूका को, नार-नार सिद्ध यती की दोहराई। मन्त्र साँचा, फुरो वाचः।।

नजर दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो सत्यनाम आदेश। गुरु का ओम नमो नजर, जहाँ पर-पीर न जानी। बोले छल सो अमृत-बानी। कहे नजर कहाँ से आई? यहाँ को ठोर ताहि कौन बताई? कौन जाति तेरी। कहाँ ठाम? किसकी बेटी? कहा तेरा नाम? कहाँ से उड़ी, कहाँ को जाई? अब ही बस कर ले, तेरी माया तेरी जाए। सुना चित लाय, जैसी होय सुनाऊँ आय। तेलिन-तमोलिन, चूड़ी-चमारी, कायस्थनी, खत-रानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी। जाको दोष, ताहो के रि पड़े जाहर पीर नजर की रक्षा करे! मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरों वाचा।

विधि—मन्त्र पढ़ते हुए मोरपङ्ख से बालक को सिर से पैर तक झाड़ दे।

वशीकरण

१. **तुलसी मीठे वचन सों, सुख उपजत चहुँ ओर। वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर।।**

२. **झाऊ नदी-मध्य से लाए। जब कहीं पुष्य नक्षत्र सुहाए।। बाको तिलक करे सिर जोई। जहाँ जाय, स्त्री वश होई।।**

३. बेलपत्र, बिजौरा, नमक—इन तीनों को बकरी के दूध में पीस कर मस्तक पर तिलक करें। तिलक देखनेवाला वश में होगा।

४. घी-ग्वार की जड़ में भाँग के वीज मिलाकर पीसे। उससे तिलक करे, तो वशीकरण होगा।

५. वटवृक्ष की छाल को पानी में घिस कर उसमें भस्म मिलाकर रविवार के दिन जिसे खिलायेंगे, वह वश में होगा।

६. ब्रह्मदण्डी, वच और कूट का चूर्ण बनाकर उसे पान में रखकर रविवार के दिन जिसे खिलायेंगे, वह वश में होगा।

७. शनिवार के दिन एक पुतली बनाकर उसके पेट पर 'साध्य' का नाम

लिखे। १०८ बार निम्न मन्त्र उस पुतली पर पढ़े। हर मन्त्र जप कर एक फूँक पुतली पर मारे। पुतली को 'साध्य' को दिखाये ४ पुतली को अपनी छाती से लगाये रखे। 'साध्य' का वशीकरण होगा।

पुतली का मन्त्र—जङ्गल की योगिनी, पाताल के नाग! उठ गए मेरे वीर ('साध्य' का नाम) को लाओ मेरे पास। जहाँ-जहाँ जाए मेरे सहाई, तहाँ-तहाँ आव। कज-भरी नज-भरी, अन्तासी अगरीतक। नफे एक फूँक। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच। मेरे गुरु का वचन साँची, जो न जाय वीर। गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

मोहिनी मन्त्र

तन मोहुँ, मन मोहुँ। मोहुँ सकल शरीर। झीन्दा शाह मदार की मोहिनी मोहुँ। मदद पीर दस्तगीर।

विधि–किसी भी मास के शुक्लपक्ष में, कमर तक पानी में खड़े रहकर १४ दिनों में उक्त मन्त्र का सवा लाख 'जप' करे। इससे 'मन्त्र-सिद्धि' हो जायेगी। फिर 'प्रयोग' करे। पानी में अधो-वस्त्र पहन कर खड़ा हो। जब 'प्रयोग' करना हो, तब एक चुटकी मिट्टी ले और उसके ऊपर उक्त मन्त्र ७ बार पढ़कर फूँके। फिर साध्य या साध्या के ऊपर इस मिट्टी को युक्ति से डाल दे। यदि फेंकने में असफल रहे, तो युक्ति से साध्य या साध्या के हाथ में दे देवे। मुँह पश्चिम की ओर रहें 'माला' कोई भी ले सकते हैं।

कन्या-विवाह हेतु अनुभूत प्रयोग

१. मिट्टी का एक नया घड़ा-कलश लेवे। घड़े में 'अल बलीयाँ' दो अक्षर का मन्त्र लिखे। मन्त्र के नीचे 'शादी के लिए' ऐसा लिखे। फिर इसके नीचे 'कन्या का नाम' लिखे। मन्त्र व नाम लिखने के बाद घड़े (कलश) में पानी भरे। पानी भरकर उसे दीवार पर जोर से मारे, जिससे घड़ा (कलश) टूट जाये। टूटे हुए घड़े के टुकड़ों को एकत्रित कर धरती में गड्ढा खोदकर दबा दे। शुक्लपक्ष में ७ दिन तक लगातार ऐसा करे। खुदा की कृपा से कुछ दिनों में ही विवाह निश्चित हो जायेगा। श्रद्धा से करे। अनुभूत प्रयोग है।

२. जिस कन्या का विवाह न हो रहा हो या जिस कन्या को अच्छे पति की मनोकामना हो, उसे निम्नलिखित मन्त्र का असंख्य या अगणित संख्या में 'जप' करना चाहिये। दूसरे शब्दों में 'जप' सदा-सर्वदा करे। मन्त्र इस प्रकार है—

या अलीयाँ!

अभिचार-निवारक प्रयोग

आदते कबीर या अभिचार को दूर करने के लिए इश्मे इलाही **'अल तव्वाबो'** मन्त्र का जप करे। मन्त्र-जप के पहले और अन्त में तीन बार **'दरुद शरीफ'**

पढ़े। 'माला' द्वारा मन्त्र का 'जप' करते समय अपने पास एक शुद्ध बर्तन में थोड़ा 'जल' रक्खे। जप के समय 'जल' के ऊपर अपना एक हाथ रक्खे रहें 'जप' के बाद जिस व्यक्ति पर अभिचार प्रयोग किया गया हो, तो खाने-पीने की वस्तुओं में, शरबत में, चार-काफी में मिलाकर पिलाये। २१ दिन तक 'प्रयोग' करे। सभी प्रकार के अभिचार प्रयोग का निवारण होगा। साथ ही अभिचार प्रयोग करने वाला पश्चात्ताप भी करेगा।

चोरी की खबर पाने के लिए प्रयोग

हयहात हयहात लेमातु अदुन

विधि–उक्त मन्त्र का पहले सवा लाख 'जप' करे। 'जप' किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है और सुविधानुसार पूरा किया जा सकता है। सवा लाख 'जप' के बाद 'प्रयोग' करे। जब कोई वस्तु खो जाये या चोरी हो जाये, तब उक्त मन्त्र का १४ बार 'जप' करे। 'मन्त्र-जप' के पहले और बाद में 'दरुद शरीफ' का पाठ कर ताली बजाये। ऐसा करने से चोरी हुई या खोई हुई, वस्तु मिल जायेगी अथवा उसका पता मिल जायेगा। या उसके बारे में कुछ जानकारी मिलेगी। 'प्रयोग' परमार्थ की दृष्टि से करे या कराये।

चोरी की खबर पाने के लिए प्रयोग

एक अहमद, तीसरा जब कहु, जब खबर मिल जाए।

विधि–(१) उक्त मन्त्र का पहले सवा लाख 'जप' करे। 'जप' किसी भी दिन से प्रारम्भ करे और कभी भी पूरा करे। बाद में १४ बार मन्त्र का 'जप' कर 'प्रयोग' करे। यह बड़े अनुष्ठान की विधि है।

विधि–(२) लघु अनुष्ठान में ४१ दिन ४१ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करना होता है। इसके बाद जब कोई वस्तु चुरा ली जाये या खो जाये, तब १३ बार मन्त्र का 'जप' करे। मन्त्र-'जप' के पहले और बाद में 'दरुद शरीफे' का पाठ करे और ताली बजाये। जब वस्तु का पता लग जाये, तब ३ बार कहे—**'अहमद सल्लला हो अलहे वस्सलम।'** यथा-शक्ति परमार्थ करे व करावे।

बवासीर दूर करने का मन्त्र

हबली-हबली, जब जबुरा। खुरासान की बेटी शाह, खूनी-बादी दोनों जा।

विधि–'कमरदर अकलब' अर्थात् 'चन्द्रग्रहण' में उक्त मन्त्र का १११ बार 'जप' करे। बाद में जब किसी को खूनी या बादी बवासीर हो, तब पीतल के एक लोटे को माँजरक साफ करे और उसमें जल भरे। जल के ऊपर हाथ रखकर उक्त मन्त्र को १११ बार जपे और रोगी को आवदस्त अर्थात् शौच हेतु दे। साथ ही मिट्टी के २१ ढेले भी दें। प्रत्येक ढेले पर ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को दे। रोगी ७ ढेले और

लोटा भर जल लेकर शौच को जाये। शौच से निवृत्त होने के बाद लोटे में जल भरकर रख दे। दूसरे दिन पुनः ७ ढेले और लोटा भर जल लेकर जाये। इस प्रकार तीन दिन करे। बवासीर दूर हो जायेगी।

ज्वर-नाशक प्रयोग

सुरजना सरप बना, नजर बना, तक बना, पाताल बना, सरदी पेड कीलां, दवाली-वताय कीलां, हशरत खीजर ख्वाजा जुनेद पीर की चौकी।

विधि–उक्त मन्त्र को पहले शुभ काल में 'जप' कर सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता पड़ने पर रोगी के मस्तक पर हाथ रखकर उक्त मन्त्र का ७ बार 'जप' करे। ज्वर उतर जायेगा। रोगी स्वस्थ हो जायेगा। विचित्र टोटका है।

पेटदर्द के लिए मन्त्र

हुदा खुदादा हुदा खुदा दे। रसुल दो हुदा चार पारदा। आयत कुरआन मजीद दी हुदा पीरा दस्तगीर मीरा मोहीय्युदीन दा बख्त फकीर दा।

विधि–उक्त मन्त्र को नीम की टहनी पर २१ बार पढ़कर रोगी को चाटने के लिए दे दे। पेटदर्द दूर हो जायेगा।

दरगाह-सिद्धि का प्रयोग

आयतल कुर्शीका दील कुरआन। नबी रसुल बैठे सात आसमान। सात आसमान के एक दगाली। मुहम्मद रसुल्ललाह की रखवाली। लोहे का कोट, तांबे की किवाड़। कुल की कुजी दे दे दिखला दे। हकला इलाहा इल्ललाह मोंहमदुर्र-सुलल्लाह सल्ल्लाहो अलय है वस्सलम।

विधि–'प्रयोग' प्रारम्भ करने से पहले किसी मजार के पास जाये। उस पर फूल की चादर बिछाये, इत्र चढ़ाये, अच्छी सुगन्ध वाली अगरबत्ती चढ़ाये और करे। फिर साहेवे कबर को न्योता देवे। दूसरे दिन एक बालक को साथ में लेकर जाये। बालक को मजार में सामने बैठा दे। फिर 'हिसार'—'आत्म-रक्षा' के मन्त्र पढ़े। 'हिसार' के बाद १०० बार 'दरुद शरीफ' पढ़े। बालक को जो जानना होगा, वह साफ-साफ दिखाई देंगा। अथवा बालक से आप जो प्रश्न पूछेंगे, उसका वह उत्तर देगा।

विशेष–यदि बालक किसी दूसरे व्यक्ति का हो तो, उसे उस व्यक्ति से बिना पूछ न लाये। यदि बालक भयभीत होगा। तो 'प्रयोग' सफल न होगा। 'प्रयोग' एक ही बार करे। बार-बार 'प्रयोग' करने से प्रश्नकर्त्ता को सच्चे उत्तर मिल नहीं पायेंगे। दुरुपयोग की भावना से 'प्रयोग' कदापि न करे। कार्य हो जाने पर बालक को अच्छी तरह से खिला-पिलाकर सन्तुष्ट करे। यह 'हाजरत-प्रयोग' है। 'मूल-मन्त्र' के पहले और बाद में १०० बार 'दरुद शरीफ' का पाठ करते समय बालक को 'मजार' के पास बैठा रहना आवश्यक है।

वशीकरण प्रयोग

वशीकरण मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ऐं भग-भुगे भगनि भगोदरि भग-माले भगावहे भग-गुह्ये भग-योने भग-निपातिनि सर्व-भग वशंकरि भग-रूपे नित्य-क्लिन्ने भग-स्वरूपे सर्व-भगानि मह्यानय वरदे रेते सुरेते भग-क्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भग-विच्चे क्षोभय-क्षोभय सर्व-सत्वान् भगेश्वरि! ऐं ब्लूँ जँ ब्लूँ में ब्लूँ मौं ब्लूँ हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि में वशमानय स्त्रीं हरल्बें ह्रीं भग-मालिनि स्वाहा।।

विधि—नित्य १०८ 'जप' करे।

भूत बाधा दूर करने के लिए सिद्ध प्रयोग

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रं स्फें हस्त्रौं हस्ख्फ्रें हसौं ॐ नमो हनुमते महा-बल पराक्रम मम परस्य च भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारी-महा-मारी-कृत्या-यक्ष-राक्षस-भैरव-बेताल-ब्रह्म-ग्रह-ब्रह्म-राक्षसादिक-जात-क्रूर-बाधान् क्षणेन हन-हन जृम्भय-जृम्भय, निरासय, वारय-वारय, बंधय-बंधय, नुद-नुद, सूद-सूद, धनु-धनु, मोचय-मोचय, माम् (एनं) च रक्ष-रक्ष महा-माहेश्वर रुद्रावतार हां हां हां हुँ हुँ हुँ हुँ घहुं घहुं घहुं फट् स्वाहा।

विधि—अनुष्ठान के सभी नियमों का पालन करते हुए उक्त मन्त्र का सवा लाख 'जप' करे।

पीलिया झाड़ने का मन्त्र

कोखा का पूत कौखा, धौखा मार कर वहाँ दूँत मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—होली, दीपावली, ग्रहण में ३ या ५ माला 'जप' से सिद्ध होगा। फिर पीलिया के रोगी को सामने बैठाकर चाकू खोलकर झाड़े।

बायगोले का दर्द झाड़ना

बीली काटूँ, सीला काटूँ। बोले का बाप-दादा काटूँ। बोले की उँगली, कलेजा काटूँ। बोले की सारी जड़ काटूँ।

विधि—'प्रयोग' प्रारम्भ करे, तब 'बीला काटूँ' स्वयं बोले। रोगी उत्तर दे कि 'काटो'। ऐसा कई बार करे। फिर चाकू सीधा खोलकर जमीन पर मन्त्र बोलते हुए लकीर खींचे और उलटे चाकू से बीमार के पेट पर लकीर करे, जब तक दर्द बन्द न होवे। ऐसा करने से दर्द बिलकुल बन्द हो जायेगा। शायद ही दूसरी बार 'प्रयोग' करना पड़े, फिर दर्द न होगा। मन्त्र को जन्माष्टमी, होली, दीपावली, ग्रहणकाल में 'जप' कर सिद्ध कर लें।

हाजरात का मन्त्र

बिस्मिल्लाह, राम रहीम बिस्मिल्लाह जाहिर।

विधि–उक्त मन्त्र का सवा लाख 'जप' करे। लोबान धूप करे। बाद में 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' हेतु मन्त्र को जपते हुए सुगन्धित तेल से काजल बनाये। तेल सहित काजल हथेली पर लगाकर मन्त्र फूंके और १२ वर्ष के बच्चे को दिखाये, प्रश्न का उत्तर मिलेगा। स्त्री को भी दिखेगा, पुरुष को नहीं दिखेगा।

स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का मन्त्र

ॐ निराकार निर्विकार तू ही विश्व की खबर सुनावे।

विधि–पहले सवा लाख 'जप' कर सिद्ध करे। फिर रात्रि को सोते समय १००० 'जप' कर माला सिरहाने रख कर सो जाये। स्वप्न में प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर मिलेगा।

नृसिंह प्रयोग

ॐ जयति-जयति नृसिंह, उग्र-नृसिंह, बलवीर्य, भीषम जटा, कोट पाट गगनं मेघ-माला, वाबल-भुजा बल-दण्ड, बल-लङ्क बाल-चरण शोभा तुम्हारी। फाट खम्ब ऊबजी दया भाजरे दुष्ट नृसिंह आया। जले नृसिंह, स्थले नृसिंह। जहाँ नृसिंह, तहाँ नृसिंह। पन्थ में, चोर में, छोर में, राज में, राज के तेज में। नृसिंह नाम निरमला घट में राखो पूर, प्रतिज्ञा प्रहलाद की संकट पर हजूर। चली-चली आवती मूँठ कर नौखंडी। जब आये बनखण्डी स्वामी। जब नूनी नागर, जब गङ्गा न्हाये, जब धेर अचल पर पाँव शीत भूत चोर सिंह मोय राख। मेरे परवार काने राख। मेरे जन्म-स्थान ने राख। आगै राखै, शिव को वीर पाछे राखै। भौंर वीर, अगल-बगल नृसिंह। उलटत नृसिंह, पलटत काया। जा कारण नृसिंह, वीर जू आया। चोर न छुए, बाघ ना खाय। कीड़ौ काँटा, लागै न पाँव। आवती बलाय भस्म हो जाय। सो स्वामी, अब चला राजा। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। चलो मन्त्र, ईश्वरों वाचा।

विधि–किसी शुभ दिन से चन्दन का चूरा और लोबान मिला कर धूनी देकर २१ बार उक्त मन्त्र 'जपे'। 'भोग' हेतु १ नुगदी (बूँदी) का लड्डू नित्य रखे। ४० दिन तक 'जप' करे। बिच्छू आदि का काटा ठीक होगा। सामने आने से हर प्रकार का उत्तर ठीक-ठीक मिलेगा। होली, दीपावली, ग्रहणकाल में भी 'जप' करे।

हनुमानजी का रक्षा-कारक मन्त्र

हनुमान पहलवान, बाहर बरस का ज्वान। मुख में वौरा, हाथ में कमान। लोहे की लाठ, वज्र का कीला। जहाँ बैठे, तहँ हनुमान हठीला। बाल रे, बाल राखो। सीस रे, सीस राखो। आगे जोगिनी राखो। पाछे नरसिंह

राखो। इनके पीछे मुहम्मदा वीर छल करे, कपट करे, तिनकी कलक, बहन-बेटी पै परे। दोहाई महावीर स्वामी की।

विधि–१०८ बार रुद्राक्ष की माला से उक्त मन्त्र का 'जप' करे। गुगल से हवन करे। सभी प्रकार की बाधाओं की रक्षा होती है। विपदायें नहीं आती हैं।

शीतलादेवी का बाधानाशक मोहन विधान

मोहिनी-सोहनी बचके मारो। चलो मोहिनी, जग मोहो, संसार मोहो। राजा मोहो, परजा मोहो। सभा के बीच, पण्डित मोहो। इन्द्र की परी, दोहाई गौरा पारवती महादेव। ॐ क्रिया-क्रिया-क्रिया। पट्ट-पट्ट-पट्ट स्वाहा।

विधि–शीतलादेवी का पञ्चोपचार-पूजन कर उक्त मन्त्र ५ बार 'जप' करे। पूजा में केसर, बताशा, कपूर, अगरबत्ती, नीम्बू, माला, फूल का प्रयोग करे। यह मोहन-विधान है। प्रेत-बाधा भी दूर होती है।

अग्नि-शमन का हनुमान-विधान

अगिन के पूत बजरङ्गबली। अगिन न बाँधो, तो अगिन का दूध हराम है। माँ का दूध हराम है। अगिन नहीं बाँधो, तो अगिन अचारण शोक। ॐ नमस्य श्री हनुमान नाथ गोसाई। हमारा काम विजय करे। जोधा हंकार हाहाकार। ॐ नमो बजरङ्ग बली।

विधि–उक्त मन्त्र के 'जप' से अग्नि शान्त होती है।

चोर पहचानने का शाबर मन्त्र

पाँच बाण लै लै हाथे, अर्जुन चलै चोर के साथ। दही नोन का आहुति देय, चोर के देह फफोला पड़े। भेल दोहाई ईश्वर गौरा-पारवती की, नैना जोगिनी की।

विधि–दही, सेंधानमक मिलाकर उक्त मन्त्र पढ़कर १०८ आहुति दे। सात दिन करने से चोर की देह में फफोले पड़ते हैं।

सरस्वतीदेवी का सिद्ध शाबर मन्त्र

स्वरासाती स्वरासाती मेरी माँ। सत् गुरु बन्धो पार, जसना देव राढ़ा। गौरी-गणेश, गौरा-पारवती, महादेव, ढुण्ड-राज, विश्वनाथ, काल-भैरव, कोतवाल, भीम, नकुल, सहदेव, अरजुन, धर्मराज, राजा रामचन्द्र, महावीर, ज्वाला-मुखी, हिंगलाज, दूरंगा, महा-काली। गुरु का वचन न जाय खाली। श्री गङ्गा, राजा रामचन्द्रजी, पाँचो पण्डवा, छठे नारायण निरंकाल, महादेवजी, गौरा-पारवती, महावीर हनुमानजी। कउने वरन का अक्षत, दोख भालं। डांड़ दइवी, चउवा चारपाया का नूकसान। मनई दुखी कि लड़का जनाना, कि घर लुटगा, कि चोरी होइ गइ, जगदम्बा मूल अक्षर दवा बताई।

विधि–इस मन्त्र को सिद्ध करने पर सरस्वती कण्ठ में बैठ जाती हैं। प्रात:स्नान कर बिना देह पोछे, एक पैर पर खड़ा होकर, गीले कपड़े पहने एक लोटा जल नीम के तने पर डाले, जो तने से बहता हुआ जड़ तक जाये। मुँह दक्षिण रक्खे। तीन दिशा में मन्त्र तब तक पढ़े, जब तक लोटे में जल रहे। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जब काम पड़े, तब मन्त्र पढ़ते हुए रोगी का हाथ पकड़े। माँ सरस्वती कण्ठ में बैठ कर सब बता देगी।

अभीष्ट व्यक्ति को बुलाने का मन्त्र

झां झां झां हां हां हां हें हों।

विधि–अभीष्ट व्यक्ति की मन-ही-मन भावना कर उपर्युक्त मन्त्र का ५०० बार 'जप' करे। अभीष्ट व्यक्ति आपके पास आ जायेगा। यदि एक दिन में न आये, तो निरन्तर सात दिन 'जपे'। अवश्य ही आ जायेगा।

आकर्षण मन्त्र

ॐ चामुण्डे ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा।

विधि–जिसे देखकर उक्त मन्त्र मन-ही-मन जपा जाये, वह आकर्षित होता है। अच्छा होगा कि पहले मन्त्र का दस हजार जप कर ले, जिससे मन्त्र पूर्ण जागृत हो जाये।

वशीकरण मन्त्र

१. ॐ नमः विकट घोर-रूपिणी स्वाहा।।

विधि–भोजन करते समय, चावल को सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस व्यक्ति का नाम लेकर खायेंगे, वह वशीभूत होग। 'प्रयोग' सात दिन तक करे।

२. ॐ वश्य-मुखी राज-मुखी स्वाहा।।

विधि–उक्त मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर उससे मुँह धो ले। ऐसा सात बार करे। नित्य प्रात:काल भी किया जा सकता है। इससे सभी देखने वाले वशीभूत होंगे।

३. ॐ राज-मुखी वश्य-मुखि स्वाहा।।

विधि–प्रात:काल स्नान के पूर्व शय्या पर बैठकर वाँयें हाथ में तेल लेकर उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर अभिमन्त्रित करे। फिर दाहिने हाथ की अनामिका में तेल माथे पर लगा ले। तत्पश्चात् स्नान करे। इससे सभी देखने वाले वशीभूत होंगे।

मनोवाञ्छित कार्य पूरा कराने का मन्त्र

'ॐ हुं फट्' या 'स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं'।

विधि–जिस व्यक्ति से कार्य लेना हो, उसे देखते हुए उपर्युक्त दोनों मन्त्रों में किसी एक का सौ बार 'जप' करे। तब उससे बातचीत करे। आप जो कहेंगे, उसे वह करने का तैयार हो जायेगा।

क्रोध प्रशमन मन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रोध-प्रशमन-प्रशमन ह्रीं ह्रीं हां क्लीं सः सः स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर अपने वस्त्र के कोने पर एक गाँठ लगा दे। तब क्रोधित व्यक्ति के पास जाये। आपको देखते ही उसका क्रोध शान्त हो जायेगा।

पैंतीस अक्षरी मन्त्र

प्रस्तुत 'पैंतीस अक्षरी' मन्त्र पञ्जाबी भाषा का है। इस मन्त्र का प्रभाव अद्भुत है। नित्य १०८ बार पूर्व की ओर मुँह कर इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी एवं पुत्रादि की प्राप्ति होती है। दक्षिण की ओर मुँह कर जपने से शत्रुओं का नाश होता है। पश्चिम की ओर मुँह कर जप करने से नर-नारी वशीभूत होते हैं। उत्तर की ओर मुँह कर जप करने से वाणी सिद्ध हो जाती है। १२ दिन लगातार पाठ करने से कार्य-सिद्धि होती है। जिस किसी को गर्भपात होता हो, उसे इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को एक मास पिलाने से पुत्र की प्राप्ति होती है। विशेष लाभ के लिए मन्त्र के जप के साथ-साथ नित्य हवन भी करे।

ॐ एक ओंकार श्रीसत गुरु प्रसाद ॐ।
ॐ अथ पैंतीस अक्षरी लिख्यते।
ओंकार सर्व-प्रकाशी। आतम शुद्ध करे अविनाशी।।
ईश जीव में भेद न मानो। साद चोर सब ब्रह्म पिछानो।।
हस्ती चींटी तृण लो आदम। एक अखण्डत बसे अनादम्।।

ए ॐ आ ई सा हा

कारण करण अकता कहिए। भान प्रकाश जगत ज्यूं लाहिए।।
खान पान कछु रूप न रेखं। निर्विकार अद्वैत उभेखम्।।
गीत गाम सब देश देशन्तर। सत करतार सर्व के अन्तर।।
घर की न्याई सदा अखण्डत। ज्ञान बोध परमातम पण्डत।।

का खा गा घा ङा

चाप ङ्यान कर जहाँ विराजे। छाया द्वैत सकल उठि भाजे।।
जाग्रत स्वप्न सखोपत तुरीया। आतम भूपति की यह पुरिया।।
क्षुणत्कार आहत घनघोर। त्रकुटी भीतर अति छवि जोरम्।।
आहत योगी आ रस-माता सोऽहं शब्द अमी-रस-दाता।।

चा छा जा झा ञा

टरनभ्रम अघन की सेना। सत् गुरु मुकुति पदारथ देना।।
ठाकत द्रुगदा निरमल करण। डार सुधा मुख आपदा हरणम्।।
ढावत द्वैत हन्हेरी मन की। णासत गुरु भ्रमता सब मनकी।।

टा ठा डा ढा णा

पार ब्रह्म सम्मान समाना। साद सिद्धान्त कियो विख्याना।।
फाँसी कटी द्वात गुरु पूरे। तब वाजे सबद अनाहत धत्तूरे।।
वाणी ब्रह्म साथ भये मेल्ला। भंग अद्वैत सदा ऊ अकेल्ला।।
मान-अपमान दोऊ जर गए। जोऊ थे सोऊ फुन भये।।

पा फा बा भा मा

या किरियाको सोऊ पिछाना। अद्वैत अखण्ड आपको माना।।
रम रह्या सबमें पुरुष अलेखँ। आद अपार अनाद अभेखम्।।
ड़ा ड़ा मिति आतम दरसाना। प्रकट के ज्ञान जो तब माना।।
लवलीन भए आदम पद ऐसे। ज्यूँ जल जले भेद कहु कैसे।।
वासुदेव बिन और न कोऊ। नानक ॐ सोऽहं आत्म सोऽहम्।।

या रा ला वा शा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लृं श्री-सुन्दरी-बालायै नम:।।
।। फल-श्रुति (इसका पाठ जपान्त में मात्र एक बार करे)।।
पूरब मुख कर करे जो पाठ। एक सौ दस और ऊपर आठ।।
पूत लक्ष्मी आपे आवे। गुरु का वचन न मिथ्या जावे।।
दक्षिन मुख घर पाठ जो करै। शत्रू लाको तच्छिन्न मरै।।
पच्छिम मुख पाठ जो करै कोई। ताके बस नर-नारी होई।।
उत्तर दिसा सिद्धि को पावे। ताके वचन सिद्ध होइ जावे।।
वारा रोज पाठ करे जोई। जो कोई काज होवे सिद्ध सोई।।
जाके गरभ-पात होइ जाई। मन्त्रित कर जल-पान कराई।।
एक मास ऐसी विधि करे। जनमे पुत्र फेर नहिं मरे।।
अठराहे दाराऊ पावा। गुरु-कृपा ते काल रखावा।।
पति बस कीन्हा चाहे। नार। गुरु की सेवा माहि अधार।।
मन्त्रर पढ़े करे आहुती। नित्य-प्रति करे मन्त्र की रुती।।
।। ॐ तत्सत् ब्रह्मणे नम:।।

तैल से मोहन या वशीकरण

तेल सों मैं तेल, राजा-परिजा मेलि। अछक पानी, मसक ल्याय। छसै योनि मेरे पाय नगाय। हाथ खड्ग, फूलों की माला। जानि बिजानै, गोरख जानै। मेरी गति को कहै न कोय। हाथ पछानो, मुख धोऊँ। सुमिरौ निरञ्जन देव, हनुमन्त यति। हमारी यति राखे। मोहिनी-दोहनी दोनों बहिन, आव मोहिनी रावल चालै। मुख बोले, तो जिह्वा में हूँ। आस मोहूँ, पास मोहूँ। सब संसार

में रिसरूँ, टीका देय लिलाट। शब्द साँचा, पिण्ड कांचा। फुरा मन्त्र, ईश्वर उवाच छु।

विधि–शावर-विधि से ग्रहणकाल में उक्त मन्त्र १००० बार जप करे, इससे मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध करने के बाद 'प्रयोग' करे। 'दीपावली' की रात को तिल का तेल लाये। उसी तेल के ऊपर उक्त मन्त्र का २१ बार जप करे और फूँक दे। इस अभिमन्त्रित तेल का मन्त्र स्मरण सहित बिन्दु लगाकर घर से बाहर जाये। टीका देखने वाले लोग वशीभूत होते हैं। दुरुपयोग से बचे।

गुड़ से मोहन या आकर्षण

ॐ नमो गुड़-गुड़, रे तू गुड़-गुड़। तामडा मशान केलि करन्ता जा। उसका वेग उमा सब वर्ष। हमारी आस खसम को देखे। जलै-बलै हमको देवै। सकि रुचलै। चालि-चालि रे कालिका के पूत, जोगी-जङ्गम और अवधूत सोती होय जगाय लाव, बैठी होय उठाय लाव। न लावै, तो माता मालिका की शय्या पर पाँव धरै। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि–अर्कवार (रविवार) के दिन एक पैसा भर गुड़ श्मशान में लेकर जाये। साथ में तेल और 'बाकला' ले। भैरव का पूजन करे। साध्य को गुड़ खिलाये।

लौंग से मोहन और वशीकरण

ॐ नमो आदेश गुरु। कामरू देश, कामाख्या देवी। जहाँ बसे इस्माइल योगी। इस्माइल योगी ने दीन्हीं एक लौंग राती-माती। दूजी लौंग दिकाबे राती। तीजी लौंग रहे थहराय। चौथी लौंग मिलावे आय। नहिं आवे तो कुआँ बावडी फिरे रण्डी, कुआँ बावडी छिटक मरे। ॐ नमो आदेश गुरु को। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–'ग्रहण' की रात में चार लौंग चार दिशाओं में रखे। बीच में चौमुखा 'दीपक' जलाये। अच्छी 'धूप' करे। सुगन्धित फूलों की माला चढ़ाये। यथाशक्ति भोग लगाये। उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' करे। बाद में ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके लौंग साध्य को खिलाये।

सुपारी द्वारा वशीकरण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुर-वाहनाय 'अमुकं' मम वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि–सिद्धयोग में उक्त मन्त्र की १ से १० माला 'जप' करे। बाद में सुपारी को अभिमन्त्रित करके जिसका वशीकरण करना हो, उसको खिलाये। दुरुपयोग न करे, अन्यथा स्वयं को कष्ट होगा।

पान द्वारा वशीकरण

हरे पान, परयान पान। चिकनी सुपारी, श्वेत खैर। दाहने कर चना मोही लेह पान। हाथ में दे हाथ रस ले, ये पेट दे पेट। रस लेह श्रीनारसिंह वीर। थारी शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र, ईश्वर महादेव की वाचा।

विधि–पहले उक्त मन्त्र को 'शाबर विधि' से सिद्ध करे। बाद में उक्त मन्त्र को पढ़कर अभिमन्त्रित पान खिलाये। दुरुपयोग न करे।

स्व-भोजन द्वारा वशीकरण

ॐ नमो कट-कट-कट घोर-रूपिणी अमुकं में वशमानय स्वाहा।

विधि–ग्रहणकाल में उक्त मन्त्र को १० माला 'जप' करके सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग करे। 'रविवार' को जब साधक स्वयं अन्न-भोजन करने बैठे, तब भोजन-सामग्री को अभिमन्त्रित करके स्वयं भोजन करे। भोजन करते-करते भोजन-समय में उसका नाम लेता जाये, जिसको वश में करना हो। 'अमुक' के स्थान पर नाम जोड़कर अभिमन्त्रि करे। खाते समय भी उसकी स्मृति बार-बार करे, तो वह व्यक्ति अवश्य आयेगा। उसका स्वागत करके मनचाहा कार्य करे। दुरुपयोग न करे; अन्यथा कष्ट होगा।

भूतनाथ का वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भूतनाथ! समस्त भुवन-भूतानि साधय हुँ।

विधि–उक्त मन्त्र का १ माला 'जप' करने से श्रीभूतनाथ सिद्ध हो जाते हैं। बाद में उक्त मन्त्र का सङ्कल्प सहित स्मरण करने से ही आकाश-पाताल और पृथ्वी के चराचर प्राणी वशीभूत होते हैं। 'शिवालय' या किसी देव-मन्दिर में 'जप' करे।

प्रेत-वशीकरण मन्त्र

(निम्नलिखित 'प्रयोग' प्रेत-वशीकरण होता है। ऐसे प्रयोगों को आत्म-रक्षा का प्रबन्ध किये बिना न करे; अन्यथा हानि की सम्भावना रहती है। अन्तकाल में उक्त साधना कष्टदायक बनती है। अतः आत्म-रक्षा का विधिवत् प्रबन्ध करके अथवा गुरु के मार्ग-दर्शन में ही 'प्रयोग' करे।)

ॐ श्रीं वं वं भूतेश्वरि! मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–मूल-नक्षत्र में बबूल के वृक्ष के नीचे बैठकर तीन दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। प्रेत प्रगट होकर कहेगा—'माँग-माँग।' तब साधक को उससे वचन लेना चाहिये और मन में जो इच्छा हो, उसे माँगना चाहिये। मनचाहा मिल जाता है।

खाने-पीने की वस्तुओं से वशीकर ग

क्लीं ऐं सौं ह्लीं श्रीं ग्लौं हुम्। सकल जगन्मोहिनी मदनोन्मादिनी, क्लीं एहि-एहि क्लीं-क्लीं सम्मोहय। बुद्धिं नाशय-नाशय, नाशय जीव-मोहिनी,

लागो मोह जिनु-जिनु जावे मकरे। तो मोह, आदि-शक्ति को आस, राज-मन्त्रथ की आन फुरो। आगम मल्यो, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। ईश्वर तेरी वाचा।

विधि–शाबर-मन्त्र की विधि से उक्त मन्त्र का १ हजार 'जप' करे। अथवा अन्य विधि से १० हजार 'जप' करे मन्त्र-विधि के बाद खाने-पीने की वस्तुओं को २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे। बाद में उन वस्तुओं को साध्य को खिलाये-पिलाये। इस मन्त्र द्वारा एक व्यक्ति एवं जन-समूह का वशीकरण होता है।

विवाह के प्रयोग

प्रत्येक माता-पिता को सन्तान के विवाह की चिन्ता रहती है। विवाह में विलम्ब से बचने के लिए यहाँ कुछ सरल प्रयोग दिये जा रहे हैं। साथ-साथ निम्नलिखित बातों पर भी ध्यान देना चाहिये। यथा—

कन्या के विवाह में विलम्ब के अनेक कारण होते हैं। अथवा मुख्य कारण इस प्रकार है—

(क) 'कन्या' के जन्माङ्क में 'लग्न-योग' नहीं होता। अथवा 'लग्न-योग' अति निर्बल होता है।

(ख) 'कन्या' को 'मङ्गल का दोष' होता है। जिससे विवाह तो होता है; किन्तु बहुत विलम्ब से होता है।

(ग) 'कन्या' के जन्माङ्क में 'काल-सर्प' या 'अर्ध काल-सर्प-योग' होता है। यह 'योग' यद्यपि सर्वदा बाधक नहीं होता, तो भी यदि बाधक हो, तो निराकरण कराना चाहिये।

उक्त दोनों का निवारण 'ज्योतिष' एवं कर्म-काण्ड' द्वारा होता है। यदि आर्थिक कमी अथवा अन्य कारणों से माता-पिता इनका निवारण नहीं कर सके, तो आगे दिये प्रयोगों से लाभ उठा सकते हैं।

१. शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे! सर्वस्यार्ति-हरे देवि!, नारायणि-नमोस्तुते।।

विधि–माताजी के चित्र या मूर्ति के सामने एक छोटा-सा लकड़ी का पाटा रखे। उसके ऊपर ५० से २०० ग्राम चावल कुंकुम से मिश्रित करके रखे। चावल के ऊपर घृत का एक दीपक रखे। घृत के दीपक की लौ पर ध्यान केन्द्रित करके कन्या उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। प्रति सप्ताह प्रत्येक मङ्गलवार प्रात:काल करे। कन्या कुंकुमका तिलक स्वयं लगाये और माताजी को भी लगाये। लगातार २७ मङ्गलवार करे। प्रयोगकाल में या उसके बाद विवाह के अच्छे सम्बन्ध अवश्य आयेंगे। यदि कभी देरी हो, तो 'प्रयोग' बन्द न करे। उचित समय आने पर लग्न इत्यादि का

सारा कार्य पूरा हो जायेगा। मङ्गल के अतिरिक्त अन्य दिनों में भी नित्य १०८ बार 'जप' करता रहे। देवी के मन्दिरों में दर्शन करे। श्रद्धा से प्रार्थना करे। उत्तम पति अवश्य प्राप्त होगा। दीपक जब बुझ जाये, तब चावल को बाहर चबूतरे के ऊपर डाल दे। यह प्रयोग अनुभूत और सत्य है। 'प्रयोग' को यदि विशेष प्रभावी बनाना हो, तो मङ्गल को एक बार भोजन करे। गाय का दूध या फल ले। अथवा प्रत्येक मङ्गल को थोड़ा-सा गुड़ और १ रोटी गाय माता को खिलाये।

२. **ॐ मातंग्यै विद्महे उच्छिष्ट-चाण्डालय धीमहि तन्नो देवि प्रयोगदयात।**

विधि–'गायत्री-मन्दिर' या किसी भी देवी-मन्दिर' में कन्या स्वयं जाये और प्रतिदिन उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। ऐसा ६ माह तक करे। यदि विलम्ब हो, तो भी श्रद्धा न छोड़े। मनोवाञ्छित पति ही मिलने वाला है—ऐसा विश्वास रखे। जब सम्बन्ध आये, तब संयोग के अनुसार कार्य करे।

३. **सुनु सियँ! सत्य असीस हमारी। पुरवहुँ मनोकामना तुम्हारी।।**

विधि–किसी भी शुभ दिन से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। प्रतिदिन उक्त मन्त्र का १०८ जप करे। जब तक कन्या को उत्तम पति प्राप्त न हो, तब तक मन्त्र-जप करता रहे। उत्तम प्रयोग है।

४. **ॐ क्लीं कुमाराय स्वाहा। (अथवा ॐ क्लीं कुमाराय नमः स्वाहा।)**

विधि–कन्या अपने निवास-स्थान से इष्टदेवी के सामने धूप-दीप सहित उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' करे। इससे सुन्दर वर की प्राप्ति होगी। पहले प्रयोग की तरह यह प्रयोग भी अनुभत है। श्रद्धा से करे। जब तक कार्य पूर्ण न हो, तब तक करे।

५. **ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्त्र-किरणाय मम वाञ्छितं देहि देहि स्वाहा।**

विधि–नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर कन्या सूर्य महाराज को पहले नमस्कार करे। फिर चन्दन-मिश्रित चावल और सुगन्धित पुष्प सूर्यदेव को चार बार चढ़ाये। अन्त में नमस्कार करके उक्त माला का १ माला 'जप' करे अथवा १०८ बार 'जप' करे। गुड़ का नैवेद्य चढ़ाये। 'रविवार' को 'व्रत' रखे। बिना नमक का भोजन करे। शर्करा-युक्त दूध और चावल का भोजन करे। एक मास में कार्य सिद्ध हो जाता है। जब तक कार्य सिद्ध न हो, तब तक मन्त्र का 'जप' करता रहे।

६. **कात्यायनि महा-माये, महा-योगिन्यधीश्वरि! नन्द-गोप-स्तुतं देवि पति में कुरु ते नमः।।**

विधि–उक्त मन्त्र अत्यधिक प्रचलित व प्रभावी है। 'देवी-मन्दिर' में अथवा अपने निवास में 'प्रयोग' करे। माता जी को धूप-दीप-नैवेद्य चढ़ाये। नमस्कार करके उक्त

मन्त्र की कम-से-कम १ माला और अधिक-से-अधिक १ माला 'जप' करे। जब तक शुभ परिणाम न मिले, तब तक 'जप' करता रहे।

७. हे गोरी! शङ्कर-अर्धाङ्गिनि, यथा त्वं शङ्कर-प्रिया। तथा मां कुरु कल्याणि, कान्त-कान्ता सुदुर्लभाम्।।

विधि–प्रतिदिन स्नानादि कर कन्या शिव-मन्दिर में जाये। पार्वती का पूजन करे। बाद में कन्या स्वयं उक्त मन्त्र का १ से ५ माला 'जप' नित्य करे। आस्था से करे। कन्या को उत्तम पति मिलेगा।

कन्या की शादी में रुकावट को दूर करने का मन्त्र

ॐ शं शङ्कराय, सकल-जन्मार्जित-पाप विध्वंस-नाय, पुरुषार्थ-चतुष्टय-लाभाय च पतिं में देहि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–विवाह में विलम्ब को दूर करने के लिये उक्त मन्त्र का जप करे। शिव-पार्वती के चित्र के सामने धूप और दीप रखे। उनके पास मिट्टी का एक कूँड़ा मिट्टी से भरकर रखे। मिट्टी को जल से भिगो दे। उसमें केले का एक छोटा-सा पौधा लगाये। प्रतिदिन उसमें जल छोड़े। ऐसा करने से केले का पौधा बढ़ेगा। लगाये हुए पौधे को ११ बार सूत के कच्चे डोरे से लपेटे और उसका 'पूजन' करे। बाद में उसके सामने बैठकर कन्या उक्त मन्त्र की ३-३ माला 'जप' करे। जप के बाद पौधे की १२ बार 'प्रदक्षिणा' करे। इस तरह नित्य करने से ग्रह देवों का कु-प्रभाव दूर होगा, बाधायें नष्ट होंगी। जब तक शुभ परिणाम न मिले, तब तक करता रहे। साथ-साथ कार्य-सिद्धि के लिए अपने कुटुम्ब के देव-स्थानों से प्रार्थनायें भी करे। मान्यता भी करे। सफलता मिलेगी।

यदि फिर भी रुकावट हो, तो नौ रत्ती का पोखराज या टोपाज त्रि-धातु की अँगूठी में धारण करना चाहिये। अथवा ७ रत्ती का फिरोजा पत्थर चाँदी की अँगूठी में धारण करना चाहिये। यह सब ज्योतिषियों के परामर्श से धारण करना चाहिये किसी उँगली में, किसी समय धारण करे आदि बातों के बारे में आवश्यक सूचना लेकर करे, अवश्य कार्य सिद्ध होगा।

नहरुवा मिटाने का मन्त्र

भाँमन सेती योगी भया। जनेऊ तेरी नहरुवा किया। न पाकै, न फूटै न व्यथां करै। विरुपाक्ष की आज्ञा, भीतर ही सरै।

विधि–उक्त मन्त्र को सिद्ध कर प्रयोग करे। यथा—(१) २१ बार मन्त्र के जप से जल को अभिमन्त्रित करे। इसी जल से रोगी को छींटा मारे, तो 'नहरुवा' न रहेगा (२) अभिमन्त्रित जल रोगी (दर्दी) को पिलाये, तो 'नहरुवा' मिट जायेगा।

गठिया अथवा वात वेदना निवारण

ॐ मूल नमः, घुक्ष नमः। जाहि जाहि, ध्वाक्ष तमः। प्रकीर्ण अङ्ग प्रस्तार-प्रस्तार, मुञ्च मुञ्च।

विधि–पहले पर्वकाल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में सन्धिवात या गठिया-वात या कमर में बाई, वात-वेदना वाले रोगी को मङ्गलवार को २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर मोरपङ्ख से झाड़े, जब तक लाभ न हो, प्रत्येक मङ्गलवार या रविवार को झाड़े। वात की बीमारी दूर होगी। श्रद्धा से करे, प्रयोग निर्दोष है।

शूल-रोगनाशक मन्त्र

ॐ मीठुष्टम शिव-तमः। शिवो न सुमना भव। परमे वृक्ष, आयुधन्निधाय कृतिं वसान। पिनाकं बिभ्रदागही।

विधि–सर्वप्रथम 'त्र्यम्बके यजामहे' मन्त्र से भगवान् शिवजी का पूजन करे। रोग-निवारण का सङ्कल्प करे। फिर उक्त मन्त्र का १ लाख 'जप' करे। ऐसा न हो सके, तो १ हजार जप करे। शूल पीड़ा नष्ट होगी। शूल-शान्ति का यह प्रयोग भी निर्दोष है।

सर्व-शूलनाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते चिन्तामणी हनुमान। अङ्ग-शूल, अति-शूल, कटि-शूल, गुद-शूल, मस्तक-शूल, सर्व-शूल निर्मूलय निर्मूलय, कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–पर्वकाल में उक्त मन्त्र का एक माला जप करने से वह सिद्ध हो जायेगा। अधिक जप करने से विशेष प्रभाव होगा। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध कर प्रयोग करे। यथा—शूलग्रस्त रोगी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पीन के लिये दे अथवा भस्म को अभिमन्त्रित कर उसे खाने को दे। अथवा नीम्बू मँगवाकर उसे अभिमन्त्रित करे। फिर उसे शरीर के शूलग्रस्त भाग के ऊपर फिराये। बाद में उस नीम्बू को कुयें, या नदी या जलाशय में विसर्जित कर दे। इस प्रकार करने से शूल-पीड़ा, शूल-व्याधि, नष्ट होगी। नि:स्वार्थ भाव से प्रयोग किया जायेगा, तो सफलता विशेष रूप से मिलेगी। शूल रोग के अच्छा हो जाने पर दान-पुण्य यथाशक्ति करना चाहिये। प्रयोग करते समय मन्त्र का स्मरण बराबर करता रहे।

सर्व-ज्वर नाशक मन्त्र

दोऊ भाई ज्वर-सुरा महाबीर नाम। दिन-रात खटि मरे महादेव के ठाम। फूर छेद से छतिस रूप महूर्त मों धराय। नाराज नामूक के घर दुआर फिराय। ज्वाला-जर, पाला-ज्वर, काला-ज्वर, विशाकी। दाह-ज्वर, उमा-ज्वर, भूसा-ज्वर, झूमकि। घोड़ा-ज्वर भूया तिजोरी ओ चौथाई। सवत को भङ्ग घोटन शिव ने बुझाई। यह ज्वर-ज्वर सूरा तू कौन ओर तालाब? शीघ्र अमुक अङ्ग छोड़ तुम जाव यदि अङ्गन में। तू भूलि भटकाय, तो महादेव के

लागा खाय। आदेश कामरू-कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी-चण्डी की दोहाई।

विधि–शाबर-मन्त्र की विधि से सिद्ध करे। सामान्यत: १० माला जप करने से सिद्धि होती है। बाद में ज्वर दूर करने के लिए प्रयोग करे। यथा-ज्वरग्रस्त या ज्वर के रोगी को उत्तराभिमुख बिठायें। सात बार उक्त मन्त्र का स्मरण करते हुए रोगी को झाड़े। तीन दिन तक लगातार ऐसा ही करने से सब प्रकार का ज्वर अच्छा हो जाता है। प्रयोग श्रद्धा से करना चाहिये। ज्वर निश्चय ही शान्त हो जायेगा।

२. **ॐ नमो भगवते श्रीपरमेश्वराय पक्षि-राजाय एकाहिक (एकादिक) ज्वर, द्वाहिक ज्वर, त्याहिक ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, अर्ध-मासिक ज्वर, षण्मासिक ज्वर, वात-पित्त श्लेष्म-सान्निपातिक ज्वर, विषम ज्वर, बरम-ज्वर, रुद्र-ज्वर, सर्व-ज्वरान्निर्मूलय निर्मूलय, कुरु कुरु स्वाहा।**

विधि–ग्रहणकाल में १ से १० माला जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। एक मत से तो मन्त्र ग्रहण के समय मात्र १०८ बार जप करने से ही मन्त्र-सिद्धि हो जाती है। सिद्धि हो जाने पर ज्वरग्रस्त व्यक्ति को स्वच्छ व ताजे जल की ५ या ७ बार जप द्वारा अभिमन्त्रित कर पीने को दे या वैसे ही अभिमन्त्रित की हुई भस्म भी दे। ऐसा ३ से ७ दिन तक करने से ज्वर की समाप्ति हो जायेगी। रोग की शान्ति होगी।

भूत-ज्वरनाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।

विधि–शाबर-मन्त्र की विधि से या अन्य प्रकार से मन्त्र सिद्ध करे। बाद में भूत बाधा से ज्वरग्रस्त रोगी को ११ बार मन्त्र जपते हुए मोरपङ्ख से ३ या ७ दिनों तक झाड़े। भूतादि जैसे ज्वर में दवाइयाँ काम नहीं देतीं। तब यह प्रयोग उपयोगी होता।

स्वयं ज्वरग्रस्त के लिए करने का मन्त्र

श्रीकृष्ण-बलभद्रस्य प्रद्युम्न-अनिरुद्धया, उषा-स्मरण-मात्रेण ज्वर-व्याधि विमुच्यते।

विधि–किसी भी प्रकार का ज्वर हो, उसकी शान्ति के लिए उक्त मन्त्र शुभ परिणामदायक है। ज्वरग्रस्त व्यक्ति अपने ज्वर की शान्ति के लिए उक्त मन्त्र का स्मरण स्वयं करता रहे, तो उसके ज्वर का शमन हो जायेगा। ज्वरग्रस्त व्यक्ति को यह भावना करनी चाहिये कि 'जिनका मैं स्मरण कर रहा हूँ, वे ही मेरे ज्वर की शान्ति कर रहे हैं। मेरी श्रद्धा से उनकी कृपा होगी और मेरा ज्वर तुरन्त ही मिटने वाला है। ऐसी भावना करने से ज्वर शान्ति होगी। कितना मन्त्र जपना चाहिये, यह नहीं बताया है। अत: जितना हो सके, उतना जप करे। इस मन्त्र को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं।

जप-निवारण का विशेष मन्त्र

ॐ नमश्रण्ड-वज्र-पाणये महा-सुषेणाधिपतये ॐ ज्वर! शृणु शृणु,

छर्द्द छर्द्द, शिरो मुञ्च मुञ्च, हृदयं मुञ्च मुञ्च, उदरं मुञ्च मुञ्च, कटि मुञ्च मुञ्च, ऊरुं मुञ्च मुञ्च, हस्तौ मुञ्च मुञ्च, गात्राणि मुञ्च मुञ्च, ॐ हुं हुं हुं फट्। अमुकस्य सर्व-ज्वरं नाशय स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र का १००८ बार जप करने से वह सिद्ध हो जाता है। बाद में अखण्ड भोजपत्र के टुकड़े के ऊपर यह मन्त्र केशर युक्त चन्दन से अनार या अन्य उचित कलम द्वारा लिखे उसे कुंवारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत में लपेट कर रोगी के शिर या दाई भुजा में बाँध दे तो ज्वर जाता रहेगा। उक्त प्रकार का सूत या डोरा प्राप्त न हो सके, तो मन्त्रलिखित उक्त भोजपत्र को ताँबे के ताबीज में भरकर शिर में बाँध दे, तो भी ज्वर की शान्ति हो जायेगी।

विशेष–'अमुकस्य' के स्थान पर रोगी का नाम जोड़कर लिखे।

ज्वर-निवारण के दो विशेष मन्त्र

१. **ह्रीं क्लीं ठः ठः, त्रो त्रो, ज्वर! शृणु शृणु, हन हन, गर्ज गर्ज, एकाहिंक, द्व्याहिकं त्र्याहिकं, चतुरहिकं, साप्ताहिकं, मासिकं, अर्ध-मासिकं, वार्षिकं, द्वैवार्षिकं मोहू-र्तिकं, नैमिषिकं झूट छूट, त्रट त्रट, हुं फट्। अमुकस्य ज्वरं हन हन, मुञ्च मुञ्च, भूम्या गच्छ स्वाहा।**

२. **ह्रीं क्लीं ठः ठः, भो भो, ज्वर! शृणु शृणु, गर्ज गर्ज, एकाहिंक, द्व्याहिकं, त्र्याहिकं चतुराहिकं, साप्ताहिकं,अर्ध-मासिकं, मासिकं, वार्षिकं, द्वै-वार्षिकं मोहूर्तिकं, नैमिषिकं झ्रट झ्रट, भट भट, हुं फट्। अमुकस्य ज्वरं हन हन, मुञ्च मुञ्च, भूम्या गच्छ स्वाहा।**

विधि–उक्त दोनों मन्त्र एक जैसे ही हैं। केवल कुछ पाठ-भेद हैं। पाठक बन्धु दोनों में से किसी भी एक मन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं; क्योंकि दोनों की विधि एक ही है। यथा—जिसे ज्वर हो, उस रोगी के नाम से 'नौ मुट्ठी चावल' के चूर्ण में नमक मिलाकर एक पुतली बनाये। उस पुतली पर हल्दी पोतकर पीले कपड़े की चार छोटी ध्वजायें बनाकर उस पुतली को उत्तर दिशा में विसर्जित करे। 'अमुकस्य' के स्थान में रोगी (ज्वरग्रस्त) का नाम जोड़कर प्रयोग करे। ज्वर-शान्ति अवश्य होगी।

मन्त्र का जप कितना किया जाय, यह नहीं बताया है। अत: कम-से-कम एक या दस माला का जप.पहले से ही विधिवत् कर लेना चाहिये। ध्वजा छोटी (नन्हीं) बनाये; क्योंकि पुतली भी छोटी ही होगी। सूझ-बूझ से काम करे। प्रयोग में मन्त्र का स्मरण नाम सहित करे। 'पुतली' को रामपतार (पत्तल) या मिट्टी के बर्तन में रखकर विसर्जन के लिए ले जाये और बिना बोले यह विधि करे। पीछे मुड़ कर न देखे। गाँव के बाहर, उत्तर की ओर विसर्जन के लिए ले जाये, जहाँ कोई मकान न हो। पत्तल में लेकर जाने से सुविधा रहेगी क्योंकि तीन दिनों तक यह विधि करनी है।

दन्तपीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। बन में ब्याई अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा-मकड़ा-माकड़ा–ये तीनों भरमन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–२१,००० जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। 'शाबर' की विधि से सिद्ध करके प्रयोग करना चाहिये। दन्त-पीड़ा वाले व्यक्ति को ३ या ७ बार मन्त्र जप कर नीम की डाली से झाड़े। पीड़ा दूर हो जायेगी। कभी-कभी झाड़ने से पीड़ा दूर नहीं होती, तब कटाई के बीजों का धुआँ दाँतों में दे और थोड़ी देर के बाद दर्दी से थूकने को कहे। थूक में यदि कीड़े दिखाई दें, तो समझे कि दर्द की समाप्ति हो गयी है। अन्यथा दर्द की समाप्ति तक यह क्रिया करे। 'कटाई के बीज' देशी दवा बेचने वाली दूकान से प्राप्त करे। धुआँ देने का कार्य व्यवस्थित और उचित ढङ्ग से करे। आँखें बन्द रखकर ही धुआँ लेना चाहिये।

दाढ़ के दर्द का मन्त्र

दन्त-पीड़ा झारने का मन्त्र ही 'डाढ़-दर्द' को भी दूर करता है।

विधि–दीपावली की रात्रि में एक लाख जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। अथवा 'शाबर' की विधि से सिद्ध करे। उसके बाद डाढ़-पीड़ाग्रस्त व्यक्ति को नीम की डाली से मन्त्र स्मरण करते-करते झाड़े, तो डाढ़ की पीड़ा शान्त हो जायेगी। दर्द बन्द न हो, तो ऊपर बताये धुआँ देने की क्रिया करें।

विशेष–दीपावली की रात्रि में एक लक्ष जप पूरा न हो, तो बाद के दिनों में जप पूरा कर ले अथवा प्रत्येक दीपावली को मन्त्र जपता रहे। साथ ही प्रयोग भी करता रहे। 'शाबर' की विधि से कार्य करे, तो लाभ ही होगा।

दाँत की व्यथा झारने का मन्त्र

अग्नि बांधो, अग्निश्वर बांधों। सौ लाल पिवाराल बांधो, सो लोहा-लोहार बांधो। वज्र के निहाय, वज्र-वन दांत विहाय, तो महादेव की आन!

विधि–'शाबर' की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में ७ बार मन्त्र का जप कर दुखते हुए दाँतों को फूँके, तो दन्त व्यथा दूर होगी। यदि नारा उखड़ा हो, तो हाथ की तर्जनी अँगुली से झारे।

विधिभेद–उक्त पाठ भेदों के अनुसार परिवर्तित मन्त्र को सिद्ध कर मन्त्र द्वारा तर्जनी अँगुली से झाड़े, तो दाँत का दर्द मिट जाता है।

दाँतों का दर्द दूर करने का मन्त्र

हम इक स्तर, तुम हो बतीस। हमारी तुम्हारी कौन-सी रीम। हम कमाय, तुम बैठे खावो। मरती बिरीया, सङ्गहि जावो।।

विधि–उक्त मन्त्र 'शाबर' की विधि से सिद्ध करे। बाद में दाँत में दर्द होता हो, तो मुँह धोने के समय सात बार मन्त्र पढ़कर कुल्ला करे। दन्त-पीड़ा दूर हो जायेगी।

डाढ़ की पीड़ा का मन्त्र

१. **ॐ नमो आदेश गुरु को। नौ लख कांवरु एक बार, जहाँ बैठे ग्वाल-बाल गङ्गा-जमुना सरस्वती। जहाँ बैठे गोरख जती, गौतम ऋषि। सिखर परवत ते आई काम-धेनु, छत्तीस रोग चलें। आधा दीना पृथ्वी, आधा दीना वायु। भोरां पाही रणटिया, सिगम पासु बठि। याम दौड़ रक्षा करें–श्रीरामचन्द्र, हनुमन्त। पाल भाव, रोग-दोष जाएँ पराई जीव। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।**

२. **ॐ नमो आदेश गुरु को। नौ लख ओढ़े कामरी, बैठे जहां गोपाल। जमुना-गङ्गा-सरस्वती, तहां ग्वाल अरु बाल। आए गोरख यती जी, गौतम ऋषि के पास। डाढ़ दाँत के दर्द को, आवत होय विनाश। आधो दियो धेनु को, आधो सन्तन माहि। राग-दोष सब ही टरैं, श्रीहनुमन्त सहाहिं। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि–तेज छुरी से धरती के ऊपर २१ रेखायें खींचे और हाथ से उस दाँत या डाढ़ को, जहाँ दर्द हो रहा हो, साधक पकड़ ले और दवा दे। ऐसा करते समय मन्त्र स्मरण करता रहे। दाँत या डाढ़ का दर्द शान्त हो जायेगा। जो दाँत या डाढ़ दुख रहा हो उसे अँगूठे से और उसको बगल की अँगुली से पकड़ कर दबाना चाहिये। 'शाबर' की विधि से मन्त्र को सिद्ध करके काम करना चाहिये।

३. **ॐ नमो कामरू देश, कामाक्षी देवी। जहां बसै इस्मायल जोगी। इस्मायल जोगी ने पाी गाय, नित उठ चरवा वन में जाय। वन में चरै सूखा घास, खाय-पिय के गोबर किया। जाए निपज्या कीड़ा सात। सूत-सूताला, पूँछ पुछाला। धड़ पीड़ा, मुँह काला। डाढ़-दांत गालैं, मसुढ़ा गालै। मसुढ़े पीड़ा करै, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि–सिद्ध किये हुए मन्त्र से आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करे। उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए लोहे की तीन कीलों को काठ पर ठोंक देने से डाढ़ का दर्द दूर हो जाता है।

आँख का फूला काटने का मन्त्र

उत्तर काल काछ, सुत योग का बाछ। इस्माइल योगी की दो बेटी। एक माथे चूल्हा, एक काटे फूला। दुहाई लोना चमारी की। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले शाबर-मन्त्र की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब आवश्यकता हो, तब लोहे की कील को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पृथ्वी में ठोके। ऐसा तीन या सात दिनों तक करें, तो फूला कट जायेगा। 'जब तक लाभ न हो, तब तक करे।

उठी आँख झारने का मन्त्र

ॐ बने बिआई बनारी, जहां-जहां हनुमन्त। आखि पीड़ा कषाबारी गिहिया, थनैलाई, चारिउ जाई भस्मन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले मन्त्र सिद्ध करे। बाद में उठी आँख पर हाथ फेरे और ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूँके। व्यथा और पीड़ा मिट जायेगी।

नेत्रपीड़ा हारक मन्त्र

१. **सातों रीदा, सातं भाई। सातों मिल के आंख बराई। दुहाई सातों देव की। इन आंखिन पीड़ा करे, तो धोबी की नाद, चमार के चूल्हे परे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत-नाम, आदेश गुरु की।**

विधि–उक्त मन्त्र का 'जप' 'होली' या 'दीपावली' के दिन प्रारम्भ करे। इक्कीस दिन नित्य १ माला 'जप' करे। इस प्रकार २१ दिनों में २१ माला 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। 'जप' प्रारम्भ करने से पहले १ जोड़ा पान, २१ लौंग, थोड़ा-सा सिन्दूर और धूप-दीप सहित नैवेद्य चढ़ाये। बाद में २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूँके। नेत्र-पीड़ा में लाभ होगा। ऐसा ३ से ७ दिनों तक करे।

२. **हजार घर घाले, एक घर खाए। आगे चले, तो पीछे जाए। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि–शाबर-विधि से उक्त मन्त्र का १००० जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में शिर-वेदनाग्रस्त व्यक्ति को सामने बैठाकर उसके मस्तक के ऊपर अपना हाथ फेरे। हाथ फेरते समय उक्त मन्त्र का ७ बार जप करे और ७ बार फूँके। शिर-दर्द, मस्तक-पीड़ा का शमन होगा।

शिरशूल निवारक मन्त्र

निसु नीह रोई बन्द कर, मेघ गरजहि निसु। न दीपक हुल-घर, फुफु निबेर कूनि डमरु न बजै। निसुनहि कलह निन्न, पुटु काच मई।

विधि–दीपावली की रात में २१ माला जप कर मन्त्र को सिद्ध करे। स्वच्छ आसन पर बैठकर—पवित्र स्थान में धूप-दीप कर जप करे। बाद में शिरशूल से ग्रस्त व्यक्ति के मस्तक के ऊपर २१ फूँक देने से रोग की शान्ति हो जायेगी—शिरशूल दूर हो जायेगा।

आधाशीशी का मन्त्र

१. ॐ नमो। बन में ब्यानी बनारी, उछर वृक्ष पर जाय। कूदि-कूदि शाखन पै, काचा बन फल खाय। आधा तोड़े, आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हुङ्कारत हनुमान जी, आधा शीशी जाय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–शाबर की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। दर्दी को सामने बैठाकर मन्त्र का स्मरण करते-करते धरती के ऊपर चाकू से सात रेखायें सीधी और उन पर सात रेखायें आड़ी खींचते हुए उन्हें काटता जाये। ऐसा तीन या सात बार करने से 'आधाशीशी' की पीड़ा मिट जायेगी।

२. ॐ नमो आदेश गुरु को। काली चिड़ी चिग चिग करै, घोली आवै, वासै हरै। यदि हनुमन्त हांक मारै, मथवाई, अरु आधा शीशी हरै। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–सिद्ध किये हुए मन्त्र से प्रयोग करे। २१ बार मन्त्र का जप करे और चाकू से चाके, तो दर्द नहीं रहेगा। अथवा मन्त्र जपते हुए सात सीधी रेखाओं को काटे, तो 'आधाशीशी' मिट जाती है।

३. ॐ नमो दुघटा तो बन में बसे, तिपटो बसे कवाय। शीश पकडि करि चलिए, आधा शीशी जाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–रविवार के दिन सूर्योदय के पहले एक गिलास में जल लेकर उस जल को २१ वार सिद्ध मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। बाद में मन्त्रोच्चार के साथ पीड़ाग्रस्त मस्तक को उक्त जल के छींटे मारे, तो 'आधाशीशी' दूर होगी।

४. ॐ नमो आधा शीशी। हूँ हुङ्कारी, पहर पचारी। मुख मूँद, पाटलै। डरी। अमुका रे शीश रहै। मुख माहेश्वरी की आज्ञा फुरे। ॐ ठं ठं स्वाहा।

विधि–सिद्ध मन्त्र को २१ बार पढ़ते हुए मस्तक के ऊपर अँगुली फेरे, तो 'आधाशीशी' दूर होगी।

विशेष—'आधाशीशी' से पीड़ित व्यक्ति का नाम जोड़कर प्रयोग करे।

५. ॐ अचल गुसाई, वन खड़े। राय चोरन झंकेवा धन, कच्चे वन-फल खाए। हाँक मारी हनुमन्त ने, इस पण्डित की (पीड़ित की) आधा शीशी उतर जाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र से सात बार झाड़कर दर्दवाले स्थान को पकड़ने से

'आधाशीशी' का रोग दूर होता है। झाड़ते हुए मस्तक को पकड़े रहे। यह क्रिया तीन से सात दिन तक आवश्यकतानुसार करे।

६. बन में जाई बनादरी, जो आधा फल खाए।
खड़े मुहम्मद हाँक दे, जो आधा शीशी जाए।।

विधि–शुक्लपक्ष में पहले वृहस्पति को १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करने से सिद्ध हो जाता है। बाद में रोगी के मस्तक के ऊपर ३ बार मन्त्र पढ़कर फूँकने से 'आधाशीशी' का दर्द दूर होता है।

७. ॐ कामरू देश कामाक्षी देवी, तहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री, एक रौले, एक पकौले, एक ताप तिजारी। इकतरा मथवा आधा शीशी टरै। उतरो तो उतारौ, चढ़ै तो मारौ। ना उतरे, तो गरुड़ मौर हङ्कारे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र को दीपावली के पर्व में 'शाबर' की विधि से सिद्ध करे। मन्त्र का १००० जप कर सिद्ध करे। जप के पूर्व धूप, दीप फूल-मिठाई और जल को यथा स्थान रख ले। बाद में आवश्यकता होने पर ताँबे के पात्र में स्वच्छ जल भरे। उसे २७ या १०८ बार मन्त्र-जप द्वारा अभिमन्त्रित करे। उस जल का अधिकांश भाग रोगी को पिला दे और शेष जल रोगी के दर्द वाले स्थान में या स्थान के ऊपर लगाये। ऐसा ३ या ७ दिन करने से 'शिर दर्द' या 'आधाशीशी दर्द' इत्यादि अच्छा हो जाता है और रोग मिट जाता है।

अधकपारी नाशक मन्त्र

१. ॐ नमो वन में बसी बनारी, उछल पेड़ पर जाय। कूद-कूद डालन पर कच्चे फल खाय। आधी तोड़े-फोड़े, आधा शीशी जाय।।

विधि–'शाबर' की विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में निम्न प्रकार प्रयोग करे—

१. रविवार या मङ्गलवार से प्रारम्भ कर ३ या ७ दिनों तक पीड़ित व्यक्ति को झाड़े। इससे रोग की शान्ति होगी।

२. मन्त्र जपते हुए पृथ्वी के ऊपर चप्पू या चाकू से एक सीधी रेखा खींचे। उस रेखा के ऊपर आड़ी रेखायें खींचकर काटता जाय। सातवीं बार काटने के पहले चप्पू या चाकू को दर्दी के माथे पर फिरा कर काटे। प्रक्रिया करते समय मन्त्र का स्मरण अवश्य करे। ऐसा करने से 'अधकपारी' दूर होगी। इस प्रकार ३ या ७ दिनों तक करना चाहिये।

२. शङ्कर-शङ्कर खोज जाई। शङ्कर बैठे जङ्गल जोई। भूत-वैताल-योगिनी नचाय। सब देवन की जय जय मनाय। ब्रह्मा-विष्णु पूजे जाय। अद-कपारी पीड़ा दर्द जाए।।

विधि–दशहरे में उक्त मन्त्र की २१ माला जप लेने से मन्त्रसिद्ध हो जायेगा। बाद में प्रयोग करे—ताँवे के कलश में स्वच्छ जल रखकर उसे ७ बार अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल को दर्द वाले स्थान के ऊपर बार-बार लगाये और हाथ से मसल दे या स्पर्श करे। जब थोड़ा जल शेष रहे, तब जल को लगाने का कार्य बन्द करे। शेष जल को उसी समय घर से बाहर निकाल कर चौराहे पर डाले जाये। ऐसा क्रम ३ से ७ दिनों तक करने से—'अधकपारी' शान्त हो जायेगी।

एक ठो सरसों, सोला राई। मोरो पटवल को रोजाई। खाय खाय पडे भार। जे करे, ते मरे। उलट विद्या ताही पे परे। शब्द साँचा, पिण्ड काचा- हनुमान जी का मन्त्र साँचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन साँचा।

विधि–पहले शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में बाधाग्रस्त व्यक्ति को बाधा से छुड़ाने के लिए उसके हाथ में स्वत: थोड़ी राई, थोड़ा सरसों, नमक रखे और उसको ११ बार स्वयं अभिमन्त्रि करे। फिर मन्त्र का स्मरण करते हुए उसे बाधाग्रस्त व्यक्ति के मस्तक के ऊपर से ११ बार घुमाकर अग्नि में डाल दे। इसके लिए अग्नि को पहले से ही तैयार करके रखना चाहिये। इससे सभी प्रकार के अभिचार-कर्मों की समाप्ति होती है। शनि या मङ्गलवार को यह 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' को दोहराने से बाधा या कष्ट की पूर्ण समाप्ति होगी।

रोग निवारक शाबर मन्त्र

जै जै गुणवन्ती बीर हनुमान। रोग मिटे और खेलै खिलाब। कारज पुरण करे पवन-सुत। जो न करे, तो मां अञ्जनी की दुहाई। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में 'प्रयोग' करे। कार्तिक मास में किसी भी मङ्गल को 'प्रयोग' करने से विशेष सफलता मिलती है। यदि ऐसा न हो, तो किसी भी मङ्गलवार से यह 'प्रयोग' करे।

ताँबे के एक कलश में या बर्तन में स्वच्छ जल रखे, उसमें चिरमी के तीन दाने डाले। उसको सामने रखकर उसके ऊपर हाथ रखकर उक्त मन्त्र १०८ बार जपे। बाद में चिरमी के दानों को निकालकर रोगी के मस्तक के ऊपर फिराककर दानों को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे। बर्तन के जल को रोगी को पिलाये। इस प्रकार प्रत्येक मङ्गलवार को करे। रोगी को शान्ति मिलेगी।

कर्णमूल पीड़ा-निवारण

वनाह गठि बनरी, तो डाँटे हनुमान। कण्टा बिलारी बाँधी, थनैली कर्ण-मूल सब जाय। रामचन्द्र का वचन-पानीपथ हो जाय।

विधि–मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। आवश्यकता होने पर भस्म को

अभिमन्त्रित कर पीड़ित व्यक्ति को झारे। कर्ण-मूल की पीड़ा दूर होगी। जब तक लाभ न हो, तब तक झारने की क्रिया को करता रहे।

कर्णपीड़ा निवारण

ॐ कनक प्रहार, धन्थर धार प्रवेश कर। डार-डार पास और झार-झार, मार-मार। हुङ्कार शब्द साँचा, पिण्ड काचा। ॐ क्री क्री।

विधि–'शाबर' मन्त्र की विधि से सिद्ध करे। बाद में साँप की बाँबी की मिट्टी लेकर उसे मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करे। फिर मन्त्र स्मरण के साथ थोड़ी-थोड़ी मिट्टी से पीड़ित व्यक्ति को झाड़े। बाद में वही मिट्टी एकत्र कर उसमें थोड़ा जल मिला दे और उसे कान के आस-पास लगा दे (लेप कर दे)। ऐसा करने से कर्ण-पीड़ा समाप्त हो जायेगी।

विधि-विकल्प–यदि साँप की बाँबी की मिट्टी न मिल सके, तो कान की ओर मन्त्र जपते हुए फूँक मारता जाय, तो भी कर्ण-पीड़ा मिट जायेगी, लेकिन धीरे-धीरे मिटेगी; क्योंकि मिट्टी का उपयोग नहीं किया है। कथित मिट्टी ही लेनी चाहिये।

२. **ॐ कनक-पर्वत पहाड़ धन्धुआर। धार घुस डार-डार, पात-पात, झार-झार। हुं हुङ्कार, ॐ क्लीं क्री स्वाहा।**

विधि–सिद्ध किये हुए मन्त्र को प्रयोग करे। सर्प की बाँबी की मिट्टी ले। उसमें थोड़ा जल मिलाये और मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर कान के ऊपर—उसके आसपास उसे लगा दे। पीड़ा शान्त होगी।

कण्ठवेल या कण्ठमाला निवारण मन्त्र

१. **ॐ नमो कण्ठ-बेल, तू द्रम द्रुमाली। सिर पर जकड़ो, वज्र की ताली। गोरख राय गाजता आया। बढती बेलि को तुरत घटाया। जो कुछ बची, ताही मुरझाया। घटि गई बेल, बढ़ै नहिं पावै। बेठि तहाँ, उठन नहिं पावै। कुटै पीड़ा करै, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै।**

विधि–सर्वप्रथम 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब आवश्यकता हो, तब ७ दिन मोरपङ्ख से झाड़े। दर्द शान्त होगा। २१ बार उक्त मन्त्र का स्मरण कर झाड़ना चाहिये।

२. **ॐ कण्ठ-बेल तु द्रम-दुनाली। सिर पर जडी वज्र की ताली। गोरखराय जागता आया। बढ़ती बेल कूं तुरत घटाया। घट गई, बढ़ै ना रोग। पाचै कुटै पीड़ा करै, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई-फिरै।**

विधि–पहले उक्त मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। उक्त मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर विभूतियों से झारें ऐसा २१ दिन तक करे। दर्द दूर होगा।

३. ॐ ह्लीं नमो नारसिंह। हार गुरू आदेश का। घाई कराई का चक्र चलता। दहन करता बज्र छन्दन। भवन ॐ क्षः क्षः (छः छः)। शब्द साँचा, पिण्ड का साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले पर्वकाल में उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' कर सिद्ध करे। फिर सोमवार को जब 'पुष्य-नक्षत्र' हो, तब वन में जाये। उत्तराभिमुख होकर एक हाथ के कुश उखाड़ लाये। ११ बार उक्त मन्त्र से कुशा को अभिमन्त्रित कर कण्ठ-माला के स्थान पर झाड़े। बाद में अभिमन्त्रित कुशा को पीस कर दर्द के स्थान पर लगा दे। लाभ होगा।

कखलाई निवारण मन्त्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई। जहँ बैठे हनुमन्ता आई पचै न फुटै, चले न नाल। रक्षा करे, गुरू गोरख बाल।

विधि–सिद्ध करने के बाद मन्त्र का २१ बार उच्चारण करते हुए नीम की टहनी से रोगी को झारे। 'कखलाई' मिट जायेगी।

अथवा श्वेत मिट्टी ले। उसमें 'जल और थोड़ा 'नमक' मिलाये। तब उसे गरम करे। गुनगुना रहे, तब 'कखलाई' पर उसका लेप करे। एक ही रात में भीना-सूखा हो, ऐसे क्रम से लगातार करे। प्रातः तक ठीक हो जायेगा। मिट्टी ठण्डी हो जाय, तो फिर गरम कर ले, लेकिन कम ही गरम करे; अन्यथा सहन नहीं होगा। दिन भर लगाये, तो रात में अच्छा हो जायेगा। सिद्ध प्रयोग है। बिना मन्त्र भी कर सकते हैं, लेकिन यदि यह आशङ्का हो कि दर्द बारम्बार होता है तो 'मन्त्र' के साथ यह क्रिया करे। ऐसा करने से दर्द पुनः नहीं होगा।

कमरपीड़ा निवारक मन्त्र

१. चलता आवे उछता जाय, भस्म करता उह-उह जाए। सिद्ध गुरु की आन। मन्त्र साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले उक्त मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। बाद में शुक्लपक्ष में किसी कुमारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत के १०१ धागे ले। इन धागों को कमर की नाप में थोड़ा बड़ा रखे। धागों को ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे। धागों के ऊपर फूँक भी लगाये। इन धागों को कमरदर्द वाले रोगी को बाँधे। कमर-पीड़ा दूर होगी।

२. चलता आवे, उछलता जाए। भस्म करता रह-रह जाय। सिद्ध गुरू की आन। मन्त्र साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र का २१ दिन तक नित्य १ माला 'जप' करने से सिद्धि होती है। 'जप' के पहले धूप-दीप कर नैवेद्य चढ़ाये। बाद में 'जप' करे। 'जप' रात्रि में करे।

आवश्यकता पड़ने पर कमर के माप का थोड़ा बड़ा काला धागा ले। काले धागे को ११ वार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ११ गांठे दे। मन्त्र स्मरण कर फूँक भी। धागे को रोगी की कमर में बाँधने को दे। इससे कमर पीड़ा दूर होगी।

विशेष–नित्य १००० 'जप' करे, तो अच्छे परिणाम शीघ्र दिखाई देंगे। जब तक आराम न हो, तो तब तक 'जप' करे। किसी प्रकार की हानि नहीं होगी।

पीलिया या सुखड़ा रोग निवारण मन्त्र

१. ॐ नमो वीर वैताल असुराल नाहरसिंह देव जी खादी (स्वादी तुसादी तुषादि-तुपादि) सुभाल सुभाल। पीलिया को काढ़े, झारे पीलिया। रहे न नेक निशान, जो रह जाय, तो हनुमान की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–१. पहले 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। फिर एक 'करस्य पात्र' में सरसों का तेल रखकर उसको यथा-मति अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित तेल को रोगी के मस्तक के ऊपर या कपाल के ऊपर मले। ऐसा १७ दिनों तक करे। पीलिया का कष्ट कम हो जायेगा। रोगी धीरे-धीरे स्वस्थ हो जायेगा।

२. किसी बच्चे को यदि सूखा रोग हुआ है ऐसा लगे, तो साधक मकोय के पत्ते अपने मुँह में चबाकर रोगी बच्चे की पीठ के ऊपर पहनाये हुए वस्त्र को हटाकर पीठ के ऊपर थूक दे और अपने हाथ से मसल दे। थोड़ी देर के बाद रोगी बच्चे की पीठ में भूरे रङ्ग के छोटे-छोटे कीड़े देखने में आते हैं, उन्हें निकाल दे। यह प्रयोग रविवार और मङ्गलवार को करें।

२. ॐ नमो वीर वैताल असराल नारसिंह देव खादी तुषादी सुभाल तुभाल पीलिया। भद तो काटै झारै, पीलिया रहे न नेक निशान। जो रह जाय, तो यदि हनुमन्त की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

३. ॐ नमो वीर वैताल असराल नाहरसिंह। देव-पादा तुषादी तु पीलिया भेद नास्तु-नास्तु। पीलिया नास्तु।

विधि–मन्त्र (२) व (३) की विधि एक ही है। यथा—एक कटोरे में सरसों का तेल लेकर रोगी के मस्तक के ऊपर रखे। उक्त मन्त्र पढ़ते हुए दूब से तेल को चलाये मन्त्र पढ़ता जाये। तेल पीला हो जाने पर कटोरे को मस्तक से नीचे उतार ले। ऐसा दो-तीन दिन करे, रोग दूर हो जायेगा।

४. ॐ नमो आदेश गुरू को। रामचन्द्र सिंह साधा, लक्ष्मण साधा बाण। काला पीला राता, नीला थोथा पीला-पीला-पीला चारों झड़। जो रामचन्द्र जी थाँ के नाम। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। बाद में पीतल की कटोरी में पानी भरकर सुई से ७ दिन तक झारे। प्रतिदिन २१ बार अथवा २७ बार मन्त्र का पाठ करे।

शिशुरोग निवारक मन्त्र पेट की बीमारी के लिए

ॐ नमो सरस्वती। सक निकली, चोली चली। अग नमो परा। चली मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। चलो ईश्वरी वाचा।

विधि–कुछ बच्चों के पेट में प्राय: पीड़ा होती है। ऐसे बच्चों के लिए सिद्ध किये हुए मन्त्र के द्वारा ७ बार भस्म अभिमन्त्रित करे और उस भस्म को बच्चे के पेट के ऊपर मल दे। ऐसा तीन या सात दिन तक करे। लाभ होगा।

ज्वर, दस्त और खाँसी के लिए

ऐं ह्रीं बाल-ग्रहादि। भूतानां बालानां शान्ति-कारकं। सङ्घात-भेद च नृणां, मैत्री-करणमुत्तमम्। क्लीं ह्रीं ऐं।

विधि–पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र पढ़ते हुए बच्चे के पेट के ऊपर अपना हाथ फिराये अथवा कुछ से जल छिड़के। इससे सभी प्रकार के ज्वर भी शान्त होते हैं। दस्त अथवा खाँसी की बीमारी दूर होती है।

नकसीर रोकने का मन्त्र

१. **ॐ नमो आदेश गुरू को। च्यार आटी, च्यार आटि। निख-निख है, चौरासी बाटी। बहै नीर भाजै चीर नाथ। पैर थाँमि हौ श्री नरसिंह वीर। न थांमे, तो अपनी माता का दूध पिया हराम करै। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि–उक्त मन्त्र पढ़ते हुए रूई के फाहे को नाक अन्दर ७ बार चलाये। नाक से बहने वाला खून रुक जाता है।

२. **ॐ नमो आदेश गुरू को। सार-सार, महा-सार। बाँधूँ सात बार, अणीबाँधूँ तीन बार। लोही की सार बाँधूँ। तीरबाँधे हनुमन्त वीर। पाके न फूटे, तुरत सूखे। शब्द साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि–उक्त मन्त्र को विभूति के ऊपर ७ बार पढ़े। उस विभूति से झाड़ने पर नकसीर रुक जाती है।

३. **ॐ नमो आदेश गुरू को। सार-सार, महा-सार बाँधूँ। सात बार आठी बाँधूँ, तीन बार लोहे की सार बाँधूँ। सीर बाँधे हनुमन्त बीर। पाके न फूटे, तुरत सूखे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि–क्रमांङ्क (२) की तरह। ध्यान रहे कि मन्त्रों को 'शावर-विधि' से पहले

सिद्ध कर लेना चाहिये, तब प्रयोग करना चाहिये। मन्त्र के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक 'जप' उपयोगी होता है।

दाद झारने का मन्त्र

१. हाथ वेग चलाई, आदि-नाथ पवन-पूत-हनुमन्त। कर मोरकत-मेरु चाल, मन्दिर चाल, नव-ग्रह चाल, दोष चाल, दिनाई चाल, डोरी चाल, इन्द्राहि चाल। चाल-चाल हनुमन्त बिना, सह-काल उठि विषि तरु-वर चाल। हम हनुमन्ते मुगरे, लिङ्गडा परोरे वर्ध छले। तरुयरी धानपरि हि यष अष्टोत्तर-शत व्यधि लावरे विशालाव अहरो विष आह।

विधि–पहले मन्त्र को सिद्ध करें। फिर ताँबे के कलश में जल भर कर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर उसको अभिमन्त्रित करे। तब अभिमन्त्रित जल को दाद वाले व्यक्ति को पीने को दे। जब तक लाभ न हो, तब तक करे।

२. ॐ गुरुभ्यो नमः देव देव-पुरी, मेरु-नाथ, दलक्षना भरे विशाहतो राजा वैर धिन आज्ञा, राजा वासुकी की आन, हाथ वेगे चलाव।

३. विष के यापरि विष के यानि। विषै करिय भादि जानि। एक मजाई दाहु करिअ अयुका अन्तेकस कण्डु दादु दिनाई क छेद। करि सिद्धि, गुरु की पाव शरण।

विधि–क्रमाङ्क (२) और (३) की विधि अज्ञात है। यदि किसी को ज्ञात हो, तो सूचित करेंगे। तब तक क्रमाङ्क १ की विधि का अनुसरण किया जा सकता है।

ममरवी झाड़ने का मन्त्र

राजा अजैपाल, सागर खतवारा। बट बाँधा, घाट उतर, ममरषी पानी पिड, सात-राती मोही। पीपर-पात गुञ्जी बारा, डोमिनी चण्डालिनी! तू है नीकी ममरषी। तिल एक रथ ठाठि, कण्ड-झारी ममरषी क्रोध कर।

विधि–पहले मन्त्र को सिद्ध किये हुए मन्त्र का स-स्वर जप करते हुए फूँके। ऐसा २१ बार करे, लाभ होगा।

पेट दर्द को मिटाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। श्याम गुरु-पर्वत, श्याम गुरु-पर्वत में बड, बड में कूव्रार, कूवा में तीन सूवार। भाज भजवे जहर, आइगा जती हनुमन्त। मार करेगा भस्मन्त। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर एक पात्र में स्वच्छ जल ले। जल को उक्त मन्त्र पढ़कर ७ बार अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल को रोगी को ७ दिन तक पिलाये। पेट का दर्द दूर हो जायेगा।

घाव की पीड़ा मिटाने का मन्त्र

सार-सार विजै, सार बाँधूँ सात बार। फूटे अन न उपजे घाव। सीर राखे श्रीगोरखनाथ।

विधि–पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में उक्त मन्त्र को पढ़कर घाव पर ७ बार फूँके।

अदीठ का मन्त्र

ॐ नमो शिर-कटा, नख-कटा, विष-कटा, अस्थि-भेद-मज्जा-गत, फोड़ा-फुन्सी, अदीठ दुम्बल दुखानो रत्यावरोग रींघण वाय जाय। चौंसठ योगिनी, बावन वीर, छप्पन भेरौ रक्षा कीजो आय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले 'शाबर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में रोगी को सामने बैठाये। चुटकी में विभूति ले। ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर विभूति को अभिमन्त्रित करे। फिर विभूति को फोड़े के चारों तरफ लगा देने से रोग की शान्ति होती है।

वाला अथवा बाला का मन्त्र

ॐ नमो वारा रे, तू बलवन्ता। बाला ने खोदे हनुमन्ता। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले मन्त्र सिद्ध करे। फिर साँभर नमक के ढेले से जहाँ 'बाला' हो, वहाँ ३ दिन तक झारे। अथवा साँभर नमक की कङ्कड़ी को उक्त मन्त्र २१ बार जप कर तीन दिन तक झाड़े। पीड़ा समाप्त हो जायेगी।

निनाई का मन्त्र

ॐ नमो तडम उतड भड तेल करे, दीजे बाजी तैल बरै। गलत-सलत तू बाई रोग निनाई रहै, तो यदि हनुमन्त की दुहाई फिरै शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–सिद्ध किये हुए उक्त मन्त्र से विभूति से झाड़े, तो निनाई नष्ट होती है।

रतौंधी झारने का मन्त्र

भाट-भाटिनी निसरी चली, कहां जाइब–'जाइब जावेऊँ समुद्र पर'– भाटिन कहा। बिआ बेउँ–उसकी छाली बिआ बेउँ, उपस माछी कर मुडा अण्डा धोसो हिल-तारा सोहिल तारा। राजा अजेपाल ऊतरत रहे, राजा अजेपाल कर कन्दार पानी। भरत रहे। उन्हें देखे पावा बालाउ, गोडिया मेला उजाड तैकै मैं अधो-मुखी ईश्वर महा-देव के (की) दुहाई। यह मेरी धरी उतर जाय।

विधि–सिद्ध किये हुए उक्त मन्त्र से रतौंधी को झारे। मन्त्र पढ़कर फूँके, तो लाभ होगा।

रजोदोष-निवारक मन्त्र

१. ॐ नमो आदेश दुर्गा माई। बडी-बडी अदरख, पतली रेश। बडे विष के जल फाँस दे शेष। गुरु का वचन न जाय खाली, पिया पञ्च-मुण्ड के वाम ठेली। विष-हरी राई की दुहाई फिरे।

विधि—पर्वकाल में उक्त मन्त्र की १० माला जप करे। फिर 'प्रयोग' करे। रजोधर्म प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पूर्व प्रयोग प्रारम्भ करे। अदरक के ३ या ७ टुकड़ों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। अदरक के टुकड़ों को रोगी स्त्री को खाने के लिये दे। सभी प्रकार की पीड़ा नष्ट होगी। यदि रजोधर्म प्रारम्भ हो गया हो, तो अदरक नहीं खिलाना चाहिये इस तरह से ४-५ मास अदरक को अभिमन्त्रित कर खिलाने से रजो-दोष के समय होने वाली पीड़ा नष्ट होती है।

२. ॐ रिं जय चामुण्डा! घूम राम रमा तरु-गर चढि जाय। यह देखत अमुक के सब रोग पराय। ॐ शिलं हुं फट् स्वाहा, अमुक को रजो-दोष नाशय।

विधि—पहले पूर्वोक्त विधि से मन्त्र सिद्ध करे। बाद में एक केले को ३ या ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे, फिर रोगी स्त्री को खिलाये या खाने को दे। ऐसा २१ दिन तक करे। रजोधर्म सम्बन्धी सभी दोष दूर हो जाते हैं। 'गर्भधारण' करने के लिए भी उक्त प्रयोग उपयोगी है। 'अमुक' के स्थान पर स्त्री का नाम लेकर केले को अभिमन्त्रित करना चाहिये।

सिया का मन्त्र

ॐ नमो कामरु-देस, कमस्या देवी—जहाँ इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री। एक तोड़े, एक पिछाड़े, एक तोते-जरी तोड़े।

विधि—रोगी को अपने सम्मुख खड़ा करे। रोगी के शरीर में जिस स्थान पर ठण्ड लगे, वहाँ हाथ से स्पर्श कर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूँके। सिया रोग दूर हो जायेगा।

बवासीर मिटाने का मन्त्र

१. ॐ नमो आदेश कामरू-कामाक्षा देवी को। भीतर-बार में बोलूँ, सून देकर मन तूँ। काहे जलावत केहि कारण, रसहित पर तू डगर में विख्यात। रहे ना ऊपर अमुक के गत, नरसिंह देव तुमसे बाले वाणी। आज्ञा हाड़ी दासी की—फुरो मन्त्र, चण्डी उवाच।

विधि—पहले 'शावर-विधि' से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर बवासीर के रोगी को प्रातः-सायं ७-७ वार उक्त मन्त्र से झाड़े। थोड़े दिनों में लाभ होगा।

२. ईसा-ईसा-ईसा, काच कपूर चोर के सीसा। यह अच्छर जाने नहीं कोई, खूनी-बादी एकू न होई। दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

विधि–पहले से सिद्ध किये हुए मन्त्र से काम ले। जल को उक्त मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित करके उससे शौच करे। फिर हाथ को पानी से धोकर, मस्से को हाथ से पकड़ कर अभिमन्त्रित जल को मस्से पर लगाये। ऐसा बार-बार करे। थोड़े ही दिनों में खूनी-बादी—दोनों तरह की वीमारी ठीक हो जायेगी।

३. खुरासान की टेनी-शाह, खूनी-बादी दोनों जाय। उमती-उमती चल-चल स्वाहा।

विधि–उपर्युक्त मन्त्र तीन वार पढ़कर शौच करे। वाद में एक लाल सूत में मन्त्र का स्मरण कर ३ गाँठें लगाये। सूत को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पाँव के अँगूठे में बाँधे। ऐसा करने से आन्तरिक या बाह्य, खूनी या बादी दोनों प्रकार की बवासीर मिट जायेगी।

मृगी का मन्त्र

१. हाल हल सरगत मण्डिका पुडीया। श्रीराम फूँक मृगी वायु सूखे। ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि–पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब किसी को मृगी आये अथवा मृगी का दौरा पड़े, तब उक्त मन्त्र को एक कागज के ऊपर लिखकर उसके गले में बाँध दे। इससे लाभ हो जायेगा। उसके बाद उत्तम योग में, भोजपत्र के ऊपर अष्टगन्ध की स्याही व अनार की कलम से उक्त मन्त्र लिखकर उसे तावीज में रखकर रोगी के गले में रक्तवर्ण धागे में पिरोकर धारण कराये। रोगी धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा। प्रयोग के साथ-साथ निम्न टोटकों का उपयोग भी करे। यथा—

(१) जायफल की माला गूँथ कर रोगी के गले में पहनाये।

(२) तीन भाग हल्दी चूर्ण, एक भाग सेंधा नमक का मिश्रण कर एक शीशे की बोतल में भर कर रखे। प्रातः-काल १ छोटा चम्मच रोगी को खिलाये। इससे मृगी के दौरों में कमी होगी। धीरे-धीरे रोग मिट जायेगा।

विशेष–इस रोग में कुछ समय के बाद ही लाभ मिलता है। प्रयत्न करके रोगी को चिन्ता-मुक्त रखना चाहिये। यदि रोगी स्त्री हो, तो उसके रजोदर्शन की बीमारी को दूर करना चाहिये। यदि रोगी पुरुष हो, तो पुरुष को ऊर्ध्व-रेतस् न बनने देना चाहिये। कुछ समय के बाद रोग मिट जाता है। यदि बड़ी उम्र तक रोग न मिटे, तो यह समझे कि रोग असाध्य है।

२. ॐ नमो श्रीराम! उठि-उठि धनुष चढ़ाव। मृग का मार-मार, ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र द्वारा तीर से २१ बार झारने से मृगी का रोगी ठीक हो जाता है।

मद्य वाय का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को बाल में कपाल, कपाल में भेजी। भेजी में कीडा, कीडा न करे पीडा। सोना का सलाबा, रूपा का हथोडा। ईश्वर गोडे, गोर्या तोडे। इनको शाप श्रीमहादेव तोडे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि–पहले उक्त मन्त्र का १ हजार बार 'जप' करके सिद्ध करे। बाद में विभूति से ७ बार अभिमन्त्रित करके झाड़े। रोग शान्त होगा।

रोधन वाय का मन्त्र

ॐ नमो कामरू-देश कामाक्षी देवी, जहाँ बसै इस्मायल योगी। इस्मायल जोगी की तीन पुत्री। एक तोड, एक पिछौडे, एक बारी, थनि बाय तोडे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि–पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मङ्गल या शनिवार को झाड़े। रोग-शान्ति होगी।

हूक झारने का मन्त्र

१. **ॐ सुमेरु पर्वत पर लोना चमारी। सोने की चाँदी, सोने की सुतारी। हूक चक बाँह बिलारी, धरणी नाली काटि, फूटी समुद्र खारी बहावौ। लोना चमारी क दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।**

विधि–पहले से सिद्ध किये हुए उक्त मन्त्र से २१ बार झाड़े।

२. **ॐ नमो सार की छुरी, धारका बान हुक न चले रे। मुहम्मदा ज्वान की आन। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।**

विधि–पहले मन्त्र को २१ बार पढ़कर पृथ्वी के ऊपर छुरी से लकीरे खींचे। हूक बन्द हो जायेगी।

सब प्रकार के जहर को उतारने का मन्त्र

गङ्गा गोरी, दोनों रानी। टाकण मारी, करो विष पानी। गङ्गा बाँटे, गौरा खाय। अठारा मार, विष निर्विष हो जाय। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि–पहले ग्रहण या पर्वकाल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में रविवार के दिन ७ बार उक्त मन्त्र को पढ़कर फूँके।

सर्प विष उतारने का मन्त्र

१. **ॐ नमो सर्पा रे! तू थूल मथुला। मुख तेरा बना कमल का फूला-रे ! सप्पा बांधूँ तेरी दादी बूवा, जिसने तोको गोद खिलाये। सर्पा रे सर्पा बांधूँ, तेरा रतन कटोरा। जा मैं तोकूँ दूध पिलाय। सर्पा बीज, कीलनी बीज।**

पान मेरा कीला करे जो घाव, तेरी दाड़ भस्म हो जाय। गुरू गोरखनाथ भी जाय जलाय। ॐ नमो आदेश गुरू को। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–शिवरात्रि में उक्त मन्त्र का 'जप' प्रारम्भ करे। दूसरे दिन सूर्यास्त तक एक ही आसन में बिना गिनती के जितना जप सके, जपे। यदि एक आसन से प्रयोग करने में असमर्थ हो, तो यह साधना न करे। ऊपर कथित समय में मन्त्र सिद्धि होगी। बाद में ३ बार उक्त मन्त्र पढ़कर जिस किसी को सर्प ने काटा हो, उसे सर्प द्वारा काटे हुए स्थान पर बाहर से झाड़े। सर्प का विष उतर जायेगा और व्यक्ति ठीक हो जायेगा।

२. ॐ नमो सर्प्पा रे, तू थल मथल। मुख बना तेरा कमल का फूल। सर्प्पा बांधू, तेरी भूपा दादी, जिन तुहि गोद खिलाया। सर्प्पा बांध तेरा रतन कटोरा, जामें तोकूँ दूध पिलाया। बीज कितनी, बीज पाग। मेरा कीला करें जु घाव, तो तेरा डाढ़ भस्म हो जाय। गुरू गोरख भी जाय लजाय। ॐ नमो आदेश गुरू को। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

विधि–'शिवरात्रि' से प्रयोगारम्भ कर एक वर्ष तक प्रतिदिन सवा प्रहर तक उक्त मन्त्र का जप करे, तो मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बाद में जव आवश्यकता हो, तब इस मन्त्र का उपयोग करे। यथा—'आरने कण्डों' (जङ्गली उपलों) की राख पर ७ बार मन्त्र पढ़कर 'सर्प' के ऊपर डालने से उसका कीलन हो जायेगा। अथवा दूसरे शब्दों में उसका मुख बन्द हो जाता है इस प्रकार उसकी डँसने (काटने) की शक्ति नष्ट होगी।

सर्प खोलने का मन्त्र

१. ॐ नमो कीलन भईक, कीलनी वाया भया कुवास। जाहू सर्प घर अपने, गै फिर चारों मास। शब्द सांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

२. पहल भगाए कपाडे। कर मर्दाना भेष। बँधी बँधी-पन छुटाई, फिरि आचारो देश। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि–किसी भी एक मन्त्र को 'शावर-विधि' से सिद्ध कर लें। आवश्यकता होने पर मन्त्र को पढ़कर कङ्कड़ से मारे, तो कीला हुआ साँप छूट जाता है।

सर्प को भगाने का मन्त्र

ॐ प्ल:सर्प-कुलाय स्वाहा। अशेष-कुल-सर्प-कुलाय स्वाहा।

विधि–उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित मृत्तिका को घर में बिखेर दे, तो घर से सब प्रकार के सर्प भाग जाते हैं। मन्त्र को पहले सिद्ध कर ले।

सर्प-विष को झारने का मन्त्र

उतर दिशि कारी बादरी, तेहि मध्य ठाढ़ काल-पुरु ॐ एक हाथ

चक्र, एक हाथ गदा। चक्र मारो शत-खण्ड जाई, गदा मारे सातों पाताल जाई। ॐ हर-हर निर्विष शिवाज्ञा।

विधि–ग्रहण या पर्वकाल में मन्त्र को सिद्ध कर ले। सिद्ध मन्त्र को पढ़-पढ़ कर फूँकने या झारने से विष नष्ट हो जाता है। सर्प विष उतारने के लिए झाड़-फूँक का यह उत्तम मन्त्र है।

बिच्छू काटने का मन्त्र

ऊँचा खेड़ा, दहा-कारक केरा, जहां बसे निर्गुण का चेला। लाल बिच्छू, काला बिच्छू, पीला, मटियाला, घोला, पहाड़ी हरी बिच्छू-घरी चूप। सोने की माला, ईश्वर मिले। गोरा नहाय, मेरा बन्ध निरबस हो जाय। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–ग्रहण के समय उक्त मन्त्र कम-से-कम २१ माला जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होता है। अधिक माला हो सके, तो और अधिक प्रभाव होगा। मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद भी जब-जब ग्रहण पड़े, तब-तब पुन: जप कर ले।

बिच्छू-काटे के काटने के स्थान के ऊपर के बाग में 'मौली' को २१ बार अभिमन्त्रित कर मन्त्र का स्मरण करते हुए 'मौली' की गाँठ कस कर लगा दे। 'मौली' के अभाव में 'भस्म' को अभिमन्त्रित करके 'काट' के ऊपर अच्छी तरह से लगा दे। 'काट' की पीड़ा समाप्त होगी और विष उतर जायेगा।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

१. ॐ नमो सत्य नाम, आदेश गुरु को। वश्चिक-दंश पीड़ा हरो, जहर उतारो। न उतारो, तो गुरु गोरकनाथ की आन। दुहाई काली कङ्कालनी की। दंश-पीडा बन्ध-बन्ध। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब दंशयुक्त व्यक्ति आये, तब २१ बार उक्त मन्त्र 'जप' कर झाड़े। समाप्त होगी और जहर भी उतर जायेगा।

२. ॐ सुमेर पर्वत, नोना चमारी। सोने राई, सोन के सुनारी। हुक हुक, बान बिआरी। धारिणी नला, कारी-कारी समुद्र पार बहायो, दोहाई नोना चमारी की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

३. ॐ नमो गुरुह गाय, परवत पर जाय। हरी दूब खाती फिरे, ताल-तलैया पानी पिए। गुरह गाय ने गोबर किया, जिसमें उपजे बिच्छू सात। काले, पीले भूरे (घोले), लाल, रङ्ग-बिरङ्गे और हराल। उत्तर ने उतर जह-बिच्छू का जाया, नहिं (तो) गरुड जी उड़ के आया (नहिं गरुड़ उड़कर आया)। सत्य नाम, आदेश गुरु को। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि–(१) पहले मन्त्र सिद्ध करे। फिर उक्त मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर दंशयुक्त व्यक्ति को पिलाये। विष का प्रभाव नष्ट होगा।

(२) दीपावली की रात में उक्त मन्त्र की १० माला 'जप' करे। इस प्रकार १००० 'जप' करने से मन्त्र सिद्धि होगी। बाद में दंशयुक्त व्यक्ति को ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाये, तो विष या जहर उतर जायेगा।

बिच्छू झारने का मन्त्र

१. सुरहि कारी गाय, गाय की चमारी पूछी। तेकरे गोबर, बिच्छा बिअतीइ बिंछी। तोर के जाती, गौरा वर्ण अंठारह जाती। छः कारी, छः पीअरी, छः भूमा-धारी, छः रत्न-पवारी, छः क्षः। कुँटुँ कुँटुँ छारि उतारी बिच्छी। हाडा-हाड, पोर-पोर, कस मार। लील कण्ठ गर मोर, महादेव की दोहाई। गौरा-पार्वती की दुहाई। अनी-तबे हरि शण्डार, मन छाई उतरहि बीछी। हनुमन्त आज्ञा, दुहाई हनुमन्त की।

२. पर्वत ऊपर सुरहि गाई, तेकरे गोबरे बिछी बिआई। छःकारी, छः गोरी। छः का जोता उतारि कै, बिछा बिछिठा। वहि आ आठ-गाठि, नव पारे बीछी करे–अजोइ बलि चलु चलाई कर वाइ। ईश्वर महो-देव गुरु के। ठावहिं ठाव, बीछी पार्वती।

३. बीछी-बीछी तोरे के जाति? छः कारी, छः पीयरी, छः परवारी। बीछी पपाना पस स्वपाउ, तोरि विषि तइमें ना हिठाउ। ऊपर जा तिगछै पाऊ, शिव वचन शिव नारी। हनुमान के आन, महा-देव कै आन, गोरा-पार्वती के आन। नोना चमारिन के उतरित आउ, उतरि आउ।

४. ॐ नमो समुद्र! समुद्र में कमल, कमल में विषहर बिछू उपजावे। कहूँ तेरी जाति-गरुड कहे मेरी उठारह जाति। छः कारी, छः काबरी, छः कूँ कूँ वान। उतरे रे उतर, नहीं तो गरुड पङ्ख हङ्कारु आन। सर्वत्र विष न मिलई, उतरे रे बिछू! उतर। गुरु की भक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि–उक्त पहले तीन मन्त्रों की विधियाँ प्राप्त नहीं हैं। किसी को ज्ञान हों, तो कृपया 'चण्डी-कार्यालय' को लिखकर भेजें।

क्रम (४) की विधि इस प्रकार है—सबसे पहले 'शाबर-विधि' से मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र को पढ़ते हुए बिच्छू द्वारा मारे गये डङ्क के स्थान के ऊपर के भाग पर अपना हाथ फिराये। दंशयुक्त व्यक्ति को लाभ होगा।

पागल कुत्ते का विषय झारने का मन्त्र

१. ॐ नमो कामरू देश कामाक्षी देवी। जहां बसै इस्माइल योगी। इस्माइल-योगी ने पाली कुत्ती। दश काली, दश काबरी, दश पीली, दश

लाल। रङ्ग-बिरङ्गी दश खड़ी, दश टीको दै भाल। इनका विष हनुमन्त हरै, रक्षा करे गोरख-बाल। सत्य-नाम आदेश गुरु को।

विधि—पहले ग्रहण के समय उक्त मन्त्र को 'शाबर-विधि' से सिद्ध करे। 'जप' करते समय इष्टदेव के पास तेल का दिया जलाये। लड्डुओं का भोग लगाये। बाद में जब किसी को पागल कुत्ते ने काटा हो, तो उसके घाव के चारों ओर उपलों की भस्म को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर ३ दिन तक जलाये। विष का निवारण होगा। जब तक लाभ न हो, तब तक करे।

२. कारी कुत्ती विविलारी। घौना कुत्ता, कलोर फलाला काटा। कुकुर वायु धप ल्यायु।

३. शींगी भौरी मेवताशी, भोरे-भोरे दुर्गा दाशी। जेथाल सना ता ता पोखरा, गौरा पैठी नहाहि। महा-देव पठि पङ्कही। विष निर्विष हो जाय।

विधि—क्रम २ और ३ की विधि इस प्रकार है—कुम्हार के चाक की मिट्टी को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कुत्ते द्वारा काटे हुए स्थान पर बार-बार फेरे। मन्त्र-जप करता रहे। जब घाव के स्थान पर कुत्ते के बाल दिखाई देते हैं, तब रोगी को लाभ हो जाता है।

४. ॐ गान्धारी स्वाहा।

विधि—पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में विभूति को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और मन्त्र स्मरण करते हुए पागल कुत्ते द्वारा काटे हुए स्थान के ऊपर लगा दे। विष दूर हो जायेगा।

५. अकट कूकरा, विकट वान। विष कूँ झाडुँ, वारूँ वार। कोरा कारवा, इब्रत नइया। गोरे ठोले ईश्वर न्हाय। कुत्ता को विष उतर जाय। दुहाई महादेव-पार्वती की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—कुम्हार के चाक की मिट्टी लाये। उसकी ७ गोलियाँ बनाये। गोलियों के ऊपर ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। बाद में उन गोलियों से ७ बार मन्त्र पढ़कर झारे। ३ गोली रोगी को दे तथा ४ अपने पास रखे। रोगी व साधक गोलियों के टुकड़े-टुकड़े कर बिखेर दे। उन्हें बिखेरते समय गौरा-पार्वती की दुहाई बोलता रहे। फिर कुचला और ताँबे के पैसे को घाव के ऊपर रखकर घाव को पट्टी से बाँध दे। अथवा गौरा-पार्वती की दुहाई पढ़कर ताँबे के दो पैसे और कुचला को पागल कुत्ते द्वारा काटे हुए स्थान पर रखकर पट्टी बाँधे। विष-निवारण होगा।

गण्डा देने का मन्त्र

बन्ध तो बन्ध, मौला मुर्त्तजा अली का बन्ध, कीड़े और मकोड़े का बन्ध, ताप और तिजारी का बन्ध, जड़ी और बुखार का बन्ध, नजर और गुजर

का बन्ध, दीठ और मूठ का बन्ध, कीए और कराए का बन्ध, भेजे और भिजाए का बन्ध, पैरों और हाथन का बन्ध, बन्ध तो बन्ध, घर और बाहर का बन्ध, पवन और पानी का बन्ध, कुँआँ और पनिहारी का बन्ध, लोहा और कलम का बन्ध, बन्ध तो बन्ध–मौला मुर्त्तजा अली का बन्ध।

विधि–शुक्लपक्ष के 'प्रथम गुरुवार' की रात्रि को या 'ग्रहणकाल' में इस मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध करे, फिर जिसे गण्डा देना हो, उसकी चोट से पैर की एड़ी तक 'नीला धागा' नाप कर सात गाँठें मन्त्र पढ़कर लगावें तथा सवा पाव मिठाई मँगाकर **'मौला मुर्त्तजा अली'** के नाम से बच्चों में बाँट दें।

'गण्डे' को लोबान की धूप से धूपित करके रोगी के गले में बाँध दें। यह प्रयोग हर कार्य के लिए किया जाता है।

गुरु गोरखनाथ का सरभङ्गा (जञ्जीरा) मन्त्र

ॐ गुरुजी में सर-भङ्गी सबका सङ्गी दूध-मास का इक-रङ्गी, अमर में एक तमर बरसे, तमर में एक झाँई, झाँई में परछाई दरसे, वहाँ दरसे मेरा साँई। मूल चक्र सर-भङ्ग आसन, कुण सर-भङ्ग से न्यारा है, वाँहि मेरा श्याम विराजे। ब्रह्म तन्त से न्यारा है, औघड़ का चेला-फिरूँ अकेला, कभी न शीश नवाऊँगा, पत्र-पूर परत्रन्तर पूरूँ, ना कोई भ्रान्त ल्यावूंगा, अजर-बजर का गोला गेरूँ परबत पहाड़ उठाऊंगा, नाभी डङ्का करो सनेवा, राखो पूर्ण बरसता मेवा जोगी जुग से न्यारा है, जुग से कुदरत है न्यारी, सिद्धां की मुँछया पकड़ो, गाड़ देओ धरणी माँही, बावन भैरूँ, चौंसठ जोगन, उलटा चक्र चलावे वाणी, पेडू में अटके ना, ना कोई माँगे हजरत भाड़ा, मैं भटियारी आग दियूँ चोरी चकारी बीज बारी, सात राँड दासी म्हारी, वाना-धारी कर उपकारी, कर उपकार चल्यावूँगा, सीवो दावो ताप तिजारी, तोड़ू तीजी ताली, खट-चक्र का जड़ दूँ ताला, कदेई ना निकले गोरख बाला, डाकिनी शाकिनि, भूताँ जा का करस्यूँ, जूता, राजा पकड़ूँ, हाकिम का मुँह कर दूँ काला, नौ गज पाछे ठेलूंगा, कुँएं पर चादर घालूँ, आसन घालूँ गहरा, मण्ड मसाणा, धुनो धुकाऊँ नगर बुलाऊँ। डेरा आसन घालूँ गहरा, मण्ड मसाणा, धुनो धुकाऊँ नगर बुलाऊँ डेरा। यह सर-भङ्ग का देह, आप ही कर्त्ता, आपकी देह, सर-भङ्ग का जाप सम्पूर्ण सही, सन्त की गद्दी बैठ के गुरु गोरखनाथ जी कही।

विधि–किसी एकान्त स्थान में धूनी जलाकर उसमें एक चिमटा गाड़ दें। उस धूनी में एक रोटी पकाकर पहले उसे चिमटे पर रखे। इसके बाद किसी काले कुत्ते को खिला दें। धूनी के पास ही पूर्व तरफ मुख करके आसन बिछाकर बैठ जायें तथा २१ बार उक्त मन्त्र का जप करें।

उक्त क्रिया २१ दिन तक करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर ३ काली मिर्चों पर मन्त्र को सात बार पढ़कर किसी ज्वरग्रस्त रोगी को दिया जाय, तो आरोग्य-लाभ होता है। भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, गजर झपाटा होने पर सात बार मन्त्र से झाड़ने पर लाभ मिलता है। कचहरी में जाना हो, तो मन्त्र का ३ बार जप करके जाय। इससे वहाँ का कार्य सिद्ध होगा।

श्री भैरव मन्त्र

ॐ गुरुजी काला भैरूँ कपिला केश, काना मदरा, भगवाँ भेस। मार-मार काली-पुत्र! बारह कोस की मार, भूताँ हात कलेजी खूँहा गेडिया। जहाँ जाऊँ भैरूँ साथ। बारह कोस की रिद्धि ल्यावो। चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो। सूती होय तो जगाय ल्यावो। बैठा होय, तो उठाय ल्यावो। गेल्याँ की रस्तान मोह, कुवे की पणिहारी मोह, बैठा बाणिया मोह, घर बैठी वणियानी मोहू, राजा की रजवाड़ मोह, महिला बैठी रानी मोह। डाकिनी को, शाकिनी को, भूतनी को, पलीतनी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धक्का कूँ, पलीया कूँ, चौड़ कूँ, चौगट कूँ, काचा कूँ, भूत कूँ, पलीत कूँ, जिन कूँ, राक्षस कूँ, बरियों से बरी कर दे। नजराँ जड़ दे ताला, इत्ता चीर फाड़ लँगोट करे। चल डाकिनी, शाकिनी, चौडूँ मैला बाकरा, वेस्यूँ मद की धार, भरी सभी में द्यूँ आने में कहाँ लगाई बार? खप्पर में खाय, मसान में लौटे, ऐसे काला भैरूँ की कुण पूजा मेटे। राजा मेटे राज से जाय, प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय, जोगी मेटे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चला मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–उक्त मन्त्र का अनुष्ठान रविवार से प्रारम्भ करें। एक पत्थर का तीन कोनेवाला टुकड़ा लेकर उसे अपने सामने स्थापित करें। उसके ऊपर तेल और सिन्दूर का लेप करें। पान और नारियल भेंट में चढ़ावें। वहाँ नित्य सरसों का तेल का दीपक जलावें। अच्छा होगा कि दीपक अखण्ड हो। मन्त्र को नित्य २१ बार ४१ दिन तक जपें। जप के बाद नित्य छार, छरीला, कपूर, केशर और लौंग की आहुति दें। भोग में बाकला, बाटी बाकला रखे। जब श्री भैरवदेव दर्शन दें, तो डरें नहीं। भक्तिपूर्वक प्रणाम करें और मांस-मदिरा की बलि दें। जो मांस-मदिरा का प्रयोग न कर सकें, वे उड़द के पकोड़े, बेसन और लड्डू और गुड़-मिले दूध की बलि दें। मन्त्र में वर्णित सब कार्यों में यह मन्त्र काम करता है।

महालक्ष्मी मन्त्र

राम-राम क्या करे, चींनी मेरा नाम। सर्व-नगरी बस में करूँ, मोहूँ सारा गाँव। राजा की बकरी करूँ, नगरी करूँ बिलाई। नीचा में ऊँचा करूँ, सिद्ध गोरखनाथ की दुहाई।

विधि–जिस दिन गुरुवार को पुष्य-नक्षत्र हो, उस दिन से प्रतिदिन एकान्त में बैठकर कमल-गट्टे की माला से उक्त मन्त्र को १०८ बार जपें। ४० दिनों में यह मन्त्रसिद्ध हो जाता है। फिर नित्य ११ बार जप करते रहें।

लक्ष्मी पूजन मन्त्र

आवो लक्ष्मी बैठो आँगन, रोरी तिलक चढाऊं। गले में हार पहनाऊँ।। बचनों की बाँधी, आवो हमारे पास। पहला वचन श्रीराम का, दूजा वचन ब्रह्मा का, तीजा वचन महादेव का। वचन चूके, तो नर्क पड़े। सकल पञ्च में पाठ करूँ। वरदान नहीं देवे, तो महादेव शक्ति की आन।

विधि–दीपावली की रात्रि को सर्वप्रथम षोडशोपचार से लक्ष्मी जी का पूजन करें। स्वयं न कर सकें तो किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण से करवा लें। इसके बाद रात्रि में ही उक्त मन्त्र की ५ माला जप करें। इससे वर्ष समाप्ति तक धन की कमी नहीं होगी और सारा वर्ष सुख तथा उल्लास में बीतेगा।

दूकान की बिक्री अधिक हो

१. श्री शुक्ले महा-शुक्ले कमल-दल-निवासे श्रीमहा-लक्ष्मी नमो नमः। लक्ष्मी माई, सत्त की सवाई। चेती, करो भलाई। ना करो, तो सात समुद्रों की दुहाई। ऋद्धि-सिद्धि खावोगी, तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

विधि–घर से नहा-धोकर दुकान पर जाकर अगरबत्ती जलाकर उसी से लक्ष्मी जी के चित्र की आरती करके गद्दी पर बैठकर १ माला उक्त मन्त्र की जप कर दुकान का लेन-देन प्रारम्भ करें। आशातीत लाभ होगा।

२. भँवर! तू चेला मेरा। खोल दुकान, कहा कर मेरा। उठे जो डण्डी, बिके जो माल, भँवर वीर सोखे नहिं जाय।

विधि–किसी शुभ रविवार से उक्त मन्त्र की दस माला प्रतिदिन के नियम से दस दिनों में १०० माला जप कर लें। बस, मन्त्र सिद्ध हो गया, केवल रविवार के ही दिन इस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है। प्रातः स्नान करके दुकान पर जायें। एक हाथ में थोड़े-से काले उड़द ले लें। फिर ११ बार मन्त्र पढ़कर उन पर फूँक मारकर दुकान में चारों ओर बिखेर दें। सोमवार को प्रातः उन उड़दों को समेट कर किसी चौराहे पर बिना किसी के टोके डाल आयें। इस प्रकार चार रविवार तक लगातार बिना नागा किये, यह प्रयोग करें। दुकान की बिक्री दुगनी-तिगुनी हो जायेगी।

अघोरी गोरी मन्त्र

मखनो हाथी जर्द अम्बारी। उस पर बैठी कमल खा, मुगल पठान। बैठे चबूतरे, पढ़े कुरान। हजार काम मेरा कर। ना करे, तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

यदि किसी कन्या की आयु अधिक हो गई हो और किसी कारणवश विवाह न हो पाया हो, तो उसका विवाह शीघ्र कराने हेतु उक्त मन्त्र का प्रयोग करें।

विधि—उक्त मन्त्र का जप शुक्लपक्ष के प्रथम गुरुवार से कमलगट्टे की माला से २१ दिन तक करें। गुलाब की अगरबत्ती जलाकर सूती आसन पर बैठकर करना चाहिये। इस मन्त्र का जप एकान्त कमरे में दिन या रात्रि में किसी भी समय वही लड़की करेगी, जिसकी शादी करती है। मन्त्र जप प्रारम्भ होने के बाद लड़की के पिता को वर ढूँढने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। शीघ्र ही विवाह सम्पन्न हो जायेगा।

पीलिया मन्त्र

ओम नमो बैताल। पीलिया को मिटावे, काटे झारे। रहै न नेंक। रहै कहूं तो डारूं छेद-छेद काटे। आन गुरु गोरखनाथ। हन हन, हन हन पच पच, फट् स्वाहा।

विधि—उक्त मन्त्र को 'सूर्यग्रहण' के समय १०८ बार जप कर सिद्ध करें। फिर शुक्र या शनिवार को काँसे की कटोरी में एक छटाँक तिल का तेल भरकर उस कटोरी को रोगी के सिर पर रखें और कुएँ की 'दूब' से तेल को मन्त्र पढ़ते हुए तब तक चलाते रहें, जब तक तेल पीला न पड़ जाय। ऐसा २ या ३ बार करने से 'पीलिया' रोग सदा के लिये चला जाता है।

दाद का मन्त्र

ओम् गुरुभ्यो नमः। देव-देव! पूरा दिशा भेरूनाथ-दल! क्षमा करो, विशाहतो वैर, बिन आज्ञा। राजा बासुकी का आन, हाथ वेग चलाव।

विधि—किसी पर्वकाल में एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर इक्कीस बार पानी को अभिमन्त्रित कर रोगी को पिलावें, तो 'दाद' रोग जाता है।

आँख की फूली काटने का मन्त्र

उत्तर काल, काल! सुन जोगी का बाप् इस्माइल जोगी की दो बेटी-एक माथे चूहा, एक काते फूला। दुहाई लोना चमारी की! एक शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।

विधि—पूर्वकाल में एक हजार बार जप कर सिद्ध करें। फिर मन्त्र को २१ बार पढ़ते हुए लोहे की कील को धरती में गाड़ें, तो 'फूली' कटने लगती है।

मोहिनी मन्त्र

मोहन-मोहन क्या करे? मोहन मेरा नाम! भीत पर तो देवी खड़ी। मोहों सारा गाँव, राजा मोहों, प्रजा मोहों, मोहों गणपत राय। तैंतीस कोटि देवता मोहों। नर लोग कहाँ जायँ? दुहाई ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती, नैना योगिनी, कामरू कामाक्षा की।

विधि–दशहरे के दिन नित्य एक माला का जप दस दिन तक करे। जप-काल 'घी-गुग्गुल-कपूर' से धूनी दे, तो मन्त्र सिद्ध होता है।

'गोरोचन' को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगायें। तब जिस व्यक्ति के पास जायेंगे, वह मोहित होगा। 'फूल' को अभिमन्त्रित कर जिसे सुँघाया जायेगा, वह मोहित होगा। सभा को मोहित करना हो तो मन्त्र पढ़कर चारों ओर फूँक मारें—सभी मोहित होंगे।

सुपारी मोहनी मन्त्र

खरी सुपारी टामनगारी, राजा-प्रजा खरी पियारी, मन्त्र पढ़कर लगाऊँ, तो रही या कलेजा लावे तोड, जीवत चादे पगथली, मूवे सेवे मसान, या शब्द की यारी न लावे, तो जती हनुमान की आज्ञा न माने। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–सूर्यग्रहण के दिन स्नानादि कर ७ समूची सुपारियों को धोकर पात्र में रखें तथा आसन पर बैठकर गूगल की धूनी और घी के दीपक से उनकी पूजा करें। इसके बाद १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे।

यदि 'ग्रहण' का दिन न मिले, तो 'रवि-पुष्ययोग' से २१ दिनों तक नित्य सुपारियों की पूजा तथा १०८ बार मन्त्र का जप करें। इस क्रिया से सुपारियाँ मन्त्र-शक्ति से सम्पन्न हो जायेंगी। बाद में जब यह सुपारी ७ बार मन्त्र पढ़कर जिसे खिलाई जायेगी, वही मोहित होकर वश में हो जायेगा।

वशीकरण मन्त्र

१. ऐं भग-भुगे, भगनि भगोदरि, भग-माले, योनि-भग-निपातिनी, सर्व-भग-वशङ्करि, भग-रूपे, नित्यक्लैं, भग-स्वरूपे! सर्व-भगानि में वशमान्य। वरदे, रेते, सु-रेते, भग-क्लिन्ने! क्लीं न द्रवे! क्लेदय, हावय, अमोघे! भग-विधे! क्षुभ, क्षोभय, सर्व-सत्त्वान्। भगेश्वरी ऐं क्लं जं ब्लूं भै ब्लूं मों व्लूं हे हे क्लिन्ने! सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।

विधि–कामाक्षा अथवा योनि-स्वरूपा का ध्यान कर उक्त मन्त्र की १ माला एकाग्र मन से जपे, तो वशीकरण होता है।

२. ऐं सहवल्लरी क्लीं कर कलीं काम-पिशाचिनी...(साध्या का नाम) काम-ग्राह्य-पद्मे मम रूपेण नखैर्विदारय, द्रावय द्रावय, बन्धय बन्धय, श्रीं फट।

विधि–उक्त मन्त्र का २० हजार जप कर सिद्ध कर लें। जिस पर प्रयोग करना हो, उसे ध्यान में रखकर रात्रि में सोने से पूर्व ११०० मन्त्र प्रतिदिन जपे, तो शीघ्र ही वशीकरण हो जाता है।

पान वशीकरण मन्त्र

१. कामरू देश कामाख्या देवी, तहां बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने दीना बीड़ा। पहला थोड़ा आती-जाती, दूजा बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अङ्ग लिपटाय। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

विधि–दीपावली की रात्रि में १४४ बार जपने से उक्त मन्त्रसिद्ध हो जाता है। जप के समय दीप जलायें, धूप दें तथा मिठाई का प्रसाद रखें। मन्त्र सिद्ध कर लेने पर तीन पानों का मसालेदार बीड़ा बनायें। ७ बार उक्त मन्त्र से उस पर फूँक मारकर जिसे खिला देंगे, वह वश में हो जायेगा।

२. हाथ पसारूँ, मुख मलूँ, काली मछली खाऊँ, आठ पहर चौंसठ घड़ी जग मोह घर जाऊँ।

विधि–किसी शुभ शनिवार से जप प्रारम्भ करे। सात शनिवार तथा सात रविवार—दोनों उक्त मन्त्र को रात्रि में १०८ बार जपें। जप के समय गूगल की धूप, दीपक तथा प्रसाद रक्खें। इस प्रकार सात सप्ताह की साधना से मन्त्रसिद्ध हो जाता है। बाद में अभीष्ट व्यक्ति को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित पान खिला दें। वह वशीभूत हो जायेगा।

श्री नारसिङ्गी देवी का साबर मन्त्र

गगन गड़गड़ानो, जीभ लफ-लफ-लफ लफानी। लोग डडर डर परानी, खम्भ फाटो चचड़ चड़-चड़ानी। निकसी रूप नाहर का, वीर नरसीङ्ग की दुहाई।

हनुमान जी का साबर मन्त्र

एक चिड़िया उड़ी आसमान में, हनुमान वीर दीन ललकार! तुरन्त गई मरघट के पास, मरघट से बोले मुरदे मसान। काट कर बहुत किट-किटान। मेरा बाचा काटे, तो माता अञ्जनी का पूत पवन-सुत न कहावे। तेरी माता का दूध हराम।

साबर हनुमान जञ्जीरा

ओम् वीर बज्र हनुमताय नमः चलो राम-दुताय नमः। चलो बाँध लोहे का गदा, वज्र का कछौटा, पान तेल सिन्दुर को पूजा। ओं खं खं खं खट पवन पतङ्ग, ओं चं चं चं कहसि कुबेर। भैरव कील, मशान कील। देव कील, दानव कील। दैत्य कील, ब्रह्म-राक्षस कील। छल-छिद्र में कील, मेघ कील। मेरे ऊपर घात करे, छाती फाट के मरैं। माता अञ्जनी की दुहाई। सुर-वंशी राजा रामचन्द्र की दुहाई। जीते लक्ष्मण की दुहाई।

बाबा नानकजी का साबर मन्त्र

ॐ सत्त नाम का सभी पसारा, धरन गगन में जो वर तारा। मन की जाय जहाँ लगि आखा, तहँ तहँ सत्त नाम की राखा। अन्न-पूरना पास बैठाली, गई थड़ो भई खुसाली। चिनत-मनी कलप-तराये काम-धेनु को सथ लियाए, आया आप कुबेर भण्डारी। साथ लक्ष्मी आज्ञा-कारी। सत्-गुरु पूरन किया सवारथ। बिच आ बइठे पाँच-पदारथ। राखा बरमा विशुन महेस, काली भैरो हनू गनेस। सिध चौरासो अहै नव-नाथ, बावन वीर जती चौंसाठं। धाकन गगन पिरथवी का बासन रहे अम्बोल न डोले आसन राखा हुआ। आप निरङ्कार थुड़ो भाग गई, समुन्दरो पार अतुत भण्डार, अखुत अपार। खात खरचत कुछ होय न ऊना, देव देवाये दूना चौना। गुरु की झोली मेरे हाथ, गुरु-वचनी बन्धे पञ्च ता। वे अण्ट बे-अण्ट भण्डार, जिनकी पैज रखी करतार। मन्तर पूरना जी का सम्पूरन भया, बाबा नानक जी का। गुरु के चरन-कमल को नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

महालक्ष्मी का साबर मन्त्र

श्री महा-लक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई, सत्त की सवाई। आओ करो भलाई। भलाई न करौ, तो सात समुद्र की रिधि-सिद्धि खै। ओ नव-नाथ, चौरासी सिधों की दोहाई। श्री महा-लक्ष्मी नमो नमः।।

विधि—दूकान खेलने के पहले लक्ष्मीजी का ध्यान कर उक्त मन्त्र का १०८ या २१ बार जप करने से व्यापार अधिक चलता है। परीक्षित है।

लोगों को बस में करना

आम लोगों को बस में करने व अपना बनाने के लिए निम्न आयतें ११ बार फज्र की नमाज और मगरिव की नमाज के बाद पढ़े। पहले व बाद में ११-१२ दारुद शरीफ पढ़ना अच्छा है।

युहिब्बूनम कहुब्बिल्लाहि वल्लजीना आमनू अशदद्दू हुब्बललिल्लाही वलकाजिमीनल गयजा वल आफीना अनिन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल मोहसिनीन० अ वा मनकाना मयतन फ-अह ययनाहु व जअलनालहु नूरययमशी बिहिफिन्नासि कमम्मसलुहु फिज्जुलूमाति लयसा बिखारिजिम मिनहा० कजालिका जुय्यिनल लिल काफिरीनामा कानू याअमलून० फलम्मा रा अयनहु अकबर नहु व कतअना अयदियहुन्ना व कुलना हाशा लिल्लाहि मा हाजा ब-श-रन० इन हाजा इल्ला मलकुन करीम० व कुल्लिलहम्दु लिल्लाहिल्लजी लम यत्तखिज व ल-द व वलम यकुल्लहु शरीकुन फिल मुल्की व लम यकुल्लहु व लिय्युम्मिनज्जुल्लि व कब्बिरहु तकबीरा० या अय्युहल्लजीना आमनू ला तकूनु

कल्लजीना आजब मूसा फबर्रआहुल्लाहु मिम्मा कालू०व काना इन्दल्लाहि व जीहा०

शख्सी मान सम्मान और प्रभाव के लिए नीचे का अमल दस बार पढ़कर अपने मुँह पर मल कर जिसके पास जायेगा, वह बेहद मुहब्बत के साथ पेश आयेगा और इस में बहुत से फायदे हैं। अमल यह है—

अल्ला ताहलू अलय्या व ऊतनी मुस्लिमीना या खयरा अल मकसूदीना या खयरल मतलूबना या खयरल महबूबीना युहिब्बूनहुम कहुब्बिल्लाहि० वल्लजीना आमनू असददु हुब्बल लिल्लाह०

या बदीअल अजाइबि बिलखयदि या बदीऊ

पाँच सौ बार पढ़े पहले या बाद में दस बार दरूद शरीफ। खुदा के फजले करम से सारे लोग बस में रहेंगे। पढ़ने का कोई समय मुकर्रर नहीं कोई सा वक्त मुकर्रर कर लें।

अल अलिय्युल अजीम० तक पढ़े। इसके बाद एक हजार दस बार अल्लाह के नाम पढ़े और अपने मतलूब को सामने खड़ा हुआ महसूस करे जब नाम खत्म हो जायें, तो उसके सीने पर दम करें और अपने दिन में इशारा करे, कि यह मेरा हो जाये। इसी तरह १५ दिन तक बाबर पढ़े अगर मुमकिन हो तो किसी चीज पर दम करके मतलूब को खिलाओ।

यदि इस अमल की जकात ४० दिन तक हर दिन एक हजार बार पढ़े तो इस मुबारक अमल के आमिल हो जायें तो यह अमल तसखीर में (चाहे अपने लिए या दूसरों के लिए) काम में आता है। अर्थात् जिस चीज पर दम करके खिलायें या पिलायें बड़ा असर होगा जकात में आयतल कुर्सी हर दिन पढ़नी चाहिये और जब चिल्ला पूरा हो, तो शरबत पर दम करके पैगम्बर की मुबारक रुह पर फातिहा दें और थोड़ा-थोड़ी वजीफा जारी रखे ताकि हमेशा अमल में रहे। अल्लाह के नामों के साथ यह इबारत पढ़नी होगी।

'या मुकल्लिबल कुलूबि कल्लिब कलबहु इलय्या' और यदि औरत हो तो हें 'कुलवहा इलय्या'

किसी को बस में करने के लिए यह अमल नमाज फज्र के बाद एक सौ ग्यारह बार रोज पढ़ना बड़ा फायदे मन्द है पढ़ने से पहले और बाद में ११-१२ बार **दरूद शरीफ** पढ़े—

अल्लाहुम्मा सख्खिरनी हाजल ब-ल-द वर्रिजाला

'व लकद सुलयमाना व अलकयना अला कुर्सिय्यि ज-स-दिन सुम्मा अनाब०'

इस आयत को ६७८ बार पढ़कर चमेली के तेल पर दम करके जिसे यह तेल सुंघाया जाये, वह बस में हो जायेगा।

बादशाह शासक और आफिसरों को बस में करने के लिए—'या रहमाना कुल्ली शयइन दराहिमहु' तीन बार बराबर हर दिन ५०० बार पढ़े और चौथे दिन गुस्ल करके एक हजार बार पढ़े और अपनी हथेली पर लिखे और अफसर के पास जाकर उसके सामने १५ बार पढ़े अल्लाह ने चाहा तो वह मुहब्बत से पेश आयेगा।

अगर किसी को बस में करना हो तो हर दिन हजार बार इस आयत और नामों को पढ़कर मीठी चीज पर या फूलों पर दम करें और महबूब को खिलायें या सुंघायें अल्लाह ने चाहा तो वह बस में हो जायेगा। यह अमल आजमाया हुआ है।

'वल्लाहु मुस्तआनु अला मा तसिफूना या रफीकु या शफीकु नज्जिनी मिनकुल्ली जीकिन'

जो आदमी अपनी माँगे अफसरों से पूरी कराना चाहें और उनको पूरी तरह अपने बस में करना चाहे तो वुजू करके सूर: यासीन (देखें हिन्दी कुरआन में पारा २२ व २३) ३५ बार पढ़कर अफसरों के पास जाये। अल्लाह ने चाहा तो वे उसकी इज्जत करेंगे और उसकी सारी जरूरतें व माँगे पूरी करेंगे।

जिस आदमी से उसका बादशाह या आका नाराज हो गया हो या मिया-बीवी में नाराजगी हो तो मुलाकात के वक्त पोशीदा तौर पर इन आयतों का विर्द रखे। अल्लाह ने चाहा तो जल्द काम होगा।

'व लम्मा स-क-त-अम्मूसा अल गजबू अखजल अजवाहा व फी नुसखतिहा हुदव्व रहमतुल लिल्लजीना हुम लिरब्बिरिम यरहबून'

इसके बाद यह पढ़े—

'अतफातु ग-ज-ब-कजा व कजा बिला ला इलाहा इल्लल्लाहु वस्तज अलतु मवददतहु बिमुहम्मदिर्रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमा'

यदि किसी को वस में करना हो और अपनी कोई जरूरत उससे पूरी करनी हो तो अच्छी तरह वुजु करके दो रकअत नफिल पढ़े और इसके बाद तस्बीह व तहलील और दरूद शरीफ पढ़कर अपनी जरूरत के लिए दुआ मांगे और फिर इन आयतों को बिना तादाद पढ़ता हुआ उसके पास जाये और वहाँ जाने के बाद भी बैठे-बैठे पढ़ता रहे। जब वह बात करे तो उस समय पढ़ना छोड़ दे और बीच में समय मिलता रहे तो इन आयतों को पढ़ना रहे। अल्लाह ने चाहा तो काम होगा।

'व लम्बा द-ख-लू मिन हयसु अमरहुम अबूहुम मा काना युगनी अन्हुम मिनल्लाहि मिन शयइन इल्ला हाजतन फी नफसी याकूबा कजाहा०

इजा अ-कल मुनाफिकूना कालू नशहदु इन्नका ल-रसूलुल्लाहि वल्लाहु याअलमु इन्नका ल-रसूलुहु० वल्लाहु यशहदु इन्नल मुनाफिकूना ल-काजिबूना०

तरकीब—इशा की नमाज के बाद तीन तस्बीह 'या वदूदू या रऊफू या रहीमु तीन बार पहले व बाद में दरूद शरीफ पढ़कर अपने मकसद के लिए दुआ मांगे। इन्शाअल्लाह कामयाबी होगी। आजमाया हुआ है यह अमल ११ दिन होगा। नोचन्दी जुमेरात को शुरू किया जायेगा।

जो आदमी लोगों के दिलों में अपनी मुहब्बत अजमत व रोब डालकर चाहे तो इस दुआ को पढ़े। यह हजरत सय्यदना अब्दुल हसन मन्कूल है।

'या अल्लाहु' तीन बार 'या रब्बु' ३ बार 'या रहमानु' ३ बार।

ला तकिलनी इला नफसी फी हिफजी मा मलकतनि कमा अन्ता अमलकु बिहि मिन्नी वमाद्दिनी बिदा कालिकि इस्मिकल हफीजिल्लजी हफिजता बिहि निजामल मव जूदाति वकसिमनी बिदि इस्मिन किफा यतिका व कल्दिनी नसरका व हिमायतका व तव्विजनी बिताजि अिज्जिका व क-र-मिका व रद्दआनि बिरि दा इम्मिनका व-र-किब्बुनी मरक ब-न-जाति फिल महय या व वाअदल म-माति बिहक्किन फ-ज-शा उम्मतिहि दना बिदाइकि इस्मिकल कहहारी तदफऊ बिहि अन्नि मन अरादनी सू आम्नि जमीअिल मव जियाति व-त-बल्लनि बिविलायतिल अिज्जि तखजऊली बिहि कुल्ला जब्बाहिन अनीदिव्व शयतानिम्मरी दिन या अजीजु या जब्बारु (तीन बार)

अल्ला हुम्मा अलकि मिन जीन-तिका व मिम्महाब्बतिका व करामतिका व मन नुऊति रबू बय्यितिका मबतहविल कुलूबु व तजिल्लु बिहिन नुफूसु व तखजऊ लहुर्रिकाबु व तर्कि अबसारु व त-हय्यरा लहुल अफकारु व यसगरु लहु कुल्ला मुत-कब्बिरिन जब्बरिन व मसखरु लहु कुल्ला मुत-कब्बिरिन जब्बारिन व मसखरु लहु कुल्ला मलिकिन कुहहारिन या अल्लाहु या मलिकु या अजीजु या जब्बारु (तीन बार) या अल्लाहुया अ-ह-दु या वाहिदु या कहहारु अल्लाहुम्मा सखिखरली जमीआ खलकिका कमा सख्खरतल बहरा लि मूसा अलयहिस्सलामु व लय्यिन लिल कुलूबा कमा लय्यनत अलहदीदा लिदाऊदा अलयहिस्सलामु फ-इन्नहुम ला यन्तिकूना इल्ला बिइजनिका नवासीहिम कवजतिका व कुलूबुहुम फी यदिका वल-सर्रुफुहुम फी तसर्रुफिका हयसु शिअता या मुकल्लिबल कुलूबिया अल्लामुल गुयूबि अतफातु गज-बन्नासि बिला इलाहा इल्लल्लाहु वस्तुजुलबतु महब्बतहुम बिसय्यिदिना मुहम्मदिन रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलयहि व सल्लम फलम्मा अयतहु अकबर

नहु वकतआना अयदियहुन्ना व कुलना हाशा लिल्लाहि मा हाजा ब-श-रा०इन्ना हाजा इल्ला म-ल-कुन करीम०

मुहब्बत के लिए

यदि कोई विरोधी हो गया हो तो उसे अपने हित में करने के लिए और अपना महबूब बनाने के लिए इसका पढ़ना बड़ा लाभदायक है अल्लाह ने चाहा तो अपना बना जायेगा। उसकी कल्पना करके १४१ बाद इशा की नमाज के बाद ४१ दिन तक पढ़ो पहले व बाद में ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़ा जाये।

'ब-हक्कि ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहान इन्नी कुन्तु मिनज्जालिमीन० या सय्यिदल करीमी बिहुरमति बिस्मल्लाहिर्रहमाननिर्रहीम० अम्मय्युजीबुल मजतर्रा इजा दआहु इन्ना कफयनाकल मुसतह जिऊन० या हय्यु या कय्यूमू बिरहमतिका अस्तगीसु अल्लाहुम्मा सहहिलव यस्सिर रब्बि ला तजरनि फरदव्व अन्ता खयरुल खयरुल वरिसीन० हस्बी अन सूआ लिइल्मुका बिहाली सुबहानल काहिरिल कादिरिल काफी

'युहिब्बूनहुम कहुब्बुल्लाही वल्लजीना आमनू अ-शददू हुब्बल लिल्लाहि०'

तरकीब–सात कंकरियाँ लाहोरी नमक को लेकर हर कंकरी पर यह आयत सात बार पढ़े इसी तरह तीन बार जिसकी कुल तादाद २१ बार हुई। यह तादाद पूरी तरह करके फिर यह कहे—सोखतम दिन व जां फलां बिन फलां हुब्ब फलां बिन फलां' और वे सात कंकरियाँ आग में जला दे। इसी तरह रोजाना सात कंकरियाँ २१ दिन तक पूरी करे। पहले व बाद में दरूद शरीफ ११-११ बार पढ़े। खुदा ने चाहा तो मतलब बेकरार होकर हाजिर होगा। स्पष्ट रहे कि हराम काम के लिये इस अमल को न करे।

मियां-बीवी में मुहब्बत पैदा होने व झगड़ा न होने के लिए यह अमल बड़ा कामयाब है।

तरकीब–नौचन्दी जुमेरात को यह अमल लिखकर तकिये के अन्दर रख दे और वह तकिया मतलूब के सर के नीचे रहे। यदि इस तकिये पर तालिब का सर भी हो तो कुछ बुरा नहीं इन्शा अल्लाह मियां-बीवी के बीच मुहब्बत बढ़ जायेगी।

'व इन खिफतुम शिकाका बयन-हिमा फबअस् ह-क-मम मिन अहलिहि व ह-क-मम मिन अहलिहा इय्युरीदा इस्लाहन युवफिफ कल्लाहु बयन-हुमा० इन्नल्लाहा काना अलीमन खबीरा० व इनिम रा अतुन खाफत मिम बाअलिहा नुशूजा अव इअराजन फला जुनाहा अलयहिमा अय्युसलिहा बयनहुमा सुलहा० वस्सुलहु खयरुन व उहजिरतिल अन्फुसुश्शुहहा० व इन तुहसिनू व तत्तकू फइन्नल्लाहा काना बिमा ताअमलूनाखबीरा० युसलिह लकुम आमालकुम व यगफिर लकुम जुनूबकुम० वमय सुतीअिल्लाहा व रसूलहु

फकद फाजाफवजन अजीमा० असल्लाहु अय यजअलाबयनकुम व बयनल्लाजीना आदयतुम मिन्हुम मवद्दतन० वल्लाहु कदीरुन वल्लाहु गफूरुर्रहीम०

तरकीब–शुरू महीने में पीर या जुमरात के दिन यह अमल करे और ध्यान रहे कि फलानति की जगह मुहिब्ब का नाम और फलां की जगह महबूब का नाम लिखें और बाजू पर बांधे या गले में डाले और यदि खिलाना चाहे तो इन चीजों पर पढ़कर दम करे।

मिठाई या छूवारे या नमक पर २१ बार शुरू व बाद में ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़े।

व अलकयतु अलयका महब्बतम मिन्नी वलि तुसनआ अला अयनि इज तमशि० उखतुका फतकूलु हल अदुल्लुकुम अला अला मय यकफुलूहु फर-जाअनाका इला उम्मिका कयतकर्रा अयनुहा वला तहजन व कतलता नफसन फनज्जयनाका मिनल गम्मि व फतन्नाका फुतूना या मुकाल्लिबलकुलूबि व या मुसखखरातिस्समावातिस्सबई वल अर्जीनस्सबई कल्लिब लिफलाना कलबा फलानिन बिलखयरि लिअदारल हुकूकि या वदूदू०' हब्बिब या वदूदु।

बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम० असल्लाहु अय्यज अल बयनकुम व बयना अल्लजीना आदयतुम मिनहुम मवददतह० वल्लाहु कदीरुन वल्लाहु गफूरुर्रहीम०

इशा के बाद दो रकअत में बाद सूर: फातिहा के असल्लाहु अय्यज अला को सात-सात बार पढ़े। दोनों रकअतें खत्म करने के बाद सत्तर बार इस तरह दुआ करे। दुआ के पहले अव्वल आखिर ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़े। दरूद शरीफ खत्म होने के बाद उसी जगह बैठा रहे जब मगरिब की नमाज तैयार हो उस वक्त इस जगह से उठे इस दुआ के पढ़ते वक्त सच्ची नीयत और खुदा का हर चीज पर मालिक होने का यकीन होना चाहिये तो अल्लाह मुहब्बत पैदा कर देगा यह अमल बड़ा अजीब है और इस अमल में आदमी के लिये अजीब असर है जो नाराजगी होने के बाद मुहब्बत करने का इरादा करे और उस आदमी के लिए जो इल्म व फन में कमाल हासिल करना चाहे इस अमल के करने से हर इल्म हासिल हो जायेगा। वह दुआ यह है।

'अल्लाहुम्मा या जामिउन्नासि लियवमिल्ला रयबा फीहि० इन्नललाहा ला युखलिफुल मिआद० इजमऊ बयनि व बयना मजा व कजा।

मुहब्बत का एक और बेहतरीन अमल

तरकीब–पहले व बाद में दस-दस बार दरूद शरीफ पढ़े और बीच-बीच में या बददूहु को बीस तसबीह अर्थात् २ हजार बार पढ़कर मिठाई पर दम करके मतलूब को खिलाये इन्शाअल्लाह मकलूब आपका हो जायेगा।

मियां-बीवी में सुलह सफाई व मुहब्बत पैदा कराने के लिए यह अमल बड़ा लाभकारी है।

तरकीब–ये आयतें लिखकर मियाँ-बीवी या किसी एक के गले में बाँधे।

'या अय्यहन्नासु इन्ना खलकनामकुम मिन ज-क-ख्विवउन्सा व जअलनाकुम शुऊबव्व कलाइला लित-आरफू इन्ना अकरमकुम इन्दल्लाहि अतकाकुम इन्नल्लाहा अलीमुन खबीरुन तक व मल्लिक बयना फलां बिना फलां व फलानतहुबिन्त फला नहतु कमा अल्लकता बयना मूसा आसफूरा व म-स-लु कालिमतिन तय्यिबतिन क-श-ज-रतिन तय्यिबतिन असलुहा साबितुब्व फरमुहा फिस्समाई तूति उकुलुहा कल्ला हीनिन बिइज्नि रब्बिहा व यजरि बुल्लाहुल अमसाला लिन्नासि लअल्लहुम य-त-जक्करून० तक। इन्शाअल्लाह मकसद में जरूर कामयाबी होगी।

'ला हवला व ला कुव्वताइल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अजीम इन्नहु मिन सुलयमानाव इन्नहु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला ताअल् अलय्या व आतूनी मुस्लिमीन०'

तरकीब–'फ-स-यक्फीकहुमुल्लाहु व हुवस्सामीउल अलीम'० इस आयत को शुरू महीने में किसी दिन दशा की नमाज के बाद १२० बार पढ़े और पढ़ते समय मतलूब का ध्यान रखे। मिठाई पर दम करके उसे खिला दे। इन्शाअल्लाह काम हो जायेगा। यह अमल नोचन्दी जुमरात में शुरू करे सात दिन तक।

यदि मुहब्बत टूट गयी हो और उसे वापस लाना हो तो इस मुबारक आयत को लिख कर और धोकर पिलायें आपसी दुश्मनी व रंजिश खत्म हो जायेगी और दोनों में गहरी मुहव्वत फिर से पैदा हो जायेगी।

'इन्नमा तुन्जिरू मनित्त-व-आज्जिक रा व खशि यर्रमहाना बिल गयबि फवशि्शरहु बिमग फिरतिन व अजरिन करीम'

तरकीब–यदि मियां-बीवी या दो भाइयों या दो आदमियों में आपस में प्यार मुहब्बत न हो तो इन आयतों को चीनी की प्लेट पर लिखकर उस प्लेट में शहद डालें और मलें। इस शहद को किसी खाने की चीज में मिलाकर खिला दे। अल्लाह के फज्ल से आपस में प्यार मुहब्बत बढ़ जायेगा। आयत को शुरू में बिस्मिल्लाह के अदद भी लिखे यानि इस तरह—

इन्नललजीना क-फ-रू सवाउन अलयहिम अ अन्जर तहुम अम लम तुन्जिरहुम ला युमिनून० अलहुब फलां बिन फला-७८६ अल्लाहुम्मह फजनी अलहमदु व-ल-दहु हयातुन श-हिदल म व ददता सलूतिहिम अजा खूना इहफज ला इलाहा इल्ललल्लाहु वबिहकिक इय्याका नाअबुदु व इय्याका नस्तअीन०

यदि किसी में लड़ाई झगड़ा हो जाये या दो गिरोहों में सख्त जंग हो तो यह आयत पढ़कर इस गिरोह की तरफ दम करे और अगर दम न कर सकें तो कागज पर लिखकर पानी में घोलकर सब को पिला दें और उस कुएं में धोकर डाल दें। इन्शा अल्लाह सबके अन्दर प्यार-मुहब्बत पैदा हो।

'असल्लाहु अंय्यज अला बयनकुम व बयनल्लजीना आदयतुम मिन्हुमं मबददतन' वल्लाहुकदीरून वल्लाहु गफूरूर्रहीम० अजिब या जिबराइलु या दर दाईलु या रफूतमाइलु या तनकफील बिहक्कि ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसलुल्लाहि व अला व लिय्यिल्लाहि या बद्द् या महहाबु या वद्दु अलहुब्बि फलां बिन्त फलां अला हुब्ब फलां बिन फलां।

तरकीब—शुरू महीने को नोचन्दी जुमरात को फज्र की सुन्नतों और फर्ज के बीच २१ बार ग्यारह दिन तक पढ़े। पहले व बाद में दस-दस बार दरूद शरीफ पढ़े। पढ़ते वक्त मतलूब का ध्यान रखे। अल्लाह ने चाहा तो मतलूब हाजिर होगा।

दुश्मनी के लिये

तरकीब—नमक की सात कंकरियाँ लेकर दोनों आदमियों के नाम उनकी मांओं के नाम के साथ यह आयत पढ़कर हर कंकरी पर सात पर दम करें और आग में डाले दें, दोनों के बीच दुश्मनी हो जायेगी। यह अमल शनिवार या मंगलवार को करना चाहिये।

'व ज अलना मिम्बयनी अयदीहिम सददव्व मिन खलफिहिम सददन फ-अगशयना हुम फहुम ला युबसिरून०

तरकीब—यदि दो लोगों के बीच अलहदगी कराना हो तो इस सूर: मुबारक (सूर: अलकारिआ पारा अस्म ३०) को एक कच्ची ईंट पर सियाही से लिखें और दरिया में डालें। यह अमल सात दिन तक बराबर करें। इन्शा अल्लाह उसी हफ्ते में कामयाबी हासिल होगी। सूर: मुबारक पूरी लिखने के बाद उसके नीचे यह इबारत लिखे—

अलबुगजु वन निफाकु वल अदावतु बयना फलां बिन फलां

तरकीब—इशा की नमाज के बाद तर्क हैवानात के साथ दरूद शरीफ ३३३ बार सुर: कुरैश (लिइला फि-पारा अम्म) को पढ़ें।

तरकीब—थोड़ी सी राई लेकर दो कब्रों के बीच में बैठ कर ३०३ बार सूर: लिइलाकि कुरैशि—(पारा अम्म) पढ़कर राई पर दम करें और पढ़ते समय उन लोगों का नाम लेता जाये जिनमें जुदाई डालना हो। जब फारिग हो जाये तो इस राई को जहाँ ये लोग बैठते हों वहाँ डाल दें, दोनों में जुदाई हो जायेगी।

तरकीब—सूर: तब्बत यदा अबी लहब (पारा अम्म) को ७२ बार दो कब्रों के बीच बैठ कर पढ़े और सात स्थानों की मिट्टी पर दम करे। वे सात स्थान ये हैं १. गधा

लोट २ पन्जाए चोल ३ पन्जाये चील ३ कब्र ४ वीरान मस्जिद ५ वीरान कुआं चौराहा ७ मरघट तीन दिन तक बराबर दो पहर समय पढ़ना चाहिये कि फारिग होने के बाद दुश्मन के मकान में उस मिट्टी को डाल दें। मिट्टी डालने के बाद दोनों दुश्मनी पैदा हो जायेगी।

शत्रुनाशक प्रयोग

'ला इलाहा अन्हस-इल्लल्लाहु मनहस या मुहम्मद रसूलुल्लाहि हस फलां आदमी को मेरे पास लाओ हस'

इशा की नमाज के बाद ४ काली मिर्च पर ११-११ बार पढ़कर हर एक मिर्च पर दम करे और आग में डाले। इस अमल को ११ दिन तक करे। आजमाया हुआ है।

सुम्मन बुकसुन अुमयुन फलुम ला यरजिऊन० दुश्मन की हार व पराजय के लिये दिन के बारह बजे इस अमल को ११० बार पढ़े और हर दहाई पर दुश्मन की कल्पना करके ३-३ चोंटे मारता जाये और हर दहाई पर चोटें जा नमाज पर मारनी चाहिये लेकिन आखिरी दहाई पर दुश्मन के चेहरे की कल्पना करके जमीन पर चाटे मारे और हाथ को जमीन पर बार-बार मले शुरू व अन्त में ११-११ बार यह दरूद शरीफ पढ़े।

'अल्ला हुम्मा सल्ली अला मुहम्मद्दिन सय्यिदिल काहिरीना अला आदाई रब्बिल आलमीन०

रोजी में तरक्की के लिये

तरकीब–जिस आदमी का रोजगार न हो या नौकरी या व्यवसाय न हो तो यह अमल बड़ा काम करता है सुबह नमाज के बाद या इशा की नमाज के बाद पढ़ा जायेगा। तादाद एक सौ एक बार। शुरू व अन्त में इसके ११-११ बाद दरूद शरीफ पढ़ा जाये चालीस दिन पूरे न होंगे। इन्शा-अल्लाह गैव से कोई सामान या नौकरी या काम मिल जायेगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० या मुसव्विबल असबाब व या मुफत्तिहल अबवाब व या मुकल्लिबल कुलूब व या दलीलिल मुतहाय्यिरीन अरशिदनी व या गयासल मुसतगसीना अगिस्नी तवक्कलतु अलयका या रब्बि उफव्विजु अमरि इलयका। ला हवला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लहित अलिय्यिल अजीम० बिहकिक इय्याका नाअबुदू वइय्याका नसतअीन०

तरकीब–यदि इस मामूली तरीके से (रोजाना पढ़ना हो) पढ़ना है तो इसकी तरकीब यह है कि फज्र की नमाज के बाद पहले या लतीफ १२९ बार पढ़कर बिस्मिल्लाह के साथ अल्लाहु लतीफफुम बिइबावादिहि यरजुकु मय्यशाउ० वहुवल

कविय्युल अजीज 'एक बार पढ़े इसके बाद इस दुआ को ११ बार पढ़कर दुआ करे और यदि किसी मामले या जबरदस्त काम के लिए पढ़ना है तो इस दुआ को ३३०३ बार एक ही बैठक में (अर्थात् जिस पहलू से बैठ उसी पहलू पर बैठा रहे) पढ़े इन्शा अल्लाहमुराद पूरी होगी।

'अल्लाहुम्मा या मुस ख्खरसमा वातिरसबअी वल अर्जय नस्सबअी व मन फीहिन्ना व मन अलयहिन्ना साख्खिर ली कुल्ला शयईन मिन इबदिका मिम्मा फी बर्रिका व बहर्रिका हत्ता ला यकूना शयइन फिल कवमि काना मुतहर्रिकन अव बातिनन इल्ला सख्खरतहु ली बिबरकति इस्मिल्लती फिल मकयूनि या अल्लाहु या हय्यु या कय्यूमु इन्नमा अमरुहु इजा अरादा शयअन अय्यकूला लहु कुन फ-यकून० फसुबहानल्लजी म-ल-कूतु कुल्लिशयइन व इलयहि तुरजऊन'

इस अमल को नौचन्दी जुमेरात से शुरू करना चाहिये। महीन के शुरू में।

रोजी तरक्की का उपाय

तरकीब–'या वहहाबु' अगर कोई चाहे कि मोहताजी दूर हो जाये और मालदार हो जाये तो इस 'नाम' को हर दिन चालीस रोज तक बराबर चार हजार चार सौ चवालीस बार पढ़े खुदा के फज्ल से एक ही हफ्ते में रिज्क की तरक्की हो जायेगी।

यह दुआहजरतसुलेमान अलैहि० की है शुरू व अन्त में दस-दस बार दरूद शरीफ पढ़े बहुत मालदार हो जायेगा और पढ़ने के वक्त मुवक्किल को कसर दे दे और शुरू व अन्त में इस राविश को शुरू करे।

या रफतमाइला व अकसमतु अलयकुम व अगिसनि अलयकुम बिहविक या बहहाबु०

जो आदमी फज्र या इशा की नमाज के बाद या लतीफु को १११ बार पढ़कर फिर १११ बार यह आयते करीमा इन्नल्लाहा हुवर्रज्जाकु जू कु व्वतिलमतीन० पढ़े। शुरू व अन्त में ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़ा जाये। अल्लाहा ने चाहा तो गैब से रिज्क के असबाब पैदा हो जायेंगे।

सुबहानल्लाहि मलाइल मीजानि व मुन्तहियल इल्मी व मबलगर्रिजा व जीन-तिल अर्शि०

जो आदमी चाहे मेरी उम्र ज्यादा हो जाये और दुश्मनों पर फतह पाये या रोजी-में तरक्की हो और मुर्दे से अजाब दूर हो जाये तो सुबह व शाम ऊपर लिखी दुआ तीन बार पढ़े।

जो आदमी इसे पढ़ेगा उसके हर काम में तरक्की होगी दुश्मनों पर छाया रहेगा वह दुआ यह है।

'या रहीमु कुल्ली सरीखिव्व मकरुबिन गयासुहु व मआजुहु या रहीमु०

तरकीब–आधे सर के दर्द के लिये इस अमल को ११ बार पढ़कर दम करे अल्लाह ने चाहा तो तीन दिन में बिल्कुल जाता रहेगा।

'काली चिड़िया काला फल खाए बरकत मुहम्मद साहब की आधा सीसी जाए'

दाढ़ के दर्द के लिये उस माल पर हाथ रखे जिस ओर दर्द हो और सात बार कहे—

अल्लाहुम्मा इजहब अन्हु सूआ मा यखिजु व यखशहु बिदावति नविय्यिकल मकीनिल मुबारकि इन्दका'

अल्लाह ने चाहा तो तुरन्त आराम हो जायेगा।

दूसरा तरीका यह है कि दाँयें हाथ की शहादत की उंगली दर्द वाले दाँतों पर रखकर कहे—

बिस्मिल्लाहि व बिल्लाहि अस अलुका बिइज्जतिका व जलालिका व कुदरतिका अला कुल्ली शयइन फइन्ना मरयम लम यलिद गयरा ईसा मिन रुहिका व बिकलिमातिका अन तकशिफा मा युलका फुलानुब्नु फुलानि अव तुलका फलानतु बिन्तु फुलानता मिनज जुर्रि०

तीसरा तरीका यह है कि जिस ओर दर्द हो उस पर उंगली से लिखे

'व लहु मा स-कना फिल्लयलि वन्नहारि व हुवस्समी उल अलीम०

आधे सर के दर्द के लिये यह नक्श बड़ा लाभकारी है। इस नक्श को मोमजामा करके उस ओर बांधे जिस ओर दर्द हो।

तरकीब–जो बच्चा बहुत रोता हो और दूध न पीता हो उसके लिये इस आयत को लिखकर बच्चे के गले में डालें। अल्लाह ने चाहा तो आराम होगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० शहिदल्लाहु अन्नहु ला इलाहा इल्लाहुवा वलमलाइकतु व अऊल इल्मी काइमन बिलकिस्ती० ला इलाहा इल्लाहुवा अल अजीजुल हकीमु०

दूध बढ़ाने के लिए अमल

तरकीब–जिस औरत के दूध को कमी हो या दूध खुश्क हो गया हो उसे जारी करने के लिये इस आयत को नमक लाहौरी पर पढ़कर सात बार पहले व बाद में तीन-तीन बार दरूद शरीफ पढ़कर अपने खाने की चीजों में मिलाकर इस्तेमाल करें। अल्लाह ने चाहा तो दूध बढ़ जायेगा।

'म-स-लुल्लजीना युनफिकूना अमवाहुम फी सबीलिल्लाहि क-म-

स-लि हब्बतिन अम्बतन सबआ सनाबिला फीकुल्ली सुम्बुलतिम मिअतु हब्बतिन० वल्लाहु युजाइफुलियम यशाऊ वल्लाहु वासिउन अलीम०

तरकीब–यदि औरत के दूध में कमी हो तो ये आयतें पढ़कर नमक पर दम करें और खाने में डाल कर औरत खाये।

पहली आयत

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० वल वालिदाति युरजिऊना अवलादहुन्ना हवलयनि अरादा अय्युतिम्मा अर्रजाअत०

दूसरी आयत

वइयकादुल्लजीना कफरु लयुज लिकूहनका बिअबसारिहिम लम्म समिऊज्जिकरा व यकूलूना इन्नहु लमजनून वमाहुआ इल्ला जिकरुललिल आलमीना०

तीसरा आयत

वइन्ना लकुम फिलअनआमि ल इबर तन नुसकीकुम मिम्मा फी बूतूनिहिम मिमबयनि फरसिव व-द-मिल्ल-ब-ना खालिसन साइगल लिश शारिबीना०

तरकीब–यदि किसी जानवर का किसी बीमारी के कारण दूध सूख जाये तो तीन दिन तक पाव भर (२०० ग्राम) चने का आटा लेकर ११ बार अलहन्दू शरीफ और ११ बार आयत

चौथी आयत

व इन्नालकुम फिल अनआमि लइबरतन नुसकी कुम मिम्मा फी बुतूनिहि मिम्बयनि फरसिन वदमिल ल-बन्ना खालिसन साइगल लिश शरिबीना०

बढ़कर दम करके जानवर को खिलाये दूध अधिक देने लगेगा।

तरकीब–जिस औरत की छातियों का दूध सूख गया हो इस नक्श को जाफरान और गुलाब से लिखकर मोमजामा करके औरत के गले में डाले और एक ताबीज रोजाना लिखकर पिला दे। सात दिन तक इन्शाअल्लाह दूध जारी होगा।

बुखार से बचने के अमल

तरकीब–इन आयतों को लिखकर बुखार वाले रोगी के गले में डाल दें। अल्लाह ने चाहा तो बुखार जाता रहेगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० बरा अतुम मिनउल्लाहिल अजीजिल हकीमि बफुलान बिन फलां (इसकी जगह रोगी व उसकी माँ का नाम लिखे) मिन कुल्ली मा यऊजु बिइनिल्लाहि तआला अव कल्लजी मर्राअला करयतिव वहिया खवियतुन अला उरूशिहा काला अन्ना युहयि हाजिहिल्लाहु बाअदा

मवतिहा फअमातहुल्लाहु आमिन फन्जुर इला तआमिका वशरविका लम य-त-सन्नह वन्जुर इलाहिमारिका व लिनज अलका आयतल लिन्नसि वन्जुर इलल इजमि कयफा नुनशिजुहा सुम्मा नकसूहा अहमा० फलम्मा० तवययना लहु-काला आलमु अन्ना अल्लाहु अला कुल्ली शयइन कदीरुन कुलना या नारुकनि बरदव व सलमान अला इब्राहीमा व आरादूबिहि कयदन फ न ज-अल नाहुमुल अखसरीना०

तरकीब–जिसे बुखार आता हो और किसी तरह उतरने का नाम न लेता हो तो रोगी के लिये चाहिये कि रविवार के दिन सात तागे नीले कच्चे सूत को लेकर इतने बड़े कि गंडे के तौर पर रोगी के गले में बाँध सके लिये जायें गंडा इस तरह तैयार होगा कि हर तरह पर एक-एक बार बिस्मिल्लाह पूरी सूरः फातिहा, सूरः फलक व सूरः फातिहाः, सूरः इखलास, सूरः फलक व सूरः नास पढ़कर दम करें इसी तरह इन सातों धागों पर सात गिरहे लगायें और हर गिरह पर इसी तरह दम करे और फिर रोगी के गले में बाँधे। इन्शाअल्लाह रोगी को आराम हो जायेगा और उसका पुराना बुखार उतर जायेगा।

तरकीब–जिसे बुखार आता हो तो इस तावीज को लिखकर गले में डाले या पाक धज्जी में लपेट कर मर्द अपने दाँयें बाजू पर और औरत अपने बाँयें बाजू पर बांधें। तावीज में रोगी का नाम और उसकी माँ का नाम अवश्य लिखें इन्शाअल्लाह बुखार जाता रहेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० या नारुकूनी बरदव वसलामा अला इब्राहीमा व अरादू बिहिकयदन फज-अलनाहुमुल अखसरीना०

तरकीब–जिसे बुखार आता हो और जाड़ा भी साथ होता हो उसी रोगी के लिये सात वार इस आयत को पानी पर दम करके पिलाये। अल्लाह ने चाहा तो जाड़े से चढ़ने वाला बुखार जाता रहेगा और रोगी अच्छा हो जायेगा।

फलम्मा तजल्ला रब्बुहु लिलजबली जअलहु दक्कन बखर्रा मूसा सअिका०इस अमल को तीन या सात दिन किया जाए।

तरकीब–जिसका बुखार किसी भी समय न उतरता हो उसके लिये जरूरी है कि सुबह को एक छोटे से कागज पर ७८६ और या नारु कोनी बरदव व सलामन अला इब्राहीमा लिख कर पानी में धोकर रोगी को पिलाये जाये और जिस कागज पर लिखा गया है, रोगी उसे चबा कर निगले और ऊपर से यह पानी पी ले और शाम को एक छोटे से कागज पर ७८६ और सलामुन कवलम मिर्रबिबर्रहीमी लिखकर पानी से धोकर रोगी को पिलाया जाये और जिस कागज पर लिखा गया है रोगी उसे चबा

कर निगल ले और ऊपर से यह पानी पी ले। इस अमल को सात, नौ या ११ दिन तक लगातार किया जाये। अल्लाह ने चाहा तो रोगी को आराम होगा।

तरकीब–जिस मर्द औरत या बच्चे को रोजाना बुखार चढ़ता है और उतर जाता है ऐसे रोगी के लिये एक छोटे से कागज पर ७८६ और या मुहीतु और दूसरे दिन ७८६ और मुहीतुतु और तीसरे दिन ७८६ और या मुहीतुतुतु लिखने वाला चाहे जिस समय लिखकर दे दे और तावीजों पर नम्बर डाल दे कि यह पहले दिन का है या दूसरे दिन का है और यह तीसरे दिन का है इसके बाँधने में यह सावधानी रखनी चाहिये कि हर तावीज सूरज निकलने से पहले हर दिन बाँधा जाये और बाँधने के बाद जो तावीज खोला गया है, उसको कुयें में डाल दिया जाये। इन तावीजों को हर दिन पाक धज्जी में लपेटकर मर्द और लड़का अपने दाँयें बाजू पर और औरत व लड़के औरत व लड़की अपने बाँयें बाजू पर बाँधे। इन्शाअल्लाह रोगी को आराम होगा और बुखार जाता रहेगा। रोगी पहले और दूसरे दिन के तावीज को धज्जी से अलग करके जब कुयें में डाले तो तीसरे तावीज को यदि महसूस करे कि बुखार का कुछ असर है तो कुछ दिन बँधा रहने दे और जब समझ ले कि बुखार का असर अब बिल्कुल नहीं है तब इस तावीज को खोलकर धज्जी से अलग करके कुयें में डाल दे या सावधानी के तौर पर कुछ दिन बँधा रहने दे।

तरकीब–जिस औरत, मर्द या बच्चे को एक दिन छोड़कर बारी का बुखार चढ़ता हो तो उसे चाहिये कि कोरी तीन ठीकरियाँ छोटी-छोटी लेकर या आबखोरे के तीन छोटे-छोटे टुकड़े लेकर कि जिनकी पानी न लगा हो तो पहली ठीकरी पर ७८६ और या मुहीतुतुतु लिखकर बारी चढ़ने से दो घण्टे पहले पाक धज्जी में लपेट कर मर्द और लड़का अपने दाँयें बाजू में और औरत व लड़की अपने बाँयें बाजू पर बाँधे और दूसरी बारी के समय दूसरी नम्बर वाली ठीकरी बारी से दो घण्टे पहले बाँध दी जायेगी। इस ठीकरी के बाँधने से तीन हालते होंगी या तो बुखार बिल्कुल जाता रहेगा या कम हो जायेगा या बहुत जोर का चढ़ेगा मगर रोगी अपने दिन में चिन्ता को कदापि जगह न दे और बिल्कुल रहने दे और यदि बुखार का कुछ असर बाकी है तो कुछ दिन बँधा रहने दे। अल्लाह ने चाहा तो रोगी ठीक हो जायेगा और बुखार जाता रहेगा फिर तीसरी ठीकरी को भी धज्जी से निकालकर कुयें में डाल दे।

तरकीब–जिस मर्द, औरत या बच्चे को चौथे दिन बुखार आता हो तो ऐसे रोगी के लिए पुराना गुड़ लेकर उसकी तीन गोलियाँ चने के बराबर बनाकर चने से थोड़ी बड़ी हो। हर गोली बनाने से पहले उस गोली के अन्दर लाल मिर्च का एक बीज अवश्य दाखिल करना है यदि पुराना गुड़ सके तो फिर वैसा ही गुड़ ले और उसकी तीन गोलियाँ बना ले और चौथे दिन बुखार चढ़ने से दो घण्टा पहले उसमें से एक गोली

खिला दे मगर रोगी को यह खबर न होने दे कि इस गोली के अन्दर लाल मिर्च का एक बीज है और यदि इत्तिफाक से गुड़ की गोली में लाल मिर्च का बीज न डाल सके तो फिर बिना लाल मिर्च के बीज के ही तीन गोलियाँ बनाकर हर गोली पर पहले व बाद में तीन-तीन बार दरूद शरीफ और सात-सात बार सूर: फातिहा पूरी पढ़ ले और दम करे और एक गोली को बारी से दो घण्टे पहले खिला दें इन्शाअल्लाह रोगी ठीक हो जायेगा और बुखार की शिकायत जाती रहेगी।

दिल की घबराहट के लिये अमल

तरकीब–जिसका दिल घबराता हो या दिल में अधिक धड़कन हो उसके लिये इस इबारत को तीन तशतरियों पर लिखकर दिन में तीन बार सुबह-दोपहर-शाम रोगी को पिलाये। दूसरी तरकीब यह है कि ताँबे की तख्ती बनवाकर उस पर इबारत खुदवाये और गले चाहे उसमें कुंडे लगवाकर डोरा डाल कर गले में डाल दे या तावीज को कपड़े में सीकर गले में डाले इस तरह कि दिल पड़ा रहे। वह इबारत यह है—

'नादि अलिय्यन या मजहरल अजाइबि तजिदहु अवना लका फिन्नवाइबि मिनकुल्ली हम्मिन व गम्मिन सयनजली बिअजमतिका या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाहु बिनुबुव्वतिका या मुहम्मद या मुहम्मद या मुहम्मद बिवलायतिका या अली या अली या अली हुवश्शाफी हुवल काफी मआफी०

मिर्गी चिकित्सा

तरकीब–यदि किसी को मिर्गी के दौरे पड़ते हों तो इसके लिये हजरत गौसुल आजम शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहिम० का यह अमल बड़ा लाभकारी है जो इस तरह है कि जब कोई मिर्गी वाला रोगी आपके पास आता या लाया जाता हो आप रोगी के दाँयें कान में सूर: फातिहा पूरी पढ़कर दम करते थे और एक बार बाँयें कान में पढ़कर दम करते थे और फिर बाँयें कान में यह शेअर ऊंची आवाज से पढ़ते थे—

रूहिवल कलबु मुहिब्बुकुमफिल किदामि कबली वुजूदी खलकिहिया मिन अदमि हल यहमिलु मिन बाबि इरफा निकुम अन अन्कुला अन तरकि हवाकम क-द-मि।

सीधे कान में फरमाते थे शेख जीलानी 'तुझ को कहता है जा और मत जला' इस तरह तीन बार कहते थे और यदि दोनों शेअर लिखकर गर्दन में लटका देते थे और लिखते थे कि शेख अब्दुल कादिर जीलानी तुझको कहता है कि चली जा और फिर वापस मत आना यदि वापस आयेगी तो हम जला देंगे। जहाँ शेअर लिखकर गर्दन में लटकाने का जिक्र है, वहाँ यह करे कि दोनों शेअर लिखे और मोमजामा करके गले में बाँध दे।

तरकीब–मिर्गी के वास्ते गधे का सुम लेकर अंगूठी बनाकर रोगी अपनी उंगली में पहने अल्लाह तआला मिर्गी को दूर करेगा और रोगी को आराम हो जायेगा।

तरकीब–यह अमल भी आजमाया हुआ है। मंगल के दिन एक सफेद मुर्गा जिसमें किसी रंग का धब्बा न हो और जवान हो उसे जिब्ह करके उसका खून चीनी के प्याले में निकाल कर नयी कलम नये चाकू से बनाकर सूरज निकलने से पहले यह तावीज लिखे और उसी समय ताँबे के तावीज में जिसमें कुछ लगे हों बन्द करके नाबालिग लड़की से चौदह तार सूत के कतवाकर इसका डोरा डाल कर रोगी की गर्दन में डाल दे। अल्लाहा ने चाहा तो इससे रोगी को लाभ होगा। लेकिन शर्त यह है कि तावीज लिखने वाला, बीमार और ताँबे का तावीज बनाने वाला सबके सब रोजे से हों और बीमार मुर्गा, अण्डा, गोश्त, मछली और गाय का गोश्त दूध और दही आदि से परहेज करे किसी हालत में परहेज न तोड़े।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० या गयासी इन्दा कुल्ली करबतिन व या मुजीबि इन्दा कुल्ली दावतिन व मआजी इन्दा कुल्ली शिददतिन या रजाई हीना तनकतिऊ हीलति०

तरकीब–जिस आदमी को मिर्गी की शिकायत हो तो उसे चाहिये कि आकरकरहा कूट कर और कपड़े में छान कर असली शहद में मिलाकर मिर्गी वाले रोगी को चटायें अक्कर करहा छः माशे और शहद एक तोला लिया जाये।

तरकीब–जिस किसी को मिर्गी के दौरों की शिकायत हो उन्हें चाहिये कि ओद सलीब की दो छोटी लकड़ियाँ लेकर उनके बीच में छेद करके कि लकड़ियाँ फटें नहीं। उन दोनों के बीच में डोरा डाल कर रोगी के गले में डाले और लकड़ियों पर कपड़ा न चढ़ाये। रोगी को आराम हो जायेगा।

तरकीब–जिस आदमी को मिर्गी की शिकायत हो और मिर्गी का दौरा पड़ता हो तो उसे चाहिये कि नील (डली वाली असली) से इस तावीज को लिखकर मोमजामा करके बाजू पर बाँधे। अल्लाह ने चाहा तो रोगी को आराम हो जायेगा। वह तावीज यह है—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० यसबूतन सुबूतन सअयन हम्मन यद्दूसुन कुददसुन अन्नहु इलमूना बिहुरमति मुहम्मदिव व आलिहि अजमअीन०

तरकीब–जिस रोगी को बुखार आ रहा हो और उसे चेचक निकलने का डर हो तो इस नक्श को सूरज निकलने से पहले लिखकर पाक धज्जी में लपेट कर रोगी की गर्दन में बाँध दिया जाये अल्लाह ने चाहा तो रोगी चेचक के निकलने से महफूज रहेगा और यदि निकल आयी तो अल्लाह की रहमत से जोर नहीं करेगी और रोगी को कोई खास तकलीफ नहीं होगी। रोगी ठीक हो जायेगा। वह नक्श यह है—

लहमदु लिल्लाहि गयरिल मगजूबि सिरातलमुस्तकीम वइय्याका सिरातल्लजीना इययाका नाबुद आलमीन अनअमता अलयहिम

यवमिददीनी नसतअीन वल्लज्जलीन अर्रहमानि अलयहिम अर्रहीम मालिकीं इहदिना

तरकीब–जिस बच्चे या बड़े को बुखार आ रहा हो और चेचक का जोर हो और उसे यह डर हो कि कहीं मेरे न निकल आये तो उसे चाहिये कि नीले रंग के सूत के २१ तार लेकर नौ गिरह लगाये और हर गिरह पर अलहम्दु शरीफ एक बार पढ़े और गले में बाँधे। अल्लाह ने चाहा तो चेचक से महफूज रहेगा।

तरकीब–जिस किसी को बुरी नजर लगी हो तो उस रोगी पर इन आयतों को पाँच या सात बार पढ़कर दम करे। इन्शा अल्लाह बुरी नजर का असर जाता रहेगा। वे आयते ये हैं—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० लखलकुस्समावाति वलअर्जि अकबरु मिन खलकिन्नासि वलाकिन्ना अकस-रन्नासि लायालमूना फरजिअिल ब-स-रा हल तरा मिन फुतूरि० सुम्मर जिअिल हसीर० व इय्यकादूल्लजीना क-फ-रु ल युजलिकूनका बिअबसारिहिम लम्मा समिऊज्जिकरा व यकूलूना इन्नहु लमजनून० वमाहुआ इल्ला जिकरुल लिल आलमीन०

तरकीब–जिस किसी को बुरी नजर लग गयी हो और रोगी की हालत अधिक खराब हो गयी हो तो इस नक्श को लिखकर मोमजा़मा करके रोगी के गले में बाँधे और इसी नक्श को दोवारा लिखकर फलीता बनाकर मगरिब के बाद गाय के घी में रोगी के सिरहाने रोशन करे और जब तक फ़लीता जलता रहे रोगी चारपाई पर लेटा रहे। फलीता रोशन करे और जब तक फलीता जलता रहे रोगी चारपाई पर लेटा रहे। फलीता रोशन करने का अमल तीन दिन बराबर करे और फिर इस चिराग को जो तीन दिन तक रोशन रहा है किसी जमीन में दफन कर दें। इन्शाअल्लाह बुरी नजर का प्रभाव जाता रहेगा और रोगी ठीक हो जायेगा।

तरकीब–जिस किसी आदमी या जानवर को बुरी नजर लग गयी हो उस पर इस दुआ को पढ़कर पाँच बार दम करे इन्शाअल्लाह बुरी नजर का असर जाता रहेगा और आदमी या जानवर तकलीफ से छुटकारा पायेगा। वह दुआ यह है—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० बिस्मिल्लाहि अजीमुश्शानि शहीदुल बुरहानि माशाअल्लाहु मा काना हबिसा हाबिसुम मिन हजरि याबिसिव वशिहाबिन काबिसिन अल्लाहुम्मा इन्नीरददतु अअयनल आइनि अलयहि व अला अहब्बीन्नासि इलयहि फी कयदिहि वकुल्लिय्यतिहि लहुम दकीकुन व अजमुन फीमा लहुयलीकुन फरजिअिल ब-स-रा हल तरामिन फुतूरि सुम्मरजिअिल ब-स-रा कर्रतयनी यनकलिब इलयकल बस-रु खासिअव व हसीर०

तरकीब–जिस किसी को बुरी नजर लग गयी हो चाहे मर्द हो या औरत या बच्चा, ऐसी हालत में नौ तार कच्चे सूत के नीले रंग के इतने बड़े जो रोगी के गले में आ जाएं उन पर छः गिरहें लगायी जायेंगी। इस तरह कि हर गिरह पर सात बार दरूद शरीफ और तीन बार सूरः इखलास पूरी पढ़कर हर गिरह पर दम करता जाये और यह गण्डा फिर रोगी के गले में डाल दे और यदि जानवर को नजर लग गयी हो तो काली ऊन लेकर जो घर का काता हुआ हो इतना बड़ा लिया जाये कि जानवर के गले में आ जाये। इस ऊन के भी नौ तार लिये जायेंगे और इन पर भी छः गिरहें लगायी जायेंगी और हर गिरह पर सात बार दरूद शरीफ और तीन बार सूरः इख्लास पूरी पढ़कर दम किया जायेगा और इस गण्डे को उस जानवर के गले में डाल दिया जायेगा, जिसको बुरी नजर लगी हो।

तरकीब–जिस बड़े या बच्चे को बुरी नजर लग गयी हो तो उसे चाहिये कि इस आयतों को लिखकर मोमजामा करके बच्चे के गले में डाल दें और यदि बड़ा हो तो अपने बाजू पर बाँध दे अल्लाह ने चाहा तो बुरी नजर का असर जाता रहेगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० आऊजुबिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन शर्रि कुल्ली शयतानिव वहाम्मतिव व अयनिल लाम्मतिन तहस्सन्तु बिहिस्नी अल्फ अल्फ ला हवला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अजीम०

तरकीब–जिस किसी को बुरी नजर लग गयी हो तो उसके लिये जरूरी है कि मगरिब या इशा के बाद रोगी को चारपाई पर लिटाकर उसके दाँयें कान में इस आयत को २१ बार पढ़कर दम करे (एक बार बिस्मिल्लाह के साथ और बीस बार बिना बिस्मिल्लाह के पढ़े) और इसके बाद करवट बदलवाकर रोगी के बाँयें कान में चारों कुल (सूरः नास, फलक, इखलास, काफिरून) को दो दो बार पढ़ता जाये और रोगी के कान में दम करता जाये।

इस अमल को तीन दिन तक बराबर किया जाये। अल्लाह ने चाहा तो बुरी नजर और उसके साथ बुखार भी होगा तो जाता रहेगा। आयत यह है—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० अ-फ-इसिबतुम अन्नमा खलकनाकुम अ-ब-सव व अन्नकुम इलयना ला तूरजऊन० फत-आलल्लाहुल मलिकुल हक्कु ला इलाहा इल्ला हुवा रब्बुल आर्शिल करीम० व मय यद ऊ मअल्लाहि इलाहन आ-ख-रा ला बुरहाना लहुबिहि० फइन्नमा हिसाबुहु इन्द रब्बिहि० इन्नहु ला युफलिहुल काफिरूना० वकुल रब्बिगफिर वरहम व अन्ता खयरुर्रहिमीना० जो दाँयें कान में २१ बार पढ़कर तम की जायेंगी।

तरकीब–जिस आदमी की आँखें दुख रही हों तो नरीचे की इबारत इस तरह

लिखकर बिना मोमजामा किये पाक धज्जी में लपेट कर सर में बाँधें कि तावीज दोनों आँखों के सामने रहे। अल्लाह ने चाहा तो ठीक हो जायेंगी।

इजा मा मुकलती र-म-दत फकुहली तुराबुन मस्सा नाअला अली तुराबि हुव बक्काऊ फिल मेहराबि लयलन हुवज्जहहाकु फी यवमिज्जिराबि०

तरकीब–जिस आदमी की आँखें दुख रही हों तो चाहिये कि इन आयतों को मुश्क व जाफरान से चीनी की तश्तरी पर लिखकर धोकर पीये या कागज पर लिखकर बिना मोमजामा किये पाक धज्जी में लपेट कर सर में बांधे इस तरह कि तावीज दोनों आँखों के बीच पेशानी पर रहे। बड़ा जांचा परखा हुआ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमासनिर्रहीम० इजहबू बिकमीसी हाजा फअलकूहु अला वजहि अबी याति बसीरा० फकशफना इन्का गिताअका फब-सरुका अलयवमा हदीदुन०

तरकीब–जिस मकान में जिन्न व शैतान की असर हो उसके लिये पहले गुस्ल को फिर दो रकअत तहय्यतुल कुशु की नीयत से नफिल अदा करके और फिर वही बैठे-बैठे इस आयत को सात बार कागज पर लिखे और इस कागज को किसी गत्ते पर चिपका कर मकान में लटका दे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० इन्नहु मिन सुलयमाना व इन्नहु बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीमी अल्ला ताअलू अलय्या वातूनी मुस्लिमीना०

और यदि किसी आदमी पर किसी प्रकार का असर हो जिन्न या आसेब आदि का तो उसके लिये भी ऊपर वाले तरीके से लिखकर मोमजामा करके रोगी के गले में डाले अल्लाह ने चाहा तो उसी दिन वहाँ से जिन्न भाग जायेगा और वहाँ कभी न आयेगा और रोगी के ऊपर से सारे असरात खत्म हो जायेंगे और वह अच्छा हो जायेगा।

तरकीब–जिस मकान में जिन्न व शैतान व आसेब का असर हो तो चाहिये कि असहाबे कहफ के नामों को लिखकर मकान की दीवारों और दोनों दरवाजों पर चिपका दे। कम से कम तीन चार कागजों पर लिखकर तीन चार जगह गत्तों पर ही चिपका दे और लटका दे। अल्लाहा ने चाहा तो किसी प्रकार का भी असर उस मकान में नहीं रहेगा।

'इलाही बिहुरमति यमुलियुखा मकसलमीना कशफू तत अ-जर कतयूनुस कशा फतयूनुस कस्दुस्सबीलि व मिन्हा जा-इरुन०'

इस नामों में भी ये गुण हैं कि जिस स्थान पर आग लगी हो इनको कागज पर लिखकर आग में डाल दें। अल्लाह ने चाहा तो आग ठण्डी पड़ जायेगी।

तरकीब–जिस मकान में जिन्न व शैतानों का खतरा हो तो पीर के दिन या बुद्ध या जुमे या जुमेरात के दिन मिशतरी की घड़ी या जोहरा की घड़ी में पूरी सूरः बकरा

उस मकान में बैठकर पढ़ी जाये और एक गिलास पानी भर कर अपने पास रख ले। जब सूर: खत्म हो जाये तो इस पानी पर दम करके मकान की दीवारों पर छिड़क दे इस तरह छिड़के कि पानी जमीन पर न गिरे और घड़ी का हिसाब सूरज निकलने के समय से लगाय।

तरकीब–जिस मकान में भूत-प्रेत-चुड़ैलों का डर हो तो लोहे की चार कीलें टोपी दार लेकर उनमें से हर कील पर २५-२५ बार यह आयत पढ़कर दम करे और एक कील चारों कोनों में गाड़ दे। हर प्रकार की खराबी व असर खत्म हो जायेगा। आयत यह है—

'इन्नहुमा यकीदूना कयदव व अकीदू कयदा फलमहिलिल काफिरीना अमहिलहुम रुवयदा०

दुकान की तरक्की के लिए अमल

तरकीब–यदि किसी की दुकान न चलती हो और लाभ कम होता हो तो इस आयत को दो पुर्जो पर लिखकर एक पुर्जे को गत्ते पर चिपका कर दुकान के अन्दर लटका दे और दूसरे पुर्जे को मोमजामा करके अपने गल्ले के अन्दर जिसमें रुपया रखा हो। यह ख्याल रहे कि यदि इन दोनों में से एक भी खो गया तो फिर असर खत्म हो जायेगा; क्योंकि ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। गल्ले वाले तावीज और गत्ते वाले तावीज को हिफाजत जरूरी है। इन्शाअल्लाह दुकान खूब चलेगी और खरीददार बहुत आयेंगे और यदि किसी दुश्मन ने बन्द करा दी या दी होगी तो खुल जायेगी।

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम० हुवल्लजी मददल अर्जा व ज-अ-ला फीहा र वासिया वअनहारन वमिन कुल्लिस्समाराति व ज-ल-ला फीहा जवजयनिसनयनि युगश्शिल्लयला वन्नहरा इन्ना फी जालिका ल आ यातिल लिकवमिय यत-फक्करुना०

तरकीब–यदि किसी की दुकान न चलती हो और लाभ कम होता हो तो उसे चाहिये कि इस नक्श को सूरज निकलने से पहले जुमा, हफ्ता, पीर या मंगल को लिखे। जुमे को सूरज निकलने से पहले सूरज की घड़ी होगी। हफ्ते को सूरज निकलने से पहले चाँद की घड़ी होगी। पीर को सूरज निकलने से पहले अतारुद की घड़ी होगी। मंगल को सूरज निकलने से पहले मिशतरी की घड़ी सबसे बेहतर है और आगे लिखने वाले को अधिकार है कि चाहे जिस दिन लिखे और लिखने के बाद एक गत्ते पर चिपका कर उस गत्ते को दुकान में लटका दे। अल्लाह ने चाहा तो खूब बिक्री होगी।

तरकीब–यदि किसी की दुकान न चलती हो तो उसे चार कोरी सकोरी जिनमें खुशी के अवसर पर खीर या फीनी जमाते हैं लेकिन वे ऐसी हों कि जिनको

पानी न लगा हो लेकर उन पर जुमरात जुमा या पीर के दिन मिशतरी की घड़ी में लिखे और दुकान के चारों कोनों में उनको लटका कर रखे। अल्लाह ने चाहा तो खूब बिक्री होगी और बहुत अधिक लाभ होगा। जुमेरात को यह घड़ी सूरज निकलते ही आती है और जुमे को पाँचवे घण्टे में सूरज निकलने के बाद आती है और पीर को सूरज निकलने के बाद तीसरे घण्टे में आती है लिखने वाले को इन समयों का ख्याल रखना बड़ा जरूरी है।

तरकीब—यदि किसी की दुकान न चलती हो और लाभ कम होता हो तो उसे चाहिये कि इस आयत को लिखकर गत्ते पर चिपका लें ओर दुकान में लटका लें ताकि खरीदारों के सामने रहे और इसको मिशतरी की घड़ी में लिखे। पीर के दिन सूरज निकलने के बाद से सूरज निकलने से तीसरे घण्टे में आती है और जुमेरात को सूरज निकलने से पहले घण्टे में आती है और जुमे को सूरज निकलने के बाद से पाँचवे घण्टे में यह घड़ी आती है। अल्लाह ने चाहा तो अधिक बिक्री होगी और लाभ भी होगा।

चोर के लिए अमल

तरकीब—यदि किसी आदमी का माल चोरी चला गया हो और चोर का पता न चले तो इस दुआ को कसरत के साथ पढ़ने से यह मालूम हो जायेगा कि चोर कौन है या जो माल चोरी चला गया है, वह वापस मिल जायेगा। वह दुआ यह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० या वासिउल कन्फि व या अलश्शर्फि बिहुरमति अहलश्शर्फि इजबिर अला मा त-ल-फा बिहुरमति फातिमतिन व अबीहा व बाअलिहा व उबनयहा या बुनय्या इन्नाहा इन तकु मिस्काला हब्बतिम मिनखरदलिन फतकुन फी सखरतिन अव फिस्समावाति अवफिल अर्जि याति बिहल्लाहु इन्नलाहा लतीफुन खबीर० व लव तरा इज फजिऊ फला फवता व उखिजु मिन मकानिन करीबिव व कालू आमन्ना बिहि व अन्ना लहुमुत्तनावुशु मिम मकानिम बईद० अल्लाहुम्मा इजबिर कजा व कजा बिहक्कि यासीन वल कुरआनिल हकीमी व साद वल कुरआनि जिज्जिकरी व काफ वल कुरआनि वर्रहमानि अल्लमल करआना या इबादल्लाहिस्सालिहीना रुददू अलय्या जाल्लती सुरमुकुमुल्लाहु व अहबिसूहा इलय्या अल्लाहुम्मा ला तुफत्तनी बिहलकिहा वला तम्बगी बितलबिहा बिहक्कि जिबरीला व मीकाईला व इसराफीला व इजराईला व बिहक्कि मुहम्मदिन सल्लल्लाहु तआला अलयहि व सल्लमा तसलीमन कसीरन अ-द-द खलकिका व रिजाई नफसिका वजिनता अरशिका व मिदादि कलिमातिका०

तरकीब—यदि कोई अपने घर या दुकान के माल में इस दुआ को लिखकर गत्ते पर चिपका दे तो सामान चोरी से बचा रहेगा। वह दुआ यह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० या हफीजु ला यन्सा व या मिन निअमती ला तहसी व या मल्लहुम उर्वतुल वुस्का व या मन लहुल इज्जतु वस्सनाउ वलहुल असमाउल हुस्ना इहफज कजा व कजा बिमा हफिजता बिहिल अर्जा वस्समा आ वलजाअत जहरी फी हिफजी जालिका इलल हय्यिलकय्यूमी फइन्नका कुलता व कवलुकलहक्कु इन्ना नहनु नज्जलनज्जिकरा व इन्ना लहु लहाफिजूना व सल्लल्लाहु तआला अला सय्यिदना मुहम्मदिव व अला आलिहि व सहबिहि व सल्लमा०

तरकीब–जो लोग चोरी में संलग्न हों या जिन पर संदेह हो उक्त सबके नाम अलग-अलग परचों पर लिखे और पर्चियों को गेहूँ के आटे में जो गुंधा हुआ हो गोलियाँ बना लें और उन पर पहले व बाद में ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़े और इसके बाद आयतल कुर्सी, चारों कुल एक-एक बार पढ़े और इसके बाद तश्तरी में पानी भरकर उसमें सब गोलियाँ एक दम पानी में डाली जायेंगी चोरी की गोली पानी में डुबेगी नहीं और ऊपर तैरती रहेगी।

तरकीब–यदि किसी का माल चोरी हो गया हो तो उसे चाहिये कि सरसों के तेल के चिराग को सियाही या तवे की सियाही लेकर उसे थोड़े सरसों के तेल में मिलाकर एक नाबालिग लड़के या लड़की की हथेली में दोनों को मल दे और इसके बाद सात दाने या नौ दाने उड़द के या जौ के लेकर इनमें से हर दाने पर एक-एक बार यह दुआ पढ़कर एक दाने को उस लड़के या लड़की को मारता जाये। अल्लाह ने चाहा तो लड़के या लड़की के हाथों पर चोर की तस्वीर बन जायेगी।

अजमतु अलयकुम फतहुन फतहून जिअतूका जिअतुका शफीअन शफीअन शफीअन अतीशन अतीशन अतीशन सुरूरन सुरूरन कुदूरन कुदूरन कुदूरन सहबन सहल सहलन नहलन नहलन नहलन अहजिरू मिन जानिबिल मशारिकि वल मगारिबी बिहाक्कि सुलयमाना बिन दाउदा अलयहिमस्सलामु०

तरकीब–यदि किसी का माल चोरी हो गया हो और उसका पता न लगता हो तो उसे चाहिये कि एक चोकोर अर्थात् चार कोनों वाली कील लेकर उसके एक ओर यासीन वल कुरआन और दूसरी ओर वलकुआनि और तीसरी ओर काफ वलकुरआनि और चौथी हामीन अेन सीन काफ० हाजा यवमा ला यन्कूिना वला यूजनु लहुम फयातजिरूना लिखकर कील को जमीन पर गाड़ दे और यही कलिमात जो कील पर लिखे गये हैं पढ़ता जाये फिर जिन-जिन पर सन्देह हो उन्हें इस कील पर खड़ा करे जो चोर होगा इस कील पर खड़ा न होगा। यह मालूम हो जायेगा कि चोर कौन है?

तरकीब–यदि किसी का माल चोरी गया हो और पता न लगता हो तो उसे चाहिये कि जितने लोगों पर उसका संदेह है, उतने तरंज के पत्ते पर यह आयत लिखे

और इस आयत के नीचे हर उस आदमी का नाम लिखता जाये जिस पर संदेह हो और फिर इन पत्तों में से एक-एक पत्ता आग में डालता जाये। इन्शा अल्लाह चोर के पेट में अवश्य ही दर्द होगा। वह आयत यह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अस्सारिकु वस्सारिकु वस्सारिकतु फकतऊ अयदीयहुमा जजाअम बिमा क-स-बा नकलम मिनल्लाहि०

तरकीब–यदि किसी का माल चोरी हो गया हो और चोर का पता न चलता हो तो उसे चाहिये कि इन्गारफ इतनी मात्रा में ले कि रान के ऊपर मलने के बाद बचे नहीं और इस इन्गरफ को पानी में भिगोने के बाद इस पर दस बार दरूद शरीफ पढ़कर दम करे और उसे अपनी रान पर मले इसके बाद उस्तरा लेकर उस पर ४० बार इन नामों को पढ़े और दम करे और उस्तरे से अपनी रान के बाल मुंड़े जब ऐसा करेगा तो चोर के सर के बाल आप से आप मुड़ेंगे। यह बड़ा अजीब अमल है यह अमल संदिग्ध लोगों को सामने बिठाकर किया जाये वे नाम ये हैं—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिरहीम० अलीका तलीका सलीका बिहक्कि ला इलाहा अल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाही व अली वलिय्यिल्लाहि०

आज्ञा पालन के लिए

तरकीब–जो आदमी इस दुआ 'या वददु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि' को सफेद रेशमी कपड़े के टुकड़े पर लिखकर अपने पास रखे और मोमजामा करके उस टुकड़े को इत्र में बसा ले तो अल्लाह आज्ञा पालन करने की तौफीक प्रदान करेगा और शैतान की चालों से बचायेगा और लोगों के बाद दिलों में उसका आतंक बैठा दे। इस अमल को जुमे की नमाज के बाद उसी स्थान पर बैठकर किया जाये। इन्शा अल्लाह कामयाबी होगी।

हर जरूरत के लिए

तरकीब–जिस आदमी को किसी प्रकार की कोई जरूरत हो और लोगों में आदर सत्कार चाहता हो तो उसे चाहिये कि इस इबारत को ३७२ बार रोजाना सुबह नमाज फज्र के बाद दो जानू बैठकर दो गुलदस्ते सामने लाकर रखे या खुशबूदार फूलों के दो हार रख लो और एहराम बाँध कर जो कि खुश्बू से तर हों रूई की खुश्बू से तर हों रूई की बारीक बत्ती बनाकर और चमेली का तेल चिराग में डालकर रोशन करे फिर यह अमल पढ़े जो हाजिर हो दुआ के समय खुदा से मांगे और इस तरह ११ दिर पूर करे अल्लाह ने चाहा तो दुआ बहुत जल्द कुबूल होगी। इस अमल को शुरू महीने को नौचन्दी जुमेरात से शुरू करे।

या अजीजु अज्जिनी फी आयुनिन्नासि०

एहतलाम (स्वप्न दोष) के लिए

तरकीब–यदि किसी आदमी को एहतलाम अधिक होता हो तो उसे चाहिये

कि सोते समय अपने सीने पर शहादत की उंगली से उमर लिख ले और जिस समय आँख खुल जाये तो फिर इसी तरह सीने पर 'उमर' लिख ले फिर सो जाये। जितनी बार सोते-सोते आँख खुल जाये हर बार उंगली से सीने पर उमर लिख ले। इन्शाअल्लाह कभी एहतलाम न होगा।

रोगों से मुक्ति लिए

तरकीब–ये वे आयतें हैं कुरआन पाक की जिनके बारे में हुजूर सल्ल० ने इर्शाद फरमाया है ऐसे रोगी को जिसे अपने रोग से परेशानी हो और उसके रोग का पता न चलता हो या इलाज कराते-कराते निराश हो चुका हो। इन आयतों को चीनी की पाक तशतरी पर लिखकर धोकर पिलाया जाय अल्लाह के करम से पूरी तरह स्वस्थ हो जायेगा और दूसरी बीमारियों से छुटकारा पा जायेगा। वे आयतें ये हैं—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमार्निहीम० व यश फि सुदूरा कवमिम्मोमिनीना व शिफाउल लिमा पिस्सुदूरि० फीहिशिफाउल लिन्नासि मा हुआ शिफाउव वरहम तुल लिलमोमिनीना० न इजा मरिजतु फहुवा० यशफीना० कुल हुवा लिल्लजीना आमन् हुदव व शिफाउन०

जहरीले जानवर से बचने के लिए

तरकीब–जो आदमी चाहे कि कोई जहरीला जानवर उसे न काटे या सांप बिच्छू से महफूज रहना चाहे तो उसे चाहिये कि इस आयत को सात बार सुबह और सात बार शाम रोजाना पढ़ लिया करे।

'सलामुन अला नूहिन फिलआलमीना०'

फुन्सी फोड़ों से बचाव के लिए

तरकीब–इस दुआ को सात बार पढ़कर पिंडोल मिट्टी पर दम करे और इस मिट्टी को बारीक पीस कर हथेली पर रखकर उंगली पर थूक लगा कर इस मिट्टी को फुन्सी फोड़े पर लगा दे इसी तरह कई दिन तक लगाये। इन्शाअल्लाह ठीक हो जायेगा।

बिस्मिल्लाहि तुरबति अरजिना बिरीकति बाअजिना यशफा सकीमिना बिइजनि रब्बिना०

गैर मुस्लिमों के लिए तावीज

तरकीब–चाहे हिन्दू हो या ईसाई या यहूदी या आग पूजने वाले बीमारियों के लिए इसमें समाधान है।

अल इस्लामु हक्कुन वलकुफरु बातिल अलइस्लामु नूरुन वलकुफरु जुलमतुन०

ला इलाज बीमारी के लिए

तरकीब–जो किसी तरह की बीमारी का शिकार है और इलाज कराते-कराते

निराश हो गया हो अर्थात् किसी तरह आराम न हो तो उसे चाहिये कि इस इबारत को तशतरी पर लिखकर पानी से धोकर निहार मुँह रोगी को २१ दिन तक या ७० दिन तक लगातार पिलाओ मिशतरी जोहरा की घड़ी में लिखो अल्लाहा ने चाहा तो रोगी को आराम हो जायेगा। यह अशहूर अमल है इबारत यह है—

'या हय्युहीना फी दयमूमति मुल्किहि वबकाइहि या हय्यु'

शेर व कुत्ते के हमले से बचने के लिए

तरकीब—जिस आदमी को रास्ते में किसी जगह यह डर हो कि कुत्ता या शेर हमला करने की कोशिश करेगा तो उसे चाहिये कि तुरन्त इस आयत को पढ़ना शुरू कर दे तो कुत्ता या शेर शोर मचाने और हमला करने से बाज रहेगा। अल्लाह ने चाहा तो बचा रहेगा। वह आयत यह है—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० कलबुहुम बासितुन जिरा अयहिं'

मुहब्बत के लिए

पहली तरकीब—जिसे किसी से मुहब्बत दरकार हो उसे चाहिये कि शुरू महीने की नौचन्दी जुमेरात को इस इवारत को एक सौ बार पढ़े और सुरमे के ऊपर दम करे और अपनी आँखों में लगाकर महबूब के सामने जाये। मुहब्बत हो जायेगी।

दूसरी तरकीब—जो चाहता हो कि मेरा महबूब बेकरार होकर तुरन्त मेरे पास पहुँचे तो उसे चाहिये कि इस इबारत को ६५० बार मुर्गी के अण्डे पर दस दिन तक पढ़े और फिर जमीन में गड्ढा खोदकर इस अण्डे को रखे और गर्म राख या आग के द्वारा इसे सेंक पहुँचाये। अल्लाह ने चाहा तो महबूब हमेशा गुलाम रहेगा।

तीसरी तरकीब—६० हजार ६०० बार मिसरी पर पढ़े और महबूब को खिलाये इन्शाअल्लाह पागल होकर आज्ञाकारी हो जायेगा। इबारत तीनों तरकीबों के लिये यह है—

'अल्लाहुम्मा या मुसख्खिरू सखर ली मन फिस्समावाति वल अर्जि मुसलखिखरल लि लिल्लाहि तआला अल्लाहुम्मा बय्यिन ली वजल्लिलहु ली व सखखिरली व अल्लिफ व मुहब्बति फीकलबिहि वजअलहु रऊफन मुहिब्बन बिहक्कि या अल्लाहु या रहमानु या रहीमु०

हर मकसद में कामयाबी

तरकीब—यदि कोई आदमी इस दुआ को सात दिन तक हर दिन कागज पर लिखे और दरिया में डाल दिया करे तो जो नीयत करेगा वही पूरी करेगा। वह दुआ यह है—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० या हुन्नानु या मन्नानु या सुलतानु या बदी

अस्समावाति वल अर्जि या जल जलालि व ल इकरामि बिरमतिका या अरहमर्राहिमीन०

बीमारी से अच्छा होने के लिए

तरकीब—यदि कोई बीमार हो उस पर यह दुआ सात बार पढ़कर दम करे। वह बीमार जल्दी ही अच्छा हो जायेगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० वला तजलिक् रुऊसकुम हत्ता यबुलुग अलदयुमहिल्लु फमन काना मिन्कुम मरीजन अब बिहि अजन मिन रासिहि फफिदयतुन मिन सियामिन अव स-द-क-तिन अव नुसुकिन०

आसेब के लिए

तरकीब—यदि किसी को आसेब परी व जिन्न की शिकायत हो तो उसे चाहिये कि इस चहल काफ को सात बार कड़वे अर्थात् सरसों के एक छटांक तेल पर पढ़कर दम करे और शुरू व बाद में दरूद शरीफ तीन-तीन बार पढ़े इसके बाद उस तेल की एक बूँद अर्थात् पिचकारी या ड्रापर से रोगी के कान में टपाये। पहले दाँयें कान एक बूँद फिर बाँयें कान में एक बूँद। लेकिन ख्याल रहे कि यह तेल की बूँद कान में और फिर दूसरे कान में जज्ब कर दिया जाये और इसके बाद अलग से सरसों का तेल इतनी मात्रा में लेकर कि सारे शरीर पर मला जा सके। इस सादे तेल में पढ़े तेल की कुछ बूँद मिला लें और रोगी के सारे शरीर पर मले। सात दिन तक। जो दूसरा दिन आयेगा उसे छोड़कर तीसरे दिन करे। यह सात दिन पूरे करे। अल्लाह ने चाहा तो रोगी ठीक हो जायेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० कफाका रब्बुका कम यकफीका वाकिफतन किफका फुहा क-क मीनिन काना मिन क-लिका+तकिरू कर्रन व कर्रिल कर्रिफी क-ब दिन तहक्कि मुश्क श-कतन ककिल कार्व्कल कलिका कफाका मा बी कफाकला अल काफु कुरबत+ या कवकबु काना तहक्कि कव कबा अल-फ-ल-का।

(लक्षण के अनुसार भाग्य)

सर के बाल

(१) यदि काले व मुलायम हों तो दौलतमन्द हो।

(२) बारीक हों......तो सुन्दर हो।

(३) सख्त हों......तो तंगदस्त और बहादुर हो।

(४) सुर्ख रंग के जैसे हो-तो करीब व परेशान हो।

सर की बनावट

(१) लम्बाई हो तो.......शान व शौकत वाला हो।

(२) दरमियानी हो........तो दौलतमन्द हो।

(३) अधिक बड़ा हो तो.......गरीब व परेशानी का नमूनां है।

पेशानी

(१) ऊंची हो तो भाग्यशाली और दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) चौड़ी हो तो इल्म व अक्ल की निशानी है।

(३) तंग व छोटी हो तो छोटी उम्र और बदसख्ती की निशानी है।

(४) समतल व ऊंची हो तो दुख व मुसीबत की अलामत है। सारी उम्र सख्ती में गुजरे।

पेशानी पर तिल व रेखा

(१) यदि पेशानी पर तिल है तो अच्छे भाग्य की निशानी है।

(२) यदि एक रेखा है एक किनारे से दूसरे किनारे तक तो दौलतमन्दी की निशानी है, वर्ना माल व दौलत का नुकसान है।

(३) दो रेखायें ऊंचे पद व लम्बी उम्र की निशानी है।

(४) चार व पाँच रेखायें निर्धनता व परेशानी की निशानी हैं।

(५) यदि कोई रेखा न हो तो सन्यास ले लेने की निशानी है।

भंवे

(१) दोनों बारीक हो व सुन्दर हों तो कमान की तरह तो दौलतमन्त व सलतनत की निशानी है।

(२) मिली हुई भंवे चोरी की निशानी है।

(३) भंवे न होना या कम ह़ोना गरीबी का कारण है।

(४) भंवों के बालों का सख्त होना बदबख्ती के लक्षण हैं, गरीबी का कारण है।

आँख

(१) यदि सफेद या काली हों और सुर्ख डोरे उसमें पड़े रहते हों तो शान व शौकत, खुशहाली व सुखदायी जीवन की निशानी है औरतों से इसको लाभ पहुँचे।

(२) यदि शेर की तरह खतरनाक हो अर्थात् गुस्से से भरी हुई हो तो बहादुरी की निशानी है।

(३) यदि मुर्गे की तरह हों जैसा कि मुर्ग कन आँखियों से देखता है तो बेशर्मी वे बेहयाई की निशानी है।

(४) यदि आँखें बिल्ली की तरह नीली और सब्ज रंग की हो तो दुराचार व बे मख्वती की निशानी है।

(५) चकोर की तरह हों तो चालाकी व बेवफाई की निशानी है।

आँख की पलकें

(१) पलकों को बाल कम होना जीवन का भोग विलास में बसर होने की निशानी है।

(२) सख्त होना या अधिक होना गरीबी व बद बख्ती की निशानी है।

नाक

(१) ऊंची व बड़ी नाक दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) सुन्दर तोते वाली अक्लमन्द, नेक और सत्तासीन होने की निशानी है तोते की चोंच जैसी टेढ़ी और फैली हुई।

(३) जो छोटी व ऊंची बारीक हो तो नेकी की निशानी है।

(४) मोटी छोटी होना कम अक्लों व रोजगार के लिए परेशान होने की निशानी है।

नाक के सुराख

(१) बड़े होना बेहया होने की निशानी है।

(२) तंग होना अक्लमन्द और हयादार होने की निशानी है।

कान और कानों की लो

(१) यदि लम्बे हों तो नेक तबियत दौलतमन्द रहे लम्बी उम्र पाये।

(२) यदि लम्बे व कमजोर हों तो नेकी की निशानी है और अच्छे अख्लाक की निशानी है।

(३) कान की लो यदि कनपटी से अलग हो तो खुशहाली की अलामत है।

(४) यदि मिली हुई हों मगर बारीक हो तो खुशहाली की निशानी है।

(५) यदि कान पर बाल हों तो निशानी मेहनत व दुख की है।

चेहरा

(१) किताबी आफताबी चेहरे का होना भाग्यशाली और ऊंची शान की निशानी है।

(२) चूहे जैसे चेहरे या हरन जैसे चेहरे वाला बदबख्त व भिक्षा की निशानी है।

(३) गोश्त से भरे चेहरे व सुन्दर चेहरे वाले नेक या नेक सन्ता वालों की निशानी है।

(४) चीते के जैसे चेहरे का होना मान-सम्मान वाला व्यक्ति होने की निशानी है।

जबान

(१) सुर्ख जबान दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) सफेद जबान गरीबी तंग दस्ती की निशानी है।

होंठ

(१) बारीक दाँत अनार के दानों की तरह दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) सफेद दाँत दौलतमन्दी या फकीरों व सन्यास ले लेने की निशानी है।

आवाज

(१) ऊंची आवाज होना शान व शौकत का सबूत है।

(२) आवाज में बादल की गरज होना नेकी की निशानी है।

(३) मोर की तरह की आवाज का होना दौलतमन्दी व नामवरी की निशानी है।

दाढ़ी

(१) काले मुलायम बाल होना दौलतमन्दी व नामवरी की निशानी है।

(२) सुर्ख बालों का होना निर्दयता व गुस्से की निशानी है।

मुँह का शिगाफ

(१)चौड़ा मुँह होना कम अक्ली व परेशानहाली की निशानी है।

(२) दरमियानी दर्जे का मुँह होना जीवन का ठीक-ठीक गुजरने की निशानी है।

(३) तंग मुँह होना जीवन का भोग-विलास में बसर होने की निशानी है।

ठोड़ी

(१) गोल होना अक्लमन्द व फनकार होने की निशानी है।

(२) लम्वी होना दोषी होने की निशानी है।

(३) ठोड़ी का खाली होना बुरी आदत की निशानी है।

(४) ऊंची होना दौलतमन्दी की निशानी है।

गर्दन

(१) लम्बी होने से जलील होने की निशानी है।

(२) दरमियानी होना जीवन का ठीक बसर होने की निशानी है।

(३) लम्बी गर्दन हरमजदगी की निशानी है।

(४) बहुत बड़ी होना चोरी की निशानी है।

गले की रेखायें

(१) एक रेखा का होना लम्बी उम्र तक पहुँचने की निशानी है।

पीठ

(१) चौड़ी पीठ दौलत व शासन की निशानी है।

(२) अधिक लम्बी पीठ तंग दस्ती व गरीबी की निशानी है।

बाजू

(१) लम्बे बाजू दानाई व होशमन्दी की निशानी है।

(२) दरमियाने बाजू दौलत की निशानी है।

हाथ

(१) यदि दाँयाँ हाथ बाँयें हाथ से बड़ा हो तो बहादुरी की निशानी है।

(२) यदि बाँयाँ हाथ दाँयें हाथ से बड़ा हो तो बेचैनी की निशानी है।

कोहनी

(१) शेर की-सी कोहनी जो गोश्त से भरी हो दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) शुश्वक व बारीक बन्दर की-सी कोहनी तंग दस्ती व गरीबी की निशानी है।

उंगलियाँ

(१) यदि छंगलिया अपनी बराबर वाली से बड़ी हो तो इस बात की निशानी है कि यह आदमी मान में बाप से बढ़ जायेगा।

पेट

(१) बड़ी तोंद का होना दौलत व नेमत की निशानी है।

(२) पेट का बड़ा और वे गोश्त होना गरीबी की निशानी है।

सूंडी

(१) गहरी और गोश्त से भरी सूंडी दौलत व माल की निशानी है।

रान

(१) रान पर गोश्त हो तो दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) घोड़े की रान की तरह होना रोजी के बढ़ने की निशानी है।

(३) शेर की रान की तरह होना दौलत व माल की निशानी है।

(४) बहुत बड़ी और थोड़े गोश्त वाली रान होना बुजदिली की निशानी है।

पिंडली

(१) पिंडली पर गोश्त होना दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) पिंडली का मजबूत होना जासूस की पिंडली की तरह होना सुन्दर औरत मिलने की निशानी है।

पाँव

(१) पाँव का गोश्त से भरा होना दौलतमन्दी की निशानी है।

(२) कम गोश्त और तलवे का गहरा होना भी दौलतमन्दी व इज्जत की निशानी है।

(३) तलवे का गोश्त से भरा होना बदचलनी की निशानी है।

फायदे के लिये

यदि यह देखा जाये कि अनाज के दाम महंगे होते जा रहे हैं और सरासर घाटा नजर आता है तो परेशान होने की जरूरत नहीं और न अपने अनाज को सस्ते दामों पर बेचे बल्कि खुद पर भरोसा करके इस अमल को शुरू कर दे यदि खुदा ने चाहा तो गैब से अनाज की बहुत मांग पैदा कर देगा, जिससे आपको लाभ होगा। इस अमल को पाँच दिन तक पढ़िये—'उतीतु अनीया मौला या मौला अतीतु अनी'

दौलत कमाने के लिये

यदि कोई गरीब हो और वह यह चाहे कि मैं मालदार हो जाऊँ तो उसे साहस से काम लेना चाहिये। यह सच है कि तिजारत में लाभ-हानि इन दिनों नाममात्र ही को रह गया है लेकिन तिजारत के साथ इस वजीफे को पढ़ना शुरू कर दें, तो दिन-ब-दिन तरक्की होने लगे और लोग यही समझेंगे कि वह तिजारत के जरिये पैदा कर रहा है। लेकिन यह सब कुछ अमल के कारण है, उसी की बरकत से आमिल बहुत जल्द अमीर और दौलतमन्द हो जाता है। अमल यह है—'अन्जर फी या रहीम या करीम गफूरु या सखी'

हर दिन तिजारत का काम शुरू करने से पहले ७७७ बार इस अमल को पढ़ लिया करे इसके बाद अपना काम शुरू कर दें इस अमल का कोई समय निर्धारित नहीं है जब तक इस अमल पर करबन्द रहेगा इन्शाअल्लाह समय तक लाभ उठायेगा और दिन ब दिन तरक्की करके दौलत जमा करेगा। यह बड़ा आसान है लेकिन इसमें असंख्य फायदे हैं।

काली बिल्ली के बालों द्वारा मुहब्बत में सफलता

काले रंग की एक बिल्ली तलाश करो कि जिसके शरीर का एक बाल भी सफेद न हो। ऐसी बिल्ली की मूंछों के बाल काट लेना चाहिये। बालों को एक पाक रूई में लपेट कर एक बत्ती बनायें और इस फलीते को मिट्टी के चिराग में डालकर घी डाल दो। जब आप सारे कामों से निपट जायें तो आधी रात गुजरने पर एक कोठे में जायें। चिराग का रुख अपने महबूब के मकान की ओर करके उसे रोशन कर दे काजल हासिल करे जब तक वह चिराग जलता रहेगा उस समय तक इस मन्त्र को पढ़ो—काली काली महाकाली लेके आधी रात काली लावो महाकाली काली उसे मेरी मुहब्वत में दीवान बना दे। काली उसे मेरी मुहब्बत में दीवाना बना दे।

जब चिराग की बत्ती छोटी होने लगे तब भी पढ़ता रहे जब बत्ती तैयार हो जाये तो शीशी में महफूज रखो जब अपने महबूब के सामने जाओ तो आंखों में लगाकर जाओ वह देखते ही आशिक हो जायेगी।

सर का दर्द दूर करने के लिए

यदि किसी के सारे या आधे सर में दर्द हो रहा और दर्द के मारे बड़ा परेशान हो रहा हो किसी दवा से अच्छा न हो रहा हो तो ऐसी हालत में इस अमल से लाभ उठाना चाहिये। यह वह अमल है जो इस रोग के लिये बड़ा कार आमद है। अमल का मन्त्र यह है—'काला किलवा कलसरा कजली बन जाए उठो अहमद बाल कदो सर का दर्द दूर हो जाए।'

तरीका—शहादत की उंगली और अंगूठे से पेशानी को थामो और दूर से दोनों उंगलियों को धीरे-धीरे दबाते हुए इतना पास लाओ कि माथे के बीच आकर मिल जायें। इसी तरह सात बार करो अमल खत्म हो जाने के बाद तीन बार फूँक मार दो दर्द फौरन बन्द हो जायेगा।

लम्बे समय तक अपने महबूब को अपना कैदी बनाये रखना

जिस तरह भी संभव हो महबूब के सर के बाल हासिल कर लो जब बाल हासिल हो जायें तो नौचन्दी जुमेरात की रात को १२ बजे उसके सातों बालों को लाजवन्नी की शाख में बांधकर अपने पास रखे। इसके बाद ४० दिन तक इसी पौधे को अपने सामने रखकर नीचे वाली इबारत ४० दिन तक ४० बार पढ़ें। अमल यह है— न चले दर्द सर बढ़े फूल बे ना सिंह बसे दो हाई हनुमान की और हर फूल की।

इस मन्त्र को ४० बार पढ़ने के बाद खामोश हो जाये इस तरह इस अमल को पूरे ४० दिन में खत्म कर दे आपका महबूब बेकरार हो जायेगा। जब तक लाजवन्ती की शाख से आप अपने महबूब के बालों को न खोल देंगे आपकी महबूब आपसे जुदा न होगी।

मुहब्बत का अमल

नौचन्दी जुमेरात को ठीक रात के दो बजे अपने शहर की किसी शाही मस्जिद के अन्दर ऐसे कमरे में जहाँ सूरज की किरण दाखिल हों या किसी नदी के किनारे सुबह सबेरे बैठकर वुज़ू करे। इसके बाद मग्रिब की ओर मुँह करके हकीक का पत्थर लगी तस्बीह हाजिर दाने की लो जिसे लोबान की धुनी हो अमल शुरू करने से पहले अपने महबूब व उसके माँ-बाप के नाम को १७ बार जबान को हिलाते हुए और दिल ही दिल में लेकर कहे—'मैं तेरी मुहब्बत में दिवाना हूँ तू मेरी मुहब्बत में दीवाना बन जा क्योंकि मुहब्बत खुदा है (यह कहना कुफ्र है)' यह कर कर तस्बीह पर दम करे और इस तस्बीह को आँखों में लगाकर बोसा दे इसके बाद अमल शुरू करे। अमल यह है—

'या अजीजु या अल्लाहु जाहिरुइल्लल्लाहु'।

इसे २१ बार पढ़कर मेंहदी के फूलों पर दम करे। यह अमल पढ़कर २८ बार दम करे। इसके बाद इन फूलों को शहर में किसी की कब्र पर चढ़ाये यहाँ तक

कि २२ दिन बीत जायें तो गुलाब की पत्तियों के अर्क और चमेली के फूलों की बन्द कलियों पर बुद्ध के दिन पाँच दिन तक हर रोज २१ बार वही अमल करे। तीन दिन के बाद कली खिल जाने के बाद गुलाब का अर्क फूलों पर छिड़क कर हार बना ले। हार बनाते समय महबूब का नाम लेते जाये। हार तैयार होने पर महवूबा के गले में डाले वह तुम्हारी मुहब्बत में बेकरार होकर तुम्हारे यहाँ चली आयेगी और फिर तुम्हारे घर में उम्र भर न आयेगी।

मुहब्बत का तिलस्म

नौचन्दी जुमेरात को जंगल में जाये और एक उल्लू पकड़ कर लाये। फिर उसकी चोटी के बाल काट ले और उन्हें असली घी मिठाई में मिलाकर महबूब को खिलायें। इससे सारी उम्र महवूब तुम्हारी सेवा में रहेगी।

बिगड़ी बात बनाने के लिये

यदि किसी व्यक्ति को कोई बात या काम बिगड़ जाये तो उसे साहस से काम लेना चाहिये। यदि साहस से काम न चले तो ऐसी सूरत में जरूरत से ज्यादा लाभ उठाना चाहिये यदि कोई जरूरी बात सर पर आ पड़ी हो तो चाहिये इस नक्श से तभी काम ले और आजमायें मामूली कामों में न आजमाना चाहिये। 'ला हवला व ला कुव्वा इल्ला बिल्लाहि०'

दुश्मनी के लिये

यदि आपकी किसी से बात बिगड़ गयी है अर्थात् दुश्मनी हो गयी वह भी ऐसी कि दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हों और आप बदला लेना चाहते हों। तो एक नीम्बू ले और सेही का काँटा ले। दोनों चीजों को ऐसे कुयें पर ले जायें। जो शहर से बाहर हो। वहाँ जाकर अपने पाँव लटका कर बैठ जाओ साथ ही यह भी आसमान की ओर मुँह करके पढ़ते जाओ।

'दुहाई हिन्दू मत पीर की दुहाई राजा जयपाल की'।

जब भी कोई तारा आसमान की ओर से टूटे तो तुरन्त काँटे को नीम्बू में अपने दुश्मन का नाम लेते हुए दाखिल कर दो और फिर घर वापस आ जाओ। वापस आते कुयें आवाजे आयेंगी। आप मुड़कर न देखें वर्ना जान का खतरा रहेगा जब तक आप इस काँटे का नीम्बू से बाहर न निकलेंगे, उस समय तक आपका दुश्मन सख्त तकलीफ का शिकार रहेगा काँटा निकालेंगे तो ठीक हो जायेगा।

हमजाद द्वारा मुहब्बत का अमल

यदि आपको किसी से मुहब्बत है और उसे अपने बस में करना चाहते हैं तो अपने हमजाद द्वारा बस में कर सकते हैं, जिसकी तरकीब यह है—

१. मकान जो पाक-साफ हो उसमें दाखिल होकर चारों ओर से दरवाजे बन्द कर लें। कमरे का सारा सामान बाहर निकाल ले लोबान की धुनी आदि से कमरे को सुगंधित कर लें इसके बाद कमरे के बीच में बैठकर घी डालकर एक चिराग जलायें यह चिराग सुबह तक जलता रहना चाहिये। चिराग इस तरह रखे कि आपके सर का साया सामने वाली दीवार पर पड़ता रहे।

२. आप अपने सर के साये की ओर टिकटिकी बाँधे देखते रहें और सात इलायची दाने छोटे सामने रखें और जबान से या रहमान या रहीम की तस्बीह उन दोनों पर एक हजार बार पढ़े यह अमल रोजाना जुमेरात से ही शुरू करके जुमेरात को ही खत्म होगा। अन्तिम जुमेरात के दिन आपका हमजाद दोस्त आपके सामने आ खड़ा होगा आपसे पूछेगा—सरकार का हुक्म। आप पहले उससे वचन लें फिर जैसा चाहे हुक्म दें वह तुरन्त ही आपकी सेवा में हाजिर हो जायेगा। आप अपने महबूब को इलायची दाने खिलायें वह दाने खाते ही बेकरार हो जायेगा और हमेशा मुहब्बत करेगा।

बेशर्मी को दूर करने के लिये

यदि किसी की पत्नी बेशर्म हो अर्थात् उसमें लोक-लज्जा न हो और उसका पति चाहे कि उसकी पत्नी गैरतमन्द और शर्मदार बन जाये तो ऐसे लोगों के लिये यह नक्श बड़ा लाभकारी है। नक्श यह है—

'ला इलाहा इल्लल्लाहु
ला इलाहा इल्लल्लाहु
ला इलाहा इल्लल्लाहु
ला इलाहा इल्लल्लाहु

इस नक्श को काली सियाही से लिखे इसका तावीज बनाकर २७ दिन तक बराबर एक हजार बार दरूद शरीफ पढ़े। इस नक्श को सुगंधित करके के बा ताँबे के तावीज में बन्द करके अपनी बीवी के गले में डाल दे इन्शाअल्लाह गर्दन में तावीज पड़ते ही वह औरत शर्मदार बन जायेगी और अपने पति के अलावा किसी और तरफ न देखेगी।

खो गये रिश्तेदारों को मालूम करना

यदि तुम्हारा दोस्त गुम हो गया है और कोशिश के बावजूद किसी तरह उसका पता न लग रहा हो तो आपको चाहिये कि इस नक्श को काम में लाये। खुदा ने चाहा तो आप अपने मकसद में कामयाब होंगे और खोये हुए लोगों का पता चल जायेगा। इस नक्श को लिखकर अपने सिरहाने रख लो और खो जाने का धन निगाहों में लाकर इस अमल को पढ़ना शुरू कर दो।

'या हबीबु या अजीसु या अखिय्यु'

एक हजार बार इस इस्म को पढ़ो एक हफ्ता लगातार पढ़ने से इन्शाअल्लाह उसी हफ्ते के दौरान आमिल का खोया हुआ सपने में नजर आयेगा और साथ ही वह स्थान भी जहाँ गुम हुआ है, आप स्वयं ही उसे जाकर ले आयें। वे नक्श बड़ा कामयाब है।

मुहब्बत के लिए

किसी न किसी तरीके से महबूब को सड़क पर ले जाओ ऐसी जगह जहाँ पाँव के निशान अच्छी तरह बन जाये। किसी दोस्त या अपने साथी को पीछे कर देना चाहिये इस जगह उसको समझा देना चाहिये कि उसके दाँयें पाँव के निशान को काट कर उसकी खाक उठाकर घर ले जाओ और किसी कुंवारी लड़की के हाथ का काता हुआ सूत को ७ गज लम्बा हो और उसे मंगल के दिन जलाकर खाक कर लो उसकी खाक और महवूव के पांव के नीचे की खाक दोनों को मिलाकर सात दिन तक उसकी धूप की बत्ती बनाकर बराबर धूनी देते रहो। आठवें दिन उसकी खाक की एक चुटकी अपनी महवूबा के सर पर डाल दो। खाक बालों में पड़ते ही वह आपकी मुहब्बत में दीवानी हो जायेगी।

अपने महबूब के दोनों हाथों की दसों उंगलियों के नाखून लेकर आठ दिन की अवधि तक एक डिबिया में बन्द करके मरघट में दफन कर दो। नवें दिन मरघट पर जाकर इस डिबिया पर यह पढ़ो—

'काली काली महा काली महाकाली'।

४१ दिन तक एक हजार बार रात के १२ बजे के बाद पढ़ो। जब यह अमल करने बैठो तो अपने आस पास चाक से एक दायरा भी जरूर बना लो। अमल के दौरान आपको डरावनी सूरतें नजर आयेंगी तो डरने और भयभीत होने की कोई जरूरत नहीं बल्कि निडर होकर अमल पढ़ने की जरूरत है। जब ४० दिन गुजर जायें, तो इन नाखूनों को जलाकर दरिया में बहा दो, फिर देखो की वह आपके मुहब्बत में बेकरार होती है।

चूड़ियों द्वारा मुहब्बत

यदि आपको किसी से मुहब्बत है और आपको कामयाबी हासिल नहीं होती है तो आपको चाहिये कि जिस तरह भी संभव हो सके अपने महबूब के हाथों की एक चूड़ी हासिल कर ले। जब इस कोशिश में कामयाब हो जायें तो इन चूड़ियों को रात के १२ बजे दहकते हुए कोयलों पर रखकर रात के समय एक हजार एक सौ २१ बार यह पढ़े—**'अल इश्क अल इश्क'** २७ दिन तक इस अमल को बराबर पढ़ते रहो अवधि खत्म होते ही इन दोनों चूड़ियों को रेशम के सुर्ख रंग के धागे में बाँधकर केले के जड़ में दफन कर दो लेकिन इस तरह कि कोई यह काम करते हुए न देखे

और न कोई उसमें-से निकाले। फिर इन चूड़ियों को उस जगह से निकाल कर घर में ले आये तो महबूब फिर अपनी असली हालत पर आ जायेगी।

गुलाब के फूल का अमल

यदि तुम्हें गुलाब के फूल पर शब कद्र को दस हजार बार सूर:इख्लास (पारा-३०) पढ़े और पढ़ने के बाद फूल पर दम कर दे तो खुदा की कुदरत से उस फूल में यह असर होगा कि उस फूल की खुश्बू जो एक बार सूंघेगा वह आमिल की मुहब्बत में अवश्य गिरफ्तार हो जायेगा।

जब इस फूल की खुश्बू खत्म हो जाये तो फिर इस मुबारक रात का इन्तजार करो लगभग एक सात तो जरूर ही रहता है। कभी-कभी इससे भी अधिक समय लगता है।

अजीबो गरीब टोटका

यदि काली बिल्ली व सफेद कुत्ते की जवान काटकर इनमें सुराख करके दोनों को एक धागे में पिरो दे और फिर बुधवार के दिन इस पर सफेदा छिड़क कर किसी गाँव के धान के खेत में दफन कर दे तो आपका दिल जिससे भी मुहब्बत करेगा, जब तक कुत्ते व बिल्ली की जबान उस खेत में दफन रहेगी मुहव्वत ख्त्म न होगी।

यदि उन्हें वहाँ से निकाल कर फेंक दिया जाये तो ऐसी अवस्था में महबूब के दिल में मुहब्बत कम होती जायेगी और वह अपनी हालत पर आ जायेगा। यदि दो व्यक्तियों के बीच दुश्मनी पैदा कराने का विचार हो तो दोनों जवानों के ४४ टुकड़े कर दिये जायें, फिर इन्हें एक जगह से अलग-अलग एक-एक फीट की दूरी पर गाड़ दें, फिर तमाशा देखें। यह मुमकिन ही नहीं कि इन दोनों में झगड़ा न हो।

आँखों में चुम्बकीय चमक

यदि कोई हर रोज अपनी निगाह जमाने का अभ्यास शुरू कर दे तो उसकी आँखों में बहुत जल्द चुम्बकीय चमक पैदा हो जायेगी और वह अपनी इस ताकत से जो भी काम लेना चाहे आसानी से ले सकेगा उसके एक इशारे पर लोगों के सर झुक जायेंगे। आँखों में चुम्बकीय ताकत पैदा करने का तरीका यह है।

हर रोज चिराग के सामने बैठकर उसकी रोशनी से अपनी पलक झपकायें बिना निगाह का मुकाबला करते रहो दूसरे दिन इससे भी अधिक बड़ी अपने पास रखो और उसके द्वारा रोज एक मिनट बढ़ाते जाओ। जब आप पूरे एक घण्टे तक अपनी पलक झपकायें बिना चिराग की ओर देखते रहने में कामयाब हो जाओगे तो समझ लो काम हो गया। शुरू-शुरू में आँखों में तकलीफ होगी बाद में वह जाती रहेगी।

इसके बाद आप अपनी आँखों से स्वयं देख लें आप को स्वयं मालूम हो जायेगा।

दोस्त बनाने के लिए

यदि आप किसी को अपना दोस्त बनाना चाहते हैं जो आपकी मुहब्बत में हमेशा दीवाना रहे तो आप यह नक्श बनाकर अपने पास रखें। नक्श यह है—

अ-०५-७४७-२७ हुब्ब १२०७

फलां बिना फलां हुब्ब अला फलां बिन फलां

तरीका–इसे लिखने की तरकीब यह है कि जुमे के दिन गुस्ल करके अच्छे कपड़े पहने और गुलाब का इत्र लगायें, फिर जुमे की नमाज अदा करके यह नक्श सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर हर समय अपने पास रखे। इन्शा अल्लाह जब आप अपने महबूब के सामने होंगे तो वह आपसे मुहब्बत की बातें करने लगेगा और आपका दोस्त बना रहेगा।

यदि रात में २१ बार मीठी चीज के ऊपर पढ़कर महबूब को खिला दें, तो दिल व जान से आशिक हो जाये। यदि शनिवार की रात की फूल के ऊपर ५० बार पढ़कर महबूबा को सुंघा दें, तो बुलबुल की तरह चला आये। यदि रविवार की रात को सात दाने पीपल के दानों पर सात बार पढ़कर आग में डाले तो महबूब परवाने की तरह चला आयें। यदि लोग के ऊपर २५ बार पढ़कर दम करे और अपने महबूब को खिलाये तो गुलाम हो जायें।

यदि पानी पर ४० बार पढ़कर दम करे और अपना मुँह उस पानी से धोकर अपने महबूब के पास जाये तो उसे अपना आशिक बना ले। यदि सुरमें पर इसको छः बार पढ़कर दम करे और वह सुरमा आँखों में लगाकर महबूब के पास जाये तो वह देखते ही दीवाना हो जाये।

यदि मोम के ऊपर एक सौ ११ बार पढ़े और उस मोम को आग में डाले तो मोम की तरह नर्म महबूव का दिल हो जाये। यदि शक्कर या गुड़ पर सौ बार पढ़कर इस दुआ का दम करे और महबूबा को खिला दे तो उसे अपना गुलाम पायें यदि कंघी के ऊपर एक हजार बार पढ़कर उस पर दम करे और यह कंघी महबूब अपने सर में फिराये तो तालिब का वह आशिक हो जायेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अल्लाहुम्मा या मुसखखरनी मन फिस्समावाति वलर्जा फलाना अल्लाहुम्मा सबत लहु फजुल्लहुबी अल्लाहुम्मा इरहम वक्रबमहलती अला अमान फी कलबी व ज-अ-लहु अला रिजकुना मुहिब्बन अलल महबूब छ्बा काना हब्बतन बिहक्क या अल्लाहु या रहमान या रहीम बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन।

अमल

मुहब्बत के लिए ४० बार मिठाई पर दम करे और मतलूब को खिला दे वह दीवाना व गुलाम हो जायेगा।

अजमत अलयकुम या माअ अर्वाह व साहिबुशर्रि वल वसवासिल खननास जुनूद इबलीस खातम सुलेमान बिन दाउद आलौहिस्सलाम व बिहक्क हारुत व मारुत हुवा इल्लाह जिकरुल लिल आजमीन० फलां अला हुब्ब फलां बिन फलां दाइमन अबदन।

मगर चाहिये कि पहले जकात इस तरह दे कि रविवार से शुरू करे और ११ बार लिखकर दरिया में डाले आटे में गोली बनाकर। इस तरह सात दिन तक करे यदि माशूक हजार कोस पर होगा तो हाजिर होगा।

जो किसी को आशिक बनाना चाहे जुमे के दिन इस अमल को शुरू करे ४० दिन तक ४० बार पढ़े पढ़ते समय महबूब का ध्यान रखे मानों वह सामने मौजूद है। यह अमल मुहब्बत के लिए काम का है। नीयत सही होना चाहिये। इन्शाअल्लाह जल्द कामयाबी होगी। गोश्त अण्डा मछली से बचा रहे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इलाही बिहुरमत मकीईल व जिबरील व इसराफील व तौराता मूसा व इंजील ईशा व फुरकान मुहम्मद सल्ल०

सूर इख्लास अर्थात् कुल शरीफ को ४१ बार बिस्मिल्लाह के साथ शुरू व बाद में दरूद शरीफ पढ़कर मीठी चीज पर दम करके महबूब को खिलायें। पढ़ते समय मतलूब की कल्पना दिल में रखे। इन्शाअल्लाह मतलूब दीवाना हो जायेगा।

जो चाहे कि फ्लां मेरा हो जाये तो सात लोहे की कीले लाये हर कील पर सूरः यासीन मुहव्बत की नीयत से पढ़े और दम करे और कहे कि—शोखतम दिल व जान फ्लां बिन फ्लां नाम मतलूब का और बजाये बिन फलां के नाम उसकी माँ का ले और इन कीलों को चूल्हे में गाड़ दे और आग में जला दे जब वे कीले गर्म होंगी तो मतलूब दीवाना होकर आ जायेगा।

जो चाहे कि किसी को अपनी मुहब्बत का शिकार बनाये तो इस आयत को १४ बार जुमे की रात पढ़े और मिठाई या मेवे पर पढ़े। जो चीज मतलूब को पसन्द हो उस पर दम करके खिलाये। जो खायेगा वह आशिक हो जायेगा।

दूसरी तरकीब यह है कि हर दिन ४० बार पढ़कर दम करके खिला दे। वह आयत यह है—

युहिब्बू नहुम कहुबिल्लाहि वल्लजीना आमनू अशददा हुब्बल लिल्लाहि०

रोगों की चिकित्सा

मिर्गी के लिए नीचे लिखी आयत लिखकर गले में डाले—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० रब्बि अन्नी मस्सनियश शयतानि बिनुस बिव व अजानिब० रब्बि अन्नी मस्सनियज्जुर्रु व अन्ता अरहमुर्राहिमीना० रब्बि आऊजुबिका मि ह-म-जातिश्शयतानि व आऊजुबिका रब्बि अय यह जरुनी'०

आयतल कुर्सी ११ बार पढ़कर दम करने से लाभ हो जाता है।

फाजिल व लक्वा के लिए–रोजाना रात को सोते समय यह आयत पढ़े तो इस रोग से बचा रहे—

'इन्ना रब्बकुमुल्लाहुल्लजी ख-ल-कस्समावाति वल अर्जा फी सित्ताति अय्यामिन सुम्मस्तवा अल्ल आर्शि युगशिल्लयलन्नहारा यतलबुहू हसीसव वशशमसा वल क-म-रा बन्नुजूमा मुसख्खरातिन बिअमरिहि० अलालहुल खलकु वल अमरु० तबारकल्लाहु रब्बुल आलमीना०

सूरःहश्र की अन्तिम आयतें

हुवल्लाहुल्लजी ला इलाहा इल्लाहुवा व हुवल अजीजुल हकीमु०

जम जम के पानी से धोकर २१ दिन तक पिलायें। आराम हो जायेगा।

गंज दूर करने के लिए–यह आयत सात बार पहले व आखिर में दरूद शरीफ सात बार पढ़कर थथकारो। २१ या ४० दिन तक करके इन्शाअल्लाह आराम हो जायेगा।

व नुनज्जिलु मिनलकुरआनि हुवा शिफाउव व रहमतुल लिल मोमिनीना०

मानसिक शक्ति के लिए–इस आयत को सुबह की नमाज के बाद ४१ दिन तक २१ बार पानी पर दम करके पिलाये फायदा होगा।

रब्बिश्रहली सदरी० यस्सिरली अमरी० वहलुल अकदतम मिल्लिसानी० यफकहु कवली०

मिर्गी के लिए–सफेद मुर्गे के खून से यह आयत कागज पर लिखकर रोगी के गले में डाले और मुर्गे को पका कर नेक लोगों को खिलाये। समस्त वलियों को उसका सवाब पहुँचाये। आयत यह है—

फ-स-यकफी कहुमुल्लाहु व हुवस्समीउल अलीमु०

आँखों की बीमारी–जो कोई इन अक्षरों को नोचन्दी हफ्ते में लिखकर धोकर पिये तो साल भर तक आँखों की बीमारी न हो।

अलिफलाम मीम, अलिफलाम मीम साद अलिमलाम रा, काफ हा या ऐन साद ताहा, ता सीन मीम यासीन, साद काफ नून।

आँखों में तकलीफ हो, इन आयतों को लिखकर आँखों पर बाँधे अल्लाह ने चाहा तो तकलीफ दूर हो जायेगी।

'इज हबू पिकमीसी हाजा फअल कवहू अला वजहि अबी याति बसीरन० फ-क-शफना अन्का गिताअका फ-ब-स-रुकलयवम हदीदुन०

और जब सुरमा लगाये तो इन आयतों को तीन बार पढ़कर दम करके लगाये।

इन आयतों को रोजाना सुबह तीन बार पढ़कर आँखों पर दम कर लिया करे। तो आँखों में रोशनी और आँखों की बीमारी से बचा रहे आयत यह है—

अल्लाहु नुरुस्समावति वलअर्जि० म-स-लु नूरिहि कमिशकाति से बिगयरि हिसाब तक (पारा-१८ रुकू १०)

दाढ़ के दर्द के लिए–लिकुल्लि नबइम मुस्तकर्रुववसवफा तअलमूना० (पारा-७ रुक्र-१३)

इस आयत को लिखकर दाढ़ के नीचे दबाए आराम हो जायेगी।

जिसकी दाढ़ में दर्द हो उसे कहा कि वह अपने दाँयें हाथ की शहादत की उंगली से उस दाढ़ को पकड़ ले, जिसमें दर्द है और बात करते हुए उसे न छोड़े। इसके बाद विस्मिल्लाह सूर: फातिहा के साथ सात बार पढ़ो और पूछो कि तेरी माँ का क्या नाम है, फिर जब वह नाम बता दे तो फिर सूर: फातिहा व बिस्मिल्लाह व सूर: फातिहा ७ बार पढ़ो फिर दम करो और कहो कि अब लेट जाये या सो जाये। इन्शाअल्लाह आराम होगा।

दर्द नाश प्रयोग

विभिन्न प्रकार के दर्दों के लिए रमजान के आखिरी जुमे को यह आयत लिखकर रख ले और समय पड़ने पर काम में लावे—

अलम तरा इला रब्बिका कयफा मददज्जिल्ला व लव शाआ ल-ज-ल-लहु साकिनन० सुम्मा जअलनश्शमसा अलयहि दलीलन० सुम्मा कबजनाहु इलयना कबजन यसीरन०

यदि इस आयत को लिखकर जिगर के दर्द या गुर्दे के दर्द के जगह बाँधे तो दर्द जाता रहेगा।

अलिफलाम मीम-अलिफ लाममीम साद-ताहा-ता सीन मीम' अरसलनाइल्ला मुबाश्शिरव व नजीरन०

पैदाइश के समय का दर्द–यदि किसी औरत को पैदाइश के समय दर्द हो यह आयत लिखकर पाक कपड़े में बाँध कर बांयी रान में बाँधे इन्शाअल्लाह बच्चा आसानी से पैदा होगा। आयत यह है—

व अलकत मा फीहा व-त-खल्लत० व अजिनत लिरब्बिहा व हुककत अहय्य अलशव्वा हुया०

छाती का दर्द–यदि किसी औरत की छाती में दर्द हो तो इन कलिमात को मिट्टी पर दम करके छाती पर मले। दर्द जाता रहेगा।

इन्नी मता सुरखी दोश वाली बिही व अलसन कायी अस्ब दिन आसामा दिन आसविलास'

जिन्न का अमल

जिन्न की तस्वीर के लिये ये आयतें बड़ी असर वाली हैं। चाहिये कि एक खाली मकान में हाजिर होकर अूद जलाये और अपने गिर्द एक रेखा खींचे और इन आयतों को सच्चे दिल से सात बार पढ़े। इसके बाद इनको अल्लाह की सौगंध दे, जिन्न फौरन हाजिर होगा और तावे अदारी करेगा। यह अमल हर रात लगातार करे। हर तरह का परहेज जमाली व जलाली करे और दिल मजबूत रखे और न डरे, इन्शाअल्लाह मतलब पूरा होगा।

वयलुन वलिकुल्ली इफाकिन अलीम यसमअु आया तुल्लाहि तुतला अलैहि लहु लहुम मुशीर० काना इल्मुन मिन आयातिना शयानल हाजा हा हुजुवन लहुम यसमअुहा फबश्शिरहु बि अजाबिन अलीम० व वा इलै हुन लहुम अजाबुन मुर्हीन० मिन वराइहिम जहन्नम वला युन्सा अन्हुम मा लैसा शयअन वला सददू नहजा व मिन इनि अलैहि अवलियाई व लहुम अजाबुन अजीम०

जिन्न व आसेब को भगाना

जिस किसी को जिन्न व आसेब का असर हो या चुड़ैल व खबीस सवार हो उसके वास्ते यह अजीमत तीन बार पढ़कर पानी के ऊपर दम करके उसे पिला दे। यदि न पिये तो उसके मुँह पर छींटे मारे यहाँ तक कि वह बोलेगा और जल जायेगा और यदि न मानता हो तो इस दुआ का फलाता करे और जलाये और उसके सामने रखे कि उसे देखे और यदि न भी देखे तो फलीता जलाकर हाथ में लेर उसकी नाक में धुनी देवे तो यदि जिन्न चुड़ैल का असर होगा जल जायेगा भाग जायेगा। वह अजीमत यह है—

अजमत अलैकुत बिरब्ब जिबरील व इसराफील व इजराईल असखनल्लजी ज-अ-लल अर्शि अजमतु अलैकुम बिल्लजी अजाई इजहब लहु ईसा बिन मरयम वस्सयदिना बिरुहिल कुदुस अजमतु अलैकुम सुलेमान बिन दाऊद अलैहि० अल्लजी सख्खजी सख्ख-र-लहुर्रि याह वल जिन्नी वश्शैताना रुरीआ०

नोट—जिस रोगन में यह फलीता जलाया जाये, वह रोगन पाक और रोन कड़वा हो। यदि जादू भी होगा तो इन्शाअल्लाह दफअ होगा।

यदि किसी मर्द या बच्चे पर या औरत पर आसेब का असर हो जाये तो उसके कान में सात बार इस आयत पढ़कर छींक दे इन्शाअल्लाह आसेब का खतरा जाता रहेगा। आयत मुबारक यह है—

व ल-कद फतन्ना सुलैमानाव अलकैना अला कुर्सिय्यिहि ह-स-दन अस्सराताब०

दफअ आसेब का अमल

वास्ते दफअ आसेब व देव परी के लिए आयत मुबारक को पढ़कर पानी पर दम करे और उस पानी को आसेब वाले पर छिड़क फौरन असरात आसेब दफउ होंगे और मरीज अच्छा हो जायेगा। आयत यह है—

व इजा कर अनल कुरआन ज अलना बैनकुम व बैयनल्लजीना ला यूसिलूना बिलआखिरति हिजा बन सतूरा व ज अलना अला कुलूबिहिम इकबतन तन यफकहूहू फी इजा लहुम वकरन वइजा जकरता रब्बुका फिल कुरआन व जद्दहु व लव अला अदबारि हिम नुफूरा०

दफअ उम्मुसुबियान के लिए

इस आसत को मुश्क व जाफरान से सूरज निकलने से पहले लिखे और चाँदी के तावीज में बन्द करके बच्चे के गले में डाले। वह बच्चा शैतान के शर व देव परी आसेब से बचेगा।

अलिफलाममीम० अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल कय्युम नज्ज-ला अलैका बिलहक्कि मुसददिकल लिमा बैना यदैहि व अन्जलातवराता वल इन्जीला मिन कब्ली हुदल लिन्नासि व उन्जिल्ल फुरकान०

नाफ की तकलीफ के दफन के लिए

अक्सर लोगों को नाफ टल जाती है। शुरू-शुरू में यह मर्ज कम होता है लेकिन अगर गौर न किया जाये तो फिर तकलीफ सारी उम्र के लिए हो जाती है और मरीज को बेहद तकलीफ होती है। खाने-पीने और चलने फिरने में भी परेशानी पैदा हो जाती है। यदि खुदा ना खास्ता तकलीफ किसी को हो जाये तो यह अमल करे। तरकीब इस अमल की यह है कि पहले इस अमल की जकात देनी चाहिये। जकात का तरीका यह है कि सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण के वक्त एक सौ २१ बार यह अमल पढ़े फिर आप इसके आमिल हो जायेंगे, फिर आप जिस आदमी की नाफ गयी हो तो २१ बार यह अमल पढ़कर आमिल अपने पेट पर हाथ फेरे जिसकी नाफ गयी होगी फौरन आराम होगा।

अपने पेट पर हाथ फेरते वक्त मरीज का नाम लेना चाहिये। फला की नाफ ठीक हो जाये। मरीज का सामने होना जरूरी नहीं सिर्फ नाम की जरूरत है। अगर एक बार नाफ जगह पर न आये तो थोड़ी देर के लिए खामोश हो जाओ। इसके बाद दोबारा २१ बार पढ़ो और मरीज का नाम लेकर अपने पेट पर हाथ फेरो। इन्शाअल्लाह उसी वक्त मरीज को आराम हो जायेगा। अमल शरीफ यह है—

ला इला कोट अल्लाह को खाई फलाने का नाफ गोला ठिकाना ला हजरत अली की चौकी मुहम्मद मुस्तुफा की दुहाई।

फलाने का जगह मरीज का नाम लो। इस अमल को हिन्दू-मुस्लिम सब कर सकते हैं और शबे बराअत में भी इस अमल की जकात दी जा सकती है।

भूत आदि भगाना

यह मन्त्र कामिल बुजुर्ग का अतिया है बारहा आजमाइश में आया है, वे खता साबित हुआ है। इसकी तरकीब यह है कि बताशे के ऊपर तीन बार इस मन्त्र को पढ़कर दम करे और जिसे आसेब का खतरा हो उसे खिलाये। इन्शाअल्लाह दूर होगा मन्त्र यह है—

सय्यद बरहना वाला भोला नंगी पीठ पे लाना थोड़ा जो सय्यद के बाद या हों तवे कांगरु के लाहों जो सय्यद का चापों कान कांगरु को बुलाया करुं बयान संग की सवारी नाग का चाबुक मियां सय्यद बरहना कहां को जाते हम जाते कांगरु के बड़े वहाँ दंत जड़े सो साठ मारुं दंत करुं घमाम फरियाद पहुंचे, महता के पास महता पूछे कि वहाँ कितने कट आदर कितने सवार जिन्होंने मेरा आगरु घेरा आन कमर कुछ गले जंजीर अस्सी कोस का हिस्सा अदा करें सवा सेर का तोशा खायें तो खाये उसे दामाद के सर का राह का बाट का किया कराया अपना बगाना उपरी पराये जो कुछ हो उसके लिए निकाल के बाहर करो। तुम्हें अपनी आसा तर कमी की दूर दुहाई।

बिच्छू आदि भगाना

खुदा न खास्ता किसी को बिच्छू काट ले और जहर उसको वेताब करे तो यह अमल करे।

प्याले में पानी पाक व साफ लेकर तीन बार यह अमल पढ़कर दम करे और दम किये पानी को दे। इन्शाअल्लाह दर्द फौरन जाता रहेगा और जहर उतर जायेगा।

जान की हिफाजत के लिए

यह अमल जान की हिफाजत पर जाने के समय सात बार चारों ओर पढ़कर फूंके। अल्लाह आग व तलवार वगैरा से अपनी हिफाजत में रखेगा और तलवार किसी की उस पर काम न करेगी और जो चाहे तो आतिश घर में काम न करे। सफाल के टुकड़े पर सात बार इसको पढ़कर आग के बीच डाले कुछ असर न करे और जिस जगह जाये अपने ऊपर सात बार दम करके जाये। किसी तरह का कोई नुकसान न होगा वह इबारत यह है—

बन धार बन धार बांधू लोहा अगन सर ताब तजारी किया कराया भेजा या बाँधू दम दम जिन्दा शाह मदार

नोट—इसको जकात यह है कि चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण के समय इसे एक सौ बार पढ़ लिया करे।

सांप के जहर की शान्ति

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का लाहना निरमा बसे समुद्र तीर पन्ख पसारी बस हरे नरसल करे सर पर जो नकरे व दुहाई अहया मेनरी की बिहक्क अशहदु अन्लाइलाहा इल्लल्लाहु सात बार पढ़े और नमक पर दम करे और जिसको सांप ने काटा हो वह इस नमक का खाए। इन्शाअल्लाह सेहत होगी।

और बिच्छू के वास्ते भी सात बार दम पढ़ दम करे, जिस जगह को यदि असर उसके पैदा हो हाथ उस जगह पर रखकर नीचे को उतार दे और वहाँ से जब कि नीचे उतरे तो उस जगह पर हाथ रखकर नीचे को उतारे इन्शाअल्लाह सांप का जहर उतर जायेगा।

बिच्छू के काटे के लिए

यह अमल बिच्छू के जहर को दूर करने के लिए बड़ा मुजर्रब है चाहिये कि इस अफसू को पढ़ता जाये और हाथ या कपड़ा से उतारता जाये जब तक दर्द बिल्कुल खत्म न हो जाये। अमल जारी रखे अफसूं यह है—

खीर की पत्ती मूंझ के बान उतरने बिच्छू तुझे ख्वाजा मुओनुद्दीन चिश्ती की आन।

तिब्बी चुटकुले

(१) पाँच बिच्छू पकड़कर एक शीशी में डालकर ऊपर से एक छटांक तिल कातेल डाल कर उसका मुँह काक से बन्द कर दें। रात को यह शीशी चूल्हे के पास रख दिया करे और दिन में धूप में रखे। ४०दिन यह शीशी गर्मी में रहे यह तेल बवासीर के मस्सों और कंठमाला की गुलटियों के वास्ते अक्सीर है। रूई की फुरैरी बनाकर बवासीर के मस्सों और कण्ठ माला की गुलटियों पर लगाये। तेल को सावधानी से रखे यह एक तरह का जहर है।

(२) कुछ बच्चों के मुँह से लुआब यानी थूक या राल ज्यादा बहती है। इसे बिल्कुल बन्द करना चाहिये वर्ना खांसी हो जायेगी। इसे रोकना चाहिये इस वास्ते यह तिब्बी चुटकुला अक्सीर है।

गावजबाँ तीन माशा, छोटी इलायची व बड़ी इलायची ३-३ माशा, दारचीनी माशा, इन सबको कूट-छान कर एक-एक चुटकी सुबह व दोपहर-शाम से तीन बार बच्चे के मुँह में छिड़क दिया करे। मुँह से राल का बहना बन्द हो जायेगा।

आधाशीशी के दर्द के लिए

जिसके सर में दर्द हो यानी आधाशीशी का तो कपूर, काली मिर्च, मिसरी वजन में लेकर और पानी में हल करके एक बूँद नाक के नथने में टपका दें मगर तरफ दर्द को उसके खिलाफ सिम्त के नथने में टपका दे। यदि दर्द न जाये तो दोबारा एक

बूंद टपकायें खुदा ने चाहा तो दर्द जाता रहेगा। यदि कही मिसरी न मिले तो खांड मिलायें।

दाद, कब्ज के लिए

जिन लोगों को हमेशा कब्ज की शिकायत रहती हो तो रीवन्द, एलवा, मुसतगी ये तीनों चीजें बराबर वजन और हींग पाव हिस्सा मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना ले। सुबह-शाम खाने के बाद एक गोली खा लिया करे। दोनों समय एक-एक गोली सालहा साल का कब्ज जाता रहेगा। यदि कब्ज सख्त हो तो दोनों वक्त खाने के बाद दो-दो गोलियाँ खा लिया करे।

दूध की कमी के लिए

जिस औरत को दूध कम होता हो और बच्चा भूखा रहता हो तो एक तोला सतावर कूट छापन कर खा ले और ऊपर से एक पाव सौंफ की अर्क पी लिया करे खुदा ने चाहा तो दूध ज्यादा तादाद में आने लगेगा एक हफ्ता रोजाना खायें।

मुँह से खून आने के लिए

अगर किसी के मुँह से खून आता हो तो कीकर यानी बबूल की तीन चार तोला पत्तियाँ खरल करके उसमें तकरीबन एक पानी पानी डालकर और शकर में मीठा करके नहार मुँह खा लिया करे। खुदा ने चाहा तो उसे बीमारी से निजात मिलेगी।

सर की खुश्की के लिए

अगर किसी के सर में या बालों में खुश्की हो तो तिल का तेल एक पाव पानी में डालकर अच्छी तरह जोश दें। इसके बाद यह पानी सर पर अच्छी तरह मले। इससे सर की खुश्की दूर हो जायेगी और दिमाग ताजा रहेगा।

दिमाग की कमजोरी के लिए

जिस आदमी का दिमाग कमजोर हो तो सोते समय दालचीनी मुँह में डालकर चूसते रहा करे। दिमाग की ताकत के लिए खूब है। इस तरह कागज नारियल एक तोला और मिसरी या दाने की शकर एक तोला दोनों मिलाकर सुबह नहार मुँह खाने से दिमाग में ताकत आती है और भूलने की बीमारी कम हो जाती है।

पसली चलना

सर्दी के मौसम में अक्सर बच्चों की पसलियाँ चलने लगती हैं, जिसे डब्बा इतफाल कहते हैं। इससे बच्चे की बड़ी तकलीफ होती है। इसके लिए एलवा एक रत्ती माँ के दूध में मिलाकर बच्चे को पिला दें और यही एलवा बच्चे के सीने पर गर्म करके मले और सर्दी से महफूज रखें तो पसली को आराम मिल जाता है।

पेट के दर्द के लिए

कुछ लोगों के लिये यह मर्ज जान लेवा बन जाता है यानि नाफ की जगह

दर्द होता है ऐसे लोग यह नुस्खा इस्तेमाल करें—जीरा चार माशा, मुसतगी चार माशा, कलौंजी एक माशा तीनों दवायें बारीक पीस कर सफूफ बना लें एक माशा यह चूरन ताजा पानी के साथ खा लिया करे, इससे दर्द जाता रहेगा और पेट की बीमारी के वास्ते यह चूरन बड़ी मुफीद है।

जुएं मार कपड़ा

मूली का पानी तीन तोला लेकर उसमें एक तोला पारा डालकर थोड़ा खरल कर ले कि पारा उसमें अच्छी तरह मिल जाये, फिर उसमें जरूरत भर कपड़े का टुकड़ा भिगोकर सुखा लें। इस कपड़े को सर पर फिराने से जुएं मर जायेंगी और सर भी साफ हो जायेगा। सब पानी कपड़े में जज्ब करके सुखा लें और सुखा कर उस कपड़े को सर पर बार-बार फेरें।

पत्थरी के लिए

एक मूली लेकर उसे अन्दर से खाली कर लें और उसमें शलजम का बीज भर कर उसी मूली का बुरादा खाली करने के वास्ते निकाला था, मुँह उसी से बन्द करके उस मूली को अच्छी तरह गुले हिक्मत करके तनूर में रख दे। जब मूली पक जाये तब उसमें से शलजम का बीज निकाल कर दो माशा की तादाद में सुबह नहार मुँह करे तो मसाना की पत्थरी टुकड़े-टुकड़े होकर निकल जायेगी और पेशाब की बीमारी दूर हो जायेगी।

अफीम का नशा उतारने के लिए

यदि किसी ने जान बूझकर या गलती से अफीम अधिक खा ली है और उसका नशा बुरी तरह सवार है तो उसके नशे को उतारने के लिए इस पर अमल किया जाये। हींग चने के बराबर पानी में घोल कर पी लिया जाये। इसके पीते ही अफीम का नशा तुरन्त उतर जायेगा।

बाल उगाने के लिए

चुकन्दर की पत्तियों को कूट कर उसका पानी जिस जगह तीन चार दिन लगायें। वहाँ बाल उग आयेंगे यानि जिस जगह बाल न हो वहाँ बाल पैदा हो जायेंगे। गंजे के लिए यह बेहतरीन नुस्खा है।

बच्चे की पैदाइश के आसानी के लिए

अगर जमुर्रुद को तावीज के तौर पर हामला के गले में डाले तो औलाद आसानी से पैदा हो जाती है। अक्सर बार का यह आजमूदा है। जरूरत के वक्त अवश्य इस्तेमाल करे फायदा होगा।

चाँदी का जेवर साफ करने के लिए

आलुओं को छील कर उसके टुकड़े करके और पानी में अच्छी तरह डाल

कर अच्छी तरह जोश दे। इसके बाद चाँदी का जेवर उस पानी में डाल दो। चाँदी का जेवर या कोई भी चाँदी की चीज अच्छी तरह साफ हो जायेगी और उसका सारा मैल कट जायेगा।

पेट के कीड़ों के लिए

कुछ बच्चों के और बड़ों के भी पेट में एक प्रकार के कीड़े हो जाते हैं, जिन्हें कददू दाने कहते हैं और पेट में लम्बे-लम्बे कीड़े हो जाते हैं। इनको हमारी तरफ गेडवे कहते हैं, केचवे की तरह होते हैं। इस मर्ज में भूख बहुत कम लगती है और मरीज पीला होता चला जाता है।

कच्चा नारियल ले उसका सूखा छिलका उतार कर उस नारियल का पानी पी लें और उसका गुद्दा भी खा ले और जिस दिन इसे इस्तेमाल करें उस दिन नागा करें यानि कुछ और न खायें। पेट के सारे कीड़े मर कर निकल जायेंगे।

फोता का बड़ा हो जाना

उरद माश छिलका सहित चक्की में पीस कर आटा बना ले। उड़द की दाल भी काम कर सकती है। यह आटा एक तोला लेकर इसमें तीन माशा रसोत मिलाकर नीम गर्म फोते पर रात को सोते वक्त बाँधे सुबह खोल दिया करे। तीन दिन इलाज करने पर फोतों का वड़ा होना जाता रहेगा और फोता अपनी असली हालत पर आ जायेगा।

सफेद दाग के लिए

जिस किसी के जिस्म पर सफेद दाग हो तो उसे बर्स कहते हैं। नौशादर, तोतिया एक-एक माशा लेकर नीम्बू और लहसुन के अर्क में अच्छी तरह पीस कर यह मुरकब सुबह सफेद दागों पर लगायें। दाग खत्म हो जायेंगे और जिस्म की रंगत असली हालत पर आ जायेगी।

दाँत आसानी से निकले

जब बच्चों के दाँत निकलने का वक्त होता है तो उस वक्त उन्हें बड़ी तकलीफ होती है इस तकलीफ की वजह से कई बच्चे तो मर भी जाते हैं। इस तकलीफ से बच्चों को बचाने के लिए यह करना चाहिये।

हाथी दाँत का अगर कोई टुकड़ा मिल जाये तो उसे बच्चे के गले में डाल दे। ऐसा करने से दाँत आसानी से निकल जायेंगे और बच्चा तकलीफ से वचा रहेगा।

आँखों की रोशनी के लिए

सोते वक्त एक-एक सलाई खालिस शहद की दोनों आँखों में लगाया करे तो उससे आँखों की बहुत सी-बीमारियाँ दूर हो जाती है और रोशनी बड़ी हद तक कायम रहती है।

आधाशीशी के दर्द के लिए

जिसके आधे सर में दर्द होता हो तो नौशादर और बड़ी इलायची दोनों को पीसकर जिस तरफ दर्द हो उसी तरफ के नथनों में यह थोड़ा सफूफ डाल दे दर्द बन्द हो जायेगा। यह आजमूदा व तीर बहददुफ है, फौरन असर रहता है। जरूरत के वक्त इस्तेमाल करे।

पुरानी खाँसी के लिए

अलसी को खूब बारीक कूट कर उसमें शकर हस्बे जायका मिलाकर छः माशा रोजाना सोते वक्त खाया करे। पुरानी खाँसी का बेमिसाल इलाज यही है, इसके इस्तेमाल से बरसों की खाँसी जाती रहती है।

पेशाब रुकना

अगर किसी का इत्तिफाकिया पेशाब बन्द हो जाये **तो** जाफरान का एक तार लेकर पेशाव की नाली में रख दे तो पेशाब खुल कर **आ** जायेगा।

भूख हेतु

आम की गुठली का गुद्दा जिसमें हस्बे जायका नमक मिला हुआ हो यह कुदरत का अनमोल चूरन पेट की सैकड़ों वीमारियों का हैरत इलाज है। गिजा हजम हो जाती है और भूख ज्यादा लगती है।

जुयें मार

शरीफा मशहूर फल है, उसके वीच अगर औरत के सर में डालकर थोड़ी देर वाद सर को धोयें तो इससे सर के जुयें मर जाती है।

अफीम का जहर दूर करने के लिए

अगर किसी आदमी ने अफीम खायी है तो थोड़ी-सी हल्दी पीसकर और पानी में घोलकर मिला दो। इससे अफीम का जहर खत्म हो जायेगा।

बवासीर के लिए

छिपकली को सरसों के तेल में इतना जलाया जाये कि वह खाक हो जाये। फिर तेल को इतना घोटे कि वह मरहम की तरह हो जाये। तेल इसी मिकदार से हो। इस मरहम को बवासीर के मस्सों पर मला करे। एक हफ्ते में मस्से नापैद हो जायेंगे।

मुँह के जख्मों के लिए

अक्सर मुँह में जख्म हो जाते हैं। नमक-मिर्च खाने से तकलीफ होती है। **इसके** वासते धनिया और मसूर की ताल दोनों को सिरका में डालकर मुँह में रख कर **फेरे (हलक से न** उतारे) कुछ बार में मुँह के जख्म भर जायेंगे।

पेशाब की ज्यादती के लिए

जाड़े के दिनों में रात को पेशाब बार-बार आता है और इस वजह से बार-बार उठना पड़ता है। इसके लिए इस नुस्खे को इस्तेमाल करे।

सफेद तिल आठ तोला, मालकंगनी चार तोला दोनों को लेकर कूट कर बारीक कर लें। इस सूफफ को सोते समय पानी से खा लिया करे। इन्शाअल्लाह दो तीन दिन में ही इसका खास फायदा नजर आयेगा और बार-बार पेशाब की हाजत कभी न होगी।

दाँतों के दर्द के लिए

जिसके दाँत या दाढ़ में दर्द हो तो नीम के पत्तों को जोश देकर उस पानी से कुल्ली करे। एक दो बार कुल्ली करने से दर्द पूरी तरह जाता रहता है। नीम की अगर हरी पत्तियाँ न मिलें तो सूखे पत्तों ही को जोश देकर कुल्ली कर लें पानी नीम गर्म हो।

अफीम छोड़ने के लिए

जो आदमी का अफीम का आदी हो और उसकी लत से परेशान हो और अफीम की आदत छोड़ना चाहता हो तो वह भलावा और गुड़ और काले दोनों बराबर-बराबर लेकर इतना कूटे कि वह मोम की तरह हो जाये। अब जिस मिकदार में अफीम खाना हो उतनी ही बड़ी गोलियाँ बनाकर रख लें; अफीम का इस्तेमाल रोज कम करते जायें और यह गोली अफीम के साथ खा लें कोई तकलीफ न होगी। इसके इस्तेमाल से अफीम की आदत खत्म हो जायेगी।

हैज की दुरुस्तगी के लिए

जिन औरतों को महावारी के दिनों में खून कसरत से आता है, वे इस नुस्खे को इस्तेमाल करे उनकी यह शिकायत जाती रहेगी और खून मामूल के मुताबिक आता रहेगा।

संग जराहत दो माशा, गोंठा एक माशा, मायें खूना एक माशा तीनों चीजें बराबर-बराबर वजन में लेकर सफूफ बना लें। इस सफूफ को फांक कर ऊपरी से बकरी का एक पाव दूध पी लिया करे हैज की मुद्दत कम हो जायेगी!

हर किस्म के दर्द के लिए

आक के पेड़ के फूल और पत्ते एक सेर लेकर एक पाव रोपान तिल को इतना जलायें कि सब खाक काली हो जायेंगी फिर इसी तेल में सबको घोंटे लें।

बदन में जिस जगह दर्द हो इस तेल की मालिश करके ऊपर से पुरानी हुई या कोई कपड़ा लपेट दे यानि उसे हवा से बचायें इस तेल की मालिश से गठियाँ का दर्द भी जाता रहता है। एक हफ्ते तक मालिश करे।

बिच्छू के काटे का इलाज

फिटकरी सफेद छः माशा, पानी साफ चार तोला में डालकर एक शीशी में हिफाजत से रखें। यदि किसी को बिच्छू काटे तो जिस तरफ काटा हो उसके दूसरी तरफ आँख में दो बूँदे डाल दे दर्द जाता रहेगा। या लहसुन को कूटकर उसमें नमक मिलाकर जिस जगह डंक मारा हो वहाँ इसका लेप कर दें या इमली का बीज पत्थर पर घिस कर काटने की जगह पानी में मिलाकर लगाये।

शगुन वर्णन

यानि मुखतलिफ बातों या चीजों से शगून लेकर पेशीनगोई करना। अगरचें शगूनों, फाल गोई और पेशान गोई का कोई आदमी कितना ही इन्कारी हो फिर भी बहुत से लोग दुनिया में ऐसे निकलेंगे जो उनके साअद व नहस होने से इन्कार करें। क्योंकि उनकी आँखों ने अक्सर इन चीजों के असरात या सादिक होना देखा है। इसलिये नीचे दिये गये शगूनों को देखकर अपने बारे में सही यसा गलत का पता चलायें।

(१) अगर तुम्हारे सर की चोटी पर मामूल से ज्यादा लपक निकले तो दर्जात व बढ़े और इज्जत अफजाई की निशानी है और तुम किसी ऊँचे दर्जे पर पहुँचोगे।

(२) अगर तुम्हारे दिल पर सख्त उदासी छायी हुई हो और तबियत पर उदासी व दुख का साया हो और जिन्दादिली खत्म हो जाये तो जरूर तुम कोई खुशखबरी सुनोगे।

(३) अगर कंघी करते **वक्त तुम्हा**रे बाल कसरत से टूटे या झड़ें तो तुम पर कोई सख्त मुसीबत या आफत आयेगी।

(४) अगर तुम्हारी भौ फड़के तो तुमको किसी खुश कुन बात का नजारा होगा या कोई मुद्दत का बिछड़ा हुआ दोस्त मिलेगा किसी ऐसे आदमी से मेल होगा, जिससे मुद्दत से तुम्हारी रंजिश रही हो।

(५) अगर तुम्हारी उल्टी भौ फड़के तो तुम्हें किसी रंजीदा बात का नजारा होगा या तुम को किसी दोस्त की मुसीबत देखनी नसीब होगी या तुम्हारा आशिक या माशूक तुम्हारे रकीब की मुहब्बत का शिकार नजर आयेगा।

(६) अगर तुम्हारे उल्ट कान में करसनाहट हो तो कोई रंजीदगी वाली खबर सुनोगे।

(७) अगर नाक पड़ते तो तुम पर कोई आफत आयेगी।

(८) अगर तुम्हारे उल्ट कान में झनझनाहट हो तो कोई तुम्हारी गीबत करेगा।

(९) अगर तुम्हारे होंठ फड़के तो कोई आदमी हिकारत के अलफाज में तुम्हारा जिक्र करता है।

(१०) अगर गर्दन का पिछला हिस्सा फड़के तो तुम्हारी या किसी दोस्त की या रिश्तेदार की मौत की अलामत है।

(११) अगर सीधा शीना फड़के तो तुम पर कोई मुसीबत या आफत आयेगी।

(१२) अगर उल्टा शीना फड़के तो तुम पर कोई मुसीबत या आफत आयेगी।

(१३) अगर तुम्हारी सीधी कोहनी का जोड़ फड़के तो तुम कोई ऐसी खवर सुनोगे जिससे तुमको खुशी होगी।

(१४) अगर तुम्हारी उल्टी कोहनी का जोड़ फड़के तो तुम कोई ऐसी खबर सुनोगे जिससे तुमको रंज व मुसीबत व मायूसों का सामना करना पड़ेगा।

(१५) अगर सीधे हाथ की हथेली खुजलाये तो तुमको रुपये मिलेंगे।

(१६) अगर उल्टे हाथ की हथेली खुजलाये तो तुम पर जल्द कोई मुसीबत आयेगी और तुम को सख्त सजायें और रंज उठाना पड़ेगा।

(१७) अगर रीढ़ की हड्डी में खुजली पड़े तो तुमको किसी दूसरे का कर्ज अदा करना पड़ेगा।

(१८) अगर तुम्हारी कमर फड़के तो तुम को जल्द किसी दावत में बुलाया जायेगा जहाँ तुम को तरह-तरह के बेहतरीन खाने खाने में मिलेंगे।

(१९) अगर तुम्हारा पेट फड़के तो तुमको जल्द किसी दावत में बुलाया जायेगा।

(२०) अगर तुम्हारी रान में फड़क होने लगे तो तुम जरूर अपनी ख्वाबगाह तब्दील करोगे।

(२१) अगर तुम्हारे उल्टे घुटने में फड़क हो तो तुम जल्दी ही अपनी रविश बदलोगे लेकिन इसमें तुम को नफा न होगा बल्कि नुकसान कसीर होगा।

(२२) अगर तुम्हारे नलियों में फड़क हो तो तुमको एक लम्बी और सख्त आफत आयेगी।

(२३) अगर तुम्हारी टखनों में फड़क हो और तुम कंवारे हो तो बहुत जल्द तुम्हारी उससे शादी होगी, जिससे तुम प्यार करते हो और अगर तुम बयाहे हो तो तुम्हें खान्गी उमूर में फरागत व कुशादगी होगी।

(२४) अगर तुम्हारे सीधे तलवे में फड़क हो तो तुम सफर करोगे, जिससे तुम को खुशी हासिल होगी और तुम्हें नफा हासिल होगा।

(२५) अगर शाम को मगरिब में आसमान पर शफक फूटे तो मौसम खुशगवार और खुश्क रहेगा।

(२६) अगर शाम को मशिरक में शफक फूटे तो मौसम एक तरह का न रहेगा; बल्कि अदलता-बदलता रहेगा कभी एक तरह का तो कभी दूसरी तरह का।

(२७) अगर शाम को शफक जुनूब में फूटे तो बहुत जल्द बारिश होगी और धूप खूब खुलकर निकलेगी।

(२८) अगर शाम को शफक शिमाल से फूटे तो मौसम तूफानी व तेज रहेगा।

(२९) अगर मेहताब (चाँद) के चेहरे पर पतले बादल या हल्के बादल हो तो जल्द बारिश होगी।

(३०) अगर दोपहर के वक्त आफताब (सूरज) की किरणों में ज्यादा चमक हो जल्द बारिश होगी।

(३१) अगर गर्मी के मौसम में अबाबील जमीन के करीब-करीब उड़े तो जल्द बारिश होगी।

(३२) अगर बारिश के मौसम में मुर्गा जोर से अजान दे तो मौसम जल्द खुश्क हो जायेगा।

(३३) अगर धुवा धुएं कश में ऊपर को न चढ़े बल्कि उसमें जाकर नीचे को आने लगे तो समझ लो कि बारिश जल्द होगी।

(३४) अगर मौसम गर्मा में सुबह के वक्त कुहर ऊपर को चढ़े तो आसमान साफ रहेगा और अगर जमीन पर गिर पड़े तो तो बारिश होगी।

(३५) अगर चिड़ियाँ किसी खेत में या किसी झाड़ी के नीचे एक जगह छुप कर बैठी हों तो समझ लो खुश्क काली (कहत) आयेगी।

(३६) अगर कौवे तुम्हारे सर पर उड़ते हों और काँव-काँव करे तो बहुत जल्द बारिश होगी।

(३७) अगर तुम्हारा कुत्ता या बिल्ली बेचैन नजर आये और कभी उस कोने में जाये कभी उसमें मगर जल्द-जल्द तो जल्दी ही खराब व तूफानी मौसम आयेगा।

(३८) अगर बारिश के मौसम में घर की चीटी पर चिड़ियाँ बैठकर जोर-जोर से चर चर करे तो खुश्क मौसम जल्द आने की अलामत है।

(३९) अगर गर्मी के मौसम में आसमान साफ न हो बल्कि बादल घिरे रहे और हवा न चले तो जान लो कि तूफान आयेगा।

(४०) अगर आसमान पर सहाब साकिब हो या टूटे तो मौसम एक तरह का नहीं रहेगा बल्कि तूफान आने की शंका रहेगी।

(४१) अगर आफताब (सूरज) सुबह को निकले और उसमें सुर्खी हो और उससे किरणें निकलती हो तो आसमान साफ और खुश्क रहेगा।

(४२) अगर आफताब के चारों ओर सुर्ख हलके छिपते वक्त निकलते हो तो आसमान साफ रहेगा और मौसम ऐसा रहेगा कि पैदावार उसकी अच्छी होगी।

(४३) अगर चाँद निकलते ही सुर्ख रंग का हो तो तूफान आयेगा मौसम साफ होगा।

(४४) अगर सितारे जगमगाते निकले तो आसमान साफ रहेगा और मौसम पैदावार के लिये मुफीद रहेगा।

(४५) अगर कहकशां का रंग सुर्ख हो तो मौसम खराब होगा।

(४६) अगर सितारे धुंधले निकलें तो आसमान साफ रहेगा और मौसम एक तरह का नहीं रहेगा; बल्कि तूफान भी आ सकता है।

(४७) अगर सर्दी या खिजां के मौसम में सूरज के डूबते वक्त सूरज का रंग सुर्ख हो तो मौसम खराब होगा और जुनूब व मशिरफ से तेज व तुन्द हवा चलेगी।

(४८) अगर मौसम सरमां या खिजां में सूरज का रंग डूबते हुए सुर्ख हो तो मौसम खराब रहेगा और शिमाल व मगरिब से तेज हवायें चलेंगी।

(४९) अगर समुद्र में परिंदे झुंड बाँधकर किनारे की तरफ आयें या आते दिखायी दें, तो जोर का तूफान आयेगा और तेज हवा चलेगी।

(५०) अगर समुद्र के ऊपर परिंदे आराम से उड़ते हों और उनमें किसी तरह की हलचल न हो तो मौसम साफ रहेगा।

(५१) अगर खिजां के मौसम के शुरू में सीलानी जानवर झुंड बांधकर किसी तरफ को आते दिखाई दें, तो मौसम खराब रहेगा।

(५२) अगर पहाड़ी की चोटी पर सुबह के वक्त गहरे बादल छाए हों और दिन भी इसी तरह रहें तो बारिश होगी।

(५३) अगर पहाड़ी की चोटी पर सुबह के वक्त परिंदे उड़ते दिखाई दें, तो मौसम के बिगड़ जाने का खतरा है।

(५४) अगर पहाड़ की चोटी पर आसमान से सुर्खी-सी लकीर आती दिखाई दे तो बारिश न होगी इस मौसम में पैदावार को नुकसान होने का खतरा है।

(५५) अगर पहाड़ की चोटी पर सुबह के वक्त गहरा कोहरा चढ़ा हो और उसमें नमी हो तो बारिश हो सकती है।

(५६) कुहर ऊपर को चढ़े और सूरज की किरणों से भाप बन जाये तो आसमान के साफ रहने की उम्मीद की जा सकती है।

(५७) और अगर कुहर पहाड़ी की घाटी में उतरता मालूम हो तो बारिश का सिलसिला बहुत दिनों तक जारी रह सकता है।

(५८) यदि दो नीलकण्ठ मिले और दोनों उड़कर तुम्हारे सीधे हाथ की तरफ

को निकल जायें तो या तो जल्दी तुम्हारी शादी हो जायेगी या तुम्हारे किसी रिश्तेदार की।

(५९) अगर तुम कहीं जाते हो और रास्ते में नीलकण्ठ मिल जाये और उड़कर उल्टे हाथ की तरफ को निकल जाये तो यह बद शगूनी है।

(६०) लेकिन यदि सफर के दौरान नीलकण्ठ सीधे हाथ की तरफ निकल जाये तो यह शगून अच्छा है और नेकी व बदी दोनों को नुकसान नहीं पहुँचायेगा।

(६१) यदि रास्ते में दो नीलकण्ठ मिल जायें तो नफा होगा। अगर तुम कुंवारे हो तो शादी हो जायेगी या जायदाद और रुपया मिलेगा।

(६२) अगर कई नीलकण्ठ तुम्हें एक ही जगह बैंठे मिलें तो यह खुश किस्मती की अलामत है।

(६३) मई का महीना शादी-विवाह के लिए मनहूस है। इसलिए जहाँ तक हो सके इस महीनें में शादी-विवाह न करे।

(६४) अगर पहली मई को तुम काँटा लगाकर घूंघा पकड़ो और उसे अपने मुनाफों पर डाल दो तो साल भर तुम्हें नफा मिलता रहेगा।

(६५) अगर तुम किसी घूंघे को सलेट पर रख दो और वह चक्कर खाने लगे और उससे ऐसा हुरुफ बन जाये जो उस नाम का पहला हुरुफ होगा जिस नाप से तुम आगे चलकर मशहूर होंगे।

(६६) अगर कोई मर्द या औरत जीने पर चढ़ते वक्त बीच में जाकर ठोकर खाये तो उसकी शादी थोड़े ही दिनों बाद हो जायेगी लेकिन अगर चोटी पर जाकर ठोकर खाये तो बहुत जल्द हो जायेगी।

(६७) अगर बारात जाती हो रास्ते में मुर्दा मिल जाये तो बदकिस्मती की अलामत है और दुल्हन के लिए नहस है अगर बारात लौटते वक्त मुर्दा मिले दुल्हा के लिए बुरा शगून है।

(६८) अगर किसी का कुत्ता रात के वक्त वहुत ज्यादा भौंके और रोये तो जान लो कि उसके घर में कोई आदमी या तो जल्द बीमार पड़ेगा या मर जायेगा।

(६९) अगर चिराग की लो तेज और रोशन हो तो किसी बहुत दिनों के बिछड़े दोस्त से मुलाकात होगी।

(७०) अगर अंगीठी की नलियों पर जिनमें होकर राख नीचे निक जाती है धुवां ज्यादा कम जाये तो तुम्हारे घर में कोई नया मेहमान आयेगा।

(रोगों की घरेलू चिकित्सा)

गुर्दे का दर्द

१. मरीज कमर में रीढ़ की हड्डी को किसी एक तरफ गुर्दा के मकाम पर दर्द महसूस करता है। शोरह कल्मी, गन्धक आमला सार दोनों दवाओं को बराबर वजन में बारीक पीस कर मिला लें और हल्दी आग पर गर्म कर शीशी में अच्छी तरह वन्द करके रखें। एक ग्राम यह दवा ४० मिली लीटर मूली के पानी के साथ रोजाना दिन में दो बार मिलें।

२. रेवन्द चीनी, नौशादर, सुहागा, फिटकरी बराबर वजन बारीक चूर्ण बनाये डेढ़ ग्राम सफूफ ६० मिली लीटर पानी के साथ दिन में दो बार लें।

३. मोम कच्चा जरूरत के मुताबिक-मटर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली हल्के गर्म पानी के साथ दिन में दो बार लें।

४. काली मिर्च ५ अदद, अण्डे की जर्दी १ अदद, काली मिर्च का चूर्ण बना लें और इसको अण्डे की जर्दी में अच्छी तरह मिला लें और थोड़ी-सी हल्दी मिला लें। यह लेप कमर पर दर्द की जगह लगा लें।

५. कुलथी २५ ग्राम तीन चौथाई लीटर पानी में उबाल देकर छान लें। इस पानी को दिन में तीन चार बार लें।

६. मकई के भुट्टे के बाल २५ ग्राम आधा लीटर पानी में उबाल कर छान लें। इस पानी को दिन में तीन चार बार लें।

७. अर्क लीमूं १२ मिली लीटर, सुहागा २५० मिली ग्राम, नौशादर २५० मिली ग्राम, शोरा कल्मी २५० मिली ग्राम आखिर की तीन दवाओं को अर्क लीमू में मिलायें दर्द होने पर लें।

गुर्दे और मसाना की पत्थरी

इसमें शदीद और नाकाबिले बर्दाश्त दर्द होता है। इसके दौरे कभी जल्द-जल्द और कभी काफी देर से होते हैं। यह दर्द कमर से शुरू होकर कजरान फोतो से होता हुआ सुपारी (हश्फा) तक फैल जाता है। पेशाब मुश्किल से आता है। कभी पेशाब में खून मिला हुआ होता है।

१. खीरे के बीज ३ ग्राम, ककड़ी के बीज ३ ग्राम, खरबूज व बीज ६ ग्राम, गोखरू (छोटा) ४ ग्राम, कुलथी ४ ग्राम इन दवाओं को कूटकर १८० मिली लीटर पानी में उबाल देकर शक्कर से मीठा कर लें। दिन में दो बार लें।

२. कुलथी ६ ग्राम, मूली का रस २५ मिली लीटर कुल्थी को १२० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान लें और मूली का रस मिला लें। सुबह लें।

३. सरफोका १२ ग्राम १२० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान लें। सुबह लें।

बहुमूत्र

पेशाब बार-बार और कसरत से आना, भूख और प्यास की ज्यादती और कमजोरी जियाब्तीस की आम अलानात है। पेशाब और खून में शक्कर मौजूद होती है। जिस की फीसद मिकदार लेबारटरी के जरिये जांच कराके मालूम की जा सकती है।

१. जामुन की गुठली की गिरी ६० ग्राम खुश्क करके बारीक चूर्ण कर लें। ३ ग्राम चूर्ण पानी के साथ दिन में दो बार लें।

२. बिनौला की गिरी २ ग्राम, ७५० मिली लीटर पानी में इतना उबाले दे कि २५० मिली लीटर रह जाये फिर छान लें। दिन में दो बार लें।

३. फालसा की छाल १२ ग्राम, २५० मिली लीटर पानी में रातभर भिगोयें और सुबह को छान कर पी लें।

४. करेला को जरूरत के मुताबिक कुचल कर इसका रस निचोड़ लें। २५ मिली लीटर रस दिन में दो बार पी लें।

५. नीम की कोंपलें ६ ग्राम, ६० मिली ग्राम पानी में पीस कर छान लें। सुबह लें।

६. हूरह १ अदद (१) कुचल कर रस निकालें और सुबह व शाम पी लें (२) खुश्क ककूरह चूर्ण करके दिन में दो बार लें।

पेशाब का बार-बार आना

इसमें पेशाब बार-बार आता है, जिसे रोकना मुश्किल होता है।

१. जावित्री, शक्कर बराबर वजन लेकर बारीक चूर्ण करें, एक ग्राम दिन में दो बार लें।

२. जावित्री, नागरमोथा, कंदर, भंग के बीज बराबर वजन बारीक सफूफ बना लें। ३ ग्राम पानी के साथ दिन में दो बार लें।

३. काले तिल, अजवाइन, गुड़ बराबर वजन में मिला लें। पहली दो दवाओं को दरदरा चूर्ण बना लें और गुड़ में मिला लें।

४. दारचीनी जरूरत के मुताबिक बारीक चूर्ण बनाकर रख लें। एक ग्रमा पानी के साथ सोते वक्त लें।

५. गेरू, कुंदर बराबर वजन बारीक चूर्ण करें। २ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

पेशाब का रुक जाना

१. शोरह कल्मी २ ग्राम, जवाखार २ ग्राम, रेवन्द चीनी २ ग्राम, सौंफ २

ग्राम, शक्कर ८ ग्रमा पहली चार दवाओं को बारीक चूर्ण करके शक्कर में मिला लें। २ ग्राम पानी के साथ लें।

२. सौफ ४ ग्राम,· खरबूजे के बीज ४ ग्राम, खीरे के बीज ४ ग्राम, ककड़ी के बीज ३ ग्राम, गोखरू (छोटा) ४ ग्राम १२० मिली लीटर पानी में उबाले। छान लें और २ ग्राम शक्कर मिलाकर पी लें।

३. रीवन्द चीनी बजरूरत वजन चूर्ण करें ५०० मिली ग्राम पानी के साथ लें।

४. शोरा कल्मी ६ ग्राम, चूहे की मेंगनी १२ ग्राम पानी में पीसकर ले बना लें। पेडू पर दस मिनट तक बारी-बारी ठण्डे और गर्म पानी से धरें।

सोते वक्त पेशाब करना

१. पेशाव गैर इरादी तौर पर सोते में खारिज हो जाता है। यह आम तौर पर बच्चा में होता है। आमला का छिल्का १० ग्राम, जीरह सियाह १० ग्राम, शहद ६० ग्राम पहली दो दवाओं को बारीक चूर्ण बना लें और शहद मिला लें। ६ ग्राम सोते वक्त लें।

२. गुलनार, माइन (छोटी), गोंद बबूल, धनिया भुना हुआ, काले तिल, गुड़ बराबर वजन जरूरत मुताबिक पहली पाँच दवाओं को बारीक चूर्ण बना लें और उसके बराबर गुड़ मिला लें। ६ ग्राम सोते वक्त लें।

३. सिंघाड़ा खुश्क और शक्कर हम वजन सिंघाड़े का बारीक चूर्ण बनाकर शकर मिला लें। तरकीब इस्तेमाल ६ ग्राम दिन में दो वार लें।

४. अनार की ढाल जरूरत मुताबिक ३ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

५. (ये दवायें हकीमी दूकान में मिलेगी) १. कुशतए जमर्रद ५० मिली ग्राम, जवारिश जालीनूस ६ ग्राम में मिलाकर सोते वक्त लें। २. मअजून मासक अलबाहेल ६ ग्राम, सोते वक्त लें, ३. मअजून कुंदर ६ ग्राम सोते वक्त लें। काले तिल या तिल के लड्डू खाना भी फायदा करता है।

पेशाब में खून आना

पेशाब में खून आता है, जिसके साथ कभी दर्द और जलन भी होता है।

१. चाकसू ३ ग्राम, सन्दर सफेद का बुरादा ५ ग्राम बुरादा को १२० मिली लीटर पानी में भिगोकर छान लें और चाकसू का चूर्ण करे।

२. फालसा की छाल १२ ग्राम १२० मिली लीटर पानी में रात भर भिगोकर छान लें। सुबह लें।

३. जौ २५ ग्राम एक लीटर पानी में उबाल कर छान लें। इसकी तीन खुराके बनाकर दिन में तीन बार लें।

तैयार शुदा दवायें (ये हकीमी दूकान में मिलेगी)

(१) शर्बत वजूरी ३० मिली लीटर पानी के साथ सोते वक्त लें, (२) शर्बत अन्जबार ३० मिली लीटर पानी के साथ सोते वक्त लें, (३) कर्स कोहरबा २ कर्स पानी के साथ सोते वक्त लें, (४) कर्स गुलनार २ कर्स पानी के साथ सोते वक्त लें

हिदायत–गर्म और मशालेदार चीजों से परहेज करें।

सूजाक

१. पेशाब की नली में सूजन और जख्म होते हैं। पेशाब में जलन होती है और पीप आती है। राल सफेद १५ ग्राम, शक्कर १५ ग्राम तरकीब तैयार बारीक चूर्ण करें तरकीब इस्तेमाल २ ग्राम चूर्ण पानी के साथ दिन में दो बार लें।

२. कंबाब चीनी ४ ग्राम बारीक चूर्ण बनाकर एक प्याली में छिड़क दें और प्याली को एक कपड़े से ढंक कर रात भर ओस में रख दें और सुबह पी लें।

पेशाब की जलन

(१) धनिया, सन्दल सफेद का बुरादा, आमला शुख्क हर एक ६ ग्राम १२० मिली लीटर पानी में रात भर भिंगो कर सुबह छान लें और शक्कर से मीठा कर सुबह पी लें।

(२) खीरे के बीज, ककड़ी के बीज हर एक ६ ग्राम थोड़ा कुचल कर १२० मिली लीटर पानी में जोश दें और छान लें। सुबह लें।

(३) रेवन्द चीनी १० ग्राम बारीक चूर्ण बनाकर रख लें। ५०० मिली ग्राम, पानी के साथ दिन में दो बार लें।

(४) अण्डे की सफेदी १ अदद अण्डे की सफेदी की फेंट लें और एक प्याली हल्के गर्म दूध में मिलाकर सुबह पी लें।

वीर्य पतन

मनी का गैर इरादी तौर पर अक्सर खारिज होना जिस की वजह से कमर में दर्द और कमजोरी होती है।

(१) सपिसतान (लसूढ़ा) की कोंपलें ३० ग्राम, शक्कर ६ ग्राम कोंपलों को छोटे टुकड़े करके १८० मिली लीटर पानी में रात भर भिगोयें। सुबह लें।

(२) मूसली सेंभल ६० ग्राम, शक्कर ६० ग्राम बारीक चूर्ण बनाकर रख लें। ६ ग्राम दिन में दो बार लें।

(३) सतावर २० ग्राम, इमली के बीज की गिरी २० ग्राम, गाजर के बीज २० ग्राम, शक्कर ६० ग्राम पहले तीन दवाओं को बारीक चूर्ण बनाकर शक्कर मिला लें। ६ ग्राम दिन में दो बार लें।

(४) बरगद (बड़) का दूध ३ या ५ कत्रे बरगद का दूध बताशा में या शक्कर में डालकर रोजाना सुबह लें।

स्वप्न दोष

सोते में वीर्य का गैर इरादी तौर पर अक्सर खारिज होना। यह आम तौर पर जवानों में ज्यादा होता है।

(१) दूधी बूटी (छोटी) जरूरत मुताबिक बारीक चूर्ण २ ग्राम चूर्ण एक प्याली दूध के साथ सोते वक्त लें।

(२) काहू के बीज ३० ग्राम, धनिया ३० ग्राम, शक्कर ६० ग्राम पहली दो दवाओं का बारीक चूर्ण बनाकर शक्कर मिला लें। ५ ग्राम दिन में दो बार लें।

(३) तालमखाना १० ग्राम, बबूल का गोंद १० ग्राम, सअलब मिसरी १० ग्राम, इसरगोल की भूसी ३० ग्राम, शक्कर ६० ग्राम पहले तीन दवाओं को बारीक चूर्ण बना लें और बाकी-दो दवाओं को इसमें अच्छी तरह मिला कर रख लें। ६ ग्राम दिन में दो बार लें।

(४) असरोल १० ग्राम, धनिया १० ग्राम बारीक चूर्ण बनाकर रख लें। एक ग्राम सोते वक्त लें।

नोट–मसालेदार गिजाओं से परहेज करें। रात को हल्की गिजा लें। कब्ज न होने दें। सोने से पहले पेशाब व पाखाना से फारिग हो लें।

जनाना बीमारी

इस बीमारी में मरीजा के पेट और कमर में दर्द होता है। माहवारी के दिनों में और जिमाअ के वक्त ज्यादा हो जाता है इसके अलावा पिंडलियों में दर्द होता है कभी कभी पेशाब-पखाने के वक्त भी दर्द होता है।

(१) सौंफ, मको खुश्क हर एक ६ ग्राम, गोखरू, खरबूजा के बीज हर एक ६ ग्राम, १८० लीटर पानी में उबाल देकर छान लें। रोजाना सुबह लें।

(२) रेवन्द चीनी १५ ग्राम बारीक चूर्ण बनाकर रखें ५०० मिली ग्राम पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

माहवारी का रुक जाना

जब रुकावट पैदा हो जाये तो सर में दर्द, बोझ, कमर और पेडू में दर्द और मिजाज में चिड़चिड़ापन होता है। हैज तबई तौर पर हमल के दौरान, बच्चा को दूध पिलाने के दिनों में और बुढ़ापे में रुक जाता है। इस सूरत में इलाज की जरूरत नहीं होती।

(१) अमलतास का छिलका १२ ग्राम, मजेठ ४ ग्राम, अबहल ४ ग्राम, शक्कर ४ ग्राम पहले तीन दवाओं को २५० मिली लीटर पानी में इतना जोश दें कि

पानी आधा रह जाये। फिर छान लें और शक्कर मिलाकर मीठा कर लें। दिन में दो बार लें।

(२) बिनौला की गिरी, शक्कर बराबर वजन बारीक चूर्ण बनाये। ६ ग्राम दिन में दो बार लें।

(३) अमलतास का छिल्का १२ ग्राम, बांस के पत्ते १२ ग्राम, गुड़ २५ ग्राम २५० मिली लीटर पानी में इतना जोश दें कि पानी आधा रह जाये। फिर छान लें सुबह लें।

(४) गोखरू, खरबूजे के बीज, ककड़ी के बीज, खीरे के बीज, परसियाउशां, कासनी के बीज, अब्हल हर एक ४ ग्राम २५० मिली लीटर पानी में उतना उबाले कि पानी आधा रह जाये। फिर छान लें। दिन में दो बार लें।

(५) सोए के बीज, मूल के बीज, गाजर के बीज, मेथी के बीज, हर एक ३ ग्राम २५० मिली लीटर पानी में उतना उबाले कि पानी आधा रह जाये। फिर छान लें। दिन में दो बार लें।

माहवारी का दर्द के साथ आना

माहवारी से पहले पेडू, कूल्हों और रानों में दर्द होता है।

(१) मूसली सीमल २० ग्राम, शक्कर ४० ग्राम बारीक चूर्ण बनाये और शक्कर मिलाकर रख लें। ६ ग्राम दिन में दो बार पानी के साथ लें।

(२) सदफ सोखता (सीप जली हुई) ३० ग्राम बारीक चूर्ण बना लें। एक ग्राम दूध के साथ दिन में दो बार लें।

(३) गुले मुलतानी २५ ग्राम आधा लीटर पानी में दो घण्टे तक भिंगोकर छान लें और एक बोतल में रख लें। १२५ मिली लीटर दिन में चार बार लें।

नोट–गुले मुल्तानी में थोड़ा-सा पानी मिलाकर लेप बना लें और पेडू पर लगायें।

(४) रेशे बरगद (बड़ की दाढ़ी), रेशा खत्मी, बीस अंजबार, हब्बे आलास हर एक ३ ग्राम २५० मिली लीटर पानी में उबालें यहाँ तक कि पानी आधा रह जाये। फिर छान लें। दिन में दो बार लें।

सफेद पानी आना

इसमें सफेद या पीले रंग का पानी आता है। कमर में दर्द, चक्कर और आम कमजोरी हो जाती है।

(१) मोचरस २५ ग्राम, ढाक का गोंद २५ ग्राम, जो शीरीं १२ ग्राम, असगन्द १२ ग्राम, गाजो (जला हुआ) ३ ग्राम, शक्कर ७५ ग्राम तमाम दवाओं को पीस कर शक्कर में मिला लें। ६ ग्राम, गर्म पानी के साथ दिन में दो बार लें।

(२) बबूल की फली जरूरत मुताबिक लें। खुश्क करके बारीक चूर्ण बना लें। २ ग्राम दिन में दो बार लें।

(३) इमली के बीज की गिरी (भुनी हुई) ३० ग्राम बारीक चूर्ण बना लें। एक ग्राम पानी के साथ दिन में दो या तीन बार लें।

माहवारी की ज्यादती

माहवारी का ज्यादा मिकदार में या ज्यादा दिनों तक आना कभी-कभी माहवारी का समय भी नार्मल से कम हो जाता है।

अनाल की छाल १२ ग्राम २५० मिली लीटर पानी में उतना उबालें कि पानी आधा रह जाये। रोजाना सुबह लें।

गेरू, संगे जराहत, हर एक ३० ग्राम बारीक चूर्ण बना लें।

खरफा के बीज, काहू के बीज, बारतंग के बीज हर एक ३ ग्राम १२९ मिली लीटर पानी उबाल देकर छान लें। दिन में दो बार लें।

नोट–गुले मुल्तानी में थोड़ा-सा पानी मिलाकर लेप बना लें और पेडू पर लगायें।

रेशे बरगद (बड़ की दाढ़ी), रेशा खत्मी, बीख अंजबार, हब्बे आलास हर एक ३ ग्राम, २५० मिली लीटर पानी में उबालें। यहाँ तक कि पानी आधा रह जाये। फिर छान लें। दिन में दो बार लें।

सफेद पानी आना

इसमें सफेद या पीले रंग का पानी आता है। कमर में दर्द, चक्कर और आम कमजोरी हो जाती है।

(१) मोचरस २५ ग्राम, ढाक का गोंद २५ ग्राम, जो शीरीं १२ ग्राम, असगन्द १२ ग्राम, गाजो (जला हुआ) ३ ग्राम, शक्कर ७५ ग्राम तमाम दवाओं को पीस कर शक्कर में मिला लें। ६ ग्राम, गर्म पानी के साथ दिन में दो बार लें।

(२) बबूल की फली जरूरत मुताबिक लें। खुश्क करके बारीक चूर्ण बना लें। २ ग्राम दिन में दो बार लें।

(३) इमली के बीज की गिरी (भुनी हुई) ३० ग्राम बारीक चूर्ण बना लें। एक ग्राम पानी के साथ दिन में दो या तीन बार लें।

इखतिनाकुर्रहम (हिस्टीरिया)

हिस्टीरिया के दौरे आम तौर पर उन नौजवान लड़कियों और गैर शादी शुदा औरतों को होते हैं जो ज्यादा अक्रान्त होती हैं।

(१) जदवार ५०० मिली ग्राम, ओद सलीब १ ग्राम, बारीक चूर्ण बना लें। दिन में तीन बार लें।

(२) धनिया १२ ग्राम, असरोल ४ ग्राम बारीक चूर्ण बना लें। २ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

(३) नौशादर, चूना हर एक २ ग्राम अच्छी तरह मिलाकर महफूज कर लें। दौरे के वक्त मरीज को सुंघायें।

नोट–हींग, प्याज, कपूर या जन्द बेदस्तर का सुंघाना भी मुफीद है। मुँह पर पानी छिड़करना भी बेहोशी को दूर करता है।

आम बुखार

इसमें बुखार, सर में दर्द, सारे बदन में दर्द, खांसी और नज्ला होता है।

(१) अफन्तीन ५ ग्राम, १२० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान लें। दिन में दो बार लें।

(२) खाक्सी ६ ग्राम १२० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान लें। दिन में दो बार लें।

(३) गिलोय १२ ग्राम, शक्कर ६ ग्राम, गिलोको अहिस्ता से कुचल लें। २५० मिली लीटर पानी में इतना उबालें कि पानी आधा रह जाये। फिर छान कर शक्कर से मीठा कर लें। दिन में दो बार पी लें।

(४) तुलसी के ताजा पत्ते २५ ग्राम, काली मिर्च १ ग्राम पानी में पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। एक गोली पानी के साथ दिन में दो बार लें।

यह मलेरिया के बुखार में खास तौर पर फायदा देती हैं।

(५) करंजोह की गिरी ६ ग्राम कांफल ३ ग्राम बारीक चूर्ण बना लें ५०० मिली ग्राम पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

तैयार शुदा दवायें हकीमी दूकान में मिलेगी

(१) हब्बे तप पल्गमी १ गोली पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

(२) हब्बे शिफा पल्गमी १ गोली पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

(३) हब्बे मुबारक पल्गमी १ गोली पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

(४) सफूफे सत गुलू १ ग्राम पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

हिदायात—पतली मिजा लें। आराम करें।

चेचक

यह एक छूत का फैलने वाला मज है। सर में दर्द, जाड़ा और बुखार होता है। देह पर तीसरे दिन दाने निकले आते हैं आठवें दिन आबलों में तब्दील हो जाते हैं। जिनमें पीप भी जमा हो जाती है।

(१) उन्नाब ५ अदद, खाकसी ३ ग्राम, मुवीज ५ अदद, १२० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान लें। दिन में दो बार लें।

नोट–१२ ग्राम खाकसी एक कपड़े में बाँधकर एक लीटर पानी में डुबोयें और मरीज को यही पानी पीने के लिए दें। (२) मरीज के बिस्तर पर नीम की पत्तियाँ फैला दें।

(२) बर्गे गुल (गुलाब की पत्तियाँ) खुश्क करके चूर्ण बना लें। पीपदार आवलों पर इस चूर्ण को छिड़के।

(३) अफनतीन ३ ग्राम १२० मिली लीटर पानी में जोश दें। दिन में दो बार लें।

(४) गाय के घी या तिल का तेल जरूरत मुताबिक खरंड पर लगायें।

(५) समन्दर झाग (समुद्र फेन) इसको नारियल के पानी में घिस कर दागों पर लेप करें।

खसरा

छूत का फैलने वाला मर्ज है। मरीज को पहले नजला, छींके, नाक व आँखों से पहले पानी बहता और बुखार होता है। ४ या ५ दिन के बाद लाल रंग के दाने पहले चेहरे पर उसके बाद जिस्म के दूसरे हिस्सों पर निकलते हैं। चेहरा सुर्ख हो जाता है। चेचक के लिए दिये गये नुस्खे और तैयार शुदा दवायें खसरह में भी इस्तेमाल की जाती है।

हिदायत:-चेचक व खसरह का मरीज बिल्कुल अलग रखा जाये। बगैर टीका लिये हुए कोई आदमी इनको देख भाल न करे। आँखों पर ठण्डे पानी की पट्टियाँ रखें और अगर सूज जायें तो सुहागा के पानी से धोयें। मुँह साफ रखें। गर्म और मसालदार चीजों से परहेज करें।

फोड़े फुनसियाँ

(१) अन बुझा चूना ३ ग्राम, चर्बी १२ ग्राम अच्छी तरह मिलाकर फोड़ों पर लगायें। फोड़ा बगैर नश्तर लगाये फट जायेगा।

(२) अल्सी बकदरे जरूरत पानी में पीस कर लेप करें और फोड़ों पर लगायें। फोड़ा बगैर नश्तर लगाये फट जायेगा।

(३) आबा हल्दी, साबुन, अरण्ड के बीज की गिरी, गोगल हमवजन पानी में पीस कर लेप तैयार करें। फोड़े के इब्तिदाई दर्जा में लगायें।

खुश्क व तर खारिश

यह एक दूसरे को लगने वाली बीमारी है। यह आम तौर पर उंगलियों के दरमियान, कलाई के अतराफ और कभी छातियाँ, रानों और पेशाब वाली जगह से शुरू होती है। यह रात में ज्याद बढ़ जाती है। कभी यह खुश्क और कभी तरह होती है।

(१) शाहतरह, चिराइता, सरफोका, गुलमुण्डी हर एक ४ ग्राम, उन्नास ५

अदद, शक्कर ६ ग्राम पहली ५ दवाओं को १८० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान लें और शक्कर से मीठा कर लें। दिन में दो बार लें।

(२) मेहन्दी के पत्ते जरूरत मुताबिक खुश्क करके चूर्ण कर लें और घी मिलाकर लेप बना लें। खारिश की जगह पर लगायें।

(३) नीम्बू का रस १२ लीटर, अर्क गुलाब २५ मिली लीटर, चंबेली का तेल ३६ मिली लीटर तमाम दवाओं को मिलाकर एक बोतल में रख ले और खारिश की जगह पर लगायें।

नोट–यह खुश्क खारिश (खुजली) में मुफीद है।

(४) कटकी ३ ग्राम, गंधक ३ ग्राम, बाबची ३ ग्राम, तिल के तेल ५० मिली लीटर। पहले तीन दवाओं को बारीक चूर्ण बना लें। फिर तेल में मिलाकर एक बोतल में रख लें। खारिश की जगह पर लगायें।

मसालहदार गिजाओं और मीठी चीजों से परहेज करें।

दाद

(१) तुलसी के पत्ते १२ ग्राम पानी में पीस कर लेप बना लें। खारिश की जगह पर लगायें।

(२) मेहन्दी के ताजे पत्ते, गंधक बराबर वजन पानी में पीस कर लेप बना लें।खारिश की जगह पर लगायें।

(३) मदार (आक) का दूध ५ मिली लीटर, नारियल का तेल १० मिली लीटर, या मक्खन १० ग्राम अच्छी तरह खुरदुरे कपड़े से रगड़कर यह दवा लगायें।

मुँहासे

(१) शाहतरह, चिरायता, सरफोका, गुलमुण्डी ४ ग्राम हम वजन, उन्नाब ५ अदद, शक्कर ६ ग्राम पहले ५ दवाओं को १८० मिली लीटर पानी में उबाल देकर छान कर शक्कर से मीठा कर लें।

(२) समन्दर झाग जरूरत मुताबिक पानी के साथ पत्थर पर घिस कर मुहासों पर लगायें।

जोड़ों का दर्द

जिस्म के किसी एक या ज्यादा जोड़ों में दर्द और सख्ती होती है। दर्द के साथ सूजन भी हो जाती है, कभी बुखार भी होता है।

(१) अजवाइन खरासानी, कुले मदार (आर्क के फल), सोंठ हर एक २५ ग्राम, सोरंजान तल्ख, तिल का तेल ३०० मिली लीटर पहले चार दवाओं का चूर्ण बना कर तेल में इतना जोश दें कि सफूफ जल जाये। फिर छान कर एक बोतल में रख लें। हल्के गर्म तेल से जोड़ों पर आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करें।

(२) अरण्ड की जड़ ५० ग्राम, तिल का तेल २५० मिली लीटर अरण्ड की जड़ को २ लीटर पानी में इतना उबाल दें कि आधा रह जाये। फिर छान कर तेल में मिला लें और इतना उबालें कि सारा पानी उड़ जाये सिर्फ तेल बाकी रह जाये। हल्के गर्म तेल से जोड़ों पर आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करें।

(३) धतूरह का फल ४ अदद, सरसों का तेल २५० मिली लीटर थतूरह के फल को तेल में इतना गर्म करें कि वह जल जाये। छान कर बोतल में रख लें। हल्के गर्म तेल से जोड़ों पर आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करें।

(४) असगंद, सोरंजान, अस्पंद, खोलंजान हर एक ३० ग्राम बारीक चूर्ण बना लें। ४ ग्राम, पानी के साथ दिन में दो बार लें।

(५) सोंठ ३० ग्राम, जीरह सियाह ३० ग्राम, काली मिर्च १५ ग्राम, पुदीना ३० ग्राम सब दवाओं का बारीक चूर्ण बना लें। ४ ग्राम पानी के साथ दिन में दो बार लें।

(६) अजवाइन खरासानी, काली मिर्च, एलवा, सुहागा (भुना हुआ) हर एक २० ग्राम, मगज धीकवार जरूरत मुताबिक पहले चार दवाओं का बारीका चूर्ण बनाकर गूदा धीकवार में मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। ४ गोलियाँ पानी के साथ दिन में दो बार लें।

लंगड़ी का दर्द

यह दर्द दौरों की शक्ल में होता है। कूल्हे से शुरू होकर नीचे पैर तक जाता है। कभी-कभी यह दर्द इतना होता है कि मरीज न चल फिर सकता है न सीधा खड़ा हो सकता है।

(१) एलवा, पोस्ता लजीला जर्द (पीली हड़का छिल्का, सोरंजान शीरीन हर एक २० ग्राम सब दवाओं को बारीक चूर्ण बना लें और थोड़े पानी में मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। ५ गोलियाँ पानी के साथ दिन में दो बार लें।

(२) चोब चीनी ६ ग्राम चोव चीनी को कुचल कर २५० मिली लीटर पानी में १२ घण्टे तक भिंगोकर इतना जोश दें कि पानी आधा रह जाये फिर छान लें। सुबह लें।

नोट–जोड़ों के दर्द के लिए बनाये गये तेलों में से किसी तेल से मालिश करें तैयार शुदह दवायें ये हकीमी दुकान में मिलेगी।

(१) हब्बे अजाराकी एक गोली पानी के साथ दिन में तीन बार लें।

(२) नब्बे सोरंजन एक गोली पानी के साथ दिन में तीन बार।

(३) मअजून सोरंजन ७ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

(४) मअजून चोब चीनी ७ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

(५) मअजून अस्पंद सोख्तनी ५ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

(६) तिरयाके अरबाह ३ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

(७) बरशअशा ३ ग्राम पानी के साथ सोते वक्त लें।

हिदायत—सर्दी से बचे।

इन्तेशारे शेर (बालों का गिरना)

(१) रेशे बर्गद (बड़ की दाढ़ी) २५० ग्राम, नारियल का तेल एक लीटर रेशे बर्गद को दो तीन दिन तक साया में खुश्क करें और फिर कुचल कर नारियल के तेल में १५ दिन तक डाले रखें। इसके बाद छान कर बोतल में रख लें। सोते वक्त सर पर मलें।

(२) उड़द एक किलो ग्राम, आमला आधा किलो ग्राम, शिकाकाई २५० ग्राम मेथी के बीज १२५ ग्राम बारीक चूर्ण बनाकर रख लें। २५ ग्राम चूर्ण १८० मिली लीटर पानी में १५ मिनट तक भिंगोयें और फिर शैम्पू की तरह लगायें और सर को धो लें।

मोटापा

(१) लक मगसोल (लाख साफ किया हुआ) एक ग्राम पानी के साथ सुबह लें।

(२) नीम्बू का रस ५ मिली लीटर नीम्बू का रस १२० मिली लीटर पानी में मिलाकर सुबह खाली पेट लें।

सूर्य शान्ति उपाय

प्रत्येक कार्य मीठा खाकर एवं जल पीकर करें।

बहते पानी में गुड़, ताँबा या ताँबे का सिक्का बहायें।

हरिपूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें।

विष्णु की उपासना करें।

रविवार का व्रत रखें।

ताँबा व गेहूँ का दान करें।

माणिक्य अथवा ताँबा अनामिका उंगली में धारण करें।

चरित्र ठीक रखें अर्थात् कुकर्म एवं गलत कार्यों से बचें।

ताँबे के दो टुकड़ करके एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन संभाल कर रखें। यदि टुकड़ा चोरी हो जाये या खो जाये तो पुनः ताँबे का टुकड़ा पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं हैं।

घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में रखें।

चन्द्र शान्ति के उपाय

दूसरों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेने से चन्द्र की अशुभता दूर होती है।

दूध या पानी का भरा बर्तन सिरहाने रखकर सोयें और अगले दिन कीकर की जड़ में सारा जल डाल दें।

शिव की उपासना करें।

सोमवार को व्रत रखें।

माता, सास, नानी एवं मौसी का आशीर्वाद लें।

चावल, दूध एवं चाँदी का दान करें।

पलंग के पायों में चाँदी की कील ठोंकें।

मोती अथवा चाँदी तर्जनी उंगली में धारण करें।

पूर्णिमा में गंगा स्नान करें।

चावल, दूध व पानी या दो मोती या चाँदी के दो टुकड़े लेकर एक मोती या चाँदी का टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा मोती या चाँदी का टुकड़ा संभाल कर रखें। यदि मोती या चाँदी का टुकड़ा चोरी हो जाये या खो जाये तो पुन: मोती या चाँदी का टुकड़ा पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

मंगल शान्ति उपाय

सफेद सुरमा नेत्रों में लगाने से राहत मिलती है।

ताँबा अथवा मूँगा अनामिका उंगली में धारण करें।

तन्दूर में लगी मीठी रोटी बाँटें।

बहते पानी में रेवड़ियाँ, बताशे, शहद व सिन्दूर बहायें।

गायत्री मन्त्र का जप करें।

हनुमानजी की उपासना करें।

मसूर, मिठाई अथवा भोजन का दान करें।

भाई की सेवा करें एवं मृगछाला पर सोयें।

मंगलवार का व्रत रखें एवं हनुमानजी को सिन्दूर का चोला चढ़ायें।

लाल पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा संभाल कर रखें। यदि पत्थर का टुकड़ा चोरी हो जाये या खो जाये तो पुन: पत्थर का टुकड़ा पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

बुध शान्ति उपाय

बुधवार का व्रत रखें।

बकरी अथवा तोते को पालें अथवा उसकी सेवा करें।

हिजड़ों को हरे वस्त्र एवं हरी चूड़ियाँ दान करें।

बेटी, बहन, बुआ, मौसी और साली का आशीर्वाद लें।

पन्ना, हरा आनेक्स अथवा तुरमली कनिष्ठिका उंगली में धारण करें।

दाँत साफ रखें और नाक छिवायें।

अपनी खुराक या भोजन में से एक टुकड़ा कुत्ते को एक टुकड़ा कुत्ते को और टुकड़ा कौवे को खाने के लिए दें।

ताँबे के पत्तर में छेद करके बहते पानी में बहा दें।

दुर्गा उपासना व दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

साबुत हरे मूँग का दान करें।

दो सीप या दो हीरे लेकर एक को बहते पानी में बहा दें और एक को आजीवन अपने पास रखें। यदि सीप या हीरा चोरी चला जाये या खो जाये तो पुनः पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नही हैं।

गुरु शान्ति उपाय

गुरुवार का व्रत रखें।

माथे या पगड़ी पर पीला तिलक लगायें। केसर का तिलक भी लगा सकते हैं।

कोई भी कार्य शुरू करने से पूर्व नाक अवश्य साफ करें।

नाक का पानी स्वतः शुष्क हो जाना सहायक है।

केसर खायें या नाभि व जीभ पर लगाना शुभ है।

हरि पूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें। ब्रह्मा की उपासना लाभदायी है।

पीपल की जड़ में जल चढ़ायें।

दो स्वर्ण के टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन संभाल कर रखें। पास रक्खा टुकड़ा खो जाये या चोरी चला जाये तो पुनः स्वर्ण का टुकड़ा रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं हैं।

शुक्र शान्ति उपाय

शुक्रवार का व्रत रखें।

अपने भोजन में से गाय को कुछ भाग दें। ऐसा करेंगे तो शुक्र की सहायता होगी व धान्य सुख भी बढ़ेगा।

प्रतिदिन अपने भोजन में से एक टुकड़ा कुत्ते के लिए, एक टुकड़ा गाय के लिए और एक टुकड़ा कौवे के लिए निकालें।

हीरा, स्फाटिक अथवा सफेद जिरकन मध्यमिका उंगली में धारण करें।

गोदान करें या ज्वार व चरी का दान करें।

दूजों का पालन-पोषण करें।

लक्ष्मी की उपासना करें।

सफेद एवं स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

सुगन्धित पदार्थों का प्रयोग करें।

घी-दही, कर्पूर व मोती का दान करें।

दो मोती लेकर एक मोती पानी में बहा दें और एक मोती को आजीवन अपने पास में रखें यदि पास रखा मोती खो जाये या चोरी हो जाये तो पुनः मोती लाकर रखें। दुबारा पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

शनि शान्ति उपाय

शनिवार का व्रत रखें।

कीकन की दांतुन करें।

तैतालिस दिन तक कौवों को रोटी डालें।

अपने भोजन से गाय, कुत्ता, कौवे को एक-एक टुकड़ा दें।

शनिवार को तेल में छाया देखकर तेल दान करें।

राजा या बड़ों की उपासना करें।

लोहा या काले उड़द का दान करें।

दो लोहे के टुकड़े या काले नमक के टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन अपने पास संभाल कर रखें। यदि लोहा या काले नमक का टुकड़ा खो जाये या चोरी चला जाये तो पुनः लोहे या काले नमक का टुकड़ा अपने पास रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

भैरव की उपासना करें।

साँप को दूध पिलायें।

तेल एवं शराब पेड़ों की जड़ में डालें।

तेल से चुपड़ी रोटी कुत्ते अथवा कौवे को डालें।

नीलम, जामुनिया अथवा कटैला मध्यमिका उंगली में धारण करें।

जोड़ लगा हुआ लोहे का छल्ला मध्यमिका उंगली में धारण करें।

राहु शान्ति उपाय

संयुक्त परिवार में रहें।

ससुराल से सम्बन्ध न बिगाड़ें।

सिर पर चोटी रखें।

राहु के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए केतु का उपाय करें।

जौ या अनाज को बड़े स्थान पर बोझ के नीचे दबायें या दूध से धोकर बहते पानी में बहायें।

मूली दान करें या कोयला बहते पानी में डालें।

विवाह समय कन्यादान करें।

सरस्वती की उपासना करें।

नीले कपड़े, स्टील के बर्तन, विद्युत-उपकरण दान में न लें अपितु उचित मूल्य देकर ही लें।

गोमेद मध्यमिका उंगली में धारण करें।

तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में न करें।

जेब में चाँदी की ठोस गोली रखें। अथवा चाँदी किसी अन्य रूप (छल्ला, चेन आदि) में धारण करें।

चाँदी के दो टुकड़े या दो मोती या चावल की दो पोटली बनाकर उनमें से एक को पानी में बहा दें दूसरा चाँदी का टुकड़ा या मोती या चावल की पोटली आजीवन अपने पास रखें यदि पास रखी चाँदी, चावल या मोती खो जाये या चोरी हो जाये तो पुनः अपने पास रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

केतु के सामान्य उपाय

गणेश चतुर्थी का व्रत रखें।

गणेश उपासना करें।

कान छिदवायें और कुत्ता पालें।

केतु के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए राहु का उपाय करें।

कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर सन्तान सुख भी होगा।

नौ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को खट्टी वस्तुयें खाने को दें।

काले और सफेद तिल बहते पानी में बहायें।

कपिला गाय का दान करें।

चरित्र ठीक रखें और पापकर्मों से बचें।

दो रंगा पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन अपने पास रखें। यदि दो रंगा पत्थर का टुकड़ा खो जाये या चोरी हो जाये तो पुनः एक टुकड़ा रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा करने पर भी केतु का अशुभ प्रभाव दूर होता है।

ग्रह का अशुभ दूर करना

राहु अशुभ हो तो केतु का उपाय करें। केतु की नब्ज (नाड़ी) दसवें भाव में होगी।

केतु अशुभ हो तो राहु का उपाय करें। पापी ग्रहों की वस्तुओं को पास रखने से भी उनका उपाय हो जायेगा।

शनि अशुभ हो तो आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कौवे को रोटी डालें एवं सन्तान की अशुभता दूर करने के लिए कुत्ते को रोटी डालें।

शुक्र अशुभ हो तो अपने भोजन में से गाय को हिस्सा दें।

मंगल अशुभ हो तो मृगछाला प्रयोग में लायें। तन्दूर में लगी मीठी रोटी कुत्तों को दे या भिखारियों में बाँटें। जौ को दूध में डुबोकर बहते पानी में बहा दें। बुखार हो तो जौ गाय के मूत्र में धोकर लाल रंग के कपड़े में बाँधें। गाय के मूत्र से दाँत साफ करें। रेवड़ियाँ या गुड़ बहते पानी में बहायें। केसर नाभि पर लगायें।

पितृगण, अशुभ ग्रह व सन्तान प्राप्ति के लिए जो ग्रह अशुभ या निर्बल हों उनका उपाय अवश्य करें। इनको करे बिना शुभ ग्रहों का फल नहीं मिलेगा।

ग्रहानुसार निम्नलिखित उपाय भी कर सकते हैं—

सूर्य अशुभ हो तो हरिपूजन, विष्णु पूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें।

चन्द्र अशुभ हो तो शिव उपासना करें।

मंगल अशुभ हो तो हनुमान चालीसा का पाठ करें और हनुमान की उपासना करें।

बुध अशुभ हो तो दुर्गा उपासना और दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

गुरु अशुभ हो तो हरिपूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें।

ब्रह्मा की उपासना भी कर सकते हैं।

शुक्र अशुभ हो तो दूजों का पालन-पोषण करें। लक्ष्मी उपासना करें।

शनि अशुभ हो तो बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें। भैरव उपासना करें।

राहु अशुभ हो तो कन्या दान करें। सरस्वती उपासना करें।

केतु अशुभ हो तो गाय का दान करें। गणपति उपासना करें।

यदि ग्रह अधिक नीच फल करें तो उससे सम्बन्धित वस्तुओं का दान अवश्य करना चाहिये।

सूर्य के लिए ताँबा और गेहूँ का दान करें।

चन्द्र के लिए चावल, दूध व दही का दान करें।

मंगल के लिए मसूर की दाल का दान करें।

बुध के लिए साबुत हरे मूँग का दान करें।

गुरु के लिए चने की दाल एवं सोने का दान करें।

शुक्र के लिए घी, दही, कर्पूर व मोती का दान करें।

शनि के लिए लोहे या काले उड़द का दान करें।

राहु के लिए सरसों व नीलम का दान करें।

केतु के लिए तिल का दान करें।

अन्य उपाय

सूर्य अशुभ हो तो ताँबे के दो टुकड़े बराबर भार के लेकर उसी प्रकार दान करें जिस प्रकार लड़की का करते हैं। बाद में एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और

दूसरा टुकड़ा पूर्णायु तक अपने पास संभाल कर रखें उसे किसी भी मूल्य पर बेचे नहीं। ऐसा करने पर सूर्य का अशुभ प्रभाव कम होगा। ऐसा टुकड़ा चोर भी नहीं चुरा सकता है। यदि ऐसा टुकड़ा खो जाये तो पुन: ताँबे का टुकड़ा बना लें, दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है। शेष ग्रहों के लिए इस प्रकार करें—

चन्द्र अशुभ हो तो सूर्य की तरह सच्चा मोती, चाँदी या चावल स्थापित करें।

मंगल अशुभ हो तो सूर्य की तरह लाल पत्थर स्थापित करें।

बुध अशुभ हो तो सूर्य की तरह हीरा या सीप स्थापित करें।

गुरु अशुभ हो तो सूर्य की तरह स्वर्ण या केसर स्थापित करें।

शुक्र अशुभ हो तो सूर्य की तरह सफेद मोती स्थापित करें।

शनि अशुभ हो तो सूर्य की तरह लोहा, कालानमक या काला सुरमा स्थापित करें।

राहु अशुभ हो तो चन्द्र ग्रह की तरह करें। परन्तु नीलम कभी न स्थापित करें।

केतु अशुभ हो तो सूर्य की तरह दोरंगा स्थापित करें।

पापी ग्रह (राहु, केतु व शनि) सभी को चोट देते हैं। पर उनको चोट देने के लिए उनका अपना पाप (राहु, केतु) भारी पड़ता है।

राहु के अशुभ प्रभाव को केतु के उपाय द्वारा दूर कर सकते हैं। इसी प्रकार केतु के अशुभ प्रभाव को राहु के उपाय द्वारा दूर कर सकते हैं।

पापी ग्रहों का उपाय उनसे सम्बन्धित वस्तुओं को रखने, पालने, उनसे आशीर्वाद या क्षमा माँगने से ही होगा।

शुक्र ग्रह की सहायता के लिए अपने भोजन में से गाय को कुछ भाग दें। ऐसा करने पर धान्य सुख बढ़ेगा।

शनि की सहायता के लिए कौवे को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर धन हानि रुकेगी।

केतु की सहायता के लिए कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर सन्तान होगी।

प्रत्येक ग्रह की अशुभता के पार्श्व में दो ग्रह होते हैं। इन दोनों में से एक की अशुभता दूर करने पर शुभ फल मिलने लगते हैं। इसके लिए ऐसे ग्रह के प्रभाव को बढ़ायें, जो पाप ग्रह की अशुभता को शुभता में परिवर्तित कर दें। जैसे—शनि अशुभ हो जाये तो उसकी अशुभता के पार्श्व में शुक्र व गुरु है, इनमें से गुरु को हटाने के लिए बुध के प्रभाव को बढ़ायें। शुक्र-बुध मिलने पर शनि शुभ हो जाता है।

अशुभ मंगल के कुप्रभाव से मृगछाला बचाती है। तन्दूर में लगी मीठी रोटी बनाकर बाँटने से अशुभ मंगल का कुप्रभाव दूर होता है।

बुध, शुक्र व शनि के अशुभ प्रभाव को गाय ग्रास से दूर कर सकते हैं। गाय ग्रास से तात्पर्य यह है कि अपनी प्रतिदिन के भोजन/खुराक में से तीन टुकड़े निकाल कर एक टुकड़ा गाय को, एक टुकड़ा कुत्ते को और एक टुकड़ा कौवे को खाने के लिए दें।

राहु का अशुभ प्रभाव दूर करने के लिए जौ या अनाज को किसी बड़े स्थान में बोझ के नीचे दबाने पर या दूध से धोकर बहते पानी में बहाना चाहिये।

यदि क्षय रोग का ताप (बुखार) तंग करे तो जौ को गाय के मूत्र में धोकर लाल वस्त्र में बाँधकर रखें और गाय के मूत्र से ही दाँत साफ करें।

अन्य ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को बढ़ाने से अशुभ ग्रह का कुप्रभाव दूर होता है।

यदि पुत्र-पुत्री दोनों पिता के लिए अशुभ हों तो लड़की के गले में ताँबे का टुकड़ा डालना शुभ होगा।

यदि मंगल १, ३, ८ वें भाग में हो तो उसका उपाय कदापि न करें। ऐसे में बुध का उपाय करना लाभप्रद रहेगा।

जब सामान्य उपाय कारगर साबित न हों तो अतिशीघ्र प्रभाव देने वाले निम्नलिखित उपाय करें—

सूर्य—बहते पानी में गुड़ बहायें।

चन्द्र—दूध या पानी का भरा बर्तन सिरहाने रखकर सोयें और अगले दिन कीकर की जड़ में सारा जल डाल दें।

मंगल—मंगल शुभ हो तो मिठाई या मीठा भोजन दान करें या बताशा बहते पानी में डालें। मंगल अशुभ हो तो रेवड़ियाँ बहते पानी में बहायें।

बुध—ताँबे के पत्तर में छिद्र करके बहते पानी में बहा दें।

गुरु—केसर खायें या नाभि व जीभ पर लगायें।

शुक्र—गोदान करें या ज्वार व चरी का दान करें।

शनि—तेल में छाया देखकर दान करें।

राहु—मूली दान करे या कोयला बहते पानी में बहायें।

केतु—कुत्ते की रोटियाँ डालें।

वर्जित नियम

शनि पहले भाव में हो और बृहस्पति पाँचवें भाव में हो तो भिखारी को ताँबे का सिक्का या बर्तन कदापि न दें। यदि देंगे तो सन्तान नष्ट हो जायेगी या कष्ट में रहेगी।

चन्द्र चौथे भाव में हो और गुरु दसवें भाव में हो तो मन्दिर या पूजास्थल कदापि न बनवायें। यदि बनवायेंगे तो झूठे आरोपों में सजा या फाँसी तक हो सकती है।

शुक्र नौवें भाव में हो तो अनाथ बच्चों को गोद लेंगे या पास में रखेंगे तो सर्व प्रकार से अपना अहित ही करेंगे।

गुरु सातवें भाव में हो तो किसी को वस्त्र दान में न दें वरना स्वयं अपने वस्त्र खो बैठेंगे अर्थात् वस्त्रहीन होने की स्थिति आ जायेगी।

शनि आठवें भाव में हो तो सराय, धर्मशाला, यात्री निवास न बनवायें यदि बनवायेंगे तो गृहहीन हो जायेंगे तथा निर्धनता में जीवन जीना पड़ेगा।

चन्द्रमा छठें भाव में हो तो दूध या पानी का दान करें, कुआँ या तालाब न खुदवायें या नल न लगवायें और मरम्मत तक न करवायें। यदि करायेंगे तो दिन-प्रतिदिन परिवार घटता रहेगा और मृत्यु सिर पर मंडराती रहेंगी। माता को कष्ट होगा सन्तान न हो तो खरगोश पालें एक खरगोश मर जायें तो दूसरा पालें।

चन्द्रमा बारहवें भाव में हो तो धर्मात्मा या साधु को भोजन न खिलायें उसे दूध न पिलायें, बच्चों को निशुल्क शिक्षा न दें स्कूल या पाठशाला न खोलें। यदि ऐसा करेंगे तो आजीवन कष्ट पायेंगे और अन्त समय कोई पानी पिलाने वाला भी न होगा।

अशुभ ग्रह तभी प्रभाव डालता है जब वह वर्ष कुण्डली में भी अशुभ प्रभाव देने वाले भावों में जाता है। इसी प्रकार शुभ ग्रह शुभ फल तभी देता है जब वह वर्ष कुण्डली में भी शुभ प्रभाव देने वाले भावों में जाता है।

ग्रह यदि कारक भावों के हैं तो उनका शुभाशुभ प्रभाव अवश्य पड़ता है, जिसे उपाय द्वारा भी नहीं रोका जा सकता है। ग्रहों के कारक भाव इस प्रकार हैं—**सूर्य** का कारक भाव पहला, **चन्द्र** का कारक भाव चौथा, **मंगल** का कारक भाव तीसरा और आठवाँ, **बुध** का कारक भाव सातवाँ, **गुरु** का कारक भाव दूसरा, पाँचवाँ, नवाँ और ग्यारहवाँ, **शुक्र** का कारक भाव सातवाँ, **शनि** का कारक भाव आठवाँ और दसवाँ, **राहु** का कारक भाव बारहवाँ एवं **केतु** का कारक भाव छठा और ग्यारहवाँ।

उपाय उस प्रकार लाभ करता है, जिस प्रकार वर्षा में छाता या बरसाती हमें भीगने से बचाती है।

लग्नस्थ सूर्य का उपाय

घर में बाँयीं ओर अंधेरी कोठरी का निर्माण करें।
विवाह चौबीस वर्ष से पूर्व ही करें।
दिन में स्त्री के साथ कभी भी भोग न करें।
स्वयं को नैतिक व चरित्र की दृष्टिकोण से सबल बनायें।

पैतृक घर हो तो उसमें हैण्डपम्प या जल का कोई साधन स्थापित करने के दस वर्ष उपरान्त भाग्योदय होगा।

द्वितीय भाव में सूर्य

दान कभी न लें। किसी से कोई वस्तु मुफ्त में न लें। स्वअर्जित धन से ही जीवन को जीयें। दान में चावल, चाँदी या दूध तो कदापि न लें।

नारियल, तेल या बादाम को मन्दिर या किसी धर्म स्थल में दान में दें।

अपना चरित्र सदैव ठीक रखें। चरित्रहीनता से बचना ही श्रेयस्कर है।

पैतृक भवन में जल संसाधन (हैण्डपम्प, कुआँ आदि) का प्रबन्ध करें।

तृतीय भाव में सूर्य

माता या दादी का आशीर्वाद लेते रहें। उन्हें कभी भी नाराज न करें।

चाल-चलन ठीक रखें।

कभी भी पाप या बुरे कर्मों में लिप्त न हों।

चन्द्रमा की वस्तुओं को स्थापित करना भी शुभ फलप्रद रहेगा।

चतुर्थ भाव सूर्य

अन्धों को भिक्षा दें या भोजन करायें।

पैतृक भवन में यज्ञ करायें या निःशुल्क भंडारा करायें।

मछली न तो खायें और न कभी उनका शिकार करें।

शराब का सेवन भी न करें।

लोहे व लकड़ी का कार्य कभी न करें।

सोना, चाँदी व कपड़े का कार्य अवश्य करें।

ताँबे का सिक्का खाकी धागे में पिरोकर गले में धारण करें।

पंचम भाव में स्थित सूर्य

झूठ न बोलें और दूजों के प्रति दुर्भावना न रखें।

वचन दें, तो अवश्य निभायें।

प्राचीन परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों की अवहेलना न करें।

लाल मुख के बन्दर की सेवा करें, या गुड़ खिलायें।

तीन प्रकार के कुत्तों की सेवा करें अर्थात् साले, दामाद और नाती की पालना करें।

पक्षी, मुर्गा और बच्चों का पालन-पोषण करें।

घर में रसोई पूर्व दिशा में बनायें।

षष्ठम भावस्थ सूर्य

बन्दर को गुड़ या सूर्य की वस्तुयें खिलायें।

बाजरा या सूर्य की वस्तुयें दान में दें।
सफेद चींटियों को सात दालों का चूरा बुरकें।
बुध का उपाय करें।
चाँदी या गंगाजल घर में लाकर रखें।
रात्रि का भोजन करने के बाद चूल्हे की आग दूध से बुझायें।
घर में भूमिगत भट्टी न बनवायें।
ताँबे का चौकोर पत्तर भूमि के नीचे दबायें।
मन्दिर या धर्मस्थल में कुछ न कुछ दान दें या वहाँ कुत्ते को भोजन करायें।
रात्रि में अपने सिरहाने चन्द्रमा की वस्तुयें (पानी आदि) रखकर सोयें।
दूसरों के द्वारा धर्मस्थल में दान की गयी वस्तुयें अपने घर में न लायें।
पैतृक रीति-रिवाजों का पालन करें।

सप्तम भावस्थ सूर्य

कोई भी कार्य थोड़ा मीठा खाकर या पानी के कुछ घूंट पीकर प्रारम्भ करें।
काली या बिना सींग वाली गाय की सेवा करें।
भोजन करने से पूर्व रोटी के टुकड़े की आहुति अग्नि में डालें।
नमक कम खायें।

ताँबे का चौकार टुकड़ा भूमि के नीचे दबायें। यह उपाय तब करें जब पुत्र तंग या कष्ट में हो।

दूध से आग बुझायें। यह उपाय तब करें जब शनि पहले और सूर्य सातवें भाव में स्थित हो।

गुरु का उपाय करें।
सांसारिक व्यवहार उत्तम रखें।

अष्टम भावस्थ सूर्य

घर का मुख्यद्वार दक्षिण में न रखें या दक्षिणद्वार से युक्त घर में न रहें।
घर में सफेद गाय न पालें।
काली गाय या बड़े भाई की सेवा करें।
रोगी के पास कभी न बैठें।
मीठा खाकर व पानी पीकर कोई कार्य करने पर कार्य सिद्धि अवश्य होगी।
नैतिक पतन न होने दें या चरित्र से ठीक रहें।
सालों के साथ न रहें।

नवम भावस्थ सूर्य

दान कभी न लें।

चन्द्रमा की वस्तुओं का दान करें।

मुफ्त में चाँदी या चावल कदापि न लें। मुफ्तखोर न बनें।

पापकर्म से बचें।

घर के पुराने पीतल के बर्तन रखे रहने दें, उन्हें ना बेचें।

दूजों से मजाक या दिल्लगी कदापि न करें।

न अधिक क्रोध करें और न अनावश्यक सहन करें। सदैव सामान्य रहें।

दशम भावस्थ सूर्य

सफेद रंग की टोपी या पगड़ी से सदैव सिर ढंककर रखें।

काले व नीले रंग के कपड़े कदापि न पहनें।

अपने दोषों या परेशानियों का कदापि ढिंढोरा न पीटें।

सिर कभी नंगा न रखें, सदैव ढंककर रखें।

गंगाजल घर पर लाकर रखें या पैतृक घर में कुआँ या हैण्डपम्प लगवायें।

नदी, नाले या समुद्र के बहते पानी में चालीस या तैंतालिस दिन तक ताँबे का सिक्का लगातार बहायें।

भूरी भैंस की सेवा करें।

एकादश भावस्थ सूर्य

शराब न पीयें या मांस न खायें।

ऐसा कोई कार्य न करें जिससे शनि अशुभ हो जाये।

वायदा न तोड़े, झूठा गवाही न दें, धोखाधड़ी भी न करें।

रात्रि में पाँच मूली या बादाम सिरहाने रखकर अगले दिन प्रातः मन्दिर या धर्मस्थल पर दान देने से आयु बढ़े और सन्तान सुख भी मिले।

कसाई से बकरी या बकरा खरीद कर उसकी रक्षा करें या पेड़-पौधा रोपें।

द्वादश भावस्थ सूर्य

राहु सम्बन्धी कार्यों को न करें। ससुराल से अधिक सम्बन्ध न रखें।

घर में बरामदा अवश्य रखें।

पराई आग में हाथ न डालें।

धार्मिक कार्य अवश्य करें।

घर ऐसा बनायें जहाँ सूर्य का प्रकाश अवश्य आये।

आटा पीसने की चक्की घर पर रक्खें।

झूठी गवाही न दें।

दूजों को धोखा न दें। गबन न करें। अमानत रखकर बाद में मना न करें। ईर्ष्या न करें। असत्य कदापि न बोलें।

पहले भाव में स्थित चन्द्र

चाँदी के बर्तनों में दूध या पानी पीयें।

काँच के बर्तनों में दूध या पानी न पीयें।

दूध न बेचें, अपितु दूध का दान दें या दूध मुफ्त पिलायें।

पलंग या चारपाई के चारों पायों में ताँबे की कील गाड़ें।

वटवृक्ष पर जल चढ़ायेंगे तो सम्मान और शान्ति मिलेगी।

माता के चरण स्पर्श करके सदैव उनका आशीर्वाद लें।

माता की मृत्यु से पूर्व उनसे आशीर्वाद रूप में चन्द्रमा की वस्तुयें चावल, चाँदी आदि लेकर रखें।

माता के स्वास्थ्य के लिए माता को साथ रखें और मंगल की वस्तुयें भूमि के नीचे दबायें।

अट्ठाईसवें वर्ष से पूर्व विवाह न करें या शुक्र सम्बन्धी कार्य न करें।

वर्षा का जल और चन्द्रमा की वस्तुयें किसी न किसी रूप में घर पर स्थापित करें।

चौबीसवें वर्ष में नौकरानी या गाय घर पर रखें।

परिवार के साथ नदी पार करने का सुअवसर मिले तो नदी में ताँबे का सिक्का डालें।

चौबीसवें वर्ष से पूर्व भवन न बनायें।

दूसरे भाव में स्थित चन्द्र

हरे रंग के वस्त्र तैंतालिस दिन तक निरन्तर कन्याओं को दें।

घर की नींव में चाँदी की ईंट या वस्तुयें दबायें।

माता से आशीर्वाद के रूप में चन्द्रमा की वस्तुयें प्राप्त करें।

परिवार में वृद्धा स्त्री जो भी हो उसकी सेवा करें।

घर का फर्श कच्ची मिट्टी का रखें।

चन्द्रमा की वस्तुयें घर पर स्थापित करें।

तीसरे भाव में स्थित चन्द्र

दुर्गा पूजा करें।

पुत्री के विवाह पर या अन्या कन्याओं के विवाह पर कन्यादान करें।

कन्या के जन्म पर चन्द्रमा की वस्तुयें और पुत्र के जन्म पर सूर्य की वस्तुयें दान में दें।

चौथे भाव में स्थित चन्द्र

शुभ कार्य करने से पूर्व पानी या दूध से भरा घड़ा अवश्य रखें।

दूध का दान करें। दूध कभी न बेचें। दूध बेचने से तबाही व दूध मुफ्त बाँटने से सांसारिक सुख बढ़ेगा।

पैतृक कार्य करते रहने से लाभ होगा।

दादा, पोता या दोहता एक साथ मन्दिर जायें या पितृ यज्ञ करें।

पाँचवें भाव में स्थित चन्द्र

लालच न करें।

स्वार्थी न बनें।

धर्म पर चलें, सत्यमार्गी बनें और सिद्धान्तों पर चलें।

अशुभ मत बोलें, गाली-गलौज न करें।

कोई भी चन्द्र सम्बन्धी कार्य करने से पूर्व मीठा भोजन करके घर से निकलें।

सोमवार को श्वेत वस्त्र में चावल, मिश्री बाँधकर बहते पानी में बहायें।

कभी-कभी पहाड़ी स्थानों पर घूमने जायें।

छठें भाव में स्थित चन्द्र

अपने रहस्यों को किसी को भी न बतायें।

पिता को अपने हाथों दूध पिलायें।

सूर्य, मंगल एवं गुरु की वस्तुओं का दान धर्मस्थल या मन्दिर में दें।

रात्रि में दूध कदापि न पीयें। दूध स्वास्थ्य के लिए पीना आवश्यक हो तो दिन में पीयें या रात्रि में फटा दूध, दही या पनीर प्रयोग में लायें। दूध को फाड़कर पानी या दही में से पानी निकालकर शेष पदार्थ प्रयोग में ला सकते हैं।

सामान्यजन के लिए मुफ्त पानी का प्रबन्ध न करें।

धर्मार्थ कुआँ या प्याऊ लगायें। अस्पताल या श्मशान के बरामदे में नल या कुआँ लगाना लाभप्रद है। ध्यान रखें खेती हेतु या सामान्य प्रयोग के लिए लगाया गया नल अशुभ होगा।

दूध का दान कदापि न करें। दूध देना हो तो धर्मस्थल पर ही दें।

खरगोश पालें।

सातवें भाव में स्थित चन्द्र

चौबीसवें या पच्चीसवें वर्ष में विवाह न करें।

दूध व पानी कभी न बेचें। यदि बेचेंगे तो सन्तान व माता का सुख नहीं मिलेगा।

विवाह के पूर्व चन्द्र की वस्तुयें स्थापित करें।

घर पर दूध या नदी का पानी अपने बार के बराबर स्थापित करें।

विवाह के समय ससुराल से स्त्री के साथ चन्द्रमा की वस्तुयें अवश्य लायें।

अपना चरित्र ठीक रखें।

आठवें भाव में स्थित चन्द्र

गुरु, सूर्य या मंगल की वस्तुयें धर्मस्थल में दान करें।

श्मशान के अन्दर लगे नल से जल लाकर घर में रखें।

नाक छिदवायें।

बड़े-बुजुर्गों के चरण स्पर्श करें या पानी से धोने पर आयु बढ़े।

बड़े-बुजुर्गों और बच्चों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लें।

जुआ न खेलें। घर में चन्द्रमा की वस्तुयें स्थापित करें।

श्मशान या अस्पताल में जल संसाधन का प्रबन्ध करें।

नवें भाव में स्थित चन्द्र

अपना चरित्र ठीक रखें।

चन्द्रमा की वस्तुओं को स्थापित करें।

चन्द्रमा के मित्र ग्रहों की वस्तुओं को स्थापित करें।

धर्मस्थलों पर अवश्य जायें।

दसवें भाव में स्थित चन्द्र

गुरु ग्रह का उपाय करें।

चरित्र ठीक रखें।

यदि वैद्य या चिकित्सक हैं तो मुफ्त दवायें कभी न दें।

रात्रि में दूध कदापि न पियें।

भूमि के नीचे का जल, नदी, नाले, हैण्डपम्प का जल घर में दस-पन्द्रह वर्ष तक रखें।

दूध देने वाले पशु घर पर न पालें।

तरल औषधियाँ कभी न ग्रहण करें।

मकान बन बनायें।

ससुराल से अधिक सम्बन्ध न बनायें।

ग्यारहवें भाव में स्थित चन्द्र

जब स्त्री के प्रसव का समय आये तो माता को कहीं अन्यत्र चले जाना चाहिये और तैंतालिस दिन तक बच्चे का मुख नहीं देखना चाहिये।

कुआँ कभी न बनायें।

दूध की वस्तुयें पेड़े या दूध जो भार में इतने हों कि एक व्यक्ति का पेट भर जाये। इस भाग का ग्यारह गुना करके बच्चों में बाँट दें या ग्यारह व्यक्तियों को भर पेट दूध की वस्तुयें खिला दें।

भैंरो जी के मन्दिर में दूध का दान दें।

जातक की माता सिर और आँखें दूध से धोये।

हैण्डपम्प के पानी गिरने के स्थान पर चक्की का पत्थर रखें और जातक की माता उसे प्रतिदिन धोये।

स्त्री-संसर्ग से पूर्व सोने की सलाख को अग्नि में लाल करके दूध में बुझायें, यह ग्यारह बार करें। जातक के लिए दूध का प्रयोग वर्जित हो तो गर्म किया सोना पानी में बुझाकर प्रयोग करें। यदि वीर्य में शुक्राणु कम हों तो देशी दवाईयाँ अधिक प्रयोग करें जिनमें स्वर्ण या स्वर्ण भस्म मिली हो।

बारहवें भाव में स्थित चन्द्र

वर्षा का जल घर में स्थापित करें।

चुप रहना और पिछड़े रहना स्वयं की तबाही के कारण होंगे।

गुरु का उपाय करना लाभप्रद होगा।

कोई भी कार्य पानी का घूँट पीने के बाद करें।

पहले भाव में स्थित मंगल

फकीर या साधु का साथ परिवार के लिए शुभ न होगा।

मुफ्त माल या वस्तु पाने का कभी प्रयास न करें। यदि करेंगे तो समझ लें दूध में विष ग्रहण कर रहे हैं और शरीर में रक्त पानी बन जायेगा, भाग्य जल जायेगा।

गुरु का उपाय करें अर्थात् गुरु सम्बन्धी वस्तुयें (चने की दाल, बेसन से बनी वस्तुयें, हीरा, सोना आदि) मन्दिर में दान में दें। गुरु के उपाय से मंगल का कुप्रभाव कम होगा।

हाथी दाँत की वस्तुयें घर पर न रखें।

कदापि झूठ न बोलें।

शुक्र का उपाय करें अर्थात् शुक्र सम्बन्धी वस्तुयें (कर्पूर, घी, दही, सुगन्धित पदार्थ वस्त्र आदि) को जमीन में दबायें।

दूसरे भाव में स्थित मंगल

दोपहर में गुड़ और गेहूँ बच्चों को बाँटें।

दूसरों को पालते रहने से उन्नति हो, सम्पन्नता बढ़े। अत: दूजों को या सगे-सम्बन्धियों को अवश्य पालते रहें।

भाई को कभी न दुतकारें। समय-असमय उसकी सहायता करते रहें। यदि भाई का अपमान करेंगे या उसको दुतकारेंगे तो समझ लें अवनति का द्वार अपने लिए खोल रहे हैं।

चन्द्र सम्बन्धी वस्तुयें (चाँदी, चावल, दूध, पानी, सफेद वस्तुयें, धोती, अंगोछा आदि) को धार्मिक स्थान, मन्दिर व गुरुद्वारें आदि में रखें या दान में दें।

मृगछाला घर पर रखें।

माता व दादी का अपमान कदापि न करें।

ससुराल में कुआँ न हो तो बनवायें या प्याऊ आदि खुलवायें।

लाल रंग का रुमाल अपने पास रखें।

तीसरे भाव में स्थित मंगल

हठी व अकड़ू न बनें।

अय्याशी से बचें।

हाथी दाँत पास में या घर पर रखें।

चाँदी की अँगूठी बिना जोड़ वाली तर्जनी अंगुली में धारण करें।

चीनी और शहद का व्यापार कदापि न करें।

चौथे भाव में स्थित मंगल

प्रतिदिन प्रातः जल से दाँत साफ करें।

चन्द्र का उपाय करें बरगद (वटवृक्ष) की जड़ पर दूध में मीठा डालकर चढ़ायें।

वटवृक्ष पवर चढ़ाये हुए दूध से जो मिट्टी गीली हो उसका तिलक लगाने पर उदर विकार से मुक्ति मिल जायेगी।

बन्दर, माता और साधु की सेवा करें।

आग लगने की घटनायें अधिक होती हों तो घर, दुकान या फैक्ट्री की छत पर चीनी की खाली बोरियाँ रखें।

निस्संतान हों, स्त्री या सन्तान को कष्ट रहता हो तो मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर श्मशान में जाकर दबायें।

लम्बी बीमारी से मुक्ति पाने के लिए मृगछाला पर सोयें।

चाँदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।

घर का दक्षिणी द्वार लोहे की कील से कील दें।

काले, काने, लंगड़े, निस्संतान व्यक्ति एवं ढाक के वृक्ष से दूर रहें।

मंगल के मित्र ग्रहों गुरु, सूर्य व चन्द्र की वस्तुओं को स्थापित करें। सूर्य की वस्तुयें ताँबा, गुड़, गेहूँ, बन्दर, मक्खियाँ आदि चन्द्र की वस्तुयें कुआँ घोड़ा, चाँदी, मोती आदि एवं गुरु की वस्तुयें सोना, वृद्ध साधु, पुखराज आदि। सोना, ताँबा एवं चाँदी तीनों धातु की अंगूठी बनवाकर धारण करें।

चिड़ियों को मीठा डालें।

हाथी दाँत पास में रखें।

पाँचवें भाव में स्थित मंगल

रात में सिरहाने पानी रखकर सोयें।

परस्त्री गमन से बचें।

चाल-चलन ठीक रखें।

बड़े-बूढ़ों को साथ में रखें।

बुजुर्गों के नाम के श्राद्ध अवश्य करें।

दूध का दान करें।

नीम का वृक्ष रोपें।

छठे भाव में स्थित मंगल

शनि का ठपाय करें।

कन्याओं की पूजा करें एवं उनका आशीर्वाद लें।

सन्तान के लिए चन्द्र और बुध का उपाय करें। माता, लड़की, बहन, बुआ, फूफी एवं मौसी का सम्मान करें। उनके लिए कुछ करें।

कन्याओं को दूध, चावल एवं चाँदी का दान करना शुभ होगा।

सन्तान के जन्म पर मीठे के स्थान पर नमकीन बाँटें। जन्मदिन का उत्सव कभी न मनायें।

चाल-चलन ठीक रखें।

सातवें भाव में स्थित मंगल

भाई के बच्चों की सहायता करें।

शनि एवं शुक्र की वस्तुयें उचित ढंग से प्रयोग करने पर रक्त विकार, पीलिया और स्वास्थ्य ठीक रहे।

बहिन कभी भी घर आये बिना मीठे के कभी खाली वापिस न जाये।

विधवा लड़की, साली या बहिन साथ में रहे तो प्रात: कभी भी काम से निकलें तो उनको मीठा अवश्य दें।

ठोस चाँदी रखने से घर में सुख-सम्पत्ति बढ़े।

शनि का उपाय करें या छोटी दीवार बार-बार बनाकर गिराते रहने से शुभ फल प्राप्त हो।

बेल या लताओं वाले पौधे (क्रीपिंग प्लान्ट) घर पर न लगायें।

बुध सम्बन्धी वस्तुयें मुफ्त में न लें, घर में चमगादड़ न रहे, चौड़े पत्तों वाले वृक्ष न लगायें, तोता या मैना न पालें या उनका घोंसला घर पर न हो, सूखे फूल घर पर न रखें, कलईगिरी का कार्य न करें, ढोलक या तबला बार-बार न बजायें, माँस व शराब का सेवन न करें, घर की सीढ़ियाँ बार-बार न गिरायें और न बनायें, डाई बनाने

का कार्य ना करें एवं बकरी व बदसूरत गाय घर पर न पालें। घर पर खोखला बाँस या सूखा घास न रखें, सफेदी का कार्य ना करें। यदि उपर्युक्त सब कुछ करेंगे तो मंगल का अशुभ प्रभाव ही मिलेगा।

बुआ या बहिन को लाल कपड़े देते रहें।

चरित्र ठीक रखें।

आठवें भाव में स्थित मंगल

विधवा का आशीर्वाद लें।

रोटी सेंकने वाला तवा जब गर्म हो जाये तो उस पर ठण्डे पानी के छींटे मारने के बाद रोटी सेंकने से परिवार से रोग दूर हो।

गले में चाँदी धारण करें।

घर पर जमीन के नीचे भट्टी न बनायें।

घर का द्वार दक्षिण में न रखें।

तन्दूर में लगायी मीठी रोटी चालीस या तैंतालिस दिन तक कुत्ते को दें।

चौथे भाव में मंगल के स्थित होने पर जो उपाय बताये गये हैं, वे भी करें।

नौवें भाव में स्थित मंगल

भाई की स्त्री अर्थात् भाभी की सेवा करें।

बड़े भाई के साथ रहें, उनसे अलग न हों।

बुध की वस्तुओं को कुयें में डालें।

शुक्र की वस्तुयें जमीन में दबायें।

चन्द्र की वस्तुयें मन्दिर या गुरुद्वारे में दें।

लाल रंग का कपड़ा या रुमाल जेब में रखें।

दसवें भाव में स्थित मंगल

बाप-दादा की जायदाद न बेचें।

हिरण को पालना लाभकारी हो।

काला, काना और सन्तानहीन की सेवा करें।

दूध उबालते समय ध्यान रखें कि दूध उबले नहीं।

घर का सोना बेचने की नौबत न आने दें।

ग्यारहवें भाव में स्थित मंगल

पैतृक सम्पत्ति को कदापि न बेचें।

लड़के का जन्म होने पर ही शुभ फल मिलेगा।

सांसारिक कुत्तों (साले, दामाद और नाती) को पालें या कुत्ता पालें।

लहसुनिया धारण करें या केतु की वस्तुयें मन्दिर में दान करें।

बारहवें भाव में स्थित मंगल

प्रातः सबसे पहले शहद से मुख मीठा करें।

मंगल की वस्तुयें पास में न रखें।

खाकी रंग की टोपी या पगड़ी में सिर ढककर रखें।

प्रातः सबसे पहले शहद से मुख मीठा करें।

बड़े भाई को चाहिये कि ऐसे जातक को पानी के स्थान पर दूध पिलाये तथा अपने पास चन्द्रमा की वस्तुयें (चावल, चाँदी) रखें।

मीठा खायें और मीठा ही खिलाना शुभ होगा।

मीठी रोटी या दूध में खांड डालकर दरवेश, कुत्ते आदि को दें।

सूर्य को मीठा पानी का अर्घ्य दें।

मन्दिर या धर्म स्थान में बताशे का दान दें।

मेहमानों को पानी की अपेक्षा दूध पिलायें।

सिर पर चोटी रखें।

जातक के बड़े भाई को लाल रंग के वस्त्र नहीं पहनने चाहिये।

पहले भाव में स्थित बुध

एक जगह टिक कर रहें। इधर उधर न भटकें।

अण्डा व मांस का सेवन न करें। नशे लत से बचें।

ऐसे कार्य न करें जिसमें अपयश का भय हो।

हरे रंग की वस्तुओं से बचें।

मछली न मारें।

दूसरे भाव में स्थित बुध

साली का साथ न करें उससे सम्बन्ध न रखें।

नाक छेदन कराकर ९० दिन तक चाँदी पहने रखना या ९६ घण्टे तक छेद रखना लाभकारी होगा।

चन्द्र व गुरु की वस्तुयें मन्दिर में देना या चन्द्र व गुरु का उपाय करना लाभप्रद रहेगा।

फिटकरी से दाँत साफ करें।

भेड़, बकरी व तोता-तोती कभी न पालें।

तीसरे भाव में स्थित बुध

दुर्गा-पूजा करें।

कन्याओं का आशीर्वाद लें।

प्रतिदिन फिटकरी से दाँत साफ करें।

बुध से सम्बन्धित वस्तुओं का प्रयोग न करें।

पक्षियों की सेवा करें।

बकरी का दान करें।

केतु को स्थापित करें।

रात्रि में मूँग फिटकरी को नमकीन पानी में भिगोकर प्रात: जानवरों को तैंतालिस दिन तक बिना नागा डालें।

ढाक के चौड़े पत्ते दूध में धोकर घर से बाहर सुनसान स्थान पर दिन के समय एक गड्ढे में डालकर उसके ऊपर एक पत्थर का टुकड़ा रखकर मिट्टी डाल दें। जिस वस्तु से गड्ढा खोदें और जिस बर्तन में दूध लें उसे घर में वापिस न लायें। पत्थर का रंग जन्मपत्री के नौवें व ग्यारहवें भाव के स्वामी ग्रह विपरीत न हो। पत्ते भवन के मध्य या पश्चिमी दीवार की तह में भी दबा सकते हैं।

घर में लगा पत्थर दूध से प्रतिदिन धोयें।

पीले रंग की कौड़ियाँ जलाकर उनकी राख बहते पानी में बहायें।

दमें की दवाई मुफ्त में बाँटें।

बुध से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करें।

चौथे भाव में स्थित बुध

तोता, बकरी या भेड़ न पालें।

केशर को तैंतालिस दिन तक तिलक के रूप में मस्तक पर लगायें और खायें।

गुरु और सूर्य का उपाय करें।

चाँदी की जंजीर मन को शान्ति के लिए धारण करें।

धन-सम्पत्ति के लिये स्वर्ण को जंजीर धारण करें।

हरे रंग की वस्तुयें प्रयोग न करें एवं पेड़-पौधे घर पर न लगायें।

पाँचवें भाव में स्थित बुध

गले में ताँबा का पैसा धारण करें।

गौ पालन करने से सन्तान, स्त्री अपना भाग्य उत्तम होगा।

छठे भाव में स्थित बुध

शुभ कार्य करते समय कन्या का आशीष लेना लाभदायक रहेगा। पुष्प का शकुन भी शुभ है।

बुध अशुभ हो तो दूध की बोतल वीराने में दबा दें और यदि चन्द्र सहायक हो तो गंगाजल की बोतल उपजाऊ भूमि में दबाना सहायक होगा। शुक्र अशुभ होने पर यह उपाय अवश्य करें।

स्त्री के बाँयें हाथ में चाँदी की छल्ला धारण करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु को स्थापित करना बौद्धिक कार्यों में लाभप्रद रहेगा।

बहन या बेटी की ससुराल उत्तर दिशा में नहीं होनी चाहिये।

सातवें भाव में स्थित बुध

वहन को माता सदृश समझकर आदर व मान दें।

सट्टा कभी न खेलें।

बिगड़ी हुई साली से सम्बन्ध कदापित न रखें।

मोती गले में धारण करने से समुद्री यात्राओं से लाभ एवं शनि का छल्ला मध्यमिका अंगुली में धारण करने से स्त्री का कुटुम्ब धनी हो जाये।

पन्ना या हीरा धारण करें।

आठवें भाव में स्थित बुध

मिट्टी के बर्तन में देशी खांड या शहद भरकर वीराने में दवा दें।

सावुत मूँग ताँबे के बर्तन में भरकर उसका ढक्कन बन्द करके टाँका लगवाकर वहते पानी में बहा दें।

छत पर वर्षा का पानी या दूध रखें या लड़की की नाक में चाँदी का छल्ला पहनायें।

वुध अशुभ हो तो दूसरे भाव में स्थित ग्रह की वस्तुयें उस ग्रह के सम्बन्धी या पशु को दें जो वर्ष कुण्डली में दूसरे भाव में स्थित हो।

पूजा का स्थान बार-बार न बदलें।

घर की सीढ़ियाँ बार-बार तुड़वाकर न बनवायें।

मंगल की वस्तुयें श्मशान में दबायें।

कच्छा काले रंग का धारण करें।

नौवें भाव में स्थित बुध

लोहे की लाल रंग की गोलियाँ अपने पास में रखें।

मशरुम मिट्टी के बर्तन में रखकर मन्दिर में दे आयें।

दरिया के पानी में धुला, पीला कपड़ा घर में दबायें या चाँदी दबायें।

नाक छिदवायें।

तोता, बकरी न पालें और हरे रंग को प्रयोग में न लायें।

फकीर या साधु से कोई ताबीज न लें।

दसवें भाव में स्थित बुध

शराब, मांस व अण्डे का सेवन न करें।

शनि का उपाय करें।

घर पर प्लान्ट या तुलसी का पेड़ न लगायें।

ग्यारहवें भाव में स्थित बुध

खाली बर्तन ढककर न रखें।

किसी फकीर या साधु से ताबीज लेकर न धारण करें। ताबीज न लेना ही उत्तम है यदि लेंगे तो बर्बाद हो जायेंगे।

गले में ताँबे का पैसा धारण करें।

चौड़े पत्तों के पेड़-पौधे घर पर न लगायें।

बारहवें भाव में स्थित बुध

वाणी को वश में रखें।

झूठे वायदे करने की अपेक्षा दिया वायदा पूरा करें।

क्रोध न करें।

मस्तक पर केसर का तिलक तैंतालिस दिन तक लगायें या प्रतिदिन लगाने की आदत बनायें।

नाक छिदवायें।

बिना जोड़ का लोहे का छल्ला पहनना शुभ होगा। छल्ला किसी से मुफ्त न लें।

खाली घड़ा बहते पानी में बहायें।

काला-सफेद कुत्ता पालें। कुत्ता भूरे रंग का न हो।

गणेशजी की उपासना करें।

पीला धागा हर समय गले में पहने रखें।

दुगा पूजा करें या कन्याओं का आशीर्वाद लें।

पहले भाव में स्थित गुरु

स्त्री का सम्मान और पालना करें।

गौ पालन करें।

भूमि में मंगल की वस्तुयें दबायें।

किसी से कोई दान या सहायता न लें।

चन्द्रमा को स्थापित करें या उसका उपाय करें।

राजकोष से प्राप्त धन में से कुछ भाग तिजोरी में अवश्य रखें।

भाग्य पर विश्वास रखें।

दूसरे भाव में स्थित गुरु

दूसरों का भला करते रहने से स्वयं की उन्नति होगी।

गुरु की वस्तुयें पीले कपड़े में बाँधकर मन्दिर में दे आयें।

अतिथियों का अपमान न करके उनका स्वागत करें।
साँप को दूध पिलायें।
गुरु की वस्तुयें स्थापित करें या गुरु का उपाय करें।

तीसरे भाव में स्थित गुरु

दुर्गा-पूजा करें।
कन्याओं की सेवा करें या उनका आशीर्वाद लें।
कन्याओं की पूजा सदैव शुभ रहे।
दूसरों की चापलूसी कदापि न करें वरना गुरु का अशुभ फल मिलेगा।
हल्दी और केसर का तिलक लगायें।
घर के सामने गड्ढा हो तो भरवा दें।

चौथे भाव में स्थित गुरु

मन्दिर जाकर पूजा करें।
हवाई किले न बनायें।
पुरोहित से आशीर्वाद लें।
बड़ों की आज्ञा सदैव मानें और उनका अपमान न करें।
पीपल पर जल चढ़ायें या पीपल का पेड़ लगायें।
माँस और शराब का सेवन न करें। परस्त्री से यौन सम्बन्ध कदापि न बनायें।
राहु व केतु को अशुभ न होने दें।
किसी के सम्मुख नंगे न नहायें या शरीर न दिखायें।

पाँचवें भाव में स्थित गुरु

सिर पर चोटी रखें।
धर्म के नाम पर धन संग्रह न करें या दान न लें।
गणेश उपासना करें।
केतु का उपाय करें।
शराब, माँस व परस्त्री गमन से दूर रहें।
किसी से मुफ्त में कुछ न लें।
साधुओं की सेवा करें या मन्दिर की सफाई करें।

छठे भाव में स्थित गुरु

पुजारी को कपड़े दान में दें।
गुरु की वस्तुयें मन्दिर में दान करें।
बच्चों के साथ या उनकी सहायता से व्यापार करें।
बड़ो के नाम पर सदैव दान-पुण्य करते रहें।

चरित्र या चाल-चलन भ्रष्ट न होने दें।
केतु का उपाय करें।
कुत्ते को मीठी रोटियों डालें।
गणेश उपासना करें।
कन्याओं की पूजा करें।
पीपल के वृक्ष को पानी दें।
मुर्गा पालें या उनको खाने के लिए दाना दें।

सातवें भाव में स्थित गुरु

शिव उपासना करें।
चन्द्र का उपाय करें।
रत्तियाँ जो सोना तोलने के काम आती है, पीले कपड़े में बाँधकर या सोने के साथ रखें।
अय्याशी से बचें।
आवारा साधु के साथ से बचें। प्रयास करें कि धर्म प्रचार न करें।
युवावस्था में सन्तान के प्रति बेपरवाह न हों।
घर पर तुलसी की माला या तुलसी का पौधा न रखें।

आठवें भाव में स्थित गुरु

गुरु व शुक्र की वस्तुयें मन्दिर में दान करें।
गले में स्वर्ण धारण करें।
फकीर या साधु को दान देते रहें।
श्मशान में पीपल का पेड़ लगायें।
कहीं पर कोई मरने वाला हो तो वहाँ से हट जायें नहीं तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे।
पीली अथवा सफेद वस्तुओं का दान करें।

नौवें भाव में स्थित गुरु

सदैव सत्य बोलें।
प्रतिदिन देवदर्शन के लिए मन्दिर जायें।
धर्म विरोधी न बनें। धर्म का पालन करें।
शराब न पियें।
बुध की वस्तुयें बहते पानी में बहायें या विद्यालय या पाठशाला में दान में दें।
गंगा स्नान करें।
तीर्थ यात्रा अवश्य करें।

दसवें भाव में स्थित गुरु

नाक साफ करके कोई कार्य शुरू करें।

सिर ढककर रखें। यदि पगड़ी बाँधते हैं तो उस पर पीले केसर का तिलक लगायें।

ताँबे का सिक्का चालीस अथवा तैंतालिस दिन तक वहते पानी में बहायें।

मस्तक पर तैंतालिस दिन तक पीले केसर का तिलक लगायें।

सूर्यग्रहण पर शनि की वस्तुयें (बादाम, नारियल, उड़द व तेल) दान में दें।

किसी का भला न करें।

धार्मिक व्यक्ति, पीपल व पण्डित की सेवा न करें।

केतु या गुरु का उपाय करें।

पीले कपड़े व सोना न धारण करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित गुरु

कफन का दान करें। जब भी किसी की मृत्यु का प्रयास करें कि कफन दान में दें अर्थात् कफन दान में देने का अवसर न गवायें।

यदि किसी को वचन दें, तो उसे पूर्ण अवश्य करें। वचन न पूर्ण करने पर स्थिति बिगड़ेगी।

परिवार के साथ रहें। परिवार से अलग रहना अशुभ होगा।

शनि का उपाय करें या उसे स्थापित करें।

ईर्ष्या से बचें।

स्त्री को अलग न रखें।

चाल-चलन ठीक रखें।

धार्मिक बनें।

पीपल को जल चढ़ायें।

पिता के प्रयोग में लाये कपड़े काम में लाये।

शराब न पियें व माँस न खायें।

पाकेट में रुमाल रखें।

बारहवें भाव में स्थित गुरु

प्रतिदिन माथे पर केसर का तिलक लगायें।

सिर पर चोटी रखें और सिर को ढककर रखने का प्रयास करें।

कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व नाक को साफ करें।

गले में माला कभी न धारण करें।

गुरु व साधु का अपमान करने की अपेक्षा उनकी सेवा करें।

पीपल का पेड़ कभी न कटवायें।
बृहस्पति सम्बन्धी अशुभ कार्य कभी न करें।
किसी का बुरा न करें और न ही किसी के लिए दुर्वचन बोलें।
दूसरों का भला करने से अपनी भाग्य-वृद्धि हो।
अपव्यय से बचें।
अधार्मिक न बनें।
किसी को धोखा न दें।
झूठी गवाही न दें।

पहले भाव में स्थित शुक्र

प्रेम-प्यार व अय्याशी में अधिक संलग्न न रहें।
दिन में संभोग न करें।
गोमूत्र प्रयोग में लायें।
पत्नी को मस्तक में सोना धारण करना चाहिये।
ईश्वर पर विश्वास दृढ़ रखें।
दूसरों की सलाह अवश्य लें।
गुड़ न खायें।
काली गाय की सेवा करें।
दही से स्नान करें।
गौ ग्रास दें अर्थात् अपनी खुराक में से गाय, कुत्ते और कौवे को खाने को दें।

दूसरे भाव में स्थित शुक्र

मंगल की वस्तुयें प्रयोग करनी शुभ है।
चाल-चलन ठीक रखें एवं परस्त्री गमन से बचें।
दो किलो आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलायें।
दो सौ ग्राम गाय का पीला घी मन्दिर में दें।
चौपाये घरेलू पशु पालें।

तीसरे भाव में स्थित शुक्र

मंगल की वस्तुयें प्रयोग में लायें।
स्त्री का सम्मान करें। कभी भी उसे अपमानित न करें।
परस्त्री गमन से बचें।
घर में नृत्य और संगीत न बजने दें।

चौथे भाव में स्थित शुक्र

चन्द्र का उपाय या गुरु की वस्तुयें कुएँ में डालें।

घर में कुआँ न खुदवायें।

अपनी पत्नी से पुनः विवाह करें।

गुरु का उपाय करें।

आड़ू की गुठली में काला सुरमा भरकर जमीन में दबायें।

नशा न करें।

ऐब ढांपकर रखें और गुणों का बखान करें।

पाँचवें भाव में स्थित शुक्र

गाय और माता की सेवा करें।

हृदय में अपवित्रता न रखें।

चरित्र ठीक रखें।

गुप्तांग दूध-दही से धोते रहने से अशुभ शुक्र से बचाव होगा। गुप्तांग का स्थान साफ रखना चाहिये।

चन्द्र की वस्तुयें दूध व चाँदी सहायता करेंगी।

माता-पिता की इच्छा के विपरीत विवाह न करें।

छठे भाव में स्थित शुक्र

चाँदी की ठोस गोली पास में रखें।

पत्नी बीमार रहे तो गुप्तांग लाल दवाई से धोयें।

पत्नी नंगे पैर जमीन पर न चले। जुराब या चप्पल पहने रहे।

स्त्री बालों में सोने का हेयरक्लिप लगाकर रखे।

विवाह के समय सास-ससुर सोने के दो टुकड़े संकल्प करके दामाद को दें, तो सन्तान सुख में सहायक होगा।

चाल-चलन ठीक रखें। परस्त्री गमन से बचें।

स्त्री जाति का अपमान न करें।

सातवें भाव में स्थित शुक्र

गन्दे नाले में तैंतालिस दिन तक नीला फूल डालें।

लाल गाय की सेवा करें।

कांसे के बर्तन का दान शुक्रवार को मन्दिर में दें।

स्त्री बीमार हो तो उसके भार तुल्य या भार का दशांश के तुल्य ज्वार मन्दिर में दें।

माता-पिता का आशीर्वाद लें।

आठवें भाव में स्थित शुक्र

ताँबे का सिक्का या नीला फूल गन्दे नाले में तैंतालिस दिन तक डालें।

काली गाय की सेवा करें।
चाल-चलन ठीक रखें।
किसी की सौगन्ध न लें या जमानत न करें।
विवाह पच्चीस वर्ष के बाद करें।
मन्दिर में सिर झुकायें शत्रु कमजोर होगा।
स्त्री रोगी हो तो उसके भार तुल्य ज्वार मन्दिर में दान करें।
दान कभी न स्वीकार करें।

नौवें भाव में स्थित शुक्र

घर में चाँदी, शहद व घोड़ी स्थापित करें या चाँदी व शहद को नींव में दबायें।

आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नीम के वृक्ष तले चाँदी के चौकोर टुकड़े दबायें।

काली या लाल गाय की सेवा करें।

दसवें भाव में स्थित शुक्र

शराब व मांस का सेवन न करें।
शनि का उपाय करने से सहायता हो।
परस्त्री गमन से बचें।
अति कामुकता से बचें। संयम रखें। गुप्तांग दही से साफ करें।
घर की पश्चिमी दीवार कच्ची रखें।
मछली न मारें।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र

बुध का उपाय करें।
शनि व चन्द्र की वस्तुयें दवाई रूप में लें।
शनिवार को तेल का दान करें।
कपिला गाय की सेवा करें।
स्त्री को घर का कोष न सौंपे।
रूई व दही मन्दिर में दान करें।

बारहवें भाव में स्थित शुक्र

देशी घी का दीपक घर पर जलायें।
स्त्री अपने हाथों वीराने में नीला फूल या धूल दबाये तो सभी दुःख दूर हों।
स्त्री को मान-सम्मान व प्यार दें।
राहु की वस्तुओं का साथ व सम्बन्ध न रखें।
स्त्री के द्वारा या उसके नाम पर गौ दान करें।

पहले भाव में स्थित शनि

मद्य व माँस का सेवन न करें।

वीरान जगह पर भूमि के नीचे सुरमा दबायें।

वटवृक्ष (बरगद) का केले के वृक्ष के की जड़ में मीठा दूध चढ़ाकर गीली मिट्टी का तिलक लगायें।

बन्दर पालें या उसकी सेवा करें।

तवा, चिमटा व अंगीठी का दान करें।

झूठ न बोलें।

दूसरों की वस्तुओं पर कुदृष्टि न डालें।

दूसरे भाव में स्थित शनि

नंगे पांव मन्दिर जाकर निज भूलें मान लें।

साँप को दूध पिलायें।

शिवलिंग पर जल चढ़ायें।

काली या दो रंगी भैंस न पालें। भूरी भैंस पालें।

मस्तक पर कभी भी तेल न लगायें। दूध या दही का तिलक लगायें।

तीसरे भाव में स्थित शनि

कुत्ते की सेवा करें या दोहता, साला व जीजा की सेवा करें।

घर में कुत्ता अवश्य पालें।

केतु का उपाय करने पर धन-सम्पत्ति बढ़े।

घर की दहलीज लोहे की कीलों से कील दें।

नेत्रों की औषधि मुफ्त बांटने से दृष्टि दोष दूर हो।

भवन के अन्त में अन्धेरी कोठरी बनाना धन-सम्पत्ति के लिए सहायक होगा।

मांस या शराब का सेवन न करने पर आयु बढ़े।

पूर्व व दक्षिण में घर का मुख्य द्वार न रखें।

चौथे भाव में स्थित शनि

साँप को दूध पिलायें।

कौवों को रोटी डालें।

भैंस को पालें या रोटी डालें।

मजदूर की सेवा करें।

कुयें में दूध गिरायें।

परस्त्री गमन से बचें। विधवा स्त्री से सम्बन्ध बनायेंगे तो कंगाल हो जायेंगे।

शराब बहते पानी में बहायें।

रोग में शनि की वस्तुओं का प्रयोग करें।

साँप को न मारें।

रात्रि में भवन की नींव न रखें।

रात्रि में दूध न पियें।

हरे रंग का प्रयोग न करें।

काले रंग के वस्त्र न धारण करें।

पाँचवें भाव में स्थित शनि

पैतृक भवन की अंधेरी कोठरी में सूर्य (गुड़, ताँबा, भूरी भैंस, बन्दर), मंगल (सौंफ, खांड, शहद, लाल मूँगे, हथियार), चन्द्र (चावल, चाँदी, दूध कुंआ, घोड़ा) स्थापित करें।

अपने भार दशांश के तुल्य बादाम बहते पानी में बहायेंगे या धर्मस्थल में ले जाकर आधे घर लाकर रखें उन्हें खायें नहीं।

सन्तान के जन्म लेने पर मीठा न बाटें। या मीठा बांटें तो उसमें नमक लगा दें।

कुत्ता पालें।

बुध का उपाय करें।

अड़तालिस वर्ष से पूर्व निज़ भवन का निर्माण न करें।

छठे भाव में स्थित शनि

सरसों के तेल का भरा बर्तन पानी के भीतर जमीन के नीचे दबा दें। तेल में मुख अवश्य देख लें।

शनि सम्बन्धी कार्य कृष्ण पक्ष की रात्रि में करें।

साँप की सेवा से सन्तान सुख मिलेगा।

नारियल या बादाम बहते पानी में बहायें।

बुध का उपाय करें।

काला कुत्ता पालें या उसकी सेवा करें या रोटी दें।

चमड़े या लोहे की नई वस्तुयें न खरीदें, पुरानी वस्तुयें खरीद सकते हैं।

सातवें भाव में स्थित शनि

शनि सुप्त हो तो बांसुरी में खांड भरकर एकान्त स्थल में दबायें।

पहला भाव खाली हो तो शहद भरा बर्तन एकान्त में दबायें। यदि नहीं करेंगे तो पौत्र उत्पन्न होने के बाद से निर्धन हो जायेंगे।

काली गाय की सेवा करें।

भवन की दहलीज साफ रखें व उसकी पूजा करें।

शराब न पीयें व मांस न खायें।

परस्त्री गमन से सन्तान को कष्ट होगा, इससे बचें।

आठवें भाव में स्थित शनि

मिट्टी पर बैठकर स्नान न करें। पांव का नंगा तलवा भूमि पर स्नान करते समय नहीं लगाना चाहिये। पांव के तले पत्थर या लकड़ी होनी चाहिये।

चाँदी धारण करें। चाँदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।

शराब का सेवन न करें। माँस-मछली न खायें।

जैसा केतु होगा वैसी रक्षा होगी। राहु अशुभ फल करेगा।

चन्द्र शुभ हो तो बुध या शनिवार को आठ सौ ग्राम उड़द सरसों का तेल लगाकर पानी में बहायें। यदि चन्द्र अशुभ हो तो सोमवार को उड़द बहाने से पूर्व आठ सौ ग्राम दूध पानी में बहायें।

साँप को दूध पिलायें।

नौवें भाव में स्थित शनि

गुरु का उपाय करें।

माता-पिता की मृत्यु के उपरान्त यदि कष्ट हो तो घर में कहीं भी पत्थर लगायें।

घर की छत पर लकड़ी, ईधन और चौखट व्यर्थ में न रखें।

घर के पीछे कोने में अंधेरी कोठरी बनायें।

दसवें भाव में स्थित शनि

गुरु का उपाय करें।

शराब न पियें व माँस का सेवन न करें।

दस नेत्रहीनों को भोजन करायें।

गणेश उपासना करें।

किसी की हत्या कभी न करें और न करायें।

अड़तालिस वर्ष से पूर्व अपना भवन न बनायें।

ग्यारहवें भाव में स्थित शनि

तैंतालिस दिनों तक तेल या शराब प्रातःकाल में सूर्योदय समय धरती पर गिरायें।

शराब व मांस का सेवन कदापि न करें।

किसी भी कार्य से बाहर जायें तो पानी से भरा घड़ा सम्मुख रखें या दर्शन कर के जायें।

परस्त्री गमन न करें।

गुरु का उपाय करें।

किसी को धोखा न दें।

कामुकता से बचें अर्थात् संयम रखें।

घर पर चाँदी की ईंट रखें।

घर का द्वार दक्षिण में न रखें।

तेल में अपनी छाया देखकर तेल दान करें।

बारहवें भाव में स्थित शनि

झूठ न बोलें, शराब न पियें और न ही मांस खायें।

परस्त्री गमन न करें।

किसी को धोखा न करें।

घर के पिछवाड़े खिड़की या द्वार न रखें।

बारह बादाम काले कपड़े में बाँधकर लोहे के पात्र में बन्द करके आजीवन रख छोड़ें। उसे कभी खोलकर न देखें।

पहले भाव में स्थित राहु

चार सौ ग्राम सिक्का बहते पानी में बहायें।

काले नीले वस्त्र न पहनें।

बिल्ली की जेर नारंगी कपड़े में बाँधकर पास में रखें।

सूर्य संबंधी वस्तुओं का दान करें।

गले में चाँदी धारण करें। चौकारे चाँदी का टुकड़ा पाकेट में भी रख सकते हैं।

नारियल बहते पानी में बहायें।

दूध से स्नान करें।

दूसरे भाव में स्थित राहु

चाँदी की ठोस गोली जेब में रखें।

गुरू की वस्तुयें (सोना, केसर, पीली वस्तु) शरीर पर धारण करें।

माता से मधुर संबंध बनाकर रखें।

विवाहोपरान्त ससुराल से कोई बिजली का समान कदापि न लें।

मन्दिर में पाप या कुकर्म न करें।

हाथी के पैरों तले की मिट्टी कुएँ में गिरायें।

हल्दी या केसर का तिलक लगायें।

चाँदी का चौकोर टुकड़ा पूजा स्थल में रखें।

पानी का प्रबन्ध ईशान कोण में करें।

सोने के गहने धारण करें।

तीसरे भाव में स्थित राहु

हाथी दाँत पास में कदापि न रखें और न ही हाथी दाँत की वस्तुयें घर पर लायें।

चन्द्र का उपाय करें।

चौथे भाव में स्थित राहु

सीढ़ियों के नीचे रसोई न बनायें।

चाँदी धारण करें।

चार सौ ग्राम धनिया या बादाम या दोनों बहते पानी में बहायें।

मकान पूरा बनायें या मरम्मत करायें तो पूरी करायें। अधूरा कार्य न छोड़ें।

गंगा स्नान करें।

घर के आस-पास गन्दा पानी एकत्र न होने दें।

पाँचवें भाव में स्थित राहु

अपनी स्त्री के साथ पुनः फेरे लेने पर राहु की अशुभता दूर हो जाये।

चाँदी का हाथ घर पर रखें।

शराब, मांस व परस्त्री गमन से दूर रहें।

स्त्री के सिरहाने पाँच मूलियाँ रात में रखकर अगले दिन प्रातः मन्दिर में दान करें।

घर के प्रवेश द्वार की दहलीज के नीचे चाँदी का पत्तरा दबायें।

दूसरा विवाह कदापि न करें।

छठे भाव में स्थित राहु

काला कुत्ता पालें।

पॉकेट में सिक्के या काले कांच की गोली रखें।

भाई-बहिन का अहित न करें।

घर व कार्यालय में काले कांच की खिड़कियों में लगायें।

सातवें भाव में स्थित राहु

चार नारियल बहते पानी में बहायें।

बहते पानी में तैंतालिस दिन त्क एक सिक्का प्रतिदिन डालें।

गंगाजल एक बर्तन में भरकर चाँदी का टुकड़ा डालकर टांका लगाकर रखें। बर्तन का पानी खत्म न या सूखे तो पुनः भरकर रखें।

घर पर चाँदी की ईंट रखें।

विवाह इक्कीस वर्ष से पूर्व न करें। यदि विवाह इक्कीस वर्ष से पूर्व करे तो चाँदी के बर्तन में चाँदी का टुकड़ा व गंगाजल डालकर पति-पत्नी अपने पास रखें।

नौवें भाव में स्थित राहु

मन्दिर में माथा टेकें।
सर पर चोटी रखें।
केसर का प्रतिदिन तिलक लगायें।
सोना धारण करें।
परिवार का मुखिया न बनें।
कुत्ता पालें। एक कुत्ता मरे तो दूसरा पालें।
गुरु का उपाय करें।
ससुराल से सम्बन्ध न बिगाड़ें।
संयुक्त परिवार में रहें।

दसवें भाव में स्थित राहु

चातक सिर ढककर रखें।
मंगल का उपाय करें।
नीले व काले रंग की पकड़ी या टोपी धारण करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु

कभी-कभी भंगी को दान में कुछ न कुछ देते रहें।
गुरु का उपाय करें अर्थात् स्वर्ण धारण करें, केसर का तिलक लगायें।
गुरुवार को गुरु की वस्तुयें दान में दें और इस दिन प्याज न खायें।
लोहा शरीर पर स्थापित करें। चाँदी के गिलास में पीने की वस्तुयें प्रयोग में लायें अर्थात् पियें।

बारहवें भाव में स्थित राहु

घर के अन्दर में अंधेरी कोठरी बनायें।
रात्रि में सोते समय सिरहाने या तकिये के नीचे मंगल की वस्तुयें चीनी, सौंफ या मूँगा रखें।
खाना जहाँ बनायें, वहाँ बैठकर ही खायें।
कम सोचें। जिद्द या हठ न करें।

पहले भाव में स्थित केतु

काला-सफेद कुत्ता पालें।
चन्द्र का उपाय करें।
पॉकेट में लाल रुमाल रखें।
बन्दर को गुड़ खिलायें।
बुध का उपाय करें।

काला-सफेद कम्बल मन्दिर में दान देने पर सन्तान के कष्ट से मुक्ति मिले।
पैरों के अंगूठों में चाँदी धारण करें या सफेद धागा बाँधकर रखें।
प्रतिदिन केसर का तिलक लगायें।
गली के अन्तिम मकान में न रहें।

दूसरे भाव में स्थित केतु

माथे पर केसर का तिलक लगायें।
चाल-चलन अर्थात् चरित्र ठीक रखें।
नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं की सेवा करें।

तीसरे भाव में स्थित केतु

केसर का तिलक लगायें।
गुरु की वस्तुयें बहते पानी में बहायें।
आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शरीर पर स्वर्ण धारण करें।
सूर्य एवं चन्द्र की वस्तुयें बहते पानी में बहायें।

चौथे भाव में स्थित केतु

सूर्य की वस्तुयें कुल पुरोहित को दान में देकर आशीर्वाद लें।
गुरु की वस्तुयें बहते पानी में बहायें।
कुत्ता पालें।
मन की शान्ति के लिए चाँदी धारण करें।

पाँचवें भाव में स्थित केतु

चन्द्र व मंगल की वस्तुयें दूध, खाण्ड का दान करें।
गुरु का उपाय करें।
शनि की वस्तुयें ताले में न रखें।

छठे भाव में स्थित केतु

कुत्ता पालें।
सोने की अंगूठी बाँयें हाथ में पहनें।

सातवें भाव में स्थित केतु

झूठा वादा न करें, घमण्ड न करें और अपशब्द न कहें।
गुरु का उपाय करें।
केसर का तिलक लगायें।
चार दिन तक चार नीबू बहते पानी में बहायें।

आठवें भाव में स्थित केतु

चाल-चलन ठीक रखेंगे तो पत्नी का स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

गणेश उपासना करें।

कुत्ते को रोटी दें।

काला-सफेद कम्बल मन्दिर में दान करें। यदि केतु के साथ कोई और ग्रह स्थित हो तो उसकी वस्तुयें भी दान करें।

कान छिदवाकर सोना धारण करें।

केसर का तिलक लगायें।

नौवें भाव में स्थित केतु

यदि घर पर कुतिया बच्चे दे तो निस्सन्तान को सन्तान हो, नामर्द हो मर्द बन जाये।

कानों में सोना पहनें।

घर में किसी स्थान पर सोने का चौकोर पत्तर स्थापित करें।

कुत्ता पालें।

गुरु का उपाय करें।

दसवें भाव में स्थित केतु

चाँदी का बर्तन शहद से भरकर घर में रखें।

चाल-चलन ठीक रखें।

अड़तालिस वर्ष के बाद कुत्ता अवश्य पालें। कुत्ता पालना शुभ है।

परस्त्री गमन से बचना आवश्यक है।

गुरु का उपाय करें।

चन्द्र का उपाय करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित केतु

काला कुत्ता पालें।

ग्यारह मूली स्त्री के सिरहाने में रखकर प्रातः मन्दिर में दे दें। यह तैंतालिस दिन तक करें। मूली की संख्या कम या अधिक कर सकते हैं।

बुध की धातु या पन्ना रत्न कनिष्ठका अंगुली में धारण करें।

बारहवें भाव में स्थित केतु

गणेश उपासना करें।

कुत्ता पालें। यदि कुत्ता मर जाये तो दूसरा कुत्ता चालीस दिन में ले आयें।

सन्तान को कष्ट हो तो राहु का उपाय करें।

निस्सन्तान से भूमि न खरीदें।

चाल-चलन ठीक रखें।

सन्तान की चिन्ता करें।

चन्द्रमा बारहवें भाव में हो तो पण्डित या धार्मिक प्रवचन या कथावाचक को भोजन कराना या मुफ्त शिक्षा देने का प्रबन्ध करना अशुभ होगा। कहने का तात्पर्य है कि अन्तिम अवस्था (मरते समय) में कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं होगा। मृत्यु के समय शान्ति नहीं मिलेगी।

गुरु सातवें भाव में हो तो पुजारी को मुफ्त कपड़े न दें। यदि देंगे तो निर्धनता और निस्सन्तान होने का व्यर्थ के कारण बनेंगे।

शनि छठे भाव में अशुभ हो तो जब भतीजे या भतीजी का विवाह होगा तो वे निस्सन्तान, निर्धन व दुःखी होंगे। यदि चाचा अपनी आय से उनका विवाह करे तो फल शुभ हो। अशुभ समय में शनि की वस्तुओं का दान सहायता देगा; परन्तु दत्तक पुत्र से दान कराने पर अशुभ व हानि हो।

अन्य उपाय

१. अपने भोजन से गाय, कौवा व कुत्ते को तीन टुकड़े एक-एक करके प्रतिदिन खाने को दें।

२. भोजन रसोईघर में एक ओर बैठकर खायें या भोजन जहाँ बनायें वहाँ भी खायें। तो राहु के कुप्रभाव से बचेंगे व मंगल-राहु का शुभ प्रभाव मिलेगा।

३. रात्रि में थोड़ा जल किसी बर्तन में अपने सिरहाने रखकर सोयें और अगले दिन ऐसी जगह डाल दें जहाँ पर अपमान न हो। इस जल को अपने प्रयोग में कभी न लायें। ऐसा करने पर आपसी झगड़े, अपमान, रोग, अपयश और परेशानियों से बचेंगे।

४. यदि शनि सातवें भाव में हो तो अपनी चतुरता न छोड़ें। यदि छोड़ेंगे तो परेशान हो जायेंगे और दुःखी व व्याकुल रहना पड़ेगा।

दान कब करें

१. **उच्च ग्रह** की वस्तुओं का दान न करें और नीच ग्रह की वस्तुओं का दान किसी से न लें। यदि ऐसे करेंगे तो हानि होगी।

२. **चन्द्रमा छठे भाव में हो तो** पानी का दान या कुआँ, तालाब, बावड़ी खुदवाना, नल लगवाना, प्याऊ लगवाना, दूजों को पानी पिलाना, दूजों के आराम के लिए धन अपनी आय से देना वंशहीन या सन्तानहीन होना पड़े।

३. **शनि आठवें भाव में हो तो** सराय, होटल या ऐसा मकान न बनायें।

जो लोग मुफ्त आराम करें। ऐसा करेंगे तो आर्थिक तंगी होगी और बेघर भी होना पड़ सकता है।

४. **शनि पहले या गुरु पाँचवें हो तो** भिखारी को ताँबे का सिक्का दान देना ठीक नहीं है। यदि ऐसा करेंगे तो अशुभ समाचार मिलेंगे और बच्चों की मृत्यु हो जाये।

५. **गुरु दसवें हो और चन्द्रमा चौथे भाव में हो तो** धर्मस्थल बनवाना या धार्मिक कार्य करने पर निर्दोष होने पर भी प्राण दण्ड या सजा मिले।

६. **शुक्र नौवें भाव में हो तो** लोगों को मुफ्त सहायता या अनाथ बच्चों की सहायता न करें। यदि करेंगे तो निर्धन या कंगाल हो जायेंगे।

सन्तान सम्बन्धी उपाय

१. सन्तान उत्पन्न होने के चालीस-तैंतालिस दिन पूर्व शनि में औरत के सिरहाने रखकर प्रातः धर्म स्थल में पहुँचा देना लाभदायक है।

२. स्त्री के गर्भवती हो जाने के दिन से उसके बाजू पर लाल धागा बाँधें जो बाद में सन्तान उत्पन्न होने के उपरान्त बच्चे को बाँध दें। माता को पुनः नया लाल धागा बाँध दें। यह धागा बच्चे को अट्ठारह माह तक बाँधें रखें। यह बच्चे की आयु वृद्धि के लिए उत्तम है।

३. गाय ग्रास देने से भी सहायता मिलती है।

४. सन्तान वृद्धि के लिए गणेश उपासना उत्तम है।

५. राहु अशुभ होने पर सन्तान जन्म से पूर्व जौ का पानी बोतल में बन्द करके रख लेने पर प्रसव सरलता से हो जाता है।

६. घर से सौ या अधिक दिन बाहर रहना हो तो नदी पार करते समय ताँबे का सिक्का डालने से सन्तान कष्ट से रक्षा होती है।

७. दिन में मीठी रोटियाँ तन्दूर में लगवाकर कुत्ते को खिलायें। मीठी रोटी लोहे के तावे पर न बनाकर तन्दूर में ही लगवाये।

८. बच्चे उत्पन्न होकर न बचते हों तो उत्पन्न होने पर मीठा न बाँटकर नमकीन वस्तु बाँटें।

९. धर्मस्थान में गर्भ में आये बच्चे का प्रसव भी धर्मस्थान में होने पर बच्चा दीर्घायु होता है।

१०. केतु उच्च होने पर बच्चों के पालन-पोषण से परिवार में श्रीवृद्धि हर प्रकार से होती है।

११. शुक्र उच्च हो तो स्त्री सेवा से उन्नति और लाभ होता है।

१२. बच्चे के जन्म से पूर्व बर्तन में दूध व दूसरे बर्तन में खाण्ड स्त्री का

हाथ लगाकर रख लें। बच्चा बिना किसी भय के आराम से होगा। बाद में बर्तन समेत दोनों वस्तुयें धर्मस्थल में दे दें। अधिक प्रयोग में आने वाले बर्तन देने से लाभ अधिक रहेगा।

१३. भवन के पास कुआँ है तो उसमें श्रद्धासहित थोड़ा दूध डालते रहें। यदि नहीं डालेंगे तो अनिष्ट होगा और अशुभ फल ही मिलेंगे।

१४. भवन में कभी भी कीकर का वृक्ष न लगायें यदि लगायेंगे तो निस्सन्तान बना देगा। यदि भवन में पहले से ही कीकर का वृक्ष लगा हो तो ब्रह्ममुहूर्त के समय जब तारों की छांव हो तो चालीस दिन तक प्रत्येक शनिवार को उसकी जड़ में पानी डालें।

रोग मुक्ति के उपाय

घर के प्रत्येक सदस्य और अतिथियों की संख्या गिनकर एक जोड़ लें। कुल संख्या के अनुसार मीठी रोटी प्रत्येक माह एक बार कुत्तों या कौवों को खिलायें।

हलवा या पका हुआ फोका कद्दू जो अन्दर से खोखला हो धर्म स्थल में तीन या छह माह बाद एक बार अवश्य रखें अथवा यह उपाय वर्ष में एक बार तो अवश्य करें।

रात्रि में रोगी के पास ताँबे के दो सिक्के रखकर प्रात: किसी भंगी को चालीस-तैंतालिस दिन तक देते रहें। यह एक प्रकार का पूर्वजन्म का ऋण है जो चुकान ही पड़ेगा।

श्मशान या कब्रिस्तान जाने का कभी सुअवसर मिले तो एक दो पैसा वहाँ अवश्य गिरा दें। यह गुप्तदान है, जो समय पर काम आता है।

वर्ष कुण्डली में यदि केतु आठवें भाव में हो तो उस वर्ष पुत्र, कान, रीड़ की हड्डी व जोड़ों पर अशुभ प्रभाव होगा। इस अशुभता से बचने के लिए चन्द्र का उपाय करें। मन्दिर में पन्द्रह दिन तक बिना नागा चन्द्र की वस्तुयें दें या कुत्ते को पन्द्रह दिनों तक बिना नागा दूध पिलायें।

विविध लाभप्रद उपाय

यदि भवन का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में हो तो स्त्री को कष्ट, जेल जाने की नौबत आये या विदुर का जीवन जीना पड़े। घर में रोग हो और आर्थिक तंगी व धनहानि से दो-चार होना पड़े। वर्ष में एक बार या कभी-कभी बकरी का दान अवश्य करना चाहिये। बकरी दान में नहीं दे सकते तो बुध सम्बन्धी वस्तुओं का दान करें।

भवन के समीप पीपल का वृक्ष हो तो उसकी सेवा करनी चाहिये। यदि सेवा करेंगे तो पीपल की छाया जहाँ तक पड़ेगी, वहाँ तक भवन में अनिष्ट फल होंगे।

(औषधि प्रकरण)

पुत्र प्राप्ति

शिवलिंगी के बीज में गुड़ मिलाकर वटी बना लें। ऋतुधर्म के चौथे दिन इस गोली को खाकर पति-समागम करने से नारी अवश्य ही पुत्रवती बनती है।

गर्भपतन

रेंड़ की जड़ में गंधक का लेप लगाकर नव अंगुल लम्बी जड़ योनिमार्ग में रख देने से गर्भपात हो जाता है। इसका प्रयोग तीन दिनों तक करना चाहिये।

अवरुद्ध रजोधर्म

शहद के साथ कबूतर की बीट मिलाकर सेवन करने से स्त्रियों का रुका हुआ मासिक स्राव पुन: प्रवर्तित होने लगता है।

मासिकस्राव की अधिकता

लालचन्दन, मिश्री, घी और शहद में दूध मिलाकर पीने से अधिक रज:स्राव का होना रुक जाता है।

मृगी (अपस्मार)

एक मिट्टी की हाँड़ी में साँप की केंचुल भरकर उसका मुख बंद कर उसे आग पर चढ़ा दें। अब उसमें एक छोटा-सा छेद बना दें। उस छिद्र द्वारा धूम के निकलने पर जो रोगी उसका धुआँ लेता है, वह रोगमुक्त हो जाता है।

आमवात

तुलसी की सूखी पत्तियों का धूम्रपान करने से आमवात रोग में लाभ होता है।

वृश्चिक दंश

तुलसी की जड़ को पीसकर उसकी गोली बना लें। इसे पानी में घिसकर बिच्छू के डंक पर लगाने से पीड़ा दूर होती है। अथवा करंज के बीज, तिल और सरसों को एक साथ पीसकर लेप लगाने से दंशित स्थान की पीड़ा दूर हो जाती है।

हिचकी

एक पाव जल में चार माशे राई मिलाकर आग पर हल्का पका लें और छान कर पिला दें, तो हिचकी आना दूर होकर नींद आ जाती है।

गजपीपल, वच, कूठ और असगंध। इनका चूर्ण बनाकर भैंस के घी में मिला के और कानों पर लगायें तो कानों की लोर बढ़ जाती है।

आँखों की फूली, जाला एवं धुंध

जायफल में जस्ता मिलाकर उसमें मेंहदी की पत्तियों का रस डालकर सात

दिनों तक खरल में घोंट लें। उस अंजन को लगाने से फूली, माड़ा तथा दृष्टि का धुँधलापन जाता रहता है।

नेत्र से होने वाला जलस्राव

सफेद सोंठ की जड़ को घी में पीसकर अंजन लगाने से आँखों से पानी गिरना बंद हो जाता है।

नेत्रज्योतिवर्धन

मकोय की जड़ को तैल में पकाकर एक महीने तक खाने से आँखों की रोशनी बढ़ती है।

मूत्रकृच्छ्र

सज्जीखार में मट्ठा मिलाकर पान करने से रुक-रुककर पेशाब का आना ठीक हो जाता है।

नामर्दी

उटंगन का बीज एक पान लेकर भेड़ के दूध में खीर बनाकर लिंगद्रिय पर लेप लगाने से नपुंसकता दूर होती है।

स्वर को सुरीला बनाना

पीपल, सोंठ और बहेड़ा का छिलका लेकर सेंधा नमक मिला गोमूत्र में पीसकर पान करें। अथवा मिश्री और सोंठ के चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटने से स्वर सुरीला हो जाता है। अथवा निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण बनाकर तिलतैल में पकाकर खायें तो कंठस्वर किन्नर के समान हो जाता है।

बुद्धिवर्धन हेतु

पीपल, हरड़, सोंठ, वच, कालीमिर्च, सेंधानमक। इन सबको बराबर भाग में ले लें और इसमें सहिजन का रस मिला लें। तदनन्तर इसमें चौगुना दूध और बाइस तोले घी डालकर आग पर पकावें। पूरा दूध जल जाने पर नीचे उतार कर रख लें। इसे प्रतिदिन सेवन करने से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

यदि नारी के दूध में पीसकर आँखों में लगाया जाये तो आँखों का दर्द समाप्त हो जाता है।

यदि कपिला नामक वनौषधि, बिजौर की केसर एवं अदरक का रस निकाल कर, थोड़ा-सा गर्म करके धीरे-धीरे बालक के कान में डालें तो उसके कान का दर्द ठीक हो जाता है (यहाँ 'कपिला' का अर्थ कपिला गाय का दूध तथा बिजौरे की केसर का अर्थ बिजौरा नीबू का रस भी लगाया जाता है।)

प्राकृतिक रूप से पीले हुए आक के पत्ते पर तेल लगाकर, आग पर गर्म

करे, फिर उसे कूटकर रस निचोड़ लें। इस रस को बालक के कान में डालने से उसके कान का दर्द एवं अनेक प्रकार के अन्य कष्ट समाप्त हो जाते हैं।

स्त्री के दूध में रसौत घिसकर, उसमें थोड़ा-सा मधु मिलाकर बालक के कानों में डालने से कानों से पीव बहना, मवाद के कारण दुर्गन्ध आना तथा कर्णरोग से सम्बद्ध शिरोरोग में लाभ होता है।

रोगों की अचूक औषधियाँ

पाठकों के हितार्थ कुछ विशेष रोगों की अचूक औषधियाँ दी जा रही है—

बवासीर (अर्श)

कालीमिर्च, कटेरी के बीज, हींग, सुहागा तथा आमलासार गंधक। इन सबको समान भाग में लेकर उसमें सरसों का तेल मिलाकर धूनी दें। तीन दिनों तक कपिला गाय के मट्ठ की कांजी का पान करें। भाँग और गुड़ को एक साथ पीसकर उसकी गोली बना तीन दिनों तक गुदाद्वार में रखें तो बवासीर नष्ट हो जाता है।

धातुबन्ध

यदि पेशाब के साथ धातु निकलता हो तो आमला और गोंद को बराबर भाग लेकर गुड़ मिला लें और घोल बनाकर पीयें तो ठीक हो जाता है।

वमन

हरड़, सेंधानमक और अजवायन। इन सबका चूर्ण बनाकर ठण्डे जल से पीने पर बार-बार होने वाली उल्टी रुक जाती है।

नकसीर

अनार के दाने दही के साथ खाने पर नाक से निकलता हुआ रक्त बन्द हो जाता है। अथवा घी में मिश्री मिलाकर उसे नाक में सुंघायें।

पैर की बिवाई

पैर के पकने और दर्द होने पर एक भाग गूगुल आधा भाग मुर्दाशंख तथा दो भाग गाय का घी। गूगुल और मुर्दाशंख को पीसकर गाय के गरम घी में लें, जब वह मलहम के समान गाढ़ा हो जाय, तो उसे लगावें।

मस्सा-उन्मूलक लेप

कलमी शोरे में मूली का रस डालकर मस्से पर लगावें। लेप करने से पूर्व उसे काटकर लगाने से मस्से शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

रोमनाशक चूर्ण

मरी हुई जोंक को सुखाकर चालीस दिनों तक उसे घोड़े की लीद में रख छोड़ें। तत्पश्चात् उसे पीसकर जहाँ भी लगायें वहाँ बाल नहीं निकलते।

सूजाक

सेलखड़ी और भाँग को छ: ग्राम लेकर १० ग्राम दही में मिलाकर पीने से तीन दिनों में सूजाक दूर हो जाता है।

गर्भ-स्थापन

नागकेशर का चूर्ण १६ माशा की मात्रा में गाय-दुग्ध के साथ पान करने से गर्भधारण होता है। अथवा कदम्बपत्र, सफेद चंदन और कंटकारी की जड़ को बराबर भाग में लेकर बकरी के दूध में पीसकर तीन दिन या पाँच दिन पीने से अवश्य ही गर्भ का स्थापन होता है।

गर्भस्राव

कमलपुष्प का कन्द और काले तिल को दूध में मिश्री और शहद डालकर पीने से चलित गर्भ स्थिर हो जाता है। नीलकमल का डंठल, मिश्री और बड़ी कटेरी। इन्हें पीसकर पान करने से गर्भस्राव होने की संभवना नहीं रह जाती है।

जलोदर (उदर में जलवृद्धि)

चिरौंजी के साथ एक चावल की मात्रा में स्वर्ण भस्म मिलाकर खाने से जलोदर नष्ट होता है।

शिरदर्द नाशक लेप

राई, वच और अफीम को एक साथ पीसकर शिर पर लेप लगाने से सिर की पीड़ा दूर होती है।

नेत्रपीड़ा

एक रत्ती कपूर को बदाम के साथ पीसकर नेत्रों में लगाने से पीड़ा नहीं रहती।

मुख की झाँई

आँबा हल्दी और सेंधा नमक पीसकर उसमें नीबू का रस निचोड़ कर मुख पर मलने से मुख के दाग दूर हो जाते हैं। अथवा सरसों, सेंधानमक, लौंग और वच इन्हें मुख पर मलने से मुहाँसा आदि नष्ट होता है।

कम्पज्वर

तुलसी का रस, अदरक का रस और कालीमिर्च का चूर्ण। इन तीनों को एक साथ मिलाकर ३-३ घण्टे बाद गरम कर पिला देने से लाभ होता है।

जीर्णज्वर (पुरानी बुखार)

रोगी के शरीर में बकरी का रक्त प्रवेश करा देने पर पुराना-से-पुराना बुखार भी छूट जाता है।

तिजारी ज्वर

लटजीरा की हरी पत्तियों में गुड़ मिलाकर ज्वर आने से तीन घण्टा पूर्व खा लें। इसे १-१ घण्टे पर तीन बार खायें। अथवा बालछड़, नागरमोथा, केशर, कुटकी और पटोलपत्र। इन्हें बराबर भाग में कूटकर काढ़ा बनाकर पीने से तीन दिन के अंतराल पर आने वाला तिजारी ज्वर दूर हो जाता है।

चौथिया या चातुर्थिक ज्वर

हल्दी १ माशा, दारुहल्दी ३ माशा। इन दोनों का चूर्ण घी और सरसों के रस में मिलाकर दिन भर में ३-४ बार नाक से नस्य लें।

सर्दी-जुकाम

जिस समय नाक से अधिक जलस्राव हो रहा हो, उस समय तुलसी की सूखी पत्तियों का नस्य लेने से पानी गिरना रुक जाता है।

उदरशूल

भुनी हुई हींग, सेंधानमक, पिपरामूल, कंकोल मिर्च, आम की जड़ का छिलका, चित्रक और फिटकरी। इन्हें समान भाग में लेकर चूर्ण बना गरम जल के साथ लेने से उदरपीड़ा दूर होती है।

फुंसी-फोड़ा

मैनफल को पानी में घिसकर लगाने से फोड़ा शीघ्र ही पककर फूट जाता है। अथवा तीसी और रेवन्दचीनी को पानी में पीसकर गरम-गरम लगाने पर फोड़ा पक जाता है।

चर्मरोग

तूतिया, मुर्दाशंख, साल वृक्ष की राल तथा रेशमी वस्त्र का भस्म। इन्हें पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर लगाने से चर्मरोग नष्ट होता है।

आग से जलने पर

चूना, पानी और मिट्टी का तेल। इन्हें मिलाकर लगाने से आग की जलन शांत हो जाती है। अथवा खाने का चूना और तीसी का तेल एक में फेटकर लगाने पर आग की जलन नहीं रह जाती।

पसीना निकलने पर

पानी में नौशादर घोलकर शरीर पर मलने से पसीना आना रुक जाता है।

श्वास फूलना

स्याही सोख्ता कागज के शोरे में भिंगोकर रात्रि में रोगी के शयनकक्ष में जला देने पर साँस नहीं फूलती।

कास (खाँसी)

तुलसी की मंजरी को अदरक के रस में, पीसकर पीने से खाँसी दूर होती है। अथवा छोटी इलायची, रूमीमस्तगी, वंशलोचन, गुरुच का सत्त्व और मिश्री। इन सबको समान भाग में लेकर चूर्ण बना १ गोली १ रत्ती की मात्रा में सेवन करने से खाँसी का विनाश होता है।

दाद-खाज

कूठ, वायविडंग, पवांर के बीज, हल्दी, सेंधानमक और सरसों, इन्हें बराबर मात्रा में लेकर महीन चूर्ण बना डालें। इस चूर्ण में नीबू का रस मिलाकर लगाने से दाद, खाज, खुजली आदि रोग दूर होते हैं। अथवा तुलसी की पत्ती का रस और नीबू का रस एक में मिलाकर लगाने से भी दाद ठीक हो जाता है।

धातु-पुष्टि

सफेद मुसली, स्याह मुसली, तालमखान, बीजबन्द, सोंठ, मुलेठी और क्रौंचबीज। इन सबको समान भाग में लेकर महीन चूर्ण बना लें। इसी के बराबर मिश्री मिलाकर रात्रि में सोते समय सेवन करें। चूर्ण खाने के बाद दुग्धपान कर लें तो बलवीर्य की वृद्धि होकर धातुक्षीणता दूर होती है।

दन्त-कृमि

हरड़ के चूर्ण में मधु मिलाकर ताँबे के पात्र में उसे आग पर भून लें। उसकी गोली बनाकर दाँतों के नीचे दबाने से दाँत के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। अथवा दाँतों के नीचे सेहुड़ की जड़ रखने से भी उक्त फल मिलता है। इसके अतिरिक्त घुँघुची की जड़ कान में बाँध लेने पर भी सभी कीड़े मर जाते हैं।

दन्तरोग

दाँतों के सभी रोगों में गेरू, फिटकिरी और छोटी इलायची का मंजन करने से लाभ होता है। अथवा सेंधानमक, कालीमिर्च और बादाम के छिलके को जलाकर उसका मंजन बना दाँतों पर मलने से दंतपीड़ा दूर होती है।

बहरापन

दशमूल को तेल में पकाकर कान में टपकाने से बधिरता का नाश होता है। अथवा सफेद दूब को घी में पकाकर छान लें। उसे कानों में डालने पर बहरापन दूर होता है।

अर्श (बवासीर)

अब अर्श (बवासीर) के उपचार के बारे में सुनो—अजवायन, सोंठ, नागरपाठा, अनार की छाल एवं इन्द्रजौ के चूर्ण को गुड़ और मट्ठा के साथ पीने से बवासीर के मस्से में बढ़ोत्तरी नहीं होती।

जीरा, पोहकरमूल, पाठा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, चित्रक एवं हरड़—सबको पीसकर गुड़ में गोली बनाकर खाने से सभी तरह के बवासीर के मस्से दूर हो जाते हैं। मक्खन तथा तिलों का प्रतिदिन खाने या नागकेशर, मक्खन एवं तिलों का रोज सेवन करने या मट्ठे को प्रतिदिन पीने से खूनी बवासीर के मस्से से खून गिरना बन्द हो जाता है।

इन्द्रजौ को मधु में मिलाकर चाटने या नागरमोथा, मोचरस एवं बीज के चूर्ण को शहद के साथ चाटने से रक्तस्रावी बवासीर समाप्त हो जाता है।

विविध रोग

धनिया और सोंठ के काढ़े में कालीमिर्च, पीपल, चीता और जीरा का चूर्ण मिलाकर पीने से आम्रशूल एवं अजीर्ण दूर होता है।

पीपल, कालानमक एवं हरड़ का चूर्ण खाकर ऊपर से दही का पानी पीने से सभी तरह के शूल, गुल्म, अफरा एवं मन्दाग्नि दूर होती है।

दालचीनी, तेजपात, रास्ना, अगर, सहिजन का छाल, कूठ, खिरैटी एवं मिश्री—सबको अर्क में पीसकर देने या इन दवाओं से तेल को सिद्ध करके सेवन कराने से अजीर्ण तथा हैजा का विनाश होता है।

अब भस्मक आदि व्याधियों के उपचार के बारे में बताते हैं—भारी, चिकना, मंद, गीला, ठण्डा एवं स्थिर अन्न-पान तथा पित्त नाशक जुलाबों का सेवन कराके भस्मक रोग को शान्त करें। गूलर की पीसी हुई छाल को स्त्री के दूध में मिलाकर पियें। बाद में गाय के दूध में पकाकर पियें तो भस्मक रोग दूर होता है।

श्वेत अपामार्ग की जड़ एवं चावल की खीर या बिदारीकन्द को स्त्री के दूध में डालकर उसमें भैंस के घी को सिद्ध करके खाने से भस्मक रोग समाप्त हो जाता है।

बालक का खांसी एवं नया श्वास रोग में पिये धनिये में खांड मिलाकर तीन या पाँच रात तक लगातार सेवन करने से बालकों को खाँसी एवं श्वास रोग नष्ट होते हैं।

पीपल, जवासा, दाख, काकड़ासिंगी एवं पंवाड़ के बीज के चूर्ण को मधु तथा घी में मिलाकर देने से बालकों की खाँसी, श्वास, तमकश्वास और ज्वर की बीमारी दूर होती है।

काकड़ासिंगी, नागरमोथा एवं अतीस का चूर्ण शहद के साथ मिलाकर चाटने से बालकों की खांसी, ज्वर एवं छर्दि रोग दूर हो जाते हैं।

गुड़ के काढ़े में सोंठ, कालीमिर्च, पीपल तथा सेंधानमक मिलाकर गुनगुने (सुखोष्ण) पानी के साथ बच्चों को पिलाने से खांसी समाप्त हो जाती है।

पुराने अर्जुन वृक्ष के ऊर की आकाश बेल, अपामार्ग, सरसों, भांगरा तथा

सफेद वच। इन सबों का अर्क पीकर उसी अर्क में लोहे को घिसें। जब चन्दन के समान हो जाय, तो पात्र में रखें और दो दिन के बाद निकालकर मस्तक पर तिलक लगायें। इस चन्दन को लगाकर शत्रु के सामने जाय, तो शत्रुओं की बुद्धि स्तम्भित हो जाती है। चन्दन घिसते तथा लगाते समय 'ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नमः' इस चतुर्दश अक्षर के मन्त्र को पढ़ता जाय, तो कार्य की सिद्धि हो जाती है।

शत्रु को पराजित करने का (तांत्रिक प्रयोग)

मूल सहित प्याज या लहसुन के अर्क के साथ तांवे के पात्र में हरताल की घिसे और मुख में रख। इसमें सभी शत्रु पराजित हो जाते हैं। किन्तु पहले कृकलास (कृकरा=पिप्पली) का अर्क पीकर 'ॐ नमः चामुण्डाये, या 'ॐ नमः चामुण्डे भवाय' यह ग्यारह अक्षर का दारुल मन्त्र का जप करें।

आश्चर्य में डालने वाला प्रयोग

पूर्वोक्त (लहसुन या प्याज) अर्क से लाल कनेर के पुष्प का चित्र बनायें और उसी अर्क से दर्पण को साफ कर देखें तो गदहा-घोड़ा आदि का चित्र दिखाई दे।

ज्वालामुखी तथा अम्लवेंत का अर्क तथा लाल कनेर के पुष्प के अर्क से सम्पार्जन कर देखें तो मनुष्य, गदहा, घोड़ा तथा ऊँट का रूप दिखाई दे।

गाय के दूध के अर्क तथा पुष्प के अर्क में इन्द्रजलिक कज्जल मिलाकर अंजन करने से दर्पण में पूर्वजन्म का स्वरूप दिखाई देता है।

नारी की जरायु की धूप देने से पहले प्रकार की विधि द्वारा देखे हुए चित्र हँसते हुए दिखाई देते हैं और पुनः भैंसिया गूगुल की धूप देने से पहले की तरह स्वस्थ चित्र दिखाई देता है। उसी को सूँघने तथा आँखों में आंजन करने से भ्रान्ति दूर हो जाती है। उसी का धूप शय्या में देने से स्त्री-पुरुष अलग-अलग दिखाई देंगे।

भैंस के रक्त से पुष्प के आकार का एक चित्र खींचे और उसी के रक्त से दर्पण को माँज कर उसमें अपना मुख देखे तो भैंस के मुख की तरह अपना मुख दिखाई दे।

मारण विधि

हालाहल (विषभेद), लांगली (जलापीपर), चित्रक भूली, ऊर्णनाभि मकड़ी) तथा सफेद छिलकली। इन सबों के अर्क के वस्त्र को भिंगोकर जो धारण करता है, वह इस संसार से छुटकारा पाकर यमराज के घर का अतिथि हो जाता है अर्थात् वह मर जाता है।

गोपालाद (बाघ) के मांस का अर्क यत्नपूर्वक निकाले ले और पुनः उसे हलाहल के अर्क में मिला ले। इसके बाद इस महारस को चमेली के अर्क में मिलाकर पान कराये। इस अर्क को जो व्यक्ति पान करता है, वह एक ही बार स्त्री के साथ रमण करता है अर्थात् मर जाता है।

ऐसा करने पर उस वैद्य की प्रशंसा करते हैं कि क्या यह वैद्य धनवन्तरि है, जो रक्त का वमन और विरेचन करने लगता है और अनेक प्रकार के दुष्ट दुःखों से दुःखित होकर मर जाता है।

अदृश्य करने की विधि

विडालकंटक (गोखरू), शहद, कलिहारी, नवीन केशर। इन औषधों को योगिनी (धूसरी या जटामांसी) के अर्क में मिलाकर अन्धेरे में घोटें। इसके बाद गुटिका बनाकर तीन तरह के कपड़े में रख कर मुख में रक्खे। इस वटी को मुख में रखने वाला अदृश्य हो जाता है।

स्रोताऽञ्जन को घृतकुमारी के अर्क में सात बार भावित करें और शराब के (ढकना) में रखकर रसोई घर में पुटपाक विधि से अनुसार उसे पका लें। इसका अंजन लगाने से अदृश्य हो जाता है और मिटा देने से पुनः दिखाई देने लगता है।

अदृश्यकरण करते समय निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ते रहना चाहिये—

'तारा नमो डामरायादृश्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा' इति।

मोहनकरण विधि

काले धतूरे का पञ्चांग (जड़, छाल, बीज, पत्र) का अर्क काले साँप के साथ निकालकर उसको शम्भु के अस्त्र से भावित कर उसका धूप जिसको दिया जाय, तो वह मनुष्य हो या वाहन हो, मोहित हो जाता है।

रुद्रप्रिय (धत्तूर) के बीज के अर्क से हरिताल को दश बार भावित करें और उसकी गोली बना लें। यह गोली जिसको खिलायी जाय वह मोहित हो जाता है।

गुरुहेली, कामफली (आम्र फल विशेष), कठूमर तथा भूफली, इन सबों को अविवाहित कन्या तथा पुरुष के मूत्र से सात बार भावित करें और सुखा लें। इसके बाद धत्तूर के अर्क में भावित कर गोली बना लें। इस गोली का तिलक मस्तक पर लगाने से तीनों भुवन के लोगों को मोहित कर लेता है।

अग्नि स्तम्भन करने की विधि

रक्तपा (जोंक), भेक (मेढ़क), शशिज (कुमुदिनी) तथा पाढ़का। इन सबों का अर्क निकाल कर तेल निर्माण, विधि के अनुसार तेल सिद्ध करें। तेल में पकाते समय जल के स्थान पर अर्क डालकर पकायें।

इस सिद्ध तेल को पैर में लगाकर अंगारों के ऊपर जमीन की तरह चल सकता है। अर्थात् इस तेल को पैरों में लेप कर आग पर चलने से पैर नहीं जलते हैं।

घृत के साथ गन्ने का रस पीकर तगर तथा वच चबा ले और पुनः गरम लोहे को निगलें तो मुख में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है अर्थात् गरम लोहा मुख को नहीं जलाता है।

उच्चटा (उटंगन) के अर्क से सम्पूर्ण अंग में लेप करें। इसके बाद अंगार आदि पर घूमने पर भी कष्ट नहीं होता है। लेप करते समय इस मन्त्र को पढ़े—**'ॐ तारकेश्वर वज्रस्यसामृतं कुरु स्वाहा।'** इस मन्त्र को अग्निस्तम्भन कर्म करने के लिए भी प्रयोग करें।

जल स्तम्भन की विधि

साँप की आँख तथा मुख का रक्त चाँदनी, सूर्य के प्रकाश तथा अग्नि कें प्रकार में लेकर जल के मध्य में अपने घर की जगह पर्यटन करें। अर्थात् जल के ऊपर घूमने पर जल में न डूबे।

सफेद रत्ती का (घुँघुची) की कुसुम के रस में पीस कर वस्त्र को रंग लें और उससे अपने अंग को ढाँक लें। ऐसा करने पर अथाह जल के बीच में भी वह अपनी इच्छा के अनुसार ठहरा रहे। उसके अर्क को पीने से जल को स्तम्भित करने की सिद्धि हो जाती है।

भैरवीय कपाल (मनुष्य की खोपड़ी) का चूर्ण तथा लिसोड़ा का फल पीसकर चमड़े के ऊपर दो अंगुल मोटा लेप लगायें या बावली में फेंक कर उसके ऊपर बैठ जाय। इस प्रकार जो इसके ऊपर बैठता है, वह जल में नहीं डूबता है।

उन्नमत बनाने वाली विधि

ऊर्णानाभि (मकड़ी), षड्विन्दु (षड्विन्दु नामक कीट), इन दोनों को बराबर कृष्णाकण्टकी (कृष्ण वर्ण कटेरी) लेकर उसके अर्क में पूर्वोक्त दोनों चीजों को अच्छी तरह भावित करें।

इसके बाद इसको पूरे शरीर पर छिड़क दें। एक सप्ताह में पूरे शरीर में स्फोट (पोड़े) निकल आते हैं और वह व्यक्ति इसी रोग से मर जाता है।

यदि उसके शरीर के ऊपर नीलकमल तथा मोर के पंखों का लेप लगा दिया जाय, तो फोड़े निकलना बन्द हो जायेगा और कष्ट भी दूर हो जायेगा।

भौमवार को भरमी नक्षत्र में जो व्यक्ति मरे उसके भस्म को लेकर रख लें और उसको शत्रु के विष्ठा में मिलाकर ढकनों में बन्द कर मृत के बाल सफेद कर निर्जन घर में रख दें। ऐसा करने से जितनी देर में विष्ठा सूखेगी उतनी देर में शत्रु की मृत्यु हो जायेगी।

इस विधि को करते समय इस मन्त्र को पढ़ता जाय **'ॐ तारो नमो भगवते ॐ डामरेश्वराय अमुकं मारय मारय ठः ठः।**

भौमवार को भरणी नक्षत्र में मरे हुए व्यक्ति के भस्म को धत्तूर के अर्क से भावित करें और खान-पान में दें। खान-पान के द्वारा पेट के अन्दर चले जाने से रोगी उन्मुत्त हो जाता है और यदि मिश्री मिलाकर गाय का दूध पिलाया जाय, तो वह स्वस्थ हो जाता है।

लवमुखी, रुद्रहार (नागदमनी) तथा काँटों समेत कण्टकारी। इस सबों को दक्षिण दिशा में पड़ी हुई शत्रु की विष्ठा को मिलाकर शत्रु के सोने के बिस्तर में रख दें या धूप दें, तो शत्रु ही पागल हो जाता है। मनुष्य की खोपड़ी को दूध में घिस कर शत्रु की शय्या पर छोड़ दें, तो भी वह पागल हो जाता है।

दूददेश गमन के साधन

पुष्य या ज्येष्ठा नक्षत्र के सूर्य होने पर निकाले हुए सरफोंका, तालमखाना, काकजंघा, भाँगरा तथा चित्रक का अर्क निकाल लें। इस अर्क को पीने तथा इन्हीं सबों की जड़ को कमर में बाँधने से मनुष्य बिना परिश्रम के ही पृथ्वी के ऊपर वायु की तरह परिभ्रमण करने लगता है।

सफेद काकजंघा, कामफली, काली गाय का दूध, पत्रवृक्ष (भोजपत्र) की छाल (या पत्रज की छाल) इन सबों को पीस कर तथा पैर में लेप कर मनुष्य एक सौ योजन (चार सौ कोस) जा सकता है।

सफेद मदार की जड़, सफेद बाँस की जड़ तथा गोरोचन। इन सबों को बकरी के मक्खन के साथ पुष्प नक्षत्र में पकाकर पैरों के तलवों में लेप कर चलने से अपनी इच्छा के अनुसार मार्ग में चल सकता है।

बुद्धि को भ्रम में डालने वाले योग

भ्रामरी (भौंरी) का अर्क पिला कर बाद में उसी अर्क को सुँघाये। इसके बाद मुर्दे के मुख में रक्खे हुए काले गुग्गुल का धूप चिता की अग्नि दें। पश्चात् प्रेताहित (प्रेत के लिए हितकर राल) का धूप देने से संसार व्याकुल हो जाता है।

काला अगर, हरताल, धतूरे का फल, वच, मुर्गी का अण्डा। इन सबों का धूप देने से सभी प्राणी व्याकुल हो जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं है।

शंकरजी का प्रिय फूल धत्तूर का पञ्चाग (छाल, जड़, फूल, फल, काष्ठ) भैंसे के रक्त में इक्कीस बार भावित करें और उसमें इन सबों का आठवाँ भाग वत्सनाभ मिलाकर धूप देवें। यह धूप सभी लोगों की चेष्टा को हर लेता है और पुरुष लोहे के समान आकृति वाला हो जाता है।

तत्काल मरे हुए मुर्दे के ग्रीवा का अर्क निकाल कर उसमें सफा पुराने कपड़े को भिंगोर पोटली बना दें।

इसके बाद उस पोटली को मजबूत बाँस की कील में गाड़ कर सोये हुए (संभोग करने वाले स्त्री-पुरुष) के शय्या पर रख दें।

(ऐसा करने से दोनों स्त्री-पुरुष) अलग हो जाते हैं।

समुद्र में मिलने वाली नदी के तीर की मिट्टी को लेकर कुत्ते के संभोग काल के वीर्य में मिलाकर बेर के बराबर गुटिका बनावें। इस गोली को देने से सम्भोग-काल

में स्त्री-पुरुष के सभी आसन बँध जाते हैं और उसी के अर्क को पीने से बन्धन खुल जाते हैं।

भूख बढ़ाने वाले योग

चित्रक का अर्क निकालकर पीने के बाद भोजन करें। अथवा मदार के फूलों की ढोंढ़ी का अर्क पीकर तथा थोड़ा आसन पर छिड़क कर घृत के साथ जो भोजन करता है, वह भीमसेन की तरह अधिक अन्न खाता है। अर्थात् उसकी भूख बढ़ जाती है।

सायंकाल बहेड़े के वृक्ष को निमन्त्रण देकर प्रात:काल उसके पत्तों को तोड़ लाये और उसका अर्क निकाले। उस अर्क को दक्षिण जंघा में लगाने से बीस मनुष्य के बराबर भोजन कर सकता हैं।

आक के वृक्ष को सायंकाल निमन्त्रण देकर प्रात:काल उसके एक सौ फूल की माला को सिर पर बाँधें और कृपणता को छोड़कर भीम की तरह भोजन करे। अर्थात् इस प्रकार के प्रयोग करने से भूख बढ़ती हैं।

भूख को रोकने वाले योग

गणेशप्रिय (मूत्राकणी), तुरङ्गाह (अश्वगन्धा), मूली नीलकमल की जड़ तथा कसेरू को अच्छी तरह दूध में पकाकर खीर बनावें। इस खीर को घी मिलाकर सेवन करें तो एक माह तक भूख नहीं लगती है।

गूलर, शमी, जामुन का बीज, मूली तथा शिरीष का बीज। इन सबों का चूर्ण घृत के साथ जो खाता है, उसको १५ दिन तक भूख-प्यास नहीं लगती है।

तालमखाना के बीज, भैंस का दूध तथा मधु मिलाकर सेवन करने से १२ दिन तक भूख का निवारण होता है।

चोर आदि का भय दूर करने की विधि

लौह भस्म चार माशे तथा पाषाण भेद चार माशे का अर्क निकाले और उस अर्क से पाषाण भेद के पत्ते या लोहे के पत्र को एक हजार बार सींचें और उस पर इस मन्त्र को लिखें **'ॐ नमस्ते चोरिणि पिशाचिनि शमय शमय स्वाहा'**। यह बीस अक्षर का मन्त्र भय तथा कुष्ठ को नाश करता है।

इस मन्त्र के प्रभाव से कोई भी व्यक्ति मेष का शब्द भी नहीं सुन सकता। **'ॐ नमो योगिनिद्रे विष्णुमये सार्वान्द्रिय निद्रय स्वाहा।'**

इस बीस अक्षर के मन्त्र को जप कर गुड़ तथा पिप्पली की बलि देने से सम्पूर्ण संसार निद्रित हो जाता है।

पहले वृद्धदारु (विधारा) का अर्क पीकर धत्तूर भिंगाये हुए पानी को आँखों में लगाये तो वह मनुष्य एक महीन में दूसरे के नेत्रों को जीत लेता है अर्थात् उसको कोई देख नहीं सकता है, साथ ही रात को भी देखने लगता है।

'ॐ नमः ताराय ब्रह्मवेषम् रक्ष रक्ष ठः ठः स्वाहा' यह चौदह अक्षरों का मन्त्र पञ्चांग विधि (ब्रह्मचर्य, यम, नियमादि विधि) से जपे तो सिद्ध हो जाता है।

पत्थर के बराबर-बराबर सात टुकड़ों को लेकर कमर में बाँध ले और मुट्ठी में भटकटैया को लेकर और उसी का अर्क पैरों में लगाकर ले तो कार्य सिद्ध हो जाता है अर्थात् चौर्यकर्म में सफलता मिलती है।

धतूरे का अर्क पीने से शीघ्र ही चित्त विक्षिप्त हो जाता है। आपस में लड़ाई-झगड़ा होने लगता है। यह प्रयोग चोरों को रोकने के लिए बहुत अच्छा है।

ब्रह्मा के द्वारा वर प्राप्त कठिल्लक (करैला) का अर्क घर में छिड़कने या रखने से चोरों का भय नहीं होता है। साथ ही जो करैला के सम्बन्ध में ब्रह्मा के वरदान को नित्य स्मरण करता है, उन लोगों को भी चोर का भय नहीं होता।

सभी कार्यों को सिद्ध करने की विधि

हे देवि! श्री बीज काम बीज और लज्जा वीज अर्थात् 'श्रीं', 'क्लीं' तथा ह्रीं का दश हजार जप करने से कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

मिट्टी, ताँबा या भोजपत्र पर लाल चन्दन से षट्कोण यन्त्र बनायें और बीच में ऊपर लिखे बीज मन्त्र को लिखे।

इस दिव्य यन्त्र को गले में धारण करने से सभी अनिष्ट दूर हो जाते हैं और सभी देवता प्रसन्न दूर हो जाते हैं।

हे देवि! इस संसार को हमेशा विपत्तियाँ घेरी रहती हैं। अत: विपत्तियों से जो वचेगा, चाहे वह इस यन्त्र को धारण करें।

इस यन्त्र को धारण करने से अनेक प्रकार के रोग, शोक, महामारी (संक्रामक रोग—हैजा, प्लेग, चेचक आद रोग दूर हो जाते हैं।

इस यन्त्र को धारण करने से सैंकड़ों मांगलिक कार्य सिद्ध होते हैं। यह मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता। जो कुछ मैंने कहा है, वह सब बिलकुल सत्य है अत: यत्नपूर्वक इस यन्त्र की पूजा करके इसे धारण करें।

नाड़ियों को पोषण करने वाला गण

तिलपर्णी (रक्तचन्दन), समुद्रफल तथा नव प्रकार के समुद्र की अस्थि (शंख, शुक्ति आदि), ये सब शिराओं के पोषण गण हैं।

वमन कराने वाले गण

मालकांगनी हेमह्वा (चोक), धत्तूर, नागदमनी का फल, स्वर्णमाक्षिक तथा देवदाली। ये सब वागनगण (वमन कराने वाले गण) हैं।

रंगने वाला गण अब अनेक प्रकार के बुखार के उपायों का वर्णन करते हैं—

नागरमोथा, लालचन्दन, वसा, नेत्रबालों, मुलहठी तथा गिलोय—इनका काढ़ा पित्त, तृषा, दाह एवं बुखार को दूर करता है।

अडूसा, आंवला, पीपल एवं चीता–ये समस्त गण दीपने, पाचन, भेदन एवं सभी तरह के कफ-बुखार को दूर करने वाले हैं।

कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी एवं पीपल–इन सबको मधु में मिलाकर चटनी बनायें। यह चटनी बुखार, श्वास, खांसी एवं मंदाग्नि को दूर करती है।

मुलहठी, अन्तमूल, दाख, महुआ, चन्दन, सफेद कमल, खंभारी, पद्माख, लोध, हरड़ा, आंवला, कमलकेशर, फालसा एवं कलम की डण्डी—इनके क्वाथ (काढ़ा) में शहद और खांड़ मिलाकर रात में पीने से तंदुरुस्ती बढ़ती है। साथ ही जैसे हवा बादल को छिन्न-भिन्न कर देती हैं, उसी प्रकार यह काढ़ा वात, पित्त ज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा, अरुचि, भ्रम एवं रक्तपित्त को नष्ट कर देता है।

अतिसार

अब दस्त को रोकने का उपचार बताते हैं—बेलगिरी, धाय के फूल, नेत्रबाला, लोध एवं गजपीपल—इन सबका काढ़ा बनाकर उसमें मधु (शहद) मिलाकर पिलाने से दस्त से लाभ होता है।

काकोली, गजपीपल एवं लोध—इन सबको बराबर मात्रा में लेकर काढ़ा बनायें। फिर उसमें शहद मिलाकर पीने से दस्त (अतिसार) समाप्त हो जाता है।

धान की खील, सेंधानमक एवं आम की गुठली—सभी को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर शहद के साथ देने से बालक का छर्दि और अतिसार (दस्त) रोग दूर होता है।

बराबर-बराबर मात्रा में आम की गुठली, लोध एवं आंवला के चूर्ण को भैंस के छाछ (मट्ठा) में मिलाकर पिलाने से अतिसार ठीक हो जाते हैं।

त्रायमाण, रसौत एवं नागरमोथा के चूर्ण में मद्य मिलाकर चटाने से तृषा, छर्दि तथा दस्त जरूर दूर हो जाते हैं।

धाय के फूल बेलगिरी, धनिया, लोध, इन्द्रजौ एवं नेत्रबाला के चूर्ण में शहद मिलाकर खिलाने से बुखार और अतिसार दूर होता है।

लोध, पीपल एवं नेत्रबाला का चूर्ण या श्रीरस और धाय के फूलों का चूर्ण शहद के साथ देने से दस्त में फायदा होता है।

बायबिडंग, अजमोद एवं पीपल के चूर्ण गुनगुने गर्म जल के साथ पिलाने से आमातिसार में लाभ होता है।

संग्रहणी

अब संग्रहणी रोग के उपचार के सम्बन्ध में बताते हैं—अजवायन, जीरा,

सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, इन्द्रजौ एवं सोंठ—इन सबको चूर्ण करके मधु के साथ देने से उसका ग्रहणी रोग दूर हो जाता है (सोंठ का उल्लेख दो बार हुआ है, इसलिए सोंठ को अन्य वस्तुओं से दोगुनी मात्रा में लेनी चाहिये।)

वैद्य द्वारा दिये गये पीपल, भाग एवं सोंठ का चूर्ण ग्रहणी से ग्रस्त को स्वस्थ कर देता है।

सोंठ, नागरमोथा, बेलगिरी, चीता की जड़, पीपलामूल तथा हरड़ का चूर्ण बनाकर मधु मिलाकर चाटने से कफ सम्बन्धी ग्रहणी रोग दूर होता है।

जो मनुष्य पौष्टिक तथा संतुलित भोजन लेता है तथा सोंठ एवं बेलगिरी के चूर्ण को गुड़ के साथ सेवन करता है, वह त्रिदोष-ग्रहणी से मुक्त हो जाता है, इसमें संदेह नहीं है।

शहद के साथ नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी एवं इन्द्रजौ के चूर्ण को चाटने से त्रिदोषज अतिसार समाप्त हो जाता है।

मोचरस, मंजीठ, धाय के फूल एवं कमल केशर—सबको पीसकर काढ़ा बनाकर पीने से रक्तातिसार दूर होता है।

सोंठ, अतीस, नागरमोथा, नेत्रबाला एवं इन्द्रजौ का काढ़ा बनाकर सुबह के समय बालक को पिलाने से सभी प्रकार का अतिसार खत्म हो जाता है।

लोध, इन्द्रजौ धनिया, आँवला, नेत्रबाला तथा नागरमोथा के चूर्ण के मधु में मिलाकर बच्चे को देने से ज्वरातिसार समाप्त होता है।

हल्दी, सरल, देवदारु, कटैली, गजपीपल, पिठवन तथा शतावरी के चूर्ण को मधु एवं घी में मिलाकर चाटे यह भूख को जगाता है तथा बालकों के ग्रहणी दोष वातरोग, कामला, ज्वरातिसार एवं पाण्डु आदि सभी रोगों को दूर करता है।

हाऊबेर या नेत्रबाला के चूर्ण को खांड़ तथा मधु में मिलाकर चावल के पानी के साथ देने से रक्तातिसार, खांसी, छर्दि आदि रोग दूर होता है।

बवासीर

कटेली, लौंग तथा नागकेशर के चूर्ण में मधु मिलाकर देने से उसकी पाँचों किस्म की खाँसी दूर हो जाती है।

काकाड़ासिंगी तथा मूली के बीजों को पीसकर चूर्ण बनाकर उसमें घी एवं मधु मिलाकर खिलाने से भयंकर खाँसी दूर हो जाती है।

खाँसी एवं श्वास रोग में बंसलोचन चूर्ण को शहद के साथ चटाने से भी लाभ होता है।

बायबिडंग (भाभीरंग) के चूर्ण या पोहकमूल तथा छोटे सहिजन के फल के चूर्ण या मूषापर्णी के चूर्ण को मधु के साथ चटाने से व्यक्ति कृमिरोग से मुक्त हो जाता है।

पोहकमूल, अतीस, काकड़सींगी, पीपल तथा जवासा के चूर्ण को मधु में मिलाकर देने से बालकों की पाँचों तरह की खाँसी दूर हो जाती है।

नागरमोथा, अतीस, अडूसा, पीपल एवं काकड़ासिंगी के रस को मधु मिलाकर देने से बालकों की तीव्र हुई पाँचों तरह की खाँसी दूर हो जाती है।

कटेली, लौंग तथा नागकेशर—सभी के चूर्ण बनाकर मधु में मिलाकर चटनी बनाकर खिलाने से पुरानी से पुरानी खाँसी दूर हो जाती है।

हिचकी का उपचार

अव हिचकी (हिक्का) दूर करने का उपाय बताते हैं—पीसी हुई सोनागुरू में मधु मिलाकर चटाने से हिचकी की बीमारी दूर हो जाती है।

वैद्य धन्वन्तरि के अनुसार—पीपल और रेणुका के काढ़े में हींग का चूर्ण तथा मधु मिलाकर पीने से हिचकी दूर होती है।

कुटकी के चूर्ण में शहद मिलाकर वच्चे को देने से उसकी हिचकी तथा पुराना छर्दि रोग जल्द ही समाप्त हो जाता है।

उल्टी एवं प्यास

अब छर्दि (उल्टी) एवं तृषा (प्यास) नाश का वर्णन करते हैं—अजवायन, इन्द्रजौ, नीम की छाल, सप्तवर्णी एवं परवल—इनका लेप बनाकर चटाने से छर्दि, अतिसार एवं बुखार रोग दूर होते हैं।

हरड़ का चूर्ण शहद में मिलाकर देने से विकार शांत होता है एवं छर्दि जल्द ही खत्म हो जाती हैं।

पीपल की छाल को सुखाकर आग में जलायें। फिर उसकी राख को जल में मिलाकर पिलाने से भयंकर छर्दि दूर हो जाती है।

मधु में ताड़ तथा जलमोथा के चूर्ण मिलाकर चटाने से तृषा, छर्दि एवं अतिसार रोग समाप्त होते हैं।

आम की गुठली, धान की खील तथा सेंधानमक के चूर्ण में मधु मिलाकर देने से छर्दि रोग दूर हो जाता है।

शहद में अतीस, काकड़ासींगी तथा नागरमोथा के चूर्ण को मिलाकर या अतीस के चूर्ण में शहद मिलाकर चटाने से छर्दि एवं बुखार नष्ट होते हैं।

जो बालक दूध पीने के बाद वमन (उल्टी) कर देता है, उसे दोनों कटेली के फलों का रस, पीपल पीपलामूल, चव्य, चीता एवं सोंठ—इनके चूर्ण को मधु तथा घी मिलाकर चटाने से दूध की उल्टी बन्द हो जाती है।

मधु एवं खांड़ में पीपल तथा महुए का चूर्ण मिलाकर बिजौरा नीबू के रस के साथ पीने से हिचकी एवं छर्दि दूर होती है।

शहद (मधु) में पीपल, मुलहठी, जामुन के पत्ते तथा आम के पत्ते के चूर्ण को मिलाकर चटाने से प्यास (तृषा) दूर होती है।

शहद में हींग, सेंधानमक एवं ढाक के पत्ते के चूर्ण को मिलाकर देने से बढ़ी हुई प्यास दूर हो जाती है।

वायुशूल

अब वायुशूल के निवारण का तरीका बताते हैं—सेंधानमक, सोंठ, इलायची, हींग एवं भारंगी की जड़—सबका चूर्ण बनाकर घी तथा पानी के साथ देने से अफरा और वायुशूल समाप्त होता है।

बराबर होते रहने वाले बालक को पीपल, हरड़, बहेड़ा तथा आँवला के चूर्ण को घृत एवं मधु को मिलाकर चटाने स वह रोना बन्द कर देता है।

अण्डी (एरण्डी) के बीच एवं चूहे की मींगनी को नीबू के रस में पीसकर बालक की नाभि या गुदा पर लेप करने से उसे दस्त होने लगता है।

एक भाग छोटी इलायची, दो भाग गंधक, तीन भाग मुर्दाशंख एवं चार भाग सौंफ—सबका चूर्ण बनाकर, दो माशे के बराबर चूर्ण को गाय के दूध के साथ पाँच दिन तक सेवन कराने से शिशु के पेट में एकत्र मिट्टी गुदा द्वारा बाहर आ जाती है। यह बालकों के लिए अत्यंत लाभकारी है।

लाख का काढ़ा एवं तेल को बराबर मात्रा में लेकर उसमें चौगुनी दही का पानी, रास्ना, चन्दन, कूठ, नागरमोथा, असगंध, हल्दी, दारुहल्दी, सौंफ, देवदारु, मुलहठी, मरोड़फली, कुटकी और रेणुका—इनका कल्क मिलाकर तेल को पकायें। यह तेल बुखार एवं राक्षस दोषों को दूर करके बलवर्ण बढ़ाता है।

बालक के शरीर पर इस तेल की मालिश करनी चाहिये। एक भाग असगंध में आठ भाग दूध मिलाकर घी सिद्ध करें। इस घी को बालकों को देने से उनके बल में बढ़ोत्तरी होती है एवं शरीर तन्दुरुस्त होता है।

शरीर की सूजन

नागरमोथा, कुम्हड़े के बीज, देवदारु, इन्द्रजौ—सबको पानी में पीसकर शरीर पर लगाने से सूजन दूर होती है। मिट्टी के गोले को आग में तपाकर, दूध में बुझायें। उस दूध की भाप से बालक की उठी हुई नाभि को सेंकने से उसकी सूजन दूर हो जाती है। यदि बालक की नाभि पक गयी हो तो हल्दी, लोध, मेंहदी एवं मुलहठी के काढ़े में तेल को सिद्ध करके नाभि पर लगायें या इन्हीं दवाओं क चूर्ण को सूजी हुई टुंडी (नाभि) पर मलने से लाभ होता है।

बकरी की मींगनियों को दूध में पीसकर नाभि के पके हिस्से पर लगाने या दालचीनी चन्दन तथा दूध वाले पेड़ के चूर्ण को टुंडी पर मलने से लाभ होता है।

घर का धुआँ, हल्दी, कूठ, राई एवं इन्द्रजौ को मट्ठे में पीसकर शरीर पर लगाने से खुजली, सीप तथा विचर्चिका जल्दी समाप्त हो जाता है।

तालु पक जाने पर जवाखार तथा मधु की मालिश करें। बच्चे के दाँत के रोग में धाय के फूल, पीपल एवं आँवला के रस में मधु मिलाकर मालिश करायें। दाँत निकलते समय बच्चों की जो बीमारी होती है, वे दाँतों के निकल आने पर अपने आप ठीक हो जाती है, क्योंकि दाँतों का निकलना बीमारी की तरह होता है। सफेद संभालू जो पूर्व दिशा में उत्पन्न हुई हो, की जड़ को बालक के गले में बांध देने से दाँत निकलने के वक्त का दर्द, फोतों का छिटकना एवं कुरंड रोग—ये सभी दूर हो जाते हैं।

मुँह के छाले

जावित्री, दूध, दाख, पाठा, हरड़, बहेड़ा एवं आँवले के काढ़े को ठण्डा करके उसमें मधु मिलाकर कुल्ला कराने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं।

पके मुख में दारुहल्दी, मुलहठी, हरड़ एवं चमेली के पत्ते को पीसकर मधु के साथ लगाने से फायदा होता है।

टांसिल वृद्धि को दूर करने के लिए हरड़, वच और कूठ के कल्क में मधु मिलाकर दूध के साथ पिलाना चाहिये।

नागरमोथा, गिलाये, सोंठ, असगंध, आँवला एवं गोखरू—इनके काढ़े में मधु मिलाकर पिलाने से पेशाब कम या रुक-रुक कर आना अथवा थोड़ा-थोड़ा करके कष्ट से आना ठीक हो जाता है।

गोखरू के काढ़े में जवाखार मिलाकर सेवन करने से कफजन्य मूत्रकृच्छ्र ठीक हो जाते हैं।

दूध, अण्डी (एरण्ड) का तेल या गाय का मूत्र, गूगल मिला दूध और एरण्ड का तेल पीने से पेशाब की बीमारियाँ तथा भयंकर वातवृद्धि दूर होती है। मुलायम वस्त्र से कूपर की बत्ती बनाकर लिंग के छेद में रखने से भयानक मूत्र का एकदम रुक जाना रोग ठीक हो जाता है। पीपल, कालीमिर्च, मिश्री, मधु, छोटी इलायची एवं सेंधानमक द्वारा तैयार किया गया लेह पेशाब रुक जाने में फायदा करता है।

अब विभिन्न रोगों के उपचार के सम्बन्ध में बताते हैं—जंगली कपास की जड़ को चावलों के साथ पीसकर उसकी रोटी पकायें, फिर वह रोटी बालक को खिलायें। इससे अपच रोग दूर हो जाता है।

सिरस तथा करंज के बीजों को महीन पीसकर बालक की आँखों में लगाने से चित्त का बिगड़ना, उन्माद, मिर्गी एवं अपतंत्र का रोग जल्द ही समाप्त हो जाता है।

वासा के रस में मिश्री एवं मधु मिलाकर पिलाने या बरगद की कोंपलों के कल्फ में मिश्री-मधु मिलाकर खाने से रक्तपित्त का नाश होता है।

पलाश के फूलों का काढ़ा या अडूसा का स्वरस चार भाग लेकर उसमें एक भाग घी को सिद्ध करें। यह घी रक्तपित्त को करता है।

अनार के फूलों का रस या दूव के रस का नस्य लेने से नाक से खून का गिरना जल्दी ही बन्द हो जाता है।

सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हींग, अजामोद, सेंधानमक, कालाजीरा तथा सफेद जीरा—इन सबके एक-एक भाग लेकर चूर्ण बनाकर घी में मिलाकर भोजन के प्रथम ग्रास (कौर) के साथ लेने पर जठराग्नि (पेट की भूख) जगती है एवं वातगुल्म समाप्त होता है। पुनर्नवा, अंडी की जड़, नई अलसी व कपास के बीज को कांजी से पीसकर गर्म करें तथा रोगी को उसकी भाप देकर पसीना निकलने से वात-रोग दूर होता है।

कच्चे कुम्हड़े के रस मुलहठी पीसकर सात दिनों तक पीने से मिर्गी दूर हो जाती है।

गाय के घी को गाय के दूध, दही तथा गोबर से सिद्ध करें। यह घी चौथिया बुखार, पागलपन एवं सभी तरह के मिर्गी रोगों को दूर करता है।

हींग, शहद तथा सेंधानमक की बत्ती बनाकर उसमें घी लगाकर बालक के गुदा में लगाने से उदावर्त की बीमारी दूर होती है।

सोंठ, पीपल, पोहकरमूल, केतकी, ककुभवृक्ष की छाल तथा रास्ना—सबके चूर्ण को मधु मिलाकर चटाने से बालकों के हृदय रोग ठीक होते हैं।

बेर की गुठली पभाख, खस, चन्दन एवं नागकेशर के चूर्ण में मधु मिलाकर चटाने से बालकों की मूर्च्छा दूर हो जाती है।

दाख तथा आँवले को आग पर पका कर मधु के साथ पीस लें। इसे देने से बुखार सहित सभी विकारों से उत्पन्न मूर्च्छा जल्द ही दूर हो जाती है।

ठण्डा लेप, रत्नों की माला पहनने, सेंक, स्नान, पंखे की हवा, सुन्दर अवलेह, सुगन्ध, ठण्डक एवं स्वादिष्ट अन्न का सेवन इत्यादि वस्तुयें सभी प्रकार की मूर्च्छा में लाभकारी है।

सफेद जीरा, काला जीरा, इमली, वृक्षाम्ल, अनार, शैला तथा अदरक—इन सबका रस आँखों के भयानक रोग तिमिर को दूर करता है।

दूध के साथ पद्माक्ष, चन्दन, नेत्रबाला एवं खस का महीन चूर्ण को देने से शरीर का दाह जल्द ही शान्त हो जाता है।

यदि कपूर, खस, चन्दन एवं जायफल के चूर्ण को दाह-पीड़ित के शरीर पर लगाकर उसे कोमल पत्तों के बिछावन पर बुद्धिमान वैद्य द्वारा लिटा दिया जाये तो उसे जल्द ही आराम पहुँचता है।

परिसेक, स्नान एवं पंखे की हवा लेने से प्यास दूर होती है तथा दाह-शान्ति के लिए ठण्डा जल श्रेष्ठ होता है।

नागरमोथा, वायविडंग, मूषाकर्णी, कपिला एवं अनार की छाल के चूर्ण के सेवन से तीव्र वेग वाला कृमि भी मर जाता है।

शहद के साथ जवाखार, बायबिडंग एवं पीपल के चूर्ण को खाने से पाण्डुरोग एवं पक्तिशूल समाप्त होता है।

पीपल, पीपलामूल, सोंठ एवं कालीमिर्च के चूर्ण को मधु मिलाकर चटाने से बालकों के कफ, ज्वर, स्वरभेद, दूर हो जाते हैं।

लोहभस्म, हरड़, बहेड़ा एवं आँवला—इनको गाय के मूत्र में भवना दें। इससे पीलिया, खाँसी एवं शूल जड़ से समाप्त हो जाते हैं।

शहद एवं घी में शिलाजीत, अभ्रक, लौह, सोनामुखी एवं छोटी हरड़ का चूर्ण मिलाकर चटाने से बालकों के तपेदिक रोग समाप्त होते हैं।

मक्खन, मिश्री तथा मधु चाटकर ऊपर से दूध पीने से शरीर तंदुरुस्त होता है एवं क्षय रोग समाप्त हो जाता है।

अडूसा, सोंठ, कटेली तथा गिलोय के काढ़े के सेवन से भयानक श्वास रोग एवं खाँसी दूर हो जाती है।

गधी का दूध पीने, तुलसी के पत्ते खाने, ठण्डा जल पीने तथा शीतला श्लोक का पाठ करने से चेचक या माता रोग ठीक हो जाता है।

बालक के चेचक में निकली हुई फुंसियों में कीड़े पड़ जाने के भव से कुछ वैद्य राख या आरनेकण्डों का चूर्ण बच्चों के बिछावन पर बिछा देते हैं तथा सम्भालू एवं वनतुलसी की धूप देते हैं।

चन्दन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय तथ दाश का काढ़ा बनाकर शीतल कर पिलाने से चेचक का बुखार दूर होता है।

शहद तथा घी में सेंधानमक एवं लोध को पीसकर पिसे हुए सुरमें में मिलायें, फिर उसे सफेद कपड़े की पोटली बाँधकर आँखों पर वार-बार फिरायें। इससे बालक के आँखों की खुजली, जलन एवं आँखों के अन्य रोग खत्म हो जाते हैं।

चन्दन, मुलहठी, लोथ, चमेली के पुष्प एवं गेरू के रस को नेत्रों में लगाने से दाह, पानी गिरना एवं अभिष्यन्द आदि रोग समाप्त हो जाते हैं। शंख चार भाग एवं पीपल तो भाग को पानी में पीसकर आँखों में लगाने से 'तिमिर रोग' ठीक होता है।

यदि दही के पानी में इन्हें पीसकर आँखों में लगाया जाये तो आँखों की गांठ समाप्त होती है। यदि इन्हें मधु में पीसकर आँखों में लगाया (आंजा) जाये तो 'चिपिट रोग' समाप्त होता है।

मक्षिका निवारण प्रयोग

हरताल को जल में पीस लेप बना एक पुतली पर करके रख दे तो उसे सूँघकर मक्खियाँ भाग जायेंगी।

मूषक निवारण प्रयोग

तिल, कुल्थी का चूर्ण, सफेद मदार के दूध में मिला मदार के पत्ते पर रख देने से चूहे भाग जाते हैं।

बकरी के मूत्र में बकरी की लेड़ी तथा हरताल, प्याज सहित पीस कर चूहे के ऊपर इसका लेप कर और लेप किया चूहा छोड़ देने से उसे देखते ही सब चूहे भाग जाते हैं।

बिल्ली की विष्टा तथा हरताल एक में पीस चूहे के ऊपर लेप कर छोड़ देने से सूँघकर सब चूहे भाग जाते हैं।

मत्कुण निवारण

मदार की रूई की बत्ती को महावर के रंग में कडुवे तेल में दीपक के जलाते ही खटमल भाग जाते हैं।

अर्जुन फल एवं पुष्प, लाख, चन्दन, गुग्गुल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा, वायविडङ्ग इन सबको समभाग ले चूर्ण कर कर धूप से सर्प, खटमल और मूस भाग जाते हैं।

सर्व निवारण प्रयोग

सफेद गुड़, चन्दन, वायविडङ्ग, त्रिफला, लाख, मदार का फूल इन सबको एक में मिला धूप देने से सर्प, बिच्छू भाग जाते हैं।

नागरमोथा, सरसों, भिलावा, केवाच का फल, गुड़ तथा मदार का फल इनको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से खटमल, मच्छर, सर्प, मूस और भी विषैले कीटाणु भाग जाते हैं। जैसे किकायर पुरुष युद्ध से भाग जाते हैं।

भिलावा, वायविडङ्ग, सोंठ, पोहकर मूल तथा जामुन इन सबको समभाग से चूर्ण कर धूप देने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं।

क्षेत्रोपद्रव नाशन प्रयोग

अब खेतों में उपजी फसलों को नष्ट करने वाले जंतुओं के विनाशार्थ उपाय कहते हैं। बालू, सफेद सरसों एक साथ मिला खेत में डाले देने से टिड्डी, कीड़े, सूअर, मृग, मूस, मच्छारादि सब प्रकार के जीव मन्त्र के प्रभाव से भाग जाते हैं।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में बहेड़े की बाँझी लेकर निम्न लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खेत में गाड़ देने से अन्न अधिक उपजता है।

स्त्री रोग नाशक प्रयोग

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल की पोटरी बाँध कर स्त्री की योनि में रख देने से खून का गिरना बन्द हो जाता है।

आँवला, बहेड़ा तथा निसोत का चूर्ण जल के साथ पीसकर पीने से अधिक गिरता रक्त भी बन्द हो जाता है।

चावल को धोवन तथा सरफोंक की जड़ को पीसकर पीने से स्त्रियों का खून बन्द होता है। यह ध्यान रहे कि दवा की मात्रा १० मासे से अधिक न हो।

देवदारु, रसाञ्जन, चिरायता, भिलावा, अडूसा, नागरमोथा इन सबका क्वाथ घी और शहद के संयोग से सिद्ध कर पीने से शूलप्रशूल सब प्रकार के प्रदर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

वन्ध्यत्वनाशन प्रयोग

रविवार को सुगन्धरा की जड़ ला एक वर्णा गौर के दूध के साथ पीस ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूंग की छाल पथ्य खाने से वन्ध्यादोष निवष्ट होता है।

दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिन्ता या शोक अथवा भय, अधिक परिश्रम, दिन में सोना, गर्म चीजों का भोजन, धूप, अधिक ठण्ड इन सबसे बचना चाहिये। ऐसा पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवास करने से वन्ध्या अवश्य गर्भवती होती है।

नागरमोथा, कंगुनी, वैर, लाहरस तथा मधु इनको बराबर लेकर पुरान चावल के धोवन के साथ एक तोले की मात्रा में सात दिन तक पूर्वोक्त पथ्य से पीये, तो वन्ध्या गर्भ धारण कर लेती है।

पीपर, केसर आदि व कालीमिर्च-घी के साथ चूर्ण कर खाने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

सफेद कटेली, जटामासी के पत्ते, नये दूध के साथ पीसकर पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है। पथ्य सात्त्विक भोजन करे।

असगन्ध को जल में पकाकर घी में भूने पश्चात् प्रातः स्नान के बाद दूध व घी के साथ खाय, तो वन्ध्या पुत्रवती हो।

रजोधर्म शुद्धि के पश्चात् काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

पहले ब्याही हुई गौ जिसके साथ बछड़ा हो ऐसे गौ के दूध के साथ नागकेशर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तता घी-दूध के साथ भोजन करने से वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है।

तिल, रस, गुड़ तथा नये जवान पछड़े का मूत्र १ सेर इनको ले एक हण्डी में गौर की कण्डी पर पकावे, पकने के पश्चात् ऋतु के समय सात बार पीये तो अवश्य पुत्रवती हो।

कदम की पत्ती, सफेद चन्दन तथा कटेरी की जड़ सबको समान भाग ले बकरी के दूध के साथ पीसकर पीने से अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो जाती है।

विष्णुक्रान्ता की जड़ सहित भैंस के नूतन घी के साथ सात दिन खाने से काकवन्ध्या भी पुत्रवती होती है।

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है, उसे मृतवत्सा कहते हैं, जिसे रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन पीत पष्पा नाम की जड़ सहित लावे, उसे पानी में सात दिन पर्यन्त पीस कर दस मासे पीये, तो पुत्र न मरे।

नीबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीस घी में मिला के पीने से पति प्रसंग द्वारा स्त्री का दीर्घजीवी पुत्र होता है।

गर्भ स्तम्भन

प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात् पीड़ा उत्पन्न हो, तो गौ के दूध में पद्माख, लालचन्दन व खस इन सबको बराबर लें पीस एक-एक तोला तीन दिन तक पीने से गर्भ नहीं गिरता अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस का बीज, काली गौ के दूध के पास पीसकर पीने से भी गर्भ गिरने से रुक जाता है।

नील कमल की जड़, लाह का रस, काकड़ासिंगी ये सब बराबर ले गौ के दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है।

पीपल की छाल, काला तिल, शतावर इन सबको बराबर ले गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है।

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, कमल की केशर, काकोली और असगन्ध इन सबको ठण्डे पानी के साथ पीसकर पीने से तीसरे मास की गर्भ की पीड़ा जाती रहती है।

नीलकमल व कलम की जड़, गोखरू गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से चौथे महीने की गर्भ की पीड़ा जाती है।

कैथ का गूदा ठण्डे पानी में और गौ का दूध मिलाकर पीने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा व नीलकमल पानी में पीसकर पीने से सातवें मास की पीड़ा अच्छी होती है।

मुलहठी, पद्माक्ष, मुस्त, नागकेशर, गजपीपर इन सबको गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से आठवें मास की गर्भ पीड़ा जाती है।

इन्द्रायन के बीज, कंकोल (अकोल) मधु के साथ पीस घोंट कर खाने से नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त होती है।

पुराना खाँड़, मुनक्का, छुहाड़ा, शहद व नीलकमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर होती है।

सोंठ डालकर पकाया हुआ गौ का दूध अथवा मुलहठी व देवदारु और सोंठ गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी दसवें महीने की व्यथा दूर होती है।

आँवला और मूलहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ-स्तम्भन पूर्णरूपेण हो जाता है, फिर नहीं गिरता है।

कुम्भकार के हाथ की लगी मिट्टी पर वह चाक के ऊपर की हो, बकरी के दूध में मिलाकर पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ सुरक्षित हो जाता है। फिर नहीं गिरता।

कसेरू, सिंघाड़ा, नागरमोथा और रेड़ी इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर सतावर डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ पीने से गर्भव्यथा दूर होकर सुरक्षित हो जाता है।

कोई की जड़, शहद, घी इनको दूध में डालकर खौलाने के पश्चात् ठण्डा कर सात दिन तक पीने से गर्भ स्राव, अरुचि आदि सब प्रकार का विकार नष्ट हो जाता है।

कमल की जड़, जिसको भसोड़ कहते हैं तथा तिल व मिर्च दूध में पीसकर पीने से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है।

ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा व कालीमिर्च का काढ़ा बना पीने से गर्भ का रोग दूर होता है।

गौ के दूध में खाँड़ मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है या गंभारी के फल का चूर्ण मधु के साथ खाये या दूध पीये तो गर्भ सूखना बन्द हो जाय।

बच्चा पैदा होने के समय यदि व्यथा अधिक हो और बालक उत्पन्न होने में कठिनाई मालूम पड़ती हो तो गदहपूर्ना की जड़ का चूर्ण योनि में रख देने से बालक सुख से उत्पन्न होता है।

प्रसिद्ध काढ़ा दशमूल का और सेंधानमक वे घी मिलाकर पीने से भी सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होता है।

गर्भमोचन मन्त्र

ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः मन्मथवाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा।

नहा-धो शुद्ध हो उपर्युक्त मन्त्र से गरम जल अभिमन्त्रित कर गर्भिणी को पिला देने से सुखपूर्वक बच्चा पैदा होता है।

करियादीकन्द, अपामार्ग (चिचिहिड़ा) या इन्द्रायन की जड़ को चूर्णकर पोटली बाँध योनि में रखने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

तिल की जड़, ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलैठी, कालीमिर्च तथा पीपर इन सबको कुचकुचाकर जल के साथ काढ़ा बनाकर पीने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है और रक्त गुल्म भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

मालकांगनी के नवीन पत्र जपा (दुपहरिया) के फूल खाने से बन्द मासिक खुल जाता है।

तन्त्रोक्त नानाविधान

ॐ गं गणपतये नमः। अनेन मन्त्रेण कुम्भकारस्य गृहान्मृत्तिकामानीय। लम्बोदरं गणेशं कुर्यात् पंचोपचारेण पूजनं। कुर्यात् सप्तदिनपर्यन्तं सहस्रवारजपेन शान्तिर्भवति।।। सप्तदिकसहस्रेण बुद्धिं च लभते पराम्।। मासमेकं यदा कुर्यात्स्त्रीलाभोऽपि भवेद् ध्रुवम्।।

षष्मासेन वरारोह घनपश्च भवेन्नरः।

सर्वप्रथम 'ॐ गं गणपतये नमः' मन्त्र द्वारा कुम्हार के चाक की मिट्टी लाकर उससे गणेश प्रतिमा बना पंचापचार रीति से पूजा करें। नित्यप्रति एक हजार मन्त्र का जप करने पर सात दिनों में शान्ति, सात हजार जप करने पर बुद्धिशाली, एक महीने तक लगातार जप करने से स्त्री लाभ तथा छः महीने में मन्त्रजप से मानव धनवान बन जाता है।

ॐ ऐं नमः। एतन्मंत्रवरं देवि प्रजपेद्विधिपूर्वकम्। धूपं दीपं च नैवेद्यं श्वेतपुष्पैश्च पूजयेत्।। श्वेतगंधानुलेपनं कुर्यात्।। हविष्याशी जपेन्मंत्रं सप्ताहेन महेश्वरि।। बुद्धिं च लभते सद्यस्तथा स्मृतिवरामपि।

चालनं सर्ववस्तूनां विरायुः सुखमेधते।।

जो साधक 'ॐ ऐं नमः'—इस मन्त्र का जप कर धूप, दीप, गंध, श्वेत, पुष्प और नैवेद्य से पूजन करता, हविष्यान्न भक्षण करता है, उसे एक सप्ताह में ही बुद्धि और स्मरण-शक्ति की प्राप्ति हो जाती है। इसके अतिरिक्त उसमें समस्त वस्तुओं को चलायमान करने की शक्ति आ जाती है तथा वह स्वयं भी दीर्घायु होकर सुखोपभोग करने में समर्थ हो जाता है।

जो साधक एक सप्ताह तक लाल वस्त्र और कुंकुम की लाल माला गले में धारणकर 'ॐ ह्रीं नमः' मन्त्र का जप कर लेता है तो उसे देवांगनाओं की प्राप्ति संभव हो जाती है।

पूर्वकथित रीति से एकान्तस्थान में 'ॐ क्षौं ह्रीं ह्रीं आं ह्रां स्वाहा'—मन्त्र का दश हजार जप करने से नारी का आकर्षण होता है।

जो साधक 'ॐ नमः'—मन्त्र का दश लाख जप पूर्ण कर लेता है, वह समस्त पापों से रहित होकर नभोगामी बन जाता है।

'ॐ ह्रीं ॐ हुं हुं ॐ'—मन्त्र का तीन लाख जप करने वाला साधक पापयुक्त होकर गगनचारी बन जाता है।

'ॐ ह्रू हां काली करालिनी ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट्'— जो साधक इस मन्त्र का १०८ वार जप श्मशान-भूमि में करके बकरे का मांस और लाल फूलों की बलि देता है, उसे सात दिन में कपालिनी की सिद्धि मिल जाती है।

उक्त सिद्धि के द्वारा साधन जिन-जिन वस्तुओं की अभिलाषा करता है, उसे उन सभी की प्राप्ति संभव होती है। किन्तु इन प्राप्त द्रव्यदिकों को देवता, अग्नि, गुरुजनों और ब्राह्मणों के निमित्त व्यय कर देना चाहिये। यदि ऐसा न करके वह उसे भूमि के अन्दर छिपाकर रख दे तो पुन: देवी उसे कुछ भी नहीं देती।

ॐ ह्रीं क्षां लोहंभजकिलि लोहंभजकिलि स्वाहा अमुकं काटय काटय मारय मारय मातंगिनी स्वाहा। अनेन पूर्वाह्णे पंचोपचारैः पूजयेत्।। मासमेकंजपेन्मंत्रं सहस्रं च शताधिकम्।। सहस्र सैनिकं हन्याच्चित्रमार्गेण तत्क्षणात्।

साधक को इस लिखित मन्त्र 'ॐ ह्रीं क्षां लोहभंज किलि किलि स्वाहा। अमुकं काटय काटय मारय मारय मातंगिनी स्वाहा'—से देवी का पंचोपचार पूजन करके निरन्तर एक महीने तक प्रतिदिन १,१०० मन्त्रजप करें। ऐसा करने पर वह विचित्र गति से युद्धभूमि में एक हजार सेना का वध कर सकता है। इससे अधिक वह एक लाख तक जप कर ले तो उससे सामर्थ्य में वृद्धि हो जाती है।

ॐ स्तंभय काली स्वाहा कपालिनी स्वाहा ॐ हुं ह्रीं क्षीं चैं ईषि बँधिनी ठः ठः। अनेन मंत्रेण मृत्तिकां सपतवारमभिमंत्र्य चौरसम्मुखे प्रक्षिपेत् अनुरक्तं च जायते। अयुतं प्रजपेन्मंत्रं सिद्धिं प्राप्नोति तत्क्षणात्।

'ॐ स्तम्भन काली स्वाहा कपालिनी स्वाहा। ॐ हुं ह्रीं क्षीं चैं ईषि बन्धिनी ठ: ठ:'—इस मन्त्र द्वारा सात वार मिट्टी को अभिमन्त्रित कर चोर के आगे फेंक देने से वह मुग्ध हो जाता है। इसकी पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने के लिए दश हजार मन्त्रजप करने चाहिये।

ॐ ह्रीं क्षां क्षां क्षां क्षें क्षैं क्षौं क्षः। अथवा ॐ क्रीं क्षीं क्षं क्षं क्षें क्षैं क्षः। सूर्याभिमुखो भूत्वा प्रजपेन्मन्दिरे शुचिः।। व्याघ्रसिंहज्वरादीनां ग्रहाणां च भयं न हि।

'ॐ ह्रीं क्षां क्षां क्षां क्षां क्षें क्षैं क्षौं क्ष:। अथवा 'ॐ क्रीं क्षीं क्षं क्षं क्षें क्षैं क्ष:'—इन दोनों में से किसी एक मन्त्र का जप दश हजार की संख्या में सूर्य की ओर मुख करके किसी मंदिर में करने से उसे सिंह, व्याघ्रादि हिंसक जीवों तथा ज्वरादि ग्रहों के भय नहीं रह जाते।

'हंसं हंस:'—इस मन्त्र से बीस बार जल को अभिमन्त्रि कर पान करने पर आघातित व्यक्ति स्वस्थता का अनुभवा करने लगता है।

ॐ ह्रीं मानसे मनसे ॐ ॐ ॐ स्वाहा। घृतदूर्वाभिस्तंदुलैः साकं होमेनास्य मंत्रस्य सिद्धिर्भवति वांछितं लभते।।

'ॐ ह्रीं मानसे मनसे ॐ ॐ ॐ स्वाहा'—इस मन्त्र का जप करने के पश्चात् दूब, चावल और घी से हवन करने पर मनोवांछा पूर्ण होती है।

ॐ अघोरश्वरि घोरघोरमुखि चामुण्डे ह्यूर्ध्वकेशि ह्रां क्षां फट् स्वाहा अथवा ॐ घोरघोरस्वरे घोरमुखचामुण्डे ऊर्ध्वकेशी ह्रां क्षीं हूं फट् स्वाहा (सर्वभूतदमनमन्त्रः) ॐ सं सांसिं सुं से सैं सौं सं सः रं रां रिं रीं रुं रूं रें रैं रों रौं रं रः अमृतं ब्रह्मणे स्वाहा।। अनेन मंत्रेणाष्टोत्तरशतं सेचनेन सर्वव्यधिविनिर्मुक्तो भवति वलीपलितवर्जितो भवति। वर्षपर्यन्तं जपेन स्थावरजंगमादिविषं मक्षिकाव्याघ्रलोमादिकं पूर्वादरस्थं भस्मी भवति शांतिर्भवतिसर्वजनप्रियो भवति चिरायुर्भवति।

निम्नलिखित दो मंत्रों में से किसी एक का जप करने से सभी उपद्रवों का शमन होता है। इसे सर्वभूतदमनकारी मन्त्र कहा गया है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ अघोरश्वरि घोरघोरमुखि चामुण्डे ह्यूर्ध्वकेशि ह्रां क्षां फट् स्वाहा अथवा ॐ घोर घोर स्वरे घोरमुख चामुण्डे ऊर्ध्व केशि ह्रां क्षीं हूं फट् स्वाहा।'

उक्त मन्त्र पढ़कर १०८ वार अभिषिंचन करने पर साधक के सभी रोगों का उपशम तथा वलीपलितराहित्य होता है। निरन्तर एक वर्ष तक जप करने के फलस्वरूप स्थावर-जंगम विष, मक्षिका, व्याघ्र, लोमादि जो भी विष उदर में हों, वे सभी भस्मीभूत हो जाते हैं। ऐसा साधक सभी का प्रियजन होकर दीर्घ जीवन धारण करता है।

ॐ नमो भगवते रुद्राय ह्रीं ह्रूं ह्रः फट् स्वाहा अथवा ॐ नमो भगवते रुद्रभय हुं फट् स्वाहा।। अनेन अयुतजपेन सर्वभूतडाकिनीयोगिनीनां दमनं भवति।

यहाँ लिखित दो मंत्रों में से किसी एक मन्त्र का दश हजार जप करने पर भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी, योगिनी आदि साधक से दूर भाग जाती है। मन्त्र इस प्रकार है—

१. **ॐ नमो भगवते रुद्रा ह्रीं ह्रः ह्रं फट् स्वाहा।'**

२. **ॐ नमो भगवते रुद्राय रुद्राय रुद्रक्षय हुं फट् स्वाहा'।।**

ॐ हुं प्रमोदयित्रि ह्रीं प्रचोदय ऐं ह्रं द्रं उं फट् स्वाहा। अनेन मंत्रेणसहस्रवारं जपेनाषेत्तरशतं मधुना होमेन कार्यसिद्धभिवति।।

नीचे लिखे मन्त्र को एक हजार की संख्या में जपकर एक सौ आठ बार मधु से हवन करने पर समस्त कार्यों की सिद्धि होती है।

मन्त्र जप इस प्रकार है—

'ॐ प्रमोदयित्रि ह्रीं प्रचोदय ऐं ह्रं द्रं उं फट् स्वाहा।'

ॐ ह्रां ह्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हुं फट् ठः ठः (वा ह्लं ह्लं इत्यादि) प्राच्यां दिशि मुखं कृत्वा लक्षमेकं जपेन्नरः।। वैश्वानरसमो विप्रो जायते स न संशयः।।

निम्न मन्त्र को पूर्वाभिमुख होकर एक लाख जप करने वाला ब्राह्मण निःसंदेह रूप से वैश्वानर के समान होता है। अर्थात् वह वैश्वानर अग्नि के समान तेजवान बन जाता है।

अयुतं जुहुहायात्। घृतसमिद्धोमेन सिद्धिर्भवतिमेघालोकनमात्रेण मेघाः प्रणश्यन्ति न वर्षन्ति, सरिदादयः शुष्यन्ति यदि मेघो नष्टो भवेत् दर्ह्युदकमध्ये स्थित्वा मंत्रंजपेत् अनावृष्टिकाले महावृष्टिर्भवति।

उक्त मन्त्र का दश सहस्र जप करे घृतमिश्रित समिधा के साथ हवन करने वाला साधक यदि बरसते हुए बादलों की ओर देख ले तो वृष्टि रुक जाती है, बाढ़ प्रभावित नदियाँ भी सूख जाती हैं। अवर्षा की अवस्था में जल में खड़े होकर मन्त्रजप करने पर घनघोर वर्षा होने लग जाती है।

किसी कुमारी कन्या को सामने बैठाकर दश हजार निम्न मन्त्रजप करने पर वह कन्या साधक से निकाल की बातें बतला देती है। मंत्र इस प्रकार है—

१. **'ॐ प्रचलित स स क्रुं रें रें हुं ह्लीं ह्लं किं स्वाहा।'**

२. **'वा प्रचलित शशकरे ह्लां ह्लीं ह्लूं हुं किं स्वाहा।'**

ॐ ह्लीं माजाते प्रयच्छ में धनं स्वाहा। घृतयुक्तसिद्धार्थानां सहास्राहुतिदानेन सिद्धिर्भवति। इक्षुरसानुपातेन पार्थिवत्वं लभेन्नरः।

निम्न मन्त्र से सरसों और घी की एक हजार आहुति देने से साधक को सिद्धि मिलती है। गन्ने के रस से एक लाख हवन करने पर पार्थिवत्व तथा राज्योपलब्धि होती है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्लीं माजाते प्रयच्छ में धनं स्वाहा।' ॐ ह्लीं सतत जपेन सर्वकामदो मन्त्र।

'ॐ ह्रीं नमः। इस मन्त्र का निरन्तर जप करने से समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति होती है।

ॐ ह्लीं श्रीमानसे सिद्धिं कुरु कुरु ह्लीं नमः। लक्ष जपत्वीरेण पूजयेत् सर्वकामदो भवति।

'ॐ ह्रीं श्रीमानसे सिद्धिं कुरु कुरु ह्रीं नमः' इस मन्त्र का एक लाख जप करके कनेर के फूलों से पूजन करने पर सभी कामनायें पूरी होती है।

ॐ ह्लं अमुकं हन हन स्वाहा। कटुतैलेन संयुक्तं रक्तकरवीरं होमयेत्। अयुतं च चपं कुर्याच्छत्रु नाशयते क्षणात्।

निम्न मन्त्र का एक लाख जप करने के पश्चात् लाल कनेकर के फूलों को सरसों के तेल के साथ एक हजार हवन करने पर शत्रुक्षय होता है। मन्त्र इस प्रकार है—'ॐ ह्रं अमुकं हन हन स्वाहा'—यहाँ अमुक के स्थान पर शत्रु का नामोच्चार करना चाहिये।

ॐ ह्रीं लीं हौं लैं हुं लौं हुं लौं हुं हौं लः अमुकं ठः ठः। वा लं ह्रां लां ह्रों लों ह्रौं लौं हं लों ह्रों लः अमुकं ठः ठः स्वाहा। अनेनमंत्रेण सिद्धार्थकानां होमं कृत्वा यस्य गृहे प्रक्षिपेत्स पार्श्वभवति बाहुस्तंभोभवति शत्रुंक्षयति सैन्यस्तंभो भवति। अश्वगजराणां यथेच्छरी करोति।

नीचे के दो मंत्रों में से किसी एक को पढ़कर सरसों का दश हजार होम करके उस हवन की राख को किसी के घर में फेंक देने पर वह अपने अनुकूल हो जाता है, इच्छा करने से भुजस्तम्भ, शत्रुंक्षय और सैन्यस्तम्भन होता है। वह साधक अपनी इच्छा के अनुसार हाथी-घोड़े आदि पशुओं तथा मनुष्यों का चालन कर सकता है। मन्त्र इस प्रकार है—

१. ॐ ह्रीं लीं हों लैं हुं लौं हुं लौं हुं हौं लः अमुकं ठः ठः'।

२. लं ह्रां लां ह्रों लों ह्रौं लौं हं लों हों ह्रों लः अमुकं ठः ठः स्वाहा।'

यहाँ 'अमुकं' के स्थान में साध्य व्यक्ति का नामोच्चार करें।

ॐ रूं रूं सुक्षे स्वाहा। वा ॐ रुरुमुखी स्वाहा।। अनेन जलमभिमन्त्र्य मुखं प्रक्षालयेत् तिलतैलेन वा सप्तयेण दिनेन वशीकरणं स्यात्।

नीचे लिखे गये मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर मुख-प्रक्षालन करें अथवा तिलतैल के द्वारा साध्य व्यक्ति का नाम लेकर मुख धो लें तो २१ दिनों में उस व्यक्ति का वशीकरण होता है। नीचे के दो मन्त्रों में से किसी एक का प्रयोग करें। मन्त्र इस प्रकार है—**१. ॐ रूं रूं सुक्षे स्वाहा।' २. ॐ रूरूमुखी स्वाहा।'**

ॐ मातंगिनि विमलमति करालि ह्रीं घे घः। अष्टात्तरशतं जातीपुष्पोपरि जपेन सिद्धि अदृष्ट वस्तु लभेत् वा ॐ मालिनी विललकराली ह्रीं घं घः।

नीचे के मन्त्र को चमेली के फूल पर १०८ बार जप करने पर अदृष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ मातंगिनि विमलमति कालि ह्रीं घे घः।' ॐ पक्षि स्वाहा वृश्चिकमन्त्रः वा ॐ द्रं जं क्षीं जं स्वाहा।।

नीचे के दो मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र को दश हजार जपने से सिद्धि मिलती है। इस मन्त्र का बिच्छू के डंक मारने के स्थान को २१ बार पढ़कर फूँक दिया गया तो बिच्छू का विष जाता रहता है। मन्त्र इस प्रकार है—

१. ॐ पक्षि स्वाहा' २. ॐ द्रं जं क्षीं जं स्वाहा।'

ॐ ह्रीं करालीं पुरुषमुखरूपा ठः ठः अनेनाष्टोत्तरशतजपेन कष्टरहितों भवति। जलमभिमंत्र्य गोमहिष्यादयः स्तनलेपेन बहुतरं क्षीरं ददाति।

नीचे का मन्त्र एक सौ आठ बार जपने पर सभी कष्टों का निवारण होता है। यदि इस मन्त्र को गाय-भैंस के थन पर २१ बार फूँक दिया जाय, तो उस पशु के दूध में वृद्धि होती हैं। मन्त्रजप इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं कराली पुरुषमुखरूपा ठः ठः।' ॐ ह्रीं हंसः वा ह्रीं हंसः कुशेन मार्जन कृत्वा सर्पविषं दूरे गच्छति।

ॐ ह्रीं हंसः वा ह्रीं हंसः।' इन दोनों में से किसी एक मन्त्र को कुशा के द्वारा झाड़ने से साँप का काटा हुआ विष उतर जाता है।

ष ह्रं ह्रां ह्रिं ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रूः ठः ठः वस्त्रलाभो भवति।

नीचे लिखे मन्त्र का जप करने से वस्त्र का लाभ होता है। मन्त्रजप इस प्रकार करें—

'ॐ ह्रं ह्रां ह्रिं ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रुः ठः ठः।'

ॐ हुं र सइ अमुकं फट् स्वाहा। अनेन खदिरसमिधं विषरुधिराक्तां कृत्वा सहस्रहोमेन महाज्वरेण गृह्यते।

'ॐ हुं र सइ अमुकं फट् स्वाहा'—इस मन्त्र से खैर की लकड़ी के शाकल्य में विष और रक्त मिलाकर शत्रु का नामोच्चार करते हएु एक हजार हवन करने पर वह शत्रु महाज्वर से पीड़ित होता हैं। यहाँ यह ध्यान रहे कि अग्नि से निकलने वाला धूम अपनी आँखों में न लगने पाये।

ॐ रांरः रांरः स्वाहा। अनेन ज्वररहितो भवति भवति।।

नीचे के मन्त्र का एक लाख जप करने पर ज्वर का निवारण होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ रांरः रांरः स्वाहा।'

ॐ कालि कालि ऐं स्वाहा अनेन मंत्रेण अश्वत्थसमिधं घृतयुक्तां जुहुयात् सहस्रहोमेनावृष्टिकाले महावृष्टिं करोति।।

नीचे के मन्त्र द्वारा पीपल की समिधा में घी मिलाकर एक सहस्र आहुतियाँ देने पर अवर्षकाल में भारी वृष्टि होती है। हवन इस प्रकार करें—

'ॐ कालि कालि ऐं स्वाहा'

ॐ ह्रीं रम रम कालि ह्रीं स्वाहा। अनेन मंत्रेणाश्वत्थसमिधं घृतयुक्तां जुहुयात् राजा वरदो भवेत् पंचग्रामान् ददाति।।

पीपल की समिधा में घी मिलाकर नीचे के मन्त्र से एक लाख की संख्या में हवन करने पर राजा अपनी प्रसन्नतावश पाँच ग्राम पुरस्कार स्वरूप देता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्लीं रम रम कालि ह्लीं स्वाहा।'

ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा। तैलतिलयुक्तेन काकमांसेन शत्रोर्नाम गृहीत्वा सहस्त्रहोमेनोन्मत्तो भवति। घृततंदुलानां सहस्त्रहोमेन शांतिर्भवति।

काला तिल, सरसों का तेल और काकमांस से शत्रु के नाम सहित एक हज़ार होम करने से शत्रु पागल और विक्षिप्त हो जाता है। पुनः इसी हवन मन्त्र से घी-चावल के साथ हवन करने पर वह अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा।'

ॐ ह्लीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वषट् स्वाहा। शुचिर्भूत्वा हविष्यान्नं भुक्तवायुतं जपेत् संध्याकाले पूजां कुर्यात् स्वप्ने त्रैकालिकं शुभाशुभं कथयति वर्तमानं जानाति वा ॐ ह्लीं मानसे स्वसुप्नबिम्बार्थविद्वो वट् स्वाहा।।

नीचे के मन्त्र का एक हजार जप हविष्यान्न (खीर आदि पदार्थ) भक्षण कर करें। सायंकाल में स्वप्नेश्वरि देवी का पूजन करें तो रात्रि में त्रिकाल की शुभाशुभ बाते देवी द्वारा साधक को ज्ञात हो जाया करती हैं। मन्त्रजप इस प्रकार करें—

'ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वषट् स्वाहा'

ॐ ह्लीं कुर क्लुलैं स्वाहा। नागदमनी महाविद्या महातीव्रास्ति अस्याः स्मरणमात्रेण डाकिनी शाकिनी राक्षसा नश्यन्ति सर्वसिद्धीः करोति वै इति।। अथवा ॐ ह्लं कुर कुर हे स्वाहा।।

नीचे के दो मन्त्रों में से किसी एक का जप करने से डाकिनी, शाकिनी, राक्षस आदि का नाश होता है। इसे नागदमनी विद्या कहते हैं। मन्त्रजप इस प्रकार करें—

१. **'ॐ ह्रीं कुर क्लुलैं स्वाहा।'** २. **'ॐ ह्लं कुर कुर हे स्वाहा।'**

ॐ कामातुरा काम मे स्वल्पहि धोखनीलखनी अमुकं वश्यं कुरु ह्लीं नमः। अनेन मंत्रेण स्वभक्ष्यद्रव्यं सप्तवारमामन्त्र्य सप्तदिनपर्यतं मदनेन स्त्री वा पुरुषो वा वशीभवति।

नीचे के मन्त्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित किये गये खाद्य पदार्थ को जो स्त्री-पुरुष खाते हैं, वे वश में आ जाते हैं। अथवा इसी मन्त्र को लवंग के ऊपर सात बार पढ़कर खिलाने से वशीकरण होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ कामातुरा काम मे स्वल्पहि धोखनीलखनी अमुकं वश्यं कुरु ह्लीं नमः।'

ॐ जूं सः त्रिसंध्यं जपेत् शत्रुनाशो भवति ॐ जूं सः नित्यं जपेन मृत्युं जयति।

'ॐ जूं सः'—इस मन्त्र को त्रिकाल (प्रातः दोपहर, सायं) जप एक सहस्र

की संख्या में करने पर थोड़े दिनों में ही वैरी का नाश हो जाता है तथा इसी मन्त्र का प्रतिदिन जप करने से अकालमृत्यु नहीं होती।

ॐ कंकाली महाकाली कालीकाली कलाभ्यां स्वाहा। सहस्र-मत्स्यैर्जुहुयात् भगवती प्रसन्ना भूत्वा पलचतुष्कं सुवर्णं ददाति।

निम्न मन्त्रोच्चार करते हुए एक सहस्र मछलियों की आहुति देने पर देवी प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन चार पल (१६ तोला) स्वर्ण देती है। मन्त्रजप इस प्रकार करें—

'ॐ कंकाली महाकाली कालीकाली कलाभ्यां स्वाहा।'

ॐ ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ईं नमः। अनेनायुतजपेन मासार्धेनाकर्षणं भवेत।

ॐ हुं ॐ हुं ह्लीं पूर्ववत् ५ वा ॐ हों ह्लीं ह्लां नमः। आकर्षणं भवति।

'ॐ ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ईं नम:'—इस मन्त्र को प्रतिदिन दश हजार जपने से पन्द्रह दिनों में आकर्षण होता है। अथवा 'ॐ हुं ॐ हुं ह्लीं'—मन्त्रजप से भी उक्त फल प्राप्त होता है।

ॐ ह्लीं ह्लों हुं हौं हुं हः सर्वज्वरनाशनमंत्रः। वा ॐ ह्लां ह्लीं ह्लैं ह्लौं ह्लः।

निम्नलिखित दो मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का दश सहस्र जप करने से सर्वज्वर का निवारण होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

१. **'ॐ ह्लीं ह्लीं हुं हौं हुं हः।'** २. **'ॐ ह्लां ह्लीं हैं ह्लौं ह्लः।'**

ॐ हूं नमः। विधिना जपेत् पादुकासिद्धिः। वा ॐ नमः।

'ॐ हूं नमः। विधिना जपेत् पादुकासिद्धिः। वा ॐ नमः।

'ॐ हुं नम: अथवा 'ॐ नम:'—इन दोनों में से किसी एक को एक लाख जपने से पादुकासिद्धि होती है।

ॐ क्षां क्षां ह्लीं ह्लीं फट् अनेन मंत्रेण वेतालसिद्धि: श्मशानेजप: १००।

'ॐ क्षां क्षां ह्लीं ह्लीं फट्'—इस मन्त्र का दश हजार जप श्मशान-भूमि में करने पर वेताल की सिद्धि मिलती है।

ॐ हुं नमः ॐ ह्लीं नमः। नरतैलेन दीपं वर्तिका कृत्वा नरकपाले दीपं प्रज्वाल्यांधकूपे श्मशाने वा शून्यालये जपेत् तत्र भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा कज्जलं नीत्वा नेत्राञ्जनेन सर्वे भूतादयो वश्या भवन्ति।

मानव-खोपड़ी में नरतैल को भरकर बत्ती डाल दीपक जलावें। इस दीपक को जलरहित कूप, श्मशान-भूमि या किसी एकान्त स्थान में रखकर मनुष्य कपाल में कज्जल तैयार करें। कज्जल तैयार करते समय 'ॐ हुं नम: ह्लीं नम:'—मन्त्र का दश हजार जप कर भूतों को बलि प्रदान कर उसे ग्रहण करें। इस सिद्ध कज्जल को आँखों में लगाने पर समस्त भूतादि वश में आ जाते हैं।

ॐ ह्रीं ह्रीं ईं लीं हुं हूं अमुकं हन हन खड्गेन फट् स्वाहा। गोमयेन साध्यस्य प्रतिमां कृत्वा श्मशाने नीत्वा याम्य मुखो भूत्वा विधिना जपेत् ततस्तस्य शिरश्छेदं कृत्वा जुहुात्। नष्टो भवति।

गोवरनिर्मित शत्रुमूर्ति बनाकर श्मशान-भूमि में दक्षिणाभिमुखी स्थापित कर निम्नलिखित मन्त्र का दश हजार जप करें। तदनन्तर उस प्रतिमा का शिर खंडित कर दें, तो शत्रु का विनाश हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं ह्रीं ईं लीं हुं हूं अमुकं हन हन खड्गेन फट् स्वाहा।' यहाँ 'अमुकं' के स्थान पर शत्रु का नाम लेना चाहिये।

ॐ हुं हुं ह्रीं अमुकं ठः ठः। अनेन मंत्रेण लौहशलाकया विषरुधिरेण शत्रोर्नाम लिखित्वाऽयुतं जपेत् पश्चाद् भूमौ निक्षिपेन्मृत्युर्भवंति, ॐ हुं हुं ह्रीं वा पाठः।

'ॐ हुं हुं ह्रीं अमुकं ठः ठः'—इस मन्त्र का एक लाख जप करने के बाद विष में रक्त मिलाकर लोहे की कलम से शत्रु का नाम लिख भूमि में स्थापित करने पर शत्रु की मृत्यु सुनिश्चित होती है।

ॐ ह्रींकारी हुंकारी क्षुकारी फट्कारी रिपुहारी कंकारी रेकपाली संविद्य वेधवर्द्धिनी वशंकरी महामाये मम रक्षां कुरु कुरु ज्वर हन हन परस्याकर्षिणी मम शक्तिं प्रसाधिनी शक्तिकं हं फट् स्वाहा। अथवा ॐकारी हुंकारी किमुकारो फट्कारी खिंकारी कंकारी कसाली पासावधिं धेव धेनीवशंकरो महामायायै मम रक्षां कुरु कुरु ज्वरं हर हर आक्रोशनं हन हन शंक्या कर्षिणी मम शक्तिप्रसाधनी शक्तिं कं हं फट् स्वाहा। महाविद्यास्मरणेन सर्वे विघ्ना नाशमायान्ति निर्भयो भवति।

उक्त वर्णित दो मन्त्रों में से किसी एक का जप करने से सभी विघ्न-बाधायें दूर हो जातीं और साधक भयरहित हो जाता है।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हं हं हं हं सः सः सः सः सः। अनेन स्थावरजंगमविषं नश्यति।

उक्त मन्त्र 'ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ' का १२ हजार जप करने पर स्थावर-जंगम सभी प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं हूं। अनेन विषं स्तंभयति।

उक्त मन्त्र 'ॐ ह्रीं हूं का बारह हजार जप करने से विष का स्तम्भन होता है।

ॐ ह्रीं क्षीं ह्रीं क्षां हं हन हन फट् वः वः'—इस मन्त्र का बारह हजार जप करने पर ज्वर का नाश होता है।

ॐ ऐं हं ऐं हं वद वद स्वाहा। सप्ताधिकायुतं जपं कुर्यात् कविर्भवति।

'ॐ ऐं हं ऐं हं वद वद स्वाहा'—इस मन्त्र को दश हजार सात की संख्या में जप करने से साधक को कवित्व-शक्ति की प्राप्ति होती है।

'ॐ ह्रीं सः ह्रीं ठं ठं ठं'–यह शान्तिकारी विद्या ददाति क्षीरेण हवनं कार्यमष्टोत्तरशतशरव्यूहप्रचण्डैः।

'ॐ ह्रीं सः ह्रीं ठं ठं ठं'—यह शांतिकारी विद्या है। इसके बारह हजार जप करके १०८ दूध की या शर की आहुतियाँ देनी चाहिये।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् ठः ठः ठः। नरास्थिकीलकं सप्तापुलं कृत्वा सहस्रमभिमन्त्र्य यस्य गृहे निक्षिपेत् कुटुम्बेन सह तस्योच्चाटनं भवति उतिक्षिप्य शांतिर्भवति।।

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् ठः ठः ठः'—इस मन्त्र द्वारा सात अंगुल लम्बा मानवास्थि कील लेकर उस पर एक हजार मन्त्र पढ़कर जिसके नाम का उच्चारण कर उसके घर में फेंक दिया जाय, तो उसका परिवार सहित उच्चाटन हो जाता है। किन्तु इसे वहाँ से दूर हटा देने पर स्वाभाविक स्थिति आ जाती है।

ॐ ऐं ऐं ह्रीं ॐ फं फं हं हं हं फट् स्मरणमात्रेण सर्वभूतसर्वग्रहाणां नाशो भवति।

नीचे लिखे मन्त्र का स्मरण करते ही समस्त भूतग्रहादि दोष नष्ट हो जाते हैं। मन्त्र इस प्रकार पढ़े—

'ॐ ऐं ऐं ह्रीं ॐ फं फं हं हं फट्'।

ॐ हं ॐ सः संततिदायको मन्त्रः सर्वदा स्मर्तव्यः।।

'ॐ हं ॐ सः'—इस मन्त्र का जप करने से सन्तानोत्पत्ति होती है। अतः यह सदैव स्मरणीय है।

ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठुं ठूं ठें ठैं ठों ठौं ठं ठः अमुकं हूं हूं। अनेन सप्तांगुगुलवटकीलकं गृहीत्वा सहस्रमभिमंत्र्य यस्य गृहे निखनेत्स सकुटुम्बो ज्वरेण गृह्यते।।

मदार की लकड़ी का चौदह अंगुल लम्बा कील लेकर नीचे के मन्त्र से हजार बार अभिमन्त्रित कर लें। तदनन्तर शत्रु के घर में स्थापित कर देने पर वह सकुटुम्ब ज्वरपीड़ित हो जाता है, किन्तु बाहर निकाल लेने पर शांति हो जाती है। मन्त्रपाठ इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं नं नां निं नीं नुं नूं नें नैं नों नौं नं नः हुं हुं फट् ठः ठः।'

ॐ हं हं वां ह्लं ह्लं ठः ठः। अनेने चतुरंगुलं काकास्थिकीलकं गृहीत्वा सहस्रमभिमंत्र्य यस्य गृहे निक्षिपेत्तस्योच्चाटनं भवति।

कौए की चार अंगुल लम्बी हड्डी लाकर नीचे के मन्त्र से उसे सहस्र बार

अभिमन्त्रित कर जिस घर में प्रक्षेपि कर दें, तो वहाँ के व्यक्तियों का उच्चाटन होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ हं हं वां ह्लं ह्लं ठः ठः।'

ॐ ह्रीं कामिनी स्वाहा। अनेन घृतामिषस्य होमे कुर्यात् वाक्सिद्धिर्भवति।

'ॐ ह्रीं कामिनी स्वाहा'—इस मनत्र से घृतमिश्रित आमिष की बारह हजार आहुतियाँ देने पर वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है।

ॐ अरविन्दे स्वाहा। अनेनायुतजपेन कर्मपिशाचिनीसिद्धि-र्भवति।

'ॐ अरविन्दे स्वाहा'—इस मन्त्र के दश हजार जप करने से कर्णपिशाचिनी की सिद्धि मिलती है।

ॐ हुं खुं अमुकं हन हन ठः ठः। अनेन ढाऊकाष्ठं कतुतैलेन सह होमयेत्। अयुतहोमेन सर्वशत्रुनिपातो भवति।।

झाऊ वृक्ष की लकड़ी को सरसों के तेल में मिलाकर नीचे के मन्त्र से दश हजार हवन शत्रु के नाम से करने पर सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ हुं खं खां अमुकं हन हन ठः ठः।'

सर्वकार्य साधक एवं विघ्नविनाशक मन्त्र

' नमो सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराजवश्यकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय श्री ॐ स्वाहा।'

यह मन्त्र सत्तावन अक्षरात्मक है।

विधान–उक्त मन्त्र का नित्यप्रति एक सौ आठ बार जप करने के पश्चात् कार्याम्भ करने पर उस कार्य में सफलता मिलती है। यदि कहीं आने-जाने से पूर्व इसका पाठ कर लिया जाय, तो गमनागमन में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती

युद्धजयी मन्त्र

इसका द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ जीवपातालमर्दने स्वाहा।'

विधान–जप के पश्चात् सेवती के पुष्पों से दशांश हवन करने पर युद्ध में विजय-लाभ होता है। शत्रु द्वारा किये गये प्रहार का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह अतुल पराक्रमी बन जाता है। यदि मार्गगमन में जप करे तो उसकी चालन-शक्ति का वर्धन होता है।

अघोर मन्त्र

आदि अन्त अनहद उपाया, साहं हंस निरंजन काया। गौरा ईश्वर महादेव पार्वती कूं सुनाया। उग्र दृष्टिकर अमर भई काया, गौरामाई बहुत सुख पाया।

ॐ अघोर, अघोर, महाअघोर, रवी अघोर, शक्ति अघोर, पीड अघोर, प्रान अघोर, धरती अघोर, अग्नि अघोर, जल अघोर, थल अघोर, पवन अघोर, पानी अघोर, चन्द्र अघोर, सूर्य अघोर, अठारह भाव वनस्पति अघोर, ॐ घोर घोर ॐ घोर घोरता।

अब हमारी वज्र की काया, बाहर भीतर वास न आवे, जीभ न फटे हाड़ न टूटे पीड़न हो प्रानपड़े तो सतगुरुलाज, ॐ अलीलस्वामीकी वाचा फुरे पडंत १ ॐ निरंजन निराकार ज्योतिमध्ये उत्पत्ति माता घोरगायत्री; नेत्रमध्ये चन्द्र सूर्य, अग्निमध्ये गंगा-जमुना मुखधारा, सुरतरोमावलीमध्ये तैंतिस कोट देवता, उनसठ मध्यमें कैलास पर्वत कैलास पर्वत मध्यमें सिद्धक, मध्ये दुर्वासा ऋषि दुर्वासा मध्ये श्रृंगी, श्रृंगीमध्ये श्रृंगी ऋषि उत्पन्न हुए, पादोदक माता अघोरगायत्री, २ पहंत ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो देहस्थ अखिलदेवता गजमुखी ईश्वरी भैरवी योगिनी, यक्ष पितृभ्यो नमः।

विधान–सेमल वृक्ष की १०८ लकड़ी लेकर उन पर 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं पलं कमलसौन्दर्यै नमः विस्तरविस्तर स्वाहा'—पढ़कर एक लाख जप करें। पुनः धूप, दीप दें, तो समस्त अभिलाषायें पूर्ण हों।

भैरव मन्त्र

ॐ वनखण्डी लकड़ी वनखण्ड का तेल, धरती ऊपर आकाश बीजमंत्र का ऐसा गहिये जो महादेव पार्वती होय। बीजमंत्र का धरो ध्यान, काया मध्ये विश्राम, जाग्रकोटे सूर्य तपे, जतन शून्य मंडल में जपे, सर भैरों साद्र भैरों गढ़ भैरों नृसिंह वीर पाया, संजीवनमंत्र बीजमंत्र मन में धरे सोई करे, ॐ अन्न भैरव पान आकाश भैरव भैरव श्री श्री श्री श्री श्री।

विधान–इसके लिए चने की दाल ३ टंक, वंशलोचन, ३ टंक, भाँग ३ टंक और गुड़ १२ टंक ले लें। पुनः सात घरों में भिक्षा माँगकर उसे उलटी चक्की द्वारा पीसकर भैरव की मूर्ति बना लें। उस निर्मित मूर्ति के उदर में सभी सामानों को भरकर स्थापित कर दें। पुष्पादि से पूजन करने के पश्चात् उन्हें लपसी (गीला हलुआ), बड़ा और तिलवटी का नैवेद्य चढ़ाकर हवन करें। तत्पश्चात् उसे भंडार-गृह में रख दें, तो भंडार अक्षय बना रहता है।

मुद्रिकाचालन तन्त्र

काली उड़द और शहद मिलाकर श्मशान-भूमि में सात बार नीचे दिये गये मन्त्र को पढ़ने से मुद्रिका अपने स्थान से चलने लगती है। अथवा इसी मन्त्र को चावल के दानों पर इक्कीस बार पढ़ने से मुद्रिकाचालन होता है।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं मुद्रिकायाचलि चलि द्रव्यआकर्षय आकर्षय नहीं

चले तो उकल भिक्षा की आन वीर हनुमन्त की आन विद्याधरगंगधर्व की आन ॐ आं ह्रीं ऐं क्रौं फट् स्वाहा।

कटोरीचालन मन्त्र

'ॐ नमों ह्रीं ह्रीं क्लीं चक्रेश्वरि चक्रधारिणी चक्रवेगेन कटारी चमचमकारिणी परग्रहणी स्वाहा।'

भूत-प्रेतादिक वशीकरण मन्त्र

इसके लिए षडाक्षर मन्त्र इस प्रकार कहा गया है—

'ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।'

विधान—पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मन्त्र का जप करना चाहिये। नैवेद्य में देवी को दूध, घी का अर्पण करें। इसकी सिद्धि होने पर भूत-प्रेतादि साधक के वशीभूत होकर उसकी परिचर्या में संलग्न रहते हैं।

बत्तीस हजार (३२,०००) की संख्या में जप करने से फलापलब्धि होती है।

बुद्धिकरण मन्त्र

ॐ नमो देवी कामाक्षिके त्रिशूलखण्डहस्ते पादः पति गरुड़सर्पभक्षी तव पर्वतसमांगन ततो चिन्तामणि नृसिंह चल चल छप्पनकोटि कात्यायनी तालु प्रसादके ॐ हौं ह्रीं क्रौं त्रिभुवनं चालय स्वाहा।'

विधान—उक्त मन्त्र को इक्कीस दिनों तक नित्य १०८ बार जप कर लें तो सिद्धि मिलती है। इस सिद्ध मन्त्र से अभिलाषित की हुई वस्तु को खाने पर मनुष्य बुद्धिशाली बनता है।

श्रीनामशब्द अलील बीजमन्त्र

ॐ अध नाम पजीरी, ॐ अस्य स्वामी समरथ धनी तत्त नाम सो स्वर्ग माहीं। अर्द्ध नाम में रहे समाई ॐ अहंकार महंकार ररंकार, शतशब्दसुरतरोपार उच्चरन्ते जीवन्मुक्ति, सरवनसाखी, अर्द्धनामेंअनगढ़ का किया, गुरूचेला दोनों बतलाया, अर्द्धनाम कह सुनाया, अर्द्धनाम धर्मशाला सुनाया, जिन नाम सों पत्थर तिराया, जिननाम से सन्त उधारा, सोई नाम पुरुषहू सिद्धी पाई सो समरथ दिया बताय अउतरैया पथरज तिखो जाय, सत् ये कर्म की करी चलाई, तामे निहचै रहै समाई, जौत जोनि शंकर नहिं आव, सरवन नारद है सुख पाव। नमो अरधका केवल नाम, तिन ऊपर नहिं कोई बिसराम। वशिष्ट सुनि कथंते पूरन ब्रह्म सुनन्ते। मोक्ष मुक्ति फलं लभंते सहीएक अर्द्ध विसतार। सांस सांस चढंत मन मोक्ष चढन्ते द्वादश आगे लखो जन्ते। ॐ सोहं त्रिकुटी सो विश्राम मूल अर्द्ध कहुंवापरिमान। एतीसाध नाम करया चलंत पद्म आसन गंगनका भेव। अजरी बजरी दोनों न्यारी, तिनसासंकालागीताली दश दरवाजा बन्द करो, तो शब्द चाते मनवां धरो।

ॐ अलील की माता कुमारी, पिता जतीलोकी काछ वज्र की काया पिया प्याला रहै। निरबंध। जन्मे न मरै न फेर वो तरै बाल जपै तो बाल हो वृद्ध जपै तो बाल होय, उलटंत अलीत पलटंत काया, ऐसा आराम कोइ साध विरला पाया, बीजमंत्र का घर ध्यान, सिद्ध हू वा पनप्रमान, चौरासीमें ध्यान लगाय तो आवा गमन वीर न आया, नौनाथ चौरासी सिद्धते थरा ध्यान अलील प्रेम हंस विश्राम, प्रेम जोत अनन्त कोटि हुआ कल्यान, कथ्यन्ते अटल पुरुष सुनन्ते अखण्डी अटल।

अघोरगायत्री मन्त्र

ॐ धरती माई मैं तेरा पुत्र तू मेरी माई जो चार चार अंगुल की देह उठाई तहां उतारो धरम गुसांइ बाध ले धरती उठाय ले कंथ शब्द अगोचर कंठ वाचा, वाद बदेले अलील, अनहदकु बांध, बांधूं चौंसठ बांध अष्ट कुली नौ नाग बांधूं तनीतकलाचटुसवाई अघोर अघोर महाघोर अघोर आकाश अघोर सूर्य अघोर काम अघोर विष्णु अघोर सब आलम रत्ती संतच्छ श्रीगुनउनचास नाम, स्वसकत अघोर, अमरी बजरी अघोर काया, अघोर कंठ ना फूटै, पीड़ न पड़े, विष्णु कहे, अंग सत्, ऐसा होय, काल न खाय, अमरी बजरी, ॐ हं रन काया, कंठ ना फूटै, पीड़ न पड़े न काया, ॐ हसनाहंसः रूपाकी अमरी सोनाकी बजरी, रूपाका प्याला, पड़े नहीं काया, भर भर पावे गोरखनाथ आदि करो, अनादि करो, कृपा करो, शिक्षा करों, अलील करो, अमर करो, महाअघोर करो, श्रीधर्म गुसांइका वाचा फुरो, ॐ ह्रीं धरती फल बोलिये। अशोर अलख पुरुष ने गोरखनाथ को सुनाई, नाथजीकी पादुका नमो आदेश।

ऋषिमन्त्र अघोर गायत्री

ॐ रूपी रूषी महाज्योतिः स्वरूपी सरगा परगा। आये ऋषि आये ऋषि मंत्र लाये लखो गायत्री अलील मंत्र जपो अनहद जपो शक्ति जपो अलंगुरु जपो बालंग वाद्री, सवासेर विशखाबुट्टी हाडी, एता खाउ एता जारू, इस घट शिडकी रक्षा गुरू गोरखनाथ करे, सोने की अमरी रूपा का प्याला, भर भर पीवे गुरु गोरखवाला एता पीव आपही पीव पंथमें आदिक जुगादि, युगादिक ब्रह्मा ऋषिः विष्णु ऋषिः महेश ऋषिः ब्रह्मा ऋषि के पांच पुत्र सनकादिक ऋषि वशिष्ठ ऋषिः बालखिल्य ऋषिःनारद ऋषि के चार पुत्र, मांड ऋषिः वसु ऋषिः धौम्य ऋषिः मातंग ऋषिः ऋषिमंत्रः अघोर गायत्री पीडकुलकुरः जो सादै सो इक्कीस पीढीले उद्धरेविना ऋषितंत्र किरिया करे तो इको पीडी नरकमें पडे जोगजुगता मोक्षही माता, अनन्त कोटि सिद्धा। इति ऋषिमंत गायत्री।

गोरखनाथने साधी अघोर गायत्री। अथ गोदवरी में कही नमस्ते नमामि, काले अकाल इष्टता, विश्वास मन में रखना उलटी त्रिकुटी साधना। इति ऋषिमन्त्र अघोर गायत्री सम्पूर्णम्।

विधान–दीपावली की रात्रि में खेत को मिट्टी की माला बनाकर पहने।

अन्नपूर्णा मन्त्र

१. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ईश्वरध्यानम्। अन्नपूर्णायै नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं ह्रीं हुंकली कुरुस्वमिनी जय विजय अप्रतिम चक्रे मम कर्यय सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधान–उक्त मन्त्र एक सौ आठ बार जप कर खाद्यान्न को भंडार गृह में डाल देने से धान्य की वृद्धि होती है।

२. आसने कमलासने कलमवासिनी अस्थलासीलिया वीडज्योति सटा समोहाविलसस वणुताननाभोररूहंजणोर पीतजोगपदमुभयोबाहुवी करजाय तावतीभोएधंरेतो शंख चक्रमणीलक्ष्मी नृसिंहं भजे।

विधान–इस मन्त्र को एक सौ आठ बार पढ़कर अन्नागार में गेहूँ, चना मर आदि जो भी खाद्यान्न पदार्थ रखे जायेंगे, वे सदैव ही बढ़ते रहेंगे।

शत्रुगृह को मलापूरित करना

ॐ नमो उज्जैन नगरी सिप्रानदी सिद्धिमद्धोम शान्ता हावसे एक झाप उोते झापटका दो बेटा ते बेटा माही एक भूत एक मलो अहोभूत अ आ हो मला अमुकाक घरी विष्यनाखन नाखे तो झापडवीरकी आज्ञा ठः ठः ठः स्वाहा।

विधान–उक्त मन्त्र को किसी वृक्ष के नीचे अथवा अपने घर के ऊपरी कक्ष में बैठकर जपें। पुनः लाल कनेर के १०० पुष्प तथा १०१ गृगुल की गोली से मन्त्रोच्चार करते हुए अग्नि में हवन करें। हवन के पश्चात् उस भस्म को शत्रुगृह में फेंक देने पर उसके घर में सर्वत्र विष्ठा-ही-विष्ठा हो जाता है, जिसके फलस्वरूप उसे आवागमन में असुविधा होने लगती है।

स्तम्भनकारी मन्त्र

'ॐ नामे ॐ ट्क गांव में आनंदी गंगा जहां धुंध साधनीका स्थान, नौ नगर नौ नेहरा नौ पटना नौ ग्राम, जहां दुहाई धुंध साधनी की ॐ उलटंत वेद पलटंत काया, गरज गरज वरसंत पत्थर वरसंत लोही गरजन्त ध्रुवा वरसंत, चलि चलि चलाई चकवा धुंधला धनी ॐ धुंधला धनी पटन पटन सब डाटत फट् स्वाहा।

विधान–गाय के गोबर करते समय उसके गोबर को बीच में से लेकर उसके

तीन कानों को घेर दे और उस पर एक मनुष्याकृति बनावें। उसके मुँह पर १ मुट्ठी धूल, १ मुट्ठी उड़द तथा एक लोढ़ा से सात बार मन्त्र पढ़कर मारे। पुनः उस पर मुर्गी का अण्डा फोड़कर शहद की धार टपकावें। तदनन्तर उस पर प्रक्षेपित सभी वस्तुओं को फेंककर जिस स्थान पर चलावें तो वहाँ के सभी लोग स्तम्भित हो जाते हैं। इसी को अवधूत मन्त्र भी कहते हैं।

'ॐ वं वं वं हं हं हं घ्रां घ्रां ठः ठः।'

विधान—उक्त मन्त्र को रविवार के दिन निगोही के बीज पर सात बार पढ़कर जिस ओर चलाया जायेगा उधर के लोगों का स्तम्भन हो जायेगा।

शत्रुमुख स्तम्भन मन्त्र

'ॐ ह्रीं रक्ष चामुण्डे तुरु तुरु अमुकं में वशमानय स्वाहा।'

विधान—उपर्युक्त मन्त्र द्वारा सफेद घुँघुची को अभिषिक्त कर मुख में रख लेने पर शत्रु के मुख का अवरोधन होता है।

शत्रु स्तम्भन मन्त्र

'ॐ नमो भगवते महारौद्राय शत्रोः स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा फट्।'

सबसे पहले इस मन्त्र को एक लाख की संख्या में जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। प्रयोगकाल में भी उक्त मन्त्र का जप १०८ बार करके शत्रु का नामोच्चार करें और उसकी जिस वस्तु का स्तम्भन करना हो उसका भी नाम लेना चाहिये।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्र

'अघोर रुपया शस्त्र स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।'

विधान—सर्वप्रथम उक्त मन्त्र को दश हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। तदनन्तर रविवार के दिन बेल की पत्ती को कमल की जड़ के साथ पीसकर शरीर पर लेपित करने से शस्त्राघात का प्रभाव नहीं होता।

मेघ स्तम्भन मन्त्र

'ॐ नमो नारायण मेघ स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।'

विधान—सबसे पहले उक्त मन्त्र को दश सहस्र बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये। तत्पश्चात् दो ईंटों को लाकर उस पर श्मशान के कोयले से 'मेघ' शब्द लिख दें और दोनों को एक साथ मिलाकर भूमि में स्थापित कर दें। स्थापन-काल में ऊपर लिखित मन्त्र का उच्चारण करते रहना चाहिये। ऐसा करने से वृष्टि रुक जाती है।

सैन्य स्तम्भन मन्त्र

'ॐ नमः काल त्रिशूलधारिणी मम शत्रोः सैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।'

विधान—सर्वप्रथम साधक को दश सहस्र मन्त्रजप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। तत्पश्चात् रविवार के दिन घुँघुची का फल लाकर श्मशान-भूमि में स्थापित कर उस पर एक पत्थर रख दें और अष्ट योगिनियों—माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, कुमारिका, लक्ष्मी और क्षेत्रबाला की अलग-अलग मद्य, मांस, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि देकर पूजा करें पूजनोपरान्त उन्हें बलि प्रदान करें तो सेना की गति रुक जाती है।

बालरक्षा मन्त्र

'ॐ नमो भगवते गरुड़ाय व्योमकेशाय स्वस्त्यस्तु स्वाहा।'

विधान—उक्त मन्त्र को जल पर एक सौ एक बार पढ़कर बालक के मस्तक में लगा देने पर वह सभी बाधाओं से सुरक्षित रहता है।

भूतदर्शन मन्त्र

श्रृगालस्याक्षिकर्णेन ह्यञ्जयेल्लोचनद्वयम्। भूतं पश्यत्सौ तस्मात्संप्राप्नोति महानिधिम्। देवदासी रसश्चक्षू रञ्जयित्वाऽपि तत्फलम्।

अर्थात् सियार (गीदड़) की आँखों तथा कानों का चूर्ण बनाकर नेत्रों में अंजन की भाँति लगाने से भूतदर्शन तथा भूमिस्थि निधि के दर्शन होते हैं। वे भूमिनिधि साधक को प्राप्त भी हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त देवदाली (बड़ी तोरई) का रक आँखों में लगाने से भी उक्त फल की उपलब्धि होती है। इसके मन्त्र निम्न प्रकार से हैं—

'ॐ गं गणपतये नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ भूतं दर्शय दर्शय स्वाहा।'

भूतिनी साधन मन्त्र

'ॐ ह्रौ क्रं क्रं क्रं कटु कटु अमुकं क्रं क्रं क्रं अँ अः।

विधान—गोरोचन के द्वारा भूतिनी की मूर्ति का निर्माण कर उसे अपने बाँयें पैर के नीचे दबाकर आठ सहस्र की संख्या में जप करना आवश्यक है। जप के फलस्वरूप भूतिनी हा-हा-ही-ही का घोर शब्द करती हुई साधक को निकट उपस्थित होकर पूछती है—मैं तुम्हारा कौन-सा प्रिय कार्य करूँ?

उत्तर देते हुए साधक को कहना चाहिये कि तुम मेरी सेविका बनकर सदैव मेरे साथ रहो।

यदि किसी कारणवश उसके आने का विलम्ब हो तो नीचे लिखे मन्त्र से भूतिनी प्रतिमा पर सफेद सरसों का प्रक्षेपण करने से वह तत्काल ही प्रकट हो उठती है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं कं कं मम शत्रून् मारय मारय ह्रीं हुं अः।'

देहरक्षा मन्त्र

प्रत्येक साधक को किसी कर्म के करने से पूर्व निम्नलिखित मन्त्र का जप

१०८ बार करने से उसके शरीर की रक्षा होती है तथा उस पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

'ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः। शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा।'

लक्ष्मी मन्त्र

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।'

विधान—उक्त मन्त्र को पीला कपड़ा पहनकर पीपल के पत्तों पर एक लाख लिखकर जल प्रवाहित करने से लक्ष्मी की सिद्धि मिलती है।

स्वप्न सिद्धेश्वरी मन्त्र

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं रक्तचामुण्डे स्वप्ने कथय कथय शुभाशुभं ॐ फट् स्वाहा।'

विधान—उक्त मन्त्र को नित्यप्रति इक्कीस दिनों तक १०८ बार जपने से स्वप्न की सिद्धि मिलती है।

धनदायक मन्त्र

निम्न मन्त्र का जप प्रतिदिन १०८ बार करने वाला धनवान बनता है। मन्त्रजप इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मि आगच्छ आगच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।'

तेजी-मन्दी सूचक मन्त्र

'ॐ श्रीं क्लीं आं लक्ष्म्यै स्वाहा।'

विधान—किसी वस्तु की तौल करके उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़कर चमड़े में लपेट दें। प्रातःकाल उसे पुनः लौटने पर यदि उसका भार कम हो जाय, तो महँगी और पूर्व तौल से बढ़ने पर वस्तुयें सस्ती होंगी।

ऋद्धि-सिद्धिप्रदायक मन्त्र

'ॐ सतनाम आदेश गुरु को ॐ पहला तारा ईश्वर तारा, जहां हनूमान मारा ठंकारा, कालभैरूं काली रात, काली पुतली काजल रात कालो कलुओ आधी रात, चलतो बाटः चित्तकर उलट मार पुलट मारहो हनुमंतवीर हाल आव, सिताब आव सवा पहरमें आव, सवा घड़ी में आव; जा किसकी खाटपर ऋद्धि लाव सिद्धि लाव सूतीको जगाय लाव बैठी को उठाय लाव, चलतीको बुलाय लाव तो हनुमन्तवीर हमारे कार्यमें ढील करोगे तो सदाशिवकी दुहाई माता अंजनी की दुहाई सीधा पाँव धरोगे तो बत्तिस धारको दूध हराम करोगे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति चलो मन्त्र ईश्वरोवाच।।

विधान–रविवार के दिन कड़ाही में सवा पाव घी में रोट (आटा-गुड़ मिश्रित एक पक्वान्न) बना लें। उसे मंगलवार के दिन कालभैरव को चढ़ावें तो ऋद्धि-सिद्धि मिलती है।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

'ॐ ह्रीं महिषमर्दिनी लह लह हल हल कठ कठ स्तम्भय स्तम्भय अग्निं स्वाहा।'

सबसे पहले उक्त मन्त्र को दस सहस्र जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये। तदुपरांत खैर की लकड़ी के अंगारों के बीच प्रविष्ट होने पर भी शरीर नहीं जलता।

अपास्मार (मृगी) नाशक मन्त्र

'ॐ ब्रह्म इन्द्र रक्ष रक्ष स्वाहा।'

विधान–दीपक के तेल को सात बार मन्त्रभिषिक्त कर शरीर पर मालिश करने से मृगी रोग जाता रहता है।

वाणीसिद्धि मन्त्र

ॐ नमो लिङ्गोद्भव रुद्र देहि में वाचा सिद्धिं चिन्तितं देहि देहि ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः।

विधान–एक लाख (१,०००००) जप करने से वाक् सिद्धि होती है।

शत्रुपीड़न मन्त्र

'ॐ हुं ह्रं क्रां रंग महागाड, सुखमुखी दोई दाड दिरना विदार झंकार तैंतीस करोड़ देवता करन्त स्तुति, तहीं भोदेव नहीं लोक संति, हाथ कटारन मिली लोहेकी असी। शर मुंच कंप पाताल घरघर मार नृसिंहदेवता नृसिंह वेताल कामरू कामक्षाकी कोट आज्ञा। ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं हुं हुं छुं छुं फट् स्वाहा।'

प्रयोगविधि–उक्त मन्त्र का पचास हजार जप करके किसी व्यक्ति को चारपाई पर गिरा दें, तो शत्रु पीड़ित होता है।

शत्रुप्रहारक मन्त्र

मन्त्रजप–'अल्लह रखजल की मौज, कुतुबकीसीर महम्मदकी गजब, खुदाई का पाक हरयाजवर, मारे मारे फलाने के शिरपै जार।।

प्रयोगविधि–उक्त मन्त्र को जूते के तल्ले में लिख लें। पुन: शत्रु का आकार बनाकर, उसके नामोच्चार से उस पर मन्त्रलिखित जूते का प्रहार करें तो निश्चय ही उस पर मार पड़ती है।

वृश्चिक विष निवारण मन्त्र

मन्त्रजप–'ॐ झं हुं यं ञं ङं वं बं लं क्षं एं ऐं ओं औं हं हः।'

प्रयोगविधि–कदम्ब वृक्ष के बीज का छिलका पीसकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दंशन स्थान पर लगा देने पर डंक मारने का विष दूर हो जाता है।

मन्त्रज्ञप–'श्रीखण्ड किलामनः श्रीऋषिका बाण मतो नारसिंह हंकारिया कहां गई वार। गिरी छुहारा जायफल तेरी पूजा लेह हमारा मंत्र प्रसिद्ध कर देह। शब्द सांचा पिण्ड काचा चलो मंत्र ईश्वरोवाच।'

प्रयोगविधि–नृसिंह की प्रतिमा बनाकर उसके मुख के सामने गूगुल और लोहवान का धूप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप इक्कीस दिनों तक करें।

प्रेतनाशन मन्त्र

मन्त्रजप–ॐ हनुमाना, बलवंता, गाजन्ता, घोरन्त तुलसी जाप जपन्ता सवा सेर रोट पीली जनेऊ सवा सात पान का बीड़ा लो, सवा सात कोसको दौर जाओ, डंकनी संखनी भूत-प्रेत देवदानवको पकड बाँधकर लाओ न लाओगे तो माता का दूध हराम करोगे शब्द सांचा।

प्रयोगविधि–तीन मंगलवार को १०८ बार जप करके हनुमानजी को सवा चार सेर रोट, पान की बीड़ा तथा जनेऊ चढ़ाकर घी के दीप का धूपदान करें तो प्रेतबाधा दूर हो जाती है।

गोरख मन्त्र

मन्त्रजप–ॐ कालकंकाल दोनों भाई लोकमर हम जीव यह पिंडको छे दें तो शंभुनाथकी दुहाई गुरू गोरखनाथ की दुहाई। बोतावा गिरे तो धरती लाज। हाड गिरे जो शंकर लाज, सहस्त्र वृक्ष किया व बंध, न बंधै तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई। बाबा जाताल, बीत भया काल शब्द सांचा पिंड काचा, चलो मंत्र ईश्वरोवाच गोरखवाचा।।

कर्णपिशाचिनीसिद्धि मन्त्र

'ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं ग्लौं ॐ नमो कर्णाग्नौ कर्ण-पिशाचिकादेवी अतीत अनागत वर्तमान वार्ता कथय, मम कर्णे कथय कथय कथय तथ्य मुद्रावार्ता कथय कथय, आगच्छ आगच्छ सत्यं सत्यं वद वद वाग्देवी स्वाहा।'

विधान–एक लाख जप करके पंचामृत से दश हजार हवन करें।

भैरव मन्त्र

'ॐ काली काली महाकाली, मद्यमांस फिरै मतवाली, मडेसाने बाजै ताली ब्रह्माकी बेटी इंद्रकी साली ऋद्धि सिद्धि ल्याव माता उठ चल सोतीको जगाय लाव, बैठीको उठाय लाव, मेरा बैरी तेरा भक्ष। सुन्दरी स्वाहा। सिद्धि आई मद आई चख आई ऋद्धि ल्याव, सिद्धि मा उठ चाल चले नहीं तो ब्रह्मा विष्णुकी आन।

विधान–गूगुल, चावल, घी, गुड़ और तिल की दो हजार एक सौ इक्कीस (२१२१) गोली बना लें। अब इस गोली को प्रतिदिन इक्कीस दिनों तक १०१ गोली किसी तीर्थस्थान में बैठकर हवन करें तो २१ दिनों में सिद्धि मिल जाती है।

सर्पभय करण यन्त्र-तन्त्र

इस यन्त्र को इन्द्रायण के रस से सादे कागज पर शत्रु के नाम सहित लिखकर साँप के विवर में रख देने पर उसे निश्चय ही सर्प डंस लेता है।

सर्वभयकरण मन्त्र

'ॐ नमो काल गौराक्षेत्रपाल बामं हाथं कांति जीवन हाथ कृपाल। ॐ गंती सूरज थंभ प्रानसांप रथभंजलतो विसाररारथं भुकसीचा पाषानचाल शिलाचाल चाल हो चाली ना चाले तो पृथ्वी मारे की पाप, चलिये चोखा मंत्रा ऐसा कुंनी अवनारहसही।

हनुमान मन्त्र

'ॐ नमो हनुमन्तवीर कम्प धरती च शरीर, मार मार हनुमंतवीर हाथ संखमसत गज चढा हाथी चढे तो हनुमंत खेलता, जो आवै मार करता, जो फिर आवै वह पड़ता आदिशक्तिका तिलक करूं तिन तीन भुवन हूँ वश करूं देश हनुमंत तेरा रूप, खण्ड गूगल राखो धूप, आसन बैठा सुमिरन करूं दोष दृष्टि बांधि दे मोहि, मेरा वैरी तेरा भक्ष भेजा फोड कलेज चक्ख, उलंट मार पलंट मार घोर मार, घुमंत मार, पटक मार पछाड मार मार मार वे मार, ना मार, ना मरे तो माता अंजनी के शिर पांवधर स्वाहा।

विधान–इस मन्त्र की साधना किसी नीम अथवा वट वृक्ष के नीचे या देवालय में बैठकर इक्कीस दिनों तक करें। इसमें इक्कीस कुमारी कन्याओं के हाथ से कांते हुए सूत को पहनाकर हनुमानजी को सवा सेर का रोट, पान का बीड़ा तथा दो नारियल अर्पित करें। उक्त मन्त्रजप २१ दिनों तक नित्य १०८ बार करें। नैवेद्य के रूप में घी, गुड़ और तिलमिश्रित लड्डू, उड़द के बड़े आदि चढ़ाकर धान्यपंचक दें, तो हनुमान जी प्रत्यक्ष वरदान देते हैं। ऐसी अवस्था में भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

'ॐ ह्रीं यं ह्रीं श्रीरामदूताय रिपुपुरीदहनाय अक्षकुक्षि-विदारणाय अपरिमितबलपराक्रमाय रावणगिरिवज्रायुधाय ह्रीं स्वाहा।'

विधान–उक्त मन्त्र का जप गुरुवार से प्रारम्भ कर दश सहस्र कर लेने पर समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं।

अन्नपूर्णा बीजमन्त्र

'अन्नपूर्णा अन्न पूरै इन्द्र पूरै पानी, ऋद्धि सिद्धि तो गणेश पूरवै त्रिपुरा भवानी। ईश्वरी भंडारभर महेश्वरी शील संतोष की डिब्बी, तीन लोक लोई

आवो सिद्धो जीमो सब कोई। सीता माता की रसोई जन्म न खाली होई चला मंत्र महायंत्र ॐ सुमरे फटकंत स्वाहा। ॐ अजीयाजीता आय स्वाहा ॐ श्रीसरस्वत्यै स्वाहा।'

विधान–सात मंगलवार को अलग-अलग स्थानों से भिक्षान्न एकत्रित कर उसे उलटी चक्की में पीस डालें। उस आटे का रोट बनाकर हनुमान जी को अर्पित कर मन्त्रजप करें। इस प्रकार छह मंगलवार को पूजन कर सातवें मंगलवार को सवा दश अंगुल की आटे की हनुमान मूर्ति बनाकर भंडारगृह में स्थापित कर देने से भंडार अक्षय बना रहता है।

सर्वव्यधि विनाशक मन्त्र

'ॐ क्रीं क्षं सं सं सः।'

विधान–उक्त मन्त्र द्वारा गोघृत को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर निरन्तर एक मास तक पीने पर सभी रोगों की निवृत्ति होती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न अनुपानों के साथ इस घृत का पान करने से विभिन्न रोगों का शमन होता है, जैसे—चावल की धोवन के साथ इस घृत को पीने से शूल रोग, पुननर्वा मूल (गदहपूरना की जड़) के स्वरस के साथ इसके सेवन से वृद्धत्व तथा गन्ने के रस के साथ इसे पीने पर सभी रोगों से छुटकारा मिलता है।

गणेश मन्त्र

'श्रीगणपति गणपति वसे मसान। जे फल मांगो दें फल आन। पंच लाडू शिर सिंदूर मनकी इच्छा आन दे पूर। अचलको बान हनुमंत जती श्रीगोरख नाम ले ले जाऊँ। ॐ नमो ग्रां सोहं स्वाहा।'

विधान–एक सौ आठ लड्डू तथा एक सौ आठ कनेर के पुष्प से पूजन कर १०८ बार मन्त्रजप करने से अभिलाषा पूरी होती है।

'ॐ गं गणपतये जहां पठाऊँ तहां आव दस कोस आगे जा, दस कोस पीछे जा, दस कोस दाहिने जा, दस कोग बायें जा, महागुफाकी आज्ञा मान, ऋद्धि सिद्धि दे आन, सग्र अग्र आन, जो न आव तो पार्वती की लाज ॐ ग्रां फट् स्वाहा।'

विधान–उक्त रीति से पूजन कर इस मन्त्र का १०८ बार जप करें।

उच्छिष्ट गणपतिनवार्ण मन्त्र

'हस्तिपिशाचलिखे स्वाहा'

विधान–सफेद मदार की लकड़ी या लाल चन्दन के अँगूठे के बराबर गणेश प्रतिमा बनाकर ब्राह्मण, अग्निया गुरु के सामने मूर्ति स्थापित कर मधु से स्नान करायें। तदनन्तर कृष्णपक्ष की चतुर्थी से लेकर शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि तक नित्य एक सहस्र मन्त्रजप भोजन के बाद जूठे मुख से ही करें।

रात्रि में लाल वस्त्र पहन कर पान खाते हुए जप करना चाहिये। पूजनकाल में गुड़ की खीर बनाकर नैवेद्य के रूप में अर्पित करना चाहिये। इस साधना में व्रतादि करना आवश्यक नहीं होता, केवल मन्त्र-चिन्तन से ही सर्वकामनाओं की सिद्धि होती है।

इस मन्त्र के एक करोड़ जप से अष्टसिद्धियों की प्राप्ति होती तथा आकाशगमन की शक्ति साधक में आ जाती है। इस मन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधने से सौभाग्य की वृद्धि होती है।

जड़ खोदते समय यह कहें कि ब्रह्मा तथा शिव ने जिस लिये तुमको खोदा था, उसी लिये मैं खोद रहा हूँ। १०८ बार ॐ कहते हुए तब खोदे।

'ॐ श्वेतवृक्षमालिना स्वाहा।'

तत्पश्चात् उस आक (मदार) निर्मित गणेश प्रतिमा का पवित्रतापूर्वक पूजन कर नीचे के मन्त्र का एक लाख जप पूर्ण करके दशांश हवन करें तो सिद्धि प्राप्त होती है। मन्त्रजप इस प्रकार से हैं—

'मम कार्य साधय साधय ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं उमासुतगणेशाय त्रिनेत्राय गजवदनाय अमृतकपोलाय मम मनोवांछित लाभवरदायक ऋद्धि-सिद्धचेतनाय पद्मासनाय एहि एहि मम मनोवांछित पूरय पूरय लक्ष्मीं देहि देहि नृत्य नृत्य धाव धाव प्रजामध्ये सर्वत्र मम जयं कुरु कुरु श्रीचिन्तामणिगणेशाय स्वाहा।

प्रसन्नताकारक सरस्वती मन्त्र

'ॐ ह्रीं श्रीं बाग्वादिनि भगवति अर्हन् मुखनिवासिनी सरस्वति ममांशे प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः।

विधान—दीपावली की रात में स्नानादि से पवित्र होकर उत्तराभिमुख हो श्वेत वस्सत्र तथा श्वेत पुष्पों की माला गले में धारण करें। तदनन्तर सरस्वती देवी की श्वेताकार मूर्ति स्थापित कर उनके सामने चावल की ढेरी लगायें और बारह हजार की संख्या में मन्त्रजप करें तो देवी की प्रसन्नता मिलती है।

प्रसन्नताकारक लक्ष्मी मन्त्र

'ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ कमलधारिणी शांति घृति कीर्ति कांति बुद्धिलक्ष्मी ह्रीं अप्रातिमचक्रे फुट्विनक्राय स्वाहा।'

विधान—दीपावली की अर्द्धरात्रि में भूमि को गोबर से लेपित कर स्वरचक्रेश्वरी देवी का पंचोपचार पूजन कर चावल की खीर अर्पित करें। तत्पश्चात् निवेदित खीर का ही भोजन एक बार करें और बारह हजार की संख्या में जप करें तो लक्ष्मी की प्रसन्नता मिलती है।

ब्रह्मदेवता का मन्त्र

मन्त्र—**'यं भं मं छं लं।'**

जपसंख्या—छह सहस्र।

इससे ब्रह्मदेव की प्रसन्नता होती है।

रुद्रदेवता का मन्त्र

मन्त्र—**'कं रं वं थं उं चं जं जं ऊँ टं डं।'**

जपसंख्या—इसकी जपसंख्या भी छह हजार कही गयी है।

विष्णुदेव का मन्त्र

मन्त्र—**'ऊँ ढं णं तं दं नं पं फं।'**

जपसंख्या—कुल दह हजार।

विष्णुदेव का मन्त्र (वेदोक्त)

मन्त्र—**'ॐ नमो नारायणाय।'** यह अष्टाक्षर मन्त्र है।

इसका जप सोलह लाख, उसका दशांश मधु और शक्करमिश्रित कमल पुष्पों का हवन करना चाहिये। इससे साधक धर्म, अर्थ, काम को प्राप्त कर अन्त में विष्णु का सायुज्य पद पा लेता है।

शिवमन्त्र (वेदोक्त)

'ॐ नमः शिवाय।'

इसे पंचाक्षरी मन्त्र कहा गया है। इसका विधान इस प्रकार है—

जप के पश्चात् दशांश या चौबीस हजार मन्त्रों से घी, मधु और शक्करमिश्रित खीर का पलाश की लकड़ियों से हवन करें। पुनः उससे दशांश भाग में तर्पण-मार्जन करके शुद्ध ब्राह्मणों को खीर आदि से युक्त भोजन करायें। ऐसा करने से मन्त्रसिद्धि होती है। इसका जप चौबीस लाख कहा गया है।

चन्द्रदेव का मन्त्र

मन्त्र—**'हं हं हं हं हं हं।'**

जपसंख्या—एक हजार। २१ हजार जप करने वाला निश्चय ही विष्णुलोकगामी होता है।

श्रीजीवदेवता का मन्त्र

मन्त्र—**'अं आं इं ईं युं यौं युं युं भ्रां भ्रां यं यौं ओं औं अं अः।**

जपसंख्या—दश सहस्र।

हंसदेव का मन्त्र

मन्त्र—'हं सं।'

जपसंख्या—दश हजार।

गौतृणभक्षण मन्त्र

'ॐ सिद्धराजा। अजैपालकोटपली गाय सवा लाख पर्वत चख जाय

जिन जायेवच्छदो वच्छा दोय वच्छाकी चुर्ग सपीडकाफियो करो हीकाल जो चुग्गा न चुगै तो राजागोरखनाथ की दुहाई आठ अंगुल की सांटी लीजै, गांठवाली गौ ला दीजै शहत लगाय गोला दें।

विधान–पशु चारा-घास आदि न आते हों तो उक्त मन्त्र को इक्कीस बार पढ़ने से वे खाने-पीने लगते हैं।

अजपा गायत्री महात्म्य

'ॐ श्रीरामानुजाय नमः। ॐकार बारहयोजन कोटि यंत्र अवनी बैठो वन। इस विधिसे जपो मरण का आगल टूटो मारग मुक्त भया जहां गई त्रिवासा। ब्रह्मा ले उपजी गायत्री ब्रह्मा ले कथी उपजे देव महेश। गायत्री गोविंद कथी सत्गुरु उपदेश मुखी सरस्वती अग्रभई हियसांचा चीन्हीं घटमें भई अलोप काढ़ि प्रकट हम कीन्ही। विद्या श्री पुराण अष्टमुनि सिद्धौ सिद्धकराई ब्रह्मा मुखीं ब्रह्मानी। पुत्रदाता, फलदाता, विद्यादाता, मुक्तिदाता रोग को दूर करती विधिसे समर जितावती, आकाश युग तारणी शंखिनी आदि से उद्धारती, पातालवासिनियोंकी अधीश्वरी जाको खुरासान खुरमोला, पेट सब जम्बू मंडल मुख गंगा प्रवाह लांस अपनो संभल, रोम अटार हमारा ताराकंप तारागण माला रणो अलख रूप सोगयऊं आये वेधी हम धर्मशाला नेता रवि शशि तारा कनक कन्दला समजानो महापुरुष जिन धोये पांव, ले पहुंची वैकुण्ठनाथ पुथ्वीनाथ अजपा गायत्री अजपा जापसे पाप मिट जाय, संत गुरु शब्द कह्यो समुझाय, पाप हरती पुण्य करती ब्रह्मविद्या समासमि।

उक्त अजपा गायत्री से प्राणियों के पाप का नाश तथा पुण्य का वर्धन होता है।

प्रसन्नताकारक गणेश मन्त्र

मन्त्र—**'वं सं षं सः।'**

जपसंख्या—छह हजार। उक्त मन्त्र से गणेशजी प्रसन्न होते हैं।

स्नानीय मन्त्र

मन्त्र—नीचे के तीन मन्त्र स्नानार्थ दिये गये हैं। इनमें से किसी भी एक का मन्त्रोच्चार कर नहाने पर शरीर की क्रान्ति बढ़ती है।

१. **'ॐ ह्रीं क्लीं शरी कंकाली काली मधुमत्ता मातंगी मदविह्वलीमनमोहिनी मकरध्वजे स्वाहा।**

२. **ॐ नमो हनुमंता बलवन्ता हाकन्ता हाहाकार करन्ता भूत-प्रेत बाधन्ता दृष्टि मुष्टि बाँधता मेरा वैरी, भक्ष पकड लाव वेग लाव मुख बुलाव न लावे तो राजा रामचन्द्र की दुहाई माता अंजनीकी दुहाई।'**

३. ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंताय दुष्टमनाय वशीकराय फट् स्वाहा।

ज्वरनाशक मन्त्र

'ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः। ताडितो वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वरः।।'

अर्थात् उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार पढ़कर पान खा जायँ तो एक दिन के अन्तर पर आने वाला इकतरा ज्वर दूर होता है।

तिजारी ज्वरनाशक मन्त्र

ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः। ता श्रीगुरुरामानन्द की पादुका को प्रणाम। ताडितो वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छे महाज्वरः।।

अर्थात् उक्त मन्त्र को एक सौ आठ वार जप कर पान खाने पर तीसरे दिन आने वाला तिजारी ज्वर का नाश हो जाता है।

नाक की नकसीर का मन्त्र

'ॐ नमो आदेश गुरु को सार-सार महासार बाँध, सात बार अरुणा बाँधू, तीतर बार लोहे का सार बाँधू, हनुमन्त वीर आके फूटे मुख सके शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधान–उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर राख लेकर झाड़ देने पर नाक से रक्तस्राव होना बन्द हो जाता है।

दन्तकृमि नाशक मन्त्र

'ॐ नमो कीडार तू कुंड कुंडोला लाल पूछूँ तेरा मुख काला मैं तो से पूछूँ कहाँ से आता तोड़ ताला, सबको क्यों खाय। अब तू जाय भस्म हो जाय गोरखनाथ जी लागूँ पाय। शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधान–उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर नीम की टहनी से झाड़ देने पर दाँतों के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

बुद्धिकारक मन्त्र

'ॐ नमो देवी कामाक्षिके त्रिशूल खड्गहस्ते पादा पातिल सूर्य भक्षयित्वा तव पर्वते समागतस्ततोचिन्तामणि नृसिंह चल चल पवनकोटी कात्यायिनी तासु प्रसाद के ॐ ह्रां ह्रीं क्लौं त्रिभुवन चालय चालय स्वाहा।'

विधान–उक्त मन्त्र का २१ या १०८ बार प्रतिदिन जप करने से मनुष्य बुद्धिमान बनता है।

(तांत्रिक षट्कर्म)

मारण प्रयोग

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के गृह में मंगलवार को गाड़कर स्वयं पेशाब कर दे तो शत्रु का उच्चाटन निश्चित हो जाय।

सफेद सरसों और शंकरजी पर चढ़ायी हुई माला एवं जल इन तीनों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन होता है और उसे खोदकर निकाल देने से पूर्ववत् सुखी होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय करालदंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवैः सह इन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय-उच्चाटय फट् स्वाहा।**

दस हजार जप करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। बिना मन्त्र सिद्धि के प्रयोग निष्फल होगा।

मध्याह्न (दोपहर) में जहाँ गदहा लेटा हो वहाँ की थूल पश्चिम मुख होकर बाँयें हाथ से उठा, उसके पश्चात् उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सात दिन बराबर शत्रु के घर में फेंके तो गृह के स्वामी का उच्चाटन होता है।

उच्चाटनमन्त्र—**ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मन्त्र में अमुक शब्द है, वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये।

वशीकरण प्रयोग

अब मैं वशीकरण प्रयोग कहता हूँ, जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं।

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा व पञ्चांग (जल-डाल-पात-फूल-फूल) सबको सम भाग में लेकर जल के सहयोग से घोट कर गोली बना और छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान-पान में खिलावे तो वशीकरण सिद्ध हो।

वश्यमन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिल ठः ठः स्वाहा।**

बेलपत्र तथा नीबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोंट वशीकरण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन तथा काकजंघा की जड़ को सम भाग ले और कुँमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवा कर उसे वशीकरण

मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय प्राप्त होती है।

चन्दन, रोरी, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दुग्ध में घोट अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से राजा लोग भी वश में हो जाते हैं।

चम्पा की रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग भी वश में हो, अन्य मनुष्यों की क्या गणना? सुदर्शन की जड़ भी रक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

वशीकरणमन्त्र—**ॐ ह्रीं सः अमुकं से वशमानय स्वाहा।**

मधु के साथ खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ डाले तो स्त्री वश में हो।

चिता की राख, वच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले तथा उन सबको चूर्ण कर स्त्री के शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाते हैं।

नीलकमल, भौंरे की दोनों पंख, तगर की जड़, श्वेत कौआगोड़ी सम भाग ले और चूर्ण कर युवती के शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

स्त्री-प्रसंग के पश्चात् अपने वीर्य को बाँयें हाथ से स्त्री के बाँयें चरण के तलवे में लेप करने से भी वशीभूत हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है।

सेंधानमक, शहद, कबूतर की विष्ठा एक में पीस लिंग पर लेप कर स्त्री से मैथुन करने पर स्त्री वश में हो जाती है।

गोरोचन, कुरैया, पारा और काश्मीरी केशर को धतूरे के रस में घोंट लिंग पर लेप कर स्त्री-प्रसंग करने से स्त्री अत्यन्त वशीभूत होती है।

लिङ्गवर्द्धन

छोटी एवं पतली इन्द्रिय द्वारा स्त्रियाँ सुखी नहीं होती है, उनके लिए मोटा एवं लम्बा होना चाहिये, अतः मोटा और लम्बा लिंग बनाने का प्रकार कहता हूँ।

कूट, छोटी, पीपर, दोनों खरैटी, वच, अगन्ध, गजपीपर और कनेर को मक्खन के सहयोग से पीसकर लिंग पर लेप करे तो लिंग मोटा और लम्बा मूसल की तरह हो जाय।

लोध, केसर, असगन्ध, पीपर और शालपर्ण कड़वा तेल में पकाकर लिंग पर मालिश करने से लिंग लम्बा-मोटा होता है।

वच, खरैटी व पारा भैंस के मक्खन में खूब घोंटकर लिंग पर मलने से लिंग तुरन्त लोहा के समान हो जाता है।

सूअर की चर्बी और मधु एक में मिला और लेप करने से करीब एक माह के बाद लिङ्ग लम्बा तथा मोटा भी बन जाता है।

असगन्ध, सतावर, कूठ, जटामांसी और कटेली को चौगुने दूध और चौगुने तिल के तेल में पका लिंग तथा स्तन पर लेप करने एवं खाने से कड़ा होता है।

इसी प्रकार मुसली का चूर्ण भी घी में मिला लेप करने से काफी लाभ होता है तथा पीपर, सेंधानमक ओर मिश्री को दूध में पकाकर लेप करने से भी लिंग मोटा एवं लम्बा होता है।

यह ध्यान रहे कि उक्त औषधियाँ गालों पर भी लगाई जाती है तथा बाँहों में भी लगायी जाती है।

जटामांसी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध तथा सतावर इनको कड़वे तेल में पका लिंग पर मलने से लिंग कड़ा, मोटा एवं लम्बा होता है।

पारा, असन्ध, हल्दी, गजपीपर एवं मिश्री जल के सहयोग के घोंटकर लिंग व स्तन पर लेप करने से अद्भुत लाभ होता है।

गोरोचन मछली का पित्त तथा मोर की शिखा को मधु एवं धी के सहयोग से घोंटकर योनि के ऊपर लगा कर पुरुष से प्रसंग करने पर पुरुष वश में हो जाता है।

कुलथी, बिल्वपत्र, गोरोचन एवं मैनशिल को सम भाग ले ओर चूर्ण कर ताम्रपात्र में रख सरसों के तेल में सात दिन तक मीठी आँच में पक-पकाकर उतारता जाय, उसके पश्चात् कपड़े से छानकर उस तेल को योनि पर लगा पुरुष के साथ रमण करने से पुरुष वश में होता है।

ककुनी, सौंफ, केसर, वंशलोचन सम भाग ले घोड़े के मूत्र में घोंटकर योनि पर लगा मैथुन करने से पुरुष वश में हो जाता है।

कुचकाठिन्य

रेड़ी का तेल, मछली का तेल व बिल्वपत्र का लासा इन तीनों को मिलाकर स्तन पर लगाने से स्तन कड़े होते हैं। यह ध्यान रहे कि मलते समय हाथ ऊपर की रहे।

काले रंग का बिच्छु तथा खंभारी के रस को तिल के तेल में पकायें व केवल तेल शेष रह जाये तो कपड़े से छानकर स्तन पर मले, फिर तो गिरे स्तन भी कड़े होकर उठ जाते हैं।

श्वेत रंग के मोथे को काली गौर के दूध में पका लेप करने योग्य बना स्तन पर लेप करने से स्तन बड़ा एवं कड़ा हो जाता है।

वच, असगन्ध की जड़ तथा पत्र एवं गजपीपर इन सबको शुद्ध जल के सहयोग से पीस और स्तन पर लेप करने से स्तन ताड़-फल एवं बड़े आम-फल के जैसे होते हैं।

गम्भारि के पत्ते का रस व तिल का तेल सम भाग लेकर दूने जल में पका कर जब केवल तेल शेष रह जाये तो कपड़े से छानकर शीशी-बोतल में रख स्तन पर

मले, फिर तो ठीक तौर से एक बार मलने के बाद ही स्तन लोहे जैसे कड़े हो जायेंगे इन उपरोक्त विधियों का वर्णन स्त्री-पुरुष के प्रसङ्गार्थ श्री शंकरजी ने स्वयं किया है।

योनि संस्कार

निम्बपत्र को कोरी हाँड़ी में जल देकर खूब उबाल कपड़े से छानकर योनि को धोवे पश्चात् काले अगर व गुग्गुल को आग में जला योनि को सेंके और पति के साथ मैथुन करे तो पति बड़ा प्रसन्न होता है।

जिस स्त्री की योनि में दुर्गन्ध मालूम पड़ती हो तो वह तो नीम के पानी से योनि को धोकर नीम के कोमल पत्ते योनि पर लेप करे, फिर दो-तीन बार के ऐसा करने से योनि दुर्गन्ध समाप्त हो जायेगी।

रोम-नाशन

पलाश पत्र का भस्म तथा हरताल भस्म का चूर्ण केले के रस में मिलाकर रोम स्थान पर लगा देने से बाल साफ हो जाते हैं, फिर कभी नहीं जमते हैं।

एक भाग हरताल का भस्म, पाँच भाग शंख का भस्म, पाँच भाग पिलखन का भस्म इन सवको केले के जल में मिला रोम स्थान पर लगाने से आराम से बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण, शंख चूर्ण और मंजीठ भस्म को पलाश के फल के साथ पीसकर लेप करने से भी बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण व शंख का चूर्ण चूने के पानी में घोंटकर रोम स्थान पर लगा धूप दिखाने से बाल साफ हो जाते हैं।

सुपारी के पत्ते के रस में उत्तम गन्धक पीसकर रोम स्थान पर लगाये, धूप दिखाने से रोम साफ हो जाते हैं।

योनि संकोचन

आमा हल्दी व खाने की हल्दी, कपल केसर तथा देवदारु की लकड़ी सम भाग ले और जल में पीस योनि पर लगाने से योनि संकुचित होती है।

धव पुष्प, त्रिफला, जामुन की छाल, जामुन का रस, घी तथा मुलहठी सम भाग लेकर पीसे, फिर इसे योनि पर लगाये। यदि वृद्धा स्त्री हो तो भी उसका भग लकड़ी के तुल्य हो जाता है।

नीले कमल के बीज कटेरी, वच, कालीमिर्च, कनेर की छाल व बीज, असन तथा हल्दी को समभाग घोंटकर लेपन योग्य बना योनि पर लगाने से शीघ्र योनि संकुचित हो जाती है।

बीरबहूटी नाम की जड़ी को पीस कर लगाने से योनि सहज ही कड़ी तथा गहरी भी हो जाती है।

स्त्री-द्रावण

कामशास्त्रों ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठ गुना काम अधिक बताया है। इसलिए औरतें जल्दी स्खलित नहीं होती है, एतदर्थ उन औषधियों का संक्षिप्त में वर्णन करता हूँ कि जिससे औरतें भी पुरुषों के साथ प्रेमानन्द ले सके।

सिन्दूर, इमली के फल को मधु में घोटकर भगद्वार पर लगा मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र ही पतन हो जाता है।

त्रिफला चूर्ण को अच्छी तरह कपड़े से छानकर शहद में मिला योनि द्वार पर थोड़ा लगाकर स्त्री प्रसंग करने से स्त्रियाँ शीघ्र ही स्खलित हो जाती हैं।

अगस्त पत्र का रस, भुने सुहागे का चूर्ण, घी एवं शहद में मिला और लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री का पतन हो जाता है।

अच्छी लोध, धतूर, कटेरी व पिपरामूल सम भाग ले चूर्ण कर शहद में मिला लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री का स्खलन होता है।

असगन्ध के पत्रों को हण्डी में उबाले, उसके पश्चात् उसे तेल में उर्द एवं मुलहठी दोनों सम भाग पीस लिंग पर लगा मैथुन करने से स्त्री शीघ्र ही का स्खलित हो जाती है।

बेल का फूल व मुण्डी का फूल और कपूर पीस लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसंग करने पर स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

काली मिर्च, धतूर बीज, पीपर, लोध चूर्ण सम भाग ले शहद में घोंट लिंग पर लेप कर मैथुन करने से कैसी भी स्त्री क्यों न हो पर उनके पतन में देर नहीं होती है।

उपर्युक्त औषधियों को निम्नलिखित द्रावण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये। यह मन्त्र १०८ बार जपने पर सिद्ध होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुदाय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणाम्मदं द्रावय ठः ठः स्वाहा।**

मृतसञ्जवनी प्रयोग

मृतसञ्जवनीविद्यां कथयिष्यामि प्रेमतः। लिंगमं कोलवृक्षाधः स्थापयित्वा प्रपूजयेत्।। यवं घटं च तत्रैव पूजयेल्लिंगसन्निधौ। वृक्षं लिंगं चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत्।।

श्रीशंकरजी कहते हैं कि मैं मृत सञ्जवनी विद्या का प्रयोग प्रेमपूर्वक कहूँगा अकोल नाम वृक्ष के नीचे एक शिव लिंग स्थापित करें, उसके पश्चात् घट के ऊपर कसोरे में यव रख तथा जल से परिपूर्ण करे और वृक्ष व लिंग तथा घट तीनों को एक सूत्र में बाँध दे तथा इस क्रिया में चार आदमियों को साधक बनावे फिर सब साधक बारी-बारी से प्रणाम करें और एक-एक साधक दो-दो दिन तक पूजा करते रहे जबतक

कि वृक्ष में फूल-फल न लगे। जब फल जाय, तो कलश जो कि पहले से रखा है, उसी में रखे।

उस कलश का प्रतिदिन षोड्शोपचार से पूजन करे, कुछ दिनों बार फिर बीजों को निकाल उनकी गुद्दी निकाले, छिलके अलग फेंक दे, फिर कोंहार के यहाँ से बड़े मुँहवाला घड़ा ला उसके अन्दर एक चौथाई भाग सुहागा से लेप करे।

पश्चात् शुद्ध मिट्टी रख उसे गोलाई में बीज बो दे फिर कुछ दिनों बाद जब बीज सूख जाय, तो ताम्रपात्र से ढँककर (ध्यान रहे कि इस प्रकार ढंका जाय जिसमें तेल निकल सके), घड़ा को औंधा (नीचे मुख) कर ऊपर से आंच देकर तेल निकाले, जब तेल निकल जाय तब शीशी में रख ले और आधा मासा यह तेल तथा आधा-आधा मासा तिल का तेल मिलावे और जिस रोगी की मृत्यु सर्प काटने से हुई हो उस रोगी को नास दे तो वह जीवित हो जायेगा। सर्पदंशियों की यह अचूक दवा है।

अघोरमन्त्र—अघोरभ्योऽथ घोरभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः संर्वसर्वेभ्यः नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः।

इसी अघोर मन्त्र से घट की पूजा कर प्रतिदिन नमस्कार करने से संजीवनी प्रयोग सिद्ध होता है।

विद्याधर सिद्धि

ॐ ह्रीं गौर्गोपतये नमः।

अर्धरात्रि में विद्याधर मन्त्र का तीन हजार प्रति रात्रि जप करने से विद्याधर की सिद्धि होती है तथा गन्धर्व शब्द का ज्ञान एवं पुत्र और बल भी प्राप्त होता है।

इन्द्रजाल प्रयोग

भिलोय के रस में गुञ्जा (घुँघुची) विष, चित्ता तथा केंवाच का चूर्ण मिलाकर देने से भूत लगता है।

भूत चढ़ने के लक्षण ये है कि जैसे धीरे-धीरे शरीर का हिलना, बार बार मूर्च्छा का आना अथवा हाथ काँपना, फटकना आदि।

श्रोतव्यं पठितव्यं च नरैर्भक्तिसमन्वितैः। उपसर्गभयं तस्य कदापि नहि जायते।। अष्टकं च ममैतद्धि पठितं भक्तितः सदा। सर्वरोगविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत्।। शीतलाष्टकमेताद्धि न देयं यस्य कस्यचित्। दातव्यं सर्वदा तस्मै भक्तिश्रद्धान्वितो हि यः।।

जो मनुष्य इस मेरे शीतलाष्टक को सदा पढ़ता है, उसके कुल में भयंकर विस्फोटक का भय नहीं होता है।

मनुष्य को भक्तिपूर्वक इस शीतलाष्टक को सुनना तथा पढ़ना चाहिये। इससे उसको उपसर्ग (शीतला) का भय नहीं होता है।

यह मेरा शीतलाष्टक हमेशा भक्तिपूर्वक सभी लोगों को नाश करने के लिए पढ़े। यह महान कल्याण को देने वाला है। इस शीतलाष्टक को जिस किसी (सभी) को नहीं देना चाहिये। इसे उसको ही देना चाहिये जो सदा मेरी भक्ति एवं श्रद्धायुक्त हो।

शीतलारोग का निवारण करने वाला अर्क

जो व्यक्ति चमेली का अर्क, केला का अर्क अथवा गुलाब का अर्क दही-भात के साथ भोजन करता है, उसको शीतला नहीं मारती है।

शीतला ज्वर को नाश करने वाला अर्क

चन्दन, अडूसा, नागरमोथा, गुडूची तथा मुक्का। इन सबो का शीतल अर्क शीतला ज्वर को नाश करता है।

वीर्य स्तम्भन योग

अपर्णा का बीज तथा सहिजन का बीज, इन दोनों को बराबर धत्तूर के बीज लेकर इन्हीं द्रव्यों के अर्क से तेल मिलाकर भावित करें। इसके बाद चार रत्ती की मात्रा में खाने से अपनी इच्छा के अनुसार पुरुष-स्त्री के साथ अच्छी रतह अवश्य रमण कर सकता है।

बबूल की स्वच्छ छाल, नीम्बू के अर्क में भिंगोकर, फिर इसमें चार अंगुल वस्त्र शाम को भिंगोकर दूध में धोकर उस दूध को पीवे। इसके पीने से वीर्य का स्तम्भन होता है और योनि में लेप करे तो योनि कड़ा हो जाय। बबूल का अर्क सेंधानमक मिलाकर पीने और वीर्य के वेग को रोकने से वीर्य स्तम्भन होता है।

केतकी के अर्क में भिंगोया हुआ और दश वार धूपित किया हुआ गन्धपाषाण (गन्धक) लिंग के ऊपर लेप कर संभोग करने से योनि तथा लिंग दोनों सुगन्धित हो जाते हैं।

जो पुरुष बकरे का अण्डकोष भी भून कर पीपर चूर्ण तथा सेंधानमक मिलाकर निरन्तर सेवन करता है, वह सैंकड़ों स्त्रियों के साथ सम्भोग कर सकता है।

हंसपदी (मुसली) की जड़, रंग (रक्त चन्दन) तथा गोरोचन एक टंक (एक तोला)। इन सबों को लेकर इन्हीं के रस में भिंगोकर उनके अर्क खींच ले। इस अर्क को सारिवा के साथ भोजन में तथा पीने में दें। जो इस उन्माद्य अर्क को गन्ध के साथ खाने-पीने में प्रयोग करता है, वह प्रियतम को वश में कर लेता है।

जगत् को वश में करने वाली औषध

आकाशवल्लि के पत्ते तथा पुष्प का अर्क एक सप्ताह तक सुगन्धित कर स्त्री को दे और स्त्री, पुरुष को दे तो संसार के सभी व्यक्तियों को वश में कर लें।

लनहल्दी के साथ निर्जन स्थान में अपने हाथ से बनाया हुआ उन्माद्य अर्क तीन दिन तक खाने से सभी राजा स्त्री के वश में हो जाते हैं।

तांत्रिक औषधि से चिकित्सा

शीतला व्रणनाशक मन्त्र

तारो माया शीतला इस प्रकार चतुर्थ्यन्त (ॐ ह्रीं शीतलायै नमः) इस मन्त्र को सौ बार पढ़कर चन्दन तथा गुलाब के शीतल अर्क के साथ दही खाये तो एक सप्ताह तक प्रयोग करने से अवश्य ही व्रण को नाश करता है।

त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), नीम के पत्ते, भाँगरा तथा लोहे का किट्ट (मण्डूर), इन सबों को भेड़ के मूत्र में पीसकर लेप करने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

इन्द्रलुप्त को दूर करने वाला औषध

मसी, हाथी व दाँत का भस्म, बकरी का दूधष रसाज़्जन तथा बरगद का आटा। इन सबों को पीसकर लेप करने से या इन सबों का अर्क निकाल कर उससे लेप करने से इन्द्रलुप्त रोग (सिर का बाल गिरना) नष्ट हो जाता है।

दारुण रोगनाशक अर्क

आम की गुठली तथा हर्रे, इन दोनों को तीन दिन तक दूध में भिंगोकर अर्क निकाल ले। यह अर्क लेप करने से तीन दिन में दारुणक (वृद्ध गंजा रोग) को नाश करता है।

अरुंषिका नाशक अर्क

नीलकमल का केशर, आँवला तथा मुलेठी। इन सबों को गाय के मूत्र में भिंगोकर अर्क निकाल ले। यह अर्क अरुषिका (रूखापन) रोग को नष्ट करता है।

मुखदूषिका रोगनाशक अर्क

केवलं पयसां पिष्ठाः शाल्मलिकटकाः।
तदर्कस्य त्रयहं लेपान्मुखदूषर्विनश्यति।।

कठिन शेमर के काँटों को केवल दूध के साथ पीसकर अर्क निकाले। वह अर्क तीन दिन लेप करने से मुखदूषिका (मुँहासा) को नष्ट करता है।

मुख-व्यङ्ग रोगनाशक अर्क

वटाकुरं मसूराश्च मञ्जिष्ठा क्षौद्रमेव च।
जलक्लिन्नं तदर्कस्तु मुखव्यंगविनाशम्।।

बरगद की जटा (वरोह), मसूर, मंजीठ तथा मधु। इन सबों को जल में भिंगोकर अर्क निकाल ले। यह अर्क मुख के व्यङ्गरोग को नाश करता है।

अंगुलवेष्टक रोग को दूर करने वाला अर्क

काश्मर्यर्केण कोष्णेन सिंचेदंगुलवेष्टकम्।
कोमलैः सप्तभिस्तभ्य पत्रैर्बद्धं हरेद् गदम्।।

गम्भारी के थोड़ा गरम अर्क से वेष्टक रोग को सींचे और उसी के कोमल सात पत्तों को बाँधने से यह रोग दूर होता है।

लिंगोत्थान को शान्त करने वाला अर्क

सर्जसैन्यवसिद्धार्थसिताकुष्ठार्कधावनात्। कपिच्छू: शमं गच्छेल्लिङ्गोत्थो नात्र संशय:।।

सर्ज (राल), सेंधानमक, सरसों मिश्री तथा कूठ। इन सबों का अर्क निकाल कर लिंग धोने से बालकों का लिङ्गोत्थान तथा कपिच्छू रोग नष्ट होता है।

गुदा की खुजली को नाश करने वाला अर्क

शङ्खसौवीरयष्ट्यर्के प्रत्यहं क्षालयेद्गुदम्।
गुदकण्डूर्बालकस्य योगो हन्ति न संशय:।।

शंख, सौवीर (कांजी) तथा मुलहठी के अर्क से प्रतिदिन गुदा का प्राक्षालन करे। यह प्रयोग बालक के गुदकण्डू (गुदा की खुजली) को नष्ट करता है। इसमें सन्देह नहीं है।

गुदाभ्रंश नाशक अर्क

पद्मिनीमृदुपत्रणामर्क यः सितया सह।
गुदनिःसारणं तस्य नश्येन्मासान्न संशयः।।

कमलिनी के मुलायम पत्तों का अर्क मिश्री मिलाकर एक माह तक बालक को पिलाने से उसके गुदा का बाहर निकलना बन्द हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है।

मनुष्य के मांस के अर्क के गुण

मनुष्य के मांस का अर्क छ: मास तक जो सेवन करता है, उसके शरीर पर सर्प आदि के विष का आक्रमण नहीं होता।

अण्डा के अर्क के गुण

दालचीनी, इलायची, मरिच, चान्द्र कपूर, लवंग तथा जावित्री—इन सबों को पीस कर अण्डों के ऊपर लेप कर और बीसवाँ भाग घी मिलाकर अर्क निकालने की विधि से अर्क खींच लें। अण्डे का अर्क अपने अण्डे के गुण के समान गुण वाला होता है। यह वीर्यवर्द्धक तथा वातनाशक होता है।

ऋतु के अनुसार अर्क सेवन करने की विधि

वसन्त ऋतु में नीम तथा आम के अंकुरों का अर्क, ग्रीष्म ऋतु में सेवती तथा गुलाब का अर्क, वर्षा ऋतु में त्रिफला का अर्क, शरद ऋतु में परिजात तथा गम्भारी का अर्क, हेमंत ऋतु में अजवायन तथा गुलदावदी का अर्क और शिशिर ऋतु में अजवायन तथा नीम्बू का अर्क जो सेवन करता है, उसे किसी भी रोग का भय नहीं होता है।

ज्वर को रोकने वाला अर्क

ज्वर आने के पहले घी का अर्क दो पल (दो छटाँक) काली मरिच का चूर्ण मिलाकर पीने से ज्वर रुक जाता है।

शीत ज्वर को दूर करने वाला अर्क

हरताल के भस्म को केले के अर्क से इक्कीस बार भावित कर मूँग बराबर की मात्रा में खाने से एक दिन में शीत ज्वर नष्ट हो जाता है।

ज्वरनाशक योग

मेथी, वनमेथी, तुलसी, काला (सूखा) आँवला और लवंग—इन सबों के साथ भूनिम्ब (चिरायता) का अर्क निकालकर उसमें मोती तथा कौड़ी का भस्म बुझा दें। इस प्रकार मारण किये हुए प्रवाल का भस्म सेवन करने वाले के ज्वर को नाश करता है।

विषम ज्वर नाश करने वाली सुरा

पुराना गुड़ तथा जीरा की निकाली हुई सुरा (अर्क) सभी प्रकार के विषमज्वर को नाश करती है।

सन्निपात ज्वरनाशक अर्क

दशमूल का अर्क, लौंग तथा काली मरिच का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सन्निपात ज्वर को शीघ्र ही दूर करता है और अच्छी नींद आती है।

यहाँ बेल, अरुणी, सोनापाठा, गम्भारी, पाढ़ल, सरिवन, पिठवन दोनों कटेरी तथा गोखरू—ये दशमूल कहलाता है।

आमातिसार नाशक अर्क

शृंगबेर (अदरक), नामवेर (सोंठ), इन दोनों को एरण्ड के जल में भिंगोकर रक्खे और पित्तपापड़ा मिलाकर अर्क खींच लें। यह अर्क आमातिसार को दूर करता है।

पक्वातिसार नाशक अर्क

धातकी (धाय का फूल); आम की गुठली, बेल की गिरी, लोध, इन्द्रजव तथा नागरमथा। इन सबों को कूट कर भैंस के मट्ठे में अनेक बार भिंगोकर अर्क निकालने की विधि से अर्क निकाल लें। यह अर्क पक्वातिसार को दूर करता है।

रक्तातिसार नाशक अर्क

वत्सव (कूड़े) की छाल तथा अनार का छिलका, इन दोनों का निकाला हुआ अर्क मधु मिलाकर पीने से दही-भात वाले के रक्तातिसार को नाश करता है।

प्रवाहिका नाशक अर्क

धाय के फूल, बेर के पत्ते, कैथ का रस, शहद तथा लोध, इन सबों का दही मिलाकर निकाला हुआ अर्क प्रवाहिका (आँव) को अच्दी तरह नाश करता है।

संग्रहणी नाशक अर्क

मुट्ठे में भिंगोये हुए मूँग का अर्क, धनिया, जीरा तथा सेंधानमक का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से संग्रहणी रोग को नाश करता है।

बालरोगनाशक योग

नकछिदनी के अर्क से इक्कीस बार भावित किया हुआ चूर्ण का धूम (धूनी) देने से बालरोग नष्ट होता है।

पूतीकरंज, दशाङ्गी (दशांश धूप), सफेद सरसों, वच, भल्लातक (भिलावा), अजवायन तथा कूट—इन सबों को घृत मिश्रित धूप जलाने से सभी ग्रहों के दोषों को दूर करता है।

ग्रह (नवग्रह), भूत, प्रयोग करने कंकर, शोषक, सकोण, सब ग्रह-बाधायें इस धूप बालकों को सताने वाले ग्रहों का भय नहीं होता है।

वेणी, येणी, कुक्कुर, रससारिका, प्रभूता, स्वरिता तथा रात्रि आदि ग्रहमातृका इस धूप के प्रभाव से स्पर्श नहीं करती है।

इस धूप के प्रभाव से बालक एक सौ वर्ष तक जीवित रहते हैं। इस विद्या को जो लोग प्रकट नहीं करते वे ब्रह्मघाती है।

मन्दाग्नि को नाश करने वाली वारुणी

सोंठ, हर्रे तथा अनार की छाल में गुड़ मिलाकर निकाली हुई वारुणी दो छटाँक की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करने से सूखा रोग तथा मन्दाग्नि को नाश करने वाली कही गयी है।

विसूचिका (हैजा) नाशक अर्क

पञ्चकोल (पीपरामूल, चव्य, चित्रक तथा सोंठ), हर्रे, अजाजी (जीरा), काली मरिच, इन सबों को अम्ल रस में मिलाकर अर्क खींच लें। इसका अर्क सेवन करने से विसूचिका को दूर करता है।

पाण्डूरोग को नाश करने वाला अर्क

लौह की भस्म तथा लौहकिट्ट (मण्डूर) का भस्म त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला) तथा व्योष (सोंठ, पीपर मारिव) के अर्क से अलग-अलग भावित करें। यह आर्कभावित भस्म पाण्डुरोग को नाश करता है।

मिट्टी खाने से उत्पन्न पाण्डुरोगनाशक अर्क

हर्रे तथा गुडूची को मट्ठा से अनेक बार भावित कर उसका अर्क निकाले। यह अर्क मिट्टी खाने से उत्पन्न पाण्डुरोग को अवश्य नाश करता है।

शिलाजीत को गोमूत्र में अनेक बार भिंगो कर अर्क निकाले। इसका निकाला हुआ अर्क कुम्भकामला रोग को नाश करता है।

हलीमक रोगनाशक अर्क

लौह भस्म को नागरमोथ के अर्क से एक सौ बार भावित करें और भस्म को खादिर के अर्क के साथ सेवन करें। यह हलीमक रोग (पाण्डुरोग का एक भेद) को नाश करता है।

मैनफल का अर्क गरिष्ठ अन्न खाने से उत्पन्न तृषा को तथा वमन से उत्पन्न तृषा को नाश करता है।

अधिक मूर्च्छा नाशक अर्क

कोल (बेर) की मींगी, कालीमिर्च, खस तथा नागकेशर। इन सबों को सुगन्धित पुष्प से वासित कर निकाला हुआ अर्क मिश्री के साथ पीने से भयंकर मूर्च्छा को जीत लेता है।

तन्द्रानाशक अर्क

दुरालभा (धमासा) का अर्क घी मिलाकर अम्ल की शान्ति के लिए पीवे। काली मिर्च का अर्क अगस्त के रस के साथ पीने से तन्द्रा को नाश करता है।

नींद को दूर करने वाला अर्क

सेंधानमक, सफेद मरिच, सरसों तथा कूठ। इन सबों को बकरी के मूत्र में मिलाकर अर्क निकालें। यह अर्क पीने से नींद को दूर करता है।

मदात्यय को नाश करने वाला अर्क

मद्य को खजूर, मुनक्का, फालसा तथा अनार आदि के अर्क के साथ मिलाकर पीने से सभी प्रकार के मदात्यय (अधिक मद्य पीने से उत्पन्न मादकता) दूर होता है।

कोदो तथा धतूर से उत्पन्न मदात्यय को दूर करने वाला अर्क

कृष्माण्ड का अर्क गुड़ मिलाकर कोदो से उत्पन्न होने वाले मदात्यय में पान करें।

दूध का अर्क मिश्री मिलाकर धतूरे के विष से उत्पन्न मदात्यय में पान करें। यह धतूर के विष को दूर करता है।

नाक से रक्तस्राव को रोकने वाला अर्क

अनार के पुष्प का अर्क या मुनक्का का अर्क अथवा आम की गुठली का अर्क पान करने से या नस्य लेने से नासा रक्तस्राव को दूर करता है।

कष्ठदाह नाशक अर्क

मुनक्का, हर्रे तथा पीपर का अर्क मिश्री मिलाकर मधु के साथ सेवन करने से कण्ठ के दाह को दूर करता है।

व्रणशोथ को नाश करने वाला अर्क

दूध में भिंगोये हुए त्रिकुट (सोंठ, पीपर, मरिच) से अर्क खींच लें। यह अर्क शक्कर के साथ पान करें और मांस के यूष को भक्षण करे तो व्रणजन्य घोष को नाश करता है।

अत्यन्त बढ़े हुए कफ को दूर करने वाला अर्क

धतूरे का बीज, त्रिकुट (सोंठ, पीपर मरिच) तथा अजवायन इन सबों के अर्क से एक सौ-सौ बार भावित किया हुआ सेंधानमक अत्यन्त्र बढ़े को कफ को को नाश करता है।

कास से उत्पन्न क्षयरोगनाशक अर्क

कण्टकारी की जड़ का अर्क के साथ पीने से सभी प्रकार की खाँसी को नाश करता है।

अर्जुन वृक्ष की छाल का चूर्ण अडूसे के अर्क से भावित कर मिश्री, मधु तथा घृत मिलाकर सेवन करने से कासजन्य क्षय रोग को दूर करता है।

सूखी खाँसी को दूर करने वाला अर्क

छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, मुनक्का, अडूसा, कचूर, सोंठ, पीपर तथा खाखस (खसखस का दाना) इन सबों का अर्क शक्कर तथा मधु मिलाकर पीने से सूखी खाँसी को दूर करता है।

हिचकी नाशक अर्क

दूध में पकाई हुई शुण्ठी (सोंठ) का अर्क अथवा गुड़ के रस में भिंगोकर निकाला हुआ सोंठ का अर्क हिचकी रोग को नाश करता है। इसमें सन्देह नहीं है।

स्वरभेद का नाश करने वाला अर्क

पञ्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) का अर्क अदरक के रस मिलाकर या गाय का घी तथा मधु मिलाकर पीने से स्वरभेद को नाश करता है।

स्वर को उत्तम बनाने वाला अर्क

निम्बूरसेन मधुना मरिचैरवधूलितम। कुलिञ्जनार्कं पिबति राक्षसः किन्नरायते।।

नींबू का रस, शहद तथा मरिच के क्वाथ में भिंगोया हुआ कुलंजन का अर्क यदि राक्षस पीये तो उसका स्वर किन्नरों के समान उत्तम हो जाता है। अर्थात् अर्क स्वर को अच्छी तरह से बढ़ाकर उत्तम बनाता है।

वमन को दूर करने वाला अर्क

पीपल की छाल का अर्क, कमलगट्टे का अर्क, मधुमक्खी के छत्ते का अर्क या दूध का अर्क सभी प्रकार के वमन को दूर करता है।

पिपासना नाशक अर्क

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, उदीच्य (ताऊँ बरे), धनिया, चन्दन तथा सुगन्धवाला इन सबों का अर्क पीने से सभी प्रकार के तृषा रोग शीघ्र ही दूर हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है।

मुखशोष को दूर करने वाला अर्क

आँवला, कमलगट्टा, कूठ, धान की लावा, पीपर तथा वट की जटा। इन सबों का निकाल हुआ अर्क मधु से पीने से मुखशोष को दूर करता है।

सभी प्रकार की तृषा को नाश करने वाला अर्क

मधु का अर्क या दूध का अर्क क्षयजन्य तृषा को दूर करता है। रक्त का अर्क चोट तथा क्षय जन्य तृषा को दूर करता है।

षडूषण (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक सोंठ तथा काली मरिच), वच तथा बेल की गिरी। इन सबों का अर्क आँव से उत्पन्न प्यास को दूर करता है।

बेर तथा आँवला के साथ धनिया का निकाला हुआ अर्क सभी प्रकार के दाह को दूर करता है। दाह से पीड़ित व्यक्ति के सम्पूण अंग को पूर्वोक्त अर्क में कपड़ा को भिंगोकर ढँक दें।

स्वेद (पसीना) नाशक अर्क

छोटी कटेरी का अर्क लेप करने से सम्पूर्ण अंग तथा आधे अंग का स्वेद तथा हाथ-पैर का स्वेद भी मर्दन करने से दूर होता है।

सभी प्रकार के उन्माद को दूर करने वाला अर्क

शंखपुष्पी का अर्क या कोहड़ा के फूल का अर्क मधु तथा कूठ के साथ पीने से सभी प्रकार के उन्माद का नाश करता है।

भूतोन्माद नाशक अर्क

लाल मरिच का अर्क पीने, नस्य देने, लेप करने तथा अंजल करने से क्षणमात्र में भूतोन्माद शान्त हो जाता तथा नष्ट हो जाता है।

अपस्मार नाशक अर्क

केतकी के फल का अर्क नस्य लेने, कान में डालने, पीने तथा अञ्जन करने से अपस्मार (मृगी) को नाश करता है। इसमें संशय नहीं है।

बहरापन को नाश करने वाला अर्क

वच, दालचीनी, पीपर, सोंठ, हल्दी, यष्टि (मुलहठी) सेंधानमक, अजवायन तथा जीरा। इन सबों का अर्क मनुष्य को सुनने वाला बनाता है। अर्थात् बहरापन को दूर करता है।

गृध्रसी रोग को दूर करने वाला अर्क

एरण्ड के बीज को गाय के मूत्र में अच्छी तरह पकाकर अर्क निकाले और एक पल (एक छटाँक) की मात्रा में पान करे। यह गृध्रसी रोग को नाश करता है।

क्रोष्ठुशीर्षक रोग को दूर करने वाला अर्क

गिलोय तथा त्रिफला के क्वार्थ से एक बार गुग्गुल को भावित कर दूध तथा एरण्ड का तेल मिलाकर अर्क निकाले। यह अर्क पीने से क्रोष्ठुशीर्षक (वायु-रक्त गांठ शोथ) को दूर करता है।

वातनाशक अर्क

शेफाली (निर्गुण्डी), एरण्ड, सेहुण्ड, धत्तूर, मदार, कनेर, हर्रे एवं मांसविष को अच्छी तरह कूटकर अर्क निकाले। यह अर्क वायु को नाश करता है।

ऊरुस्तम्भ नाशक अर्क

त्रिफला, पिपरामूल, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच)। इन सबों का अर्क मधु मिलाकर पीने से ऊरुस्तम्भ रोग का नाश करता है। अथवा गोमूत्र के साथ गुग्गुल का अर्क ऊरुस्तम्भ को नाश करता है।

आमवात नाशक अर्क

शटी (कपूरकचरी), सोंठ, हर्रे, उग्रा (वच), देवदारु तथा अतीस इन सबों का अकर आमवात तथा रूखापन में भक्षण करें। अर्थात् यह अर्क आमवात तथा रूखापन को दूर करता है।

साध्यासाध्य शूलनाशक अर्क

अश्वविष्ठाभवश्चार्को भृष्टहिंगुसमन्वितः।
तत्कालं तु हरेच्छूलं साध्यासाध्यं न संशयः।।

घोड़े की लीद का अर्क भुनी हींग मिलाकर सेवन करने से तत्काल ही साध्य तथा असाध्य शूल दूर होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

उदावर्त रोगनाशक अर्क

सव्योषं पिपलीमूलं त्रिवृद्दन्ती च चित्रकम्।
एतदर्क गुप्तगुडमुदावर्तविनाशम्।।

व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच), पिपरामूल, निशोथ, दन्ती तथा चित्रका इन सबों का अर्क गुड़ मिलाकर सेवन करने से उदावर्त (एक प्रकार का उदर रोग का नाश करता है।)

हृदयरोग नाशक अर्क

हरीतकी (हर्रे), वच, शस्त्रा, पीपर तथा सोंठ। इन सबों का अर्क तथा शटी (कपूरकचरी) एवं पुष्करमूल का अर्क हृदय रोग को नाश करता है।

गुल्मरोग नाशक अर्क

घृतकुमारी (घी कुवार) का अर्क उसी के रस के साथ पीये अथवा गुड़ मिलाकर दूध तथा सीप का अर्क भक्षण करे। यह सभी प्रकार के गुल्म रोग को नाश करता है।

रक्त गुल्महर अर्क

पलास, वज्र, शिखरी (अपामार्ग), इमली, मदार, तिल के नाल, जवाखार तथा सज्जीखार इन सबों के अर्क को क्षारार्क कहते हैं। यह अर्क रक्तगुल्मरोग को दूर करता है।

प्लीहा नाशक अर्क

समुद्र की सीपी (शुक्ति) का अर्क या दूध के साथ पीपर का अर्क अथवा सेंधानमक के साथ मदार का अर्क पीना प्लीहारोग को नाश करता है।

यकृत् शूलनाशक अर्क

कृष्णाविड्समुद् भूतो ह्यर्कः क्षारान्वितोऽपि वा।
पूतीकरञ्जनोऽर्को वा यकृच्छूलविनाशनः।।

कृष्णा (पीपर) तथा विड्नमक—इनका अर्क दूध के साथ अथवा पूतीकरञ्ज का अर्क सेवन करने से यकृत-शूल को नाश करता है।

मूत्रकृच्छ्रनाशक अर्क

अमलतास, दर्भ (कुश), कास, हर्रे, आँवला, गोखरू, जवासा तथा पाषाणभेद इन सबों का अर्क मधु के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र को नाश करता है।

मूत्राधात नाशक अर्क

कुश, कास, बला की जड़, नल (नरकट), ईख। इन सबों का अर्क मिश्री के साथ या धनियाँ तथा गोखरू का अर्क मिश्री के साथ पीने से मूत्राधात रोग को नाश करता है।

पथरी नाशक अर्क

कूष्माण्ड (कुम्हड़े) का अर्क, जवाखार तथा हींग मिलाकर पीने से अश्मरी (पथरी) रोग को दूर करता है और शरफोंका, जवाखार तथा गोमूत्र—इन सबों का अर्क शक्कर मिलाकर पीने से मूत्रशर्करा रोग को दूर करता है। (डायविटीज दूर होगी)।

प्रमेह को दूर करने वाला अर्क

गुडूच्यर्कः सितायुक्तो गोक्षुरार्कोऽथवा हरेत्। स्तम्भिन्यर्कोऽथवा मेहं मण्डलाद्दुगधसेविनः।।

मिश्री के साथ गुडूची का अर्क या गोखरू का अर्क अथवा स्तम्भिनी का अर्क सेवन कर पन्द्रह दिन तक दूध पीने वाले व्यक्ति का प्रमेह रोग दूर होता है।

मधु के साथ गुडूची का अर्क सेवन करने से महाभेद रोग को नाश करता है और बेलपत्र का अर्क पीने से शरीर की दुर्गन्धि को नाश करता है।

शरीर को मोटा बनाने वाला अर्क

अश्वगन्ध, गोखरू, दालचीनी तथा बरगद का आटा। इन सबों का निकाला हुआ अर्क अथवा मांस का अर्क पीने से शरीर को मोटा बनाता है।

खुजली को दूर करने वाला अर्क

मंजीठ, त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला) लाख, लांगली (करिहारी), हल्दी, गन्धक। इन द्रव्यों के बराबर गेहूँ तथा तिल को मिलाकर अर्क निकालने की विधि से अर्क खींचें। यह अर्क भयंकर पीड़ा देने वाला पामारोग (खुजली) को दूर करता है।

दाद को नष्ट करने वाला अर्क

कूठ, लाख, दद्रुघ्न (पँवार), हल्दी, सेंधानमक, सरसों तथा आम की गुठली। इन सबों का अर्क लेप करने से दद्रु (दाद) को नाश करता है।

गलगण्ड नाशक अर्क

सफेद अपराजिता (विष्णुक्रान्ता) की जड़ का अर्क घृत के साथ सेवन करे। यह अर्क पन्द्रह दिन तक पथ्यपूर्वक भोजन करने पर गलगण्ड रोग को अवश्य दूर करता है।

गण्डमाला नाशक औषधि

कचनार की छाल का अर्क तथा सोंठ का चूर्ण मधु मिलाकर सेवन करने से अधिक दिन की पुरानी गण्डमाला को भी नष्ट करता है।

ग्रन्थि रोगनाशक अर्क

सज्जीखार तथा मूलकक्षार का अर्क शंखचूर्ण मिलाकर लेप करने से ग्रन्थि रोग का नाश करता है, इसमें सन्देह नहीं है।

अर्बुद रोगनाशक अर्क

हल्दी, लोध, पतंग, गृहधूम, (रसोईघर का धूम), मैनसिल—इन सबों में मधु मिलाकर अर्क निकालें। यह मेदोगत अर्बुद को अच्छी तरह दूर करता है।

बरगद के दूध में कूठ तथा सांभर नमक को भिंगोकर उसका अर्क खींच ले। यह अर्क लेप करने से क्षणभर में अर्बुद रोग को दूर करता है।

हाथीपाँव चिकित्सा

धत्तूर, एरण्ड, सम्भालू, वर्षाभू (पुनर्नवा), सहिजन की जड़। इन सबों के अर्क से सरसों को पीसकर लेप करने से श्लीपद (फीलपांव) नष्ट हो जाता है।

सभी प्रकार के व्रण को भरने वाला औषध

चमेली, परवल, नीम तथा नक्तमाल (पूतिकरंज) के पत्ते, मोम, मुलेठी, कूठ, निशाहलदी, दारुहल्दी, कुटकी, मंजीठ, पद्माख, हर्रे, लोध, नीलकमल, पूतिकरञ्ज का फल, तूतिया तथा अफीम।

इन सबों को समभाग लेकर कल्क बनावे और गोमूत्र में घोलकर अर्कपात्र में भरकर अर्क निकालने की विधि से अर्क निकाल लें तथा दशांगधूप से सुवासित करें।

यह अर्क लेप करने से सभी प्रकार के व्रण को भर देता है। यह विष से उत्पन्न व्रण विस्फोट (फफोले), विसर्प, कीटदंश, शस्त्राधातजन्य व्रण, दग्धव्रण, विद्धव्रण तथा नखदन्तक्षण व्रणों को भरता है तथा दूषित मांस को दूर निकाल देता है।

अग्निदग्ध व्रण को रोहण करने वाला अर्क

गजपीपर अथवा घृतकुमारी के थोड़े उष्ण अर्क से अग्निदग्ध व्रणों को सींचें। यह अर्क अग्निदग्ध व्रण को अच्छा कर उसके ऊपर चर्म का उत्पन्न कर देता है।

सन्धिभग्न को दूर करने वाला अर्क

अस्थिसंहारक (हरसिंगार), लाख, गेहूँ तथा अर्जुन वृक्ष की छाल। इन सबों का निकाला हुआ अर्क घृत मिलाकर सन्धिभग्न (सन्धि के भग्न हो जाने) में अपनी रुचि से पीये।

व्रण को पचाने वाला अर्क

सन, मूली, सहिजन की जड़, तिल, सरसों, अलस और सत्तू। इन सबों का अर्क कुछ गरम कर व्रण धोने से शोध को पकाता है।

शस्त्रक्रिया के बिना व्रणभेदन के उपाय

अन्दर मवाद वाले, टेढ़े ऊँचाई में ऊभरे हुए तथा निरन्तर स्राव वाले मवाद व्रणों में भेदन कर्म करना उत्तम होता है। जिस व्रण के मूल में मवाद भरा हो और फूटता न हो उसमें चारों तरफ से मिट्टी लगाकर अरहर के बराबर छिद्र वाली नली लगाकर शंख द्राव से एक पहर तक भरा रहने दे। उस व्रण में एक पहल बाद अरहर के बराबर छिद्र हो जाता है।

इस उपास से बिना शस्त्रक्रिया किये ही शस्त्रकर्म का काम करता है। अर्थात् व्रण फूटकर पूयरहित हो जाता है और पीड़ा भी नहीं होती।

रक्तशोधक अर्क

हल्दी, शहद, अरहर, लालचन्दन तथा दारुहल्दी इन सबों को जौ कूट कर तथा क्वाथ कर उसमें गुड़ मिलाकर अर्क पात्र में भरकर मभका द्वारा अर्क (मद्य) खींच लें। यह मद्य दूषित रक्त को शुद्ध करता है।

भगन्दर को नाश करने वाला अर्क

सोंठ, बरगद के पत्ते, चमेली के पत्ते, गिलोय तथा सेंधानमक। इन सबों को मट्ठे में भिंगोकर अर्क निकाले। यह अर्क भगन्दर रोग में पीने से भगन्दर को नाश करता है।

उपदंश को नाश करने वाला अर्क

लोध, जामुन बरगद की जटा, हरड़, अर्जुन तथा हल्दी। इन सबों का अर्क पीने से पुरुष तथा स्त्री दोनों के उपदंश रोग को नाश करता है।

स्नायु रोगनाशक अर्क

निर्गुण्डी का अर्क, गाय का घी या जीरा के अर्क शीतल कर पीने से स्नायु रोग को शीघ्र ही दूर करता है। इसमें संशय नहीं है।

मसूरिका नाशक अर्क

मसूर को मिलाकर सेंहुड़ तथा हुरहुर का निकाला हुआ शीतल अर्क पीने से भयंकर सभी प्रकार के मसूरिका (चेचक) के प्रकोप को शीघ्र नाश करता है।

नीम, पित्तपापड़ा, पाठा, परवल, कुटकी, सफेद चन्दन, रक्त चन्दन, खस, आँवला, अडूसा तथा धमासा का अर्क मिश्री मिलाकर पीने से सभी प्रकार के मसूरिका (चेचक) को नाश करता है। मसूरिका रोग के व्रण के मुख तथा कण्ठ में होने पर इस अर्क से कुल्ला करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

गोबर का अर्क तथा लेप करने से मसूरिका रोग नष्ट हो जाता है। मसूरिका रोग उत्पन्न होने के पहले वाले ज्वर में गोखरू का अर्क दही तथा घी मिलाकर पान करें।

नेत्र औषधियाँ

पुनर्नवा, अरहर, घीकुवार त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), हल्दी, मुलहठी, गेरू, सेंधानमक, दारुहल्दी तथा दोनों रसौंत। इन सब का अर्क आंख में डालने (धारण करने) से शीघ्र ही नेत्ररोग शान्त होते हैं।

रतौंधी को नाश करने वाला अर्क

रसाञ्जन, निशा हल्दी दारुहल्दी, चमेली के कोमल पत्ते तथा गाय का गोबर। इन सबों का अर्क आँख में छोड़ने से नि:संदेह रतौंधी को नाश करता है।

नेत्ररोग नाशक अर्क

शंख की नाभि, बहेड़ा की मज्जा, हर्रे, मैनसिल, पीपर, मरिच तथा कूठ। इन सबों को बकरी के दूध में पीसकर अर्क निकाले। यह अर्क आँख में डालने से काच, पटल, अर्बुद, तिसिर, मांसवृद्धि तथा पुराने पुष्परोग (फुल्ली) को नाश करता है।

कर्णरोग नाशक अर्क

अदरक, मधु, सेंधानमक तथा तिल का तेल। इन सबों का अर्क कर्णशूल, कर्णनाद, बाधिर्य तथा कर्णक्ष्वैड रोग में कान में डालें।

भयंकर कान के शूल, कान, में गोदने जैसी पीड़ा कान में शब्द तथा कर्णस्राव में बकरी के मूत्र का अर्क थोड़ा गरम कर नमक मिलाकर कान में छोड़ें।

आम, जामुन, महुआ तथा बरगद। इन सबों के पत्तों का अर्क कान में छोड़ने से कर्णपूति (कान का बहना) बन्द होता है।

पलक के बालों को जमाने वाला योग

रसाञ्जन, राल, चमेली का फूल, मैनसिल, समुद्रफेन, सेंधानमक गेरू तथा काली मरिच—इन सबों को शहद में भिंगोकर अर्क निकाले। यह अर्क क्लिन्नवर्त्म (निर्मोमपलक) में बालों को उगा देता है और आँख की खुजली का नाश करता है।

यामल तन्त्रोक्त प्रयोग

अपकारी, दुष्ट, दुराचारी, पापी ऐसे व्यक्तियों पर यदि मारण का प्रयोग करें तो कोई दोष नहीं है। यदि बिना प्रयोजन किसी पर मारण प्रयोग किया जाय, तो अपना ही नाश हो जाता है। जो इस तन्त्र शास्त्र पर विश्वास नहीं करते उनको सिद्धि भी नहीं मिलती है।

मारण का प्रयोग जिस किसी पर थोड़ी-सी गलती कर देने पर भी नहीं करना चाहिये। मारण का प्रयोग किसी पर न करे, जब जान ले कि वह हमको जान से मार डालना चाहता है।

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को स्वयं नष्ट कर देता है, अतः अपनी आत्मा की रक्षा को चाहने वाला मारण का प्रयोग भी न करे, क्योंकि इसमें अपना ही प्राण जाने का भय रहता है।

शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा चिता की भस्म एवं मध्यमा (बिचली) अंगुली का रक्त मिलाकर एक पुतली मूर्ति बनावे और उस मूर्ति को को काले कपड़े में लपेट एवं काले डोरे से बाँध कुशासन पर सुला कर एक दीप जलावे तथा मारण मन्त्र का दश हजार जप कर पश्चात् १०८ उर्दी लेकर प्रत्येक को मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। उस पुतली के मुख में मारण-मन्त्राभिमन्त्रित उर्दी डाल देवे। अर्धरात्रि के समय इस मारण प्रयोग को करने से इन्द्र तुल्य शत्रु भी मारा जाता है।

रात्रि में उक्त प्रयोग को करके प्रातःकाल उस मूर्ति को श्मशान भूमि में गाड़ दे। इस प्रकार बराबर एक माह तक प्रयोग करते रहने पर निश्चित शत्रु की मृत्यु होती है।

ॐ नमः कालसंहारय अमुकं हन हन क्रीं हुं फट् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मारण मन्त्र में अन्यत्र भी मन्त्रों में जहाँ अमुक शब्द आये, वहाँ शत्रु का नाम लेते जाना चाहिये।

चार अँगुली प्रमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेट उसी से शत्रु का नाम लिखे।

उसके पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम से चिता के अङ्ग पर धूप दे। इस प्रकार तीन या सात रात्रि तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्णपक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे और निम्नलिखित मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपे।

ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोरदंष्ट्रिणे ग्रहयक्षभूतेतानेन शङ्कर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण हुं फट् स्वाहा ठः ठः।

चार अङ्गुल प्रमाण मनुष्य की हड्डी लेकर पुष्य नक्षत्र में जिसके घर गाड़ दे। उसका परिवार सहित नाश हो जाय। यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही प्रसिद्ध है।

सर्पास्थ्यंगुलमात्रं चाश्लेषायां रिपोर्गृहे।
निखेनच्छतथा जप्तं मारयेत् रिपुसन्ततिम्।।

इसी प्रकार एक अंगुल प्रमाण सर्प की हड्डी लेकर आश्लेषा नक्षत्र में शत्रु के घर में गाड़ दे और निम्नलिखित मन्त्र का दश हजार जप कर दे तो शत्रु की सन्तति का विनाश होता है।

ॐ सुरेश्वराय स्वाहा।

बिना मन्त्र-जप के कार्य नहीं सिद्ध होगा। अतः मन्त्र जपे।

चार अंगुल प्रमाण घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गाड़ दे तो शत्रु के परिवार का नाश होता है।

ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा।

सत्रह बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तबी हड्डी गाड़े।

निम्ब की कील आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के शयनागार में गाड़ने से शत्रु का मारण होने लगता है और उसे उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाता है।

इसी प्रकार शिरीष की कील शत्रु के घर आर्द्रा नक्षत्र में गाड़ने से शत्रु का नाश होता है।

हुँ हुँ फट् स्वाहा।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों में २१ बार अभिमन्त्रित करके गाड़ने से सपरिवार शत्रु का विनाश होता है।

ज्वर द्वारा शत्रु का मारण

ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण हुँ हुँ ठः ठः।

उपरोक्त मन्त्र से हजार बार जिसके नाम पर अभिमन्त्रित कर मनुष्य की हड्डी श्मशान में गाड़े तो उसकी मृत्यु होती है।

रिपु की विष्ठा (मल) तथा बिच्छू एक हँड़िया में बन्द कर ऊपर से मिट्टी लगाकर पृथ्वी में गाड़ दे तो शत्रु का मलावरोध (मल रुकने से) मरण तुल्य कष्ट पाने लगता है और भूमि खोदकर हंडी खोल देने से पुनः सुखी हो जाता है।

मंगलवार को शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी ला गोमूत्र में भिंगोकर एक प्रतिमा पुतली बनावे।

जहाँ कोई मनुष्य आ-जा न सके ऐसे एकान्त स्थान पर या नदी का किनारा हो या वन आदि हो, वहाँ पर एक वेदी बना उस पर पुतली को सुला दे और उसकी छाती में एक चोखा शूल (सूजा) गाड़ दे, पश्चात् बाम भाग में काल भैरव की स्थापना कर प्रतिदिन बलि एवं पूजन करे।

एकादशं वटु तत्र परमान्नेन भोजयेत्। अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत्।।

प्रयोग स्थान पर ११ वेदपाठी ब्राह्मण-ब्रह्मचारी बटुकों (बालकों) को भोजन करावे तथा कालभैरव के समक्षा कड़ुआ तेल का दीप जलावे।

मूर्ति के दक्षिण (दाहिने) भाग में व्याघ्र के चर्मासन पर दक्षिण मुख बैठकर जितेन्द्रिय होकर रात्रि में निम्नलिखित मन्त्र जपे।

ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नितेजसे। अमुकं में शत्रु मारय मारय पोथय पोथय हुँ फट् स्वाहा।

सावधान चित्त हो रात्रि काल में उक्त मन्त्र का दश हजार जप करे, ऐसा करने से १९ दिनों में शत्रु का मारण होता है।

नाना प्रयोग

काले जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अन्धे हो जाते हैं। यदि उनकी आँखों को मट्ठे से धो दे तो पहले की भाँति देखने लगते हैं।

छछुन्दर का चूर्ण घोड़े की नाक में डाल देने से घोड़ा मूर्छित हो जाता है तथा जल में चन्दन घिस कर पुनः नाक में डाल देने से स्वस्थ हो जाता है।

घोड़े की हड्डी की सात अंगुल की कील अश्विनी नक्षत्र आने पर घुड़साल में गाड़ दे तो घोड़े मरने लगते हैं।

अश्वमारण मन्त्र

ॐ अश्वं पच पच स्वाहा।

उक्त मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है, उपरोक्त कील इसी से अभिमन्त्रित करके घुड़साल में गाड़े।

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मल्लाह के घर में गाड़ दे तो उसकी सब मछलियाँ नष्ट हो जायेंगी।

मत्स्यनाशन मन्त्र

ॐ जले पच पच स्वाहा।

यह मन्त्र दश हजार जपने पर सिद्ध होता है। इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कील गाड़नी चाहिये।

चमेली (फूल) की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते हैं।

ॐ कुम्भ स्वाहा।

यह मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है।

महुआ के काष्ठ की चार अंगुल की कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरने के स्थान पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल विनष्ट हो जाते हैं।

तैलनाशन मन्त्र

ॐ दह दह स्वाहा।

यह मन्त्र एक हजार जपने से सिद्ध होता है। उपरोक्त कील इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके ही गाड़े।

गन्धक का चूर्ण पानी में घोलकर शाक के ऊपर छिड़क देने से सब शाक नष्ट हो जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

जामुन की लकड़ी क आठ अंगुल की कील अहीर के घर में जहाँ गायें दूही जाती हों, वहाँ अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूख जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा उतारने वाले के घर में गाड़ देने से मदिरा नष्ट हो जाती है। यह भी प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सोपाड़ी के लकड़ी की नव अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घर में या खेत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं।

जहाँ पर आकाश से बिजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी लाकर एक वज्र बनावे तथ निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जि खेत में गाड़ दे, उसकी फसल विनष्ट हो जायेगी।

सस्य नाशन मन्त्र

ॐ नमो वज्रपाताय सुरपतिराज्ञापयति हुं फट् स्वाहा।

यह मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है।

मोहन प्रयोग

सिन्दूर, केशर व गोरोचन को आँवले के रस में पीसकर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सहदेई के रस में तुलसी का बीज घोंटकर रविवार के दिन तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

मैनसिल एवं कपूर मिलाकर केला के रस में घोंटकर तिलक करने से सभी लोग निश्चित मोहित हो जाते हैं।

हरताल, असगन्ध तथा गोरोचन कदली के रस में घोंटकर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

काकड़सिंगी, चन्दन, वच तथा कूट इनको एक में मिलाकर इसका धूप कपड़े एवं शरीर तथा मुख आदि पर देने से मोहन शक्ति प्राप्त होती है, अर्थात् उस आदमी को देखकर राजा, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि जीव भी मोहित हो जाते हैं। पान की जड़ का तिलक भी मोहनकारक है।

सिन्दूर तथा वच मिलाकर पान के रस में घोंटकर मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं। बिना मोहन मन्त्र सिद्ध किये ये सब प्रयोग सिद्ध नहीं होते, अतः मन्त्र अवश्य सिद्ध कर लें।

चिड़चिड़ा, भृङ्गराज, लाजवन्ती तथा सहदेविका इन सबको साथ घोंटकर मोहन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

विल्वपत्र को अच्छी छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध में घिसकर गोली बनावे और उसे मोहन मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो सब जगत मोहित होता है।

मोहन मन्त्र

ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।

यह मन्त्र एक लक्ष जप करने पर सिद्ध होता है। जब मन्त्र सिद्ध कर ले तो सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तब तिलक करना चाहिये।

स्तम्भन प्रयोग

केकड़ा का पैर, दाँत तथा रक्त एवं कछुआ का कलेजा, सूँइस की चर्बी तथा भिलावे का तेल इन सबको एक में मिलाकर पकावे। पकाने के बाद इसका शरीर पर लेप करने से मनुष्य जल के ऊपर सुखपूर्वक स्थित हो सकता है। अर्थात् डूब नहीं सकता।

सर्प, नक्र (नाक) तथा नेवला की चर्बी और डुण्डुम का शिर इन सबको एक साथ भिलावे के तेल में पकावे, पकने के बाद एक लोहे के बर्तन में रख लेवे पश्चात् कृष्णपक्ष की अष्टमी आने पर शिवजी की पूजा एवं प्रणाम कर तथा स्तम्भन मन्त्र से एक हजार आठ बार घी की आहुति शंकरजी के नाम से देवे।

उसके पश्चात् स्तम्भन मन्त्र को पढ़ता हुआ तैल का शरीर के ऊपर लेप कर जल पर सुखपूर्वक बैठ जाते हैं अथवा चल-फिर सकते हैं।

इसी प्रयोग को शंकरजी के प्रसाद से सिद्ध कर प्राचीन महात्माओं में बढ़ती हुई नदियों को पार कर चमत्कार दिखलाया है।

आसन स्तम्भन का प्रयोग

मृतक की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें श्वेतगुञ्जा (सफेद कजींरी) का बीज बो दे और गाय के दूध से उसको सींचता रहे, जब वह जमकर लता के रूप में परिणत हो जाय, तो उसकी शाखा (डालें) तोड़कर जिसके स्थान पर जिसका निर्देश कर सामने डाल दे तो उस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध प्रयोग है।

आसन स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने पर एक हजार बार जप कर तब प्रयोग करना चाहिये।

बुद्धि स्तम्भन प्रयोग

उलूक (उल्लू) तथा बन्दर की विष्ठा पान में जिसको खिला दी जाय, उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा।

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन खर मञ्जी की जड़ लाकर उसको पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र द्वारा शरीर पर क्षत (घाव) नहीं होता है।

खजूर मुख में तथा केतकी कमल में एवं भुजाओं पर मदार की जड़ बाँध लेने पर सर्व प्रकार के शस्त्रों का निवारण होता है।

रविवार के दिन बेल के कोमल पत्ते को विस (कमल) के नाल के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो अघोरूपाय शस्त्रस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दश हजार जपने पर सिद्ध होता है।

मेघ स्तम्भन प्रयोग

दो ईंट लाकर दोनो ईंटों द्वारा संपुट करे उसके पश्चात् चिता के कोयले से उस पर मेघ लिखकर उस संपुट को स्तम्भन मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, फिर उसे पृथ्वी में गाड़ दी जाय, तो मेघ का स्तम्भन होता है।

निद्रा स्तम्भन का प्रयोग

भटकटैया को मधु के साथ पीसकर नास ले तो नींद न आवे अथवा मधु तथा भटकटैया दोनों को खूब घोंटकर अञ्जन बना लेवे और दोनों आँखों में लगा ले तो नींद का स्तम्भन हो जाय।

जहाँ गायों या भैंसों या अन्य पशुओं आदि के रहने के स्थान हों, वहाँ पर चारों ओर ऊँट की हड्डी गाड़ देने से पशुओं का स्तम्भन होता है।

ऊँट के रोवें लेकर चाहे जिस पशु पर छोड़ दें, उसका स्तम्भन हो जायेगा, यह सिद्ध प्रयोग है।

हरताल के रस से मदार के पत्ते पर जिसका नाम लिखकर किसी बगीचा में ईसान कोण में गाड़ देने से उसके मुख का स्तम्भन हो जाता है।

सैन्य पलान प्रयोग

गोरोचनं गले बध्वा काकोलूकस्य पक्षकौ। सेनानी सम्मुखं गच्छेन्नान्यथा मम भाषितम्। शब्दमात्रं सैन्यमध्ये पलायन्त सुनिश्चितम्। राजा प्रजा गजश्चापि नान्यथा मम भाषितम्।

मंगलवार को कौआ तथा उल्लू की पाँख की कलम बनाकर गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर पलायन मन्त्र को शत्रुनाम सहित लिखे पश्चात् भोजपत्र के सहित उन दोनों पाँखों को यन्त्र में भरकर गले में बाँधकर जिस सेना के सम्मुख जाकर जोरों से डाँटते हुए शब्द करे तो केवल उसके शब्द को सुनकर राजा एवं प्रजा सहित सम्पूर्ण सेना भाग जाय।

पलायन मन्त्र

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणो मम शत्रुसैन्य-पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को दश हजार जपने पर सिद्ध होती है।

विद्वेषण प्रयोग

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत चूर्ण कर मक्खन के साथ खूब पीसकर तिलक करने योग्य बनाकर फिर उसको विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपस में लड़ने लगते हैं अर्थात् विद्वेषण हो जाता है।

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर काले डोरे से एक साथ बाँध दें और जल में खड़े हो तथा उस बँधे पंखों को हाथों में लेकर सात दिन तक विद्वेषण मन्त्र से प्रतिदिन एक सौ आठ बार तर्पण करने से विद्वेषण हो जाता है।

शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावे तथा उसके ऊपर हाथी एवं सिंह के बाल लपेट भूमि में गाड़कर उस पर वेदी बनाकर अग्नि स्थापन के पश्चात् मालती के पुष्पों का विद्वेषण मन्त्र द्वारा हवन करे तो विद्वेषण हो जाता है।

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी तथा कौवा गोड़ी की सात दिवस पर्यन्त चमेली के फूल के रस में भिगो दे पश्चात् उसे निकालकर पुनः सात दिवस पर्यन्त बिल्ली के मूत्र में भिगोवे फिर उसे निकाल लेवे पश्चात् शत्रु के घर के समीप उसी का धूप देवे। इस धूप की सुगन्धि जो-जो सूँघेगा उसमें परस्पर विद्वेषण होगा।

हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन करे, उसको अन्य से विद्वेषण होता है।

भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर जिस सभा में धूप दें, उस सभा में क्षण मात्र में ही विद्वेषण हो जाता है।

बिल्ली, मूषक और शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक में मिलाकर पुतली बनावे और उसे नीला कपड़ा ओढ़ावे तथा एक सौ बार विद्वेषण मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो शीघ्र ही शत्रु सहित उसके परिवार वालों में विद्वेषण हो जायेगा।

एक हाथ में कौवे का पर तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पर ले विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दोनों परों को एक साथ मिलाकर काले सूत में बाँधकर शत्रु के घर में गाड़ दे तो पिता-पुत्र में विद्वेषण हो जाय, जब शान्त करना हो तो उसे निकालकर गुग्गुल का धूप दे तो शान्त हो जायेगा।

विद्वेषण मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को जहाँ अमुक शब्द है, वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये। एक लाख मन्त्र जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र बिना सिद्ध किये प्रयोग सिद्ध नहीं होता।

उच्चाटन प्रयोग

यह उच्चाटन या वध उसी पर करना चाहिये कि जिसने घर, खेत, स्त्री, धन एवं पुत्र का अपहरण किया हो।

कलिहारी की जड़ उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और उसे जिस पर उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ दे तो शीघ्र ही उसका उच्चाटन हो जायेगा।

ब्रह्मदण्डी और चिता भस्म शिवलिङ्ग के ऊपर लेपन करे तथा ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म और सरसों शनिवार के दिन शत्रु के घर में फेंकने से उच्चाटन होता है।

गूलर की चार अंगुल की लकड़ी की कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के सोने के स्थान पर खोदकर गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

आकर्षण विधि

आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष की बाँझी लकड़ी लाकर बकरे के मूत्र में कूट-पीसकर सुखा ले, जिससे कि भुरभुरी हो जाय, फिर उसका आकर्षण करना हो उसके शिर पर थोड़ा डाल दे तो उसका आकर्षण हो जायेगा।

पंचमी की तिथि में हुरहुर की जड़ खोद लायें और जिसका आकर्षण करना हो उसे पान में खिला दे तो वह स्वयं आकर्षित हो तो आपके पास चला जायेगा।

जिसका वशीकरण करना हो, उस स्त्री के बाँयें पैर के नीचे की मिट्टी ला तथा गिरगिटान के खून में सान उसकी प्रतिमा (पुतली) बनावे, पश्चात् प्रतिमा के वक्षस्थल पर उसी स्त्री का नाम लिखो, जिसका आकर्षण करना हो अर्थात् जिसे बुलाना हो। फिर उस प्रतिमा को मूत्र करने के स्थान पर गाड़ दे तथा प्रतिदिन उस पर मूत्र करे तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली स्त्री क्यों न हो पर वह आकर्षित होकर चली आयेगी।

खस, चन्दन, कंगनी, तगर, लालचन्दन और कूट एक में पीस लेप करने से भूत उतरता है।

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।

इस मन्त्र के द्वारा सौ बार झाड़ने से भूत उतरता है।

लोपहान, घी, हींग, देवदारु, दन्द्रवारुणी, गोदन्ती, सरसों, केश, कुटकी, नीम की पत्ती, दोनों कटाई, वच, चव्य, बनउर, जव, बकरे का बाल तथा मोर की पूंछ लेकर बछड़े के मूत्र में पीस के सुखावे तथा मिट्टी की परई में अग्नि जला इसका धूप दे तो ग्रहादि एवं भूतादि डाकिनी-शाकिनी और भी ज्वरादि अनेक प्रकार के दुःख दरिद्रों की शान्ति होती है।

गुग्गुल, लहसुन, घी, साँप की केंचुल, बानर का बाल, मोर, मुर्गा एवं कबूतर की विष्ठा एक में मिलाकर धूप देने से बड़े-बड़े प्रेत शान्त हो जाते हैं एवं क्रूर ग्रह, पूतना, डाकिनी, एकाहिक ज्वारादि भी भयंकर नष्ट हो जाते हैं।

काली सरसों तथा काली मिर्च का अञ्जन भूत को उतार देता है, तगर, बुकुची एवं निम्ब का अञ्जन भयानक ज्वरपीड़ा को शान्त करता है।

एक पात्र में गोरख मुण्डी की जड़ रखे पश्चात् हींग मिश्रित जल छोड़े फिर उस जल को पीने से ग्रहादि एवं भूतादिको की बाधा शान्त होती है।

इन्द्र वारुणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च गौ के मूत्र में पीसकर नास लेने (नाक से सूँघने) से ब्रह्मराक्षादि एवं भूतादि की बाधायें शान्त होती है।

भूतनाशन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पंतगाय नमो नमः सिद्धिरूपीरुद्राय ज्ञपति स्वाहा।

इस मन्त्र को यथा-शक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते हैं।

शंकर के अघोर मन्त्र का हृदय में अर्थात् अजपा जप करने से ज्वर शान्त होता है।

बरगद के पत्ते पर निम्नलिखित मन्त्र कोयले से लिखकर ज्वरग्रस्त व्यक्ति को दिखाने से ज्वर उतर जाता है।

ज्वरनाशन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि छिन्धि ज्वर ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल पाणये हुं फट् स्वाहा।

जब साधक यक्षिणी को माता के रूप में सिद्ध करता है तो वह १८ आदमियों को वस्त्राभूषण और भोजन प्रतिदिन होती है। भगिनी के रूप में सिद्ध होने पर सुन्दर स्त्रियों को दूर-दूर से लाकर देती है तथा रसवाले दिव्य भोजनों को देती है, भार्या के रूप में सिद्ध होने पर अपनी पीठ पर चढ़ा स्वर्गादि लोकों को भ्रमण कराती है एवं भोजनादि के पदार्थों को भी उपलब्ध कराती है।

रात्रौ पुष्पेण गत्वा शय्योपकल्पयेत्। जातिपुष्पेण वस्त्रेण चन्दनेन च पूजयेत।। धूपं च गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्त्रकम। जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिंगयत्यपि।। सर्वालंकारसंयुक्ता संभोगादिमन्विता। कुबरेस्य गृहोदेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति।

रात होने पर देवालय में सुन्दर पलंग बिछा सजावे तथा चमेली पुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर गुग्गुल की धूनी कर मन्त्र का अष्ट सहस्त्र जप करे। जप की समाप्ति पर सम्पूर्ण वस्त्रालंकारों से विभूषित होकर यक्षिणी प्रकट होगी और साधक का आलिंगन चुम्बनादि कर भोग करेगी तथा कुबेर के धन-कोष से धन भी लाकर देगी।

श्मशान साधना

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम्। श्मशानसाधनं चापि तदाश्चर्यकरं परम। यस्य विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः।

श्री शंकरजी बोले कि अब मैं मसान सिद्धि अर्थात् मुर्दे के ऊपर चढ़कर सिद्धि किस प्रकार की जाती है, उस आश्चर्यजनक क्रिया का वर्णन करूँगा जिसके ज्ञान के बाद साधक सिद्ध हो जाता है।

श्मशानालयमागत्य उपवासो जितेन्द्रियः। अमायां भौमवारे च सवोपरि समारुहेत्। अयुतंप्रजपेन्मंत्रं मौनी निर्भयरूपतः। शवसाधनमेतत्तु सिद्ध्यत्यत्र न संशयः।। यद्यदाज्ञापयति तत्तत् कुरुते सुविनिश्चितम्। जपान्ते पूजनं कार्य श्मशाने निर्जने तथा। षोडशैरुपचारेस्तु श्यामा श्यालसुन्दररिम्।।

प्रथम निराहार एवं जितेन्द्रिय हो उसके पश्चात् श्मशान भूमि में उस दिन जाय, जिस दिन मंगलवार को अमावस्या हो, फिर पुरुष शव का अन्वेषण कर उसकी छाती पर निर्भय हो बैठकर दश हजार मन्त्र का जप करे। उसके पश्चात् वहाँ से उठ एकान्त में आ श्यामा सुन्दरी का षोडशोपचार से पूजन करे, यही शव साधन की क्रिया है, ऐसा करने के बाद साधक जो आज्ञा देगा वह यक्षिणी करेगी।

श्वेत काकजङ्घा, गिद्ध की चर्बी, असगन्ध इनको लेकर ऊँटनी के दूध में पीस कर लेप बना ले और पैर के तलबे में लगाने से मनुष्य पन्द्रह योजन तक निरापद चल सकता है।

पादुका सिद्धि का मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत-बेताल-त्रासनाय शंख-चक्र-गदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हुँ फट् स्वाहा।

इसी मन्त्र का लक्ष जाप पादुका (खड़ाऊँ) सिद्ध करता है, इसको सौ बार पढ़कर उपर्युक्त लेप अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा।

कुत्ता, बिल्ली एवं नेवले का पित्त सम भाग लेकर पैर के तलवे में लेप कर पन्द्रह योजन, आदमी जा सकता है तथा काक मांस एवं रसाञ्जन का लेप कर पन्द्रह योजन लौटकर पुनः वापस आ सकता है।

पदलेपन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय हरित गदेश्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा।

इस मन्त्र द्वारा लेप को सात बार अभिमन्त्रित करके तब लेप को पैर के तलवे में लगावे।

काग की कलेजी, आँख एवं जीभ, मैनसिल, सिन्दूर, गुरुच, अजवाइन, मालती तथा बिदारीकन्द को सम भाग में ले घोंट लेप बना पाद तले लगाने से सौ योजन तक जाने की शक्ति पैरों में आ जाती है। इस लेप को उपर्युक्त मन्त्र से सात अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये।

घोड़ा तथा भैंसा के रक्त में घृत मिलाकर काजल का निर्माण करे। उस काजल

को आँखों में लगाकर जिसको देखे उसका किसी-न-किसी से विद्वेष (लड़ाई) हो जाय।

ॐ नमो डामरायेति ईश्वरायमुकेन चा सह द्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ठः ठः।।

मन्त्र सिद्ध करने का नियम

योगमार्ग के अनुसार बाहर तथा भीतर की शुद्धि, ब्रह्मचर्य पालन, अल्प भोजन तथा अल्प निद्रा आदि नियमों का पालन करते हुए मन्त्र का जप करने से मन्त्रसिद्धि होती है।

महादेवाभरणकं तत्सुतांश्च लघीयसः। क्षिप्त्वा चा हि वरिच्छद्रे मासमात्रं समुद्धरेत्।। साध्यस्य निखनेद्द्वारि किंचिच्चैवं तथा पुनः। अग्निकोणाद्वायुकोणे क्षिपेदेतत्समुच्चरेत्।। बलिं गुह्णिन्त्विमे भूताः स्थानस्थाः सर्व एव हि। उच्चाटयन्तु सर्वेऽपि रिपुमेनमहत्रिकात्।। 'तारो नमो भगवते डामरेश्वरमूर्तये। उच्चाटय' इति मंत्रेण कार्यसिद्धिरुदाहृता।।

महादेव के आभूषण साँप तथा उसके छोटे बच्चे को मारकर साँप के ही बिल में गाड़ दे और एक माह बाद निकाले। इसके बाद जिसका उच्चाटन करना हो उसके दरवाजे पर खोद कर कुछ गाड़ दे और कुछ अग्निकोण से वायुकोण तक फेंक दें और प्रार्थना करे कि हे इस स्थान में रहने वाले भूतों, यह बलि तुम लोग ग्रहण करो और तुम सब इस शत्रु का तीन दिन में उच्चाटन कर दो। साथ ही निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ता जाय—'**ॐ तारो नमो भगवते डामरेश्वरमूर्तये उच्चाटयोच्चाटय**' इस मन्त्र को पढ़ने से कार्यसिद्धि हो जाती है।

जिन्न प्रकरण

जिन्न व मुवक्किलों के नाम अबजद के क्रम से

अक्षर	जिन्न मुवक्किल	फरिश्ता मुवक्किल
अलिफ्	फीयोपोश	इसराफील
बे	देवस	जिबरील
ज	जीलोस	ककाईल
द	तीयोश	दरदाईल
हे (छोटी)	होश	दोयाईल
व	पोयोश	इफतियाईल
जे	कापोश	शरफाईल
ह (बड़ी)	अुबूश	तनकफील
तोए	बदयोश	इसमाईल
य	सम्बोस	सरकीकाईल
क	कदपोश	खरोजाईल

ल	अदयोस	तलताईल
म	मजबोस	रोयाईल
न	वितयोश	अताईल
सीन	लीनोश	हमवाकील
ऐन	फययोश	बवाईल
फे	बाअतयोश	सरआईल
स्वाद	फलापोश	हमजाईल
क	शमयोश	इतराईल
र	रहोश	अमवाकील
श	तसोयोश	हमराईल
त	लतयोश	इजराईल
से	तजीयोस	मीकाईल
खे	वायापोश	महकाईल
जाल	तकापोश	हरताईल
ज्वाद	नमायोश	अतकाईल
जोए	अकोयोश	नोराईल
गैन	अरतोपोश	नोफाईल

जिन्न के असर

जिन्नात चूंकि हमारी नजरों से पोशीदा हैं, इसलिए न इस मख्लूक की सही तादाद का पता चल सकता है न इस कौम के हालात का खुलासा ही मालूम हो सकता है। नयी सल्ल० की हदीसों से इतना अवश्य मालूम हो जाता है कि आपके जमाने में जिन्नात की एक बड़ी तादाद इस्लाम कुलूल करके मुसलमानों की जमाअत में दाखिल हो गयी थी फिर भी इन्सानों की तरह शादी-विवाह व सन्तान उत्पत्ति से इस कौम की तादाद दुनिया के कुछ इन्सानों से अधिक नहीं तो कम भी नहीं होगी।

जिस प्रकार इन्सानों में कोई किसी धर्म का मानने वाला और कोई किसी का इस तरह जिन्नात के भी अलग-अलग धर्म है, कोई सही रास्ते पर है, कोई गलत रास्ते पर कोई नेक है, तो कोई बुरा तो कोई बदमाश। दुनिया में नेक इन्सान जिस तरह अपनी जिन्स को सताना अच्छा नहीं समझते। इसी तरह नेक जिन्नात भी किसी को सताना उचित नहीं समझते। फित्ने व तकलीफ से बचे रहने के लिए सरकार की ओर से भी प्रबन्ध होता है कुछ न कुछ देख-रेख व बचाव किया जाता है, लेकिन जिन्न चूंकि हमारी आँखों से नजर नहीं आते और न इनको किसी को सताते हुए देखा जा सकता है। इसलिए जिन्नों के शर से बचना एक टेढ़ी समस्या है।

शैतान जिन्नों तादाद

सातों अकलीम के बादशाह जिन्नात और मुसलमान जिन्नात से मुलाकात के नतीजे में अल्लामा मगरिबी तलमसानी को शरीर जिन्नों के सताने के बारे में जो जानकारी प्राप्त हुई थी। इस सिलसिले में उन्होंने इसमाईलवजीर शाह का कथन नकल किया है।

इसमाईल कहते हैं कि जो जिन्नात औरतों व मर्दों को सताया कहते हैं, वे अनेकों प्रकार के हैं। मुझे भी उनमें से बहुत सों का हाल मालूम है। ऐसे जिन्नों की ७० कौमें हैं और हर कौम में ७० हजार कबीले हैं और हर कबीले में ७० हजार जिन्न हैं। यदि आसमान से सुई फेंकी जाए तो वह जमीन पर न गिरेगी बल्कि उनके सरों पर रुक जायेगी।

जिन्नों के एक बड़े जिम्मेदार अफसर के ये शब्द निश्चय ही इस बात को स्पष्ट करते हैं कि जिन्नों में भी इन्सानों की तरह नेक लोगों से ज्यादा बदकार जिन्नात की तादाद अधिक है। जब बदकार जिन्नों की तादाद का यह हाल है तो नेक जिन्न भी बड़ी भारी तादाद में होंगे। इसलिए सही तादाद मालूम करने का कोई साधन इन्सान के पास नहीं है, जिससे वह इन्सानों की तरह जिन्नों की गणना कर सके।

जिन्नों की रहने की जगह और उनकी किस्में—

इसमाईल वजीर शाह जिन्नात का बयान

अफरियत चश्मों व गढ़ों में रहते हैं और शैतान शहरों व मकबरों दोनों जगह आबाद हैं और तवागीत ऐसी जगह जहाँ खून पड़ा हो रहते हैं और कुछ जदाबअ हवा में रहते हैं और कुछ बड़े शैतान आग के निकट रहते हैं और कुद तवाकीफ अफरियत अर्थात् वे जिन्न जो औरतों की शक्ल में आ जाते हैं। बड़े-बड़े पेड़ों के पास रहते हैं और बागों में और कुछ सियासिव पहाड़ों और वीरान स्थान पर रहते हैं।

जिन्नों की सभी किस्में अक्सर लोग इन्सान मर्द-औरत को सताया करते हैं कुछ शैतान अफरियत की तो यह हालत है कि वह इन्सान औरतों पर फिदा व मोहित हैं और वह इन्सान औरत को अपनी पत्नी बनाना बड़ा ही अच्छा समझते हैं। कुछ शैतान इन्सान की पैदाइश में दखल देते हैं। अंगों की बनावट बिगाड़ देते हैं।

जीन्न इन्सान को क्यों सताते हैं?

१. इसमाईल वजीर शाह ने अल्लामा मगरिबी तलमसानी को इन्सानों को विभिन्न तरीकों से सतान की जो तफसील भी बतायी है यहां उसी को हम पेश करते हैं—

२. एक सूरत जिन्न के असर या सताने की यह है कि मर्द या औरत लड़का या लड़की जिन्न के असर में होते ही बेहोश हो जाते हैं और उनकी हालत मिरगी के रोगी की सी हो जाती है।

३. शैतान अफरियल आम तौर पर पति-पत्नी में खट पट करा देते हैं।

४. शैतान हसीन सुन्दर औरतों को अधिक सताते हैं या ऐसी औरतों को जिनके बच्चे न पैदा होते हैं।

५. मैयून असवद की पार्टी के जिन्नात औरतों पर इस हालत में अधिक सवार होते हैं। जब वह गुस्ल करके अच्छे कपड़े पहनती है या खुश्बू लगातार चलती फिरती है।

६. या यही शैतान अफरियत आते सुन्दर औरत को बदकारी के लिए मजबूर करते हैं।

७. यही शैतान गन्दगी रंग की दरमियानी औरत के पेट पर फूंक मार देते हैं, जिसके कारण कभी-कभी उनके पेट में तकलीफ पैदा हो जाती है। इन औरतों का खाना-पीना छूट जाता है। ऐसी औरतों के जिस्म के विभिन्न हिस्सों में कभी-कभी दर्द होने लगता है, कभी हाथों में कभी पाँव में कभी सर में कभी जिस्म के दूसरे हिस्सों में।

८. कभी ऐसा होता है कि बादलों में उड़ने वाला कोई जिन्न औरत पर सर अन्दाज होकर उसे सताना शुरू कर देता है।

९. पानी के रहने वाले अफरियत औरत के सर या शर्मगाह पर कोई चीज मार देते हैं, जिसका असर यह होता है कि औरत एक तो मुबाशिरत के लिए तैयार नहीं होती यदि जबरदस्ती की गयी तो उसे सख्त तकलीफ महसूस होती है।

१०. कभी ऐसा होता है कि वह हाथ पाँव को जमी पर मारने लगती है या अपना गला घोंटने लगती है या अपने जिस्म के कपड़े उतार कर फेंक देती है और उसे नंगे खुले या अश्लीलता का कोई पता नहीं होता। कभी रोगी को खाने-पीने की चीजों से सख्त नफरत पैदा हो जाती है। कभी रोगी चारपाई पर तख्ते की तरह पड़ा रहता है।

जादू दिखाना

पानी में मछलियाँ पैदा हो जायें–मछली के अण्डे लेकर मिट्टी में मिलाकर ओलों में रख दे जब ओले थम जायें उस मिट्टी को छांव में रख दें। जब किसी को जादू दिखाना हो तो एक थाली में पानी भरकर उस मिट्टी को ऊपर से बिखेर कर डाले तुरन्त मछलियाँ पैदा हो जायेगी।

शीशी चराग की तरह रोशन हों–तंग मुँह की शीशी में नमक व सिरका भरकर आग पर रखे जब जोश आवे और धुवाँ उठने लगे तो दिया सलाई का शोला उसे लगा दें। जब तक धुवाँ शीशी में रहेगा चराग की तरह वह रोशनी रहेगी बशर्ते की धुवाँ एक बार न निकल जाये।

जो कोई हुद-हुद का खून सुखा कर आँखों में लगाये रात को बिना चिराग के पढ़े।

शीशा चबाना–पहले शीशे को इतना गर्म करे कि वह खुद आग बन जाए फिर अदरक के अर्क में डूबो दें और चबा ले मुँह में कभी कोई घाव न होगा।

शीशी में अण्डा–जिस समय मुर्गी अण्डा दे, उसी समय सिरका व नौशादर मिलाकर अण्डा शीशी के मुँह पर रख कर कैमिकल डाले ऊपर से घी का पानी छिड़के वह अण्डा शीशी में दाखिल हो जायेगा।

यदि बहुत से अण्डों की एक ही अण्डे से तोड़ना मंजूर हो तो एक अण्डा उसी दिन का हो उसे ठण्डी आग पर उबाल लें सुबह से शाम तक और इसी तरह तीन दिन तक लगातार यही अमल करें तो इस अण्डे से आप दूसरे सारे अण्डे तोड़ डालेंगे।

आग बाँधना–हड़ताल फिटकरी लेकर अर्क ही आलम में अच्छी तरह पी डालें हड़ताल को जोहरए गाउ के साथ मिलाकर हाथों पर मल लें और बिना हिचक हाथों में आग उठा ले तो आग हाथों को नहीं जलायेगी।

मुँह में आग न जले–नौशादर और लोबान को पीसकर अच्छी तरह मुँह की मुँह में चबा लें ताकि हर ओर वह चिपक जाये। मुँह में आग रखने पर मुँह न जलेगा।

जंगली मेढक की चर्बी तीन बार तलवे में अंगूठे से ऐड़ी तक मल कर आग पर चल सकते हैं पाँव भी न जलेंगे।

कपड़ा आग से न जले–हरे धनिए को पानी में घिसकर कपड़े पर लेप करें और आग में डाल दें कपड़ा आग से न जलेगा।

चाँदी से लिखा हुआ लगे–पारा और रांगा कुश्ता करके गोंद के पानी में मिला लें और सुर्ख या जर्द कागज पर लिखे। जब सूख जाए तो चाँदी जैसा लिखा हुआ लगेगा।

फिटकरी के पानी से कागज पर लिखे जब खुश्क हो जाये तो पढ़ा न जाये यदि पानी में डालेंगे तो आसानी से पढ़ा जायेगा और यदि फिटकरी और माजू जर्द कागज पर लिखकर मुँह के थूक से उस पर लिखें तो हरा दिखाई देगा।

शीर आक से कागज पर लिखें जब जब सूख जाए तो कुछ न पढ़ा जायेगा।

औरत की छातियाँ गायब–रविवार के दिन एक चमगादड़ लाये और सात रविवार गुग्गुल की धूनी दें फिर दोपहर को नंगा होकर रूई और थोड़ी लाजवन्ती लपेटे और ताँबे के चिराग में मालकंगनी का तेल डालकर पका लें फिर इनको हाथों पर मलकर जिस औरत को दिखायें और मुट्ठी बन्द कर लें तो छातियाँ गायब हो जायें जब मुट्ठी खोलें तो वापस आ जायें।

रविवार के दिन अमावस आये तो दो आदमियों की खोपड़ियाँ लेकर मरघट

पर जाये। एक खोपड़ी में उल्लू का पित्ता और थोड़ा घी डालकर जलाए और दूसरी खोपड़ी में काजल, पारे रखे और एक सौ आठ बार यह मन्त्र पढ़े—**ओंम नमो माही तरी तरी अपनी बधनी पढ़े श्री सरगो स्वाहा।** जब पढ़ चुके तब काजल ताँबे के तावीज में रखकर मुँह में रखे और जहाँ चाहे चला जाए। वह सबको देखे और उसको कोई न देखे और जो आँख में लगाये सारी जोगनीयां बस में हो जायें।

यदि गंधक और हरताल और अजवायन खरासानी आक के दूध में डाल दें और कोई दाना चावल या दाल का उसमें डाल दें। जब खुश्क हो जाये तो जिस जानवर को या परिन्दे को खिलाये बेहोश हो जाये और जब जैतून का तेल पिलाये तो होश में आ जाये।

मछली का चारा लेकर खूब बारीक पीस डालें और उसे थोड़ा गेहूं के आटे में मिलाकर खूब कड़ा गूंधे कि कड़ा हो जाये। इसके बाद चने के बराबर गोलियाँ बनाकर छाव में खुश्क और जरूरत पड़ने पर हौज या तालाब में इन्हें डाल दें जिस समय इन्हें डाला जायेगा, सारी मछलियाँ तालाब के ऊपर उभर आयेंगी। जितनी चाहे पकड़ लें।

बाकले को हरताल के साथ पकाकर गोलियाँ बना लें इनको जो भी कबूतर खायेगा गिर पड़ेगा फिर उड़ न सकेगा। सही समय पर उसे पकड़ लें। कबूतर को होश में लाना हो उसके मुँह में जीत टपका दें होश में आ जायेगा।

बताशे को तेल में भिंगोकर पानी में डाल दें, तो वह नहीं घुलेगा।

औरत के दिल का भेद मालूम करना–उल्लू का दिन कतान के कपड़े में लपेट कर सोती हुई औरत के सीने पर रख दें, तो वह सारा भेद बतायेगी।

***

शक्तिसंगमतन्त्रम्

सम्पादक एवं व्याख्याकार

डॉ. सुधाकर मालवीय

भारतदेश में तन्त्रशास्त्र का अद्भुत भण्डार है। तन्त्र एवं यन्त्र पूजन से साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जिसके लिए वह इस संसार में मनुष्य तन में आया है। साधना से इसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाता है और आत्मा शुद्ध हो जाती है। आणव मल धुल जाता है।

शक्तिसंगमतन्त्र तान्त्रिक साधकों के लिए अद्वितीय तान्त्रिक ग्रन्थ है। यह मौलिक तन्त्र ग्रन्थ है और शाक्तसम्प्रदाय के सिद्धान्तों का साकल्येन प्रतिपादक है।

शक्तिसंगमतन्त्र **अक्षोभ्य ऋषि एवं महोग्रतारा** (शिव-पार्वती) का संवाद रूप है। इसमें चार खण्ड हैं—

१. **कालीख[illegible]**— इक्कीस पटलों में पूर्ण है। काली[illegible]विधि, अष्टाष्टकनिरूपण, पात्र निर्णय, कादिदीक्षा[illegible], मेरुकथन, वीररात्र्यादिनिर्णय, [illegible] सिद्धिविधि, क्रमदीक्षा, सूत्र निर्णय, उपाकर्म, [illegible] रक्षाविधि एवं कामधेन्वादि यो[illegible] हैं।

२. **ताराखण्ड**— [illegible]कहत्तर पटलों में पूर्ण है। कौ[illegible] निर्णय, नवरात्र निर्णय, महाचीन क्रम, छिन्नम[illegible], भुवनेश्वरीक्रम, मुद्रासंकेत, पानसं[illegible] लतासंकेत, निशापूजा, मुण्डासन, सुन्दरी-साधन और शक्तिपूजा रहस्य आदि वर्णित हैं।

३. **सुन्दरीखण्ड**— इक्कीस पटलों में पूर्ण है। चक्रयोगादि निरूपण, देश व्यवस्था, पञ्चप्रस्थविवेचन, लतासाधन, अज्ञात दुर्निमित्त एवं महाकाल मन्त्र की विधि प्रतिपादित है। काली १५ नित्याओं का प्रतिपादन है।

४. **छिन्नमस्ताखण्ड**— ग्यारह पटलों में पूर्ण है। काली आदि दस महाविद्याओं के अङ्गमन्त्र, विद्यापीठ निर्णय, देशपर्यायादि विवेचन, चक्षुषा शक्तिसमाराधन, पुष्प निर्णय, पर्यायाम्नायादि निर्णय और यन्त्रप्रस्तारादि निर्णय व्याख्यात हैं।

इन चारों खण्डों की इदं प्रथमतया हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है। अनेक तन्त्रग्रन्थों के सम्पादक एवं हिन्दी व्याख्याकार डॉ. सुधाकर मालवीय काशी के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् हैं, जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय के संस्कृत विभाग से सम्प्रति सेवानिवृत्त हैं। इनके द्वारा संशोधित एवं हिन्दी में व्याख्यात यह ग्रन्थ तान्त्रिक साधकों के लिए अत्यन्त उपादेय है और दार्शनिक विद्वानों एवं शक्ति के उपासकों हेतु संग्रहणीय है।

Also can be had from : **Chowkhamba Sanskrit Series Office,** Varanasi.

ISBN : 978-81-218-0352-6 ₹